देवीशंकर अवस्थी रचनावली

सम्पादक
रेखा अवस्थी
कमलेश अवस्थी

4

देवीशंकर अवस्थी रचनावली खण्ड चार की 'विविधा' संज्ञा व्यंजनागर्भित ही नहीं अति ध्वन्यात्मक भी है। मेरे मन में बार-बार इस खण्ड को साहित्य का जलतरंग या साहित्य का आर्केस्ट्रा कहने की इच्छा हो रही है। इस आर्केस्ट्रा के कम्पोज़र, संचालक-नियोजक और वादकवृन्द तीनों क्या अनेकों की भूमिका वे स्वयं निभा रहे हैं। आलोचनात्मक लेखन के साथ-साथ डायरी लिख रहे हैं, कविता लिख रहे हैं, एकांकी लिख रहे हैं, ललित निबन्ध लिख रहे हैं। यह क्रम यहीं नहीं ख़त्म होता है। उन्होंने यात्रा-वृत्तान्त, यात्रा-संस्मरण, रेखाचित्र और व्यंग्य भी लिखे। पत्र और चिट्ठियाँ लिखना तो उनके कार्यभार का हिस्सा प्रतीत होता है। इन पत्रों, चिट्ठियों में उनकी विचार और भाव सघनता की अभिव्यक्ति मिलती है। यहाँ यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि राग संवेदना की तीव्रता से भरीपूरी यह रचनाशीलता उनके आलोचनात्मक विवेक को परिपक्व बनाने में बड़ी भूमिका निभाती है। जिस दौर में वे रचनात्मक लेखन कर रहे थे, वह साहित्यिक आन्दोलन की दृष्टि से नयी कविता, नयी कहानी और नयी समालोचना में तमाम तरह की वैचारिक गहमागहमी और शैलीगत नये प्रयोगों का काल था। उनका यह बहुआयामी एवं बहुरूपी लेखन इस माहौल में देवीशंकर की अपनी तैयारी का साक्ष्य या कहें दस्तावेज़ है।

(सम्पादक की बात से)

देवीशंकर अवस्थी रचनावली

विविधा

खण्ड चार

'बानी ते पहचानिये
सब्दहि देत लखाय'

देवीशंकर अवस्थी रचनावली

विविधा

खण्ड चार

सम्पादक
रेखा अवस्थी
कमलेश अवस्थी

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004

फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com
sales@vaniprakashan.in

DEVI SHANKER AWASTHI RACHNAWALI-4
Edited by Rekha Awasthi, Kamlesh Awasthi

ISBN : 978-93-87648-27-2
Rachnawali

प्रथम संस्करण

सम्पूर्ण (सेट) मूल्य : ₹ 7500

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

लालगंज, 1948
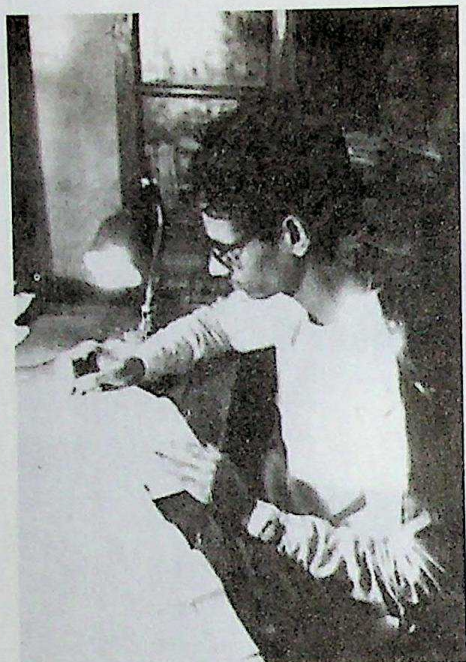
अध्ययन कक्ष : मामा जी का गोदाम, कानपुर, 1952-53
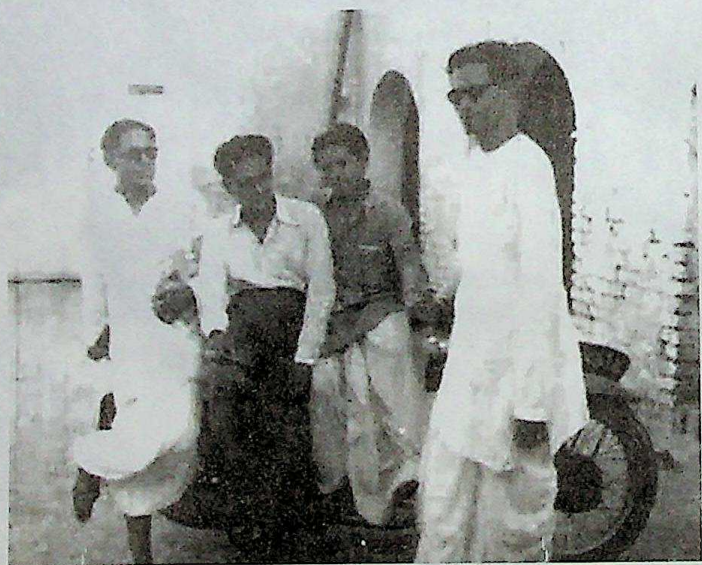
कानपुर में मामा जी के गोदाम में अजित कुमार, शिवप्रसाद भदौरिया और बालकिशन गुप्ता (टानी), 1953

बीच रास्ते में वालकिशन गुप्ता (टानी) के साथ, 1953

'आज कॉलेज में की खूब फरुहाई'
डायरी.....
डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर के खेल मैदान में विकास के लिए छात्रों के साथ श्रमदान, 6 सितम्बर, 1954
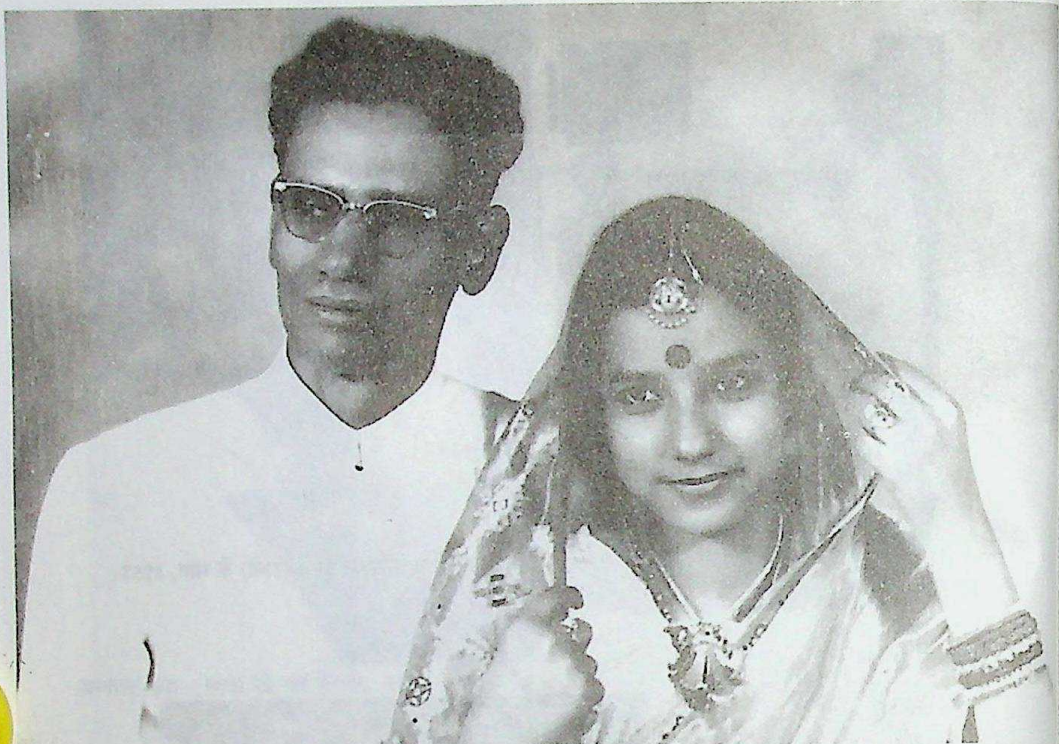
1 जुलाई, 1956, विवाह के उपरान्त युगल दम्पति
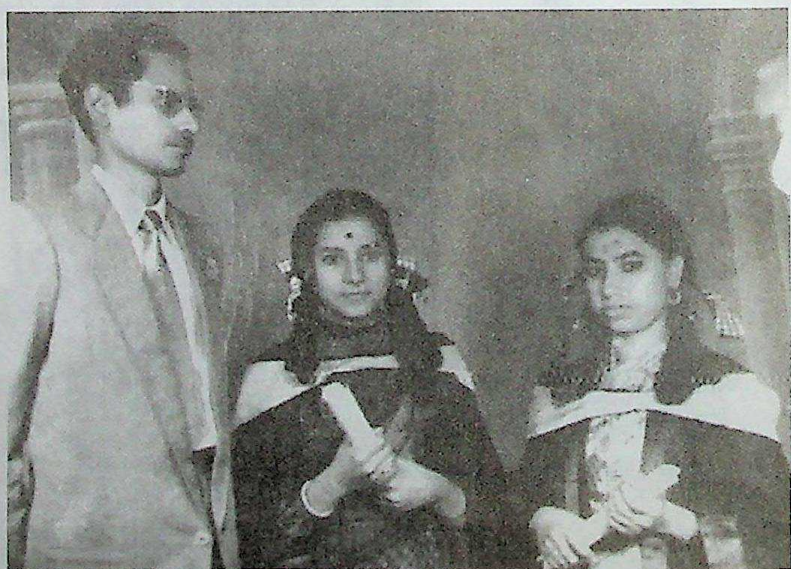
पत्नी कमलेश के साथ स्नातक डिग्री के दीक्षान्त समारोह के बाद साथ में बड़ी साली विजयलक्ष्मी, 1957-58

अनुक्रम

ललित गद्य (1955-1966)

एकांकी (1957-1965)

चिट्ठियाँ और पत्र (1956-1964)

रचनावली के बारे में

देवीशंकर अवस्थी रचनावली खण्ड चार की 'विविधा' संज्ञा व्यंजनागर्भित ही नहीं अति ध्वन्यात्मक भी है। मेरे मन में बार-बार इस खण्ड को साहित्य का जलतरंग या साहित्य का आर्केस्ट्रा कहने की इच्छा हो रही है। इस आर्केस्ट्रा के कम्पोजर, संचालक-नियोजक और वादकवृन्द तीनों क्या अनेकों की भूमिका वे स्वयं निभा रहे हैं। आलोचनात्मक लेखन के साथ-साथ डायरी लिख रहे हैं, कविता लिख रहे हैं, एकांकी लिख रहे हैं, ललित निबन्ध लिख रहे हैं। यह क्रम यहीं नहीं खत्म होता है। उन्होंने यात्रा-वृत्तान्त, यात्रा-संस्मरण, रेखाचित्र और व्यंग्य भी लिखे। पत्र और चिट्ठियाँ लिखना तो उनके कार्यभार का हिस्सा प्रतीत होता है। इन पत्रों, चिट्ठियों में उनके विचार और भाव सघनता की अभिव्यक्ति मिलती है। यहाँ यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि राग संवेदना की तीव्रता से भरीपूरी यह रचनाशीलता उनके आलोचनात्मक विवेक को परिपक्व बनाने में बड़ी भूमिका निभाती है। जिस दौर में वे रचनात्मक लेखन कर रहे थे, वह साहित्यिक आन्दोलन की दृष्टि से नयी कविता, नयी कहानी और नयी समालोचना में तमाम तरह की वैचारिक गहमागहमी और शैलीगत नये प्रयोगों का काल था। उनका यह बहुआयामी एवं बहुरूपी लेखन इस माहौल में देवीशंकर की अपनी तैयारी का साक्ष्य या कहें दस्तावेज़ है।

इन विभिन्न साहित्य विधाओं में निरन्तर आवागमन की विभिन्न साहित्य तरंगों की जलतरंगीय ध्वनियों का रचनावली में संयोजन किस तरह किया जाये कि विधाओं की प्रकृति एवं छवि को सुरक्षित रखा जा सके, यह बहुत मुश्किल चयन की पद्धति से गुजरना था। फिर भी प्रयास किया है कि रचनावली के खण्ड चार 'विविधा' को पाँच उपखण्डों में इस तरह संयोजित करूँ कि डॉ. देवीशंकर अवस्थी की राग-संवेदना की अभिव्यक्ति के शिल्पगत और विधागत वैविध्य के साथ हिन्दी समाज परिचय और तादात्म्य स्थापित कर सके।

विविधा : डायरी

डायरी उपखण्ड में डॉ. देवीशंकर अवस्थी की 14 डायरियाँ संकलित हैं। पहली डायरी

सन् 1948 की है, जब वे किशोरावस्था में हैं और दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर चुके हैं। सन् '48 के बाद 3 वर्ष की डायरियाँ कहीं खो गयी हैं। भाई साहब के दिल्ली आने पर किताबों इत्यादि सामानों को दिल्ली लाने के क्रम में या उनके निधन के बाद दिल्ली में कई बार मकान बदलने या भाभी के दिल्ली से वापस कानपुर को स्थायी निवास बनाने के क्रम में 1949, 1950 और 1951 की डायरी लापता हो गयीं और अब मिल नहीं सकीं। इसी तरह 1963 की डायरी भी नहीं मिल सकी। निरन्तरता के लिहाज से प्रश्न किया जा सकता है कि 1948 से क्यों, 1952 से क्यों नहीं? हमें भी शुरू में कुछ इसी तरह की शंका उत्पन्न हुई थी। परन्तु सभी डायरी पढ़ने और समझने के बाद महसूस किया कि 1948 की डायरी के बिना हम समझ ही नहीं पायेंगे उनकी शिक्षा की ललक, ज्ञान संचय की प्रवृत्ति, बड़े-छोटे हर व्यक्ति से सहयोग करने के लिए तत्पर रहने का स्वभाव, पिता की असामयिक मृत्यु के अवसाद से उभरने के प्रयास में निरन्तर व्यस्त रहने के लिए जगह-जगह आना-जाना। पितृपक्ष में पिता के लिए तर्पण करना तथा जीविकोपार्जन के लिए हिसाब-किताब की तत्कालीन भाषा मुडिया सीखने का अभ्यास आदि...। मुडिया प्रैक्टिस के कुछ नमूने स्कैन करके डायरी के पन्नों के रूप में लगा रही हूँ। खर्च का हिसाब डायरी के हर पन्ने पर लिखा है। अर्थाभाव तथा ईमानदारी के कारण एक-एक पाई का हिसाब वे लिखते हैं क्योंकि जिस सम्बन्धी ने रुपये दिये हैं यदि वह जानना चाहे तो खर्च का पूरा हिसाब दिया जा सके, कभी लज्जित न होना पड़े। इसलिए खर्च के भी कुछ नमूने दिये जा रहे हैं। 30 जनवरी, 1948 की तारीख में महात्मा गाँधी की हत्या का उल्लेख है और 31 को अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया नोट की है।

1 जनवरी, 1948 की नोटिंग से यह संकेत मिल जाता है कि आगे पढ़ाई जारी रखने के लिए वे ननिहाल लालगंज आ जाते हैं। दोनों मामा से बात होती है यानी फीस इत्यादि के बारे में...। इसीलिए रायबरेली से प्राइवेट इण्टरमीडियेट करने का निर्णय लेते हैं। अगले वर्षों की डायरी पढ़ने से पता चलता है कि देवीशंकर अवस्थी ज्ञानार्जन के लिए मामा के यहाँ रहते हैं पर अवस्थी परिवार के छोटे-बड़े प्रत्येक सदस्य से गहरा आत्मीय सम्बन्ध बनाये रखते हैं। आधुनिक शिक्षा और सामाजिक सोच में पाण्डेय परिवार अवस्थी परिवार से अधिक जागरूक और प्रगतिशील था। यद्यपि 1949, 50 और 51 की डायरी उपलब्ध नहीं हुई पर यह तथ्य है कि 1949 में बड़े मामा उमाशंकर पाण्डेय, जो कानपुर में लोहे के थोक विक्रेता थे, की अनुमति से उनके लोहा रखने के गोदाम के एक कमरे में कुर्सी मेज के साथ उनके पढ़ने की व्यवस्था हुई और उन्होंने डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में बी.ए. में दाखिला लिया। यही वह 'गुदाम' और बाद में 'गोदाम' है जिसका जिक्र 1956 तक की डायरियों एवं तमाम मित्रों के संस्मरणों में आज तक मिलता है। यही वह गोदाम है जो लेखक मित्रों का अड्डा बनता है और बड़े मामा सब मित्रों के मामा। यद्यपि सभी बड़े मामा से डरते भी बहुत थे।

सन् 1948 से अंग्रेजी शब्दों, मुहावरों-कहावतों को डायरी में नोट करने के बजाय 1952 में 21 जनवरी से वे अंग्रेजी में ही डायरी लिखने लगते हैं। यद्यपि वाक्य विन्यास में अशुद्धियाँ हैं पर उन्हें ज्यों का त्यों ही प्रकाशित किया जा रहा है क्योंकि यह अंग्रेजी सीखने का ऐसा प्रयास है जिसमें अंग्रेजी का डर निकल जाता है। 1952 की डायरी में दूसरी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इन्दराज पहली लोकसभा-विधानसभा के चुनावों की गहमागहमी और चुनाव प्रचार अभियान का है। 25, 26, 27 जनवरी को रायबरेली और उन्नाव जनपद में चुनाव के दौरान इन्दिरा गाँधी के चुनाव प्रचार का भी जिक्र है। चुनाव के बाद तत्काल वे पढ़ाई में व्यस्त हो जाते हैं क्योंकि 18 मार्च से एम.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षाएँ हैं। परीक्षा समाप्त होते ही गुरुवर कृष्णशंकर शुक्ल की सलाह पर एक संचयन तैयार करने के लिए 6 अप्रैल को गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' से मिलते हैं। 28 अप्रैल को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के जयन्ती कार्यक्रम में उनके गाँव दौलतपुर में महादेवी जी से मिलते हैं और उनका साक्षात्कार भी लेते हैं। 12 जून को आचार्य विनोबा भावे लालगंज आते हैं। देवीशंकर अभिभूत हो उनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। 1952 की डायरी एक ऐसे ऊर्जावान नवयुवक की डायरी है जो अपनी कर्मशीलता से सभी को उपकृत करता और आह्लादित रखता है। अर्थाभाव के कारण किसी-न-किसी से बार-बार उधार लेने से मुक्त होने के लिए वे 1952 में एम.ए. (प्रथम वर्ष) परीक्षा के बाद कोई नौकरी करना चाहते हैं पर नौकरी मिलती नहीं तो अन्ततः 18 दिसम्बर से ट्यूशन पढ़ाने को मजबूर होते हैं।

वर्ष 1953 उनकी उपलब्धियों का वर्ष है। 3 जनवरी को पहली कविता डायरी में दर्ज है। 25 अगस्त को डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में प्रवक्ता पद की नौकरी ज्वाइन करते हैं। अजित शंकर चौधरी से पहली मुलाकात बहुत जल्दी घनिष्ठ मित्रता में बदल जाती है। स्टाफ रूम में बैठते झेंप महसूस करते हैं कि कल तक जहाँ शिक्षकों से मिलने आते थे, अब वहीं खुद शिक्षक के रूप में बैठना है। 6, 7, 8 सितम्बर को कॉलेज में खेल के मैदान को बराबर करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करके उनके साथ श्रमदान करते हैं। 13 सितम्बर को गोदाम में पहली कवि गोष्ठी करते हैं जिसमें अजित कुमार, शिव बहादुर सिंह और राम मनोहर त्रिपाठी काव्यपाठ करते हैं। 2 सितम्बर से चार दिन तक संगीत समारोह में शामिल होते हैं और 19 सितम्बर को संगीत समारोह का रिव्यू लिखने का जिक्र है। अक्तूबर में अजित कुमार के साथ पटना अधिवेशन में जाते हैं। नालन्दा राजगीर भी घूमते हैं। लौटते वक्त बनारस में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और नामवर सिंह से मिलते हैं। कानपुर लौटते हैं फिर लखनऊ चले जाते हैं। सबसे आश्चर्यजनक लगता है कि 19 अक्तूबर को कानपुर में आयोजित दंगल देखने भी जाते हैं। यह वर्ष अध्ययन, अध्यापन, भ्रमण, गोष्ठीबाजी के साथ आर्थिक परनिर्भरता से मुक्ति का वर्ष सिद्ध होता है। 1953 में

कानपुर-लखनऊ के साथ इलाहाबाद-बनारस भी जुड़ जाते हैं। डायरी में साहित्यिक टिप्पणियाँ लिखनी शुरू हो जाती हैं।

वर्ष 1954 में पहाड़ी क्षेत्रों की यात्राओं, विशेष रूप से नैनीताल-रानीखेत की सौन्दर्य सुषमा का वर्णन है। 'कहानी' पत्रिका की सदस्य संख्या दर्ज है। 7 और 14 जनवरी को अपनी कविता लिखते हैं। 9 और 15 नवम्बर को भी कविता दर्ज है। पर 1954 की डायरी की विशेषता यह भी है कि इसमें ब्रिटिश कवि कैनेथ पैचन की तीन कविताओं का भावानुवाद है और एक कविता मूल अंग्रेजी रूप में नोट की है। 1954 के अन्त आते-आते उनकी डायरी का स्वरूप बदलने लगता है। अब घटनाओं, सूचनाओं, हिसाब-किताब की जगह एक कोने में सिमट जाती है। विश्व प्रसिद्ध लेखकों, चिन्तकों, आलोचकों का अध्ययन-मनन डायरी की जगह घेरने लगता है। लेखकों के नोट्स के साथ अपनी राय और उदाहरण साथ-साथ लिखने लगते हैं।

वर्ष 1955 की 1 जनवरी को वर्ष भर में यायावरी, मित्रों के स्नेह, अपरिचितों के सौहार्द और सबके कल्याण की कामना जरूर करते हैं पर 3 जनवरी से इसे अपना वर्ष बनाने के लिए उनकी साहित्यिक साधना शुरू हो जाती है। 4, 5, 6, 7 जनवरी की टिप्पणियाँ इस दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। G.M. Young, J. Issacs, V. Lee के उद्धरणों को अपने सन्दर्भ से व्याख्यायित करते हैं। डायरी लिखने की यह पद्धति आगे जारी रहती है। उदाहरणस्वरूप **23 जनवरी, 1955** का यह उद्धरण बहुत गौरतलब है—

> *We judge our contemporaries by their predecessors.*
> *प्रमुख धारा और उसकी उपशाखाओं से परिचय न होना बहुधा भ्रम और उथलापन उत्पन्न कर देता है। हमारा जीवन एक ऐसे फ्रेम पर होता है जो एक साथ Past और Present है।*
> *हमें साहित्यकार के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानना पड़ता है। उनका उद्देश्य (Purpose) क्या था, किन परिस्थितियों के भीतर वे पले और परिश्रम किया उनका तात्कालिक देय (Contribution) तथा उनकी ultimate importance क्या है। क्यों प्रसाद प्रसाद हैं निराला नहीं। क्यों अज्ञेय अज्ञेय हैं, दिनकर नहीं। हमारा युग संघर्षों का युग है। हमारे राजनीतिक और नैतिक दर्शनों में गहरा मतभेद है और साहित्य इन सबको प्रतिबिम्बित करता है। पर मनुष्य का कल्याण सब चाहते हैं, Personality in technical society पर अस्तित्ववादी भी विचार करते हैं, मार्क्सवादी भी, धार्मिक भी और गाँधीवादी भी।*
> *आज का साहित्यकार भी समझ रहा है "The proper study of mankind is man." वे उसकी कमज़ोरियों और पराजयों से परिचित हैं पर उसके जयचिह्नों और महानताओं से भी वाक़िफ़ हैं।*

इस तरह हम देखते हैं कि वर्ष 1955 की डायरी डॉ. देवीशंकर अवस्थी की आलोचना सम्बन्धी तैयारी, पर्सपेक्टिव एवं मूल्यांकन के मानदण्डों की निर्मिति की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। Modernity, Anatomy of inspiration, poetic images जैसे विषयों पर लम्बे-लम्बे नोट्स डायरी में लिखे गये हैं। 1955 की डायरी में उद्धृत अथवा नोट किये गये, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन या कियी अन्य भाषा के महान लेखकों की किताबों का उल्लेख, उनके उद्धरण या नोट्स की संख्या कुल मिलाकर 100 से ज्यादा ही होगी। कोई भी ऐसी महत्त्वपूर्ण किताब या रचनाकार न होगा जो उद्धृत न हुआ हो या नोट्स न लिये हों। कुछ नाम इस प्रकार हैं : C.D. Lewis, Cyril Connolly, Herbert Read, Aristotle, Dryden, Coleridge, Mathew Arnold, T.E. Hulme, P. Thomson, John Middelton, V. Lee, J. Issacs, T.S. Eliot, Ezra Pound, W.B. Yeats, Paul Valery, Schiller, Dallas, G. Barker, Stephen Spender, A.C. Bradley, Caudwell, Robert Graves, William Hazlitt, Edmund Wilson, Walter Raleigh, Christina Rossetti, John Keats, E.M. Forster, J.D. Beresford, G.M. Young, H.G. Wells, Virginia Woolf, Catherine Mansfield, Graham Green, I.A. Richards, Joseph Conrad और Irving Howe आदि-आदि। ये कुछ नाम लेखकों के हैं। लम्बा-चौड़ा होने के डर से किताबों के नाम नहीं दे रही हूँ। उनको विद्वत्जन डायरी में पढ़ ही लेंगे, ऐसा विश्वास है।

इनके अतिरिक्त शोध सम्बन्धी सूचनाएँ एवं पुस्तकें भी इस वर्ष की डायरी में दर्ज हैं। आय-व्यय के विवरण तथा सभा संगोष्ठियों की सूचनाएँ भी दर्ज हैं। एक छोटी डायरी में साहित्यकारों, परिचितों एवं पत्रिकाओं के फोन नम्बर और डाक पता भी लिखे हुए हैं।

वर्ष 1956 में ज्यादा प्रविष्टियाँ नहीं मिलतीं। सम्भवतः तब तक उन्होंने अपने नोट्स के लिए कुछ कापियाँ और रजिस्टर बना लिए थे। इसके अलावा यदि हम उनके लेखन का चार्ट देखें तो पता चलेगा कि 1956 में उन्होंने लेख लिखे, कविताएँ, ललित गद्य और एकांकी लिखे परन्तु सबसे ज्यादा कविताएँ 1956 में ही लिखीं। वे सब डायरी में नोट हैं। 23 अप्रैल और 26 अप्रैल को अजित कुमार जी के सन्दर्भ में की गयी दो नोटिंग्स से उनकी व्यथा का, उनकी मित्रता का भाव मर्मस्पर्शी है—

23 अप्रैल, 1956

आज अजित के farewell *में पार्टी थी। पर मजा देखिए कि वही जनाब गायब। बिना दूल्हे के बारात। यहाँ पर देवर और तलवार से भी काम नहीं चलता। खासा मजाक रहा। अजित शायद इसलिए नहीं आये कि उन्हें* formal invitation *नहीं मिला था। आज के युग में मनुष्य क्यों इतना* formal *होता जा रहा है? स्नेह का दान चुक गया। केवल* formality *के सूखे तारों पर यह सामाजिक व्यवहारों की बिजली दौड़ रही है।*

26 अप्रैल, 1956

आज अजित चले गये। मुझे शान्ति के बाद पहली बार किसी के जाने पर इस प्रकार कष्ट हुआ है। लगता है कि एक महत्त्वपूर्ण अंग रिक्त हुआ जा रहा है। भगवान जाने क्यों हम सम्बन्धों के इतना निकट रहना चाहते हैं।

अजित से बीच में कुछ मतभेद भी मेरा हो गया था पर मेरे मन में उनके लिए अत्यधिक स्नेह था। इतना ही कहूँगा कि दोस्त जहाँ भी रहो, उन्नतगामी रहो।

11 जून, '56 की नोटिंग में रचनाकारों की जिजीविषा और उनके व्यक्तित्व की भिन्नता को लेकर लिखा गया वक्तव्य विचार प्रधान है। इसके बाद वे अपने विवाह की तैयारियों में व्यस्त हो गये होंगे क्योंकि आर्थिक जिम्मेदारी उन्हीं की थी। इसीलिए विवाह के खर्चे लिखते रहे। 1 जुलाई को विवाह सम्बन्धी भावनाओं, रीति-रिवाजों एवं सात फेरों का वर्णन अधिकाधिक प्रेम और माधुर्य से छलकता हुआ लिखा गया है। भाभी श्रीमती कमलेश अवस्थी ने 'देवीशंकर अवस्थी : व्यक्तित्व और परिवेश' (प्रथम खण्ड) लेख में विवाह के बाद का वर्णन बहुत तफसील के साथ किया है। 1 जुलाई की इस नोटिंग के साथ भाभी का लेख पढ़कर प्रेम के इस पारावार में डूबना स्वाभाविक ही होगा। 1 जुलाई के बाद 23 अगस्त और उसके बाद सीधे 31 दिसम्बर की तारीख की नोटिंग में भाईसाहब ने दो कविताएँ लिखी हैं। इतने लम्बे अन्तराल का कारण यही समझ में आया कि अगस्त में भाभी के विदा होने से गौना होने की अवधि (8 या 9 महीने) के बीच देवीशंकर अवस्थी ने लगभग 35 पत्र पत्नी को लिखे हैं। कभी-कभी तो एक ही तारीख में दो पत्र भी। और 33 या 34 पत्र बाद के आठ वर्षों के दौरान लिखे गये हैं। 1956-57-58 का समय देवीशंकर अवस्थी के जीवन का वह समय है जब प्रेम के माधुर्य से तृप्त एक लेखक अपने लेखन और कर्मक्षेत्र में पूरी मुस्तैदी से जमा हुआ है। कितने ही लेख, समीक्षाएँ, एकांकी, व्यंग्य, कविताएँ, संस्मरण और वृत्तान्त उन्होंने इस बीच लिखे। यही वह दौर भी है जब उन्होंने 'कलजुग' के 5 अंकों का सम्पादन भी किया।

आगे के 8 वर्षों यानी 1957, 58, 59, 60, 61, 62, 64 और 1965 की डायरियाँ आप स्वयं पढ़ें और निर्णय करें। 6 वर्षों की डायरियों का यह छोटा-सा वृत्तान्त मात्र इस प्रयोजन से लिखा है कि वह 17 वर्षीय किशोर किस तरह अपने जीवन के उतार-चढ़ावों के बीच आत्मबल एवं कर्मठता से तथा अपनी माँ दुर्गावती और अन्य स्वजनों के प्रेम एवं संरक्षण से 15 वर्षों से भी कम समय में हिन्दी साहित्य संसार में अपना अनूठा स्थान बनाता है। यह उल्लेख भी यहाँ जरूरी है कि देवीशंकर अवस्थी की ये 14 डायरी पहली बार मुकम्मल रूप में रचनावली में प्रकाशित हो रही हैं। इससे पहले कभी-कभी कुछ अंश 'लहर', 'माध्यम', 'तद्भव' और 'पक्षधर' में छप चुके हैं। एक सूचना यह कि देवीशंकर अवस्थी ने लगभग 20-25 कविताएँ डायरी

में लिखी थीं, विभिन्न वर्षों के बीच। उन सभी को 'विविधा : कविता' उपखण्ड में तिथिक्रम से संकलित किया गया है। केवल उन तारीखों में कविता की सूचना डायरी में दे दी गयी है।

विविधा : कविता

आलोचक देवीशंकर अवस्थी ने पचासेक कविताएँ लिखीं। कुछ डायरी में विभिन्न वर्षों के बीच लिखी हैं और कुछ अन्य कापियों या पत्रिकाओं में छपने के बाद उनके रचना-संकलन की फाइल में मिली हैं। 1955-56 तक उनकी कई कविताएँ ए.डी. शंकरन के नाम से 'युगचेतना', 'राष्ट्रवाणी', 'प्रवाह' आदि पत्रिकाओं में छप चुकी थीं। अधिकांश कविताओं में लिखने के बाद उन्होंने तारीख और स्थान का उल्लेख किया है जैसे पांडेनपुरवा, नैनीताल, कानपुर, पटेल चेस्ट, दिल्ली इत्यादि। कविताओं की तारीखों से पता चलता है कि सन् 1954, 55, 56 में उन्होंने सबसे ज्यादा कविताएँ लिखी हैं अन्यथा अन्य वर्षों में दो या तीन कविताओं का औसत है। सन् 1964 में पुनः हमें पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट के अस्पताल में इलाज के दौरान भर्ती होने पर 9-10 कविताएँ एक साथ डायरी में 5 से 10 दिसम्बर के बीच लिखी मिलती हैं।

देवीशंकर अवस्थी के निधन के बाद 'धर्मयुग', 'लहर', 'कल्पना', 'माध्यम' आदि कई पत्रिकाओं ने 1966 में उनकी कविताओं को पहली बार प्रकाशित किया। 1990 में षष्टिपूर्ति आयोजन के बाद भी कई पत्रिकाओं ने उन्हें उनकी कविताओं के प्रकाशन के माध्यम से याद किया है। सन् 2005 के आस-पास 'तद्भव' और इधर 'पक्षधर' ने भी उनकी डायरी और कविताओं को पुनः प्रकाशित किया है। कविता संकलन के रूप में ये कविताएँ पहली बार रचनावली में एक साथ प्रकाशित हो रही हैं। 3 जनवरी, 1953 से 10 दिसम्बर, 1964 के बीच लिखी इन कविताओं में कई तरह के कथ्य, भावभंगिमाएँ, काव्य की शैलीगत भिन्नता सहज परिलक्षित होती है। नयी कविता के दौर की अमूर्त्तता का कोई प्रभाव इन कविताओं पर दिखायी नहीं देता। सहज मन से गहरी भाव-व्यंजना वाली इन कविताओं में बिम्ब-विधान के साथ हास्य-व्यंग्य का भी प्रयोग किया गया है। 'तमस : तीन आशय' कविता का चित्र इस प्रकार है—

पर आओ
उतरें गहरे मन में, जीवन में
सत्य के फानूसी स्तरों में।

X X

अन्धकार के सहारे
क्योंकि
प्रकाश वहाँ निष्फल है।

प्रकृति और लोकजीवन के रंग के साथ शुरू हुई उनकी काव्य-यात्रा की अन्तिम कविता में गन्ध, स्पर्श आदि इन्द्रिय संवेदन का सामंजस्य इस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है—

मैंने पहली मंजिल की अपनी खिड़की से हाथ बढ़ाकर
चुटकी भर पीला गुलाब बगल में खिले लाल गुलाब पर डाल दिया
और बगल में ही खिले सफेद और काले गुलाबों की ओर
धूप को थोड़ा-सा खिसका दिया।
गन्ध का रंग और धूप की हवा ऊपर तक चली आयी
जिसे मैंने दूसरी मंजिल की खिड़कियों तक जाने से रोक लिया।
फिर जमीन और आसमान दोनों से ही अलग
धूप, (और) गन्ध और मर्मर सब केवल मुझ तक रह गये।
मैं खुश हूँ कि स्वार्थी नहीं हूँ?

10 दिसम्बर, 1964

जबकि अपनी पहली कविता में एक अवधी लोकोक्ति 'महुआ रोवे ठाढ़ आम बौराय' की परिहासात्मक व्यंजना को वसन्त ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन में प्रयुक्त करते हैं।

कविताएँ तिथिक्रम से संयोजित की गयी हैं।

विविधा : ललित गद्य

रचनावली खण्ड चार के इस तीसरे उपखण्ड 'विविधा : ललित गद्य' की प्रकृति बहुरूपी-बहुआयामी है। गद्य में रचनाशीलता के विभिन्न विषय देवीशंकर अवस्थी की सृजन प्रक्रिया का हिस्सा हैं। विभिन्न विषयों पर मन की काल्पनिक उड़ान उनकी सृजनशीलता को स्पन्दित करती है और भावनात्मक स्फूर्ति को तर्क के फलक पर प्रस्तुत करती है। ऐसे ही कुल ग्यारह आलेख इस उपखण्ड में संयोजित हैं। तिथिक्रम से संयोजित ये आलेख जून 1955 से अप्रैल 1966 की अवधि के बीच विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। 'विवेक के कुछ और रंग' पुस्तक में इनमें से दस लेख संकलित हैं। एक आलेख 'साइकिल और घोड़े का अन्तर' पहली बार रचनावली में संकलित किया जा रहा है, वह भी आधा-अधूरा...। इस व्यंग्य लेख के दो पन्ने कहाँ विलुप्त हो गये, कुछ कहना नामुमकिन है। जबकि यह उनका पहला व्यंग्य लेख है और जून 1955 में 'प्रवाह' पत्रिका में छपा था। एक अन्तर्कथा के साथ रचनावली में इसे संगृहीत कर रही हूँ। देवीशंकर जी मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए स्थितियों, परिस्थितियों, व्यक्तियों, मनोवृत्तियों, आदतों, विश्वासों, धारा-विचारधारा, व्यवस्था-अव्यवस्था के जितने भी कोने-अतरे हैं और हो सकते हैं—सबका खुलासा ऐसे ठिकाने से करते हैं कि आप ठठा कर हँसेंगे भी और आह-आह करते हुए बचने की भी कोशिश करेंगे। 'शार्टकट और शून्य',

'इण्टरव्यू', 'चौराहा दर्शन', 'दिल्ली-दंगल', 'लेखक परिचय : यानी बकलम खुद' लेखों में व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ गद्य-शैली की नयी भंगिमा प्रस्तुत करती हैं। उपर्युक्त ये पाँचों लेख आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने 52 से 60 साल पहले थे। व्यंग्य का यह पुट इस उपखण्ड में संकलित सभी आलेखों में अन्तर्धारा की तरह अन्तर्निहित है।

'दुलारे दउवा' संस्मरणात्मक रेखाचित्र की गद्य-शैली में लिखा गया ललित आलेख है। 'पहाड़ और दोस्त' पत्र-शैली में पहाड़ यात्रा के सूचनात्मक विवरणों के साथ पहाड़ों के सौन्दर्य का वृत्तान्त है। 'डेफ़ोडिल के फूल' के माध्यम से सौन्दर्यबोध की हमारी अतिवादी मनोवृत्ति का अत्यन्त लालित्य के साथ वर्णन है। 'मतभेद और झगड़े का भेद' में शब्द-व्युत्पत्ति की मदद से वैचारिक अर्थ व्यंजनाओं का वर्णन व्यंग्य विधान के साथ किया है। 'छोटी यात्राएँ : फुटकर बातें' यात्रा कोलाज है जो डायरी में दर्ज अनेक वास्तविक घटनाओं को आपस में जोड़कर लिखा गया फोटो अलबम प्रतीत होता है।

विविधा : एकांकी

आलोचक देवीशंकर अवस्थी के उपलब्ध सात एकांकी (ध्वनि रूपक) में से चार 'श्रमजीवी' पत्रिका में जनवरी, 1957 से दिसम्बर, 1957 के बीच प्रकाशित हुए। 'परामर्श लिमिटेड एक अनाटक' 'कलजुग' पत्रिका में मार्च, 1957 के अंक में प्रकाशित हुआ था। दो एकांकी 'मदारी की करामात' और 'प्रेरक छन्दों की गूँज' किसी पत्रिका में प्रकाशित नहीं हुए परन्तु देवीशंकर जी के रचना संग्रह 'विवेक के कुछ और रंग' में संकलित हैं। रचनावली खण्ड चार के 'विविधा : एकांकी' उपखण्ड में ये सातों एकांकी तिथिक्रम से संगृहीत हैं। एक और एकांकी 'आखिरी भत्ता', जिसका जिक्र पत्नी कमलेश को लिखी 15.11.1956 की चिट्ठी में देवीशंकर अवस्थी के सूचित करने से मिलता है कि 'परसों 17 तारीख को शाम 6:10 से 6:30 बजे के बीच में मेरा लिखा फीचर 'आखिरी भत्ता' ब्राडकास्ट होगा।' 17.11.1956 को दिन में लिखे पत्र में भी फीचर सुनने की याद दिलाते हैं। आ. भाभी ने तो जरूर सुना होगा पर यह फीचर हमें मिल नहीं सका। आकाशवाणी, लखनऊ केन्द्र से इतने वर्षों बाद इसे प्राप्त करना असम्भव ही है। देवीशंकर अवस्थी के 'पत्नी के नाम चिट्ठी' से यह सवाल तो अवश्य उठता है कि अवस्थी जी ने अपने इस तरह के लेखन को 'फीचर' कहा है तो हम उसे एकांकी संज्ञा क्यों दे रहे हैं। फीचर वास्तव में पत्रकारिता का शब्द है और कहानी भी उसमें होती है। पर संवाद शैली में लिखे होने तथा मंचन [illegible] कारण अभिनेयता की पूरी सम्भावना से भरपूर [illegible] एकांकी कहना, इनकी परिधि का विस्तार करन[illegible]

'बोनस की बदौलत', 'सम्पति की सीख', 'तिल का ताड़' मजदूरों के जीवन से जुड़ी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं तथा मजदूर एकता से सम्बद्ध एकांकी हैं इसीलिए 'श्रमजीवी' पत्रिका में प्रकाशित भी हुए। श्रमिक नगरी कानपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'श्रमजीवी' के अब भी यदा-कदा अंक दिल्ली से प्रकाशित हो जाते हैं, जिन्हें देखकर भाईसाहब और कानपुर की याद आ ही जाती है।

'परामर्श लिमिटेड : एक अनाटक' मध्यवर्ग के असंगत मंसूबों से सम्बद्ध हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी है। 'मदारी की करामात' का मंचन सम्भव नहीं है, अन्यथा सभी एकांकी मंच पर अभिनेय हैं और ध्वनि माध्यम से रेडियो पर प्रसारित भी हो सकते हैं। 'मदारी की करामात' एकांकी का नुक्कड़ नाटक की शैली में या ध्वनि माध्यम से मंचन और प्रसारण बहुत रोचक शैली में सम्भव है। इस एकांकी में भाखड़ा नंगल बाँध के बारे में सभी जरूरी सूचनाएँ मिल जाती हैं। 1965 के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखे गये 'प्रेरक छन्दों की गूँज' एकांकी में भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, निराला, रामनरेश त्रिपाठी, शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामधारी सिंह दिनकर, माखन लाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन की देशभक्ति प्रधान कविताओं को आधार बनाया है और समूह गान शैली में रचित इस एकांकी के द्वारा देशवासियों में साहस और मनोबल का संचार करने के लिए उद्‌बोधनात्मक नाट्यव्यंजना प्रस्तुत है।

विविधा : चिट्ठियाँ और पत्र

पत्नी कमलेश के नाम चिट्ठियाँ : रचनावली खण्ड चार के इस अन्तिम उपखण्ड में देवीशंकर अवस्थी की पत्नी कमलेश के नाम लिखीं लगभग 70 चिट्ठियाँ संकलित हैं। 1 जुलाई, 1956 को विवाहोपरान्त एक-डेढ़ महीना साथ रहने के बाद पत्नी के विदा होकर मायके जाने के बाद 18 अगस्त, 1956 को पहला पत्र लिखा, वह भी लखनऊ से कानपुर आने के रास्ते में बस स्टेशनों पर रुकने के दौरान...। उन्होंने अगस्त 1956 से मई 1956 की 8 महीने की अवधि में लगभग 35 पत्र और जून 1956 से फरवरी 1964 के 8 वर्षों में भी लगभग 33 या 34 पत्र पत्नी को लिखे हैं। प्रेम और साहचर्य से उत्पन्न समझदारी का गहरा भाव माधुर्य को कितने उन्नत रूप में प्रतिष्ठित कर सकता है इसका अत्यन्त उच्च उज्ज्वल रूप इन पत्रों में पढ़ा जा सकता है। 25 फरवरी, 1964 का पत्र इन संकलित पत्रों में अन्तिम पत्र है। इस अवधि के बीच लिखे गये पत्र कानपुर के अतिरिक्त आगरा, वृन्दावन, लखनऊ, जालन्धर, दिल्ली से भी लिखे गये हैं। श्रीमती कमलेश अवस्थी की यह सदाशयता है कि अपने व्यक्तिगत प्रेम को उन्होंने सार्वजनिक बनाकर अपने अनन्य पति-प्रेमी के विलक्षण प्यार की सान्द्रता और भावसंकुलता से साहित्यजगत और सामान्य पाठक

को परिचित कराया। देवीशंकर अवस्थी उर्फ श्याम की यह प्रेम दीवानगी फरहाद और मजनूँ से अलग होकर भी एक-सी प्रतीत होती है। सामाजिक मान-मर्यादाओं और रीति-रिवाजों के कारण विवाहित होकर भी आठ-नौ महीने अलग रहना, एक-दूसरे को देखकर भी संकोचवश बात न कर पाने आदि की अति मार्मिक छवियाँ इन पत्रों में दर्ज हैं। गौना हो जाने के बाद की भी पत्नी के नाम की चिट्ठियों में भाव-विह्लता की कोई कमी नहीं प्रतीत होती। यहाँ तक पहले पुत्र के जन्म के बाद अस्पताल में कुछ दिन और रुकने के लिए समझाते हुए जिस प्यार के साथ वह पत्र (1.7.1958) एक पति और पिता के रूप में उन्होंने लिखा है वह अद्‌भुत है। गृहस्थ-जीवन में पूरी तरह रम जाने पर भी पत्नी के प्रति देवीशंकर अवस्थी के प्यार में रत्ती भर भी कमी नहीं आयी। कहीं भी आने-जाने पर वे पत्नी कमलेश को प्रीति-पत्र लिखते जरूर हैं और पत्नी से भी अपेक्षा रखते हैं कि वह भी उन्हें उसी प्रीति के साथ पत्र लिखें। वास्तव में देवीशंकर अवस्थी के प्यार की गहराई की दास्तान हैं पत्नी कमलेश के नाम चिट्ठियाँ। देवीशंकर अवस्थी की इन चिट्ठियों में व्यक्त प्रेम की गहराई की यह दास्तान यदि हमें अभिभूत करती है तो उन जैसे सजग, कर्मठ और जिम्मेदार बुद्धिजीवी की आर्थिक दबावों में निरन्तर जीवन जीने की दास्तान हमें व्यथित भी बहुत करती है। यहाँ तक कि दिसम्बर, 1964 की बीमारी के बाद 1965 की डायरी में 4 जनवरी को ही दिल्ली विश्वविद्यालय के मेडिकल अवकाश के नियम नोट कर लेते हैं।

मित्र नामवर सिंह को सम्बोधित पत्र : रचनावली में संगृहीत डॉ. नामवर सिंह को लिखे इन चार पत्रों में देवीशंकर अवस्थी की 'मित्रप्रियता' और 'संवादप्रियता' के माध्यम से दो समकालीन आलोचकों की आपसी साहित्यिक बातचीत एवं योजनाओं को क्रियान्वित करने के प्रयासों का विस्तृत परिचय मिलता है। ये ऐसे प्रयास हैं जो साठ के दशक के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को साक्षात कर देते हैं। इन पत्रों में साहित्यिक चर्चाओं, सूचनाओं, प्रस्तावों, आकांक्षाओं के साथ पारिवारिक आत्मीयता का भाव मैत्री और घनिष्ठता को स्थायित्व प्रदान करने में बहुत उत्प्रेरक है। डॉ. नामवर सिंह के देवीशंकर अवस्थी को लिखे पत्र 'हमकों लिख्यौ है कहा'* पत्र संकलन में संगृहीत हैं। उन पत्रों में डॉ. नामवर सिंह ने देवीशंकर अवस्थी के अनुज सुधीर (श्री उदयशंकर अवस्थी) की अत्यन्त स्नेहिल भाव से सूचनाएँ दी हैं। भाईसाहब ने नामवर जी को ही उनका स्थानीय संरक्षक बनाया था। देवीशंकर जी के डॉ. नामवर सिंह को लिखे इन पत्रों में अनुज काशीनाथ सिंह के प्रति भी वही उत्कण्ठा और प्रेम दिखाई देता है।

इस तरह रचनावली के 'विविधा : खण्ड चार' में आलोचक देवीशंकर अवस्थी के बहुआयामी एवं वैविध्यपूर्ण लेखन की यह साहित्य मंजूषा आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत है।

---

* 'हमकों लिख्यौ है कहा' पृ. 282, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, 2001

आभार स्वीकार

हमारा पूरा परिवार डॉ. नामवर सिंह का आभारी है कि उन्होंने अपने पास सुरक्षित रखे मित्र देवीशंकर अवस्थी के पत्रों को प्रकाशन के लिए हमें उपलब्ध कराया। हमारी भाभी श्रीमती कमलेश अवस्थी ने भाई साहब के सभी मित्रों और समकालीन साहित्यकारों से इस बाबत सम्पर्क किया, अनुरोध किया। लेकिन सहयोग डॉ. नामवर सिंह का ही मिला। साहित्यिक उतार-चढ़ावों के बावजूद पारिवारिक आत्मीयता ही आज भी हमारे सम्बन्धों में बनी हुई है।

देवीशंकर अवस्थी रचनावली के प्रकाशन की इस महती परियोजना में जैसे-जैसे काम आगे बढ़ा वैसे-वैसे हमारे मददगारों का कारवाँ भी बढ़ता गया है। सभी मित्रों, साथियों और शुभेच्छुओं का हार्दिक आभार।

अनेक वर्षों के प्रयासों के बाद दिसम्बर, 2017 के अन्तिम सप्ताह से रचनावली के काम ने रफ्तार पकड़ी और अब मार्च, 2018 के अन्तिम दिनों में पूर्णता की ओर अग्रसर है। इस गतिशील सहयोग के लिए वाणी प्रकाशन के प्रबन्ध निदेशक श्री अरुण माहेश्वरी, उनकी सम्पादकीय और मुद्रण विभाग की टीम का बहुत-बहुत हार्दिक आभार।

पिछले दिनों रचनावली की परिकल्पना, संयोजन और सम्पादन करने के दौरान आदरणीय अग्रज डॉ. देवीशंकर अवस्थी की डायरी, पत्र, कविताएँ एवं ललित गद्य पढ़ते हुए दुनिया भर के कितने ही लेखकों और उनकी किताबों व रचनाओं से परिचय हुआ। बचपन की तरह आज सत्तर साल की उम्र में भाईसाहब के तमाम मित्रों-दोस्तों के साथ एक बार पुनः रहने, घूमने, इन्तजार करने का अवसर मिला। कितनी ही भूली यादें ताजा हो गयीं। स्मृतियाँ और प्रगाढ़ हो गयीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि बड़े मामा के गोदाम से सुधीर भाई और मैं भाई साहब के दोस्तों—राममनोहर त्रिपाठी, कृष्णचन्द्र खेमका, अजित कुमार के साथ मेस्टन रोड तक अकसर घूमने जाया करते थे। सादर नमन के साथ उन सभी के स्नेह की स्मृतियाँ आज भी हमारा सम्बल और पाथेय हैं।

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं. मुंशीराम शर्मा 'सोम', डॉ. नगेन्द्र, डॉ. सावित्री सिन्हा, स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय', हरिवंश राय बच्चन, कृष्णशंकर शुक्ल, विद्यानिवास मिश्र, मोहन राकेश, कमलेश्वर, श्रीकान्त वर्मा, कवि कमलेश, कान्ता जी, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, महेन्द्र भल्ला, रवीन्द्र कालिया, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', रमेश गौड़, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि को देखने-मिलने का सौभाग्य घर पर ही मिला। श्री श्रीलाल शुक्ल, नेमिचन्द्र जैन, रेखा जैन, सुरेश अवस्थी, इन्दुजा अवस्थी, कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह, सुरेन्द्र तिवारी, कन्हैयालाल नन्दन, कैलाश बाजपेयी, विजयेन्द्र स्नातक, शिवकुमार मिश्र, पी.सी. जोशी आदि सदैव परिवार के शुभेच्छु

रहे। रचनावली के प्रकाशन के अवसर पर उपर्युक्त सभी रचनाकारों को स्मृतियों के साथ सादर नमन और श्रद्धासुमन।

डायरी, चिट्ठियों और संस्मरणों के पन्नों पर हिन्दी के रचनाकार ही नहीं परिवार के सदस्यों को भी खूब जगह मिली है। सबसे पहले अपनी परम आदरणीया अम्मा का सादर स्मरण कर रही हूँ। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद ऊपर उठने का हौसला उन्होंने कभी छोड़ा नहीं बल्कि हम भाई-बहनों के हौसले भी खूब बुलन्द किये। स्नेहमयी बड़ी बहन दिदिया की स्मृति को प्रणाम कर रही हूँ। दिदिया का प्रेम और सरोकार धरोहर की तरह हरदम याद रहेगा। परिवार में बड़े मामा, दद्दू-चच्चू और दद्दा की भूमिकाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण रहीं। इन तीनों महानुभावों ने समाज में, प्रदेश में अपनी उच्च सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक हैसियत के कारण सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीना सिखाया। रचनावली के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी का कृतज्ञता के साथ सादर स्मरण।

कृष्णा सोबती, प्रो. जी.के. दास, विष्णु खरे, विश्वनाथ त्रिपाठी, अशोक वाजपेयी, नित्यानन्द तिवारी, राजेन्द्र कुमार, मैनेजर पाण्डेय, मंगलेश डबराल, उदय प्रकाश, अर्चना वर्मा, नन्दकिशोर आचार्य एवं विजय कुमार का हमारे परिवार को सहयोग और मार्गदर्शन के लिए हृदय से आभार।

5 अप्रैल, 2018 को देवीशंकर अवस्थी के 89वें जन्मदिन पर लोकार्पण के माध्यम से आलोचना : संवाद, आलोचना : सरोकार, आलोचना : भक्ति एवं विविधा की यह साहित्य निधि हिन्दी साहित्य संसार को समर्पित है।

11 मार्च, 2018

रेखा अवस्थी

220, सहयोग अपार्टमेंट्स
मयूर विहार, फेज-I
दिल्ली-110091
मो. : 9818183255

डायरी
(1948-1965)

1948 1952 1953

1954 1955 1956

1957 1958 1959

1960 1961 1962

1964 1965

1948

बृहस्पतिवार, 1 जनवरी, 1948

लालगंज में रहा। पढ़ाई और स्वास्थ्य के बारे में बातें हुईं। आगे प्राइवेट पढ़ने का तय हुआ। आँखों की तकलीफ के बारे में भी बात हुई। (about eye operation)

खर्च Nil.

शुक्रवार, 2 जनवरी, 1948

धोतियाँ मंजूर कराने के लिए रायबरेली गया। 3 जोड़ा जनानी मंजूर हुए। 5 जोड़े लाकर गद्दी में जमा किये। शाम को लारी से आया।

शनिवार, 3 जनवरी, 1948

सवेरे कानपुर होकर लखीमपुर के लिए रवाना हुआ। बड़े मामा से रुपये मिले। रात को बारह बजे लखीमपुर पहुँचा। पिता जी* से eye operation के बारे में बात हुई।

जमा ३०	खर्च	
	२।)	किराया कानपुर
	=)	राह खर्च
	=)	कुली
	१=)	इक्का
	)॥	अमरूद
	१=)	इक्का
	=)	कुली
	१।।=)	किराया लखनऊ
	।)	राह खर्च
	७॥)	किराया लखीमपुर

* पं. वंशीधर मिश्र (देवीशंकर जी के ममेरे बड़े भाई डॉ. रामनारायण पाण्डेय के ससुर) लखीमपुर और कांग्रेस के सशक्त नेता।

।)	कुली
।)	जलपान
=)	कुली
॥)	इक्का
)॥	फुटकर
१४ ।=)	

सोमवार, 5 जनवरी, 1948

लखीमपुर रहा। शाम को डॉ. शर्मा आये, लेकिन instruments न लाने के कारण देख न सके। दूसरे दिन को बुलाया। दद्दा को पत्र लिखा। मुन्नू से मिला।

खर्च Nil.

मंगलवार, 6 जनवरी, 1948

लखीमपुर में रहा। डॉ. शर्मा को दिखलाया। उन्होंने fibrolysin बताया और normal saline prescribe किया। तबीयत कुछ भारी रही।

खर्च ३।।) मफलर

बुधवार, 7 जनवरी, 1948

लखीमपुर में रहा। शाम को मीनार के सम्बन्ध में पिता जी से पूछा तो पता चला कि यह Cavana's folly कही जाती है। Cavana साहब ने दुर्भिक्ष निवारणार्थ इसे बनवाया था, लेकिन सरकार के मंजूर न करने पर यह उनकी तनख्वाह से काटी गयी।

खर्च Nil.

शाम के समय स्वामी दयाल के साथ महराज नगर गया। गाँव, दद्दा, प्रताप को पत्र लिखा।

बृहस्पतिवार, 8 जनवरी, 1948

लखीमपुर में रहा। पिता जी लखनऊ में रहे। हम और भाभी वगैरह मोटर द्वारा घूमने गये।

शुक्रवार, 9 जनवरी, 1948

लखीमपुर में रहा। दोपहर तक किसान प्रदर्शन होता रहा। शाम को 4.30 बजे मैं पिता जी, माता जी, भाभी, गोपाल, बेबी* के साथ सीतापुर गया। सीतापुर में

---

* डॉ. रामनारायण पाण्डेय की 2 वर्षीय बेटी।

डॉ. महेश को आँख दिखलाई। उन्होंने Operation की सलाह दी। रात को 8 बजे लखीमपुर आ गया। Operation की 11 तारीख निश्चित हुई।

सोमवार, 12 जनवरी, 1948

मोजे, तौलिया, चप्पल, खटपटी, फल खरीदे।

मंगलवार, 13 जनवरी, 1948

।)	दूध
१)	लकड़ी
।)	प्रेमनारायण जीजा के नाम
।।।=)	इक्का
१)	किराया लारी
१=)	पिसाई
।)	साबुन
।।)	साग हल्दी नमक
५)	गाड़ी भाड़ा
१)	खुराकी पल्लेदारों की
२।)	किराया रेल
१३।।=)	
।।।)	
१४।=)	

मंगलवार, 20 जनवरी, 1948

कौटलीय अर्थशास्त्र– By Dr. R. RamShashtri
प्रकाशक– मैसूर राज्य
कौटलीय अर्थशास्त्र–भगवान दास केला।
An outline of the history of Kashmir– By R.C. Kak
वैदिक सम्पत्ति–रघुनन्दन शर्मा
(आर्य साहित्य, मण्डल लिमिटेड, अजमेर)

शुक्रवार, 30 जनवरी, 1948

राष्ट्रपिता की हत्या की गयी। मोतीपुर रहा।

शनिवार, 31 जनवरी, 1948

मोतीपुर रहा। बापू तुम महान थे। महान ही तुम्हारी मृत्यु हुई।

रविवार, 1 फरवरी, 1948

लखीमपुर आ गया।

मंगलवार, 3 फरवरी, 1948

लालगंज रवाना हुआ।

बृहस्पतिवार, 5 फरवरी, 1948

Indian History Part II– By Aiyanger.
Chapt. II

शनिवार, 17 अप्रैल, 1948

आँख का ऑपरेशन (**Eye operatization**)

सोमवार, 17 मई, 1948

मनुष्य परिस्थितियों का दास है या नियामक? जीवन में त्याग का क्या महत्त्व है? प्रेम परिवर्तनशील है या चिर? जीवन का सुख क्या है? मस्ती? पाप क्या है?

मंगलवार, 18 मई, 1948

संसार में पाप कुछ भी नहीं है। वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं परिस्थितियों का दास है।

बुधवार, 19 मई, 1948

माखनलाल

हृदय के निर्मल भावों में
सब अभाव हों हरे-भरे।

प्रसाद

मधुप कब एक कली का है।
पाया जिसमें प्रेम रस सौरभ और सुहाग

बेसुध हो उस कली से मिलता भर अनुराग
बिहारी कुंज गली का है।

बृहस्पतिवार, 20 मई, 1948

'कवित्व वर्णमय चित्र है जो स्वर्गीय गान गाया करता है।'

शुक्रवार, 21 मई, 1948

Practical Science in life depends more upon physical health than is generally imagined.

As a rule life is what we choose to make it.

शनिवार, 22 मई, 1948

वीर्य शक्ति है। शक्ति जीवन और तरुणाई है। शक्ति की कमी बुढ़ापा है। और शक्ति का नाश ही मृत्यु है।

रविवार, 23 मई, 1948

'1. परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है। निश्चेष्ट शान्ति मरण है।
2. पुरुष है—कुतूहल और प्रश्न, और स्त्री है—विश्लेषण, उत्तर और सब बातों का समाधान।
3. अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का, शिव का, सत्य और सुन्दर संगीत का समारम्भ होता है।
4. पवित्रता की माप है मलिनता, सुख का आलोचक है दुख, पुण्य की कसौटी है पाप।
5. जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड़ बनाकर विश्राम करती है वही स्वर्ग है, वही विहार का, वही प्रेम करने का स्थान, स्वर्ग है। और वही इसी लोक में मिलता है। जिसे नहीं मिला वह संसार में अभागा है।
6. नीरव जीवन और एकान्त व्याकुलता कचोटने का सुख मिलता है।'

मंगलवार, 25 मई, 1948

1. Prevention is better than cure.
2. The world is tragedy to more who feel and comedy to those who think.

3. Action is thy duty reward is not thy concern.
4. A man without a purpose is a ship without rudder.
5. An idle man's brain is devils workshop.
6. Eat to live but live not to eat.
7. Example is better than precept.
8. Fortune knocks once atleast at everyman's gate.
9. Poverty is next door to stupidity.
10. Sweat are the uses of adversities? Shakespeare
11. The old order changeth yielding place to new. Tennyson
12. A think of beauty is a joy forever. Keats
13. Beauty is truth, truth is beauty. Keats
14. We learn in suffering what's we teach in song. Dryden
15. Impossible is a word only to be found in fool's dictionary. Napolean
16. Some of our sweetest songs are those that tell of saddest things. Shelly
17. In character, in manners, in style in all things, the supreme excellence is simplicity. Long fellow
18. The world is comedy to those who think and tragedy to those who feel. Horace Walpole
19. A picture is a poem without words. Horace Walpole
20. That government of the people, by the people, for the people shall not perish from the earth. Lincoln
21. Art is long and True is feeling.

शनिवार, 29 मई, 1948

रामकुमार वर्मा

मैं भी तो चलता रहता हूँ
निशि दिन आठों धाम
नहीं सुना मेरे भावों ने
शान्ति शान्ति का नाम
हास्य कहाँ है उसमें भी है रोदन का परिणाम
प्रेम कहाँ है घृणा उसी में
करती है विश्राम।

रविवार, 30 मई, 1948

अंचल

यह राह नहीं मेरी देखी
कुछ भय सा लगता चलने में
जीवन से मुझको मोह नहीं
कब मैं मरने से.......
पर पथ का यह—एकाकीपन
जैसे मुझको खाये जाता।

सोमवार, 31 मई, 1948

That is the best state of Society in which there is some work for every man's leisure and some leisure for every man's work.

मंगलवार, 1 जून, 1948

नारी पुरुष की एकमात्र कमजोरी है।

बुधवार, 2 जून, 1948

दो नैना हैं सावन भादों
नित बरसत हैं शाम सबेरे।

x x x

हो जाने दे गर्क नशे में
मत आने दे फर्क नशे में
ज्ञान ध्यान पूजा पोथी के
फट जाने दे हर्फ नशे में।

वृहस्पतिवार, 3 जून, 1948

Beauty is worst than wine, it intoxicates both holder and beholder.

(सुन्दरतम)

बापू तुम तो संसारी थे,
भगवान न बनना था तुमको
इस दानवता की दुनिया में
इन्सान न बनना था तुमको।
इस पतित राष्ट्र के अकलुष बापू

रंगे तुम्हारे उष्ण रक्त से
आज राष्ट्र के इन हाथों का
तुमको बारम्बार प्रणाम।

शुक्रवार, 4 जून, 1948

(विश्वासघात)
नारी की झांई परत, अन्धा होत भुजंग
कबिरा तिनकी कौन गति, नित नारी के संग

x **x** **x**

दुनिया तेरा दूसरा नाम मक्कारी और स्वार्थ है।

शनिवार, 5 जून, 1948

Read not to loose (lose) yourself but read to find yourself. Love laughs up at locksmith.

रविवार, 6 जून, 1948

मुहब्बत की नहीं जाती
मुहब्बत हो ही जाती है।
निगाहें चार होते ही
मुहब्बत रंग लाती है।
मोहब्बत के मरीज़ों को कहते सुना हमने
मोहब्बत की नहीं जाती
मोहब्बत हो ही जाती है।

सोमवार, 7 जून, 1948

धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है। धर्म है ब्रह्म के सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति जब भीतर का चित्त बाहर के सत् का साक्षात्कार करता है तब आनन्द का आविर्भाव होता है।

हमारे परस्पर के व्यवहारों का प्रेरक हमारा रागात्मक या भावात्मक हृदय होता है।

मंगलवार, 8 जून, 1948

गरुड़ध्वज
दुखी प्राणी सत्य का स्वरूप देख लेता है।
आसक्ति जिस किसी की हो प्राण का मोह नहीं करती।

केवल तम जीवन की अस्वीकृति है और केवल भौतिक विलास जीवन का उपहास।

बुधवार, 9 जून, 1948

निर्माण ही में मनुष्य अमर.....है।
निर्माण में भेद का भाव कहाँ है?
भोग्य से तुष्टि और तुष्टि से प्राप्ति होती है।
नारी शक्ति से ही पुरुष को विजय मिलती है।
प्रकृति के संहार में निर्माण के बीज रहते हैं।

बृहस्पतिवार, 10 जून, 1948

पथिक (त्रिपाठी)
मिलन अभी है मधुर प्रेम का
और विरह जीवन है।
विरह प्रेम की जाग्रत गति है
और सुषुप्ति मिलन है।
जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म निरत हैं
धुन है एक न एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।
छिटक रही थी स्निग्ध चाँदनी पवन तान भरता था।
ज्योत्स्ना में पत्ते हिलते थे जल छप-छप करता था।

सोमवार, 21 जून, 1948

निर्मला* का देहावसान।

बुधवार, 30 जून, 1948

घड़ी खरीदी रात को 9 बजे
K.G. Thakurdas, Mall, Kanpur.
Name – Alpina (Swiss made)
Dial – Shady
No. – 272340
Size – 5½
All proof. Rs. 35.

---
* अवस्थी जी की मँझली बहन, आयु 10 वर्ष।

सोमवार, 9 अगस्त, 1948

१=) टिकट
)।। अख़बार
-) आम
=) इक्का
=)।। दही
५) घड़ी
१) सिनेमा
=) दूध
=)।। दही
=) जलेबी
१।।) इक्का
६।=)॥

मंगलवार, 17 अगस्त, 1948

गाँव में आज पूजा हुई।

मंगलवार, 24 अगस्त, 1948

४।) टिकट लालगंज से कानपुर
=)। टिकट सधऊ मामा
=) बर्फी बीघापुर
।) कुली कानपुर
॥=) इक्का फीलखाना
=)॥ कुली फीलखाना
=)।। दही
=)।। दूध

बुधवार, 25 अगस्त, 1948

२) इक्का डॉ. के यहाँ
१।।) दवा सुधीर
।) प्रसाद तपेश्वरी देवी
३।।।)

शुक्रवार, 27 अगस्त, 1948

।।=)।।	Cinema Ticket
-)	Loss by Lakshmi
-)	Refreshment Moongfali
)।।	Cycle Stand

शनिवार, 28 अगस्त, 1948

)।।	साइकिल में हवा
।=)	Intermediate forms and regulations

मंगलवार, 28 सितम्बर, 1948

१=)	तौलिया (पितृ तर्पण के लिए)
=)	पितृ तर्पण की पुस्तक
४)	फोटो
)॥	साइकिल में हवा

बुधवार, 29 सितम्बर, 1948

Dalendrine Tablets — १) पेड़ा पिण्डदान एवं पण्डित भोजन को

रविवार, 3 अक्तूबर, 1948

१५)	दूध वाले का हिसाब
२०)	जीजा को दिये फाउण्टेन पेन फोटो और Stationery के लिए
२)	साधैं
२=)	टिकट
	इक्का
	कुली
	प्लेटफार्म टिकट
	Sound Box की बनवाई
	कुली लालगंज

मंगलवार, 12 अक्तूबर, 1948

चाय, मूँग की दाल
Hydrozen Peroxide
Scented Hair Oil, छोटे मामा से रेडियो वाले योगी का बताया। छींट का थान नापना। माई के पास सामान रखना। सुधीर को फल भेजना।

बुधवार, 13 अक्तूबर, 1948

कानपुर से सामान लेना व गाँव से मँगवाना। Papers 'Visharad' Fountain Pen, फोटो, ऊनी कपड़ा, काँच का गिलास, प्याला, गुड़, फंकिया, भगोना।

बृहस्पतिवार, 2 दिसम्बर, 1948

मध्यमा रोल नं. 1966 (1966)

शुक्रवार, 3 दिसम्बर, 1948

Intermediate - 8145

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥
निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥

Friday 16 January, 1948

शुक्रवार १६ जनवरी सन् १९४८ ई०—सं० २००४ पौष शुक्ल ५
ह० माघ २] [ھ ١٣٦٧ ربیع الاول ٤ جمعہ

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥३२॥
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥

Saturday 17 January, 1948

शनिवार १७ जनवरी सन् १९४८ ई०—सं० २००४ पौष शुक्ल ६
ह० माघ ३] [ھ ١٣٦٧ ربیع الاول ٥ سنیچر

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१६॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥१७॥

Monday 20 September, 1948

सोमवार २० सितम्बर सन् १९४८ ई०—सं० २००५ आश्विन कृष्ण २
बं० आश्विन ४] [ھ ۱۳۶۷ ذیقعدہ ۱۶ دوشنبہ

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥१९॥

Tuesday 21 September, 1948

मङ्गलवार २१ सितम्बर सन् १९४८ ई०—सं० २००५ आश्विन कृष्ण ३
बं० आश्विन ५] [ھ ۱۳۶۷ ذیقعدہ ۱۷ منگل

1952

मंगलवार, 1 जनवरी, 1952

प्रातःकाल शीघ्र ही उठकर ट्रेन द्वारा लालगंज से कानपुर आया। बीवापुर में मिस्टर, भाई चच्चू तथा ईश्वर (लखनऊ) मिले। कमरे की सफाई कानपुर पहुँचकर की। शाम को मनीराम बगिया होता हुआ गयाप्रसाद तथा मारवाड़ी पुस्तकालयों में गया। मारवाड़ी पुस्तकालय में हरीश जी मिले। रोमाण्टिक साहित्यशास्त्र के बारे में जानकर मनीराम बगिया से खाना खाता हुआ रात में श्याम नारायण के साथ गुदाम आया।

१। = टिकट
॥) रिक्शा कुली
१७॥) दवा पाण्डे जी
१६॥ =)

बुधवार, 2 जनवरी, 1952

सवेरे उठने में कुछ देर हो गयी। झटपट तैयार होकर कॉलेज गया। कॉलेज से डाकखाने होते हुए, साहित्य निकेतन होकर, मनीराम बगिया से गुदाम आया। किताबें बाहर की आलमारी में ठीक कीं। खाना खाकर चौक के डाकखाने में धर्मयुग पहेली रजिस्ट्री करके रोमाण्टिक साहित्यशास्त्र की फिराक में घूमता हुआ खेमका के घर गया। 5 पुस्तकें उनसे लेकर गुदाम आया। गाँधी नगर तिवारी जी के पास गया। शंकरदयाल बीमार थे। वहाँ से फिर साहित्य निकेतन होकर रात में आकर देर से भोजन करके 11 बजे के लगभग सोया।

१॥) पोस्टल ऑर्डर
=)॥ रजिस्ट्री
॥) घड़ी का पट्टा
॥) आजकल
=) चाय
३=)॥

बृहस्पतिवार, 3 जनवरी, 1952

सवेरे तैयार होकर मनीराम बगिया से रुपये लेकर लखनऊ गया। डॉ. बोस से पण्डितजी के बारे में पूछकर अपनी पेट की दवा ली। A.P. Sen Road पर खाना खाया। खाना खाकर सी.बी. गुप्ता के यहाँ जाकर दद्दा से मिला। लौटकर Radio पर कमेण्ट्री सुनता रहा। फिर बाँदा पैसेन्जर से कानपुर लौट आया। गुदाम में दवा रखकर मनीराम बगिया में खाना खाकर गुदाम लौट आया। मनीराम बगिया में गाना बजाना हो रहा था। बिट्टी दिदिया मिलीं।

२॥-) टिकट लखनऊ आने-जाने की
।) किराया बस
-) वजन कराई
-) सिंघाड़ा
३—)

शुक्रवार, 4 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। नीरज जी* के साथ लौटते हुए मनीराम बगिया, दुकान पर से घर आया। बक्से की किताबें और अलमारी ठीक की। नहा-खाकर कंट्रोल ऑफिस सुरजू मामा के परमिट की तारीख बढ़वाने गया। वहाँ से लौटकर गुदाम में सब हिसाब-किताब ठीक किया। शाम को पाण्डे जी के Calcium gluconate के इंजेक्शन लाया। शोभनाथ मामा के हाथ सामान लालगंज भेजा।

शनिवार, 5 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। कॉलेज में पं. मुंशीराम जी के उत्सव के सम्बन्ध में विचार-विमर्श हुआ। कॉलेज से पं. ब्रह्मानन्द** के घर में निमन्त्रण देता हुआ स्टेशन गया। सुमति को उनके घर पहुँचा कर गुदाम आया। नहा-धोकर खाना खाया तथा कुछ देर पढ़ता रहा। सुमति के साथ सूरज, सत्तू आये थे। शाम को पाँच बजे के लगभग पं. लक्ष्मीचन्द्र जी वाजपेयी के घर निमन्त्रण देने गया। लक्ष्मीचन्द्र जी से लगभग पौन घण्टे साहित्य-चर्चा होती रही। हितैषी के पास से होकर प्रणयेश को निमन्त्रण देते हुए गयाप्रसाद लाइब्रेरी में जाकर सुगम वर्ग पहेली नं. 02 का हल देखा। 5 त्रुटियाँ निकलीं। मनीराम बगिया में खाना खाता हुआ भारत रेस्तराँ से घर आया। शोभनाथ मामा लालगंज से आ गये थे। दूकान में बुलावा हुआ। रात को दूकान से लौटकर पढ़ता रहा। लक्ष्मीकान्त पाण्डेय मिले।

---

* कवि नीरज

** कानपुर के वरिष्ठ नेता, कांग्रेस पार्टी

रविवार, 6 जनवरी, 1952

सवेरे Extra Class पं. प्रेमनारायण का था। उसमें गया। वहाँ से 10½ बजे के करीब लौटा। सूरज और सत्तू के हाथ दिदिया का सामान लालगंज भेजा। हजामत बना करके नहाया। खाना खाकर थोड़ी देर सोता रहा। तीन बजे के लगभग तैयार होकर मनीराम बगिया गया। वहाँ से चच्चू की कार में कॉलेज गया। कॉलेज के सामने एक रिक्शे और मोटर कार का एक्सीडेण्ट हो गया था। रिक्शे वाले को मोटर में बैठाकर अस्पताल भिजवाया तथा उसका रिक्शा वगैरह उठवाकर एक किनारे रखवाया। कॉलेज में फोटो ग्रुप और पार्टी में सम्मिलित हुआ। आयोजन का प्रारम्भ किया। पण्डित जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। साहित्य और संगीत-गोष्ठी के पश्चात् मनीराम बगिया से चेस्टर लेकर लालजी राम की कवि-गोष्ठी में गया। राममनोहर त्रिपाठी* मिले। रात में बड़ी देर तक नींद नहीं आयी।

सोमवार, 7 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। विष्णुकुमार तिवारी को एक चिट्ठी ड्राफ्ट कराई। मनीराम बगिया होता हुआ घर आया। दिन भर घर में पढ़ता रहा। शाम को मनीराम बगिया गया। खाना खाया। लक्ष्मीकान्त पाण्डेय मिले। राममनोहर ने आने को कहा था, पर आये नहीं।

मंगलवार, 8 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। लौटते समय रास्ते में दद्दू चच्चू ने पण्डित ब्रह्मानन्द के जुलूस में आने के लिए कहा। दोपहर में खाना खाकर डेढ़ बजे पण्डित जी के जुलूस में मिस्टर, लक्ष्मी के साथ गया। 4:30 बजे तक जुलूस के साथ रहा। बेगमगंज से वापस चला आया। 5:30 के लगभग पण्डित जी के साइकिल जुलूस पर हटिया में आक्रमण किया गया। उसमें जाकर शान्ति कराई। सवेरे बड़े मामा लखनऊ जाते समय 1100/- दे गये। 100/- ठाकुर प्रसाद के मार्फत बैंक भिजवाया। 1000/- जुलूस में जाते समय ठाकुर प्रसाद को दे गया। शाम को जल्दी ही सोया।

बुधवार, 9 जनवरी, 1952

सवेरे देर से उठा। कॉलेज गया। मनीराम बगिया होकर लौटा। कुछ देर तक पढ़ता रहा। 11:30 बजे के लगभग मनीराम बगिया साइकिल लेने गया। साइकिल बाबू ले गये थे। छोटकउनू बाबा आ गये। चाय पीकर लक्ष्मी के साथ बिट्टो की धोती

---

* हिन्दी कवि, गीतकार। बाद में महाराष्ट्र में कांग्रेसी सरकार में मन्त्री रहे।

छपने दी। फीलखाना, बिरहाना रोड होते हुए खेमका के घर गया। वह मिला नहीं। तदुपरान्त लाल इमली एजेन्सी होकर लाइब्रेरी गया। लाइब्रेरी से मनीराम बगिया आकर हजारी प्रसाद द्विवेदी की हिन्दी वार्ता सुनी। रमारतन चच्चू रास्ते में मिल गये। रामरतन घर पर आये। रात में घर आकर पढ़ता रहा। शोभनाथ मामा लालगंज से पत्र और रुपये लाये थे। उन्होंने ठेले पर का सब माल भी उतारा।

बृहस्पतिवार, 10 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। लौटते समय डबल रोटी और मक्खन की टिकिया लेकर आया। रात में पंची आये थे। घर आकर पढ़ता रहा। फिर मक्खन का डिब्बा लाया। खाना खाकर प्रेमनारायण जी के घर गया। वहाँ से सुमति के घर चाय पी। सवेरे डॉ. मिश्रा ने चाय पर बुलाया था। सुमति के यहाँ से गुदाम आया। फिर हूलागंज गेहूँ देने गया। हूलागंज से खेमका और शर्मा फोटोग्राफर्स के यहाँ होकर बगिया आया। लक्ष्मी कपड़ा डालने बगिया से भजन के यहाँ आये। दूध पीकर पढ़ता रहा।

शुक्रवार, 11 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। वहाँ से लक्ष्मी से साइकिल लेकर B.N.S.D. कॉलेज गया। तिवारी जी नहीं मिले। साइकिल बगिया में रखता हुआ घर आया। बराबर पढ़ता रहा दोपहर में सो गया। शाम को घर से निकला। ठण्डक अधिक थी। हाल्सी रोड में पण्डित जी के चुनाव कार्यालय में दद्दू चच्चू, करुणेश से मिला। उनको समय देने का वायदा किया। परेड पर किशोर के यहाँ गया। वहाँ से साहित्य रत्नालय होता हुआ विद्यापति पदावली लेकर मनीराम बगिया आया। कापियाँ लेकर गुदाम आया।

शनिवार, 12 जनवरी, 1952

सवेरे Extra Class में गया। ठण्डक अधिक थी। वहाँ से लौटकर मनीराम बगिया गया। क्रिकेट मैच का टिकट खरीदने गुदाम होकर K.G. Thakurdas के यहाँ गया। मनीराम बगिया में खाना खाकर ग्रीनपार्क मिस्टर के साथ गया। दोपहर लंच टाइम मनीराम बगिया में फिर टिकट रखकर ग्रीनपार्क कार से गया। शाम को लौटकर खाना मनीराम बगिया में खाया। गुदाम आया। शोभनाथ लालगंज गये।

रविवार, 13 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। वहीं से मैच में गया। दोपहर का खाना वहीं पर खाया। शाम को मनीराम बगिया होकर खाना खाकर गुदाम लौटा। लालटेन में बड़े मामा काम कर रहे थे। अतः दूध पीकर शीघ्र ही सो गया।

सोमवार, 14 जनवरी, 1952

सवेरे देर से उठकर मनीराम बगिया गया। चाय पीकर दद्दू चच्चू की अलमारी से अपनी धोती निकालकर गुदाम आया। नहा धोकर 1000/- बड़े मामा से लेकर दद्दू चच्चू को दिये। मैच देखने गया। दोपहर में मैच समाप्त हो गया। मनीराम बगिया में रसगुल्ले वगैरह खाकर गुदाम आया। जय नारायण के यहाँ रास्ते में बिट्टो को धोती कढ़ने को दी। जयनारायण नहीं मिले। गुदाम में शोभनाथ मामा लालगंज से आये थे, पत्र दिया। बड़े मामा, रामशंकर लालगंज जा रहे थे। उनके साथ संतरा, टमाटर भेजे। दवायें लाया। मनिराम बगिया में खाना खाया। 8:30 बजे घर आया।

मंगलवार, 15 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। कॉलेज से गयाप्रसाद लाइब्रेरी होता हुआ गुदाम आया। लालगंज को पत्र लिखा। धोबी कपड़े लाया। हजामत वगैरह बनाई। खाना खा-पीकर मनीराम बगिया गया। वहाँ से 2 बजे के लगभग पण्डित ब्रह्मानन्द के प्रधान चुनाव कार्यालय में बैठा रहा। दद्दू, चच्चू, करुणेश* जी इत्यादि मिले। 4:30 बजे गुदाम गया। पढ़ता रहा, फिर लालगंज सामान भेजकर उमा के यहाँ भाभी का ब्लाउज ठीक होने को दिया। पण्डित जी के ए.बी. रोड चुनाव कार्यालय गया। मनीराम बगिया में खाना खाकर गुदाम आया।

बुधवार, 16 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। नरेश भाई** के साथ लौटकर मनीराम बगिया होता हुआ गुदाम आया। दोपहर तक पढ़ता रहा। खाना खा-पीकर पाण्डे जी के लिए सन्तरे लाया। पण्डित जी के चुनाव कर्यालय में जाकर लिस्ट में Correction करवाये, कुछ कार्ड लिखवाए, तदुपरान्त मनीराम बगिया से साइकिल लेकर सुमति के यहाँ गया। रामरतन मिले। सुमति के यहाँ से मालरोड और बिरहाना रोड में लाउडस्पीकर्स छोटे मामा के लिए पता लगाता रहा। रात में 9:30 बजे गुदाम आकर खाना खाया। 11 बजे तक पढ़ता रहा, फिर सो गया।

बृस्पतिवार, 17 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। लौटकर पढ़ता रहा। दोपहर में खाना खाकर सो गया। फिर पण्डित जी के चुनाव कार्यालय में जाकर कार्ड लिखवाता रहा। मनीराम बगिया में खाना खाकर रामरतन के साथ बिरहाना रोड होकर गुदाम आया। रात को 12 बजे तक पढ़ता रहा। बड़े मामा लखनऊ गये।

---

* कवि

** नरेश भाई—नरेश चन्द्र चतुर्वेदी

शुक्रवार, 18 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज से मनीराम बगिया होता हुआ गुदाम आया। दोपहर में बड़े मामा लखनऊ से लौटकर आये। दोपहर में सोता रहा। फिर लाउड स्पीकर के लिए गया। मनीराम बगिया में अमृत बाबू के Through तय करके दुकान आया। रेल पर सामान देने गया। वहाँ से 33 नं. चेक के ऑफिस में गया। साहित्य निकेतन तथा रत्नालय में गया। प्रेम नारायण जी, प्रणयेश जी तथा आनन्द जी मिले। लौटकर मनीराम बगिया में खाना खाकर गुदाम आया।

शनिवार, 19 जनवरी, 1952

सवेरे कॉलेज गया। लौटकर गुदाम से दूध इत्यादि पीकर लाउड स्पीकर की फिराक में गया। उन्होंने भाव तेज बताया पर अमृत से मिलकर ठीक-ठीक किया। दोपहर में मोटर से रामशंकर, शिवनाथ एवं भारत सिंह को लालगंज भेजा। लाउड स्पीकर नहीं मिल सका। बिरहाना रोड में ताँगा, साइकिल एक्सीडेण्ट में काफी चोट खा गया। शाम को राजू के साथ फिर लाउड स्पीकर देखा-भाला। तय नहीं हुआ। रात में नौ बजे खाना खाकर घर आया। थोड़ी देर पढ़ता रहा, फिर सो गया।

दूध का हिसाब साफ।

रविवार, 20 जनवरी, 1952

सवेरे Extra Class में गया। 9 बजे के लगभग लाउड स्पीकर वाले के पास गया। उसे 25/- per day के हिसाब से तय करके बड़े मामा के पास गया। उन्होंने उसे 12 बजे के लिए आने को कहकर लौटा दिया। फिर तय नहीं किया। मैं मनीराम बगिया गया। लौटकर बाल कटवाये। नहा धोकर खाना खाकर पढ़ता रहा। 3:30 बजे मोटर ठीक होकर आने पर शोभनाथ मामा उसे लेकर लालगंज गये। मैं शाम को धर्मशाला होता हुआ नेहरू जी की सभा में गया। रात को लौटकर खाना बना खाकर सोया।

सोमवार, 21 जनवरी, 1952

Went to college in the morning, after returning from there came to godam and began the Ram's Ithihas at 12 A.M. After bathing reached to shop and after that cooked the food at 2 P.M. Mama refused to take food and I went on again in my study room, after taking food. Mister and Lakshmi departed for village by the noon train. I went to Mani Ram Bagia and from there to Gandhi Nagar, through Dukan, met Shanker Dayal, and returned from there at 9:15 P.M. Cooked the food and went for sleeping in the night at about 11:30 P.M.

मंगलवार, 22 जनवरी, 1952

Went to college, listened Acharya Kriplani and returned to godam 12:15 P.M. After taking my bath and food I took some rest. In the evening met with Khemka in his house and then visited library from there via buddha Devi reached in the Moolganj at Raja Daddu's shop and from there to Apna Restaurent and Sahitya Niketan. In the night after taking my food in Bagia came to godam where Prayag Narayan (dada) and Bhim Shanker were waiting, slept late in the night.

बुधवार, 23 जनवरी, 1952

Went to College, returned via G.P. Library, Bagia and Daddu's shop. In the shop asked the details of Guptaji's election and went to godam where after taking food came to Dukan from where went in the search of loud speakers, after enquiring in the various shops of Meston Road and Birhana Road decide to hire from Sarna & Co. Then gave advance Rs. 58/- to the owner, then went to station accompanied with Raju and sent the loud speaker with Jaggu to Lalganj, From station went to Mall Road, Library and Bagia then came to godam taking Glucose and Butter.

बृहस्पतिवार, 24 जनवरी, 1952

Went to college in the morning, returned with Mr. V.K. Tiwari on his cycle, went to Mani Ram Bagia, G.P. Library and Medical store. Returned to godam via Mandi. Then again came to Mani Ram Bagia, taking Bhabhi with myself reached station. She went to Sathni* with Bhai Chachchu and Babu. I reached Lalganj for election purpose. After ½ an hour Manyeen and Diddi with Sudhir and Suraj came from village. Mama came at 9 P.M. accompanied with Jata Shanker. After talking and consultations I slept.

शुक्रवार, 25 जनवरी, 1952

Mama accompanied with Mr. Diwakar Shastri went for their election tour without giving any instructions to me. After taking my meals I departed by motor lorry for Ghatampur at 12:30 P.M. Reached Ghatampur at 2 : 30 pm. Met with all the members of Sathni family and other villagers, I casted my vote for Shri Vishnu Dutta shukla in his Tarazu symbol for state assembly and one to congress and one to socialist for Parliament. Returned to Lalganj by night train with Babu. I met in the way at Bighapur Shobhnath, Kripa Shanker and Bhim Shanker.

* सथनी–अवस्थी जी का पैतृक गाँव।

शनिवार, 26 जनवरी, 1952

Went on the election tour accompanied with Mr. Shastri in the morning at 8:30 A.M. Reached Gegason at about 10 A.M. After addressing two meeting there, started for Dalmau. But in the way motor failed thrice. At about 4 P.M. addressed (exploited) one meeting in Ambara which was organised for Mrs. Indira Gandhi and then addressed the Bahai and Dalmau meeting. From Dalmau we started for Surasana and Bharsana but reached to a village Barraha, then returned to Lalganj at about 8 P.M. Here Shanker Dayal, Shobhnath and Ganga Kishnu were present who reached here by noon train. Mama came at 12 A.M.

रविवार, 27 जनवरी, 1952

In the morning met with the Tehsildar of Dalmau, Mama after giving so many instructions to me and others departed with Shastriji for Dhai area where the rest of two motors were lying useless. I, Shanker Dayal and Bhim Shanker Started cycles for personal approach to near by village. Reached to Ambara and its purwa's then, Uttara Gauari for convassing socialist party. On the way we met with Mrs. Indira Gandhi, Rama Khazur gano and Ram Shanker Diwedi. Returned to Lalganj. After taking food I arranged other election works. Sent Bighapur some men on their circle (Bahai area). Started by afternoon train for Dalmau. Ganga Kishan, Kripa Shanker, Bhim Shanker and Tiwariji also left for their Stations. Night passed in the house of Girija Duttji.

सोमवार, 28 जनवरी, 1952

It was too cold a night after 12, Awakened early in the morning at 5:00 A.M. After daily routine started for polling station where reached at 6:30 A.M. One Mr. S.B. Sinha Vakil of Rae Bareli Tai Ji met me there. At 7:00 A.M. Presiding officer Mr. Singh (Munsif) came. He issued Admission cards to us (Polling Agents). For whole of the day we remained there, Polling was poor upto noon time. Only 400 votes were polled, but after the lunch it was too heavy. 1191 votes were polled, Mama's voting was poor enough. There were slight disturbances. I lodged the 1st objection on Mr. Abdul Aziz. He lodged false objection on me. Shrikant met there and some others else. In the evening came by car to Lalganj with mama, Tiwariji came by night train, K.K. Pande, U.P. Tiwari etc also came.

मंगलवार, 29 जनवरी, 1952

All the guests including Tiwariji, Mr. K.K. Pande and U.P. tiwari left for their respective places. Bhupendra Kanungo met me. Gajendra singh informed about the results of elections. Pt. Jagdish shanker Pathak and Lakshmi shanker Bajpai came in the evening.

बुधवार, 30 जनवरी, 1952

This was a market day. Dispatched the Sugam Varg Paheli and brought vegetables for Pandeyji, Suraj came from Kanpur and returned by the night train.

बृहस्पतिवार, 31 जनवरी, 1952

I came to Kanpur by the morning train. Bade Mama was in Lucknow I went to mani Ram Bagia and taken there my noon meal, then started by car for election inspection. Yusuf and Raja Ram Shastri were winning. Returned to Mani Ram Bagia where Daddu Chachchu brusted into tears before me on the question of Lakshmi's marriage. I promised him to settle the matters right. Discussed the matter with Lakshmi and Baba. Then went to sahitya Niketan. Came in the night after taking food, Mama returned from Lucknow.

शुक्रवार, 1 फरवरी, 1952

I went to College and Shobhnath to Lucknow. After returning from College via G.P. Library began to prepare the food, After taking the food I took rest for some time, then again started reading. At 4:30 went to Mandi for fruits and packed them in a Jhola for sending to Lalganj. Went to Bagia where again the marriage matter was discussed between myself, both the Chachu's and Lakshmi. Returned at 10 late in the night and slept at 11:15 in the night.

शनिवार, 2 फरवरी, 1952

Went to College, returned to godam directly. Ram Lal informed about the call of chachu at Bagia. I went there and chachu asked me whether he can give my chakra to Mr. Karunesh and whether I shall obey him or not. I answered in the affirmation and said please consult Mama and Mother. He said alright. Then went to Naya ganj Post office withdrawn 200 rupees from the account of Pandeyji. Returned to godam via Bagia. Ajia came in the evening. Lakshmi accepted the marriage. I went to Ram Manohar Tripathi's house and heard the lyrics of Tripathi. Went to Sahitya Niketan.

रविवार, 3 फरवरी, 1952

Went to College for Prem Narain Ji's Period. Returned via Mani Ram Bagia. Chaturbhuj came to godam after returning from Darjeeling. Bade Mama infuriated upon me and Jaggu was beaten by him due to handovering of keys by me to Jaggu. He said, "I am leaving you unbeaten due to your relation of Bhanja." After taking my food I went to C.B.'s house where Mister, Ram Ratan and Onkar were present. Onkar put before us his problem that is he told the ultimatim given to him by his father. Then all of us went to Pratap's house, after taking tea there accompanied by Prakash Rishikesh etc. We went to Phoolbagh to hear the results of Hamid's election. Brahmanand was much below to him. Returned to home via Bagia. Badhi Pande we present there.

सोमवार, 4 फरवरी, 1952

Went to college, Returned via Bagia, Daddu Chachchu asked about the clothes and suits of Lakshmi. Mother's letter came about my marriage. She advised me to marry. I postponed the idea of going to Bighapur. Manjhali Mayne's letter also came. I after taking rest went in the evening to Hulaganj from where to station and then to Bagia. After taking food and talking with Bappa* returned to Godam.

Weight – ९/52

मंगलवार, 5 फरवरी, 1952

After returning from college via Bagia came to godam. Lunch was taken late at 2 : 30 P.M. Lakshami came in the noon. I gave him 6 copies of my politics notes for Lala Phool Chand. Ram Ratan remained in the godam for whole of the afternoon time. We talked about many topics including Pratap's immorality. In the evening went to Pt. Krishna Shanker Shukla's house. He was also not present. Then reached to Chaturbhuj's house, where we remained for long time. Then came to godam via Bagia, Baba came from Banaras.

बुधवार, 6 फरवरी, 1952

Went to college, returned via G.P. Library. Mama told me about the Bhaujai's condition and asked to phone dadda. In the noon at 11:45 I again went to Dukan. After returning from there I slept for 1½ hours. After taking food at 3 P.M. started the study. At 5 P.M. went to Sahitya

* सबसे बड़े चाचा

Niketan and then to Agrawal Medical Stores then again came to Dukan. Bhim Shanker was there. Then came to godam via Bagia. George VI died Today.

बृहस्पतिवार, 7 फरवरी, 1952

Went to college but on the way came to know that college shall remain closed on account of the death of King George VI. I returned from the Golden Bakery. Came to Bagia. Daddu Chachchu asked about the clothes of my, Sudhir-Rekha and told me to prepare the list of invitees, came to godam. At 2 P.M went to Arya Nagar at Pt. Munshi Ram Sharma's residence, he was sleeping, from there went to Pt. Shukla's home. Niraj also came there. Returned with Prem Narain ji. Then came to Bagia, prepared the list of invitees and came to godam.

शुक्रवार, 8 फरवरी, 1952

Went to college returned via Bagia. Today was the day for Beohar Barichcha of Lakshami. They came, (Karunesh etc.), 9 guinees and 250 rupees were given by them. I also received rupees 4. Bappa etc. were present. Lakshami was not there. Shivpal came from Lalganj and returned immediately. Sent the goods and rupees 140 to sister there. Amma's letter came. Went in the evening to Bagia and Uma's shop then returned to godam.

शनिवार, 9 फरवरी, 1952

Went to college, returned in the 4th period and came direct to godam. In the noon at 1 P.M. went to Bagia. Chachchu asked about the clothes. For whole of the afternoon time was passed in hearing the running, commentry. In the evening accompanied with Chaturbhuj went to Prayag Narain Mandir, Kahukothi, Birhana Road, Meston Road and to Vishwakarma Khaddar Bhandar. Then taken my food in the Bagia went to Uma's shop and returned to godam.

रविवार, 10 फरवरी, 1952

Went to college. Returned via Bagia. Pt. Bansidhar Misra came accompanied with Rajjan. After sleeping in the afternoon I went to Khemka's house and then to Pt. K.S. Shukla's house. Shuklaji met at the Canal Road. We talked for some time, then came to Bagia. Pratap, Prakash, Chaturbhuj, Lallu Pandit, Phool Chand etc. were present. Came to godam, continued the studies upto 2:30 A.M. in the night.

सोमवार, 11 फरवरी, 1952

Awakened at 8 A.M. After finishing the daily routine, started the studies. At 12:30 P.M. after taking the bath went to Khemka's house then to Bagia via Sirki Mohal, Kahu Kothi and Khaddar Bhandar. Then went to the Vishwakarma Khadi Bhandar. Then returned to Bagia and taken some rest. After taking the evening tea, came to godam and went to Raja Daddu's house and Uma tailoring shop, from where to Bagia again. Returned to godam accompanied by Ram Ratan.

मंगलवार, 12 फरवरी, 1952

Went to college, returned via Bagia, Daddu Chachchu asked me to come at 3 for clothes. I reached there at 3 but he was not present. Then went to Chaturbhuj's house, where taken the meals, then went to college in Mr. Krishna Shanker Shukla's Class. Returned with Shuklaji via Phool Bagh and then went to Chaturbhuj's house from where to Bagia, Uma Tailoring Shop and then to godam. Uma Babu gave the blouse of Bhabhi which was lying with him for the last one month.

बुधवार, 13 फरवरी, 1952

Went to college, returned with Naresh Chandra Saxena. In the noon at 2 P.M. went to Bagia, Daddu Chachchu gave Rs. 22/10 for clothes. At 4 P.M. I went for sleeping in the godam. Rose at 6 A.M. and went to Bagia. Today there was Lakshmi's Tilak, there I remained upto 10 P.M. Mama also went there. Jaggu also participated in the feast. Returned to godam.

बृहस्पतिवार, 14 फरवरी, 1952

Went to college. I was late. Pt. Krishna Shanker Shukla was delivering his lecture upon Kabir's Nirgun Ram. He gave me Kabir Rachnamrit. Returned with B.N. Gupta, S.S. Awasthi, and Naresh. B.N. Gupta seemed to me loving Shanti Tiwari. Came to Bagia, From where accompanied with Phoofa went to his house then to godam. At 2 P.M. went to Khaddar Bhandar with Mister. Then in the godam I slept and rose at 6:30 and went to Bagia, Dr. Misra's dispensary, Sahitya Niketan and cleared the accounts of Dr. Misra and Uma. In the tailoring shop 2 Kurtas were given by me for sewing. Returned via Surendra's house.

शुक्रवार, 15 फरवरी, 1952

Went to college, Returned with B.N. Gupta and Surendra Shanker

Awasthi, Came to godam via Awasthi's house. He also came with me to see my residence. In the noon, I sent Jaggu for cycle to Bagia. Mister promised to send cycle in time ½ hours. But he did not come. At 2 : 30 P.M. went to Pt. S. N. Mishra's and Pt. P.N. Shukla's residence. Both of them were absent. Then I reached to Gandhi Nagar. Sumati was also absent. Tiwariji was present. Then in the godam I slept for 1½ hours. Then went to Khadi Bhandar, changed the spoiled dhoti and went to Bagia via Sahitya Niketan, Uma Tailoring Shop. Then accompanied by Chachchu went to Adarsh Printing Press for seeing the proof of invitation cards. Returned to godam then Vishnu Shanker came in the night.

शनिवार, 16 फरवरी, 1952

Went to college. Returned with Surendra Shanker Awasthi, lunched with Surendra Shanker Awasthi in his house. His Bhabhi (Mister's Sali) was present. Then we came to godam for whole of the afternoon time. Then we went to Sahitya Niketan, changed the Riti Kavya Ki Bhumika. I returned to godam via Bagia after taking the tea, Karunesh's wife expired today. Lakshmi's marriage was postponed for a future date. Sent the letter to Lalganj, Bhim Shanker was not there. At 8 P.M. went to Bagia for taking meals. Returned after taking Kurtas for the Uma's shop.

रविवार, 17 फरवरी, 1952

Went to college. There was Pt. K.S. Shukla's extra class. Returned with S.S. Awasthi and met in his way to shant. Diddi came from Lalganj accompanied by Lallu. Went to Sumati's house. In the evening attended the feast at Chaturbhuj's residence. Pratap infuriated too much upon ourselves. Returned at 9:30 in the godam. Surendra Shanker did not come.

सोमवार, 18 फरवरी, 1952

Went to college. Returned with B.N. Gupta Who came here to see my residence. Went to both the places of Bagia, taken my food, returned to godam. Surendra Shanker came and remained here upto 5 P.M. Shiv Shanker Pande came from Lalganj, Drank the Thandai and went in the marriage ceremony of Chaturbhuj. Returned via Meston Road, Bagia and Surendra's House. Ram Kishore Pande was with me. Bhai Chachchu was ill. Lakshami's marriage was settled for the 3rd March. Diddi, Sumati and Shanker Dayal alo met today.

मंगलवार, 19 फरवरी, 1952

Went to college. Returned with B.N. Gupta, taking tea in the Chauraha Hotel. Went to Bagia in the both places. Pachora inhabitants came. Cancelled the programme of noon train and sent Diddi by the evening train. In the evening accompanied by Lakshami, Mister and Rup Narain participated in the feast of Chaturbhuj's marriage. Returned and slept without reading.

बुधवार, 20 फरवरी, 1952

Went to college. Returned via Bagia. Prem Narain Ji did not take his class. Talked about the function in honour of Nand Dulare BajpaI. Came to godam and slept a little, when Surendra Shanker Awasthi came. We studied Kamayani upto 5 P.M. Baijnath has not come today also. At 6:30 reached Bagia from where to Kahu Kothi to give congratulations and pay my good wishes for his honeymoon. Returned direct to godam.

बृहस्पतिवार, 21 फरवरी, 1952

Went to College. This was a rainy day. Returned with Surendra Shanker Awasthi. We were wet in the rains. Surednra came and we read Kamayani today. In the evening at 6 P.M. I went to Bagia, G.P. Library and Uma Tailoring shop. Returned to godam. Laxami Kant Pandey met in the way. Jaggu returned from Lalganj with mother's letter.

शुक्रवार, 22 फरवरी, 1952

Went to College via Awasthi's house. Returned after attending the class of Pt. M.R. Sharma with Awasthi and Baij Nath. Started the studies from 12 A.M. and finished at 5 P.M. I was not feeling well today. Went to Bagia and G.P. Library, Harishji met today. Returned to godam. Slept at 9 P.M.

शनिवार, 23 फरवरी, 1952

Went to college. Pt. Prem Narain and Sharmaji none of them taken classes. Returned to house after taking my food at the house of Mr. Awasthi. Finished studies at 2. Went in search of music Artists. Taking cycle from Bagia came to godam and after changing the clothes went to college to attend the annual function of M.A. (Hindi) which was addressed by Pt. Nand Dulare Bajpai. Head of the Hindi Dept. Sagar University. Returned to godam at 9P.M.

रविवार, 24 फरवरी, 1952

Awakened at 7 A.M. Went in the noon to Awasthi's house, he was not present. He did not come to godam today. In the evening went to Bagia. Bappa was present. He brought my Nagra shoes from Ghatampur. Came to godam.

सोमवार, 25 फरवरी, 1952

Awasthi came at 8 in the morning. We studied upto 10 A.M. Then I slept for sometime, After taking my food. Awasthi returned at 1:30 P.M. Then we read upto 4:30 P.M. In the evening I went to Sumati's house, Prem Narain's and Sharmaji's house. Then went to station for seeing off Pt. Nand. Dulare Bajpai, returned at 11 P.M. in the night. Din Bandhuji, Prem Narain ji, Shri Narain Agnihotri were also present.

मंगलवार, 26 फरवरी, 1952

Went to college. Returned at 9:30 with Awasthi, read up to 11. Then went to Bagia via shop. Mama came from lalganj with my letter. We studied up to 5 P.M. Then went to market, send the Butter, Bread and letter to lalganj. Then went to Bagia, Uma Tailoring shop, Mohan Homeo Stores and returned to godam. Jaggu broken the lamp's glass.

बुधवार, 27 फरवरी, 1952

Went to college. Appointed time for asking from Pt. K.S. Shukla. Returned to house. Chachchu called me. Went to Bagia but he was not present. Returned to godam and slept for some time. Awasthi came and we started Ratnakar from 12 finished it at 3:30 P.M. In the evening went to Chaturbhuj's house, Library and Bagia. Harish Ji met today. Returned to godam. Dinner was taken in the godam.

बृहस्पतिवार, 28 फरवरी, 1952

Went to college... etc... did not come today. Returned via Bagia. In the evening went to Chaturbhuj's house. He told about the miracle of his fortunes and about his idea of with pair party. I welcomed it, handed over the invitation card to him. Went to Dharamshala. Ajia Baba etc. came today from village. Returned to godam via Meston Road. Uma Tailoring Shop etc.

शुक्रवार, 29 फरवरी, 1952

Went to college. Khemka met there. Returned to home. In the evening went to Dharmashala, Library, Naresh's house etc. Sheo Shanker Pande came from Lalganj with mother's letter and gajar halwa. In Dharamshala Dada, Bhabhi were present. Mama asked in the evening about mother's arrival in Lakshami' marriage. Evening food was taken in the godam, slept at 1 A.M. in the night.

दूध का हिसाब साफ।

शनिवार, 1 मार्च, 1952

Remained in the godam for whole of the day. The goods were sent to Lalganj through Sheo Shankar Pande. For whole of the day it was raining and cold day. Nothing particular. Chatrubhuj came at 10 A.M. We prepared a draft for the Jugal Kamana (कामना) on the occasion of Prakash's marriage.

रविवार, 2 मार्च, 1952

शाम को धर्मशाला गया। सवेरे केवल अवस्थी के घर तक गया था। उन्होंने सितार के कार्यक्रम के लिए बुलाया था। पर मैं गया नहीं। शाम को लाइब्रेरी भी गया। धर्मशाला में सबको खाना वगैरह परोसा। सुमति आ गयी थीं। लौटते समय गाड़ी से गोदाम आया। सुमति का नौकर भी साथ आया। रात दो बजे तक पढ़ता रहा।

सोमवार, 3 मार्च, 1952

सवेरे कॉलेज गया साइकिल से अवस्थी के साथ। बैजनाथ के साथ वापस आया। ...बड़े मामा लालगंज से दिद्दी को लेकर आये, अम्मा नहीं आयीं। दोपहर में चच्चू मिले पर मुझसे बोले नहीं। खाना धर्मशाला में खाया। दिद्दी...घर आया बगिया। सुमति दिद्दी यहीं थीं। अम्मा दिदिया का पत्र दिया। विक्टोरिया सैलून में बाल कटवाये। दिद्दी वगैरह को लेकर धर्मशाला आया। वहाँ से गोदाम आकर सब तैयारी की। 5 बजे धर्मशाला पुनः लौट गया। गोदाम में बड़े मामा से बात होती रही है। पता लगा दिदिया को निमन्त्रण ही नहीं दिया गया।

धर्मशाला में सबकी खातिरदारी आदि का....। कपड़ों का एक सेट दादा की बक्स में रखवा दिया। सरन पाण्डेय से मुलाकात हुई। खेमका वगैरह सब आये। बस से आर्य नगर गये। मिस्टर वगैरह दूसरी बस से देर से आये। 8 बजे के लगभग आगवानी के लिए चले। शंकरदयाल भी आ गये। 9 बजे लौटकर प्रकाश की शादी में कुली बाजार में सम्मिलित हुए। लौटकर गुदाम आ गये।

मंगलवाल, 4 मार्च, 1952

सवेरे से पढ़ता रहा। Went to college at 3 P.M. in Pt. Prem Narain's class from where to Arya Nagar, Bappa and Chachchu asked about the non-coming of mother. I answered in the negative. Chaturbhuj was also angry. He and Ram Ratan were Present there. In the night, there was Bhat which finished at 11:20 P.M. I remained there for whole of the night.

बुधवार, 5 मार्च, 1952

Prem Narain Ji met there. He also came in the Janvasa. I returned to godam by car via college. Went to Ram manohar Tripathi's home. In the noon went to Arya Nagar and Brahma Nagar. From Brahma Nagar again returned to Arya Nagar with Khemka where we played playing-cards. In the evening Nevtani and Kavi Gosthi were performed. Late in the night at 2:30 बड़हार was done, remained in the night at Arya Nagar. Pt. Krishna Shanker Shukla met. He was furiously angry upon me.

बृहस्पतिवार, 6 मार्च, 1952

In the morning came to godam at 3, went to college, from there to Arya Nagar. Mandap Ceremony was performed. At 9 P.M. went to Pt. M.R. Sharma's home where two class-girls were also present. Pt. ji dictated something on Vinaya Patrika, Prem Narain also came, Sharma ji and Shukla ji asked about Pt. K.S. Shukla. Then I came to Karunesh Ji's home. From where returned at 11 : 30 P.M. to Dharamshala and then to godam. Chachchu asked about the sending of Mister to Lalganj for taking Didiya to Kanpur. I replied in the affirmative.

शुक्रवार, 7 मार्च, 1952

In the morning rose at 6:30 Awasthi came at 11 A.M. Daddu Chachu wept bitterly before Mama for mother's behaviour. Shiva Pal went to Lalganj, Mama came from Lalganj with goods to be given to Diddi. With Diddi I went to Sumati's house for that purpose but we returned disappointed. Sumati also came. Leaving them in Bagia I went go godam. In the evening went the Dharmshala, Bappa discussed all the matters regarding Mother even about my marriage. I talked frankly. Mama also came to Dharmshala to pay Beohar. Mister went to Lalganj. Borrowed from Me...

शनिवार, 8 मार्च, 1952

In the morning went to college to deposit the fees. Returned to godam via Dharmshala. Didiya was present. She came by the night train. In the evening I again went to Dharamshala, talked with Didiya and brought all the things of her. Returned to godam at late in the night. Finished vinaya Patrika today.

रविवार, 9 मार्च, 1952

In the morning went to Dharmshala via Diddi's home. Didiya was absent. I handed over the double role to Chhoti Didiya, Bappa began murmuring on the question of didiya's departure. I returned to godam. At 2:30 went to college. Returned with Baij Nath doing some laugherism. Finished Raso, went to Library and Dharmshala. Mister returned from Lalganj. Return to godam.

सोमवार, 10 मार्च, 1952

Studied for whole of the day. Awasthi came at 11:30 A.M. started vidyapati from 1 P.M., finished at 8:30 P.M. We drank Thandai of cream and oranges mixed with hemp. It caused some trouble to me. I was unable to study and slept at 10 P.M. Went in the evening to Diddi's house. She handed me over my Jalpan. Returned to godam ... Jaggu went to Lajganj.

मंगलवार, 11 मार्च, 1952

Studied for whole of the day. Shobhnath Mama went to Lalganj, Mama given me Rs. 2. In the evening, B.N. Gupta came at shop from where we went to godam via Uma Tailoring shop, Sahitya Niketan, Khemka's house and then to dharmshala. Returned to godam. Studied upto 2 A.M. in the night.

Remained in the godam for whole of the day. Awasthi did not come also today. In the evening I went to Awasthi's house, diddi's house and then to Dharamshala. In the Dharmshala Pandey Jija, Misra Ji etc. etc. were present. Returned at 9 A.M. to godam. Ram Lal went in the night to his son's residence. I remained alone for whole of the night studied upto 2 A.M.

बृहस्पतिवार, 13 मार्च, 1952

Remained in the godam. Ram Lal came at 7 A.M. in the morning. Awasthi also came at 7:30. We studied Jayasi upto 3 P.M. At 4 I went to

Bagia and then to Dharmshala and then to Khemka's house. Brought two books from him. Rochana ceremony was performed. Came at 7:45 P.M. to godam. Chaturbhuj met today upto 2 A.M.

शुक्रवार, 14 मार्च, 1952

In the noon at 12 : 30 P.M.went to college with Awasthi for Admission Cards but we did not receive them. Then went to Shanti Tiwari's home for taking Bihari Bodhini. Returned to godam. At 7:30 went to Naresh's house and then to Dharmshala via Library.

Studied upto 2 A.M.

रविवार, 15 मार्च, 1952

Awasthi did not come in the morning at 10:15. I went to the college for taking Admission Cards. Returned via Awasthi's house. Awasthi came at 1 P.M. We studied upto 3 P.M. Then we went to his house and I after taking rest of one and a quarter hour again started my studies. At 7:30 went to Dharmshala for taking food. Returned via Bagia (Diddi). Didiaya's letter came. Shyam Narayna came for taking Tins of Chachi which were in my godam sent by Didiya. Studied upto 2 A.M.

रविवार, 16 मार्च, 1952

In the evening went to Dharmshala. Phool Chand asked for Kavya ke Rupa. Slept at 3 A.M.

सोमवार, 17 मार्च, 1952

In the evening went to Dharmshala and Bagia (Diddi). Diddi was in Dharmshala. Today was Ganga Mela after Holi. Sometimes in the evening remained in the Dukan. Slept at 12 P.M.

मंगलवार, 18 मार्च, 1952

At 10:15 went to college with Awasthi. Today was modern Poetry's paper. It was a good paper. Returned at 2:45 P.M. Mamas were present at Dukan. He came today from Lalganj. In the evening, cooked the food, studied upto 12 P.M. only. I was not feeling well today.

बुधवार, 19 मार्च, 1952

Today was the paper of Medieval Texts. It was rather a bad paper in

my ideas. Though, I have done well, but after all it was not satisfactory. Returned via shop. Ram Charan Misra cooked the evening food. Studied upto 2 A.M. in the night.

बृहस्पतिवार, 20 मार्च, 1952

Reached at the college at proper time. Today paper of old Text was thoroughly a good paper. I have done it excellent. Returned at godam. Panchi came from Lalganj. Sent Medicines, fruits Lalganj. B.N. Gupta and his friend came at 5 P.M. We went to Meston Road.

शुक्रवार, 21 मार्च, 1952

Today was holiday. Remained whole of the day in godam. In the evening only went to shop for closing it down. Then went to put the Deepak in the temple. Studied upto 4.15 A.M. in the night.

शनिवार, 22 मार्च, 1952

Went to college. This paper V Principles of Criticism and history of Literature was a very good paper. Done excellent. After taking tea in college canteen. returned with Awasthi, went to Bagia, Diddi was present there.

रविवार, 23 मार्च, 1952

In the morning went to Pt. Prem Narain's house at 8 am with Awasthi. Returned via Chunniganj at 9:30. B.N. Gupta met in the way, then all of us went to M.G. Girls College and Gwaltoli, came to Awasthi's house, taken sweets. Went to Bagia and to Prakash's house for copies. Returned to godam at 12:4 5, at 5 went to Gandhi Nagar, Returned at 6 : 30, I, Awasthi, Gupta went to exhibition and to Megh Pushp, where I was taken today. Went to Moti Mahal to see the Saagi... Returned to godam at 2 A.M.

सोमवार, 24 मार्च, 1952

In the morning rose late at 7 A.M. At 10:45 went to Naya Ganj Post Office. The Clerk refused to pay the accounts without attestation. Went to Shastri but he refused to attest on behalf of M.D. Pande. Returned to godam. In the evening went to Bagia and Pt. Krishna Shanker Shukla's house. He initiated me for the collection of Sanehi Ji's Literature. I promised to him for the work. Returned to godam. Panchi came from the night train.

मंगलवार, 25 मार्च, 1952

In the evening went to Bagia (Diddi) at 10 A.M. But Daddu (Pande) refused to attest also. Then went to Meston Road, bought Butter and Bread. Diddi, Mama, Panchi went to their respective places. Went to Khemka's house, returned at 1 P.M. sent all the goods and letter to Lalganj by Panchi. After taking food went to Dukan. At 4:30 handed over the book to L.K. Pande and went to Bagia from where to Library. Harish Ji and Prabhat ji met there. I handed over the application of Harish ji. Returned with Prabhat. Sanehi ji gave me time in April. Evening food was taken in Bagia.

बुधवार, 26 मार्च, 1952

In the morning went to Bagia. Prepared the application, went to Maheshwari Library to see the Herald but was unable to find out the paper. Opened the shop. At 2 P.M. went to Employees State Insurance Corporation. Handed over my application to Superintendent. He was a good man. Mister was also with me. In the evening went to Bagia again, where Chachchu gave the ... then went to Bhaya's shop. He was not present, then via Sahitya Niketan reached to Phool Bagh and Naya Ganj, Returned to Tilak Hall. Niraj met there. Returned via Bagia.

बृहस्पतिवार, 27 मार्च, 1952

In the morning went to Pt. Prem Narain's house, returned via Bagia. Opened the shop. Mama did not come by the morning train. In the afternoon he came via Lucknow. At 5:30 I and Mister went to Onkar's house on his invitation. returned at 7 P.M. Bhim Shanker was at Dukan. Asked the permission for going back now Slept at 10 P.M.

शुक्रवार, 28 मार्च, 1952

In the morning at 10:30 went to Nayaganj Post Office for withdrawing jija's account. Post Master refused to pay the accounts because signature was not proper. I was outraged on the and abused him.

Chhoti Didiya and Prem Narain Jija went to Lalganj. I came to Lucknow by the 1:40 P.M. train. Pitaji* and Dadda** met. Manyeen was greatly dissatisfied due to Bhabhi's behaviour. In the evening I went to Dr. Bose's dispensary and Aminabad.

---

* पं. वंशीधर मिश्र

** डॉ. रामनारायण पाण्डेय

शनिवार, 29 मार्च, 1952

In the morning Misraji went to Fatehpur. I remained all the day in the house. At 3 P.M. went to Council House, met Raghuvir Sahaya Misra, Umapati Tiwari and K.K. Pande. Returned via Kaiserbagh. Misraji came at 11 P.M.

रविवार, 30 मार्च, 1952

In the morning twice booked the Trunk-Call for Gopinath Singh M.P. But both time no answer came from his house and so they were cancelled. In the evening went to Babuganj and Mawaiya then went to Hon. C.B. Gupta's house at 8 P.M. Prem Narain Dixit came from Lalganj.

सोमवार, 31 मार्च, 1952

In the morning Misra ji telephoned to the Gopinath Singh M.P. and Suraj Prasad Awasthi M.L.A. Mr. Awasthi number was cut off a few days ago. From 5:15 P.M. train I came to Kanpur. In the way I was cheated by one- who broken away my pride of wisdom. I became aware of future for such auctions. Brought a pair of scissors in Rs. 4. Went to Hulalganj and Bagia. Returned at 10:15 P.M.

मंगलवार, 1 अप्रैल, 1952

In the morning went to Gwaltoli via Hulalganj and Bagia, Mr. Awasthi was absent. Returned via Tilak Hall and Bagia, Lala Phool Chand came to godam. In the evening went to station to send the letters to Lalganj. Went to Hulalganj. Returned at 10:30 via Khemka's house.

बुधवार, 2 अप्रैल, 1952

In the morning went to Gwaltoli via Hulalganj with Mr. J.N. Misra. Returned at 9 : 15 to Godam. In the Gwaltoli Mr. Awasthi was absent. Mr. Gopi Nath Singh met me with courtesy. Went to Bagia and Head Post Office where Mr. Kirpa Shanker Pande asked about his copies in Lucknow. At 3 P.M. went to Bagia. Send the letter to Lalganj by Jata Shanker Pande. Went to Chaturbhuj's house and library. Mr. Ram Chandra typed the application. In the night Bhadoria Shiv Bahadur Singh, Rammanohar Tripathi etc. came. A poetical synposium was held.

वृहस्पतिवार, 3 अप्रैल, 1952

In the morning handed over Misraji's letter to Mr. Surya Prasad Awasthi and a copy of application to both Mr. Awasthi and Gopi Nath Singh. Then went to Arya Nagar, Brahma Nagar and Gandhi Nagar. Returned via Bagia and opened the shop. Umapati Tiwari came, closed the shop at about 12 Noon. Came to godam and taken rest. In the evening went to Bagia, then via C.B. to Hulalganj from where to Phool Bagh. Returned to godam via Bagia.

शुक्रवार, 4 अप्रैल, 1952

In the morning went to Pt. Prem Narain's house. Sahitya Ratna result came. I examined near about 20 copies and returned at 10:30 to godam-opened the shop. Mama came from Lalganj. He brought my certificates and letters. Chaturbhuj came at 12:15 and went at 2 P.M. After taking food I went to shop. Mama came here then went to Parmat. I at 7:45 went to Bagia and Prakash Pen Company.

शनिवार, 5 अप्रैल, 1952

Remained in the godam upto 10:15. Went to Bagia from where in motor car to Head P.O. and then to Nayaganj Post Office via Chumra khan's Furniture Shop. Withdrawn Rs. 280 from the Post Office Handed over Rs. 100 to Nand Lal. Prepared the food. Prem Narain Ji met today called for Monday Sent the medicines etc. to Lalganj, Mama was disappointed today. I gave him Santvna. Went to Baij Nath's house and Harish, Prabhat met. Returned at 10:5.

In the Morning went to Bagia and Hulalganj. Came to godown (godam) cooked the food. At about 1:45 went to Bagia from where to Acharya Sanehi's house. He gave me morning time.

Went to Khemka's house from where to Baij Nath Gupta 'Library' A.V. Road, Phool Bagh, Hulalganj, Ram Kishore Dixit came. Sent Malti's Dhoti by him.

सोमवार, 7 अप्रैल, 1952

In the morning went to Acharya Sanehi's hosue. Started the work of collection from today. Returned at 12:15 and prepared the food. Went to Prem Narain's house at 2:30 P.M. He did not meet me. Returned to shop at 4:15. Went to the goshthi of Hindi Sahitya Mandir. Returned at 10 : 45 via Bagia. Mama came from Lucknow at 1 A.M. in the night.

मंगलवार, 8 अप्रैल, 1952

In the morning went to Gwaltoli. Met Mr. Awasthi and Gopi Nath Singh MP. Awasthi ji called for the 9th April. Cooked the food. In the noon went to station to send the letter to Lalganj. At 3:30 went to Sanehi and Bagia. Prayag Narain Dada came and delivered mother's letter.

बुधवार, 9 अप्रैल, 1952

6/8" Plate was stored, the godam. Went to Sanehi ji's residence. Cooked the food. Chhote Mama came from Lalganj and returned immediately. I did not meet him. In the evening Prabhat came.

बृहस्पतिवार, 10 अप्रैल, 1952

Went to Gwaltoli. Mr. Awasthi did not take heed of me and went in car. Prabhat ji came in the noon and remained upto 4 P.M. here. Then we went to Library via Bagia. In the evening I went to Dr. Misra but he was also absent.

शुक्रवार, 11 अप्रैल, 1952

In the morning went to Gwaltoli, Brahma Nagar, Siddharth Misra, Gandhi Nagar but no body was present. Then went to Khemka's residence and Bagia.

शनिवार, 12 अप्रैल, 1952

All the day remained in the godam and dukan. Prabhat, Baij Nath, Asim Dixit came. In the night went to Bagia, Bring the cycle.

रविवार, 13 अप्रैल, 1952

In the morning went to Gwaltoli, met with Mr. Awasthi and Gopi Nath Singh. At 10:30 went to G.N.K. College in social works conference. Waited their upto 2 P.M. Then Awasthi ji introduced me to Mr. J.N. Agarwal. He called me in his office next day, Mama was too much anxious today. Chachchu came. Baij Nath came. In the night I went to Lala Phool Chand and Khemka. Returned at 11:45.

सोमवार, 14 अप्रैल, 1952

Went twice the bank and deposited Rs. 7000. Went to Employees

State Insurance Corporation. But due to Official meeting I was unable to seek an interview for Dr. Agarwal. In the night went to Phool Chand, Returned at 12:15.

मंगलवार, 15 अप्रैल, 1952

At 10 A.M. phoned Mr. Gopinath Singh. At his call, went to Gwaltoli. He gave me only a Character Certificate instead of doing telephone. Went to S.I.C. Mr. J.N. Agrawal was out. I passed near about 2 hours in the labour office. At 3:45 Mr. Agrawal called me and I with failing conscious heard the first experience in my life that is no vacancy Sir. Returned the house with disappointed. In the Night went to Library.

बुधवार, 16 अप्रैल, 1952

In the morning went to Bagia. Told about the no vacancy and he assured me of M. Board. Khemka came, Cooked the food. At 2 P.M. Prabhat ji came, I went to P.t. Prem Narain's house. Examined the elementary Hindi copies of Intermediate. At 6 P.M. I started for station send the letter. Came to godam. Prabhatji came again.

बृहस्पतिवार, 17 अप्रैल, 1952

In the morning went to Khemka. After day meals went to Bagia and then to Shukla's house. Cycle's bursts were repaired twice. Chaturbhuj came to godam with me. He was much worried on his circumstances. Night food was taken in Bagia. Mama went somewhere. Diddi not come in the night.

शुक्रवार, 18 अप्रैल, 1952

Went for the morning walk. In Bagia taken my tea. Ram Lal was suffering from fever since yesterday. In the evening went to Library and Phool Bagh. Consulted about the programme and office bearer of Hindi Sahitya Mandir.

शनिवार, 19 अप्रैल, 1952

Went no where except Bagia and Library and Khemka. Sent the letter and fruits etc. to Lalganj. Prabhat remained here.

रविवार, 20 अप्रैल, 1952

Went to morning walk...in Bagia. In the noon attended the meeting of Sahitya Mandir and interviewed Mr. K. S. Shukla.

सोमवार, 21 अप्रैल, 1952

Bathed in the river Ganga. Mama did not come from Lalganj. Went to see the 'Sansar' with Chachi and attended the Kavi Gosthi of Hindi Sahitya Mandir.

मंगलवार, 22 अप्रैल, 1952

Mama came from Lalganj. Twice went to station to send the letter to Lalganj. Given my watch for repairing to M/S K.G. Thakurdas. Went to Library and Khemka's house. Cooked the food.

बुधवार, 23 अप्रैल, 1952

Came to Lalganj by night train which was late by more than one hour.

बृहस्पतिवार, 24 अप्रैल, 1952

Remained in the Lalganj.

शुक्रवार, 25 अप्रैल, 1952

Remained in the Lalganj. I have written the letters to various places for jija's residence.

शनिवार, 26 अप्रैल, 1952

Remained in Lalganj.

रविवार, 27 अप्रैल, 1952

Remained in Lalganj upto 4 P.M. Surju refused to take me up in his cart. I came in by own cost upto Palia and then on foot with Bachcha. Manjhali Manien, Bhabhi and Ziledar, Sudhir, Suraj were in the village.

सोमवार, 28 अप्रैल, 1952

At 8 A.M. went to Daulatpur to attend the Acharya Mahavir Prasad Dwevedi Jayanti celebration. I and four others interviewed Mrs. Mahadevi Verma in the closed room of Acharya Dwevedi. Returned in night with Suraj and Shobhnath. Flour Mill was started today.

मंगलवार, 29 अप्रैल, 1952

Remained in Pure Pande. Flour mill was started today again.

बुधवार, 30 अप्रैल, 1952

Remained in the Purwa.

बृहस्पतिवार, 1 मई, 1952

Remained in Purwa, Mother's letter came.

शुक्रवार, 2 मई, 1952

Remained in Purwa. Kashi Misra came from Lucknow. Sent 300 Amiyas to Lalganj through Rameshwar. Laxmi Kant Pande came and invited me for his marriage celebration.

शनिवार, 3 मई, 1952

Remained in the Purwa, Chhote Mama came from Lalganj. It was busy day in the Chakki. Surya Kumar Pandey came from Kharagpur. We went to Dariapur. Mama stayed in the Purwa for the night.

रविवार, 4 मई, 1952

At noon Chhote Mama came from Purwa to Lalganj. I also returned to Lalganj. Started from there at 5 P.M. Engine was not working today. Reached Lalganj at 8:30. Bitola Mausi came from the night train.

सोमवार, 5 मई, 1952

Remained in Lalganj.

मंगलवार, 6 मई, 1952

`Remained in Lalganj. Manyeen and Chhoti Didiya came from Sandbara (सांढ़बरा). Pt. Chandra Shekhar of Daulatpur came.

बुधवार, 7 मई, 1952

From Morning train came to Kanpur. Went to Pt. Prem Narain, Siddhnath, Pt. Munshi Ramji and Sumati's house. Diddi was present there. We searched Mrs. Kesar Bajpai's home. She refused to recognise diddi. Went to Khemka's house then to Sahitya Niketan.

बृहस्पतिवार, 8 मई, 1952

After washing the clothes, I went to diddi's house. Talked and consulted diddi and Daddu. In the evening went to godam and then to purchase goods for Lalganj. Received my watch after repairing from M/S. K.G. Thakurdas. Went to station. Khemka, Lala Phool Chand went to purchase a dari.

शुक्रवार, 9 मई, 1952

Remained in Kanpur. In the evening went with Khemka to Sahitya Niketan and Apna Restaurant. We met Mr. Nisha Nath Dixit.

शनिवार, 10 मई, 1952

लक्ष्मीकान्त का विवाह

From Banda Passanger I came to Lucknow. In Unnao Mr. Ramesh Awasthi came. I came to A.P. Sen Road, after washing my clothes, I went to Janwasa Ismailia Lodge. At 9 P.M. went to Laxmi Kant Pande's marriage. Returned to Faijabad Road at 11. Bhat was held at 3 A.M. in the morning.

। -) टिकट उन्नाव तक
-) किराया रिक्शा
≡) किराया बस
१ ॥) खटपटी
२-)

रविवार, 11 मई, 1952

In the morning at 8 A.M. came to A.P. Sen Road and at 3 P.M. went to Saria Mali Khan. A Kavi Gosthi was held there and in the night we went to Bazar and Badhar (बड़हार).

।=) किराया
-) माला
। ≡)

सोमवार, 12 मई, 1952

In the morning went to Imambara and came to A.P. Sen Road via Aminabad. Ram Manohar was ill today.; In the night we again came to Aminabad and then to Badhar (बड़हार).

ॾ) टिकट इमामबाड़ा
।) ॥ बस टिकट
१) चाट
१।ॾ) ॥

मंगलवार, 13 मई, 1952

In the morning went Zoo Banarsi Bagh. In the evening Mandap Ceremony was held. At 9 : 30 P.M. I returned to A.P. SenRoad.

-) ॥ किराया बस
=) ॥ दही
-) माई
।)

बुधवार, 14 मई, 1952

Remained in Lucknow. Shanker Dayal came in the morning at 3 P.M. went to P.C.C. Council House and then again to disciplinary action against Chachchu. In the evening went to Regal Theatre to see 'Andhian' Picture.

बृहस्पतिवार, 15 मई, 1952

Remained in Lucknow. In the evening went to station to see Mr. Laxmi Kant off. who was going to Rae Bareli with his newly married wife. Shanker Dayal went to Kanpur in the evening. I went to Hazartganj and Dr. Bose's dispensary. Returned at 9:30 P.M.

ॾ) ॥ Platform etc.

शुक्रवार, 16 मई, 1952

Remained whole of the day in A.P. Sen Road.

शनिवार, 17 मई, 1952

In the evening went to Mawaiya, Lal Kuan and Aminuddaula Public Library. Returned via Aminabad. U.P. Ministry was declared today. Mr. Gautam came to 6 A.P. Sen Road in the evening.

Rs. 4 to Dadda.

रविवार, 18 मई, 1952

Remained whole of the day in 6 A.P. Sen Road.

सोमवार, 19 मई, 1952

लखनऊ रहा। एसेम्बली देखने गया। पं. वासुदेव मिश्र से यूथ कांग्रेस के बारे में बात हुई।

मंगलवार, 20 मई, 1952

लखनऊ रहा। आज एसेम्बली देखता रहा। स्पीकर का चुनाव हुआ। शाम को यूथ कांग्रेस के डिवीज़नल संयोजकों की कॉन्फ्रेंस में भाग लिया।

-) ॥ बस किराया

बुधवार, 21 मई, 1952

लखनऊ रहा। आज एसेम्बली में गवर्नर मोदी का भाषण सुना। कांग्रेस पार्टी की मीटिंग में गया। एसेम्बली लाइब्रेरी में पढ़ता रहा। शाम को घर लौट आया। मुन्नू ददोले बरेली से आये थे।

-)॥ दही
)। बरफ
।=) दूध

बृहस्पतिवार, 22 मई, 1952

Remained all the day in Lucknow at 6 A.P. Sen Road.

२६ ।।।) दवा
=) ॥ दूध
२६ ।।।=) ॥

शुक्रवार, 23 मई, 1952

At 4 P.M. went to P.C.C. office, Rama Ratan etc. were present there. Returned via Aminabad and Lal Kuan.

।-) धर्मयुग
।) चाट के बतासे

शनिवार, 24 मई, 1952

Remained in Lucknow.

रविवार, 25 मई, 1952

Remained in Lucknow.

सोमवार, 26 मई, 1952

Misra ji talked about me from Hon. Kamalapati Tripathi. He asked my name etc. I returned to Kanpur from 5 : 30 train.

=) लस्सी दही
१=) टिकट कानपुर
—) किराया इक्का
१ ।=)

मंगलवार, 27 मई, 1952

Daddu Chachchu sent me Lucknow again for his disciplinary action. Lakshmi also went with me.

=) प्लेटफार्म
।) एटम
=) रिक्शा
॥) चाट
१)

बुधवार, 28 मई, 1952

Remained in Lucknow.

बृहस्पतिवार, 29 मई, 1952

Returned to Kanpur by the 7:43 train.

१।।।) दवा
।) ॥ डबल रोटी
=) ॥ लस्सी
।=) ॥ पपीता
२ ।=) ॥ मक्खन
) ॥ बरफ
=) पानी
) ॥ बरफ
५ ।-)

शुक्रवार, 30 मई, 1952

In the morning went to S.S. Awasthi's house. But he was not present. Then from C.B's cycle went to Pt. Munshi Ram Sharma's house and then to Prem Narain's where Khemka was present. Pt. Ji refused at that time to give Bhashavigyan. Then went to Sumati's house. She was at Deputy ka Parao. I went there. From the 6:48 train came to Lalganj. Train was late. Reached Lalganj at 11:15 P.M.

शनिवार, 31 मई, 1952

Remained in Lalganj. Diwakarji met there. Munnu came in the evening from Purwa.

रविवार, 1 जून, 1952

In the morning came to Purwa by Mama's Cycle.

सोमवार, 2 जून, 1952

Remained in Purwa. In the evening went to Dariapur.

मंगलवार, 3 जून, 1952

In the morning went to Gegason for taking bath in Holy Ganga. Returned in the evening.

बुधवार, 4 जून, 1952

Today was Chhoti Manyeen's Udyapan. Remained in Purwa.

बृहस्पतिवार, 5 जून, 1952

Remained in Purwa.

शुक्रवार, 6 जून, 1952

Remained in Purwa. Dadda came in the evening from Lucknow by Pick-up. Diddi also came. Whole the village drank the Thandai today on account of my success in the examination.

शनिवार, 7 जून, 1952

Dadda, Bhabhi etc. went to Lucknow. Amma also went upto Lalganj. Returned with Bade Mama in the evening.; I remained in Purwa.

रविवार, 8 जून, 1952

Bade Mama remained in Purwa. I also in Purwa, We captured the culprits of Gangapar after an encounter in Chharian Khera.

सोमवार, 9 जून, 1952

Remained in Purwa.

मंगलवार, 10 जून, 1952

Remained in Purwa, Mama went to Kanpur.

बुधवार, 11 जून, 1952

Remained in Purwa.

बृहस्पतिवार, 12 जून, 1952

Went to Lalganj. Acharya Vinoba Bhawe came today at Lalganj. Really he is a saint, Acharya and a worthy leader of outstanding influence. Suresh was present at Lalganj. I arranged for the bedding of Acharya, He received 4478.8 Acres of Land as donation in Bhumi Dan Yagna.

शुक्रवार, 13 जून, 1952

Remained in Lal ganj, Mama came from Kanpur.

शनिवार, 14 जून, 1952

Went to Rai Bareli with Lal saheb of semri in his jeep. Due to expiry of time I was unable to receive the money. Met with Vaidya ji. Acharya Bhave was present at Rai Bareli in Govt. High School. Returned at 6:30 to Lalganj.

रविवार, 15 जून, 1952

Remained in Lalgnaj.

सोमवार, 16 जून, 1952

Went to Rai Bareli and Received the amount from Treasury. Mister came from Kanpur to Lalganj.

मंगलवार, 17 जून, 1952

Mister and myself came to purwa via Bajpai Khera. Cycle was not in proper condition. Anyhow we reached here. Chakki was closed today for repairing.

बुधवार, 18 जून, 1952

Remained in Purwa. Mister returned to Lalganj. Attended Ramayana which was held at the door of Shiv Narain Mama.

बृहस्पतिवार, 19 जून, 1952

Remained in Purwa.

शुक्रवार, 20 जून, 1952

Remained in Purwa.

शनिवार, 21 जून, 1952

Remained in Purwa. Engine house's roof was made today. Lala returned with repaired piston from Kanpur.

शुक्रवार, 22 जून, 1952

Remained in Purwa, Akhand Ramayan was started in Imli Tola. Today Chhote Mama came from Lalganj. I became nervous at first in reciting Ramayan.

सोमवार, 23 जून, 1952

Remained in Purwa, Ramayana concluded Today. I shot two fires at its conclusion. Mama remained in Purwa.

मंगलवार, 24 जून, 1952

Remained in Purwa.

बुधवार, 25 जून, 1952

Remained in Purwa.

बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार, 26, 27, 28 जून, 1952

Remained in Purwa.

रविवार, 29 जून, 1952

Remained in Purwa, Akhand Ramayana Path was organised by me. Whole of the village co-operated with me. Surja Kumar, Munari, Munnu, Prem Shanker, Jata Shanker, Chandrika Prasad and Devi Shanker was on the Vyas Gaddi. It was a rainy day and night.

सोमवार, 30 जून, 1952

Ramayana concluded today at 2 pm. In the morning Lakar Bagha came. Ramayana was preceded and followed by Gita.

मंगलवार, 1 जुलाई, 1952

Remained in Purwa.

बुधवार, 2 जुलाई, 1952

Remained in Purwa. Shobhnath Mama went to Kanpur.

बृहस्पतिवार, 3 जुलाई, 1952

Remained in Purwa. Chhote Mama came from Lalganj in the morning. He did not take food in the evening due to closed doors.

शुक्रवार, 4 जुलाई, 1952

Mama returned to Lalganj. He ordered to close the Chakki.

शनिवार, 5 जुलाई, 1952

Remained in purwa. There was great rush in the Chakki. It was a losing day for chakki.

रविवार, 6 जुलाई, 1952

Remained in Purwa. Today was a crowdy day.

सोमवार, 7 जुलाई, 1952

Engine was opened.

मंगलवार, 8 जुलाई 1952

Remained in Purwa.

बुधवार, 9 जुलाई, 1952

Remained in Purwa.

बृहस्पतिवार, 10 जुलाई, 1952

Remained in Purwa. Deposited the Gandhi Pravachan and Hamare Janvar in the School Library.

शुक्रवार, 11 जुलाई, 1952

Remained in Purwa.

शनिवार, 12 जुलाई, 1952

In the morning started for Lalganj at 7:15 by cycle. Kaushal and Bhimji Ahir started earlier. Cycle punctured near Semrapaha. Came to Lalganj at 9. Bade Mama came from Kanpur by the night train. He gave us the pleasing news of the birth of Male child to Shakuntala didiya.

रविवार, 13 जुलाई, 1952

Came to Kanpur by the Morning train accompanied by Kaushal Kishore Pandey. Went to Hulalganj, Bagia and Parmat. Chachhu talked about his case returned to godam at 9:15 P.M.

सोमवार, 14 जुलाई, 1952

It was a rainy day and I was unable to go to college due to rains upto 10 A.M. then I went to college via Bagia with Laxmi after taking food there. Returned at 1 P.M. Went to Jai Narain and Pratap Narain Misra. At 5:30 went to Hospital to see the baby of Babu dada.

मंगलवार, 15 जुलाई, 1952

In the morning went to college, at 2 P.M. Went to Pt. Prem Narayan Ji's house at 5 P.M. to Shanker Dayal Tiwari's house. Returned from there at 8 : 30 sent the medicines to Lalganj for Jija. Came today. also Shobh Nath Mama came to me in the noon time.

बुधवार, 16 जुलाई, 1952

In the morning went to Khemka's hosue and then to library. Mama came from Lalganj. In the noon went to Pt. Prem Narain's house where he dictated his thesis to me over reformism.

बृहस्पतिवार, 17 जुलाई, 1952

In the morning went to college. I took admission.there returned via Bagia. Lalganj's bank babu came with didiya's letter. Pachora Bhabhi returned from hospital. Went to Pt. P.N. Shukla and to Pt. Munshi Ram Sharma's house on foot. Munshi Ram Ji supported my idea about sanskrit the VII paper. Tanken 33 from Prakash Pen Co. on uncle's account.

शुक्रवार, 18 जुलाई, 1952

In the morning went to Bagia, returned to godam and prepared the food. Then Via A.B. Road, Prade went to Shukla ji's house. Chandrika guru and Shyam Hari Tiwari were present there. We returned at about 7 P.M. Shyam Hari came with me, given him the novel 'Pride and Prejudice'. Went to Ranjana Restaurent and Bagia. Started the Ramayan and Studied upto 170 pages.

शनिवार, 19 जुलाई, 1952

Went to college, taken food at Bagia, came to godam, read the Ramayan and then slept for a while, went to Sahitya Niketan and Bagia. Today a meeting was organised against Chachchhu. We went there it was postponed. I bought Khaddar worth about Rs. 17/3 = With poet Niraj I went to Various places, then via library and Khemka's house I came to Bagia to take my food. Came to godam in Night at 10:45 P.M.

रविवार, 20 जुलाई, 1952

Examined the language of economics Book written by Mahavira Charan Saksena of S.N. College Unnao. Went to Bagia at 12. S.S. Awasthi met on the way played playing cards upto 1 P.M. Then went for walking to Phool Bagh. In the night heavy showers came.

सोमवार, 21 जुलाई, 1952

Remained all the day in Bagia. In evening went to Dharmshala. Khemka came with me to godam and remained here upto 10:15. Surendra Shanker Awasthi came in the night at 11 P.M. He asked to write a Abhinandan Patra for Ustad Mustaque Hussain Khan. I promised to him to write it in the morning. I was not feeling well. Pt. Prem Narain ji's nephew commited suicide yesterday.

मंगलवार, 22 जुलाई, 1952

In the morning prepared the Man patra. Awasthi came to bring that and Invited me to attend the function. I was not feeling well today also. I was feeling myself tired and exhausted.

बुधवार, 23 जुलाई, 1952

Remained in Kanpur.

बृहस्पतिवार, 24 जुलाई, 1952

In Kanpur regular classes started from today in the college.

शुक्रवार, 25 जुलाई, 1952

In Kanpur.

शनिवार, 26 जुलाई, 1952

In Kanpur, Mama went to Purwa, Laxmi etc. also to Sathani.

रविवार, 27 जुलाई, 1952

Remained in Kanpur. Taken my food in Bagia. Went to Khemka's house.

सोमवार, 28 जुलाई, 1952

Went to Pt. Prem Narain ji's house.

मंगलवार, 29 जुलाई, 1952

Mama came with letter of mother.

बुधवार, 30 जुलाई, 1952

In Kanpur went to Pt. Prem Narain ji's house.

बृहस्पतिवार, 31 जुलाई, 1952

Went to Pt. Prem Narain ji's house. Lala mechanic came from village for the repairing of broken parts of Engine. He also brought my breakfast and letter of sister.

Remained all the day in Bagia. In evening went to Dharmshala. Khemka came with me to godam and remained here upto 10:15

शुक्रवार, 1 अगस्त, 1952

Mama went to Lalganj of noon train. I went to M/S. Byrainji & Co. to settle the terms of Engine. They demanded Rs. 600. I came to godam via Khemka, Sahitya Niketan, Bagia.

शनिवार, 2 अगस्त, 1952

Mama returned and went to Lalganj again. I have sent the medicines to Lalganj by Lal's mistri.

रविवार, 3 अगस्त, 1952

Remained in Kanpur. I was not feeling well due to jukam. Taken my food in Bagia where I have also played the playing cards. Then went to Phool Bagh and Library.

सोमवार, 4 अगस्त, 1952

Went to college. Returned with Bal Krishna Gupta, I have given him 4 books for reading. l went to Bagia, take my food at 3 P.M. went to Ganga Par for picnic. Dal Bati and Thandei was prepared there. We returned here at about 9:30 P.M. Mama was present here. I cooked the food then slept.

मंगलवार, 5 अगस्त, 1952

Mama remained here. I cooked the food. Went to Bagia, Tilak Hall, Khemka's house and then Ram Manohar Tripathi met me in subzi mandi, with him went to Maya babu's house then to Khemka and Shekhar's house. No body was present. We both and Laxmi Jaya Shanker Shukla went to Phool Bagh where we heard Mr. Tripathi's poem. In the night after taking food in Bagia came to godam.

बुधवार, 6 अगस्त, 1952

At 12 Khemka and Pratap Krishna Nagar came. They remained upto 2 P.M. Mama went to Lalganj. I began an article for 15 August supplement fo Vishwa Mitra. At 3:45 Ram Manohar came. We went to Arya Nagar Prem Narain ji's house and then to Sumati's house returned at 8:15. After taking my food returned to godam. Studied for Half an hour.

बृहस्पतिवार, 7 अगस्त, 1952

Went to college, from there to Dosar Vaishya, Kanya Kubja, Marwari and Bhartiya Vidyalaya, Returned to godam. Prepared the food. Mama came from Lalganj.

शुक्रवार, 8 अगस्त, 1952

Remained in Kanpur. A parliamentary Board was organised under the auspices of Democratic progressive party. I was its member.

शनिवार, 9 अगस्त, 1952

Remained in Kanpur. Filed my nomination paper of M.L.A. ship of College Assembly.

रविवार, 10 अगस्त, 1952

Remained in Kanpur.

सोमवार, 11 अगस्त, 1952

After returning from college went to Lalganj by 12:30 train. Mama was in Lalganj. Went to Purwa. Reached there at 7:30 P.M.

मंगलवार, 12 अगस्त, 1952

Remained in Purwa. It was a rainy day. In the evening went to Lohraman with Kashi Dada. In the night ceremonised Krishna Janam. Fired two shots from gun.

बुधवार, 13 अगस्त, 1952

Surja Kumar's son expired about 10 A.M. I started from Purwa at 4 P.M. Its Cycle's paddle broken in the way. Reached Lalganj at 6 : 30. Amma also came, started from Night Train for Kanpur.

बृहस्पतिवार, 14 अगस्त, 1952

Went to College. Triloki Tandon was fighting for Presidentship of Pol. Sci. Ass. Went to Electricity House, Date was extended for 25 August.

शुक्रवार, 15 अगस्त, 1952

Near about for whole of the day remained in Hostel. Returned at 3 : 15 in the night to godam.

शनिवार, 16 अगस्त, 1952

Association election was held today. Triloki was defeated. All of us were nervous.

रविवार, 17 अगस्त, 1952

With Ram Manohar wandered here and there.

सोमवार, 18 अगस्त, 1952

Went to College.

मंगलवार, 19 अगस्त, 1952

Remained in Kanpur, A wall poster was pasted by Vizzy's party in abusing language.

बुधवार, 20 अगस्त, 1952

Remained in College, Kanpur.

बृहस्पतिवार, 21 अगस्त, 1952

Assembly elections were held. I was victorious. Began to obtain the signs.

शुक्रवार, 22 अगस्त, 1952

Sign hunting remained on progress.

शनिवार, 23 अगस्त, 1952

A protest strike against the U.P.C.A. was observed, though it was unsuccessful due to communists. In the evening ... informed that a report has been filed against us. I observed Anshan today because I was not feeling well.

रविवार, 24 अगस्त, 1952

In the noon I, Mister Babu and Chachhu went to Arya Nagar in the lunch given by Karunesh ji, Returned at 2:30 went to Ram Manohar's house from where accompanied by him went to Bagia. At 5 P.M. went to Vishwamitra Karyalaya from where to Tilak Nagar in Saligh Ram Shukla's Kavi Goshthi, returned at 11 P.M. in the night.

सोमवार, 25 अगस्त, 1952

Went to college. In the college a little quarrels (quarell) broken out between Tandon and K.D. Sharma. Returned at 12. Prepared the food, went to college again in the evening.

मंगलवार, 26 अगस्त, 1952

Went to college. Returned at 1 P.M. Mama cooked the food. I was unable to get the food in Dopahar. Ram Manohar came at 3. We went to Khemka's house at 5:30. Remained there upto 9:15 P.M. Returned and cooked the food. Mama did not take it.

बुधवार, 27 अगस्त, 1952

कानपुर रहा। कवि सम्मेलन के कार्य की तैयारियाँ करता रहा। वर्षा अधिक होने के कारण कॉलेज नहीं गया।

बृहस्पतिवार, 28 अगस्त, 1952

कानपुर रहा। सवेरे कॉलेज गया। राम मनोहर के साथ लौटा। राम मनोहर ने अपना खाना खाया। बगिया से पास वगैरह लेकर घर आया। खाना बनाया। शाम को प्रदीप जी से मिलने अस्पताल गया।

शुक्रवार, 29 अगस्त, 1952

सवेरे कॉलेज गया। जल्दी ही तिलक हॉल होकर लौटा। बाल कटाये। खाना बनाया। शाम को राम मनोहर के घर होकर तिलक हॉल गया। बंशीधर जी के साथ कूलिका चाय पीने गया। यूरोपियन स्टाइल की सामग्री खाने में कुछ अटपटी-सी लगी। राम गोपाल जी बगुला भगत बने बातें करते रहे। सौ-सौ चूहे खा बिल्ली हज्ज चली। कार से कॉलेज गया, रात को घर आकर खाना बनाया।

शनिवार, 30 अगस्त, 1952

सवेरे कॉलेज गया। तिलक हॉल होकर लौटा। गौतम जी का भाषण हो रहा था। खाना बनाया।

मंगलवार, 16 दिसम्बर, 1952

साहित्य निकेतन से 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' लाया। ट्यूशन के इण्टरव्यू के लिए गया। मन में कुछ कचोटता रहा था।

बुधवार, 17 दिसम्बर, 1952

'साहित्य' (रवीन्द्र) तथा 'अर्चना' (निराला) खरीद लाया। कपूर साहब का ३२॥) बिल चुकता किया। 56/- रुपये निकाले। मि. अग्रवाल के दरवाजे तक जाकर लौट आया। बड़ी झेंप-सी लग रही थी।

बृहस्पतिवार, 18 दिसम्बर, 1952

आज से ट्यूशन शुरू किया। जब पहुँचा तो समझ में ही नहीं आता था क्या पढ़ाऊँ? एक तो Hedard English School है, ऊपर से मेरा प्रथम दिन। बड़ा साहस बटोरकर गया था। न मुझे Grammer याद है और न मुझे Algebra, Geometry समझ में आता है, कैसे क्या होगा। पर शुरू तो कर ही दिया। Family बड़ी gentle है। शाम को डॉ. शर्मा के यहाँ गया। साहित्य निकेतन से आलोचना इतिहास अंक लाया। विश्वमित्र कार्यालय भी गया।

शुक्रवार, 19 दिसम्बर, 1952

सवेरे बालमुकुन्द गुप्त के क्लास में गया। Final की लड़कियों ने उत्सव में भाग लेना स्वीकार किया। पर चन्दा केवल दो-दो रुपये ये देना चाहती हैं। आज फिर ड्यूटी पर जाकर पढ़ा आया। 'बड़ा उखड़ा-सा काम' लगता है। घर आकर खाना बनाया। English Grammer पढ़ता रहा। खेमका का पत्र आया।

शनिवार, 20 दिसम्बर, 1952

पानी बरसा। सवेरे बालकृष्ण से बात हुई थी। फर्रुखाबाद जाने की वजह से वह आया नहीं। चच्चू से दिदिया के लिए मकान को पूछा। उन्होंने हामी भर दी। रात की ट्रेन से 79/- रुपये लेकर गाँव गया।

रविवार, 21 दिसम्बर, 1952

सवेरे लालगंज आया। 9 बजे गाँव के लिए रवाना हुआ। शाम को 4 बजे गाँव से लालगंज के लिए चल दिया। रात की ट्रेन से कानपुर आया।

सोमवार, 22 दिसम्बर, 1952

साढ़े आठ बजे सोकर उठा। सवेरे से पानी बरसता रहा। शाम को नया गंज गया। साहित्य निकेतन से लाला मुरारीलाल को पुस्तकें खरीदवाकर घर आया। रात 11 तक पढ़ता रहा।

मंगलवार, 23 दिसम्बर, 1952

पण्डित प्रेम नारायण जी के यहाँ बालकृष्ण के साथ गया। शाम 6 बजे वापस लौटा। शास्त्रीय अध्ययन लेता आया। कपूर साहब और 'भारत' होकर घर आया। 1 बजे तक पढ़ता रहा। मौरावाँ, फर्रुखाबाद का प्रोग्राम कैंसिल हुआ। खेमका को पत्र लिखा।

बुधवार, 24 दिसम्बर, 1952

सवेरे साढ़े नौ बजे अग्रवाल के यहाँ गया। सुरेन्द्र भी आ गये। 'रत्न' के Prospectus के बारे में कुसुम से बात हुई। 2:30 बजे पुनः जाकर प्रसाद और उनके नाटक पढ़ता रहा। 4:30 बजे वहाँ से लौट आया। शिवबहादुर, राममनोहर आये थे।

1953

शनिवार, 3 जनवरी, 1953

आम थे बौराये...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

सोमवार, 5 जनवरी, 1953

१०४) जमा

१५) दिदिया के हिसाब में

५) मेरा खाते का

११) दवा

६।।) रमेश बुक डिपो

७।।।=)।। दूध

२) अखिल

१) गोदाम राशन

५१।=)।।

५२।।)।। शेष

मंगलवार, 13 जनवरी, 1953

११)।। शेष

५) फुटकर खर्च

—चाय, धोबी, घर खर्च, डाक खर्च

६)।। शेष रहे

बुधवार, 14 जनवरी, 1953

६) शेष रहे

२०) खेमका से लिए

२०) कपूर साहब से
४६)
।।) के सिलाई
१) दवा
१) स्वाध्याय मण्डल
१) खिचड़ी दान
।।) साइकिल ब्रेक बनवाई
-) अमरूद
१०) अम्मा को भेजे
१४)
३१।।।≡) शेष रहे।

सोमवार, 19 जनवरी, 1953

३१।।।≡) शेष रहे।

२) सूरज की फीस
१।) सिनेमा
१) गाजर का हलुआ
४।)
२७।।=) शेष रहे।

बुधवार, 21 जनवरी, 1953

२७॥=) शेष रहे।
१५) जमा कपूर साहब से
४२।।=)

१०) पूरन
१०) सुमति को छोटी मांई की धोतियों के लिए
२) चाय जलपान
२२)
२०।।=) शेष

शनिवार, 23 जनवरी, 1953

२०।।=) शेष रहे
१०) दिदिया से

२५) कपूर साहब से चेक के द्वारा लाया
५५ । ।=)

५) फुटकर लालगंज आने-जाने में
३) अम्मा का सामान
४५) अम्मा को...
५३)
२ । ।=) शेष

रविवार, 1 फरवरी, 1953

२ । । =) शेष रहे
१) लकड़ी वगैरह
१ ॥ =) शेष

बुधवार, 4 फरवरी, 1953

६ ॥) शेष रहे
१0) निकेतन के द्वारा

=) अख़बार
॥-) ॥ फल
—) ॥ दूध काफी को
≡) ॥ गोलमाल खाते में
३ । । । =) दवा

बृहस्पतिवार, 5 फरवरी, 1953

१४॥-) ॥ शेष
=) रिक्शा
२) दिदिया

मंगलवार, 14 जुलाई, 1953

गतिरोध
1. कोई गतिरोध नहीं
2. राजनीतिक विशृंखलता
3. उपरले स्तर के लोगों का प्रचार

शुक्रवार, 21 अगस्त, 1953

भटनागर साहब से मिला था। कोई विशेष बात नहीं हुई।

शनिवार, 22 अगस्त, 1953

सायंकाल 6 बजे से ही भयंकर वर्षा प्रारम्भ हो गयी थी। कुछ कम पड़ने पर मैं साहित्य निकेतन से उठ कर हास्टल और कॉलेज गया। कोई नहीं मिला। फिर बाबू जी के बँगले पर पहुँचा। मीटिंग प्रारम्भ हो चुकी थी। बेढ़ब उपस्थित था। Discussion प्रारम्भ हुआ। मेरा नाम सबके ऊपर चल रहा था। Niraj से Qualifications का Comparison भी हुआ। आखिर में भटनागर साहब ने Steno को Dictate किया। देवीशंकर अवस्थी and Chaudhary (अजित कुमार)। साहित्य निकेतन होता हुआ नया गंज गया। वहाँ से 9 बजे भटनागर साहब को फोन किया। उन्होंने भी Confirm कर दिया।

रविवार, 23 अगस्त, 1953

दिन भर भयंकर वर्षा होती रही। बड़े मामा लखनऊ गये। गुदाम* सब चू रहा था। शाम को 6 बजे के लगभग भटनागर साहब के घर गया। 8:30 बजे लौटकर नया गंज गया। चच्चू को रात कालरा हो गया। अधिकांश रात जागते ही बीता।

सोमवार, 24 अगस्त, 1953

सवेरे 11 बजे गुदाम से कपड़े बदलकर भारत रेस्ट्रां होता हुआ, खेमका को लेकर चंदू बाबू से मिला। फिर सुरेन्द्र अवस्थी, बालमुकुन्द गुप्त जी से मिलकर नया गंज में खाना खाया। तत्पश्चात् प्रेम नारायण जी, मुंशीराम जी व अयोध्यानाथ जी से मिला। पं. कृष्ण शंकर जी से मिलकर विश्वमित्र होकर घर लौटा। रात गुदाम गया। वर्षा बन्द हो गयी थी।

मंगलवार, 25 अगस्त, 1953

प्रातःकाल शीघ्र उठकर निवृत्त हुआ। फिर दाढ़ी बनाकर नहाया। कॉलेज 8 बजे के लगभग पहुँचा। ज्योतिष वाजपेयी से बातें होती रहीं। तब तक और सभी लोग आ गये। 8:30 के लगभग अपने नवीन सहयोगी श्री अजित शंकर जी से मिला। आशंका के प्रतिकूल बड़े ही शीलवान और सौम्य व्यक्ति थे। मिलकर बड़ा हर्ष हुआ। फिर त्रिलोकी के साथ घूमता रहा। 10 बजे के लगभग Joining report दी। तत्पश्चात् पं. प्रेमनारायण व सिद्धनाथ जी के साथ कॉलेज से परेड पर आकर चाय

* मामा का आवास जहाँ देवीशंकर 1949 से 1956 तक साथ रहे।

वगैरह पी। फिर अजित जी के साथ साहित्य निकेतन आया। शंकर दयाल तिवारी से मिला। प्रदीप जी से मिला। Staff room में बैठते झेंप लग रही थी।

बुधवार, 26 अगस्त, 1953

प्रातःकाल 8:45 के लगभग कॉलेज गया। होस्टल में छात्र लोक के लिए Matter approve किया। कॉलेज में चौधरी के साथ Classrooms के चक्कर में चक्कर लगाता रहा। खेमका के कमरे में खाना खाया। काफी बातचीत होती रही। लाइब्रेरी से पुस्तकें issue करवाईं। सिद्धनाथ जी ने IIyr. Sc. में Introduce करवाया। फिर अजित जी के साथ बाबू ब्रजेन्द्र स्वरूप से मिलकर साहित्य निकेतन होकर घर आया। घर से फिर नौघड़े से जग्गू के लिए धोती लेकर नया गंज में खाना खा कर घर आया।

बृहस्पतिवार, 27 अगस्त, 1953

प्रातःकाल 6:30 बजे कॉलेज पहुँचा। पर Classrooms की दिक्कत के कारण Class नहीं ले सका। साहित्य रत्न के Forms का कार्य देखता रहा। III C में ब्रजलाल जी ने Introduce किया पर Class नहीं लिया। आज Boldness अधिक थी। आशा बँध रही थी कि Class को Control कर लूँगा। दोपहर में बगैर खाना खाये फिर कॉलेज गया पर आज भी कोई class नहीं लिया। Staff Room में बैठकर कुछ लड़कों से बातचीत अवश्य की। कपड़ा १३। ≡ का खरीद कर निकेतन में रखा, फिर विश्वमित्र प्रेस गया। वहाँ से नया गंज में खाना खा कर घर आया। कुछ कागज देखे। फिर तलवार के यहाँ फोटो उतरवाई। वहाँ से फिर Simla Tailor में कुछ कपड़े दिये। फिर पं. विश्वनाथ जी के साथ चौक तक आया।

शुक्रवार, 28 अगस्त, 1953

सवेरे चतुर्थ पीरियड की समाप्ति पर कॉलेज पहुँचा। साहित्य रत्न के फार्म लेता रहा। फिर सुरेन्द्र अवस्थी के साथ कुसुम के घर से दिनेश को लेकर एम.जी. College गया। वहाँ से घर आकर खाना खा कर कॉलेज गया। पं. सिद्धनाथ जी ने I-A में Introduce किया और ब्रजलाल जी ने I-B में। मैंने आज general पढ़ाया। हिन्दी साहित्य और कबीर पर बोला। कोई परेशानी नहीं हुई। तत्पश्चात् II Sc. C. को लिया। लड़कियों की कक्षा होने के कारण कुछ अधिक प्रगल्भ थी। पर नियन्त्रण बना रहा। कक्षा भी मैंने शीघ्र ही छोड़ दी। इस कक्षा में कुछ डर लगा रहता है। ब्रजलाल जी के घर पर चाय आदि पी। वहीं पर प्रयोगवाद के ऊपर एक अच्छी-खासी गोष्ठी हो गयी। साहित्य निकेतन से पुस्तक लेकर गुदाम आया। रात 11 बजे तक पढ़ता-लिखता रहा।

शनिवार, 29 अगस्त, 1953

रात नींद अच्छी नहीं आयी। सवेरे 6:15 पर उठा। 7:15 तक कॉलेज पहुँचा। आज III G की कक्षा ली। Attendance के पश्चात् प्रसाद पर एक general लेक्चर दिया। प्रसाद जी की नाट्यकला की विशेषताएँ बताता रहा। लेक्चर Conclude नहीं हो सका था। नया गंज गया तो ज्ञात हुआ कि कल 11:45 बजे दिदिया को पुत्ररत्न प्राप्त हुआ था। ईश्वर उसे चिरायु, स्वस्थ और सौभाग्यशाली बनावे। अस्पताल में दिदिया से मिलने गया। रजनी की सी शक्ल थी। फिर कॉलेज पहुँचा। पानी के कारण कोई कक्षा नहीं हुई। लाइब्रेरी में बापट साहब से बातें करता रहा। कपूर साहब से मिलकर घर आया। मेल से लखनऊ गया। रात को लक्ष्मीकान्त से मिलने गया। मिश्रा जी बीमार थे।

रविवार, 30 अगस्त, 1953

सवेरे लक्ष्मीकान्त के यहाँ चाय पीकर त्रिलोकी नारायण जी के यहाँ गया। वे मिले नहीं। लौटकर 10:35 की गाड़ी से रायबरेली होकर लालगंज पहुँचा। साइकिल से दद्दा के साथ गाँव गया। अम्मा इत्यादि बहुत प्रसन्न हुईं।

सोमवार, 31 अगस्त, 1953

आज गाँव से लगभग 4 बजे लालगंज के लिए चला। लालगंज में रात रहा। दूसरे दिन सवेरे रायबरेली से नौकर लेकर लखनऊ आया। रायबरेली में अमरेश से भेंट हुई थी। लखनऊ में त्रिलोकी नारायण जी से बातचीत होती रही। रिसर्च के टापिक भी Discuss हुए। रात की गाड़ी से कानपुर आया। गाड़ी 2।। (ढाई घण्टे) लेट थी।

बुधवार, 2 सितम्बर, 1953

सवेरे कॉलेज गया। H Section में प्रसाद की नाट्य कला Discuss की। राममनोहर भी कक्षा में चुपचाप आकर खड़े हो गये। मुझे कुछ हँसी आ रही थी। II Sc. C. का सेक्शन हल्की सी उलझन लाता है। पता नहीं क्यों केवल इस सेक्शन में ही Class Consciousness महसूस होती है। वत्सराज उदयन पढ़ाया। रात में Music Conference।

बृहस्पतिवार, 3 सितम्बर, 1953

आज IV Year में Prose का Class लिया। Response अच्छा रहा। लड़के काफी शान्त और शिष्ट हैं। आज III yr. G. में प्रसाद की नाट्य कला Conclude की। यहाँ भी वातावरण पूर्णरूपेण शान्त था। Music Conference में गया, रात के 2:45 गाड़ी पर लौटा कुसुम वगैरह के साथ।

शुक्रवार, 4 सितम्बर, 1953

आज फिर H Section में general lecture देता रहा। राममनोहर कक्षा में आया और चुपचाप पीछे खड़ा रहा। J A & B के Sections में आज Poetry पढ़ाई। अजित के साथ घर आया, भारत में चाय पीते हुए। फिर उन्हें कलक्टर गंज में छोड़कर नया गंज होकर कपूर साहब के यहाँ गया। वहाँ से श्याम नारायण कपूर व पाण्डे के साथ Music Conference में गया। रात को तीन बजे घर आया।

शनिवार, 5 सितम्बर, 1953

IV. F. में आज भारतीय संस्कृति वाला पाठ पढ़ाया। विक्टर ह्यूगो वाली कथा से लोग बड़े प्रभावित हुए। भटनागर साहब (डी.ए.वी. कॉलेज के प्राचार्य) ने राउण्ड लगाया। मुझे देखकर मुस्कराये। III G. में आज *स्कन्दगुप्त* प्रारम्भ किया। सवेरे भटनागर साहब का भाषण हुआ था। शाम को elementary और general के classes लिये थे। आज गंगाप्रसाद उपाध्याय का भाषण व At Home हुआ था। प्रेम नारायण जी से काफी बातें हुईं। रात को अजित के साथ संगीत सम्मेलन गया।

रविवार, 6 सितम्बर, 1953

सवेरे 7 बजे श्रमदान के लिए D.A.V. College ground में गये। वहाँ पर काफी फरूहाई हुई। 'छात्र जगत' आज वितरित हुआ। कमठान साहब बहुत नाराज हुए। वहाँ से प्रेम नारायण जी के साथ आनन्द जी के यहाँ गया। आनन्द जी ने आज मेरे appoint होने के उपलक्ष्य में दावत खिलाई। वहाँ से सायंकाल 5 बजे पं. सिद्धनाथ जी को लेकर डॉ. शुक्ल के घर पर पुस्तकें छाँटीं। नया गंज होकर घर आया।

सोमवार, 7 सितम्बर, 1953

सवेरे श्रमदान के लिए 8:30 बजे के लगभग पहुँचा। पानी बरसने से काफी भींग गया। लौटकर नया गंज से कपड़े बदल कर दीनबन्धु जी के घर गया। वहाँ पर चाय, जलेबी, पकौड़ी आदि खायी। फिर नया गंज होकर घर आये। घर में सोते रहे। मेज ठीक की। शाम को भटनागर साहब के घर गया। वहाँ मिलने पर... डॉ. शर्मा और श्याम हरि से मुलाकात हुई। लौटकर भटनागर साहब के साथ कार में उर्सला अस्पताल आया जले लड़के को देखने। वह मर गया था। फिर चित्रसेन के यहाँ होकर लौटा।

मंगलवार, 8 सितम्बर, 1953

सवेरे पहले ground पर गया। फिर घर लौटकर पढ़ता रहा। 10 बजे भारत में चाय पीकर ब्रजलाल जी के साथ Gurtia की अर्थी के साथ भैरोघाट गया। जीवन

की सम्पूर्ण असारता चिता... की लपटों के साथ मूर्तिमान हो रही थी। लौटकर नहा कर खाना खाया। फिर सोता रहा।

बुधवार, 9 सितम्बर, 1953

कॉलेज में 4th Pd. नहीं हो सका। ताले में कुंजी लगवाकर घर आया। फिर 1 बजे कॉलेज पहुँचा। कुछ देर हो गयी थी। अजित के साथ निकला। शाम को भटनागर साहब के घर गया। बहुत-सी बातें होती रहीं। कल 6 बजे के लिए बुलाया। रात को भारत में चाय पी कर घर आये। रात 11½ बजे तक पढ़ता रहा।

बृहस्पतिवार, 10 सितम्बर, 1953

आज दिदिया के लड़के की मूल शान्ति थी। रामकिशोर दीक्षित से मुलाकात हुई। रात को देर से घर लौटा।

शनिवार, 12 सितम्बर, 1953

आज सायंकाल श्री सुरेन्द्र जी के साथ चाय पी। रात में अजित जी, टानी, खेमका, मैं, अवस्थी जी, श्यामनारायण पाण्डे, कपूर साहब 12 बजे तक घूमते रहे। आज बहुत दिन बाद हर्ष और परिहास के mood में लौटे थे। एक-दूसरे को बनाना और छींटाकशी चल रही थी।

रविवार, 13 सितम्बर, 1953

पं. कृष्णशंकर के घर गया। कपूर साहब के यहाँ खाना और कविताएँ हुईं। रात में मारवाड़ी पुस्तकालय गये। शिव बहादुर गोदाम में ही रहे। आज कविताएँ खूब सुनी गयीं। अजित जी की कुछ कविताएँ और भदौरिया के कुछ गीत बड़े ही सुन्दर बन पड़े थे।

सोमवार, 14 सितम्बर, 1953

आज अजित का रेडियो प्रोग्राम दिन में सुना। सुरेश चन्द्र गुप्ता के घर चाय पी गयी। फिर श्याम हरि तिवारी, भटनागर साहब व मुंशीराम जी के घर गये। करुण और करुण विप्रलम्भ के बीच का अन्तर पूछा। मिलन, आशा और शृंगार तथा शोक स्थायी भाव प्रधान अन्तर माने गये। रात में 10:55 को गाड़ी से अजित जी उन्नाव गये।

मंगलवार, 15 सितम्बर, 1953

आज *स्कन्दगुप्त* कॉलेज में खोया। मक्कू लालगंज से आये। शाम को Law

classes में नाम लिखवाया। आज election थे। जयशंकर शुक्ल को जिताया। त्रिलोकी इत्यादि के साथ लौटा। साहित्य में गतिरोध पर लिखने को उत्साहित हुआ। गतिरोध के कारणों पर विचार करना है।

बृहस्पतिवार, 17 सितम्बर, 1953

भटनागर साहब के घर गया। अजित कुमार जी भी साथ थे। काफी प्रसन्न मुद्रा में थे।

शुक्रवार, 18 सितम्बर, 1953

श्री ब्रज लाल वर्मा और अजित जी के साथ जनेश्वर वर्मा के घर गया। जनेश्वर थे नहीं, वहाँ से फिर कानपुर रेस्ट्रां में चाय पी। फिर विद्यार्थी श्री ओंकार नाथ जी के घर गया। नया गंज होकर कॉलेज पहुँचा। साहित्य निकेतन होते हुए घर आया।

शनिवार, 19 सितम्बर, 1953

आज सवेरे music conference का review लिखा। बैजनाथ और बालकृष्ण आये। मैं सोच रहा हूँ मनुष्य की इस कमजोरी को कि वह अभिनन्दन हर स्थान पर चाहता है फिर वाजपेयी जी से ही लोग क्यों रुष्ट हों। उनका तो फिर भी contribution है परन्तु जिस ढंग से group बनाने की इन्होंने सोची है वह बहुत अधिक व्यावहारिक नहीं है। इतना संकीर्ण दायरा अच्छा भी नहीं और अज्ञेय, भारती जैसे scholars ही कहाँ हैं इनके पास। रात को सुरेन्द्र से प्रभाकर अवस्थी के बारे में बातें होती रहीं।

रविवार, 20 सितम्बर, 1953

आज स्वाध्याय मण्डल की बैठक 10.30 बजे प्रारम्भ हुई। कैलाश नारायण जी ने 'भारतीय संस्कृति और तुलसीदास' निबन्ध पढ़ा। निबन्ध काफी घिसापिटा सा था। संस्कृति का सतही विवेचन अवश्य था पर उसका प्रतिफलन अन्त में तुलसी पर नहीं दिखाया गया था। मैं सोच रहा हूँ अगली के लिए मुझे लिखना है।

दिन भर पढ़ता रहा। सायं पं. कृष्ण शंकर जी के साथ टहलता रहा। रात्रि में प्रेम नारायण जी के घर गया। वे विवाह एवं अन्य परिस्थितियों पर बातचीत करते रहे। 10.30 बजे घर आया।

सोमवार, 21 सितम्बर, 1953

आज दिन भर पढ़ता-लिखता रहा। सायंकाल कपूर साहब के यहाँ अखण्ड रामायण हुई। मैं रात भर जागा।

मंगलवार, 22 सितम्बर, 1953

प्रातःकाल घर आकर कुछ देर सोता रहा। फिर नया गंज में खाना खाकर 2 बजे कपूर साहब के यहाँ पहुँच गया। रात को 2 बजे रामायण समाप्त हुई।

बुधवार, 23 सितम्बर, 1953

आज कॉलेज में अधिकांश classes नहीं लिये। अजित से पटना जाने के सम्बन्ध में बातचीत हुई।

बृहस्पतिवार, 24 सितम्बर, 1953

आज जनेश्वर जी के घर पर चाय पी। अजित जी और विद्यार्थी जी भी थे। जनेश्वर जी बड़े ही टिपटाप अंग्रेज आदमी लगे। सारी चीजें करीने से सँभली हुई थीं। देख कर ईर्ष्या होती थी।

शुक्रवार, 25 सितम्बर, 1953

ब्रजलाल जी के साथ छोटे वाले रेस्ट्रां में आकर चाय पी। फिर लौट कर कॉलेज में पढ़ाया। सुरेश का फार्म भरवाया। रात में आस्कर वाइल्ड पढ़ता रहा। बड़ी सुन्दर कहानी लगी।

शनिवार, 26 सितम्बर, 1953

सवेरे कॉलेज गया। साधना प्रेस होते हुए लौटा। दोपहर में ओंकारेश्वर पाण्डेय आये।

रविवार, 27 सितम्बर, 1953

स्वाध्याय मण्डल में निबन्ध पाठ।

बृहस्पतिवार, 1 अक्तूबर, 1953

१00)	जमा	२।।।=)	सुपाड़ी, कत्था, शकर
		१)	आलोक
		)।।	हवा
		६।।)।।	घी
		२)	निर्गुण अवस्थी
		५0)	एल एल जे–यू ले
		६२।=)	
		३७।।=)	शेष रहे

शुक्रवार, 2 अक्तूबर, 1953

३६।। =)	शेष	।=)	चाय
	जमा	१।।।=)	दवा
	।-)	५)	दिदिया
३६॥ ≡)		१।।≡)	किराया गाँव
		१)	फुटकर खर्च गाँव
		२५)	अम्मा
		३४।।।≡)	
		३)	शेष रहे

शनिवार, 3 अक्तूबर, 1953

गाँव रहा। पिता जी की श्राद्ध की।

रविवार, 4 अक्तूबर, 1953

गाँव रहा।

सोमवार, 5 अक्तूबर, 1953

३) जमा

१) टिकट
।=) भाई चच्चू
।) टिकट कानपुर
॥ =) बाल कटवाई
=) चाय
।=) कपड़े धुलाई
१।।)

मंगलवार, 6 अक्तूबर, 1953

≡) शेष रहे	।=) साबुन
५0 जमा	=) केला
५0 ≡)	=) टेलीफोन
	॥ =)
	४६ ॥ =) शेष

पं. कृष्णशंकर, डॉ. सोम, प्रिन्सिपल भटनागर, सिद्धनाथ जी व सुमति से मिला। घर आया। 4 बजे के लगभग अजित, उनकी छोटी बहिन और आदित्य राम मिश्र आये। साहित्य निकेतन होकर 'War of the World' तस्वीर देखने गये। नया गंज में खाना खाकर लौटा।

ओमप्रकाश सक्सेना मिले। वही बेकारी का रोना। B.Sc. पास करके भी कहीं ठिकाना नहीं और मैं War of the World देखकर लौटा था। वैज्ञानिक आविष्कारों पर Satire था H.G. Wells का। शायद भारत को भी अन्त में धर्म की ही शरण लेनी पड़े। दुनिया में जिस कदर तबाही फैली हुई है, क्या कहा जाय।

बृहस्पतिवार, 8 अक्तूबर, 1953

पटना पहुँचा। अधिवेशन—भारतीय हिन्दी परिषद का।

शुक्रवार, 9 अक्तूबर, 1953

अधिवेशन।

शनिवार, 10 अक्तूबर, 1953

अधिवेशन।

रविवार, 11 अक्तूबर, 1953

नालन्दा, राजगीर और पावापुरा।

सोमवार, 12 अक्तूबर, 1953

आज सन्ध्या साढ़े चार बजे पटना से बनारस आते हुए कर्मनासा के दर्शन और बिहार को प्रणाम।

मंगलवार, 13 अक्तूबर, 1953

पं. सीताराम चतुर्वेदी से भेंट।

बुधवार, 14 अक्तूबर, 1953

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर आदि से भेंट।

बृहस्पतिवार, 15 अक्तूबर, 1953

आचार्य द्विवेदी से भेंट। इलाहाबाद के लिए प्रस्थान।

शुक्रवार, 16 अक्तूबर, 1953

इलाहाबाद रहा।

शनिवार, 17 अक्तूबर, 1953

कानपुर शाम को आया।

रविवार, 18 अक्तूबर, 1953

लखनऊ गया।

सोमवार, 19 अक्तूबर, 1953

लखनऊ से सन्ध्या कानपुर आया। दंगल देखने गया।

मंगलवार, 20 अक्तूबर, 1953

कॉलेज खुला।

बुधवार, 31 अक्तूबर, 1953

3) हिसाब दूध का साफ।

सोमवार, 2 नवम्बर, 1953

आज general strike थी। कॉलेज से दोपहर में लौटा। लौटकर अजित के साथ विश्वमित्र और नया गंज गया। फूलबाग होकर ए.वी. रोड आया। रात में गुण्डों के आतंक को समाप्त करने चच्चू वगैरह के साथ निकला।

मंगलवार, 3 नवम्बर, 1953

सवेरे भारत में चाय पीकर कॉलेज गया। वहाँ भटनागर साहब से बातें हुईं। किशनचन्द जैन के बुलाने पर तिलक हाल आया। भटनागर साहब वगैरह भी थे। काफी discussions हुए। Statement दिया गया। लौट कर घर आया। खाना खाया।

शनिवार, 21 नवम्बर, 1953

आजकल बात को सीधे-सादे ढंग से अभिव्यक्त करने पर जोर दिया जाता है। पर Poetry without Imagery की क्या कल्पना की जा सकती है? यदि नहीं तो फिर Medium का प्रश्न उठता है, दृश्य विधान के लिए चित्रात्मकता की आवश्यकता पड़ती है। फिर चित्रात्मकता में शब्द चित्र भी आते हैं, और भाषा की रंगीनी भी स्वाभाविक हो जाती है।

रविवार, 22 नवम्बर, 1953

उपन्यासों में लोग Type चरित्रों की अपेक्षा individual character श्रेष्ठ मानते हैं। नारमन डगलस ने इसको (type) नकारते हुए कहा था कि टाइप करेक्टर में मनुष्य जीवन के असंख्य पक्षों में से दो-तीन प्रमुख Facets को चुन लिया जाता है, "It consists I should say in a failure to realise the complexities of the ordinary human mind" पर प्रश्न यह उठता है कि प्रमुख तत्त्व तो लिए जाते हैं यदि तन्खा या खन्ना गोदान में मिल और शेयर के ही सौदे करते हैं तो हमारे दैनिक जीवन में हम सभी मौके-बेमौके अपने ही पेशे की बात करते हैं। अतः टाइपों का निर्माण उतना गर्हित नहीं। पर और भी समस्याएँ मिलती हैं। पर कोई समाधान नहीं है।

1954

देवीशंकर अवस्थी
डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर।

कहीं से ढूँढ़कर ला दे, हमें भी ऐ गुले.......
वोह ज़िन्दगी, जो गुज़र जाये मुस्कराने में।

हस्ताक्षर

नाम	:	देवीशंकर अवस्थी
घर का पता	:	76/342, कुली बाज़ार, कानपुर।
कार्यालय का पता	:	डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर।
टेलीफ़ोन नं.	:	3744
तार का पता	:	उमाशंकर केदारनाथ, हालसी रोड, कानपुर
घड़ी नं.	:	272340 Alpina
जन्मतिथि	:	5 अप्रैल, 1930

कहानी ग्राहक नं. 446

सर्वे लाभाः साभिमानाः
इति सत्यवती श्रुतिः।

महाभारत शान्तिपर्व

इस पृष्ठ के पीछे

Give give thine all
All thou hast and do'est

give, till thy hands
and heart and
head are free

अज्ञात लेखक

शुक्रवार, 1 जनवरी, 1954

पार्श्व गिरि का नम्र, चीड़ों में
डगर चढ़ती उमंगों-सी
बिंधी पैरों में नदी, ज्यों दर्द की रेखा
विहग शिशु मौन नीड़ों में
मैंने आँख भर देखा।
दिया मन को दिलासा— पुनः आऊँगा
भले ही बरस-दिन-अनगिन
युगों के बाद।
क्षितिज ने पलक सी खोली
तमक कर दामिनी बोलीः
'अरे यायावर रहेगा याद।'

'अज्ञेय'

शनिवार, 2 जनवरी, 1954

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।

यह पृथिवी जन की धात्री है। जन की भाषाएँ अनेक और उसके धर्म अनेक हैं। इस अनेकता में एक जीवन का वरदान छिपा हुआ है, यदि हम बुद्धिपूर्वक उसको समझ सकें।

'पृथिवी सूक्त'

रविवार, 3 जनवरी, 1954

अक्षधुरि सुखासीना
मक्षिकैकावदत् पुरा।
उत्थाप्यते मया मार्गे पांशुराशिरहोकियान्।

गाड़ी की धुरी पर सुखपूर्वक बैठी हुई मक्खी ने एक बार कहा—"वाह राह पर मेरी वजह से कितनी धूल उड़ रही है।"

सोमवार, 4 जनवरी, 1954

अहो सिद्धार्थता तेषां येषां सन्तीह पाणयः।
न पाणिलाभादधिको लाभः कश्चन विद्यते॥

महाभारत शान्तिपर्व

काम करने के लिए जिनके पास हाथ हैं, सचमुच उनके सभी अर्थ सिद्ध हैं। सबसे बड़ा लाभ तो यही है कि कृतित्व का अभिमानी हाथ हमारे पास है।

मंगलवार, 5 जनवरी, 1954

ऊर्ध्वबाहुः विरौम्येष
नैव कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च
स धर्मः किं न सेव्यते॥

'व्यास'

बृहस्पतिवार, 7 जनवरी, 1954

मैंने पूछा : ...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

रविवार, 10 जनवरी, 1954

ये ग्रेनाइट की चट्टानें, वह दूर्वादल के मूल...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

शनिवार, 13 फरवरी, 1954

कन्वोकेशन
कवि सम्मेलन

खर्च
३) अमरेश
३५) अजित
१०) पं. बलभद्र प्रसाद
१) रिक्शा गोपाल व्यास
२) शिवबहादुर, राममनोहर, खाना, रिक्शा
१) रिक्शा रमानाथ अवस्थी

रविवार, 14 फरवरी, 1954

उदयपुर लोक कलामण्डल का नृत्य संगीत समारोह।

बुधवार, 17 फरवरी, 1954

साधना देशकालातीत नहीं होती, इसीलिए उसको भंग किया जा सकता है, व्यवधान पड़ सकता है। वह इच्छा साध्य है।

रविवार, 21 फरवरी, 1954

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का अभिभाषण cancelled.

बृहस्पतिवार, 22 अप्रैल, 1954

आज अवस्थी जी ने वह समाचार सुनाया जिसे मैं कभी न सुनना चाहता था पर जिसकी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा भी कर रहा था और आशा भी। आज फिर सोच रहा हूँ कि नहीं, मन को आग्रहपूर्वक दबाना चाहिए और बुद्धि को जबरदस्ती सामने रखना चाहिए। अस्तु परसों आई.पी. एक्ट का पर्चा है, पढ़ नहीं पा रहा हूँ, पर पढ़ूँगा अवश्य क्योंकि बुद्धि को ऊपर रखना है अवश्य।

सोमवार, 10 मई, 1954

Today I have suffered the second greatest stock of my life, the first was death of my father and the second one is death of ....?

बुधवार, 12 मई, 1954

From 11:15 to 11:30 pm these were the best and worst moments of my life. Drops in eyes and भर्राये हुए गले के साथ हमेशा के लिए अलग हो जाने की बात...।

शनिवार, 29 मई, 1954

जगत की रीतिनीति में बहुत बड़ी जीत चाहिए...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

रविवार, 1 अगस्त, 1954

बाल विद्यापीठ के पुस्तकालय का संयोजक चुना गया।

सोमवार, 23 अगस्त, 1954

प्रयाग रहा।

मंगलवार, 24 अगस्त, 1954

प्रयाग से काशी गया।

बुधवार, 25 अगस्त, 1954

काशी रहा।

बृहस्पतिवार, 26 अगस्त, 1954

सवेरे कानपुर।

रविवार, 3 अक्तूबर, 1954

कानपुर से बड़ी शीघ्रता के साथ 2 बजे की गाड़ी से अम्मा, सुधीर, रेखा को लेकर लखनऊ आया। सीधे बशीरतगंज पहुँचा पर वहाँ अभी कोई न आया था, तब गणेशगंज गया। रात को साढ़े आठ के लगभग किशोरभाई पटेल के साथ स्टेशन आया। आर.जे. टिकट लेकर भीतर गया। एम.के. भटनागर व ब्रजेन्द्र स्वरूप सक्सेना पिण्डारी ग्लेशियर जाते हुए मिले। ऊपर की बर्थ पर सो गया। जगह काफ़ी मिल गयी थी।

सोमवार, 4 अक्तूबर, 1954

सवेरे भोजीपुरा पर नींद खुली। नित्यकर्मों से निवृत्त हुआ। रास्ते में खूब पानी भरा था। किच्छा से लालकुआँ तक ट्रेन 3-4 मील की गति से आयी। हलद्वानी में टी.सी. ने उतरने को एलाऊ नहीं किया। भटनागर वग़ैरह यहीं उतर गये। काठगोदाम से बस मिली। रास्ता बड़ा खूबसूरत मिला। मसूरी से ज़्यादा सुन्दर। इस बार Beauty की Subjectivity समझ में आयी। कौला नदी के बहाव को देखकर सेना की उपमा नदी से अत्यन्त श्रेष्ठ मालूम हुई। उछल-उछल कर आगे बढ़ना बड़ा रमणीक और भयानक लगता है। बस स्टैण्ड से घर मन्ना के साथ आया। ताश खेलता रहा। शाम को फ्लैट्स पर घूमने गया। Exhibition देखी। बाज़ार में घूमते रहे। वासुदेव द्विवेदी मिले।

मंगलवार, 5 अक्तूबर, 1954

चाय वगैरह पीकर हम, जनार्दन व शान्ति नीचे आये। मन्ना अपने लिए स्वेटर

देखते रहे। फिर झील में बोटिंग की। तल्लीताल बस स्टैण्ड पर अग्निहोत्री जी की प्रतीक्षा की, फिर घर लौटकर खाना खाया। सन्ध्या को फिर फ्लैट्स पर गये। आज नैना देवी के दर्शन किये। मानता मानी। झील पर Exhibition का प्रतिबिम्ब देखते रहे। पता नहीं कैसे प्रतिबिम्ब को लोग झूठ कहते हैं, वह तो real से भी अधिक सुन्दर होता है। मेरे विचार से तो Reality + Imagination = Reflection = Art = Absolute Truth. रात को ऊपर चले आये। अजित की कविताएँ व मुशायरा सुना। चिट्ठियाँ लिखीं।

बुधवार, 6 अक्तूबर, 1954

सवेरे राइडिंग के लिए गये परन्तु घोड़े ही नहीं मिले। तब फिर बोटिंग करते रहे। दोपहर में मिस्टर अग्निहोत्री आ गये। 4 बजे जनार्दन कानपुर लौट गये। शाम को फ्लैट्स पर नुमायश देखने गये। लौटकर डॉ. प्रेमनारायण की टॉक सुनी। अच्छी भी लगी और ख़राब भी। Propaganda बहुत था। रात पढ़ता रहा। मन भी कुछ ऊब रहा था। डॉ. सुनीति कुमार की Talk सुनी।

बृहस्पतिवार, 7 अक्तूबर, 1954

चाय पीकर टिफिन टॉप गया। Dorothy Seat पर लगभग घण्टे भर रहा। प्रकृति प्रेमिका इस आंग्ल सुन्दरी का चित्र मेरे मन पर उभरता रहा जो यहाँ घण्टों बैठकर चित्रकारी किया करती थी। सचमुच बड़ी खूबसूरत जगह है। यहाँ से मैदान और बर्फानी चोटियाँ, झील और नदी सभी दिखायी पड़ते हैं। नैनीताल की सुषमा अपने द्वार यहाँ उन्मुक्त किये हैं। शाम को शान्ति, अग्निहोत्री के साथ घूमने गया। Exhibition में घूमता रहा।

शुक्रवार, 8 अक्तूबर, 1954

चाय पीकर फ्लैट्स पर आया। छोटी नाव लेकर बोटिंग करता रहा। तल्लीताल का बाज़ार देखा। पोस्टकार्ड लेकर रिक्शे से लौटा। रिक्शे पर लखनऊ के ध्रुव नारायण मिश्र 5, गणेशगंज लखनऊ मिले। सेब लेकर घर लौटा। खाना खाकर शान्ति से बातें होती रहीं। फिर कुछ देर पढ़ता रहा। दोपहर में सोया भी। शाम को नीचे घूमने गया। नुमायश में जंगबहादुर सिंह से खादी दुकान में भेंट हुई।

शनिवार, 9 अक्तूबर, 1954

नहाकर, चाय पीकर Lands End देखने गये। क्या विचित्रता है कि वहाँ की सड़क का नाम Prospect Road है। सचमुच जहाँ Land समाप्त, वहीं पर Prospect भी खतम। वहाँ से Short cut से Tiffin Top गया। बड़ा ही Lovely रास्ता है।

भटकने का रस भी जाना और अकेलेपन का आनन्द भी। रास्ते में खूब गाता था और चिल्लाता था। मानो सारी impulses के value खुल गये थे। मन साफ था। Every Impulse that we strive to strangle broods in our mind and poisons us. शाम को शान्ति के साथ Dorothy देखने गये। लौटकर सुरेन्द्र वग़ैरह की पहुँच का तार मिला। बड़ा आनन्द हुआ।

रविवार, 10 अक्तूबर, 1954

सवेरे स्नान कर नीचे गया। घोड़े पर तल्लीताल आया। बस से सुरेन्द्र और मन्ना आये। नाव से लौटे। ऊपर आकर खाना वग़ैरह खाया। पढ़ते व गाने सुनते रहे। शाम को घूमने गये। इधर-उधर घूमे। सुरेन्द्र को बताते व मन्ना को बनाते रहे। Allied Stores में अवस्थी Brandy लेने गये। उसने 8 बजे जाने के कारण इनकार कर दिया। रात घर लौटे। कवि-सम्मेलन रेडियो पर सुना। जा.व. शास्त्री, अज्ञेय, भारती, सुमन की कविताएँ अच्छी लगीं। शम्भुनाथ भी अच्छे थे।

सोमवार, 11 अक्तूबर, 1954

आज शरद पूनो थी। दोपहर में भोजन करके Lands End सुरेन्द्र के साथ गये। लौटकर आराम करते रहे। अम्मा, बड़े मामा, खेमका व प्रेमनारायण जी के पत्र आये। सुरेन्द्र अग्निहोत्री के व्यवहार से कुछ असन्तुष्ट थे। पर किया क्या जाये। लोगों में officialdom आ ही जाता है। बाज़ार में घूमता रहा। सुरेन्द्र ने Brandy खरीदी। अम्मा व खेमका को पत्र लिखा।

मंगलवार, 12 अक्तूबर, 1954

चाय पीकर चीना पीक सुरेन्द्र के साथ गया। बाज़ार से सेब वग़ैरह लेते गया था। एक ही Stretch में ऊपर पहुँचा। रास्ते में, चीड़, देवदारु व अंजीर के पेड़ों की पर्वत की श्रृंखला के मध्य शोभा देखते ही बनती थी। मानो सारे शरीर में हरिताभ मुकुट धारण किये हैं। उनका Slope किसी सुघड़ शिल्पी के पटु शिल्प की याद दिलाता था। प्राकृतिक दृश्य सचमुच कभी-कभी मनुष्य को Overjoyed कर देते हैं। आज हम लोग समस्त सभ्यता को ताक पर रख आदिम मनोवृत्तियों के अत्यधिक निकट पहुँच गये। Erotic sentiments जैसे वहाँ अधिक तीखे हो गये। लौटते समय कुछ खतरे में पड़ गये थे। घर लौटकर खाना व चाय आदि पी। ताश खेलते-खेलते सुरेन्द्र की Superiority Complex के कारण झगड़ा हो गया। सचमुच बड़ा ही स्वार्थी और तंगदिल आदमी है। He is not fit for friendship. पन्त की टॉक रेडियो पर सुनी। दिदिया और शिवप्रसाद सिंह का पत्र आया। अम्मा को व मामा को पत्र लिखा।

बुधवार, 13 अक्तूबर, 1954

आज शान्ति, जनार्दन, अग्निहोत्री बरेली के लिए व सुरेन्द्र कानपुर के लिए तैयार हुए। सुरेन्द्र का बिल चुकता किया। 18 सेर सेब खरीद कर लाया। १) सेर। कुछ देर सोया। 2 बजे के लगभग सबको पहुँचाने बस-स्टैण्ड आया। फिर गुफ़ा महादेव के दर्शन किये। दुर्गाशाह लाइब्रेरी में पढ़ता रहा। कश्मीरी की दुकान से एक शाल और एक अखरोट की लकड़ी की ट्रे खरीदी। नुमायश से बुकरैक और गुड़िया खरीदी। जंगबहादुर से बातें करता रहा। फिर ऊपर आकर नरेश और सुशील के साथ खाना खाया तथा सुरेन्द्र के व्यवहार पर टीका-टिप्पणी हुई। सुरेन्द्र ने मेरे नमस्कार का प्रत्युत्तर नहीं दिया।

बृहस्पतिवार, 14 अक्तूबर, 1954

सवेरे नहा-धोकर व चाय पीकर सामान ठीक किया। खाना खाया और ताश खेले। 12 बजे के लगभग नीचे जाकर 2 सेर सेब और खरीदे। खेमका व राधाकृष्ण को पत्र डाला। ऊपर आकर सामान को 'फ़ाइनली' बाँध कर ताश खेलता रहा। साढ़े तीन के लगभग चाय पी तथा एक बाजी रमी खेल चल दिया। के. सिंह के 11/= दिये। रास्ते में नरेश मिले। 4:45 पर बस चली। 6 के लगभग काठगोदाम आयी। स्टेशन मास्टर से रिज़र्वेशन मिला। 7:35 पर गाड़ी रवाना हुई और हलद्वानी में 8 बजे मैं लिख रहा हूँ।

सोमवार, 1 नवम्बर, 1954

यदि मनुष्य के Erotic sentiments को ऊपर उठाया जा सकता, तो शक्ति का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण उपयोग हो सकता है। मनुष्य को ज़रा-सा मौक़ा मिला नहीं कि वह उसी भाँति की बात करने लगता है। पशुत्व आज तक रोका नहीं जा सका।

मंगलवार, 9 नवम्बर, 1954

आज मेरा प्यार उमड़ा है...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

शुक्रवार, 12 नवम्बर, 1954

भावानुवाद

रात्रि, तू संगीत हो,
जिससे वह गन्धर्वों की वीणा

वाले देश को जा सके।
समुद्र, तू हाथ हो,
जिससे उसके सपने
तेरे रक्षकों को संसार की मांसल देह
स्पर्श करते देख सकें।
आकाश, तू शब्द हो,
जिससे कि उसकी सुन्दरता गिनी जा सके।
और प्रतियोगिता में तारे अपने शान्त चेहरों
को छुपा सकें।
उसके सौन्दर्य के प्रतिबिम्ब के सम्मुख
पृथ्वी, तू राजपथ हो,
जिससे उसका अभिगमन
तुझे स्वर्ग की वक्र ऊँचाइयों तक
ले जा सके
ईश्वर, तू खुद एक संसार और सिंहासन बन जा
जिससे वह अनुकूल ऋतु पा सके।
और बच्चों की पोथी में चित्रित घण्टियों
की आत्माएँ अपनी
दूरागत मन्द्र ध्वनि से तेरे
विचित्र महल में ले जा सकें उसे।

कैनेथ पैचन की कविता 'Be music, night' का भावानुवाद

रविवार, 14 नवम्बर, 1954

'पुकारता तुम्हें'...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

सोमवार, 15 नवम्बर, 1954

प्रथमाक्षर

धीमे से बोलो; सूर्य जा रहा है नीचे...

('कविता उपखण्ड' में आकांक्षा नाम से संकलित)

बुधवार, 17 नवम्बर, 1954

For whose adonment the mouths
of roses open in languorous speech;
And from whose grace the trees of heaven
learn this while standing.

(I must go now to cash in the milk bottles
So I can phone somebody
For enough money for our supper)

Kenneth Patchen
'inperspective of'

बृहस्पतिवार, 18 नवम्बर, 1954

भावानुवाद

जब वह मेरे पार्श्व में
होती
नींद का नगर उसके चारों ओर घिरता
और जिज्ञासु बालक ऊँची खिड़कियों
से झाँकने की कोशिश करते
उस कमरे की, जहाँ हम थे।
और बहुत सी आवाज़ें आतीं
दुनिया की, चर्खे की, लकड़ी की
कपड़े और सर्ज के सूट की।
और फिर आवृत्त के भीतर हम
घिर जाते तब तक को
कि हम भी उसी नगर में चले जाते
जो हमारा आदर्श का नगर
और विश्रान्ति का स्थल है।

कैनेथ पैचन की कविता
'So when she lay be side me' के एक अंश का भावानुवाद

शुक्रवार, 19 नवम्बर, 1954

भावानुवाद

ज़मीन पर बर्फ़ गहरी है।
हमेशा रोशनी गिरती धीमे से,

मेरी प्रियतमा के बालों पर।
यह दुनिया सुन्दर है।
लड़ाई खुद हारी है।
ईश्वर हमें न भूलेगा
जिसने बर्फ़ को प्यार की प्रतीक्षा
के लिए बनाया है।

केवल कुछ पागल हो जाते हैं
आकाश अपनी शुभ्रता में घूमता है
एक बूढ़े दयालु बादशाह के वरदहस्त सा
ईश्वर हमें न भूलेगा,
जिसने कि आकाश को हमारे
प्यार का साक्षी बनाया है।

ज़मीन पर बर्फ़ खूबसूरत लगती है
और सदैव स्वर्गिक आलोक धीमे-से
मेरी प्रियतमा के बालों पर उतरता है।

कैनेथ पैचन की कविता
'The snowin deep on the ground' का भावानुवाद

1955

शनिवार, 1 जनवरी, 1955

1955 मेरे लिए यायावर का वर्ष हो।
1955 मित्रों के स्नेह का वर्ष हो।
1955 अपरिचितों के सौहार्द का वर्ष हो।
1955 कल्याण का वर्ष हो।
1955 मेरा वर्ष हो।

रविवार, 2 जनवरी, 1955

अहो सिद्धार्थता तेषां येषां हि सन्तीह पाणयः।
न पाणिलाभादधिको लाभः न कश्चन विद्यते ॥

महा. शान्ति पर्व

ऊर्ध्व-बाहुः विरौम्येष नैव कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च, स धर्मः किंनु सेव्यते ॥

महाभारत

सोमवार, 3 जनवरी, 1955

1. आज जैसे व्यक्ति मिथ्या है, मैं मिथ्या हूँ, मेरा परिवार एवं परिजन स्नेह झूठा है। है तो केवल समूह। बड़ी इकाई के लिए छोटी इकाई अमहत्त्व की घोषित कर दी गयी है। अपना नाम लेने से व्यक्तिवादी कहकर तिरस्कृत किये जाने का डर है, परन्तु साहित्य वैयक्तिक संवेदना के स्तर पर ही निर्मित होता है। वैसी ही संवेदनाएँ दूसरों में भी होने से उसके साधारणीकरण में बाधा नहीं पड़ती।

इस अन्तर्विरोध ने कवि को भी अजीब परिस्थिति में डाल दिया है। वह जनवादी बनना चाहता है, पर अपेक्षित जनवाद को भीतर अनुभव नहीं कर पाता।

2. Wishful thinking उसको पलायनवादी भी बनाती है। यह भी उस भीड़ के दबाव के कारण ही करता है।

मंगलवार, 4 जनवरी, 1955

युग चेतना की अभिव्यक्ति के लिए अपना एक छन्द चाहिए। सवैये में प्रत्येक पंक्ति में एक नया विचार, भाव या चित्र आ जाता है। उसकी प्रत्येक पंक्ति में एक अपेक्षित स्वतन्त्रता होती है। यह छन्द उस युग के लिए ठीक था जब जीवन अपेक्षाकृत बहुत सीधा-सादा था। थोड़े से संकेत में अपेक्षित व्यंजना हो जाती थी।

गीत के प्रत्येक Stanza में एक-एक अलग-अलग चित्र होता है और उन्हें एक सूत्र में अन्तर की भावना पिरोती है। यह एक कदम आगे बढ़ा हुआ चरण था। गीत Subjective Poetry होने के कारण भावना की इस एकात्मकता का अन्दर से निर्वाह कर लेता है। फिर उस युग में मनुष्य जागा था। विज्ञान ने उसके अन्दर नयी आस्था उत्पन्न कर दी थी। वह मनुष्य की महानता घोषित करने लगा था, इसीलिए उस Subjectivity का इतना महत्त्व था।

पर उसी विज्ञान ने फिर से मनुष्य को नीचे ला गिराया। इस टेक्निकल सोसाइटी में उसका व्यक्तित्व (Personality) जैसे खोने लगा। वह समूह का उपेक्षित अंग-सा बन गया। अहम् उसका पहले जाग्रत हो चुका था। अतः उसे Subjectivity को Objectivity में पिरोकर उपस्थित करना है। जीवन अत्यधिक जटिल, ज्ञान- विज्ञान अधिकाधिक अन्योन्याश्रित और मिश्रित हो गये। यहाँ तक कि Philology और Mythology एक साथ चलने लगे। इस स्थिति ने ऐसे छन्द की आवश्यकता को जन्म दिया जो इस जटिल Sensibility को अभिव्यक्ति दे सके। Free verse इसी की देन है। इसमें पंक्ति चित्र या खण्ड चित्र की आवश्यकता नहीं। एक बात को अविभाजित ढंग से पूरे छन्द में फैला कर कहा जा सकता है। तात्पर्य यह कि मुक्त छन्द अधिक बड़ा और व्यापक Canvass है।

सवैये की अन्तिम पंक्ति जोरदार होती थी, गीत की पहली और अब पंक्ति का प्रश्न हट गया, यह भी सामूहिकता का द्योतक है।

"यह गीत स्नेह भरा..."

गुरुवार, 6 जनवरी, 1955

पिछले पन्द्रह वर्षों में पहली बार हिन्दी साहित्य ने जीवन की विविध भावभूमियों और अनेक पक्षों, रूपों को साहित्य में अभिव्यक्ति दी है। पहली बार वह परम्परा की शृंखला तोड़ सका है। और भक्ति काल के बाद प्रथम बार उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से समस्याओं को देख सका है। एक तरह से कहें तो उसने विश्व दृष्टि को अपनाया है।

चारों ओर संघर्ष, संक्रान्ति, कलह कहा जा रहा है। ऐसी परिस्थिति कलाकार के मस्तिष्क को भी आक्रान्त कर देती है। Such situation obsesses the writers of the age.

शुक्रवार, 7 जनवरी, 1955

जीवन की व्याख्या–ही नहीं करनी पड़ती बल्कि जीवित रहने की प्रक्रिया भी खोजनी पड़ती है।

History is not so much what happened as what people said about it while it was happening.

G.M. Young

लेखक के पास एक ऐसा दृष्टिकोण अवश्य होना चाहिए जो उसे Stimulate करे। चाहे वह एक निश्चित दर्शन के रूप में हो या किसी Vague form में हो।

वर्तमान लेखक के मस्तिष्क की पृष्ठभूमि में क्या है जो कभी-कभी उभर कर सामने की भी भूमि में आ जाता है? पिछले तीस वर्षों से हम यह कहते आ रहे हैं कि संक्रान्ति काल से गुजर रहे हैं; क्या यह सत्य है? ऐतिहासिक प्रक्रिया के किस युग से हम गुजर रहे हैं और कौन सी क्रान्ति हमारी बाट जोह रही है?

शनिवार, 8 जनवरी, 1955

"The whole of the 'waste-land' (Eliot) reflected the chaos which confronted Europe. Its material was chaos but in itself it was not chaotic.

J. Issacs

शेखर में भी यही दशा है।

प्रयोगवादी-प्रगतिवादी साहित्यकारों ने संसार के नये Chaos की अभिव्यक्ति के लिए नया मुहावरा खोजा है। भले ही वह उन्होंने इलियट से प्राप्त किया हो। परन्तु अभी हम 'नयी कविता' पढ़ना नहीं सीख पाये।

बहुत से कवियों के मन में एक ओर मध्यवर्गीय संस्कारों की कटु अतृप्ति है और दूसरी ओर सामाजिकता को अंगीकार करने का बौद्धिक रुझान।

इस बीच अंगरेजी एवं अन्य समृद्ध भाषाओं के साहित्यों के अध्ययन की ओर अधिक उदार दृष्टिकोण अपनाया गया।

रविवार, 9 जनवरी, 1955

The artist's raw material is life, experienced through the senses, patterned by the mind and given divinity by that mysterious thing we know nothing.

J. Issacs

जीवन की सादगी में जो आकर्षणहीनता लग रही थी, वह समाप्त हो चली है।

कवित्त, सवैये की आखिरी पंक्ति जोरदार होती थी पर गीत की पहली, पर अब समग्रता पर अथवा मध्य पर अधिक तीव्रता से ध्यान जाता है। आदि और अन्त चाहे आकस्मिक और झकझोरने वाले ही क्यों न हों।

सोमवार, 10 जनवरी, 1955

'प्रक्षोभ' नामक एक रस होता है। जिसमें घृणा और वीभत्स संचारी होते हैं। आधुनिक कविता में यह प्राप्त होता है–

'मूत्र सिंचित मृत्तिका वृत के भीतर खड़ा है धैर्य-धन गदहा'

'नये रसों और नये स्थायी भावों की छानबीन होना चाहिए।'

छायावादी कुहासे में वैयक्तिक प्रणय भावना (बच्चन, नरेन्द्र)

मिलाकर आधुनिक गीत i.e. राम मनोहर का 'बे मौसम बादल'।

'Poet turns forms into shapes'

V. Lee

व्याकुलता मन को मथती है और मथने की क्रिया किसी न किसी प्रकार कुछ न कुछ मक्खन देती ही है, यदि वह पानी न हो तो। इसी भाँति व्याकुलता व्युत्पन्न और संवेदन युक्त हृदय से कुछ उत्पन्न करती ही है।

मंगलवार, 11 जनवरी, 1955

उल्टे-सीधे विराम चिह्न, अंक और सीधी तिरछी लकीरें, नामों से, अधूरे वाक्यों से अभिव्यक्त करने का ढंग वैसा ही है जैसे किसी अभिनेता का संवादों के साथ अभिनय।

सोमवार, 17 जनवरी, 1955

ऐसे भी लोग होते हैं–

जो उत्सव के लिए भयंकर परिश्रम करते हैं, भाषण के लिए मंच तैयार कराते हैं, और सारे क्रम की धुरी होते हैं। परन्तु जब उत्सव होता है, भाषण प्रारम्भ होता है, कार्यक्रम सम्पन्न होता है तो या तो वे दूर जाकर बैठ जाते हैं या फिर नज़दीक भी बैठकर कुछ अन्य बात ही सोचते हैं। उनसे पूछें कि भाषण में क्या पसन्द आया तो आश्चर्यपूर्वक आपका मुँह देखने लगेंगे जैसे कुछ अललटप्पू बात कह दी गयी है। उन्हें तो इसी में सन्तोष रहता है कि व्यवस्था मेरी की है। ऐसे ही परोपकारी कहे जाते हैं। पर वास्तव में क्या ऐसा कहना सच है?

Complex + frustration

साहित्य में भी Important स्थलों आदि को पढ़ते समय यदि बात न सूझती तो निशान लग जाता कि भविष्य में इसका कोई खण्डन दिमाग को अवश्य सूझेगा। पर प्रतिभा पर जमा यह विश्वास बहुधा धोखा ही देता है।

बुधवार, 19 जनवरी, 1955

तस्योत्संगे प्रणयिन इव
स्रस्तगंगादुकूलाम्
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां,
ज्ञास्यसे कामचारिन्।
या वः काले वहति सलिलोद्
गारमुच्चैर्विमानम्
मुक्ताजालग्रथितमलकां
कामिनीवाभ्रवृन्दम् ॥

कैलाश पर्वत रूपी कामी पति की गोद में अलका नगरी प्रणयिनी सी कामविह्वल हो बैठी है। उसका गंगा-रूपी लज्जादुकूल अपने आप उसके सुकोमल सुन्दर शरीर से खिसक गया है, सजल श्यामल मेघ माला ऐसी सुशोभित हो रही है मानो अलका सुन्दरी का वह मसृण कोमल केश हो जिनमें उसकी बूँदें मोतियों की माला सी गुँथी हैं।

शनिवार, 22 जनवरी, 1955

सायं 7:45 बजे अजित की रेडियो टॉक।

8 बजे सायं, सोशल रिसर्च ब्यूरो की मीटिंग।

रविवार, 23 जनवरी, 1955

सायं 6 बजे नीहारिका में 'गल्प गोष्ठी'।

प्रातः 8:30 बजे प्रेम विद्यालय, नया गंज में भारतीय परिषद् की कार्यकारिणी की मीटिंग।

We judge our contemporaries by their predecessors.

प्रमुख धारा और उसकी उपशाखाओं से परिचय न होना बहुधा भ्रम और उथलापन उत्पन्न कर देता है। हमारा जीवन एक ऐसे फ्रेम पर होता है जो एक साथ Past और present है।

हमें साहित्यकार के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानना पड़ता है। उनका उद्देश्य (Purpose) क्या था, किन परिस्थितियों के भीतर वे पले और परिश्रम किया उनका तात्कालिक देय (Contribution) तथा उनकी ultimate importance क्या है। क्यों प्रसाद प्रसाद हैं निराला नहीं। क्यों अज्ञेय अज्ञेय हैं, दिनकर नहीं।

हमारा युग संघर्षों का युग है। हमारे राजनीतिक और नैतिक दर्शनों में गहरा मतभेद है और साहित्य इन सबको प्रतिबिम्बित करता है। पर मनुष्य का कल्याण सब चाहते हैं, Personality in technical society पर अस्तित्ववादी भी विचार करते हैं, मार्क्सवादी भी, धार्मिक भी और गाँधीवादी भी।

आज का साहित्यकार भी समझ रहा है "The proper study of mankind is man." वे उसकी कमज़ोरियों और पराजयों से परिचित हैं पर उसके जयचिह्नों और महानताओं से भी वाकिफ़ हैं।

मंगलवार, 25 जनवरी, 1955

जिन्दगी में बहुत जन प्यारे लगते...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

शुक्रवार, 28 जनवरी, 1955

सुमति के घर भोज-सन्ध्या 7 बजे

नरेशचन्द्र चतुर्वेदी के अनुज का यज्ञोपवीत-सन्ध्या 3 बजे

प्रातः 9:30 बजे डॉ. बृजेन्द्र स्वरूप के घर निमन्त्रण

1 बजे से II Yr. Sc. का extra class

3 बजे union का उद्घाटन

प्रातः 9 बजे राधाकृष्ण अवस्थी, कैलाश त्रिपाठी के यहाँ ठंडाई

12 बजे सरस्वती पूजन व जुलूस–तिलक हाल में (वसन्त पंचमी)

सन्ध्या 7 बजे श्री प्रभाकर तिवारी के यहाँ गोष्ठी

रात्रि 8 बजे संगीत सम्मेलन–तिलक हाल में।

शनिवार, 29 जनवरी, 1955

कॉलेज कन्वोकेशन 3 बजे से

रुचि के बारे में–

बहुधा लोग यह कहते हैं कि वे यह जानते हैं कि क्या पसन्द करते हैं जबकि अधिकांशतः वे वही पसन्द करते हैं जो जानते हैं।

J. Issacs

रविवार, 30 जनवरी, 1955

नीहारिका की गोष्ठी (गिरिजा कुमार माथुर)

6 बजे सायं

मंगलवार, 1 फरवरी, 1955

कवि सम्मेलन डी.ए.वी. कॉलेज में at 8 P.M.

Back ground of modern poetry J. Issacs.

Selective awareness of literary relations sets the poet somewhat apart from his public, because there is no common body of reference and no community of beliefs' on what is meant or demanded by poetry.

कविता सदैव Modern रही है और इसकी समस्याएँ वास्तविक रही हैं।

काव्य का वास्तविक इतिहास तभी स्थापित हो सकता है जब काव्य को कवि से अलग कर लिया जाये। (अर्थात् कवि का Chronological वर्णन न रहे।)

हमें Chronology की अपेक्षा perspective की आवश्यकता है। Perspective based on what was really happening in poetry itself, rather than in certain prominent and successful poets, a history of consumers rather than of producers, we need the history of struggle rather than the achievements, of the process of poetry as seen by the reading public.

बुधवार, 2 फरवरी, 1955

music conference in D.A.V. at 8P.M.

क्या खबर थी कि यह
इन्कलाब आयेगा।
तुम बदल जाओगे,
जब शबाब आयेगा।

वर्तमान कविता को भविष्य की पुस्तकों में एक सुविधा प्राप्त रहेगी बजाय पिछली कविता के, क्योंकि जो कुछ हो रहा है उसके प्रति हम अधिक सजग हैं और हम लोगों ने अपने विवादों और भ्रमों को सुरक्षित रख छोड़ा है जबकि बीते युग ने उन सबको नष्ट कर दिया है।

Text books do not answer the important questions. The questions we want answered arise out of our heightened awareness of our own problems.

कब से कवियों ने अपने को गम्भीरता से स्वीकारा? कब से कवियों ने अपनी जनता (पाठक) की फ़िक्र की, उसकी प्रशंसा और सूझ की तथा प्रसिद्धि की? आधुनिक या नवीन का विचार कब से उनके मस्तिष्क में आया। हमारे अनुसार कौन से कवि Contemporary थे। कब से कवियों ने संसार का भार अपने कन्धों पर लेना चाहा? कब से कवियों ने कविता की परिभाषा देनी प्रारम्भ की और कब से उन्होंने उस मन्तव्य को भलीभाँति जानना चाहा जिसके लिए वे उद्योग करते हैं (आदर्श की परख

और पहचान)? कब उन्होंने पहले पहल युगीन चेतना को ग्रहण करना चाहा? These questions all add up to an implied portrait of modern poetry.

नयी कविता का जन्म विविधताओं के मध्य हुआ है। देशी परम्पराएँ, विदेशी प्रभाव, इसके प्रयोग और मिथ्या प्रारम्भ, इसकी अतियाँ और ज्यादतियाँ आदि अनेक स्रोत उद्‌भव के कारण हैं।

श्रीयुत गोपाल व्यास, अध्यक्ष हिन्दी विभाग
माधव कॉलेज, उज्जैन

बृहस्पतिवार, 3 फरवरी, 1955

कवि सम्मेलन in D.A.V. Girls Section at 5 P.M.

सिफ़त यह कि तन मचले, जब मन
मचल जाता है।
वाक़या यह कि जब तन संभले तब भी
मन मचलता है।

हर्ष हो या प्यारे दोस्त ग़म पर
सिर्फ़ ऐसे ही दुनिया में जिया जाता है।

शुक्रवार, 4 फरवरी, 1955

10) सर्वोदय स्वाध्याय मण्डल के लिए गोस्वामी को...

What is Modernity

What is that peculiar note of our time which we recognise and instinctively love or hate when we find it in poetry? Is it obscurity, private reference, Ecophony. Is it immediate and not the eternal, the particular and not the general? Is it the personal and satiric note or anti heroic and debunking– यह समस्या आसान नहीं है। अन्तर्विरोध हैं इसमें। विषय वस्तु की दृष्टि से यह सूक्ष्म मतभेदों की कविता है और आकार की दृष्टि से यह Tensions and conflict की तुलना है। (Texture & Structure)

कविता तुलना (Comparison) से बनती है। इन तुलनाओं के मिश्रण से समृद्धता आती है। यह मिश्रण Mechanical & chemical दो प्रकार का होता है। जब प्रथम द्वितीय बनता है तब विस्फोट होता है।

गद्य में सभी तुलनाएँ simple होती हैं जबकि कविता में compound and mixed metaphors होते हैं।

आज भी कविता और गद्य की भाषा का अन्तर भावावेश की भाषा का अन्तर है। Excitement lifts it above prose. परन्तु यहाँ पर भय इतना ही है कि यह भावावेश may not be communicated. अतः भाषा speech मूलतः गद्यात्मक होती है। यह एक आधुनिकता है।

प्रतीकवादियों के शुद्ध कविता के आन्दोलन का Decadence भी आधुनिकता है।

It is morbidly self conscious age, We want to know what we are doing while we are doing it.

शनिवार, 5 फरवरी, 1955

सन्ध्या 5:30 बजे नुमायश का उद्घाटन, पी.पी.एन. ग्राउण्ड में।

4 बजे धीरेन्द्र मजूमदार का भाषण कॉलेज में।

'सर्वोदय स्वाध्याय मण्डल'

An Anatomy of Inspiration by Rosamond Harding

जब एक सही पंक्ति बन जाती है तो उसमें परिवर्तन सम्भव नहीं। यह Psychological आवश्यकता है। उस पंक्ति में परिवर्तन उस रचना के लिए फिर उचित नहीं है अन्य के लिए भले ही हो।

किसी पंक्ति की rightness & wrongness के अन्तर को देखना हो तो किसी कवि की Corrected manuscript देखना चाहिए। तब हम उस inevitability को देख सकेंगे जो सही पंक्ति के लिए होना चाहिए। यह inevitabilities किसी आन्दोलन या निर्देश पर न होकर वैयक्तिक स्तर पर होती हैं।

Literature — of Achievement
— of Direction

रविवार, 6 फरवरी, 1955

2 बजे मध्याह्न से साहित्य समाज की गोष्ठी।

I want musical poetry, which is by no means the something as melodious poetry.

सोमवार, 7 फरवरी, 1955

इलियट का कहना है कि "कभी-कभी कोई कविता या उसका कुछ अंश केवल एक विशेष प्रकार की लय में अनुभूत होता है, पूर्व इसके कि वह शब्दों में अभिव्यक्ति प्राप्त करे और यह लय विचार और Image को उत्पन्न कर सकती है।"

यह विरोधाभास भले ज्ञात हो परन्तु अन्ततः all poetry is about poetry. कविता कविता के लिए में सत्य यह है कि कवि का चरम न्याय यह है कि वह तमाम

शक्लों, प्रकारों, सृष्टियों और आकारों के मध्य Coherence और संगति अपने ढंग से स्थापित करें। वह लिखे चाहे जिसके बारे में परन्तु यह Coherence आवश्यक है।

मंगलवार, 8 फरवरी, 1955

इलियट के अनुसार वह ऐसी कविता चाहता है कि कविता भले न दिखाई पड़े पर कविता का वक्तव्य स्पष्ट सामने हो।

कवि इसी रूप में prophet है कि उसके युग में उसके लिए कुछ श्रोता होते हैं। पर भविष्य पर उसे बहुत अधिक आश्रित नहीं रहना है। "The poet should point out what is happening while it is happening, he is not to deliver funeral orations."

"I do not believe that Eienstein has given are real image to poetry because poetry must get emotional and not intellectual response."

"The poet is one of those lucky people whose lottery tickets are all prize-winners."

बुधवार, 9 फरवरी, 1955

अस्तित्ववाद– ज्याँ पाल सार्त्र

चेतना और अस्तित्व अस्मिता के दो रूप हैं। चेतना अपने से भिन्न किसी दूसरी अस्मिता से भिन्न भी है और सम्बन्धित भी। काव्य आदि को विज्ञान की केवल वही शाखाएँ प्रभावित करती हैं जो मनुष्य को widely affect करती हैं। केवल कतिपय उपयोगिनी अथवा विशेषज्ञता वाले अंग नहीं (what is the distinction between scientific age and machine age)

19वीं सदी विज्ञान का युग था, बीसवीं सदी यन्त्र युग है।

"Not that science as we usually understand it, dominates the poetry of our time, but that it takes its place for the first time, as an equal along side the other sciences, as a source of imagery and feeling.

बृहस्पतिवार, 10 फरवरी, 1955

20) Tagore Society के लिए ब्रज बिहारी गोस्वामी को दिये।

The coming of the Image-Movement began in 1908. Hulme founded a poet's club where it began. His 'Autumn' was the first and most famous imagist poetry.

"An image is that which presents an intellectual and emotional complex in an instant of time".

Pound E

Imagist के अनुसार "Poetry is a spoken and not a written art".

Among the many sources of Imagist poetry was the suggestive Japanese form known as the stop short, because the words stopped and meaning went on.

The imagists have much to offer, their conciseness, their exploration of the prose tradition inverse, their hardness their relevance, their craft man's conseives, their horor of Rhetoric their suckle and flexible speech their absence of emotional slither, sublet melody to sing etc.

"Any musical innovation is full of danger to the whole state and ought to be prohibited." "When modes of music change the fundamental laws of the state always change with them."

Plato, The Republic-IV Book

शुक्रवार, 11 फरवरी, 1955

मुन्नर का जनेऊ।

शनिवार, 12 फरवरी, 1955

गाँव (सथनी) रहा।

रविवार, 13 फरवरी, 1955

"किसी भी युग में काव्य का मूल्य तत्कालीन मूल्यांकन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहता है।"

"The value of poetry in any age is closely related to the current valuation of man."

G.R. Hamilton

'Value is a word derived from Economics.'

वर्तमान वातावरण संघर्षों, Cross currents, tentative experiments भ्रमों और अनिश्चयों का तथा नये और पुराने के विरोध का है। (यूरोप में 16वीं शती में ऐसी ही अवस्था आयी थी और सम्भवतः भारत में भी11-12वीं शती की अवस्था कुछ ऐसी ही थी) निरीक्षण, स्पष्ट मार्मिक पैठ और जिज्ञासा आज के विज्ञान की कतिपय विशेषताएँ हैं।

ज्ञान-विज्ञान की आज विविध दिशाएँ हैं। कुछ सामाजिक हैं और कुछ वैयक्तिक। कोई भी व्यक्ति भूगर्भ शास्त्र, समाज शास्त्र, शरीर शास्त्र अथवा मनुष्य की प्रागैतिहासिक दशा के अध्ययन बिना अपने स्वयं के अनुभव को चैलेन्ज भले नहीं कर सकता है। उसे बार-बार यह याद दिलाई जाती है कि व्यक्तित्व के कई पक्ष तथा Social economy में उसका स्थान unexplored और unexemplified

पड़े हैं। हम उन संवेदनाओं, अनुभूतियों, स्मृतियों, निकटताओं, नये शक्ति सम्मिलनों, (आध्यात्मिक और ऐन्द्रिक) को याद करते हैं जो ऐसे ही इसलिए गुजर गये हैं क्योंकि उचित पारिभाषिक शब्दावली के भीतर उन्हें बाँधा नहीं जा सका अथवा उनका साध्य और object जाना नहीं जा सका, परन्तु यही awareness बीसवीं शती की संस्कृति का Nerve Centre है।

परन्तु कठिनाई इसके बाद आती है। किसी भी रचनात्मक कल्पनाशील लेखक ने इस सारी चेतना को अभिव्यक्ति देने योग्य शैली नहीं दी है। विचार उत्पन्न और विकसित हुए हैं परन्तु उनका आध्यात्मिक संघटन और मूर्तीकरण (Spiritual organisation and presentment) पिछड़ा रहा है।

किसी ने अपने को इतना नहीं सिखाया कि कैसे मोड़ा जा सके अपने वैयक्तिक संस्पर्शों को जो मनोविश्लेषक, रसायनशास्त्री, नृतत्त्ववेत्ता अथवा लोक साहित्य मर्मज्ञ के सम्पर्क से आये हैं, उनकी सुषमा और उष्णता को सुरक्षित रख कर कहा जा सके, परन्तु फिर भी मूल बात आगे बढ़ी है और एक प्रकार की सोद्देश्यता तमाम confusion के बीच भी आयी है। यह unifying विचार है सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मनुष्य की अन्योन्याश्रित और अन्योन्याशमित (Interpenetration) स्थिति। प्रत्येक पक्ष दूसरे के विचार द्वारा अधिक विस्तृत एवं गहरा होता है।

H.V. Routh

आगे बढ़ने की आशा है, आकांक्षा है पर वह सांस्कृतिक स्थिति नहीं है जो अन्तर और बाह्य को एकाकार कर महान वस्तु उत्पन्न करा सके।

इस युग ने एक बृहत् पाठक समाज को इकट्ठा कर लिया है जो कि किसी भी साहित्यकार का भाग्य बना बिगाड़ सकता है। इसके अतिरिक्त इस युग ने सैकड़ों आलोचकों को जन्म दिया है जो पाठक को यह बोध कराने को तुले हैं कि कैसे किसी प्रतिभा को (उसके विकसित होने के पूर्व ही) appreciate किया जाय।

Importance of its study

यह अनिश्चय का युग है और ऐसा अनिश्चय जो हमारी चेतना और इन्द्रियों के सामने से गुजर रहा है तथा इस युग के साहित्य का अध्ययन हमारे भविष्य के बढ़ाव का भी अध्ययन है।

यह नया युग किसी मेनीफेस्टो या आन्दोलन या वाद को लेकर प्रारम्भ नहीं हुआ बल्कि पाठक की रुचि परिवर्तित होने से आरम्भ हुआ है। साहित्यकार भी जनता का अंग है उसने केवल नेतृत्व किया। पुरानी शैली के काव्य का मुहावरा, शैली, कल्पना, तुक तथा संघटन जैसे पूर्ण चमक को छोड़ रहा था। यद्यपि यह सही था कि उसमें अनघड़पन Matter और Manner की दृष्टि से न था केवल शब्द नया संवेदन जगाने में असमर्थ रहता था। इस प्रकार पहली खाई रुचि परिवर्तन में दिखाई पड़ी।

Art must be renewed. Its creative influence depends upon surprise.

When once the freshness of the presentment has faded, the reader relapses into his daily habits. He looks for a vision and sees only phenomena.

इस प्रकार 20वीं शती में साहित्य के सभी उपकरण-विचार (Ideas), अनुभव, Moods, attitudes बदल गये।

"The spirit of man may be always the same, but, like other ruminants, it has to seek new pastures."

नये मूल्यों की स्थापना के पूर्व ही पुराने मूल्य टूटने लगे।

20वीं शती में परम्परा सिखाती थी कि भौतिक पदार्थों की अपेक्षा आध्यात्मिक जगत में अधिक रुचि रखनी चाहिए पर कठोर यथार्थ इस तथ्य को उलट देता था।

प्राचीन क्लासिकल साहित्य और बुद्धि तथा मध्यकालीन पावनता की भावना के अनुसार मनुष्य एक spiritual प्राणी है, परन्तु यह युग अधिकाधिक बल के साथ यह महसूस कर रहा था कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जो पहले self-perfection के लिए प्रयत्न करते थे वे अब परोपकार (Duty of working for others) को स्वीकारने लगे।

विज्ञान के प्रभाव, धन के महत्त्व और पैतृक बन्धन के कमजोर पड़ जाने के बाद 'love became much less of a romance and much more an experience'.

पुराने विचार को एक नया attitude देने की अनिवार्य आवश्यकता आयी। नयी व्याख्याएँ दी गयीं। एक fresh point of view और fresh technique की अनिवार्यता सम्मुख दिखाई दी।

इस सारे तोड़फोड़ के पीछे 'वैज्ञानिक विचार' था। Scientific truths appeal to mass-thinking.

वे या तो सबकी समझ में आ जाते हैं या फिर साधारण व्यक्ति की सीमा से परे होते हैं।

इस युग में सभ्यता ने अपने को यन्त्रों, मशीनों, सिविल संगठनों में, उद्योगों में ढाल लिया। (It resolved itself into the science of power)

नये अध्ययन और शिक्षा का अन्तर्विरोध स्पष्ट है।

Science which reduced man to an animal has nevertheless given that animal so much power that he can count himself greater than the universe out of which he evolved.

यहीं पर Personality in technical society का frustration सामने आया।

इस प्रकार हमारे पास इतने स्रोत और resourcefullness आयी कि अधिकांश उसकी जिम्मेदारियों और implications को समझ ही नहीं पाये।

बहुधा वह और उसके पाठक स्पष्टतया यह नहीं समझ पाते कि संस्कृति बिगड़ी या स्थापित हुई है, इस शताब्दी में। (दुरूहता का एक यही कारण है।) कुछ लोग

यान्त्रिकता से बुरी तरह प्रभावित हो उसे ही object मान बैठे तो दूसरी ओर कुछ लोग घबड़ा कर दूसरी सीमा पर चले गये।

मशीन का आइडिया हमारे मस्तिष्कों पर छाता जा रहा है और एक प्रकार का mathematical adjustment और simplicity of design ला रहा है। (Skyscrappers and Ajanta or Taj Mahal की कारीगरी)

बुधवार, 16 फरवरी, 1955

एतावानेव पुरुषो यदमर्षी यदक्षमी।
क्षमावान्–निरमर्षश्च नैव स्त्री
न पुनः पुमान् ॥

महाभारत: विदुला का कथन

(पुरुषों का पौरुष इसी से नापा जाता है कि कितना अमर्ष वह रख सकता है, और कितना वह सहन न करते हुए उठ खड़ा हो सकता है। जो अमर्ष न करेगा और अत्याचार को सहकर चुप हो रहेगा वह न स्त्री है न पुरुष।

रविवार, 20 फरवरी, 1955

कामेकपत्नीव्रतदुःखशीलां
लोलं मनश्चारुतया प्रविष्टाम्।
नितम्बिनीमिच्छसि, मुक्तलज्जां
कंठे स्वयंग्राहनिषक्तबाहुम् ॥

"क्या चाहते हो राजन्! क्या किसी दृढ़व्रता पतिव्रता की सुन्दरता में तुम्हारा चंचल मन रम गया है। आज्ञा करो तो उसके मन को मथ दूँ जिससे वह लाज छोड़ अपनी बाहुएँ तुम्हारे कण्ठ में अपने आप डाल दे।

(कुमारसम्भव: कामदेव इन्द्र से कहता है।)

सोमवार, 21 फरवरी, 1955

1900 के आसपास एक नयी रीडिंग पब्लिक के सामने आयी। यों तो सभ्यता के नये phase ने पुरानी जनता की भी रुचियों को परिवर्तित कर दिया होता। पर अब तो असंख्य पाठक सामने आये। इन लोगों ने महसूस किया कि intellectual refinement का क्षेत्र इनकी पहुँच के निकट है। पर यह लोग Scholar के परिश्रम और अवकाश साध्य साहित्यिक रुचि के निकट नहीं पहुँच सकते थे। इन्हें तो झटपट कुछ मिलना चाहिए। इस प्रकार नये युग में इन्हीं easy made ढंग की चीजें पत्रिकाओं, पैम्फलेटों आदि द्वारा दी जाने लगीं। Short cuts की प्रवृत्ति आयी। यहाँ पर आकर रीडिंग जनता के दो भाग हो जाते हैं, एक तो जो desciplined ढंग से

पढ़ते थे, दूसरे जो cheap ढंग से। कुछ लेखकों ने दोनों को लक्ष्य बनाया, कुछ ने अलग-अलग। और यही समस्या है To think everybody else's thoughts into distrust one's own and savours more of a journalist in sight than a poet's perception.

पूर्व काल के पाठक सुधी होते थे, अब यश के व्यापक मोह ने Cheapness और चमत्कार को प्रश्रय दिया। उस युग के श्रव्यगुण ने चमत्कार पैदा किया था, इस युग में नयी जनता ने।

यह पाठक समाज अपनी विचारधाराओं में अनिश्चित है। अपनी पृष्ठभूमि से Detached है तथा दूसरों द्वारा प्रभावित और दूसरों द्वारा wanted to be led. So some authors could not resist trying to lead them in the quickest, easiest way, playing on their susceptibilities and exploiting their enthusiasms.

आथर का सबसे बड़ा Intention है to increase his circulation.

Function of literature– It creates intellectual and emotional pleasure out of experiences from within. At the same time it has to suggest this pleasure through experience, from outside.

Style and technique supply half the pleasure, since they enable us to see further than our own eyes can see. (चश्मा और आँख)

पूर्वकाल में लेखक और पाठक एक स्तर पर हुआ करते थे। पर बीसवीं शती में साहित्यकार अपने matter और पाठक के साथ सुविधापूर्वक एक ही स्तर पर तथा at home नहीं हैं।

"So the dawn of twentieth century brought with it a spirit of regression as well as of progress.

Out of these tensions a unique literature has arisen abnormally difficult to assess irresistibly fascinating to study we shall find success, adventures, experiments which seem at first to be irresponsible, but gradually acquire a common spirit of discovery peculiar to the age... the study of twentieth century literature is inseparable from the study of ideas.

रविवार, 27 फरवरी, 1955

जिन्दगी है, इसलिए जिये जाता हूँ
आदमी हूँ, इसलिए कहे जाता हूँ
वरना, आजकल आदमीयत से
मेरा सिर्फ छत्तीस का नाता है,

इन्सान हूँ इन्सानियत का दम भरता हूँ
अपने से और अपनों से प्यार भी करता हूँ,

झूठ नहीं सच कहता हूँ, इसी तरह
किसी क़दर मन को झुठलाया करता हूँ।

सोमवार, 28 फरवरी, 1955

हर तरह से हम दबे आज तक...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

मंगलवार, 1 मार्च, 1955

हिन्दी का वर्तमान कलाकार बहुत self-complaisant और अधिक self-concious है। वह अपने moods का चित्रण तो कर सकता है पर ours (हम लोगों) को अभिव्यक्ति देने में उतना समर्थ नहीं है।

'Poetry so transparent that we should not see the poetry.'

T.S. Eliot

'Stark, bare, rocky directness of statement.'

D.H. Lawrence

'Poetry should be dry and hard.'

Hulme

आधुनिक प्रयोगवादियों की भी यही स्थिति है।

"In free verse we look for the insurgent naked throb of the instant moment."

D.H. Lawrence, Preface to 'New Poems'

बुधवार, 2 मार्च, 1955

नये साहित्य के पाठक के सामने एक समस्या यह भी है कि उसको पढ़ाया संस्कारी काव्य जाता है, नये में उसे असंस्कारी ढंग की चीजें प्राप्त होती हैं। वह इससे झुँझलाता भी है, परन्तु साथ ही उसे values अधिक सही इसमें मिलते हैं। अतः रस भी मिलता है। इस स्थिति का सामना और प्रभाव नये सृजनकर्ता को भी करना पड़ता है।

(अर्थ के प्रश्न पर ग्रामीण भी–'दादा बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया' मानते हैं।)

बृहस्पतिवार, 3 मार्च, 1955

दोपहर 2 बजकर 5 मिनट पर रेडियो टॉक (मेरी)

शुक्रवार, 4 मार्च, 1955

यदि कोई deficiency की याद दिला कर मन को कुरेद दे तो बुरा क्या? इस कुरेद में उत्पन्न क्षोभ को दबाना या बहलाना भी एक अकथनीय सुख को जन्म देता है।

शनिवार, 5 मार्च, 1955

तार सप्तक : "काव्य के प्रति एक अन्वेषी का दृष्टिकोण उन्हें समानता के सूत्र में बाँधता है।"

मुक्तिबोध Migration Instinct पर बहुत ज़ोर देते हैं।

सोमवार, 7 मार्च, 1955

विदेशी पुस्तकों के अनुवाद किस-किस सन् में हुए, उनका क्या प्रभाव पड़ा। कब कौन-सी पुस्तक को प्रमुखता मिली।

(1) नये काव्य की पृष्ठभूमि

सामाजिक　मनोवैज्ञानिक

(2) नये काव्य का वक्तव्य और विचारपक्ष
(3) नये काव्य का बिम्ब विधान
(4) नये काव्य में कल्पना का महत्त्व
(5) नयी कविता का छन्द और संगीत
(6) नयी कविता के विविध प्रभाव स्रोत
(विदेशी, लोकभाषा, प्रान्तीय भाषा, उर्दू)
(New conciousness, obscurity, कविकर्म) कल्पना शाश्वत, महान
(7) नयी कविता में surrealist तथा अस्तित्ववादी प्रवृत्तियाँ एवं प्रभाव
(8) विज्ञान और कविता
(9) आधुनिक कविता में राजनीति का तत्त्व
(10) नयी शब्दावली—क्लासिकल और पारिभाषिक

बुधवार, 9 मार्च, 1955

हिन्दी कविता में नया बिम्ब विधान

(1) कविता में चित्र विधान की आवश्यकता।
(2) चित्र का उदय और कल्पना से उसका सम्बन्ध।
(3) कल्पना का आधार।
(4) युग सापेक्षता और बिम्ब।

(5) बिम्ब क्यों आधुनिक होना चाहिए।

(6) नये साहित्य में प्रयुक्त होने वाले कतिपय बिम्बों की आधुनिकता और उनकी पृष्ठभूमि–

1. यान्त्रिक आविष्कारों से सम्बन्धित।
2. ज्ञान-विज्ञान की नयी शाखाओं से समर्थित (मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, नृतत्त्वशास्त्र आदि से सम्बन्धित)।
3. नवीन युग-चेतना को प्राचीन या नवीन बिम्बों द्वारा ध्वनित करने का प्रयत्न
4. भाषा सम्बन्धी विकास और उसका विम्ब बोध में उपयोग।
5. जन भावना के प्रतीक ग्रामीण दृश्यावली–Landscape (Impressionist) तथा Dialects का प्रयोग।

शुक्रवार, 11 मार्च, 1955

कंकरीट के पोर्च को देखकर free association के द्वारा कवि के मन में उस 'मौलसिरी के गाछ' की ओर चला जाता है जहाँ उसने 'एक दिन दो आने की विलायती मलाई की बर्फ़ खाई थी' (वह सोच लेता है कि डाक्टरनी का पोर्च पराया है और मौलसिरी सर्वसाधारण की है) पर इस बिम्ब और बिहारी के उस बिम्ब के free Association में अन्तर है जिसमें उड़ती हुई पतंग देखकर नायिका को रोमांच हो जाता है।

शनिवार, 12 मार्च, 1955

चरण पर धर
सिहरते-से चरण
आज भी मैं इस सुनहले मार्ग पर
पकड़ लेने को पदों से
मृदुल तेरे पद-युगल के अरुण तल की
छाप वह मृदुतर
जिसे क्षण भर पूर्व ही निज
लोचनों की उछटती-सी बेकली से
मैं चुका हूँ चूम बारम्बार–
कर रहा हूँ प्रिये–तेरा मैं अनुकरण
मुग्ध तन्मय–
चरण पर धर
सिहरते-से चरण।

कोई नया चित्र न होते हुए भी इसकी भाषा का अन्तर छायावाद और बच्चनवाद दोनों से अलग है।

अभी माघ भी चुका नहीं
पर मधु का गरवीला
अगवैया कर उन्नत शिर
अंगड़ाई लेकर उठा जाय

या यह देखें –

कली री पलास की।
टिमटिमाती ज्योति मेरी आस की
या कि शिखा ऊर्ध्वमुखी मेरी दीप्त प्यास की।
वासना-सी मुखरा, वेदना-सी प्रखरा
दिगन्त में
प्रान्तर में प्रान्त में
खिल उठ, झूल जा, मस्त हो,
फैल जा वनान्त में
मार्ग मेरे प्रणय का प्रशस्त हो!

भारती का 'ठण्डा लोहा' कविता नवीन युग की भावना की देन है। Frustration की, ऐसे ही 'माथे पर टूटे नक्षत्रों की छाँव'।

आज मैं पहचानता हूँ राशियाँ, नक्षत्र
ग्रहों की गति, कुग्रहों के कुछ उपद्रव भी,
मेखला आकाश की;
जानता हूँ मापना दिनभान;
समझता हूँ अमन-विषुवत्,
सूर्य के धब्बे, कलाएँ चन्द्रमा की
गति अखिल इस सौर-मण्डल के विवर्तन की–
और इन सबसे परे, मैं सोचता हूँ

(पहले का कवि इन सबसे परे तो सोचता था, पर इनके बारे में नहीं)

मंगलवार, 15 मार्च, 1955

Landscape का चित्रण रामविलास ने बहुत अच्छा किया है जैसे 'कतकी' 'शारदीया' 'सिलहार' 'प्रत्यूष के पूर्व' आदि। इनमें वातावरण के साथ उद्देश्यपरकता भी है। माचवे की 'वह एक' 'निम्न मध्यवर्ग' आदि वर्णनात्मक पर अव्यंजनात्मक कविताएँ हैं। बात को सीधे-सीधे कह दिया गया है। उनमें Lack of passion है। आकर्षक चित्र के लिए संवेदना की गहराई आवश्यक है।

Artistic inconsistency and Incongruity of image with theme :

जिन्दगी उधार है, इसलिए बज रहा साँस का सितार है।

अथवा शिवबहादुर की, 'मछली वह छमक' (This is irrational and unintelligible)

बुधवार, 16 मार्च, 1955

कामायनी के आशा सर्ग में रजनी का बिम्ब विधान आदि Image sequence द्रष्टव्य है।

'खंजन मंजु' में बिना किसी विशेष Image के केवल भाषा और मुद्रा कथन के बल पर Image है।

कामायनी की कथा का structure उसे different sources से Images tap करने देता है।

(1) देवताओं के कारण Mythological (2) मनु के कारण वैदिक (3) आधुनिक विज्ञान (4) Romantic (5) Classic आदि।

पन्त की 'परिवर्तन' कविता तथा निराला की 'तुम और मैं' या फिर 'बादल राग' की images.

बृहस्पतिवार, 17 मार्च, 1955

Poetic Image
C.D. Lewis

The nature of Images

Every attempt is a wholly new start and different kind of failure too.

"A critic who imposes his own abstractions upon poetry may be writing good History, good Sociology, good Psychology, but he will never be writing literary criticism".

C.D.L.

"In the Present age the poet... seems to propose to himself as his main object and as that which is the most characterstick of his art, new and striking images... In his diction and metre on the other hand he is comparatively careless".

Coleridge

Poetic image में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए :

"Novelty, audacity, fertility of Image.

The image is the constant in all poetry and every poem is itself an Image."

"I think, we should always be prepared to Judge a poet...by the force and originality of his metaphors."

H. Read

"The greatest thing by far is to have a commond of Metaphor. This alone can not be imparted by another; it is the mark of genius".

Aristotle

"Imaging is in itself, the very height and life of poetry."

Dryden

रोमाण्टिक आन्दोलन के साथ-साथ यह भावना आयी कि 'इमेज' कविता का केन्द्र बिन्दु है तथा विविध बिम्बों के समुच्चय द्वारा स्वयं भी एक बिम्ब है।

काव्य-बिम्ब से हमारा तात्पर्य है, शब्द द्वारा निर्मित चित्र Epithet, रूपक, उपमा भी Image create कर सकते हैं। or an image may be presented to us in a phrase or passage on the face of it purely discriptive, but conveying to our imaginations something more than the accurate reflections of an external reality. Every poetic image therefore, is to some degree metaphorical.

सबसे Common images दृष्टि सम्बन्धी होती है। पर वे अन्य इन्द्रियों से सम्बन्धित भी हो सकती हैं। श्रवण, स्पर्श, गन्ध।

एकदम विशुद्ध भावनात्मक एवं बौद्धिक बिम्ब में भी ऐन्द्रियता की झलक अवश्य मिल जाती है।

"A poetic image is a word picture charged with emotion or passion."

C.D.L.

"Images however beautiful... do not themselves characterize the poet. They become proofs of original genius only as far as they are modified by a predominant passion, or by associated thoughts or images awakened by that passion".

Coleridge

नये कवि इस आवेग और उसके प्रवाह की बलि चढ़ा रहे हैं केवल to the glare and glitter of perpetual Imagery, yet broken and heterogenous imagery or rather to an amphibious something made up, half of Image, and half of abstract meaning.

A Poetic image is:

1. More or less sensuous picture in words
2. To some degree metaphorical
3. An undernote of human emotions in its context
4. Also charged with and releasing into the reader a special poetic emotion or passion

(here Lewis distinguishes between human emotion and poetic passion. I think that number 3 is concerned with poet himself his conception, reflections of life over his mind, heart and imagination, where as no. 4 is concerned with reader, that is its communicability and power to arouse 'रस')

(Often conventional similes are no more than symbols)

x x x

According to John Middleton Murry—'Precision and revelation are very important.'

T.E. Hulme says that, in poetry 'The great aim is accurate, precise and definite description'.

The Poet's task, said Hulme, is 'to see things as really are, and he must train himself for the concentrated state of mind, the grip over oneself which is necessary in the actual expression of what one sees. 'Poetry' chooses fresh epithets and fresh metaphors, not so much because they are new... but because the old cease to convey a physical thing and become abstract counters.'

"It is only when you get these fresh metaphors and epithets employed that you get this vivid conviction which constitutes the purely aesthetic emotion that can be got from Imagery".

Hulme

According to Lewis the precision is not everything perhaps not even the chief thing, in poetic imagery either.

प्रत्येक कवि को यह ठीक है कि चीजों को उसी रूप में देखना चाहिए, 'as they really are'. पर यह यथार्थ अपने आप में एकान्त में, isolation में नहीं है। यथार्थ सम्बन्धों को समेटता है। सम्बन्धों (relationships) के आते ही emotions आ जाते हैं। अतः as they really are देखना कठिन एवं precision असम्भव हो जाता है।

Ezra Pound remarked, "It is better to present one image in life time, than to produce volumnous works" पर यह सच नहीं है। 'दीपशिखा' की Image ऐसी ही Image थी पर कालिदास को सम्पूर्ण 'रघुवंश' की रचना करनी पड़ी थी।

बहुधा कविता में यह भी होता है कि कोई कविता इतनी Isolate हो जाती है अथवा उसकी कुछ Images बहुत चमकदार पर औरों से असंपृक्त हो जाती हैं और उनका सम्मिलित प्रभाव नष्ट हो जाता है। वास्तव में सम्बन्धों की यथार्थता के कारण Images में सम्बन्ध और Inter dependence होना आवश्यक है। और इन्हीं के कारण रूपक, उपमा हमें आनन्द देते हैं।

Yeats says "Wisdom speaks first in images" that is to say metaphor was the begining of wisdom.

काव्य जगत (जो कृत्रिम है) और यथार्थ जगत के बीच व्यवहार Image pattern (बिम्ब विधान) के द्वारा होता है। और रूपक इन व्यवहारों (correspondence) को पाठक के सम्मुख स्पष्ट करता है।

Primitive Poetry was in fact, education of instincts through the imagination.

"...The poetic myth are dead; and the poetic image, which is the myth of the individual, reigns in their stead."

C.D.L.

क्लासिकल दृष्टिकोण भयानक को रुचिकर सहनीय बना कर उपस्थित करता है, नया दृष्टिकोण भयानक को अपने Pattern का एक अंग समझता है।

अपने बिम्ब विधान और रूपक रचना के द्वारा काव्य का महत्त्वपूर्ण कार्य है Pattern के नये सम्बन्धों की खोज और पहचान। सतत परिवर्तमान Pattern होने के कारण कोई भी बिम्ब निरपेक्ष सत्य नहीं पाता।

Actual verification कविता को अधिक अपील नहीं दे पाता। बहुधा इसके स्थान पर उसमें एक emotional logic होता है जैसे कि सूर्य के डूबने और मृत्यु होने के वर्णन के Images को एक साथ पिरो दिया जाय।

रूपक त्रिकोण होता है। उपमान, उपमेय और दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों का पाठक पर प्रभाव।

"The poet's task is to recognize pattern wherever he sees it."

C.D.L.

बृहस्पतिवार, 31 मार्च, 1955

"The production of imagery....belongs to the general action of the mind, in the dusk of unconciousness.

बिम्ब विधान में ताज़गी, गहराई, उद्दीपन शक्ति (Freshness, intensity and evocative power) होनी चाहिए।

C.D.L.

ताज़गी के अन्तर्गत शैली और वस्तु दोनों की नवीनता है। अलग-अलग भी और एक साथ भी।

गहराई से तात्पर्य है छोटे से स्थान में सर्वाधिक, सम्भावित महत्त्व (significance) की स्थापना। Intensity is achieved not only in the separate image, but through the closeness of the pattern within which a poem's images are related.

उद्दीपन शक्ति से तात्पर्य उस शक्ति से है जो हममें काव्य के आवेग के प्रति

response जगा सके। कुछ कमल, चन्द्र, चन्दन, मधु आदि ऐसी Images हैं जो सदैव इस शक्ति से युक्त होती हैं। यह consecrated images कही जाती हैं (बिम्ब जो पवित्र बना दिये गये हैं)। यह शक्ति वैयक्तिक आधार पर परखी जानी चाहिए। जबकि पहली दोनों विशेषताएँ Objective होती हैं। Boldness और emotional precision उद्दीपनशक्ति की स्थापना करते हैं।

प्रतीक और बिम्ब में अन्तर है। प्रतीक एक विशिष्ट वस्तु या भाव के लिए प्रयुक्त होता है जबकि बिम्ब में response subjective variations का हो सकता है।

"If there is any essential in imagery, it is not boldness or intensity, but congruity– that the image should be congruous, with the passionate argument and also with the form of the poem."

C.D. Lewis

"Still more characterstic of poetic genius does the imagery become, when it moulds and colours itself to the circumstances, passion or character, present and foremost in the mind."

Coleridga

"Bold, intense or closely wrought images are in appropriate to verse written for music since they tend to destroy the balance between the word pattern and the melodic lines."

C.D. Lewis

(There is a difference between conceit and Image)

यहाँ पर ध्यान रखने की बात यह है कि bold images वाली काफ़ी कविताएँ संगीत पर सेट की गयी हैं, परन्तु already existing tunes के लिए जो कविता लिखी जाय, यानी कि जो पहले ही मानकर लिखी जाय कि इसे गेय होना है, वहाँ पर यह बात लागू होती है।

The divorce of lyric poetry from music was perhaps the greatest revolution that has ever occured in English Poetry.

C.D.L.

बहुधा लोग image के स्थान पर inferences देने लगते हैं। यथा नागार्जुन की 'कालिदास के प्रति'। अधिक एन्द्रियता और अधिक वैचारिकता बिम्ब को paralyse कर देती है। माथुर की 'हेमन्ती पूनो', अज्ञेय की 'पृथ्वी प्रियतम', 'तीन ऋतु चित्र'*। विचार भी वहाँ नष्ट हो जाता है जहाँ छोटे-छोटे टुकड़ों और कल्पनात्मक बिम्बों में बँट जाता है।

Mathew Arnold condemned poetry which is no more than "a shower of isolated thought and images."

* 'माघ-फागुन-चैत'

Image सदैव functional होनी चाहिए Decorative नहीं। नहीं फिर वह superfluous हो जायेगी।

(Conceit और Image के Difference याद रखने चाहिए) अजित की चाँदनी चन्दन सदृश में conceit है, image नहीं)।

छायावादी कवियों का बिम्ब विधान over Inflation तथा Imprecision का दोषी है। वहाँ पर वस्तु out of focus magnify की गयी है। यथा पन्त की 'बादल' कविता।

Romantic Imagery की एक विशेषता है कि वह पाठक के पास व्याख्या के लिए कुछ नया मसाला छोड़ देती है और यह व्याख्या उन मूल तत्त्वों को फिर से पकड़ने पर नहीं हो पाती जिनसे वह Image बनी थी।

The Romantic Image is a mode of exploring reality...

C.D.L.

Classical बिम्ब विधान का एक स्पष्ट उद्देश्य, विचार होने के कारण दायरा (Radius) अपेक्षाकृत छोटा होता है जबकि Romantic Poet की Image-seeking faculty काफ़ी दूर-दूर तक धावा मारती है। 'वाल्मीकि classical और कालिदास Romantic'.

'The faculty which creates or transmits poetic images is the imagination.'

काव्य की कल्पना से हमारा अर्थ है एक ओर तो एक सामान्य सहानुभूति जो प्रत्येक में होती है, कवि में कुछ विशिष्ट रूप से, तथा दूसरी ओर उन दिशाओं की ओर सतत प्रयास तथा उन वस्तुओं के प्रति सहानुभूति जिन्हें हम प्राप्त नहीं कर सकते, भूत की ओर, भविष्य की ओर, अनुपस्थित की ओर—यानी कि वह सब जो वर्तमान अनुभव से परे है। इसी कारण Cyril Connolly ने Imagination को 'The Nostalgia for the past, the absent कहा है।

The Identification of the poet with objects which appeal to his senses is the initial step in image-making.

दूसरी स्थिति की ओर W.B. Yeats ने संकेत किया है। 'One must allow the images to form with all their associations before one criticizes. उसका यह भी कहना है कि अपने सम्मुख से बिम्बों को तेजी से गुजरने दो, तथा यह भी आवश्यक है कि इच्छा और तर्क (बुद्धि) को कुछ क्षणों के लिये suspend कर दिया जाय to bring up from the subconcious anything you already possess a fragment of.

तीसरी स्थिति काव्य रचना की है जब कवि समीक्षा प्रारम्भ करता है, बुद्धि का सक्रिय प्रयोग करता है। इस stage पर the selection or rejection associated

images in confirmity with now emerging pattern of Poem.

C.D.L.

"The perception with me is at first without a clear and definite object; this forms itself later. A certain musical mood of mine precedes and only after this does the poetical idea follow with me.

Schiller

कल्पना को विचार से पृथक न समझना चाहिए ऐसा Dallas का कहना है। उसके अनुसार वह विचार का अपने स्वयंचालित (automatic) तथा अचेतन भाव से कार्य करना।

जब कोई संवेदनात्मक पंक्ति हमारे गहरे में जाती है तो अचेतन से एक बिम्ब उदित होता है। प्रत्येक अनुभव एक नवीन बिम्ब में परिवर्तित हो जाता है।

जब बिम्ब के रूप में एक थीम उदित होती है तो फिर कवि उससे पूछता है, प्रश्न करता है अर्थात् विविध पक्षों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। इस Interrogation में अन्य सहयोगी और सहायक बिम्ब आते हैं जिनमें से कि उसे congruous को छाँटना पड़ता है। यह Associated Image के Flow के साथ-साथ चयन करना काफ़ी कठिन कार्य है।

Paul Valery said, I believe, that the need for a certain Rhyme altered the whole course of one of his poems.

बहुधा लिखते-लिखते spontaneously कोई striking Image सम्मुख आ जाती है और फिर सारी कविता की गठन उसी के अनुसार करनी पड़ती है। इस क्रिया में बहुधा जो हम पहले कहना चाहते थे, उससे अलग भी हो जाते हैं।

बहुधा Mixed Metaphors और Incongruious Images हमें सफल मालूम पड़ते हैं इसलिए कि जितना ही वे sensuous Appeal hack करते हैं उतना ही सफल ज्ञात होंगे।

(प्रसाद का शीतल दाह ऐसा ही Mixed Metaphor है) तथा इनमें emotional propriety का भी प्रश्न उठता है तथा सन्दर्भ का प्रश्न भी बना रहता है।

कवि अपनी भाषा को क्रमबद्ध करके अपने अनुभवों को हमें व्यवस्थित रूप में देता है।

Congruity of Image means consistency of Impression which is the result of successful ordering of the experience from which the poem is derived.

कविता की थीम किसी एक अनुभव से उठी हुई हो सकती है पर उसका बिम्ब विधान हमारे जीवन के समग्र अनुभवों द्वारा सम्पादित हो सकता है।

"The images in a poem are like a series of mirrors set at different angles so that, as the theme moves on, it is reflected in a number of different

aspects. But they are magic mirrors : they do not merely reflect the theme, they give it life and form; it is in their power to make a spirit visible."

C.D.L.

"Whether in verse, then, or in prose, the principle that organize the images is a concoral between Image and theme, the images lighting the way for theme and helping to reveal it step by step to the writer, the theme as it thus grows up controlling more and more the deployment of the images."

उपमा, रूपक आदि कवि की उस सहानुभूति प्रभा के चिह्न हैं जो वह अपने से बाहर की वस्तुओं में अनुभव करता है।

कोई भी विषय आन्तरिक रूप से (Inharently) अकाव्यात्मक नहीं होता है। कोई कवि किसी object से image बना सकता है यह दो बातों पर निर्भर है; प्रथम तो उसकी स्वयं की कल्पना शक्ति का उस विषय के प्रति response तथा दूसरे यह कि उस विषय को General conciousness ने कहाँ तक आत्मसात किया है।

(Incongruity is the source of all humour)

यदि इंजिन, ऐरोप्लेन या और नये प्रकार के दृश्यों, वस्तुओं को बिम्ब रूप में ग्रहण किया जायगा तो शायद पाठक एतराज़ करेगा। यह शायद General conciousness के विरुद्ध है, परन्तु "If a poet is not more sensitively alert than his contemporaries he is nothing, and if he is more sensitive then he will see connections invisible as yet to the contemporary eye."

C.D.L.

That freshness and audacity of image which we admire would be much more difficult to achieve if the poet were restrained from using the intuitions that flash for him off novel sense-data.

परन्तु एक भय भी है वह अपने Intuition की गहराई को Misjudge कर सकता है और परिणाम होगा कि बिम्ब के स्थान पर बिम्बाभास मात्र रह जायेगा। यह भय नये कवि के सम्मुख बड़ा स्पष्ट होना चाहिए।

दूसरा भय है कि Modern Imagery की कविता out of date हो सकती है। भविष्य के वैज्ञानिक विकास में एंजिन, हवाई जहाज़, ईथर केवल वैज्ञानिक इतिहास की वस्तुएँ रह जा सकते हैं तब ऐसी कविता का क्या होगा। पर वास्तव में कवि आने वाली पीढ़ी पर दृष्टि रख कर नहीं लिखेगा, वह अपनी पीढ़ी को आनन्द दे ले, यही बहुत है। (अज्ञेय को उद्धृत)*

A dramatic context provides greater scope for the use of audacious metaphor and novel Imagery than a lyric or a contemplation one. (Verse drama, भारती, माथुर)*

* नोट्स लेते हुए देवीशंकर अवस्थी हिन्दी के सन्दर्भ ब्रैकेट्स में लिखते चलते हैं। इसी क्रम में अज्ञेय, भारती, माथुर का उल्लेख है। सं.

बहुधा कोई-कोई कविता रूपकों से भरी होने पर भी केवल एक statement अथवा अपने किसी वैयक्तिक द्वन्द्व को स्प्ष्ट करने के लिए होती है। अतः ऐसी Images में वैयक्तिक संवेदना वाले बिम्ब निर्वैयक्तिक रूप धारण करके आते हैं।

कभी-कभी पूरी कविता में प्रारम्भ से ही ऐसी ही भूमिका तैयार की जाती है कि हम अन्त के बिम्ब पर जाकर एक बार फिर से पूरे Image sequence को देख लेते हैं और उसके महत्त्व को आँक लेते हैं।

Poetic generalizations are often rising from personal to Impersonal.

आज का कवि छोटी से छोटी वस्तु को भी काव्य के लिए अग्राह्य नहीं मानता है तथा दूसरी ओर वे सारे काव्य माध्यम जो उसके पूर्ववर्तियों के लिए खुले थे उन्हें वह बन्द पाता है। ऐसी स्थिति उसके ऊपर काफ़ी strain डालती है विशेषकर Technique सम्बन्धी। उसे असीम दृश्य अदृश्य बिम्बों को अपनी शैली के भीतर लेना है और वह शैली अर्धगीतात्मक या अर्धविचारात्मक है।

और यह strain उसके आलंकारिता के प्रति हेय भावना तथा नियमित शैली या कृत्रिमता के विरोध के कारण और बढ़ जाती है। अतः एक विशेष दबाव उत्पन्न हो जाता है जो विविध बिम्बों के द्वारा अर्थ को अधिक से अधिक व्यंजित कराता है और उस काव्य सूत्र पर कम से कम ज़ोर डालता है जो उन्हें जोड़ता है। इस तरह यह दबाव दो रूपों में सम्मुख आता है : Intensifying and accumulating of Images.

दो Modern Images :

1. The falling cliff
That like a melting face
collapsing through its features,
leaves a stare.

G. Barker

2. Goodbye now goodbye :
to the early and sad hills
Dazed with their houses like a faint migraine.

Stephen spender

(बिम्बों को accumulate करने की प्रवृत्ति भक्तिकाल में भी एक बार जोर से उमड़ी थी) परन्तु यह प्रवृत्ति यदि विचार सम्पत्ति के साथ हो तब तो ठीक अन्यथा नहीं।

कुछ बिम्ब functional होते हैं, पर यह तभी सफल होते हैं जबकि कवि को contemporary situation और उसकी गहराई का अनुभव होता है। इस परिस्थिति में functional images बड़ी शक्ति के साथ मुख्य संवेदना उपस्थित करती है। अंग्रेज़ी में Auden ऐसे रूप विधानों में चतुर है। वास्तव में नये बिम्बों और उपमाओं के साथ नये विचार भी आवश्यक हैं। बिना उसके नये बिम्ब विधान अनुचित ज्ञात होते हैं।

"If a poem is to be anything like great, it must in one sense, be concerned with the present. What ever its subject may be, it must express something living in the mind from which it comes and the minds to which goes. Wherever its body is, its soul must be here and now."

A.C. Bradley

"For the creation of a master-work of literature two powers must concur, the power of the man and the power of the moment."

M. Arnold

परन्तु वर्तमान अत्यन्त confused चश्मा है। आज ही sheer mass of sense-data पिछले डेढ़ सौ वर्षों में बहुत अधिक बढ़ गया है। वैज्ञानिक आविष्कार और सिद्धान्त बढ़ते रहते हैं पर उनमें किसी समन्वय का अभाव है और फिर इन सबको कवि के दिमाग को प्रभावित करने के सैकड़ों उपाय हैं जो अनिवार्य रूप से उसका ध्यान खींचते हैं।

अब यदि इस नयेपन को प्रेषित करना है तो पाठक तक तो निश्चित रूप से इसका complex, परिवर्तन तथा नयापन निश्चित रूप से नये बिम्ब विधान को, जो इसका वहन करेगा, प्रभावित करेगा।

आज जब जीवन को furnish करने वाली वस्तुओं का आविष्कार और निर्माण बढ़ता जा रहा है तब फिर कविता भी Imagery से अधिक से अधिक भरती जायगी। तथा कवि को Preoccupation with Images is also a sign of the modern poet, effort to elucidate and control the modern sense, the modern situation. Metaphor is the natural language of tension of excitement : (अन्धायुग) images. Images are... a breaking down of the high tension of life so that it can be safely used to light and warm the individual heart.

Reality today presents "Immense, moving, confused spectacle."

C.D.L.

"Every successful Image is the sign of a successful encounter with the real."

C.D.L.

आज के कवि की सबसे बड़ी कमज़ोरी, उसकी असफलता का मुख्य कारण है 'The impatient irritation of mind' (M. Arnold) है। आज हमारी जिज्ञासा को उभाड़ने वाले तत्त्वों की अधिकता है। आज का कवि प्रत्येक कार्य और वस्तु में अर्थ ढूँढ़ता है। वह फल पकने के पहले ही रस ले लेना चाहता है। वह उन सब विषयों (Objects) का प्रयोग कर लेना चाहता है, जिन्होंने उसको अपनी ओर आकर्षित किया है इसके पूर्व ही कि they are fully matured in Images (यानी कि सामान्य स्वीकृति उन्हें मिल सके)।

आधुनिकता शैली, बिम्ब अथवा संवेदना किसी भी चीज़ में प्रदर्शित हो सकती है। (शायद अज्ञेय में शैलीगत Modernity है, सर्वेश्वर दयाल (भाषण) में संवेदनागत तथा नरेश एवं माथुर में बिम्बगत)। हम किसी कवि के भाषा के मुहावरे में वह तत्त्व लक्ष्य कर सकते हैं जो उसे पूर्वजों से अलग कर समकालीनों के साथ बैठाता है। यह मुहावरा उस युग के प्रचलित बोलचाल के मुहावरे की लय और चरित्र के अनुकूल ही होगा।

हम देख सकते हैं उन कवियों को जिन्होंने पुराने subject (अन्धायुग) को नये अर्थों में प्रयुक्त किया है, तथा उस कवि को जिसने पुरानी थीम के variations को अधिक अपनाया है (जैसे माथुर) तथा उस कवि को जिसने नये को अपनाया है पर कर कुछ नहीं सका (जैसे पाषाण)।

इसमें से कुछ हमें appeal करते हैं, कुछ एक चमत्कार मात्र उत्पन्न कर पाते हैं और शेष कुछ नहीं।

यह Modernity केवल इच्छा मात्र से अथवा सीधी तिरछी लाइनों, या मशीन तथा विज्ञान की कुछ उपमाओं द्वारा नहीं लायी जा सकती।

बहुधा पुरातनवादी समीक्षक subject और थीम को एक साथ confuse कर देता है और इतिहास को भुला देता है। तुलसी और वाल्मीकि का subject एक ही है– राम; परन्तु theme पृथक् है और साकेत की तो और भी पृथक्। यदि आज भी कवि लिखे तो और भी पृथक् होगी। यहाँ इतिहास को न भूलना चाहिए जो Contemporary trends को गवर्न करता है। तुलसी, वाल्मीकि और गुप्त अपने-अपने युग के Modern कवि हैं परन्तु रामचरित उपाध्याय अथवा द्वारका प्रसाद मिश्र नहीं। भारती Modern poet हैं अन्धा युग में।

पुरातनवादी समीक्षक कहेगा कि शाश्वत विषयों–मृत्यु, प्रेम, प्रकृति आदि पर लिखना चाहिए। पर केवल अस्तित्व को छोड़कर कुछ भी शाश्वत नहीं है। जैसे कि सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ यौन सम्बन्धों में भी परिवर्तन हुआ और इसके साथ ही हमारा प्रेम सम्बन्धी response भी–केवल बाहरी और दिखावे के रूप में ही नहीं बल्कि हमारी सम्पूर्ण मानसिक प्रतिक्रिया उस ओर धावित होती है। मेघदूत का प्रेमप्रसंग, मतिराम का प्रेमवर्णन, छायावादी का प्रेम और आज के प्रयोगवादी के प्रेम कितने पृथक् हैं। स्वयं छायावादी प्रेम और बच्चनवादी प्रेम में अन्तर है।

अतः यह इतिहास कवि को नये मूर्त संवेदन ही बिम्बविधान के लिए नहीं देता बल्कि प्रेम, मृत्यु, प्रकृति आदि के प्रति होने वाली मानवीय स्वभावगत प्रतिक्रिया के changing patterns के लिए नये बिम्ब भी खोजता है, इन एकदम परम्परावादी और अक्षय भावों के लिए।

"New objects, new ideas, new modes of behaviour breed new images, which in their turn necessitate new styles."

C.D.L.

तर्क (Reason) और मूलवृत्ति (Instinct) का द्वन्द्व हमारे मस्तिष्क को हमारे विरुद्ध करने वाला सबसे बड़ा संघर्ष है।

Image एक ढंग है विषयवस्तु के ऊपर एक प्रकार के आत्मिक (Spiritual) कण्ट्रोल का assert या Reassert करना है। वह इसके द्वारा Reason और revelation में सामंजस्य स्थापित करना चाहता है।

कल्पना वह साधन (Instrument) है जो यथार्थ के पैटर्न को खोजती है तथा बिम्ब उस पैटर्न को हमारे सामने अनाच्छादित (अभिव्यक्त reveal) करने वाली विशेषताएँ (High lights) हैं।

Modern बनने के इच्छुक कवि के सम्मुख लेविस ने अनेक कठिनाइयाँ दिखाई हैं–

1. आधुनिक बिम्ब विधान का Material शीघ्र ही पुराना (obsolete) और अर्थहीन हो जायेगा because of हमारे समय की द्रुत परिवर्तनशीला गति के कारण।

2. यह Material भावनात्मक साहचर्य (emotional associations) से रहित है क्योंकि यह अपरिचित सा है अतः इसका अधिक उपयोग सम्भव नहीं है।

3. आधुनिक कवि उस जनप्रिय माध्यम–छन्दनाट्य, व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक कविताओं– को Lack करता है जो इन Images के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

4. सही या गलत तौर से उस आलंकारिकता से वह घृणा करता है जिसके द्वारा उसके पूर्वज अपनी काव्यात्मक उक्तियों (arguments) करौं कुवंत जग कुटिलता... पर जोर देते थे या उन्हें स्पष्ट करते थे। इसके स्थान पर आधुनिक कवि केवल बिम्ब विधान पर आश्रित हो जाता है, उसके द्वारा ही वह पार करना चाहता है और यह बात उसके आन्तरिक Texture पर बड़ा ज़ोर (strain) डालती है।

5. Modern Images के सफल प्रयोग के लिए कवि को भी आधुनिक होना पड़ेगा–यानी कि केवल समकालीन विचारधाराओं से ही परिचित न होगा (नवीन या डॉ. सोम परिचित हैं पर Modern नहीं हैं), बल्कि उसमें इतनी शक्ति और संवेदना होगी कि वह सहानुभूति और ग्राहकता (Receptive) पूर्वक वर्तमान में रह सके। वह वर्तमान जो कि विशेष ढंग से संकुलता (Complexity) तथा मतिभ्रम (confusion) से युक्त है।

एक समस्या और भी है जहाँ आधुनिक कवि किसी भी चीज़ को अकाव्यात्मक नहीं मानता है वहीं कोई बाह्य authority ऐसी नहीं है जो उसे विषय वस्तु के चुनाव में निर्देश दे सके या उसके बिम्ब के मूल्य निर्धारण में निकष का कार्य कर सके। इसे हम कवि कर्म काठिन्य भी कह सकते हैं।

Bradley ने कहा है–

"The poet who knows everything and may write about anything has, after all a hard task."

तथा classical कवियों के लिए वह कहता है–

"...his matter, as it existed in the general imagination, was already

highly poetical...a world not of bodiless thoughts and emotions, but of scenes, figures, action and events. For the most part he lived in unity with it; it appealed to his own religious and moral feelings and beliefs."

इसी दृष्टिकोण को वह एक स्थान पर फिर स्पष्ट करता है–

"The fall of man is really a more favourable subject than a puinshed... that is to say, (it) offers opportunities of poetic effects wider in range and more penetrating this appeal. And the fact is that such a subject, as it exists in the general imagination, has some aesthetic value before the poet touches it. It is...an inchoate poem or the debris of a poem. It is not an abstract idea or a bare isolated fact, but an assemblage of figures, scenes, actions and events, which already appeal to emotional imagination : and it is already in some degree organised and formed."

Bradley

इस पर यह कहा जा सकता है कि जैसे प्राचीन ग्रीक या संस्कृत कवि Myths आदि पर आश्रित होकर–जो स्वयं अर्ध कविता थी–लिखता था और वह इसीलिए popular imagination को ग्रहण कर लेता था; तो फिर नया कवि क्यों नहीं उनको उसी रूप में ग्रहण कर लेता है। पर यह बात स्पष्ट रहनी चाहिए कि myths का वह popular imagination नष्ट हो चुका है। अब तो वे चीजें Museums की बन गयी हैं। उन पर यदि कवि लिखेगा भी तो केवल Museum Interest से अपना नया अर्थ लाद कर, अतः फिर Popular imagination का सहारा लेकर सम्प्रेषित करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यहाँ तक कि प्रसाद जैसे Modern poet ने भी मनु की कथा में नया अर्थ जोड़ा है। सच तो यह है कि नये कवि के लिए न कुछ unpoetic है और न कुछ अनिवार्यतः poetic, क्योंकि वह नये Reason के आलोक में किसी स्थापित विश्वास का सहारा नहीं ले सकता।

"Animism lies surely at the very source of poetic image" मानवीकरण (personification) तथा pathetic fallacy भी animism के रूप हैं। आधुनिक कवि भी मशीनों आदि को सजीव बनाता है, यह भी इसी का उदाहरण है। अरूप को स्थान और रूप दे देता है।

"General imagination (Bradley) तथा general conciousness में अन्तर होता है। हमारी भावनाओं के नये विषय general conciousness स्वीकार कर लेगा पर वे General Imagination में न आ पावेंगे। General Imagination का क्षेत्र आजकल बड़ा सीमित है। उदाहरण के लिए तार के खम्भे सामान्य चेतना (General Conciousness) के भीतर आ गये हैं। लैण्डस्केप के चित्रण में वे आ जाते हैं पर उन्हें General Imagination में स्वीकारने के लिए काव्यात्मक ढंग से अनुभव करने की आवश्यकता है–जैसे कि उनसे गुजरता हुआ तार मानो सारे हृदयों का तार है और वह खम्भा मानो ध्रुव प्रदेश में स्थित है।

अतः ऐसे विषयों को काव्यात्मक बनाना उसका कार्य है पर General Imagination से सहायता न मिलने के कारण यह बड़ा कठिन है तथा उसे coldness से प्रारम्भ करना होता है। आज उसके चारों ओर इतना आश्चर्य है कि उसका अचंभे का sense ही दब गया है। Reason and instincts are kept apart.

किसी भी General Imagination के न होने के कारण आज कवि के ऊपर कोई ऐसा अंकुश नहीं है और न कसौटी है जिस पर वह अपने बिम्ब विधान को कस सके। जब तक जन-साधारण उसके सत्य के साथ सहानुभूति नहीं कर पाता तथा उसके यथार्थानुशीलन को स्वीकारता नहीं तब तक उसके ऊपर मूल्य सम्बन्धी (Image के) कोई चेक नहीं रह सकता except personal and technical (वैयक्तिक या यान्त्रिक)।

That is perhaps the chief cause of the obscurity, the erratic touch and the centrifugal strain we find in so much modern verse."

C. Day Lewis

अब विषय वस्तु का प्रश्न आता है। विषय वस्तु वह सहारा है जिस पर थीम चढ़ती है और बिम्ब उसकी पत्तियाँ हैं जो उसके बढ़ने के साथ निकलती हैं। जब कविता पूरी विकसित होती है तब यह सहारे (थूनियां) बेकार सी प्रतीत होती हैं और अलग की जा सकती हैं। पर बिना इनके जो कविता बढ़ेगी वह एक बाधा का अनुभव सदैव करेगी। क्लासिकल कविता में यह supports बहुत थीं—जनप्रिय लोककथाओं और पुराणगाथाओं पर कवि अपनी संवेदना को चढ़ा सकते थे। शेक्सपियर या मिल्टन या वाल्मीकि, तुलसी तथा कालिदास के काल में अनेक कथाएँ प्रचलित थीं, पर आज स्थिति भिन्न है। आदम और ईव की कथा या ब्रह्मा के जन्म की कथा आज नानी की कहानी या फुरसत का मनोरंजन भले ही हो, कोई अर्थ नहीं रखती। "So poets today will often prefer to look for their subjects in the apparently trivial."

परन्तु युद्ध की Common suffering ने एक प्रकार के General Imagination को जन्म दे दिया है। जैसे नीरज और मनोहर श्याम जोशी की कविताएँ सफल हो गयी हैं, परन्तु युद्ध ने किन्हीं New modes of spiritual development को जन्म नहीं दिया है। अतः यह general Imagination बहुत दिनों नहीं टिक सकता। तो क्या कवि को फिर टूटे-फूटे Images में गुजर करना होगा?

"... The educated reading public has developed analytic powers which have not been generally matched by a corresponding development of the coordinating arts of the poet...The analytic spirit has been, I believe, responsible both for the present coma of religion among our educated classes and for the disrespect into which poetry and the fine arts have fallen."

Robert Graves

"It can not be concealed, however, that the progress of knowledge and refinement has a tendency to circumscribe the limits of the imagination and to clip the wings of poetry. The province of the imagination is principally visionary, the unknown and undefined the understanding restores things to their natural boundaries and strips them of their fanciful pretensions. Hence the history of religion and poetical enthusiasm is much the same, and both have received a sensible shock from the progress of experimental philosophy."

William Hazlitt

शुक्रवार, 1 अप्रैल, 1955

मनुष्य के भीतर कुछ ऐसा अवश्य होता है जो उसे ऊर्ध्वमुखी बनाता है। वरना यह 60 फुट या 80 फुट से कूदना क्या केवल पेट के लिए है। शायद नहीं। यश के लिए भी ऐसा नहीं। कुछ ऐसा Zeal होता है जो जोखिम कराता है।

रविवार, 3 अप्रैल, 1955

बनवारी लाल जैन
Rare Book Dealer
Moti Katra, Agra (U.P.)

श्री शरणबिहारी गोस्वामी
8/11, आर्य नगर, कानपुर

सोमवार, 4 अप्रैल, 1955

7:45 PM दिल्ली एक्सप्रेस पर आ. द्विवेदी जी को देखना।

सोमवार, 11 अप्रैल, 1955

कविता की स्थिति वास्तव में centripetel (केन्द्राभिमुख) होती है, centrifugal नहीं। वह अपने सब बिम्बों को एक संवेदना की ओर अभिमुख करती है। यद्यपि देखने में ऐसा लगेगा कि एक संवेदना से यह फूट कर बह रहे हैं।

शुक्रवार, 15 अप्रैल, 1955

ज्वालाप्रसाद खेतान की एक कविता 'आधार' में पढ़ी। हर पंक्ति में एक उपमा

थी। मुझे ऐसा लगता है कि जब इतनी अधिक उपमाएँ दी जाती हैं तो उसका तात्पर्य है कि कवि ने अपने कथ्य को पूरी तौर पर conceive नहीं किया है। उसके मन में एक उलझन स्वयं है जिसे वह अभिव्यक्ति नहीं दे पा रहा है। ये उपमाएँ बहुत असम्बद्ध और Image making faculty से शून्य होती हैं।

रविवार, 17 अप्रैल, 1955

यां चित्तयामि सततं मीम सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
अस्मत्कृते च परितुष्पति काचिदन्या
चिकि् तां च मदनं च इमां च मां च॥

बृहस्पतिवार, 21 अप्रैल, 1955

अधिकांशतः यश की प्रेरणा आज अधिक प्रधान हो उठी है। विशेषतः वे लोग जो साहित्य और राजनीति में जाते हैं। इसी के वशीभूत हो जाते हैं, उनमें भी विशेषतः द्वितीय श्रेणी के लोग...।

बृहस्पतिवार, 28 अप्रैल, 1955

आज अख़बार की निश्चित गति ने कल्पना को कुण्ठित कर दिया है। एक प्रकार की आत्म चेतना एवं विश्लेषण शक्ति कविता के लिए अवरोधक शक्ति बन रही है। प्राचीन काल में वीर गीत, कथाएँ, किंवदन्तियों और मुक्तक मुक्त भाव से जनता में प्रसार पाते थे पर अब तो समाचार प्रवाह स्थान पाता है।

इसके अतिरिक्त आधुनिक कवि के सम्मुख प्रेषणीयता की भी बहुत बड़ी समस्या है। वर्तमान दृश्य की जटिलता, परिवर्तनशीलता के अतिरिक्त साधारण आदमी में कल्पना का वह वैभव समाप्त हो चला है जो कविता का एक प्रकार से आधार विधान है। (हिन्दी में अभी ऐसी स्थित नहीं है) और उसके स्थान पर Precise and exact की माँग होने लगी है। शिक्षित वर्ग इतना अधिक शंकालु और आत्म चेतन हो गया है कि कल्पना पर वह विश्वास ही नहीं कर पाता, फलतः Image और उसके द्वारा भाव का प्रेषण सम्भव नहीं रह पाता। अतः कवि एक प्रकार से shock treatments से काम लेता है और सोचता है कि शायद इस शिक्षित पाठक का resistance ऐसे कम हो जायेगा।

अतः आधुनिक कवि अपने बिम्ब विधान द्वारा एक ओर तो आधुनिक Confusion के बीच अपना रास्ता निकालना चाहता है और दूसरी ओर भावनात्मक और बौद्धिक रूप से तथा एक अत्यन्त प्रबुद्ध तर्कशाली और कृत्रिम पाठक पर

कुछ प्रभाव डालना चाहता है। अतियथार्थवादी इस Shock treatment का ज्वलन्त उदाहरण है। इस प्रकार कार्य कारण की परम्परा से पृथक अतर्कशील बिम्बों की अवधारणा की जा रही है।

पर इन अक्रमयुक्त तथा illogical में यह बात छिपी है कि तार्किक पाठक को ऐसे क्षेत्र में ले चलो जो स्वीकृत सभ्यता से पृथक् है जहाँ उसकी तार्किकता काम न दे सके।

परन्तु यह है regression ही। rational काव्य के तर्क से पृथक् अवश्य है पर उससे नितान्त भिन्न भी निश्चित रूप से नहीं है।

वास्तव में कल्पना विचार और अनुभूति को एक single poetic whole में पिरोती है। पर आज का irrational attitude इस whole को नष्ट कर थीम की आलंकारिता और विस्तार के ऊपर वाले प्रभुत्व को भी नष्ट कर देता है। अब Image as such का व्यवहार होता है किसी भावनात्मक argument में नहीं।

प्रतीकवादी आन्दोलन के साथ-साथ वैयक्तिक Images का व्यवहार प्रारम्भ होता है। यह कवि के अपने अनुभव के प्रकाशक हैं जिन्हें पाठक केवल सन्दर्भ के बल पर अनुमान कर जान सकता है। वह इनके गुप्त ढंग (allusive manner) से एक विशेष आनन्द प्राप्त कर लेता है जैसे कि एक अजनबी दो मित्रों की बातचीत के बीच आ पड़े।

"The symbols of the symbolist school are usually choses arbitrarily by the poet to stand for special ideas of his own– they are a sort of disguise for these ideas."

Edmund Wilson

यह Private Images, Personal Images से पृथक् हैं। फिर Private Image और Private symbol में भी अन्तर है। प्रथम उतना arbitrary नहीं होता तथा उसका कोई न कोई भावनात्मक या ऐन्द्रिक लगाव अवश्य होता है।

"An increasingly complex civilization will justify more complex image patterns within the poem; an era which throws up masses of new ideas and sense-data will call for a response in bold novel imagery : but it does not at all follow from this that the right answer to a disintegrated civilization is a disintegrated poem."

C.D.L.

क्योंकि कल्पना न तो कोई दर्पण है और न बिम्ब मात्र प्रतिच्छाया। क्योंकि कल्पना सक्रिय होती है, वह हमारे Chaos में पड़े हुए मस्तिष्क को एक order में ला सकती है। यहाँ तक कि सिर्फ Chaos की अभिव्यक्ति में भी Poetic reason एक प्रकार के पैटर्न को जन्म देती है। किसी काली रात का चित्र बनाते समय चित्रकार कैनवास पर कोयला नहीं पोत देगा।

अतः हम नये कवि से पूछ सकते हैं कि टूटी-फूटी तथा असंगत (Hitrogenous) बिम्बों का कारण क्या है (अकेली न जैयो राधे जमुना के तीर) तथा काव्य-तर्क (Poetic logic) के स्थान पर उसने क्या रखा है जो सारी Images को एक सूत्र में बाँधता है।

"Poetic logic is development of a theme तथा कवि का बिम्ब से बिम्ब अथवा विचार से बिम्ब पर संक्रमण intelligible होना चाहिए। Intelligible में अर्थ Logical consequent से उतना नहीं है जितना acceptable to the Imagination से तथा उसमें earlier स्थितियों का खण्डन (refutation of earlier stages) न होना चाहिए।

"It is very generally through a change of mood or a change of position that poetical conclusions are reached by poetical logic. That is poetical logic, not the proving of a position through discourse and evidence, but the change of position, so that every stage is satisfactory to the mind of the hearer, and the transition., intelligible and the progress not refutation of earlier stages.

आधुनिक कवि इनके उत्तर में कह सकता है कि इस तरह की abstract बात changes of mood आदि की व्यर्थ है। वास्तव में बात केवल इतनी है कि या तो आप बिम्ब और भाव के—कविता के भीतर के कवित्व को, साधारण पद्यों के द्वारा जोड़ते हो या नहीं जोड़ते। तो ऐसे साधारण पद्य महाकाव्य या लम्बी कविताओं के लिए आवश्यक हो सकते हैं, मेरे लिए नहीं। मैं अपनी Images को प्रत्यक्षतः प्रेषित करना चाहता हूँ, पाठक तथा किसी गद्यात्मक व्याख्याता के द्वारा नहीं।

(द्रष्टव्य अज्ञेय में : कट गयी होंगी पूलें खेत की/गिन रहा होगा महाजन सेंत की। इसमें कोई प्रत्यक्षतः तंजपवदंसपजल न होते हुए भी एक अव्याख्यायित तर्क है) तथा यदि कभी मैं यह नहीं कर पाता तो अशक्ति मेरी है सिद्धान्त की नहीं (पृ. 119 CDL)। वह कहेगा कि काव्य तर्क वास्तव में एक काल्पनिक नाम है एक बड़ी भूल को छिपाने के लिए; बड़ी भूल यह कि कविता कार्यकारण की परम्परा के द्वारा ही विकसित होती है। वह causation के सिद्धान्त का खण्डन करने वाली Modern philosophy का विश्वासी हो सकता है तथा कवि कह सकता है कि मैं आज के सर्वाधिक नवीन कलारूप सिनेमा का अनुयायी हूँ जिसमें कि speeding up and intensifying of image sequences की टेकनीक प्रयोग में लायी जाती है।

पर इस तर्क का उत्तर है कि सिनेमा में नाटकीयता द्वारा दृश्य बिम्बों की दूरी ढँक जाती है पर काव्य में यह सम्भव नहीं है।

दूसरी बात यह कि यदि कवि यह कहता है उसके काव्य के विषय 'modes of inmost being to which to attributes of time and space are in applicable and alien' हैं तो फिर उसमें Time और space की Imagery भी न आनी चाहिए।

वास्तव में कविता में आदि, मध्य और अन्त होना ही चाहिए। उसमें लय और समय तथा दिशा (space) के विम्ब होने चाहिए तथा थीम विकसित होनी चाहिए। थीम के भीतर Images के सही सम्बन्ध होने चाहिए। आधुनिक दर्शन कुछ भी कहे पर किसी न किसी प्रकार के sequence को पाठक हमेशा मानेगा। कवि कार्यकारण को एकदम छोड़कर सतत वर्तमान में विद्यमान नहीं रह सकता (अस्तित्ववाद) (See पृ. 121 also)।

कविता को Images के बीच से स्वाभाविक रूप से उगना चाहिए (क्यों?)।

वर्तमान चित्रकला में कुछ लोगों ने देखा कि प्रकृति में Form (रूप) और रंग में एक सम्बन्ध है, परन्तु इस सम्बन्ध का उचित भावन न कर सकने के कारण उन्होंने रंग में ही आकार (to design in colour) के प्रयोग प्रारम्भ किये। कुछ ऐसी ही स्थिति काव्य की है कि उपमा और रूपक के मध्य कविता के रूप के प्रयोग होने लगे हैं और यही कारण है "the glare and glitter of perpetual, yet broken and hitrogenous Imagery" का। यह उत्तर भी आधुनिक कवि का है।

"The tendency of purer poetry (not decorative or any else) is to substitute images for the abstract idea, that is for the statement of this idea in poetic but non-pictorial terms. As a result, the reader sees nothing but a succession of pictures, can not see the theme behind them : and the more personal and arbitrary these images are, the less the whole, pictures, the poem itself has 'reference to general human experience' for the poet has discarded those non-pictorial passages by which the image could be related and a theme made explicit."

"आजकल कवि does not have an idea and then find the best image for it; he comes at the form and fullness of the idea through the image." (पृ. 122 पर डायलन थॉमस का वक्तव्य द्रष्टव्य है)।

इस वक्तव्य के अनुसार (i) कि उसकी किसी कविता में जीवन किसी केन्द्रीय बिम्ब के चारों ओर नहीं घूमती बल्कि केन्द्र से बाहर आती है (ie. centrifugal character) उसमें केन्द्र में कोई central image न होकर Host of images होती हैं और केन्द्रीय बीज एक साथ सृजनात्मक एवं ध्वंसात्मक होता है अतः (ii) द्वन्द्व की प्रणाली से इस Host of images से कविता का जन्म होता है। प्रत्येक दूसरी Image पहली को contradict करेगी and so on. अब यह खण्डन निश्चित है कि किसी तर्क या भौतिक विरोध का नहीं है। और न यह उस स्थिति का सूचक है जिसमें कि Images मस्तिष्क में सोचते समय आने वाली Images के प्रतिरूप में उत्पन्न होती है, क्योंकि थॉमस ने अपने Intellectual और critical forces को इस प्रणाली में प्रयोग में लाने का दावा किया है। अतः खण्डन (Contradictions) का तात्पर्य इतना ही हो सकता है कि ऐसे बिम्बों का विधान किया जाये जिनमें आपस में कोई

समीपता न हो। अथवा ऐसा विधान जो consistency of impression (प्रभाव की एकात्मता और विद्यमानता) न बना सके।

(Theory of ambivalence)

वास्तव में खतरा इस सेण्ट्रीफ्यूगल character से है और Pure poetry की आवाज़ से है।

"The worst of it is you can not lecture on really pure poetry any more than you can talk about the ingredients of pure water it is adulterated methylated, sanded poetry that makes the best lectures."

(Walter Raleigh– When speaking on christina Rossetti)

Herbert Read का कहना है—

"Poetry is an essence which we have to dilute with grosser elements to make it viable or practicable. A Poem that is pure imagery would be like a statue of crystal—something too cold and transparent for our animal senses."

आज की प्रवृत्ति द्वन्द्व और खण्डन में से किसी सत्य की खोज है जबकि पुराने गीतकाव्य या सवैयाकार को विरोधाभास सदैव गीतात्मक या काव्यात्मक बहाने से आता था, आज स्वयं अपना उद्देश्य लेकर सम्मुख है।

"The poetry which results from this image-lit exploring into the heart of contradictions is therefore metaphysical rather than lyrical in quality."

CDL

रीड के grosser elements हैं Emotion, sensousness and prose-meaning.

क्योंकि यदि ये न होंगे तो कविता के भीतर likeness और antithesis (ambivalence)– जो आज की कविता में बहुत है—एक साथ न आ सकेंगे।

"The modern poetry tends to sacrifice variety and humanity in the attempt to sound the depth of individual experience."

"Impassioned poetry is an emanation of the moral and intellectual part of our nature as well as of the sensitive." (See page 133)

Hazlitt

कविता को poetic reason और intense feeling cold होने से बचाती है।

"The conclusion seem inescapable, that the two dangers which threaten all pure poetry, all poetry whose meaning is deliberately concentrated within its images are really one and the same danger. Whether the images are too strong for their context and quarelling among themselves, tear into shreds; or whether they are so purified of human associations that our common, earth-bound imagination cannot warm to them, in either case, the result is the same a poem brilliant, perhaps in the detail piercing deep

perhaps with its momentary intuitions, but unsatisfying in the round; and incomplete poem : a heap of broken images."

C.D. Lewis

"The eternal spirit's eternal pastime."

1. "Poetry should strike the reader as a wording of his own highest thoughts and appear almost a remembrance."

Keats

2. "The greatest of all the functions of the poet is to aid in his readers the fulfilment of the cry, which is that of nature as well as of religios. Let not my heart forget the things mine eyes have seen."

Coventry Patmore

3. "It is perhaps true to say that memory is the faculty of poetry, because the imagination itself is an exercise of memory. There is nothing we imagine which we do not already know. And our ability to imagine if ur ability to remember what we have already once experienced and to apply it to some different situation."

Stephen Spender

यह Different situation क्या है? लेविस के अनुसार यह थीम या संवेदना है कविता की। "These memories being thus transferred from their original context and modified by the demands of theme, are used metaphorically and appear to us as images."

C.D.L.

इस प्रकार उसके अनुभव और स्मरण काव्यात्मक संवेदना के क्षेत्र में खिंच आते हैं। अब प्रश्न उठता है कि कवि के इन अनुभवों और स्मरणों को पाठक क्यों कर स्वीकारे। लेविस के अनुसार इसका उत्तर है कि "एक सामान्य सत्य (General Truth) की कवि द्वारा प्रस्तुत व्याख्या ही थीम है।'' अथवा "Let us say that a theme is a general truth, interpreting itself through the language of the poet's experience."

इस प्रकार सिद्धान्ततः इमेजरी के दो स्तर कविता में हो जाते हैं–

1. Its separate images relating to a theme

2. Its theme imagins a general truth.

General truth are something taken for granted, वे वैज्ञानिकों के प्रयोग सापेक्ष नहीं हैं।

The general truths of poetry are recognizable only through their emotional effects (and not by intelligence as the philosophic or scientific truths).

एक ओर तो कवि को modern and ever-changing सत्ता के रुख का ध्यान करना पड़ता है। उसे नये अनुभव, नयी स्मृतियों के फलस्वरूप नये दृश्यविधान प्रभावित करते हैं। दूसरी ओर उसके अन्तस्तल में Archetypal patterns (जिन्हें जुंग ने Psychic residue of numberless experiences of the same type) of response to nature inherited from numberless generations of ancestors रखते हैं। और इस प्रकार Private memories को प्रभावित करते हैं। यह Archetype of image किसी कविता में कवि के पर्सनल विज़न के बिना सक्रिय नहीं हो सकते। "They are apprehended only by the ecstatic, distanced, impersonal vision of art."

मस्तिष्क के इस conformation को जिसके द्वारा दोनों प्रकार की images में कवि का प्रवेश होता है, रीड के शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है–

"We might picture the regions of the mind as three superimposed strata in which a phenomenon comparable to a 'fault' in geology has taken place. As a result—the layers become discontinuous, and exposed to each other at unusual levels; the sensational awareness of the ego being brought into direct contact with the id, and from that 'see thing cauldron' snatching some archetypal form, some instinctive association of words, images or sounds, which constitute the basis of the work of art."

H. Read.

जुंग ने कलात्मक सृजन को दो Types में बाँटा है–मनोवैज्ञानिक तथा कल्पनात्मक (Visionary)। प्रथम मानवीय चेतना के क्षेत्र से उपादानों को लेकर प्रयुक्त करता है तथा साधारण अनुभवों को साधारण स्तर से उठाकर काव्य के स्तर तक लाता है। तथा द्वितीय coming from "The hinterland of man's mind, not 'intelligible' as the forms." उसका कहना है कि it arises from timeless depths, it is foreign and cold, many sided, demonic and grotesque. फाउस्ट के द्वितीय भाग को उसने इसी हिस्से में रखा है।

पर यह विभाजन आत्यन्तिक रूप से सही नहीं है। एक ही कविता में दोनों चीजें प्राप्त हो सकती हैं–

"...emotions generated collectively, persist in solitude so that one man, alone, singing a song, still feels his emotion stirred by collective images. He is already exhibiting that paradox of art-man withdrawing from his fellows into the world of art, only to enter more closely into communion with humanity.

Caudwell.

मॉड बाडकिन ने भी इसी सामूहिक अनुभव पर जोर दिया है। (See page 143-44)

"Perfect things teach hope"

Nietzsche

Poetic craftmanship तो आखिरी conscious stage है बिम्बों के चित्रण और विधान की। Bodkin के अनुसार– "a whole of far reaching significance, concentrated like a force behind each stanza or line." यह force प्राचीन अनुभवों तथा स्वयं के प्राप्त ज्ञान के आधार पर unconscious में पड़ी रहती है।

"In my view it is the poet's need for the realization of a potential theme by means of the images out of it must grow a realization working first through unconscious, then through conscious stages—that makes for the association of images."

C.D.L.

यदि इस बात को न माना जाय तो फिर यह मानना पड़ेगा कि कोई general truth जो पुराना सार्वभौम तथा आकर्षक संवेदना की तह में है, उसे ढूँढ़ना पड़ेगा। इसे rebirth Archetype कहा है। कामायनी में मनु के घायल होने पर फिर आनन्द की प्राप्ति यही rebirth Archetype है। यही Ancient mariner (coleridge) में बाडकिन ने Trace किया है। वह कौन-सी शक्ति है जो बिम्ब हीन स्थानों पर भी बिम्ब जगा सकती है। और ऐसा बिम्ब जगा सकती है जो भावनात्मक और स्पष्ट बिम्बों को पीछे छोड़ दे। लेविस का उत्तर है कि 'It is the power of general truth— the spontaneous human utterance of a feeling to which all men must at times surrender.

(खंजन मंजु तिरीछे नैननि...में यही बात है।) ऐसी कविताओं में कवि का व्यक्तित्व, चरित्र तथा कल्पना एकात्म रहते हैं (are integrated).

"It seems there is a kind of poetry in which the poet, not burrowing towards the roots of his own experience, not swaddling himself in his own many coloured sensations, but looking freely outwards upon the human situations, may all unwillingly give us a creative image of himself; a creative image, because it creates a better understanding of the human virtues of which it is born and a sympathetic response to them."

इस objectivity के cause को आगे बढ़ाते हुए उसने लिखा है–"The question rather is should not there be a poetry today which looks outward, which keeps its eyes firmly focused upon the subject in the external world and, brooding passionately over that object, percieving at last its value, its necessary part in the scheme of things, may disinterestedly reflect upon it an image of human virtue"?

"If poetry is still to do its civilizing work, this kind of poetry is needed.

For, without it, the moral and intellectual passions which distinguish man as social being must lack their images, and poetry itself cut off from those passions, be impoverished. Some may feel that ours is no sort of a world for the poet to contemplate.

उसके अन्तस्तल में मृत होकर पड़ी Archetypes उसकी कल्पना को प्रभावित कर सकती हैं। पर उसे उस मृत के सम्मुख सचेतन भाव से रक्षा करनी है, उसे आत्म समर्पण नहीं। इसका उपाय जीव मात्र मनुष्य तथा प्रकृति से सहभाव की स्थापना है।

इलियट की Prufrock poem इसी बाह्य दृष्टि जो मानवता पर स्थित है तथा उसकी अन्तःसंज्ञा दोनों को एक सत्य में Focus करती है। "Art enlarges us through making us feel small."

E.M. Forster

रविवार, 1 मई, 1955

G R P Mail से लखनऊ जा रहा हूँ। कानपुर स्टेशन पर इसमें काफी भीड़ आती है। गोंडा, बस्ती के अपढ़ काफी संख्या में इससे सफ़र करते हैं।

मेरे डिब्बे में एक बड़ा परिवार काफी सामान के साथ आता है। जल्दी-जल्दी इधर-उधर सामान रखना चाहता है। परिवार में एक वृद्धा, एक अधेड़ भी और एक किशोरी कन्या है जिसके पंजाबी चेहरे पर भी मंगोल रक्त की छाप स्पष्ट है। 4-5 नौजवान लड़के एक अधेड़, एक वृद्ध और 5-6 बच्चे थे। दो बर्थों पर उन्होंने अधिकार किया। एक पर बैठे हुए लोगों को महिलाओं के नाम पर अन्यत्र बैठाया। यह कितना दयनीय है कि पुरुष महिला के नाम पर concession माँगे और महिला भी inspire करे। यद्यपि वह समानाधिकार भी चाहती है।

ट्रेन पर Mob-Psychology और परिवार का सौहार्द मिला रहता है—एक डिब्बे में घुसने तक दूसरा उतरने तक।

शनिवार, 7-8 मई, 1955

फर्रुखाबाद अधिवेशन।
प्रा.हिं.सा. सम्मेलन

बुधवार, 11 मई, 1955

प्रातः 8:30 Radio Talk

भारतीय साहित्य का भविष्य

शुक्रवार, 13 मई, 1955

A bulb of 40 wts consumes 40 wts of Electricity in one hour and 1000 wts means 1 unit or 1 kwt.

Fans (Ceiling) are generally 40 or 60 wts and table fans of 15 or 25 wts.

रविवार, 15 मई, 1955

रेलवे इंजन के पीछे माल के डिब्बे क्यों होते हैं? इसके बारे में दो सहयात्रियों ने बड़े मज़ेदार ढंग से बताया। एक ने कहा ड्राइवर इसमें कहीं कुछ मिल जाय तो रख लेने के लिंए लगा लेते हैं। दूसरे ने डाँटते हुए कहा कि नहीं क्या बिना सरकार के permission के लगा लेंगे। उसने बताया कि accident से बचाव के लिए।

जाहिर है कि दूसरा अधिक बुद्धिमान पर कम original है। पर दोनों ने मुझसे कहा था कि अरे यह भी नहीं जानते और मेरी अज्ञानता पर विवशता सी प्रगट करते हुए यह बताया था।

बृहस्पतिवार, 19 मई, 1955

1. श्री कृष्ण दास महाराज
गोवर्धन, कुसुम सरोवर,
वृन्दावन
(रामकृष्ण दास)

2. श्री राधामाधव जी का मन्दिर
बिहारीपुरा, श्रीधाम, वृन्दावन
दुसायत
(नारायण भट्ट का साहित्य पूछना)

3. आचार्य श्री यमुनावल्लभ गोस्वामी
दुसायत राधामाधव का मन्दिर
आदिवाणी से पहले और काम के ग्रन्थ
गोविन्द जी मथुरा (Son of नवनीत जी)

4. श्री ब्रजवल्लभ शरण
श्री वियोगी विश्वेश्वर
(अधिकारी, श्री निम्बकाचार्य पीठ)

5. ब्रजसाहित्य मंडल
ब्रजभारती साहित्य वर्ष-4 (5-6)

6. श्री कृष्णदत्त वाजपेयी
7. श्री प्रभुदयाल मीतल
8. रूप मंजरी देवकीनन्दन दास
(कोई छपी हुई चीज या प्रश्न तथा वल्लभ साहित्य)
9. ब्रह्मचारी बिहारीशरण
निम्बार्क माधुरी
10. नागरीदास—म्यूजियम से
(नागर समुच्चय)

शुक्रवार, 20 मई, 1955

1. History of Religion & Ethics—Hastings
2. Gazetteers of Mathura
3. चाचा वृन्दावन दास के लिए
'वृन्दावन सागर'

शनिवार, 21 मई, 1955

"It is very difficult comrades, to live on freedom alone".

Stalin

सोमवार, 23 मई, 1955

Twentieth Century Literature

The new century began to accelerating what had been fought so bitterly in the nineteenth century, the new view of the world as a machanism as a process rather than the work of a beneficiant diety, Heaven undermined by science.

This century moves from the age of biology to the atomic age or that it begins as the sociological age and continues a psychological era.

The twentieth century was being dovetailed into the nineteenth, and striding across the join was the new figure who was to own the new century the common man.

वेल्स की experiments in Autobiography में इस युग का पूरा ख़ाका, आशा, आकांक्षा और व्याघात मिल जाते हैं।

It lays bare that strain of inferiority feeling, which may perhaps give this age its historical label, the uneasiness of an epoch of discontent, and that obsession with sex which is the hall-mark of adolscent maladjustments whether is a man or generation.

With Dostoevsky literature plunged into profundities hither to unknown, instructive, intuitive, profundities, below the surface of consciousness. The door to the unknown surface was being pushed open. The known surface of man had seemingly been explored to exhaustion-- the naturalist approach, the realist approach, the sociological approach.

Psycho-analysis came in time for the war and it joined the influence of Dostoevsky, Where anthropology and Frazer's Golden Bough had raised doubts about the origin and nature of religion and the validity of modern social organisations Freud had imposed a pattern on the secret evolution of mankind.

"That of all theories of the nature of man ever put forward by a reputable scientist, that of Sigmund Freud is the most attractive and adaptable for the purposes of fiction."

J.D. Beresford in 1920

"The arrival of the new psychology had much of the excitement that attended the arrival of the new learning at the Renaissance.

G.M. Young

हमें consumer's that is reader's history of literature भी चाहिए। वे क्या चाहते हैं, केनन क्रेज़ेज़ क्या हैं? बिक्री कैसी है? टेस्ट क्या है?

1910-30 has been a period of investigating and probing, of uneasiness and unrest and creation...

The catch word of 17th century was 'reason' and 18th was 'nature' and one our's is 'the human predicament'.

Our own preoccupations are shown by the frequency with which we talk of frustration, bewilderment, maladjustment and disintegration, the intensity with which we discuss and are aware of cruelty, violence and sadism, the all pervading sense of anxiety and in the background a feeling of guilt, sin, humiliation and despair. Never faith hope or charity. It is a universal and collective malady. It seems as though all sensitive writers of today are displaying themselves in the nude, saying urgently as great writers have always done. "That's where it hurts".

वे अपने दर्द और पीड़ा को कृत्रिम मुस्कान और स्वास्थ्य के द्वारा बचाकर विषय नहीं बदलते, परन्तु किसी भी रोग ग्रसित समाज, किसी प्लेगी शहर में सदैव कुछ न कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कहते हैं कि उन्हें वह सब व्याप्त नहीं है, वे boast करते हैं कि वे infected नहीं हैं तथा वे एक आत्मिक शक्ति रखते हैं जो

उन्हें इन सबसे अलग किये रखती है—and there are many writers today who ignore the plague and complain bitterly of what they call, abnormality, morbidity, pessimism, self-pity and squalor.

This is the age of anxiety. Now in the new world of beaurocracy there is a new fear, the fear of the secret and adverse report and the fatal rumour of political unreliability.

आर्थिक और वैयक्तिक स्तर की ही अरक्षा नहीं है, एक और गहरी anxiety है जो साहित्यिक निर्माण को प्रभावित करती है। यह और गहरे स्तर पर व्यक्ति की ईश्वर और जगत के सम्बन्ध में Instability, विज्ञान के नये साँचों में उसकी insignificance, जो इतनी तेज़ी से बदल रहे हैं तथा his consequent inability to decide on a religion, or even to allow, with equanimity, the decision to be made for him. It was not necessary for the poets to accept scientific doctrines, it was sufficient for them to be aware of them and to be worried by them.

There is also obsession of death worse than death even death in life, where the nineteenth century feared the spiritual death which comes from the loss of religious faith, twenteith century fears that death in life which is the loss of sexual potency. अणु बम से उनके लिए उतनी चिन्ता नहीं है जो मारे गये हैं, but the sterilization of those who survive.

H.G. wells once pointed out that the earlier novel was produced in an atmosphere of security, for the entertainment of secure poeple who liked to feel established and safe for good. Now a days the novel is produced in an atmosphere of insecurity for the further mortification of those who wish their agonies of insecurity to be perpetuated... Instead of being an entertainment, the serious novel is a continual rubbing of salt in the wound.

नया उपन्यास काव्य के माध्यम को अपना रहा है—the method of implication, of metaphor and of symbol, the method of splintered symbolised, symbol of seediness, shabiness and suqalor.

जब समीक्षक आधुनिक कथा साहित्य पर आक्षेप करता है कि उसमें यही तीन चीजें प्राप्त होती हैं तो वह भूल जाता है कि उसका (उपन्यासकार का) दिमाग sordid नहीं है बल्कि चारों ओर का वातावरण उसके दिमाग को ऐसा रंग रहा है।

Seediness is the mark of a world that has seen better days– seediness can be used as a symbol of the disintegration of civilization or it can stand for spiritual degradation.

The civilization which is breaking down is a civilization of great cities, vast, proliferating cities. And that is why some of the best modern novels have taken the city as an image of man, in all his richness and variety.

Anxiety की अभिव्यक्ति के लिए allegories प्रयुक्त हुई हैं।

In our age of explosives almost everybody is a neurotic, the whole civilized world is having a nervous breakdown, and we are apt to see ourselves the victims of some lurid and fantastic plot.

सभी जासूसी और रोमांचक कहानियाँ पढ़ते हैं। "If the allegory is the escape form of the age of anxiety, the thriller is the scapegoat of the age of violence loaded with all its sins.

Now a days, the tale of terror has proliferated in every direction. The pressure of civilization and the mechanism of publicity have dulled our responses, so that we need greater and greater stimulus. The art of public relations have dulled private relations.

The tale of horror is simultaneously saddistic tale and has the same divisions, political, scientific, sexual, sadism as a fine art even religious sadism.

"Our fears are infinitely more precise than our hopes."

Paul Valery

The stream of consciousness one of the most interesting things about the twentieth century is the way in which the novel has finally the dominant form of literature.

The fight for dominance has always been between the novel, whether in prose or in verse, and the drama.

उपन्यास की प्रगति आश्चर्यजनक रही है बहुत कुछ चित्रकला के समानान्तर। जैसे–पेंटिंग ने अपने को सिर्फ फोटोग्राफी से मुक्त कर perspective, anatomy, प्रकाश, रंग, घनत्व के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की है वैसे ही उपन्यास ने सिर्फ पात्र, घटना या परिस्थिति के विकास को छोड़ दिया है।

Novelists "can no longer develope character, situation or plot. Flaubst, Henry James, Proust, Joyce and Virginia Woolf have finished off the novel. Now all will have to be reinvented from the begining.

यह reinvention कलाओं में सदा से होता आया है।

17वीं शती में सर्वेण्टीज़ ने पहले पहल उपन्यास को व्यक्तित्व, उद्देश्य और प्रसंगानुकूलता प्रदान की सिर्फ adventure and tale के स्थान पर।

अठारहवीं शती में सैमुअल रिचार्डसन ने sensibility and the art of the close-up introduce किया।

19वीं शती में स्टेण्ढल और फ्लाबेयर ने detachment, aloofness और dispassionate statement की आधुनिक विशेषता दी। उन्होंने उपन्यास को सचेत कला और style के सर्वाधिक महत्त्व को सामने रखा। शैली किसी अलंकरण के रूप में नहीं बल्कि style as constructive, artistic conscience इसे Doctrine of controlled effect भी कह सकते हैं।

दास्तोवस्की और टाल्स्टाय are the masters of the headlong and the intuitive of apparently uncalculated effects.

20वीं शती के उपन्यासकार की समस्याएँ भी लगभग वैसी ही हैं जैसी कि आज के पेण्टर की हैं। ढंग प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न हो? प्रातिनिधिक तथा फोटोग्राफ़िक या प्रभावात्मक एवं अरूप। संक्षेप में सत्य की अभिव्यंजना और यथार्थ की प्राप्ति सभी चाहते हैं पर यह सत्य क्या झूठ के माध्यम से कहा जाय?

"To tell the truth as a liarcan." (पेज 79 का पहला पैराग्राफ द्रष्टव्य है।)

Catherine Mansfield

अच्छे उपन्यास में जार्ज मूर के अनुसार समकालीन इतिहास तथा एकदम exact reproduction of social surroundings of the age we live in.

आइजक्स के अनुसार अच्छे उपन्यास में समकालीन इतिहास तो होगा क्योंकि यह समकालीन संवेदनाओं से प्रस्तुत किया जाता है परन्तु exact और complete के अर्थ क्या हैं और सामाजिक परिवेश में क्या 'people' (लोग) भी आते हैं। तथा 'युग' जिसमें हम जीते हैं का क्या अर्थ लिया जाय।

नये उपन्यासकारों ने इन प्रश्नों को उठाया है और अपने उपन्यासों में उनका उत्तर दिया है Infact the intimate fusion of texture and structure is one of the paramount achievements of twentieth century fiction.

The novel is "A conviction of our fellow-men's existence strong enough to take upon itself a form of imagined life clearer than reality."

Joseph Conrad

The twentieth century novel lives permanently inside the minds of its characters.

Not objective portraiture, but mind from the inside, the mind allowed to speak for itself, under minute control but without any intrusion by the author withot comment and without analysis. It is in the purest forms of what is known as the stream of consciousness method, where speech is quoted without inverted commas and without labels like "He said" or "She answered", and thought flows, in coherently if necessarily, illogically, with the special grammar and the special logic of unconscious.

"Life is not a series of gig lamps symmetrically arranged; life is a luminous halo, a semi-transparent envelope surrounding us from the begining of consciousness to the end."

Virginia Woolf

"Let us record the atoms as they fall upon the mind in the order in which they fall, let us trace the pattern, however disconnected and incoherent in appearance, which each sight or incident scores upon the consciousness."

V. Woolf

This stream of consciousness method is impressionist method. Oblique writing, prattle, solilogy, internal monologue are the techniques of this method.

टाल्स्टाय, दास्तोएव्स्की अपनी थीम और मोटिव को आलोकित कर देते हैं एक complex system of searchlights के द्वारा, जो कि मूड और परिस्थिति to be constructed, पर पड़ती है।

The stream of consciousness answered a need of the age. It shows, "the very body of the time him from and pressure", and when we ask what kind of consciousness is revealed, we can only answer that it is the collective consciousness of the age, growing deeper as modern consciousness grows rich and more complex. Controlled texture and tempo are an essential element in the musical architecture of the twentieth century novel.

"Maturity can come only when the process of growing is finished."

Culture, Chaos and order

"The novel has become the dominant form of modern literature. We therefore demand from it that interpretation of life and of the process of living which we have hitherto demand from poetry and from Drama.

The main thing is that writers should have a point of view to stimulate them it may be a point of view in the form of a definite philosophical system, or just a vague. It need not between writer's own philosophy. (Page 106 last paragraph)

आधुनिक साहित्यकार महसूस करता है कि एक सार्वभौम Chaos है और यह एक प्रकार revelation है। यह है या नहीं यह दूसरी बात है पर इससे वह भयाक्रान्त है इतना निश्चित है।

"The human race is implicated in some terrible aboriginal calamity."

Graham Green + Cordinal Newman

"The whole of the *waste land* reflected the chaos which confronted Europe. Its material was chaos, but in itself it was not chaotic. It was the poet's personal order built out chaos and imposed on chaos. One of the great debts which literature owes to Mr. Eliot, and not in England alone, is the provision of a new idiom to present the new chaos of western culture. It has taken us thirty years to learn how to read a poem.

"It is living in a society in which men are no longer supported by tradition without being aware of it, and in which therefore, every individual who wishes to bring order and coherence into the stream of sensation, emotions, and ideas entering his consciousness, from without and within,

is forced to do deliberately for himself what in previous ages had been done for him by family, custom, church and state– namely, the choice of the principles and presuppositions in terms of which he can make sense of his experience."

उपन्यास और समाचार-पत्र आज की इस स्थिति में पड़े हुए मनुष्य को कुछ Guidance देते हैं। इन दोनों के बीच (स्थायी और क्षणिक साहित्य) कई प्रकार की श्रेणियाँ हैं।

उपन्यास व्यक्ति के, सामाजिक मनुष्य के, सामुदायिक मनुष्य के तथा फिर उससे ऊपर मनुष्य की गिरी दशा (Predicament) मनुष्य की destiny के जिसके साथ कि उसके धर्म की समस्या जुड़ी हुई है तथा मनुष्य का अमनुष्य के साथ सम्बन्ध, इन सब पर लिखे गये हैं या जा रहे हैं।

इन कोटियों के अतिरिक्त एक दूसरा विभाजन और हो सकता है एक जो सतह के साथ (with surface) काम करते हैं और दूसरे जो गहराई (in depth) में जाते हैं।

प्राउस्ट के साथ दोनों हैं वह पहले युग की तस्वीर देता है फिर उसकी व्याख्या करता है (Interpretation) तथा अन्ततः verdict देता है। यह वर्डिक्ट implied होती है। यह किसी क्रम में नहीं, तीनों चीजें simultaneously होती हैं। and it is this simultaneity of impression and expression which is one of the characterstics of our time and the new art-form the cinema specializes in this and has taught something of it to the novel.

व्यक्ति मनुष्य, सामाजिक मनुष्य और आध्यात्मिक जीव में एक hierarchy ही नहीं है बल्कि यहाँ पर मनुष्य के विकास का एक साँचा है। (See Page 114-115)

उपन्यासों का यह शेप या structure क्यों है; कैसे और क्यों युग की दार्शनिक तथा अन्य समस्याओं ने वह शक्ल उन पर लाद दी है (Forced) and how in turn the novel helps in confronting and exploring the problems of human destiny.

The serious novelist is an artist, conscious artist, not mere a tale spinner. वह बहुत सी समस्याओं की योजनाएँ उठाता है, पूरा कर पाता है कुछ ऐसे भी छूट जाती हैं। पर सब सचेत भाव से गढ़ता है।

One of the reproaches against the arts in this age of ours is that the artist has discarded his sacred detachment and allowed us to wander round his workshop, he has abandoned. Now a days one of the most noteworthy thing in fiction is the way in which the novelist not only intrudes but makes his intrusion an integral part of the work of art he is presenting.

The conscious novelist स्वयं ही उपन्यास का एक भाग नहीं है बल्कि बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है। (See Page 117) उपन्यास के भीतर डायरी का महत्त्व।

In this century we are obsessed with time. Philosphers analyse it, scientists abolish it, mathematicians transform it, and men of letters have it on the brain. (See more in 123)

The greater the chaos, the greater the order which results from subduing it.

A thousand paths must be used to approach it, allegory and analogy, the philosophy of history, the personally conducted tour through it; the neat tidy packeted sample of chaos, of the help of cinema with its flux and montage its power of darting, its devices of narration, its controlled ecstasies of chase and climax, its camera angles and simultaneity, its wedding of music and motion.

T.S. Eliot and poetic Drama

(काव्य नाटक के अन्य नाटकों से अन्तर के बारे में देखें, पेंज 142-143)

In short there is a wider theatrical equipment harnessed to a deeper poetical purpose.

The modern poetic drama, whether its purpose is religious or political, wishes to turn the audience into participants sharing a common myth while still remaining spectators.

"I am the nicest person in this room" इस तरह के कथन के या action को आइज़क्स common myths कहता है। (See also page 145-146)

("The secret of the best-seller was a judicious mixture of sex and religion Hallcaine) (again see page 157)

The Verdict

"Break the rhyme rather than the story directness of speech. The essence of poetry, with us in this age of stark and unlovely actualities is a stark directness, without a shodow of lie, or a shadow of deflection anywhere. Everything can go but this stark, bare, rocky directness of statement, this alone makes poetry today.'

D.H. Lawrance

The same thing happened in poetry as in fiction. There was first the poetry of individual sensibility, then the social poetry and in a strange way the chaos, and now we seem to be on the threshold of a synthesis, in which the individual, having undergone these storms, is putting forward a personal view again.

(In Anden group the poetry was full of the paraphernalia of modern

civilization and full of politics, social injustice) It was deliberately political. It existed in that uneasy gap between the great slump and the second great war. (See Page 117 for poets like बच्चन या गीतकार)

Quite apart from mobilising writers and forcing them to face or evade fundamental problems, a war forces a writer into contact with types, idioms and accents not normally of his own circle the living speech that reflects the living temperament, the fish queue, the markets, the barrack room, three months in a cargo boat going round the cape etc. The other side of the medal is the position of exile. The exile from his own contrary fades out because he has lost the living envelope of speech in which he is wrapped daily, so that even though he is still in using his own language, he is writing, as it were in translation. (जैसे माथुर की न्यूयार्क वाली कविताएँ)

सभी लोग सहमत हैं कि सिनेमा का आधुनिक कथा-साहित्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।

Whether by giving the novelist a panoramic view from a height or by forcing him to break his work up into tiny scenes, or by insisting on a narrative style in which not dialogue, which is the smallest part of talkie, but carefully balanced fragments are united into a resultant impression.

(The most maddening verdict to the artist is "Not guilty, but don't do it again."

It is a sad thing that among the enemies of literature there are so many people who imagine themselves lovers of literature, and are lovers of literature, but who will not permit literature to advance beyond the stage at which they themselves discovered it. Their own modernity remains the frontier line.

If there is to be a renaissance and there are already signs that there will be—there must be experiement. Without experiment literature is dead, without experiment the age is dead. But it must be honest experiment, not smartness, not catch penny cleverness, not Snobbishness, but grim, independent, even verbal experiment, with a constant re-assessment in the light of literary history with a climate of opinion to support it and a critical magazine to encourage it. It is necessary to know what is going on, and what has been going on in the past.

"If it had not been so frequently assumed that a critic who can not deal intelligently with a contemporary becomes, by some queer metamorphosis, intelligent when discussing a classic, literary history would not have become the dustbin that it is."

Edgell Rickword

रविवार, 29 मई, 1955

The hatred of luxury is not an intelligent hatred. It implies a hatred of the Arts.

V. Hugo (In les Miśerables)

No power is without its worshippers, no fortune is without its court. The seeker of the future revolve about the splendid present.

V. Hugo

सोमवार, 30 मई, 1955

बड़े मामा के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे भविष्य पर जीते हैं, जबकि average man सदैव past पर जीता है।

मंगलवार, 31 मई, 1955

"Contemporary admiration is nothing but short sightedness."

V. Hugo

शुक्रवार, 1 जुलाई, 1955

मेरे दर्द की कहानी तेरे नाम तक न पहुँचे
मैं नज़र से पी रहा था तो ये दिल ने बददुआ दी
तेरा हाथ जिन्दगी भर कभी जाम तक न पहुँचे
उन्हें अपने दिल की ख़बरें मेरे दिल से मिल रही हैं
जो कहीं मैं रूठ जाऊँ तो पयाम तक न पहुँचे

ज़ो नक़ाबे रुख़ हटा दी तो ये शर्त भी लगा दी
उठे हर निगाह लेकिन कोई बाम तक न पहुँचे
ये निगाह बेनियाज़ी तुझे बेवफ़ा मुबारक
मगर ऐसी बेरुखी क्या कि सलाम तक न पहुँचे
नयी सुबह पे नज़र है मगर साथ यह भी डर है
रफ़्ता रफ़्ता यह सुबह भी कहीं शाम तक न पहुँचे।

मंगलवार, 5 जुलाई, 1955

When I am dead, my dearest
sing no sad songs for me;
Plant thou nor roses at my head,
Nor shady cypress tree;

Be the green grass above me,
with showers and dewdrops wet;
and if thou will remember
and if thou will forget.
I shall not see the shadows
I shall not feel the rain
I shall not hear the nightingale
Sing on, as if in pain;
And dreaming through the twilight
That doth not rise nor set,
Happily I may remember
and happily may forget.

C Rosseth

Hask, how the peoples surge and sigh
and laughters fail and greetings die;
Hopes dwindle; yea,
Faiths wastes away,
Affections and enthusiasms numb;
Thou canst not mend these things
if thou dos come.

Hardy

I said to my soul, be still, and wait without hope
For hope would be hope for the wrong thing; wait without love
For love would be love for the wrong thing; there is yet faith
But the faith and the love and the hope are all in waiting.

T.S. Eliot

You are not the same people who left that station
Or who will arrive at any terminus
While the narrowing rails slide together behind you.

T.S. Eliot

Time present and time past
Are both perhaps present in time future
And time future contained in time past.

T.S. Eliot

The knowledge imposes a pattern and falsifies
For the pattern is new every moment
And every moment is a new and shocking
Valuation of all we have been.

T.S. Eliot

We are the hollow men
We are the stuffed men
leaning together
Headpiece filled with straw.

T.S. Eliot

For last year's word belong to last year's language
And next year's words await another voice.
The end is where we start from
Every phrase and every sentence is one end and begining
Every poem an epitapts.

T.S. Eliot

Sing of human unsuccess
In a rapture of distress.

Auden

We fall away into a future, and all
The seven seas, and the milky way
And morning, and evening,
And hi – cockalorum are in it.
Nothing is with the past except the past.
So you can make merry with the world.

Rosabel

My grateful thanks

Christofer Fry

What is that, Mother?
That, dear, is a wood.
Can we go in?
Yes, if you like.
What's this mother?
That's a tree, dear.
And this? and this? and this?
All trees, dear
And this?
That's a tree, too, I think, only it has
run a little wild
oh mother, where's the wood gone to?
It's still here, dearest, we are in it;
but you can see it for the trees.
From Mickle John's Instructional Album

(Key to modern – English Poetry)

M. Gilkes

सोमवार, 11 जुलाई, 1955

लगी चहकने वहीं पै बुलबुल हुआ जहाँ पै जमाल पैदा
कमी नहीं कद्रदां की अकबर करे तो कोई कमाल पैदा।

अकबर इलाहावादी

बुधवार, 13 जुलाई, 1955

The Three Voices of Poetry

T.S. Eliot

The first is the voice of the poet talking to himself or to nobody. The second is the voice of the poet addressing an audience, whether large or small. The third is the voice of the poet when he attempts to create a dramatic character speaking in verse; when he is saying, not what he would say in his own person, but only what he can say within the limits of one imaginary character. पहली और दूसरी आवाज़ का अन्तर काव्यात्मक प्रेषण (Poetic communication) की समस्या से सम्बन्धित होता है, the distinction between the poet addressing other people in either his own voice or an assumed voice, and the poet inventing speech in which imaginary characters address each other, points to the problem of the difference between dramatic, quasi-dramatic and non-dramatic verse.

प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्या केवल एक व्यक्ति के लिए ही कविता नहीं लिखी जा सकती है। (विशेष रूप से प्रेम काव्य)

इलियट के अनुसार a poem may be addressed to one person; there is a well known form not always amatory in content, called the epistle. परन्तु a good love poem, though it may be addressed to one person, is always to be overheard by other people. Surely, the proper language of love—that is, of communication to the beloved and to no one else—is prose.

(यानी कि कविता एक से अधिक के पास जायगी)। I have come to the conclusion that in writing verse to be read or recited.

Verse to be spoken by a choir should be different from verse to be spoken by one person; and that the more voices you have in your choir, the simpler and more direct vocabulary, the syntax, and the contents of your lines must be.

Murder in the cathedral की चर्चा करते हुए इलियट कहता है कि उसमें women of canterbury के कोरस को लिखते समय मैंने उन औरतों को अपने साथ identify करने के स्थान पर स्वयं उनके साथ identify करने का प्रयास किया।

The third, or dramatic voice did not make itself audible to me until I first attacked the problem of presenting two or more characters in some sort of conflict, misunderstanding, or attempt to understand each other, character with each of whom I had to try to indentify myself while writing the words for him or her to speak.

In a verse play, you will probably have to find words for several characters differing widely from each other in background, temperament, education and intelligence, you can not afford to identify one of these characters with yourself, and give him or (her) all the poetry to speak. The poetry must be as widely distributed as characterisation permits, and each of your characters, when he has words to speak which are poetry and not merely verse, must be given lines appropriate to himself. चरित्र के सुख को लेखक का mouthpiece न होना चाहिए। And these lines of poetry must also justify themselves by their development of the situation in which they are spoken.

बहुधा लेखक या तो चरित्र के अनुरूप काव्य पंक्तियाँ नहीं देते या फिर वे पंक्तियाँ कार्य व्यापार को आगे बढ़ाने में सहायक नहीं होतीं। वास्तव में यह समस्या समस्त imaginative fiction में आती है।

थोड़े से पात्रों और थोड़े से समय के भीतर कार्य करने के लिए विवश नाटककार को should sympathise profoundly with all of his characters. However whether it is possible to make completely real a wholly villaneous character... We need an ad mixture of weakness with either heroic virtue or satanic villainy, to make character plausible...It seems to me that what happens, when an author creates a vital character, is a sort of give and take. Some bit of himself that the author gives to a character may be the germ from which the life of the character starts. On the other hand a character which succeeds in interesting its author may elicit from the author latent potentialities of his own being. I believe that author imparts something of himself to his characters, but I also believe that he is influenced by the characters he creats.

तीसरी आवाज़, काव्य नाटक की आवाज़, का यदि non-dramatic poetry which has a dramatic element in it के साथ तुलना की जाय तो बात और स्पष्ट हो जाती है। ब्राउनिंग के dramatic monologue की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए

भी इलियट का कहना है कि उसकी नाटकीय उपलब्धियाँ न्यून हैं अतः दोनों प्रकार की आवाजें स्पष्ट रूप से अलग हैं।

ऊपर कहा जा चुका है कि नाटककार को परस्पर विरोधी पात्रों के प्रति भी पूरी तरह सहानुभूति रखनी होती है और उसे काव्य का allocation उन काल्पनिक पात्रों की सीमाओं के मध्य करना होता है। This necessity to divide the poetry implies some variations of style of the poetry according to the character to whom it is given. यह तथ्य कि हर पात्र अपने लिए काव्य चाहता है लेखक को विवश करता है कि अपना काव्य उन पर लादने की अपेक्षा उनसे ही poetry extract करे। Dramatic Monologue में ऐसी कोई बात नहीं होती। वहाँ दोनों एक-दूसरे से identify कर सकते हैं। वहाँ पर स्वयं लेखक ही किसी पात्र का नकाब ओढ़े रहता है।

(Dramatic monologue can not create a character.) In the dramatic monologue, then, it is surely the second voice, the voice, of the poet talking to other people, that is dominant.

The second, voice is, in fact, the voice most often and most clearly heard in poetry that is not of the theatre : In all poetry, certainly that has a social conscious purpose. The voice of the poet addressing other people is the dominant voice of epic, though not the only voice. कभी-कभी Dramatic voice भी महाकाव्यों में सुनायी पड़ती है। But the epic is essentially a tale told to an audience, while drama is essentially an action exhibited to an audience.

What about the poetry of the first voice– I must make the point that this poetry is not necessarily what we call loosely 'lyric poetry'. The term lyric itself is unsatisfactory. उसका संगीत से कोई खास सम्बन्ध नहीं रहा। तथा संक्षिप्तता poet's own thoughts and sentiments भी कोइ खास criteria नहीं है।

Gottfried Benn a german poet in a very interesting lecture entitled 'problem of the lyric' thinks of lyric as the poetry of the first voice. Where he speaks of lyric poetry then I should prefer to say 'meditative verse'.

"What asks Herr Benn in this lecture, does the writer of such a poem. 'addressed to no one' start with? There is first, he says, an inert embryo or 'Creative Germ' and, on the other hand, the language, the resources of the words at the poet's command. He has something germinating in him for which he must find words; but he can not know what words he wants until he has found the words; he can not identify this embryo until it has been transformed into an arrangement of the right words in right order. When you have the words for it, the 'thing' for which the words had to be found has disappeared, replaced by a poem, what you start from is

nothing so definite as an emotion in any ordinary sense; it is still more certainly not an idea..."

In a poem which is neither didactic nor narrative, and not animated by any other social purpose, the poet may be concerned solely with expressing in verse—using all his resources of words with their history, their connotations, their music—this 'obscure impulse'.

इस स्टेज पर वह (कवि) अन्य व्यक्तियों से सम्बन्धित न होकर केवल उपयुक्त या कम से कम भ्रामक शब्द के लिए प्रयास करता है। एक प्रकार से he is going to all that trouble, not in order to communicate with anyone, but to gain relief from acute discomfort; and when the words are finally arranged in the right way—or in what he comes to accept as the best arrangement he can find—he may experience a moment of exhaustion, of appeasement, of absolution, and of something very near annihilation which is in itself indescribable.

परन्तु किसी कविता की व्याख्या के लिए उसके मूल की ओर जाने से उस कविता के वास्तविक गन्तव्यों से हट जाना होगा।

कवि का पहला प्रयास स्पष्टता की प्राप्ति स्वयं अपने लिए होना चाहिए, अपने को यह आश्वस्त करने के लिए कि कविता right outcome of the process that has taken place है। The most bungling form of obscurity is that of the poet who has not been able to express himself; the shoddiest form is found when the poet is trying to persuade himself that he has something to say when, when he has not.

(बेन शायद इन voices को अलग-अलग देखता है। पर इलियट को बहुधा एक साथ प्राप्त होती हैं— Non- dramatic poetry में पहली और दूसरी तथा Dramatic Poetry में तीसरी के साथ पहली-दूसरी भी।)

यद्यपि लिखते समय कवि का ध्यान एक audience की ओर न रहा होगा, पर बाद को वह अवश्य उनकी प्रतिक्रियाएँ जानना चाहेगा। The final handing over, so to speak, of the poem to an unknown audience, for what that audience will make of it, seems to me the consummation of the process begun in solitude and without thought of the audience, the long process of the gestation of the poem, because it marks the final separation of the poem from the author. Let the author, at this point, rest in peace.

I think that in every poem, from the private meditation to the epic or drama, there is more than one voice, to be heard. If the author never spoke to himself, the result would not be poetry, though it might be magnificant rhetoric, and part of our enjoyment of overhearing words which are not addressed to us. But if the poem were exclusively for the author, it would

be a poem in a private and unknown language, and it will not be a poem at all. Poetic drama में तीनों आवाजें श्रुतिगम्य हैं। एक आवाज़ केवल चरित्र की, दूसरी लेखक और चरित्र के मध्य तीसरी एकदम अवैयक्तिक जो न चरित्र की है न लेखक की।

तीनों प्रकार की कविताओं जिनसे कि तीन प्रकार की आवाजें correspond करती हैं, उनकी प्रक्रियाएँ कुछ भिन्न होती हैं। पहली आवाज वाली रचनाओं में the 'psychic material', tends to create its own form—the eventual form will be to a greater or less degree the form for that one poem and for no other. Simultaneous development of form and material; for the form affects the material at every stage तथा material हर unsuccessful attempt के मुख पर यह कहता है "Not that, not that." But I've the poetry of II and III voice, the form is already to some extent given. It is likely, of course, that it is in the beginning the pressure of some rude unknown psychic material that directs the poet to tell that particular story to develop that particular situation. And on the other hand, the frame, once chosen, within which the author has elected to work, may itself evoke other psychic material; and then lines of poetry may come into being, not from the original impulse, but from a secondary stimulation of the unconscious mind परन्तु अन्त में आवाज़ों की Harmony होनी चाहिए।

बुधवार, 27 जुलाई, 1955

एक अस्पष्ट प्रतीत हो रही कविता में पाठक को यह याद रखना चाहिए कि वह जो कुछ प्रयास कर रहा था सम्भवतः उन शब्दों में उस वस्तु को रख रहा था जो अन्य किसी रूप में अट नहीं पा रहा। तथा rhetrical कवि की कविता में उन क्षणों को ढूँढ़िये जब वह पाठक को address न करके merely allowing himself to be overheard तथा verse play में पहले तो उसके entertainment (face value) को लीजिए, चरित्रों को जो वास्तविकता लेखक ने दी है, उन्हें देखें और फिर यदि महान नाटक है तो अन्य आवाज़ों को सुनने का भी प्रयास होना चाहिए।

The world of a great poetic dramatist is a world in which the creation is every where present, and every where hidden.

T.S. Eliot

Obscurity in Poetry

Herbert Read

One of the greatest pleasures of a literary life, to which a reader may be driven by a too close familarity with the poetry of his own language,

and equally by an increasing awareness of the narrow range of creative expression in general, is the exploration of the poetry of another language. This pleasure seems to me to increase with the nearness of a language its contemporaneity and its consanguinity.

No one whose blood is not coeval and congenital with the language he uses ever attains the last perfection of poetic expression.

I experience the poetry as a direct impact; a sensation of sound allied to expressive epithet and metaphor and in some cases there is visual perception, rather an intuition of presence.

Actually I believe the sensation has to do with the immediate obscurity of the verse.

(ऐसा लगता है कि रीड दुरूहता के उस आनन्द की ओर संकेत करते हैं जब व्यक्ति दुरूहता को भेद कर revelation का shock महसूस करता है) अस्पष्टता की एक Positive value अतः होती है जिसे कि उनके विरोध में स्वीकार किया जाना चाहिए जो काव्य को एकदम खुला और प्रत्यक्ष मानते हैं।

रीड के अनुसार The Poetry remains in the obscurity—is, in some way, the obscurity itself. उसके अनुसार Ambiguity और obscurity—में अन्तर करना चाहिए। प्रथम सदैव ग्रेमेटिकल होती है और दूसरी Imaginative—it arises before the logical, and therefore grammatical, stage of expression.

(Imagination is a substitute of knowledge)

Poetic logic is the elaboration of a myth. Out of this poetic logic, as a necessary result, came the metaphor. It originated in mythology which endowed in animate things with human sentiments and passions. It is a fable summarized in a phrase, and it still retains all the irrationality of its origins, (जैसे कि किसी opening को मुख कहा जाता है, वायु को whistles, पर्वत को गोद) Many other 'figures of speech', have a similar pre-logical origin, but so much is obvious.

According to Italian Philospher Vico– श्रेष्ठ काव्य की तीन अनिवार्यताएँ हैं–उदात्तता, जनप्रियता तथा वह भावात्मक शक्ति (emotional power) जो काव्यात्मक प्रभाव देती है। काव्य का very character ही है to render the impossible credible.

(असम्भव को विश्वसनीय बना दे) इस काव्य दर्शन से वह काव्य-तर्क की ओर बढ़ता है।

(ऊपर रूपक वाला अंश देखें।)

We might say of Coleridge's poetry in general, that its poetic worth

is in inverse ratio to its logical sense, reaching its greatest intensity in the incoherent imagery of 'Kublakhan'.

अपने कार्य की व्यवस्था, पुनर्व्यवस्था तथा चयन, जो कि एक बौद्धिक स्तर पर होता है, अतिरिक्त कलाकार अपने को इस बिन्दु के beyond प्रक्षेपित करता है और वहाँ वह अन्तिम निर्देश या प्रेरणा चाहता है। यह बिन्दु एक emotional complex होता है, which intelligence can help to resolve in musical (or poetical) terms, but which in itself is more than music and more than intelligence.

सर्जना के इस ढंग से रोमाण्टिक ढंग वैलरी के अनुसार जुदा है। Romanticism is afraid of ideas, of the process of thought involved in this mode of creation, and relies for its effect on descriptive epithets, contrasts of detail. Jewelled words (यहाँ पर छायावाद और प्रयोगवाद के अन्तर को समझाया जा सकता है)।

पाल वैलरी ने भी कविता की शक्ति को एकदम आदिम ढंग पर देखा है, बिल्कुल magical फार्मूले को अप्लाई किया है।

कवि अपने लक्ष्यवेध के लिए परम्परा से प्राप्त भाषा आदि को अपने ढंग से मोड़ लेता है, उसमें नये शब्दों और मुहावरों का आविष्कार कर लेता है। He refuses the immediate solution suggested to him on every side. And this is no more than defending himself, precisely in the details and elementary functioning of mental life, against automatism.

We see therefore that मूलतः अस्पष्टता कवि में नहीं हममें होती है। हम स्पष्ट और लाजिकल इसलिए हैं क्योंकि superficial and inexact हैं जबकि कवि, more exactingly, seeks absolute precision of language and thóught, and the exigencies of this precision demand that he should exceed the limits of customanry expression and therefore <u>invent</u>, words, phrases, figures of speech and above all <u>Metaphor</u>. We should always be prepared to judge a poet, to the exclusion of all other qualities, by the force and originality of his metaphors.

रूपक को दो वस्तुओं का चमकदार correspondence कहा जा सकता है। पर यह भी सही नहीं है नये कवि ने रूपक को पार कर, Image जैसी चीज एक नयी, Figure of speech को प्राप्त कर लिया है।

"No Image is produced by comparing two disproportionate realities".
Pierre Reverdy

रूपक में एक ज्ञात वस्तु की दूसरी ज्ञात वस्तु से तुलना होती है जबकि इमेज discovers one thing with the help of another, and by their resemblance makes the unknown known.

There is a fundamental obscurity in the actual thought process involved—an obscurity due to the honesty and objectivity of the poet. He works outwards from an emotional unity. In order to remain faithful to inner language form, the poet must invent words and create images, he must mishandle and stretch the meaning of words. The emotional unity of the poem is given the correspondence in words must be created; and that is why poet is called a Creator.

अतः काव्य का अर्थ पूछना गलत दरवाज़ा खटखटाना है, उसे reasoning द्वारा नहीं नापा जा सकता, कविता बिना प्रश्न के प्रत्यक्षतः ली जानी चाहिए तथा प्रिय होनी चाहिए या घृणा की जानी चाहिए। It is impervious to reason, (यहाँ पर तर्क के कारण गूढ़ता आयी इस थ्योरी में) and if it has no discoverable meaning, it has immeasurable power. कवि ने अपने संवेदनात्मक अनुभवों, समानार्थी शब्दों में अभिव्यक्त कर दिया वे शब्द सेन्स न बना सकें भले, पर emotion पैदा कर सकते हैं and reproduce the minds internal echo of the imperfect sound.

Lyric meant originally poem a short enough to set to music and sing for a moment's pleasure. From the poets point of view we might define the lyric as a poem which embodies a single or simple emotional attitude, a poem which expresses directly an uninterrupted mood or inspiration.

शुक्रवार, 5 अगस्त, 1955

प्रसाद, पन्त या रवीन्द्र की अलंकृत भाषा को हम पसन्द करते हैं पर आज यदि कोई वैसी भाषा लिखे वैसे भावों को अभिव्यक्त करे तो हम उसे नापसन्द करते हैं। ऐसा आखिर क्यों?

सम्भवतः अनजाने ही प्रबुद्ध व्यक्ति के चेतन में एक प्रकार का historical और social perspective उसके मन में विद्यमान रहता है जो उसके रसबोध कों प्रभावित करता है।

यह इससे भी सिद्ध है कि जो प्रबुद्ध नहीं हैं और इस चेतना से रहित हैं, वे लोग पुराने ढंग की ही अभिव्यक्ति करते हैं और वही appriciate भी करते हैं।

मंगलवार, 9 अगस्त, 1955

Imagery के लिए 142 पृ. चिन्तामणि में शुक्ल जी का कथन। 144 पृ. पर दूसरा Paragraph और मनोहर श्याम जोशी की कविता। पृ. 156-157 में शुक्ल जी नये ज्ञान विज्ञानों के perspective में काव्य का क्षेत्र बढ़ाने का विचार करते हैं।

बृहस्पतिवार, 11 अगस्त, 1955

कवि सम्मेलन हो रहा है। लोग loudspeaker पर दो शब्द कहने के लिए आतुर हैं। कविगण धराऊ कपड़े धारण कर जहाँ शान से आते हैं और आयोजकों की बात का पहले झटके में उत्तर देना अपमान समझते हैं। मुझसे सभापतित्व करने का आग्रह था, पर मैं देर से जाकर सबसे पीछे बैठा। संयोजक ने कहा कि हमारे मनोनीत सभापति प्रोफेसर देवीशंकर नहीं आये अतः मैं श्री..... का नाम प्रस्तावित करता हूँ। और फिर कितने ही उदीयमान जाज्वल्यमान, गण्यमान तथा श्रीमान कवियों का कविता पाठ सुना नहीं बल्कि कानों में उँड़ेला।

संयोजक प्रत्येक कविता का आशय भी समझा देते हैं। हिन्दी कविता का सही गतिरोध इन कवि सम्मेलनों में ही देखने को आता है।

रविवार, 21 अगस्त, 1955

राधाकृष्ण अवस्थी unnecessarily superioty complex से पीड़ित हो रहे हैं। उनका सबसे बड़ा दोष यह कि वे प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिद्वन्द्विता में अपने को खड़ा कर लेते हैं। मसलन डॉ. शुक्ल तथा नरेशचन्द्र के।

उनका यह कहना कि मुझे प्रत्येक स्थान पर support करो, निहायत गलत है। इसके मानी हैं कि मैं अपनी personality को supress करूँ और उन्हें नेता मानूँ। न—यह असम्भव है। मुझे चिन्ता है कि राधाकृष्ण इन बातों में पड़कर कहीं अपना भविष्य तथा कैरियर लूज़ न कर दें। He wants to rise at other's costs. फिर उनके मन में वस्तुओं की यथार्थता के प्रति बड़ा भ्रम भी है। साहित्य को वे हलुए के कौर जैसा आसान समझते हैं। बिना किसी साधना के, धैर्य के कहीं भी Laurels हासिल करना जरा कठिन होता है।

राधाकृष्ण मुझे बुरा न मानो की धमकी देते हैं और यह बुरा क्या होगा, यह आज मैं लिखे देता हूँ कि डॉ. राजबली पाण्डेय वाले व्याख्यान में मेरा नाम निमन्त्रण पत्र पर न होगा, विद्यापीठ की कार्यकारिणी में न होगा। पर वे यह क्यों नहीं समझते कि मेरी adolescent अवस्था नहीं है (शायद उनकी हो)। इन बातों को मैं अत्यन्त क्षुद्र गिनता हूँ तथा किसी स्थान पर सम्पादकीय में नाम आ जाय, मुझे न बढ़ा सकेगा। देखा जायगा।

बृहस्पतिवार, 1 सितम्बर, 1955

Marxism and Poetry

P. Thomson

मनुष्य दो उपकरणों के कारण पशु से आगे है—Tool (माध्यम, यन्त्र and speech

हाथ) उसके साधन हैं। इन दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। हाथ और मस्तिष्क close coordination of sight and touch, binocular vision and muscular control.

वह अपने Tools का प्रयोग प्रकृति को अपने कब्जे में लाने के लिए करने लगा। तब उसने Objective necessity natural laws को महसूस किया और उन्हें अपने अनुसार बदलने का प्रयत्न करने लगा। जहाँ वह इसमें सफल नहीं हुआ, वहाँ वह जादू का प्रयोग करने लगा। वास्तव में जादू (Magic may be described as an illusory technique supplementing the deficiencies of real technique; or more exactly it is the real technique in its subjective aspect).

सभ्यता की प्रारम्भिक स्थिति में उत्पादन का स्वरूप सामूहिक था। इसके फलस्वरूप एक प्रकार के सम्प्रेषण (Communication) के साधन की आवश्यकता पड़ी। In Inventing tools man invented speech.

कार्य के साथ एक प्रकार से स्वर का सहयोग भी बना रहा।

मानवीय skill के विकास के साथ यह स्वर सहकार आवश्यक न रहा, पर उस सामूहिक रूप के अवशेष एक प्रकार के कार्य के प्रारम्भ में होने वाले Mimetic Dances में अवशिष्ट रहा।

Meanwhile speech developed. Starting as a directive accompaniment to the use of tools, it became language as we understand it. So we find in all languages modes of speech-common speech and poetic speech.

अगर यह account सही है तो इसके अर्थ हुए कि काव्य भाषा साधारण भाषा की अपेक्षा अधिक Primitive है। क्योंकि यह अधिक अंशों में लय, नाद, कल्पना को अपने आन्तरिक रूप में सँजोए है। यह इस बात से भी सिद्ध होता है कि आदिम भाषाओं से आज भी दोनों प्रकार की भाषाओं में अत्यधिक न्यून अन्तर है।

वास्तविक टेकनीक को जो जादू काल्पनिक टेकनीक द्वारा Suppliment करता है वह एक प्रकार से to impose illusion of reality. परन्तु इसका एक दूसरा प्रभाव भी है। मान लीजिए कि खेती को हवा से बचाने के लिए लड़कियाँ Dance करती हैं तो इससे आँधी तो न रुकेगी पर लड़कियों को अधिक बल प्राप्त होगा। उस नृत्य से यह प्रेरित होकर कि फसल बच जावेगी वे अधिक आशा, विश्वास और शक्ति के साथ काम में लगेंगी जिसका कि अनिवार्य फल अच्छा उत्पादन होगा। इस प्रकार, It changes their subjective attitude to reality and so indirectly it changes reality.

Poetry has grown out of magic.

Why do poets crave for impossible? Because that is the essential function of poetry, which it has derived from magic. The poet's function is to stimulate in his fellow-men the desire for that which is realisable but as yet unrealised. That is 'Idealisation of reality'

Belinsky

"Our art must rise above reality and raise man above it without detaching him from it."

M. Gorky

Rhythm may be defined in its broadest sense as a series of sounds arranged in regular sequences of pitch and time. उसका ultimate origin शारीरिक है, शायद हृदय की धड़कन से सम्बन्धित है। पर यह तो पशुओं में भी होती है। In man rhythm has been humanised, that is it has developed. A social function to organise men's wills for some concerted action or later to organise their emotions so as to draw them closer together in a union of mutual sympathy. It is not hard to see that this humanised rhythm orginated from the use of tools.

जाँत के गीत, धान लगवाई के गीत, चर्खे के गीतों आदि का कार्य है–to expedite the labour of production by imparting to it a rhythmical hypnotic character.

Best of Rhythm is rooted in the primitive labour process.

The three arts of dancing, music, and poetry began as one. Their source was the rhythmical movement of human bodies engaged in collective labour. This movement had two components-corporal and oral. पहले से नृत्य दूसरे से भाषा का उदय हुआ। starting from inarticulate cries designed to mark the rhythm, language was differentiated into poetical speech and common speech. Discarded by the voice and reproduced by the percussion with the tools, the inarticulate cries became the nucleus of instrumental music. (अस्पष्ट)

नृत्य के elimination के साथ काव्य का पहला चरण होता है। यह हमें गान देता है। गान (song) में कविता संगीत का content है और संगीत कविता का form. बाद को ये दोनों भी पृथक हो गये। कविता का फार्म इसका लयात्मक आकार है। यह उसने song से लिया है पर इतना simplified कर दिया कि उसके logical content पर अधिक concentration रहे। Poetry tells a story, which has an internal coherence of its own, in dependent of its rhythmical form और बाद में कविता से Prose Romance या उपन्यास का उद्भव हुआ जिसमें कि Poetic diction के स्थान पर कामन स्पीच आ गयी; and rhythmical integument has been shed - except in so for as the story is cast in balanced harmonious form.

इसी बीच एक प्रकार के संगीत का वर्धन हुआ जो विशुद्ध रूप से instrumental है। यदि उपन्यास में speech without rhythm है तो इस संगीत में rhythm without

speech है। इसके माने यह नहीं कि एक में symphony नहीं और एक में Content नहीं। उपन्यास में symphony घटनाओं के लयात्मक परिचालन (Movement) के sequence में है और संगीत में content उन melodies के द्वारा है जो वह जनप्रिय गानों एवं नृत्यों से लेता है और वहाँ तक यह speech से सम्बन्धित भी रहता है।

शुक्रवार, 2 सितम्बर, 1955

II class में लखनऊ आ रहा था। 12 सीटर में 12 ही थे। मैं तेरहवाँ था। पर सब आँखें फाड़ कर देखने लगे। जैसे कि मैं अनधिकृत रूप से उनके स्थानों पर कब्जा करना चाहता हूँ। सेकण्ड की इस Aristocracy में कितना खोखला दम्भ और मैं जानता हूँ कि इनमें से अधिकांश अपने पैसे का उपयोग करते नहीं हैं। पर मेरा अन्तर्मन इस सबसे विद्रोह करता है। पर सब क्यों? हर एक अपने अख़बार में गड़े बैठा है। इसमें दम्भ के अतिरिक्त परम्परागत सभ्यता का प्रभाव भी है।

बुधवार, 7 सितम्बर, 1955

Improvisation and Inspiration.

Our poetry is a written art, more difficult than common speech, demanding of conscious deliberation.

Improvised poetry lacks the stamp of an individual personality क्योंकि यह एक व्यक्ति नहीं पूरी कम्युनिटी की उपज है। शिष्ट काव्य एक ऊँची individualised society का कार्य है।

पर कविता का कार्य आज भी है नित्य (Perpetual) संसार से चेतना को Fantasy कल्पना के लोक में ले जाना। यह कल्पना का संसार वास्तविक संसार से पृथक् नहीं है केवल उसकी आकस्मिकताओं और अनावश्यकताओं से रहित होता है।

"The purpose of rhythm is to prolong the moment of contemplation, the moment when we are both asleep and awake, by hushing up with an alluring sense of monotony, while it holds us waking by variety, to keep us in that state of trance, in which the mind, liberated from the pressure of the will, is unfolded in symbols."

Yeats

The language of poetry, being rhythmical is hypnotic. Inspired का अर्थ है–

And when man in his agony is dumb I have God's gift to utter what I suffer.

Goethe

शुक्रवार, 9 सितम्बर, 1955

The conflict between society and nature

The basis of magic - is over laid by a conflict between the individual and society—the basis of poetry.

आदिम कवि लिखता नहीं था recite करता था। वह compose नहीं improvise करता था। उसके लिए श्रोता आवश्यक थे और वे श्रोता भी तत्काल response करते थे। फौरन उस illusion में मग्न हो जाते थे। आज जब हम कविता पढ़ते या सुनते हैं तो deeply move हो सकते हैं पर शायद ही कभी उसके साथ बहाये जा सकें।

हिस्टीरिया आदि को आदिम काल में किसी आत्म या देवता का आवेश माना जाता था। उसके ऊपर कोई गान गाया जाता था। यहाँ पर कविता जादू टोने के स्तर पर है अथवा यों कहें तो Therapeutic magic से कविता उद्‌भूत हो रही है फिर उसके बाद की अवस्था prophecy की होती है जब उस आविष्ट आत्मा से नाम कबूलवाया जाता है, उससे गाने के लिए कहा जाता है। और यह आविष्ट आत्मा भय, आशा या भविष्य के anticipations करती है। और अन्ततः Prophet becomes a poet, poet को भी बेलिंस्की के शब्दों में, कवि को समाज के आध्यात्मिक और आदर्शात्मक जीवन का प्रतिनिधि होना चाहिए। जैसे Prophets predictions command general acceptance, so the poet's utterance stirs all hearts.

शनिवार, 10 सितम्बर, 1955

Epic

आज सभ्यता का निहित अर्थ है कि एक निष्क्रिय वर्ग दूसरों के परिश्रम का लाभ उठाता रहे–सभ्यता ने उत्पत्ति के साधनों में इतना विकास कर लिया है कि शासक वर्ग के मध्य–जिसके कि पास अवकाश है–जादू (magic) तत्कालीन (immediate) आवश्यकताओं में apply नहीं की जा सकती। यह एक ओर विज्ञान का और दूसरी ओर कला का रूप धारण कर लेती है। Science springs from its objectives aspect– the outward struggle against nature; art springs from its subjective aspect– the inner psychical struggle.

रविवार, 11 सितम्बर, 1955

The epics had once been songs.

The evolution of minstreis (गवैया-वर्ग) is now clear. It began with the

primitive combination of leader and chorus, solo and refrain. The leader and solo developed, the chorus and refrain dies away. Then the soloist discarded his instrument and the song became a poem. That is how epic came into being.

The disinctive beauty of epic diction, as compared with written poetry is its fluency and freshness. That is the virtue of improvisation.

महाकाव्य का जो प्राचीन रूप था उसमें ओरल extempore वाचन होता था। कुछ set, दृश्य और उनके वर्णन जैसे जन्म, शैशव, पालन, लड़ाई के पूर्व की तैयारियाँ, वाद-विवाद, लड़ाई के दृश्य, प्रेयसी या वधू की शोभा, घोड़ों आदि के वर्णन, हथियारों की सज्जा आदि घूम फिर कर जोड़े जाते थे और इस प्रकार महीनों improvisation के द्वारा यह वीरगीत चलते थे। इन्हीं के individualised रूप से महाकाव्यों का जन्म हुआ। यह परम्परा श्रुति से—बाप-बेटे की परम्परा द्वारा चलती थी। इनका प्राचीन ग्रीस में एक Clan था, जिसे homerdai (sons of Homer) कहते थे। इलियड और ओडेसी 6th century B.C. में लिपि में सुरक्षित किये गये, वरना पहले वे मौखिक रूप में ही चलते रहे। इनमें सब बातें रहते हुए भी घटनाओं आदि के sequences में परिवर्तन गायक कर देते थे। पर इन्हें व्यवस्थित रूप में नोट करना काफ़ी कठिन कार्य रहा होगा। क्योंकि Improvised होने के कारण जो गति extempore में होगी वह यों नहीं।

मंगलवार, 13 सितम्बर, 1955

The Illiad and Odyssey are made of the same stuff as primitive epics, and made in the same way, but in them the qualities inherent in improvised verse were nursed upto the point at which without losing any of their spontaneity they blossomed into art.

The Evolution of Drama

Drama invloves action, impersonation. It is inherently mimetic. It is more primitive than epic in greece. As an art form it belongs to a later phase of society. वास्तविक कार्यारम्भ के पूर्व, आदिम काल में, नृत्य एक प्रकार का रिहर्सल था। इस स्थल पर विश्वास करो (Make-believe) और यथार्थ में सीधा-सादा सम्बन्ध था। पर ज्यों-ज्यों टैकनीक विकसित हुई रिहर्सल superfluous हो गया। और श्रम की प्रक्रिया से नृत्य का सम्बन्ध हटने लगा। मैजिक स्वयं स्पेशलाइज्ड होने लगा और नृत्य आदि इन स्पेशलाइज्ड मैजिशियन्स या पुरोहितों के निरीक्षण में जन साधारण के हित के लिए आवश्यक माना जाने लगा पर इसका उत्पादन के श्रम से सम्बन्ध टूट गया और रिहर्सल के स्थान पर संस्कार (Rite) हो गया।

Epic was inspired by warfare. The impetus of drama came from the development of agriculture.

युद्ध पुरुषों का क्षेत्र था कृषि स्त्रियों का। कृषि, शिकार, फल चयन, पशुपालन आदि की अपेक्षा अधिक जटिल है। अतः उसके लिए नये magical rites की आवश्यकता पड़ी। यदि इसका social context में अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होगा कि crops blessed or belighted by goddesses of childbirth.

Mimic dances का विकास Priest-poet-actor इस क्रम में होता है।

The priest had been possessed, the inspired and down to the last days of greek drama a certain sanctity attached to members of the acting profession. Their sanctity flowed from their origin. क्योंकि वे एक जमाने में जो ईश्वर की आवाज़ थी उसको अभिव्यक्त करने के माध्यम हैं।

आधुनिक बूर्जुआई के उदय के साथ ट्रेजेडी नाटक का उदय होता है—पहले एथेन्स में फिर पश्चिमी यूरोप में।

Under the landed aristocracy social relations had been simple, direct and definite. उनका शोषण Concrete shape में श्रम या kind के रूप में होता था। एक दूसरे से भली प्रकार परिचित रहते थे। all this destroyed by money.

यदि अथीनियन प्रजातन्त्र धन के द्वारा निर्मित हुआ तो उसका विनाश भी धन के कारण ही हुआ। Athens became an aggressive power, attempting to preserve her democracy by the negation of democracy, until eventually destroyed, Such was the destructive contradiction that troubled the minds of throughtful men consciously and unconsciously.

प्राचीन ग्रीक ट्रेजेडीकारों ने स्पष्ट कहा कि ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसे धन न खरीद सके या ऐसा कुछ नहीं है जिसे धन के सहारे मनुष्य बना न सके। और उसके अनिष्टकारी प्रभाव को देखकर यूरीपाइडीज़ ने उसे denounce भी किया।

'All the foul growths current in the world. The worst is money.'

लोगों ने देखा कि जिस माध्यम को उन्होंने अपनी सुविधा के लिए आविष्कृत किया वही उनका स्वामी बन बैठा। और चूँकि वे उसका नियमन नहीं कर सकते थे या समझने में असमर्थ थे उसे एक सार्वभौम कानून की तरह Idealise कर दिया। इसका एक स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक कार्य या वस्तु के अतिवाद से बचने का विचार आया। Plato ने कहा कि In the seasons of the year, in the life of plants, in the human body, and above all in civil society, excessive action results in a violent transformation into its opposite.

And Aristotle defines tragedy as a representative of an action involving a reversal of fortune brought about by some error on the part of the protagonist. This reversal of fortune is or tends to be catastrophic.

The Future

Under capitalism the social status of the poet has changed. With the industrial revolution poetry became commodity, the poet a producer for the open market, and with a decreasing demand for his wares. During the past half century पूँजीवाद has ceased to be a progressive force. और न बूर्जुवा एक प्रगतिशील वर्ग रह गया है। अतः बूर्जुआई संस्कृति including कविता अपनी शक्ति (Vitality) lose कर रही है। हमारी समकालीन कविता शासकवर्ग की नहीं बल्कि community के एक छोटे से isolated section, मध्यवर्गीय प्रबुद्ध लोगों की उपज है। ये लोग शासकवर्ग द्वारा उन्मूलित और उपेक्षित हैं परन्तु अब भी प्रालेतैरियत मासेज़ के साथ हाथ मिलाने में हिचक रहे हैं जबकि यह जनता ही पूँजीवाद के एकाधिपत्य के चक्र को तोड़ सकती है। और अतः बूर्जुआई कविता ने has lost touch with underlying force of social change. Its range has contracted the range of its content and the range of its appeal. जब तक कवि अपने को reorientate नहीं करेगा उसकी कोई सुनने वाला नहीं रहेगा।

All poetry is in origin social act, in which poet and people commune. Our poetry has individualised to such a degree that it has lost touch with its source of life.

Homer stood near the begining of class society, we stand near the end.

You can not raise the cultural standards of people without raising their economic standards.

सोमवार, 19 सितम्बर, 1955

Central Asia के कज़ाक, किरगीज़ 1917 के पहले तक बहुत कुछ आदिम अवस्था में थे परन्तु 25-30 वर्षों के भीतर ही वे आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से they have ceased to be primitive. ऐसा ही इंग्लैण्ड वगैरह में हुआ, परन्तु कम्युनिस्ट क्रान्ति के बाद इस आदिम सभ्यता की शक्ति एक नयी ज़िन्दगी जो अधिक शक्तिवान और सम्पन्न है उसमें फूट रही है। The potentialities of this cultural renaissance are incalculable and they will have repercussions all over the world. जबकि इंग्लैण्ड वगैरह में ऐसा नहीं हो सका।

(भारत की सम्भावना भी Russia जैसी ही है।)

समाजवादी व्यवस्था में कवि का status वैसा ही सम्मानित बना रहता है जैसा कि primitive सभ्यता में Tribe के भीतर उसका रहता है। कज़ाक का उदाहरण द्रष्टव्य है।

उन लोगों ने दो विकास किये हैं—The absorption of bourgeois European

culture and the revival of primitive Asiatic culture– are momentuous in themselves.

These new songs (समाजवादी व्यवस्था के बाद आने वाले) of the liberated peoples of the earth will be national in form, socialist in content. This change of content is so profound that the poetry it produces will be a new kind of poetry. Just as the civilised poet differs from the prophet or magician in being conscious of his illusion as an illusion, so the socialist poet differs from the poet of class society in his understanding of the social process from which inspiration springs.

यहाँ यह कहा जा सकता है कि जहाँ पर primitive sort of poetry already extinct है वहाँ revival क्या होगा। Thomson उत्तर देते हैं कि राष्ट्रीय परम्पराओं का विकास बड़ा गहरा होता है, वे नीचे चली जाती हैं पर नष्ट नहीं होतीं।

रविवार, 25 सितम्बर, 1955

Literature for an age of science.

Levy & Spalding

The Matrix of society

हम आत्म-सचेत (self-conscious) युग में रहते हैं। हम अपने बारे में इतने सजग (aware) हैं कि हम अपने को पूर्ण और स्वतन्त्र समझने लगते हैं।

we have a great deal more in common with our neighbours than most people would care to admit और यह हमारी शारीरिक या दैनिक दिनचर्या को लेकर ही सच नहीं है बल्कि हमारी आन्तरिक subjective जिन्दगी के बारे में भी सही है।

It is true even of our values, and this fact is reflected in the multitude of social conventions we automatically accept. Every society from the earliest, most primitive civilisations until the present day, has always created a world picture out of the pattern of ideas, images and emotions that were forced on it, its own view of the what rational was like, its own system of relative values that reflected the needs and desires of that society, and gave point to the struggle to maintain itself permanent and everlasting. This craving for survival, for permanence and final security is again reflected in the insistence on the values and the social structure itself as being absolute and everlasting at each social stage. Each phase is regarded as the ultimate to be held fast and unchanging at all costs, and is associated with a world picture built around, values whose permanence is regarded as resting on something outside the society, on supernatural authority.

एक बार यह world picture स्थापित हो जाने के बाद पूरी तरह नष्ट नहीं की जा सकती, यद्यपि इसे drastically transform किया जा सकता है।

19वीं शताब्दी जिसमें कि व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को प्रधानता प्राप्त हुई, तब से सामाजिक संगठन में मौलिक (fundamental) परिवर्तन हो गये हैं और परिणामतः world picture में भी। परन्तु अब भी व्यक्तिवाद बना हुआ है। शुरुआत में बनी सामाजिक संस्थाओं में यह persist कर रहा है और जीवन के नये स्तर और तदनुसारी (corresponding) जगत चित्र के अनुरूप अपने को टाल नहीं पा रहा है।

दो कारणों से यह बिल्कुल अप्रत्याशित नहीं है– प्रथमतः यह अर्धशती संक्रान्ति काल (persistent social crisis) का समय रहा है और एक नये स्तर की तब तक आशा नहीं की जा सकती जब तक कि यह crisis एक नये सामाजिक संघटन (social integration) में परिणत न हो जाय। दूसरे यह परिवर्तन वर्तमान जनसंख्या के एक बड़े भाग की जिन्दगी में हो रहे हैं जो कि इन परिवर्तनों के लिए शीघ्रता करने के लिये बाध्य किये जा रहे हैं; पहले की पीढ़ियों में यह शीघ्रता न थी।

"Moreover while basic conflicts remain unresolved, it is inevitable that many will see them as accidents of history rather than milestones in its development; as destructive of a previous way of life rather than as constructive of a future that is growing out of the present. They thus unconsciously or consciously refuse to accept facts as they are, and to readjust their world-picture accordingly.

इस प्रकार जब हम अपने विचार, भावनाएँ और अनुभूतियाँ अभिव्यक्त करते हैं उस समय हम ideas, feelings, assumptions को अभिव्यक्त करते हैं। That are engrained in the past and present history of the society in which we have been cradled.

बृस्पतिवार, 29 सितम्बर, 1955

मनुष्य ब्रह्माण्ड का छोटा और नगण्य जीव है पर धीरे-धीरे उसके ज्ञान क्षेत्र का विस्तार हो रहा है।

Aspects of life and of the world around, of which he was previously unaware, have then not be fitted into a wider and more embracing pattern of understanding, मनुष्य ज्यों-ज्यों संसार को बदलता है त्यों-त्यों स्वयं अपने को बदलता है जिससे कि he mounts unevenly from one level of awareness to another.

यद्यपि मनुष्य और उसके वातावरण के ये परिवर्तन एक ही process हैं फिर भी मनुष्य में जो परिवर्तन होते हैं वे भौतिक वातावरण से गुणात्मक रूप में कुछ भिन्न होते हैं। प्रबुद्ध मनुष्य सोचता है, अनुभव करता है, निर्णय करता है, मूल्य आँकता

है, भूत की समीक्षा और भविष्य के दर्शन करता है। उसकी आशाएँ तथा उनकी पूर्ति मनुष्य के भावनात्मक जीवन की अंग हैं। भूत उसके लिए भविष्य के विश्लेषण की सामग्री मात्र नहीं है बल्कि अनुभूत वस्तुओं के दुख-सुख को भी प्रतिबिम्बित करता है। These are the qualities of living men, acutely felt in the past, relived in memory and summated in the present. A store of emotional and intellectual understanding, they embody the essence of present personal awareness. The outward and visible universe has left its inward imprint on him, in its own specific way. This is characterstic of living man.

परन्तु यह भी एक प्रक्रिया है। The outwordly seen and the inwordly felt are two elements of one objective universe.

Thought is an imaginative effort, the mind constructs its images from the familiar and seeks to bring new and unfamiliar into a mental pattern that together with these images fits into a workable, a consistent whole. जब मनुष्य भावनात्मक रूप से बढ़ता है तो वह कल्पनात्मक (imaginatively) भी बढ़ता है और जब वह सोचता है तो वह कल्पनात्मक और भावनात्मक रूप से सक्रिय होता है। All three processes are involved together in varying degrees, thinking, imaging and feeling.

वैज्ञानिक बाह्य प्रकृति के साथ प्रयोग करता है, उसके pattern को स्पष्ट करता है और उसे मनुष्य के प्रयोग के लिए निकट लाता है। अब तक अनेक अनजानी चीजों को वह प्रकाश में लाया। उसी प्रकार कलाकार भी प्रकृति के साथ प्रयोग करता है, That particular part of it which concerns the inward experience of living man. जीवित मनुष्य के लिए महत्त्वपूर्ण पैटर्न को वह भी काम में लाता है और इस प्रकार वह दूसरों का अब तक अनुभूत अनुभवों के द्वारा नेतृत्व करता है। मनुष्यों में नये गुणों को जन्म देता है and bringing to light new depths of appreciation, of understanding and of emotion.

रविवार, 2 अक्तूबर, 1955

बहुत अधिक सफेद रंग को पसन्द करना भी चटकीलेपन का द्योतक है जैसे बहुत अधिक सज्जनता और संतपन Mannerism का।

मंगलवार, 4 अक्टूबर, 1955

Thought is an imaginative effort. (Their scientists etc) creative power for change is a measure of their awarenerss.

When we speak of awareness we are refering to a quality in social life that manifests itself through the individual.

To know and to understand the social and physical necessities of the world we live in is to put in our hands the instrument for conscious evolution.

But the dead hand of old humanistic tradition still rests on the universities.

The written word

Words may call up mental images, evoke emotions in us and command us to action. The images and the emotions are always in the present and relate to the 'now' activity that we call living, but they also link us with the past. Memory is a mental and emotional bridge between past & present.

A word has a shape and a sound-but it is not the 'thing' itself. The context of the thing is transferred to the word, and the seeing of the word on the paper is a conditioned stimulus that immediately arouses the appropriate mental or emotional images.

अयथार्थ शब्द केवल महत्त्वपूर्ण होने का भ्रम पैदा करते हैं, वे विचार सरणि को confuse करते हैं,- उनके द्वारा लाई जाने वाली प्रतिमाएँ बिम्ब भी भ्रमित करने वाले होते हैं। (छायावाद) इसीलिए Human actions पर विश्वास करने वाले व्यक्ति को शब्दों का सही और यथार्थ जगत से युक्त अर्थ वाला शब्द ही प्रयोग करना चाहिए।

"Words then are coined as a currency for exchange of ideas and feelings and anyone who values the purity of this traffic of ideas and of experience must ensure that the currency is not debased. Bad coinage drives good coinage out of circulation. Mental and emotional confusion destroys clarity of thought, feeling and action.

With visual memory come also remembered feelings.

भाषा में हमारा जोर sight पर अधिक होता है।

शुक्रवार, 14 अक्तूबर, 1955

1. श्री चैतन्य चन्द्रामृत
श्री संगीत माधवम्
2. ब्रह्मसूत्र गोविन्द भाष्यम्
3. श्रीश्री चैतन्य चरितामृत सुबल श्याम
मोतीराम बुकसेलर
अठखंभा, वृन्दावन।
4. ब्रंजभक्ति विलास

मंगलवार, 18 अक्तूबर, 1955

एतावानस्य महिमाऽतोज्यायांश्च पुरुषः ।

पुरुष सूक्त

(यह तो मेरी महिमा का एक भाग है, पुरुष तो इसके आगे है)

रविवार, 30 अक्तूबर, 1955

House hold is a bottomless pit (in which you need to pour enormously and abundanting but with no filling)

Irving Stone in 'lust for life'

मंगलवार, 1 नवम्बर, 1955

1. Sociology of Religion. — Joachim Wach
2. The economic order and religion — Frank Knight
3. Chekhav and his Russia : A Sociological Study
4. Man of Letters and the English Public in the 18th Century, 1660-1744. — Dryden, Addison, Pope
5. Diagonosis of ourtime — Korl Mannheim
6. The Escape from freedom — Erich Fromm

शनिवार, 5 नवम्बर, 1955

To be wicked does not insure prosperity.

V. Hugo

बृहस्पतिवार, 15 दिसम्बर, 1955

(D.A.V. College Kanpur के पुस्तकालय के acc. No. के साथ)

1. American Critical Essays - 824.91 Foe 2162
2. Gujrat and its Literature - 899.8G Mun 2250
3. A key to modern English Poetry - 821.09 Gil, 2283
4. The Early history of the vaishnasect. - 201 M Roy 21706
5. Future of poetry
6. Pratik (प्रतीक-पत्रिका)

सोमवार, 19 दिसम्बर, 1955

New Indian Antiquary
N.I.A.I. April (Feb)
Poetic Image (1447) 821 Lew
Imagism and the Imagists 821.09 (10470)

Gleen Hughes

शुक्रवार, 23 दिसम्बर, 1955

Exploring poetry

Rosenthal & Smith

Elements of poetry - pub. (1955)

James R Kruzer

रविवार, 25 दिसम्बर, 1955

Beauty and other Forms of Literature
On Literature, Culture and Religion
-

Irving Babbit

Russeon & Romanticism

Irving Babbit

Why dictators - Hallgarten Pub. (1954)

George W.F.

वैष्णविज्म—Indian Historical Quarterly खण्ड-तीस, संख्या-4, दिसम्बर 1954

1956

रविवार, 8 जनवरी, 1956

नये साल की डायरी आज मिली तो मेरा मन ऐसा हो आया कि जैसे आज ही नया वर्ष लगा हो। पर पता नहीं क्यों मन भर-भर आता है।

नये साल पर बहुत-सी कविताएँ पढ़ीं, आशा के, विश्वास के, आस्था के अनेक स्वर मेरे सिर पर से जैसे निकल गये। कान में गूँज भी नहीं समा पायी। पर आज के भरे मन में कहीं भीतर से एक आशा का स्वर उठाना चाहता हूँ, शायद दुबका पड़ा भी है।

31 दिसम्बर की रात्रि को 12 बजे जब उन्नाव का एक साहित्यिक उत्सव देखकर लौट रहा था तो ठीक 12 बजे के शून्य क्षण में कानपुर प्लेटफार्म पर लगी घड़ी पर नजर गयी थी। दोस्तों से बार-बार दुहराई जाने वाली यह बात फिर कही गयी कि 55 में चले और 56 में आये। पर इससे अधिक अन्तर में कुछ जगा नहीं।

गवर्नर मुंशी का सैलून देखा, उस पर भी छींटे कसे कि क्या इसमें सवेरे उठकर यहाँ से वहाँ तक दौड़ेंगे।

चाय पी और समोसे भी खाये, पर सब कुछ वैसा ही रहा। न कानपुर स्टेशन बदला, न हालसी रोड। सन्नाटे में प्रतिदिन की भाँति बजने वाले तेज रिक्शों की घण्टियाँ भी बजती रहीं, पर कहीं वो कुछ नया नहीं। फिर मेरे ही मन में नयी बात क्यों उठे। कैसे उठे।

पर आज मैं यह सब क्यों लिख रहा हूँ?

शुक्रवार, 23 मार्च, 1956

मैं लकीर पत्थर की हूँ...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

मंगलवार, 23 अप्रैल, 1956

आज अजित के farewell में पार्टी थी। पर मजा देखिए कि वही जनाब गायब। बिना दूल्हे के बारात। यहाँ पर देवर और तलवार से भी काम नहीं चलता। खासा मजाक

रहा। अजित शायद इसलिए नहीं आये कि उन्हें formal invitation नहीं मिला था। आज के युग में मनुष्य क्यों इतना formal होता जा रहा है? स्नेह का दान चुक गया। केवल formality के सूखे तारों पर यह सामाजिक व्यवहारों की बिजली दौड़ रही है।

बृहस्पतिवार, 26 अप्रैल, 1956

आज अजित चले गये। मुझे शान्ति के बाद पहली बार किसी के जाने पर इस प्रकार कष्ट हुआ है। लगता है कि एक महत्त्वपूर्ण अंग रिक्त हुआ जा रहा है। भगवान जाने क्यों हम सम्बन्धों के इतना निकट रहना चाहते हैं।

अजित से बीच में कुछ मतभेद भी मेरा हो गया था पर मेरे मन में उनके लिए अत्यधिक स्नेह था। इतना ही कहूँगा कि दोस्त जहाँ भी रहो, उन्नतगामी रहो।

रविवार, 29 अप्रैल, 1956

आज बाँदा पैसेंजर से लखनऊ जा रहा हूँ। छोटा डिब्बाः जैतीपुर तक काफी भीड़ रही। मेरी बगल में पैंट-बुश्शर्ट-चश्मे में एक प्रौढ़ सज्जन बैठे थे। साथ में दो-एक मित्र। कुछ देर तक तो वे नेशनल हेरल्ड पढ़ते रहे। पर गंगाघाट पहुँचते-पहुँचते जो उन्होंने उर्दू शायरी पर अपना अधिकार जमाना प्रारम्भ किया तो मैं चकित। बड़ी देर बाद देखा कि उनकी बगल में एक newly wed couple बैठा है। इसीलिए उस काफी बदसूरत लड़की को वे सुना रहे थे। देखने-सुनने में गम्भीर लगने वाले वे कितने low taste के थे।

हैरानी में मैं पेशाब करने गया तो मेरी woman of Rome उनके दूसरे साथी ने उठाकर, उसकी भूमिका से जोर-जोर से पढ़ना शुरू किया, यह impression सम्भवतः उस शिक्षिता पर दिखाने के लिए कि वे पढ़े हैं अंगरेजी। मैं उन्हें कैसे समझाऊँ कि यह मेरी पुस्तक है, कि यह गलत attitude है और उनका उच्चारण भी गलत है। उनसे अच्छा तो बगल वाला पण्डा बद्रीधाम था।

रविवार, 10 जून, 1956

आज महादेवी जी से मिलने गया। गंगाप्रसाद पाण्डेय भी मिले। तमाम ऊटपटाँग उपदेश देते रहे। जड़ से चेतन और चेतन से जड़ की ओर। अज्ञेय को प्रतिभा-सम्पन्न, पर दम्भ-स्तूप बताते रहे। महादेवी जी ने वही सर्व साधारण आरोप लगाया कि राजमार्ग है नयी कविता, जो चाहे लिखो और उसे कविता कहो।

पाण्डेय जी ने कवितायें नये पैटर्न पर लिखी हैं, पर नये को गाली देते हैं। बुरी तरह modern poetry से obsessed हैं, पर ख्याति न मिलने की कुण्ठा भीतर-भीतर विरोधी बना देती है।

उनकी मेज पर हर्बर्ट रीड की Form in Modern Poetry रखी हुई थी। पण्डित

मुंशीराम जी भी Modern thoughts पढ़ते हैं। पर वास्तव में ये लोग modern को catch नहीं कर पाते। क्यों? उत्तर बड़ा कठिन नहीं है। ये लोग accomodate नहीं करते। अपने विचारों को उनसे supplement भी करना चाहते हैं, mould नहीं कर पाते। कुछ अंश उनसे उड़ेल लेना चाहते हैं।

सोमवार, 11 जून, 1956

सवेरे से तबियत ठीक नहीं थी, पड़े-पड़े lust for life पढ़ता रहा। ऊपर का वाक्य लिखते-लिखते मुझे जैनेन्द्र जी की विचित्र शैली याद हो आयी। गत वर्ष मैंने एक मित्र को जैनेन्द्र जी की 'सुनीता' दी। उन्होंने बेहद नापसन्द किया, विशेष रूप से उसकी शैली को। पर मुझे तो जैनेन्द्र के उपन्यास बहुत अच्छे लगते हैं। हाँ, तो 'lust for life' पढ़ा। वॉन गॉग की दुर्दम जिजीविषा अभिव्यक्त करने की अबाधित आकांक्षा अभिभूत करके रख देती है। वॉन गॉग के साथ मुझे निराला याद आते हैं। डॉ. गैचेट का कहना है कि यदि यह लोहे का आदमी न होता, तो खेतों में ही मर गया होता। यदि निराला भी लोहे के न होते तो हम सब उन्हें कब का मार चुके होते। वैसे ही कठोर बदन, वैसा ही परिश्रम, वैसा ही पागलपन, सृष्टि की वैसी ही आकांक्षा, नये रंग, नये दृश्य और images, नये फॉर्म और नवीन कथ्य की अभिव्यंजना, जैसे एक identity है दोनों में।

अज्ञेय और निराला में शायद वैसा ही अन्तर है, जैसा Seurat और Von Gogh में या Cezanne में। पर artist क्यों abnormal होता है, क्यों उसे craze होती है। Society तो normality माँगती है, खासकर इस democracy के युग में। प्रजातन्त्र कहता है, हर आदमी important है, हर एक की अपनी जिम्मेदारियाँ हैं। उनका पालन करें। उसे क्यों liberties and concessions दिये जायें।

शनिवार, 16 जून, 1956

।=)	रिक्शा बगिया से स्टेशन
२ ।=)	टिकट
।=)	कुली, कानपुर
।=)	कुली, लखनऊ
। ।)	रिक्शा
४	
=)	बरफ़
। ।=)	दूध, बस
। । ।=)	

|=) लिफाफा पोस्टकार्ड
) साइकिल स्टैण्ड
|) Cold drink
|) रिक्शा
१६ |=|) दुपट्टा
|) रिक्शा, घर
=) साइकिल स्टैण्ड
१८ ||)|

मंगलवार, 19 जून, 1956

|) रिक्शा
१) वाल्दा D.D.T.
३) किराया कानपुर
|) रिक्शा
) मजदूर
=) दही, बरफ
|) लस्सी
१८ ||=) रेशमी कपड़ा कुरते का
=) चाय
२३ |||-)

बुधवार, 20 जून, 1956

Cash ११५ ||=)
१००)
२१५ |||)

२) धोबी
२) पंखा
|||) फार्म L.T.
१५ |||) कपड़ा
२) पोस्टकार्ड, लिफ़ाफ़ा
|||) लस्सी वगैरह
२६ |=) निमन्त्रण-पत्र

४) सिलाई सुधीर, जीजा
=) पालिश
२७) शार्क स्किन
४८) रेशमी कपड़ा
१२८।।।=)
८७) शेष

बृहस्पतिवार, 21 जून, 1956

८७) शेष

१) रिक्शा
-) आलोक
४।।=)।। खादी कुरता
३१) फ्रेम चश्मा
।)।। मिठाई
-।) फुटकर
३७।)
४०।।।) शेष

शुक्रवार, 22 जून, 1956

४८।।।) शेष
३०)
१७)
६५।।।)
१=) फार्म
६६=)

-) बरफ वगैरह
२०।।।) जूता सुधीर इ.
५) Advance जूता
६।) कमीज कपड़ा
३।।=) चाय
५) दालमोट
१) चश्मा

१७।।)   धोती
१=)   जलपान सवेरे
१=)   दूध बड़े मामा
२)   डाक टिकट
६५)
३१)   शेष

शनिवार, 23 जून, 1956

३१)   शेष
।।=)   आलूचा वगैरह फुटकर
१।।)   रिक्शा
१।।)   कुली
१०=)   टिकट
१=)   मार्ग जलपान
१।।)   कुली
१।।)   रिक्शा
१७=)
।।)   सिवाजाल
१७।।=)
१३।)   शेष

रविवार, 24 जून, 1956

१३।=)   शेष   –) टेलीफोन
३३।=)   जमा
५०।।।)

सोमवार, 25 जून, 1956

८।=)   Toilet
१५=)   सदरी का कपड़ा
२)   नागरा advance
१)   जलपान
=)   Hanger
।=)   टिकट
।=)   रिक्शा

खर्च २८।=)
२२।)　　शेष

मंगलवार-बुधवार, 26-27 जून, 1956

१।)　　धुलाई कपड़ों की
१।।=)　　कानपुर जाने का खर्चा
६)　　कुरता सिलाई
८।)　　जीजा के जूते
१)　　जलपान
१०।।=)　　पेठा
१८)　　जूता मेरा
१२।।)　　चदरा तकिया का खोल
२०)　　अटैची कपूर साहब
४=)　　गिलास
।)　　अखबार
।।)　　जलपान
३)　　Toilet
४१)।।　　दवा
३।।)　　लखनऊ आने का खर्च
१)　　फुटकर
खर्च ६६)।।
२)　　शेष
५०।।)　　जमा
५=)
५७।।)

=)　　रिक्शा
।)　　रिक्शा
।=)　　टिकट
१।।।)　　सेब का रस
५।।।=)　　नागरा
।।।)　　रिक्शा
२३।।।)　　सिलाई

५।।।) धुलाई
२।।) मोजा
खर्च ४१।=)
शेष ८)
४) सिलाई सदरी
४) धुलाई

शनिवार, 30 जून, 1956

लगभग एक सप्ताह पूर्व तक मनःस्थिति बड़ी डाँवाडोल रही। लगता था कि जबरदस्ती विवाह हो रहा है। as if I am not getting even what I wished.

जिस दिन से परीक्षाफल का परिणाम आ गया, उस दिन से काफी reaction decrease हुआ पर घर की uncoordinated स्थिति, जिम्मेदारी से बचने की वृत्ति और सबसे अधिक किसी ठीक-ठाक व्यक्ति का अभाव, लखनऊ की shifting—सब मन को अशान्त करे रहे। पर पिछले तीन दिन से मैंने mood cheerful बनाने का प्रयत्न किया।

आज सवेरे से कार्याधिक्य इतना अधिक रहा कि कुछ सोचने-विचारने और reflections का मौका ही नहीं मिला।

रविवार, 1 जुलाई, 1956*

दिन भर की थकान और परिश्रम के बाद शाम को निकासी वगैरह के संस्कार प्रारम्भ हुए। नहा-धोकर वे सारे कार्य कराये। अम्मा तथा अन्य बहनों के हर्ष का कोई परावार न था, भाभी ऐसा लगता था कि अभी भीतर से छलक पड़ेंगी हर्ष के मारे। इन सारे स्नेहीजनों की ममता देख-देखकर मेरा भी मन उमड़ा पड़ता है। घर से देवी, देवी से दरवाज़े फिर परिछन वगैरह में, इतने अधिक पैसे लुटाये गये कि कुछ कहना नहीं। घर की भी अजब शोभा थी। आज बहुत अच्छा लग रहा था। सारी सृष्टि ही अजब नये रंगों में रंगी नये रूपाकारों में ढली मालूम पड़ती थी।

धीरे-धीरे बारात उठकर लड़की वालों की ओर चली। मौसम सुहावना था, हवा में ठण्डक थी। बादल भी छाये पर अवर्षी थे। सभी मित्र हँस रहे थे, मजाक कर रहे थे, मैं भी खूब प्रसन्न मुद्रा में था। द्वारचार के तिलक के बाद तो फिर मंगल और अमृतवर्षी क्षण आया जिसने मेरी सारी Prejudices को एक क्षण में नष्ट कर दिया, जैसे सारी-की-सारी thinking process ही बदल गयी।

पहले तनिक संकोच और फिर smartness के साथ उठते हुए पैर, नतमुख

---

* देवीशंकर अवस्थी का विवाह 1 जुलाई, 1956 को हुआ था।

नतनयन, अपनी दो-तीन बहनों से घिरी 'वह' जिस समय आयी, मैं एक क्षण के लिए अपने को भूल गया। सुनता हूँ कि उसने एक नजर उठाकर देखा भी, यह भी पता लगा कि फिर मित्रों ने तालियाँ बजायीं पर मैं सुन नहीं पाया। सच पूछो तो उस एक झलक ने ही मेरे सारे व्यक्तित्व को, चेतना को अभिभूत कर लिया। मुझे ऐसा लगा कि जैसे सब कुछ मिल गया। जब सुरेन्द्र तिवारी ने कहा first of all please accept my congratulations. तभी मुझे यह भान हुआ कि जैसे कुछ श्रेष्ठ मिल गया। अजित ने remark कसा—'बड़ी हसीन लौंडिया मार दी यार।' मैं केवल इतना कह सका Yes, she is beyond my expectations फिर तो मौज का आलम था।

रात भाँवरों पर गया, मन में आसक्ति उत्पन्न हो चुकी थी, हाथ में कन्यादान लेने पर वह आसक्ति मोह में परिणत हुई, पर उसी समय मेरी देह जैसे एकबारगी काँप गयी। जिम्मेदारी का भान हुआ। लगा सचमुच इस अपरिचितता, अस्पर्श्या और अक्षता बाला का हाथ हमारे हाथ में आ रहा है, यह जैसी मेरी हुई और मैं इसका। मैं जान नहीं पा रहा था कि उसके मन में कैसी प्रतिक्रियाएँ उठ रहीं थीं। उन कमल कोमल नहीं शिरीषमृदुल हथेलियों के कोमल दबाव का सुखद अनुभव शायद जीवन भर न भुला पाऊँ। हर क्षण मन का स्नेह बढ़ता जा रहा था। जब कन्यावचन वर के प्रति (सात) आदि सुनाये जाने लगे तो मेरा मन यह कहने को होता था कि बिल्कुल ठीक, यही नहीं मैं इनके द्वारा माँगे गये सभी वचन दता हूँ। शायद उसके भी मन में कुछ ऐसी ही बात थी।

पण्डित कहने लगा कि पत्थर की भाँति अटल और धैर्यवान आपका जीवन है। उससे तो मैंने शुभकामनाएँ मात्र ही माँगी पर मन कहता था उससे भी अधिक यहाँ landslides न होंगे। ईश्वर मन के साहस का साथ दे। लहकौरि के समय कहा गया जूतों की पूजा के लिए, मैंने विनोदपूर्वक कहा कि अभी देवताओं के सामने प्रतिज्ञा की है अब धोखाधड़ी न हो, उसने छुआ नहीं, अन्दाजा है कि उसके मन में स्नेह का बीज पड़ चुका है। लड़की sensitive, forward और intelligent ज्ञात होती है।

मंगलवार, 3 जुलाई, 1956

जीवन के समस्त संचित
प्रणयावेगों
एवं
प्रियतम भावनाओं के साथ
कमलेश को,
'श्याम' का प्रेमोपहार
लखनऊ

बृहस्पतिवार, 23 अगस्त, 1956

आज Egyptian Counsellor का लेक्चर सुनने गया, यह सोचकर कि वे Suez problem पर बोलेंगे। सामयिकता के प्रति हमारे मन में गहरा मोह होता है न। वहाँ पर Modern Egyptian Literature पर व्याख्यान हुआ। Accent ऐसा था कि पल्ले कुछ पड़ नहीं रहा था, पर उठने में विवश था, नहीं तो लोग कहते कि साहित्य के अध्यापक साहित्यिक होकर भी चले गये। सो इस लाज की रक्षा के लिए बैठा रहा। यह लोकलाज कैसे समय भी नष्ट कराती है और हमें Hypocrite भी बनाती है।

सोमवार, 31 दिसम्बर, 1956

यह वर्ष खत्म फिर एक बार...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

नया साल कल आवेगा यानी सिर्फ दो घण्टे बाद आवेगा। सन् 56 तो आज बीत रहा है। पर मन कुछ उद्वेग जगाना चाहकर भी नहीं जगा पाता। केवल यह याद कर लेता हूँ कि पिछले साल आज उन्नाव गया था एक कवि सम्मेलन सुनने। साल बीत गया। कुछ महत्त्वपूर्ण बातें हुईं। नये लोग मिले, नये नाते जुड़े और सब पुराने बनकर निकट आ गये। क्या यह वर्ष भी वैसे ही निकट आ जावेगा।

1957

डायरी का प्रथम स्मरण पृष्ठ

Credit — नवनीत दीपावली अंक

सुरेन्द्र दीक्षित – निकष — ३/-

3) प्राप्त खेमका Current से — ४।।)

कैलाश तिवारी — २।।=)

४)

६।।=)

२।।)

५१=)

कुल २१।।।)=

N.K. Nair 24।।।)

Bal Krishna Gupta ५।।।)

Debit

८/-	अजित को
५/-	सदरी सिलाई
५।।/-	सा.र.
२०/-	Current Book
१४/-	Book corner
५/-	Bal krishna
~~९/=~~	~~मोहनलाल कुकरेती~~
~~१/~~	~~महेन्द्र जी~~
~~१२/=~~	अख़बार
~~६९।।/=~~	
कुल ५७।।/-	

डायरी का तीसरा स्मरण पृष्ठ

1. Hindu Art in its social setting —Miss P.N. Dubash
(Nat. Lit. Publishing, 1936)
2. Hindu Woman and her future —Dr. Mrs. C.A. Hate
(New Book Co. 1948)
3. Five centuries of religion —G.G. Coulton (3 vol.)
4. The religions of India —A.F. Karmarkar
5. तत्त्वदर्शी (पत्रिका) —सं. भगवताचार्य, अहमदाबाद, (रामानन्दी सम्प्रदाय)
6. विरक्त (पत्रिका) —अयोध्या— सं. अयोध्याचार्य— (रामानन्दी) (विरक्त महामण्डल की ओर से)
7. Early history of the vaishnawa faith and movement in Bengal (1942) —S.K. De
8. Indian sadhus —G.S. Ghurye
(Popular Book Depot, Lamington Road, Bombay-7)

डायरी का चौथा, पाँचवाँ स्मरण पृष्ठ

नं. 764 ककरहा कुआँ की भूमिधारी सनद जो पुरवा से भेजी गयी थी, वह बाबा से लानी।

राजेन्द्र यादव - 67-बी, डायमण्ड हार्बर रोड, कलकत्ता-23

पं. कैलाशचन्द्र पाण्डेय - आर्यसमाज, लखनऊ

उन्नाव डिस्ट्रिक्ट बोर्ड

रामप्रसाद पाण्डेय

कमला नेहरू बालिका विद्यालय (प्राइमरी स्कूल)

ग्राम: सन्दाना, नया मौरा को बोर्ड से ग्राण्ट दिलाना

अभी 15/- की सहायता बोर्ड ने दी है।

श्रीकान्त वर्मा

"भारतीय श्रमिक" 17, जनपथ, नयी दिल्ली

दुष्यन्त कुमार 173, रोशन बाग, इलाहाबाद-3

बृहस्पतिवार, 3 जनवरी, 1957

Principal
Pedagogical Institute
(बाबू राम सक्सेना का भांजा)
1. The outsider
2. Religion and the Rebel

Colin Wilson

रविवार, 27 जनवरी, 1957

श्री रघुवीर सहाय
B.D. 868, विनय नगर, नयी दिल्ली

सोमवार, 28 जनवरी, 1957

Mr. D.N. Chaturvedi
Dist: Indu. officer, Kanpur
Sanjaya Chaturvedi, Bashir Building, Pandarika, LKO
48/243 जनरलगंज जमुनाशंकर बाजपेयी मे. कालीचरन
जगदम्बा प्रसाद कृपाशंकर महेश तिवारी

रविवार, 10 फरवरी, 1957

श्री गया प्रसाद शुक्ल
17, सेवका श्रम (अलका)
11/235, Souter ganj
Society and culture in Mughal age – D.N. Chopra Rs. 8/-
(M/S Shiv Lal Agarwal, Agra)

बृहस्पतिवार, 14 फरवरी, 1957

शेखर जोशी,
पर्वतीय परिषद, 23, क्लाइव रोड, इलाहाबाद
VI world youth festival
Buddha vihar, Risaldar Park, Lucknow

श्री रघुवीर सहाय
श्री बी. सहाय, हिन्दी यूनिट एक्सटर्नल सर्विसेज,
आल इण्डिया रेडियो, नयी दिल्ली
श्री जागेश्वर प्रसाद अवस्थी U.P. Excise

रामप्रसाद शर्मा, शर्मा होटल वालों का मकान, किदवई पार्क रोड, राजामण्डी आगरा
प्रभात
के सी कॉलेज, बम्बई-1
भगवती निवास, लेडी हार्डिज रोड, महीम, बम्बई 16, मातुंगा (W.R.)

बृहस्पतिवार, 28 फरवरी, 1957

Central News Agency
Connaught Place
New Delhi

श्री पुरुषोत्तम खरे
414, दीक्षित पुरा, जबलपुर

सनीचर
16ए, रामकनाई अधिकारी मार्ग
कलकत्ता-12

डॉ. रामविलास शर्मा
12, अशोक नगर
आगरा

Largectill for Colic Pain

बृहस्पतिवार, 7 मार्च, 1957

अहीरिनि मन की गहीरिनि
उतरू न देय
नैना करै मथनियाँ
मनु मथि लेय।

माखन सौं तन दूध सौं यौवन
दधि सौं अधिकै उमगै ईठी
जा छवि आगे छपाकर छाँछ
समेत सुधा वसुधा सब सीठी।
नैनन नेह चुवै कवि देव
बुझावति बैन वियोग अँगीठी
ऐसी रसीली अहीरी अहै
तब क्यों न लगै मन मोहनै मीठी।

देव

रविवार, 10 मार्च, 1957

तलवा में चमके सहरी मछरिया
रन चमकै तलवार रे
बीच बजरिया में सैंया जी की पगिया
सेजिया में बेंदिया हमार रे।

20 जनवरी को लखीमपुर जा रहा हूँ। गतिशीला रेल भागती चली जा रही है। और मैं 'बावरा अहेरी' की प्रति में डूबा हूँ। कुछ Remarks लगा देता हूँ। सामने एक सम्भ्रान्त तरुण कुछ जिज्ञासामूलक निर्वेद से मुझे देख रहा है। उसके मन में शायद मेरे प्रति उपेक्षा भाव भी है। पर मेरे कार्य में उसे किंचित दिलचस्पी है। बहुधा जीवन में हम लोग यह द्विविध रुख बनाये रहते हैं।

पर लो एक क्रौंच पक्षी इसी बीच में कूका। उसकी आवाज डिब्बे में भर गयी और दूसरे ही क्षण ट्रेन आगे बढ़ गयी। मेरा मन कविता लिखने का हुआ, पर छन्द नहीं सूझा तो यह लिख रहा हूँ। मेरा मन पिछली घटनाओं, आकृतियों पर घुमड़ना चाहता है। मीठी कूकें ट्रेन की गति में छूट जाती हैं और हम भी कविता रचते-रचते रह जाते हैं। सृष्टि अधूरी है।

शुक्रवार, 22 मार्च, 1957

18A–19A में Invigilation (M.A. History)

31 में से 27 Hindi में attempt कर रहे हैं। शेष चार में से एक लड़की है।

कपड़े सिर्फ एक लड़के के upto the mark हैं। लड़कियाँ अपेक्षाकृत well to do हैं, पर उनके भी कपड़े काफी cheap हैं। केवल रंगीनी भर है। फिर भी उच्च शिक्षा नीचे के तबकों में स्त्रियों में नहीं है, जबकि एकाध पुरुष तो काफी निम्न वर्ग के प्रतीत होते हैं। लड़कियों में चार सफेद साड़ी और लाल ब्लाउज पहने हैं, Combination अच्छा है पर सिर्फ एक के शरीर पर खिल रहा है। बाकी पर तो

चिपकाया लगता है। लड़कियों की वेशभूषा से यह भी प्रतीत होता है कि हमारा लोगों का Aesthetic sense and colour sense काफी भोंड़ा हो गया है। सुरुचि का अभाव है।

जूते पुरुषों में से एक के भी ऐसे नहीं दिखे जिन्हें पिछले तीन महीनों के पहले का न कहा जाये। तीन-चार जोड़े तो दो साल से भी पुराने प्रतीत होते हैं।

टोपी अधिकांश लोग नहीं लगाये। कुछ लोगों ने पिछले हफ्ते से शायद दाढ़ी भी नहीं बनाई। एक लड़का अभी मोजे पहने है जिससे प्रतीत होता है कि जाड़ों के मोजों को अब तक चला रहा है। सबसे कीमती साड़ी एक वार्धक्य को प्राप्त महिला की रेशम की प्रतीत होती है। चश्मे सभी 10/- के फ्रेम के नीचे और फाउण्टेन पेन केवल 2/- या 3/- रुपये वाले। घड़ियाँ खासे लोगों के पास हैं (समय की आवश्यकता), पर कितनी कीमती होंगी, यह कहना कठिन है।

महिलाओं के सबसे प्रिय आभूषण कानों के प्रतीत होते हैं, एकाध की ही नाक में कील है, गले में जंजीर भी साधारणतः हर एक के है। एकाध हाथों में सोने की चूड़ियाँ भी पहने हैं। एक लड़की के गले में (दूसरे कमरे में) नेकलेस देख आया हूँ जो भद्दा लगता है।

निरीक्षक बेचारा आखिर करे क्या? तीन घण्टे वह क्या सोचे? सो नहीं सकता, बात नहीं कर सकता, पढ़ नहीं सकता, लिख नहीं सकता। हर समय चोर पकड़ा नहीं जा सकता फिर यही तो करेगा कि कपड़े देखे, गहने देखे और यदि नौजवान हुआ तो लड़कियों की खूबसूरती देखे, उन पर मन-ही-मन रिमार्क पास करे। जैसे कि यह मेरे सामने वाली लड़की के बाल घुँघराले, पर माँग के पास झड़ गये हैं सो खराब लगते हैं। 2-3 साल पहले यह सुन्दर कही जा सकती होगी, पर शायद शादी न होने पर भी लड़कियों का रंग उतर जाता है।

यह जयप्रकाश भी पूरा बोर है। Philosophy लोगों को खासा बोर और abnormal बना देती है।

शुक्रवार, 5 अप्रैल, 1957

आज मेरी वर्षगाँठ थी, पर सारा दिन उत्सवहीन-सा बीत गया। मुझे न हर्ष हुआ और न विषाद। लगता है कि आयु की वह सीमारेखा है जबकि बड़े होते जाने, जिम्मेदार समझे जाने का सुख भी नहीं मिलता और बुढ़ापा आने की आशंका कष्ट भी नहीं देती। यह अवस्था 25 से 35 तक रहती है। Fully grown up, natured full of vigour but no expectation of any addition.

शनिवार, 6 अप्रैल, 1957

Invigilation की भी क्या Psychology है। जिस कमरे में ड्यूटी लगी है वह तो

जेल मालूम पड़ता है, बाकी हर कमरा आरामदेह। प्रश्न गति और स्थिरता का भी है।

सोमवार, 8 अप्रैल, 1957

आज परमानन्द की डायरी पढ़ी। मैंने एक बात जो कही थी, उसका बीच में reference था। मन प्रसन्न हो गया। यद्यपि मेरा नाम नहीं था। प्रकट या प्रच्छन्न अपना नाम देखकर खुश होना क्या बुरी बात है?

मंगलवार, 9 अप्रैल, 1957

एक कवि-गोष्ठी attend की। और तो सब नहीं सुन सका पर एक adolescent कवि की वह आविष्ट मुद्रा मेरे मन से नहीं उतर पाती जो कविता पढ़ते समय उसकी थी। यद्यपि कविता निकृष्ट, पर मन का यह भुलावा भी कैसा था जो उसे इतने ऊँचे आसन पर बिठाये था। मेरे मन में आता है कि बहुधा अनेक धार्मिक लोगों के मुखतेज की जो बात करते हैं, वह तेज कुछ ऐसी ही आविष्ट पर व्यर्थ मुद्रा का होता है। राजनीतिक नेताओं के भी मुख पर यह यत्र-तत्र झलक उठता है।

शुक्रवार, 12 अप्रैल, '957

आज ससुराल में ऊपर छत पर चाँदनी में रात को गया। आसपास दिखने वाले मकानों में ज्यादातर किसी-न-किसी कमरे की बत्ती जल रही थी जिनके आसपास लड़के-लड़कियाँ पढ़ रहे थे। मुझे अपने परीक्षा के दिन याद हो आये, ये भी कैसी खब्तुल हवासी के दिन होते हैं। दिन-रात किताबों, इम्तहान, important की धूम। मन और कहीं नहीं लगता, पर मैं आज इन temporary योगियों के रूप में नहीं भोगियों के रूप में जाग रहा था। 'कि जागें योगी कि जागें भोगी।' पर मैं चाह रहा हूँ कि वे दिन फिर लौट आवें, फिर इम्तहान दूँ।

अन्धकार से भरे हुए घरों में छुटपुट प्रकाश करते ये टेबुल लैम्प ज्ञान-शिखा से प्रतीत होते हैं।

रविवार, 14 अप्रैल, 1957

सिद्धेश्वर ने कुछ paintings और मूर्तियों के फोटोग्राफ दिखाये। मद्यपान की बनाई एक रूप-सज्जा करती नायिका की अद्‌भुत मूर्ति थी। Rhythm, सौष्ठव, भाव विभोरता सभी तो कूट-कूटकर भरी थीं उसमें। गवर्नर मुंशी उसे देख रहे थे। मूर्ति के पास ही एक और व्यक्ति पायजामा, कुर्ता सदरी पहने खड़ा था। मुंशी जी मूर्ति से अभिभूत थे और वह व्यक्ति गवर्नर को एकटक देख रहा था। मेरा मन कुछ क्षणों के लिए वितृष्णा से भर उठा; देखो इतनी सुन्दर मूर्ति जो फोटो में भी अद्‌भुत है, उसे न देखकर यह व्यक्ति शासक की ओर देख रहा है। कला का यह अपमान

था। पर तब तक सिद्धे भाई ने कहा यह कला मात्र है। मेरी दृष्टि ही बदलगयी। मुझे ऐसा लगने लगा कि कलाकार अपनी सृष्टि का विदग्ध प्रभाव निहार रहा है। गवर्नर मुंशी जैसा-रस सम्पन्न कलाकार उसकी रचना से कैसे अभिभूत हो रहा है, यह वह देख रहा है। To the eye which catches the object is important not the object. पर यह भी कैसे कहूँ?

बृहस्पतिवार, 2 मई, 1957

आज भटनागर साहब के बड़े लड़के की मृत्यु की खबर आयी। भला कोई कैसे अन्त हुए बिना यह कह सकता है कि फलाँ व्यक्ति की जिन्दगी successful है। Eldest son, इतना अच्छा posted, भरापूरा परिवार, पर अचानक वज्र टूटता है—कल तक का कानपुर का सर्वाधिक सुखी परिवार आज दुखी परिवारों में से एक है।

तब विशिष्ट था, अब सामान्य यानी जीवन में दुख की स्थिति सामान्यीकृत है। वह विशेष अल्पकाल के लिए होती है, जैसे आज के दिन भटनागर साहब का परिवार विशिष्ट दुखी परिवार है तथा सुख विशेषीकृत होता है लम्बे अरसे के लिए भी।

रविवार, 12 मई, 1957

उत्सव के मध्य एकान्त की स्थिति ideal होती है।

रेल पर भार्गव मिला था। वह अपने विगत जीवन के कॉलेज के रोब सुना रहा था। मैं वितृष्ण भाव से सुन रहा था। जैसे अपने मन को compensate कर रहा था कि मैं कैसा जोरदार आदमी था। कुछ लोग व्यतीत पर जीते हैं। उसे याद कर वे शक्ति प्राप्त करते हैं।

बृहस्पतिवार, 6 जून, 1957

बर्क ने काश न देखा होता

(कविता उपखण्ड में संकलित)

रविवार, 9 जून, 1957

कहते हैं ग़म से परेशान हुए जाते हैं।
ये नहीं कहते कि इंसान हुए जाते हैं। — जोश

अहले ख़िरद ने दिन ये दिखाये
घट गये इंसाँ, बढ़ गये साये। — जिगर

तेरी बातों से जो दिल में मलाल ऐ यार आता है
मगर जब देखता हूँ तेरी सूरत, प्यार आता है। अक़बर इलाहाबादी

यह न थी हमारी क़िस्मत
कि विसाले-यार होता
कुछ और दिन जो जीते
यही इन्तज़ार होता।

बृहस्पतिवार, 11 जुलाई, 1957

Fantasy becomes confused with reality, when many persons prefers it.

बृहस्पतिवार, 15 अगस्त, 1957

सूचना विभाग की ओर से एक साहित्यिक आयोजन था, लोक-साहित्य के उन्नयनकारी तत्त्वों पर। मैं भी अचानक अनाहूत आ पहुँचा। मन अत्यधिक खिन्न हुआ। कुछ ऐसा लगा कि सरकार तो चाहे न corrupt करती हो पर सरकार के निकट जाकर साहित्यकार रुपये के लोभ में corrupt अवश्य हो उठता है। वहाँ पर मुख्य प्रश्न यह था कि सरकार से T.A. लेना है और उसके लिए कुछ शब्द बोल देने हैं। इसी कारण इतना well planned जिसे कि विद्यानिवास जैसे प्रबुद्ध और सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति ने आयोजित किया था, जिसमें कि विवाद के सूत्रों की synopsis दी हुई थी, प्रत्येक स्वतन्त्र बक रहा था।

हाँ एक बात है, चूँकि रुपये देने होते हैं, इसलिए अधिकारी वर्ग भी गलत आदमियों को छाँट लेते हैं, अथवा सही आदमी के न आने पर भरती कर लेते हैं।

उठकर हजरतगंज की ओर कुछ मित्रों के साथ आया। मुँह से बेसाख्ता निकल पड़ा। यह वही चौराहा है, जहाँ पर रेखा और भुवन पहली बार मिले थे और यह वही कॉफी हाउस है, जहाँ उन्होंने दर्जनों बार बैठकर कॉफी पी है और 'सत्य तथ्य' के तत्त्व निकाल ढूढ़े हैं। जैसे कि रेखा और भुवन सचमुच ही यथार्थ रहे हों। मैं सोचना चाहता हूँ कि यथार्थ क्या है? साहित्य का यह प्रभाव जो मानसी सृष्टि को भौतिकवत उपस्थित करता है, क्या यथार्थ है; अथवा जो हमारी चेतना में गहरे उतर जाये, वही यथार्थ है। बता दो भाई, रेखा, भुवन को यथार्थ समझा जाय या नहीं।

जब तक ये बातें मेरे मन पर कौंधीं, तब तक दूसरे कवि मित्र बोल उठे, यहाँ तो रंग ही रंग है, रेखा कहाँ है और सामने से कुछ इठलाती जाती नवेलियों की ओर देख मुस्करा पड़े। योग देते हुए मुँह से निकला–नहीं रेखायें तो बिल्कुल स्पष्ट हैं, रंग उनके भीतर भी है और इधर-उधर बाहर आकर फहरा भी रहा है।

चलो दोस्त, कॉफी पियें।

बृहस्पतिवार, 5 सितम्बर, 1957

If we wish to know the force of human genius we should read Shakespeare. If we wish to see the insignificance of human learning we may study his commentators

W. Hazlitt : On the ignorance of the learned

रविवार, 8 सितम्बर, 1957

Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquality.

Wordsworth

बृहस्पतिवार, 12 सितम्बर, 1957

1. Poetry is the sister of sorrow, every man that suffers and weeps, is a poet, every tear is a verse and every heart is a poem.

Andre

2. He who, in an enlightened and literary society aspires to be a great poet, must first become a little child.

Thomas B. Macaulay

3. The office of poetry is not to make us think accurately but feel truly.

F.W. Robertson

4. Sad is his lot, who once at least in his life, has not been a poet.

Lamartine

5. Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best minds.

Shelly

6. Poetry may be defined the expression of Imagination.

Shelly

रविवार, 15 सितम्बर, 1957

बड़ा कागज आँजा है आज
भरी आँखों में हल्की लाज
अधर पर धर क्या सोयी रात
अजाने ही मेहँदी के हाथ

भला होगा केसर अंगराग
तभी पुलकित चम्पक गात

आज तेरा भोलापन चूम
हुई चूनर भी अल्हड़ प्राण
हुए अनजान अचानक ही
कुसुम से मसले बिखरे साज़
बड़ा काजल आँजा है आज

गिरिजा कुमार माथुर

पूस की ठिठुरन भरी इस रात में
कितनी तुम्हारी याद आये।
याद आये मिलन वे
मसली सुहागिन सेज पर के सुमन वे।

बृहस्पतिवार, 19 सितम्बर, 1957

तुर्गनेव का *बाप बेटे* पढ़ा। दो पीढ़ियों के वैचारिक अन्तर को बड़ी खूबी से चित्रित किया गया है। बैजारोव का चरित्र बहुत आकर्षक बन पड़ा है। उसे पढ़कर शेखर की याद आती है। वैसा ही निष्फल औद्धत्य उसका भी है। 'निहलिस्ट' विचारधारा की निस्सारता भी प्रकट होती है। चरित्र सबके सब बड़े स्पष्ट उभरे हैं। कथा की एक बिन्दु पर आदर्श संहति उपन्यास में हुई है। पैवेल पैट्रोविच तथा अन्ना सर्ज़ेवना आदिन्त्सोवा बहुत उभर कर आये हैं। आर्केडी एक ढुलमुल चरित्र है जो किसी से भी प्रभावित हो सकता है।

कुछ दिन पूर्व *बराबास* पढ़ा था। यदि परम्परा का नामांकन करें तो यह दास्ताएस्की की परम्परा है। *Crime and Punishment* जैसा मनोद्वन्द्व इसमें भी है। पर वह विशुद्ध मानवीय धरातल पर है जबकि इसमें धार्मिक भावनाएँ जुड़ी हैं। फिर भी एक छोटे व्यक्ति के द्वारा सारा युग प्रतिबिम्बित हुआ है, इस दृष्टि से इसे हम हरमनहेस के सिद्धार्थ के समकक्ष रख सकते हैं, परन्तु सिद्धार्थ का विचार पक्ष अधिक प्रौढ़ है। उपर्युक्त दोनों उपन्यासों के सम्मुख यह छोटा पड़ता है। कथावस्तु की रोचकता में भी और चरित्र के गठन में भी।

बृहस्पतिवार, 26 सितम्बर, 1957

जब आदमी के पास कहने के लिए कुछ नहीं होता है, तब या तो वह भाषा की समीक्षा करता है, उसके गुण-दोष बताता है या फिर काव्य रस जैसी Abstract चीजों की दुहाई देता है। यह बात गोष्ठी के Discussions के लिए मैं कह रहा हूँ।

सिद्धिनाथ जी का कहना है नये ज्ञान-विज्ञान के अनुसार पुराने साहित्य को परखा जा रहा है तो पुराने ज्ञान के अनुसार नये साहित्य को क्यों न परखा जाये। ज्ञान के क्षेत्र में इस अनावश्यक द्वैत की बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती। नया ज्ञान पुराने ज्ञान को अपने भीतर समाहित करके ही तो विकसित होता है। वह बीच में से तो फूट नहीं पड़ता। फिर यह आग्रह क्यों, वास्तव में ज्ञान में द्वैत नहीं है। द्वैत हो जाता है पुराने व पुराने के advanced रूपों को जज्ब करने वाले व्यक्तियों में।

रविवार, 29 सितम्बर, 1957

यह हैं हिन्दी के शुद्धतावादी.....। एक ओर जनप्रियता एवं जनवाद के नाम पर अंगरेजी के शब्दों को निकालना चाहते हैं और दूसरी ओर 'ताज़ा' जैसे शब्द को नवीन द्वारा replace करना चाहते हैं। भगवान बचाये।

मैं रवीन्द्र सहाय की तरह Hetrogenous से घबड़ाता नहीं हूँ। मुझमें शक्ति होगी तो या तो ये लोग हमारे पक्ष में जा जावेंगे या फिर Eliminated हो जावेंगे।

बृहस्पतिवार, 3 अक्तूबर, 1957

नयी कविता का Comparision संस्कृत या ब्रज की नहीं खड़ी बोली की कविता से किया जाना चाहिए। इतना निश्चित है कि छायावाद से यह कविता बड़ी भले न हो पर छायावाद से आगे बढ़ी अवश्य है। जहाँ तक बड़ाई या छोटाई का प्रश्न है वहाँ तक तो इतिहास के परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण कार्य करने से कोई आदमी बड़ा छोटा होता है। जैसे कि गुप्त जी अच्छे कवि न होते हुए भी बड़े कवि माने जाते हैं और इतिहास भी उनकी रक्षा करेगा।

रविवार, 6 अक्तूबर, 1957

लियनहार्ड फ्रैंक का उपन्यास *कार्ल और अन्ना* पढ़ा। व्यक्तित्व की clearcut lines का अद्भुत समावेश है। एक विशेष situation का निर्माण और उसके भीतर मनोवैज्ञानिक ऊहापोह कुशल शिल्प की ही अपेक्षा नहीं रखती बल्कि High and fertile Imagination तथा Discipline की आवश्यकता है। इसके साथ ही 100 से भी कम पृष्ठों के भीतर युद्ध के सोसाइटी के स्ट्रक्चर पर पड़ने वाले प्रभाव की सम्यक व्यंजना है। ऐसी ही परिस्थितियों को शायद Fox लेखक का यथार्थ से युद्ध बतलाता है। लघु उपन्यासों में दास्ताएव्स्की की परम्परा में यह एक श्रेष्ठ जर्मन उपन्यास है।

बृहस्पतिवार, 10 अक्तूबर, 1957

Gogol के *इंस्पेक्टर जनरल* में reality का इतना Perfect Coalition हुआ है कि प्रशंसा करते बनती है। नाटककार ने वातावरण निर्माण के द्वारा पात्रों की

मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को उभारकर सामने रख दिया है। पहले नाटककार यह सूचना देता है कि इंस्पेक्टर जनरल छद्मवेश में आवेगा उसके बाद क्लर्क का घबड़ाकर अपनी परिस्थिति को स्पष्ट रूप से कहना और मेयर का उसको दूसरी Light में लेना जहाँ एक ओर पात्रों की मानसिक स्थिति का पता देता है वहीं श्रेष्ठ हास्य की भी सृष्टि करता है। रिश्वत के उधार माँगने वाले ढंग को भी फिट किया गया है। समस्त भ्रष्टाचार तथा अफसरों की दुरभिसन्धि अत्यन्त नाटकीय ढंग से सम्मुख लायी गयी है। Social satire का इससे अच्छा उदाहरण मिलना कठिन है।

रविवार, 13 अक्तूबर, 1957

डॉ. देवराज की *पथ की खोज* पढ़ी। नैतिक प्रश्नों को जिस boldness के साथ उन्होंने उठाया है वह बधाई के योग्य हैं। चित्रलेखा से जो प्रश्न उठा था उसी को नये समाज में, नवीन परिस्थितियों में अधिक यथार्थवादी ढंग से उठाया गया है।

पर structure कमजोर है। Texture भी उतना घना नहीं हो सका। कुछ तो कथा कहने की प्रवृत्ति इसमें बाधक हुई है और कुछ अतिरिक्त बौद्धिकता। व्यक्तित्व की रेखाएँ भी कहीं-कहीं डूब गयी हैं। पर सब मिलाकर साधना आकर्षक है और चन्द्रनाथ भी स्मरणीय। नैतिक प्रश्नों की दृष्टि से यह—*नदी के द्वीप* की अपेक्षा अधिक significant है, परन्तु उसका जैसा कलात्मक बोध देवराज के पास नहीं है।

830 पेजों को समेट कर 500 पेजों में लाया जा सकता था। तब उसका घनत्व बढ़ जाता और अधिक गठन आ जाती।

बृहस्पतिवार, 24 अक्तूबर, 1957

दादा धर्माधिकारी :

द्वितीय पुरुष को प्रथम पुरुष बनाने का नाम क्रान्ति है। इसी के अनुसार क्रान्ति के सारे मूल्य होंगे।

परिस्थिति को इतना बदल दो कि मनुष्य बुराई न कर पावे : यह सशस्त्र क्रान्ति है। इसे दर्शन में behaviourism कहते हैं—यह faith in human nature.

झूठ अपने नाम पर नहीं चलती। वह सत्य के रूप में लायी जाती है। Diplomacy = सत्य का चेहरा पहने झूठ जो अपने नाम पर नहीं चलता वह मूल्य नहीं। Categories of value = 1. शाश्वत 2. निरपेक्ष 3. अनिराकरणीय 4. अपने नाम पर चलता हो 5. उसे किसी दलील की ज़रूरत न होनी चाहिए।

(मनुष्य का स्वभाव न्याय नहीं दया है—गाँधी)

(गाँधी ने व्यक्तिगत गुणों को सामाजिक मूल्यों में बदला। काडवेल ने भी कुछ ऐसा ही कहा है।)

जो सार्वत्रिक नहीं वह स्वभाव नहीं। बिना सम्बन्ध के संघर्ष नहीं और संघर्ष

हमारा स्वभाव नहीं है। मनुष्य की सामाजिकता दूसरे को जिलाने में है।

मनुष्य ने अपने सारे सम्बन्धों एवं शरीर धर्मों को प्राकृतिक रूप से संस्कार बना दिया है।

Fit in the unfit to survive.

Thomas Huxley

यह सामाजिकता का सूत्र है (जिलाने के लिए जिओ)

अक्षम को सक्षम बनाना civilization की प्रक्रिया है।

X X X

विनोबा ने अस्तेय और अपरिग्रह को सामाजिक मूल्य बनाया।

शास्त्री ग्रन्थनिष्ठ होता है और क्रान्ति भी वस्तुनिष्ठ अथवा तत्त्वनिष्ठ। सामाजिक मूल्यों का आचरण जिसने अपने व्यक्तिगत जीवन में किया हो, वही परिस्थिति की परिपक्वता को समझ सकता है। समाज क्रान्ति का मूल्य ऐसा ही व्यक्ति पहचान सकता है।

साधन में साध्य छिपा होना चाहिए, ऐसा गाँधी का मत था।

साधन की पराकाष्ठा का नाम ही साध्य है।

क्रान्ति की प्रक्रिया ऐसी हो कि उसके बाद प्रतिक्रान्ति का भय न हो।

उत्पादन की सारी प्रेरणायें सब की सब परमार्थिक होती हैं।

रविवार, 3 नवम्बर, 1957

नयी कविता—

आस्था, अनास्था
शंका द्विविधा,
भय
मस्ती
Anxiety and distress
honesty
self awareness
universality in outlook
individual in character

लघु मानव : लघु परिवेश
लघु मानव : विराट परिवेश
अति मानव या शक्ति पुंज मानव
(मीण सर्प, केदार की कविताएँ)

क्षण में जीना
कल उगना।

इतिहास
पृष्ठभूमि—reasons – facts, newness
सैद्धान्तिक बात
पृष्ठभूमि

बृहस्पतिवार, 7 नवम्बर, 1957

हमारी राष्ट्रीयता की पृष्ठभूमि में पश्चिम है। इसने एक प्रकार की Intellectual Indolence दी है। हम प्रति वाक्य प्रामाणिकता ढूँढ़ते हैं। समस्याओं को स्वयं face करते डरते हैं।

इस समय हमारे देश में फिर एक प्रकार का revivalism आया है, यह आर्यसमाजी revivalism से अधिक उदार है, नयेपन को स्वीकारता है (जनसंघ, आर्यसमाज का उदय आकस्मिक नहीं है)—प्रथम इस प्रवृत्ति का प्रतिनिधि है, फिर से प्राचीन ज्ञान, शास्त्र, विद्या, दृष्टिकोण पर जोर दिया जाने लगा है। शायद यह नयी योजना, नयी शक्ति की पृष्ठिभूमि हो, पर इसका आत्यन्तिक स्वरूप कुछ घातक सा है।

शुक्रवार, 13 दिसम्बर, 1957

वाचयति नान्य—लिखितं
लिखितमनेन वाचयति नान्यः।
अयमपरोऽस्य विशेषः
स्वयमपि लिखितं स्वयं न वाचयति ॥

(वह व्यक्ति दूसरे का लिखा नहीं बाँच सकता, उसका लिखा और लोग नहीं बाँच सकते। यह विशेषता है कि वह खुद भी अपना लिखा नहीं बाँच सकता।)

रविवार, 15 दिसम्बर, 1957

अयं पटो मे पितुरंगभूषणम्।
पितामहाद्यैरुपभुंक्तयौवनं
अलंकरिष्यत्यथ पुत्रपौत्रकान्
मयाधुना पुष्पवदेव धार्यते ॥

मंगलवार, 16 दिसम्बर, 1957

अव्ययस्य अप्रमेयस्य निष्कलस्य अशरीरिणः।
साधकानां हितार्थाय ब्रह्मणो रूपकल्पना ॥

बृहस्पतिवार, 19 दिसम्बर, 1957

मान लीजिए कि भविष्य में साम्यवाद पूरी तरह स्थापित हो जाता है तो फिर उसमें आज के साहित्य की उपयोगिता, आज के यथार्थ का उपयोग केवल ऐतिहासिक जानकारी भर को ही होगा।

डॉ. रामविलास ने इस प्रश्न का उत्तर कुछ इस भाँति दिया था कि मनुष्य के संस्कार दीर्घव्यापी होते हैं। अतः उस व्यवस्था में भी इन संस्कारों से लड़ने और इनका अनिष्टकर रूप जानने के लिए इस साहित्य की आवश्यकता पड़ेगी, परन्तु फिर उसके बाद।

समस्या को दूसरे शब्दों में रखें: कालिदास के युग का यथार्थ तो आज जीवित नहीं रहा, वह social order नहीं है, पर जीवित क्यों है वह साहित्य। स्पष्ट है कि basically मनुष्य कुछ एक है, उसके राग विराग सदा प्रिय लगते हैं चाहे जैसी प्रणालियों के माध्यम से व्यक्त हुए हों। तो फिर social order मुख्य नहीं हुआ, मुख्य तो मानवीय संवेदनाओं का perception हुआ।

Soviet Literature के एक अंक में यह कहा गया कि फलां नाटक इसलिए श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि उसमें Party organisation का रूप नहीं उभरा है। यह समीक्षा क्षणिक ही तो होगी।

बृहस्पतिवार, 26 दिसम्बर, 1957

जीनियस की प्रशंसा नहीं होती। या तो उसकी निन्दा होती है या फिर applause होता है। प्रशंसा (Praise) सदैव 'मीडियाकर' की होती है। मसलन वह बहुत अच्छा पढ़ाता है, या उसका स्वभाव बहुत अच्छा है या वह बड़ा सज्जन है। ये सारे शब्द और विशेष 'मीडियाकर' के पर्याय हैं।

मंगलवार, 31 दिसम्बर, 1957

रात बारह बजे। उन्नाव से ठीक बारह बजे के सन्धिकाल में कानपुर स्टेशन उतरा। प्राचीन वर्ष समाप्त हुआ। नये वर्ष के स्वागत में स्टेशन पर चाय पी गयी। नया वर्ष—हर एक के लिए शुभ हो।

माथा सहलाती है
बाहर ले जाती है,
ठण्डी छत पर लिपट-लिपट जाती है
बतियाती है
बावरिया बिना बात
चाँदनी सोने नहीं देती सारी रात।

भारती

वही मधु ऋतु की गुंजित डाल
झुकी थी जो यौवन के भार
अकिंचनता में निज तत्काल
सिहर उठती— जीवन है भार
आज पावस नद के उद्‌गार
काल के बनते चिह्न कराल
प्रात का सोने का संसार
जला देती सन्ध्या की ज्वाल
अखिल यौवन के रंग उभार
हड्डियों के हिलते कंकाल
कुचों के चिकने काले व्याल
केंचुली, कांस, सिवार
गूंजते हैं सबके दिन चार
सभी फिर हाहाकार।

पन्त

राष्ट्रवाणी	होम्योपैथिक दवा नं. 11565
E/2 सहकार निवास	Prakash Pen 4692
गोखले रोड, दक्षिण दादर	R.N. Pandey 148, New
बम्बई-28	Bashiratganj-3609 Lucknow
	D.B. Trivedi, Kali Sadan-5473
	Sunder Bagh, Lucknow
केन्द्रीय समाज कल्याणं बोर्ड	श्री प्रभाकर तिवारी 3958
10, किचनर रोड, नयी दिल्ली	7/159 स्वरूप नगर, कानपुर
कामगर	डॉ. ब्रजेन्द्र स्वरूप 2499-4027
18, गुरुद्वारा रोड, नयी दिल्ली	D.A.V. College, KNP 3390
	K.P. Bhatnagar 2696
श्री नारायण मिश्र	कुँवर नारायण 3359
236/2 बाबूपुरवा, कानपुर	भगवती चरण वर्मा 4482
	अमृत लाल नागर 3501
'गोरी'	सूर्य नारायण चौबे 5506
नेशनल हाउस	Balkrishna Sri Gopal 3594
6, टुली रोड	(बलदुआ जी)

अपोलो ओपेरा, बुम्बई
राजेन्द्र यादव
5A Greek Church Road
Calcutta 26

प्रेम प्रिंटिंग प्रेस 3785
Pribhadas J. Ram 375
Sharma Restaurant
Chandulal Babu Ram 2678
Purushottam Kapur 2274
Railway Enquiry 2121, 2440
Roadways Enquiry 3444, 3259
रमा सिंह 3748
दिनेश 3202
पं. बंशीधर मिश्र (Royal hotel) 4033
सन्तशरण पाण्डेय 3135
रघुवीर सहाय मिश्र 3479
Conventions and revolt on poetry – Read Henny
डिप्टी का पड़ाव—म्युनिसिपल नार्मल ट्रेनिंग स्कूल

दद्‌दा 3862/2404
देवकुमार जैन 3033
ला. फूलचन्द गुप्त 5062
Radha Krishna Awasthi 8/4049
ला. मुरारीलाल 2234
Ramesh Awasthi 2554
त्रिलोकी टण्डन 5426
विद्यानिवास मिश्र 4245
Madhuri Nigam 5372

1958

स्मरण पृष्ठ

२२४ ।।) दो सौ चौबीस रुपये आठ आने साहित्य से

1957 का लेखा-जोखा मिलाने पर यह वर्ष अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहा। इस वर्ष कुछ अधिक गहराई के साथ साहित्यिक क्षेत्र में आया। 'कलजुग' के सम्पादन के माध्यम से फिर से नयी शक्ति मिली, बाहर से कुछ सम्बन्ध जुड़े।

कॉलेज में एम.ए. पढ़ाना प्रारम्भ हुआ। इस तरह लेखन और अध्यापन दोनों क्षेत्रों में कुछ बढ़ा, परन्तु अनुसन्धान-कार्य शून्यवत् रहा। 1958 का bid अब मुख्यतया अनुसन्धान और विदेश-गमन है।

पारिवारिक जीवन के सूत्र अधिक गहन हुए। रस अधिक सान्द्र हुआ।

आर्थिक दृष्टि से वर्ष कुछ बहुत अच्छा नहीं रहा। इस वर्ष लेखन और प्रसारण दोनों से ही आर्थिक लाभ बहुत थोड़ा रहा। ख़र्चे भी बढ़े रहे। एक प्रकार से यह वर्ष आर्थिक संकट का ही कहा जाना चाहिए।

दूसरा स्मरण पृष्ठ

अकृत्वा परसन्तापं अगत्वा खलमन्दिरम्।
अनुल्लंध्य सतां मार्गं, यत्स्वल्पमपि तद्बहु ॥

महाभारत

जइ पुच्छउ घर बड्डाइ तो बड्डा घर ओइ।
बिहलिअजण अब्भुद्धरण कंत कुडीरइ जोइ ॥

बुधवार, 1 जनवरी, 1958

1958 उल्लास की नयी दिशाएँ लावे।
1958 लम्बी यात्राओं का वर्ष हो।

1958 नूतन उपलब्धियों को बटोरे।

1958 सम्पन्नता का, शान्ति का वर्ष हो।

1958 मेरा वर्ष हो। मेरे परिवार का वर्ष हो।

1958 यानी नया वर्ष आ गया। सर्दी तो वैसी ही है, बदली भी लगभग वैसी ही है, फिर नयापन क्या? नयापन यही न, कि हम जानते हैं कि नया वर्ष आ गया। उसका साज-सरंजाम बाँधते हैं। नववर्ष की बधाइयाँ, शुभकामनाएँ दोस्तों के पास से आ रही हैं, जा रही हैं। कुछ रेस्तराँ आदि सजाए भी गये हैं और सबसे बड़ी बात यह कि मैं नयी डायरी लाया हूँ, उसके अछूते पृष्ठों पर पहला अक्षर लिखने का आनन्द—अरे वही तो नववर्षानन्द-सहोदर है। नये वर्ष तुम्हारा स्वागत—तुम आ रहे हो, इस ज्ञान का स्वागत।

बृहस्पतिवार, 2 जनवरी, 1958

ऊर्ध्वबाहुः विरौम्येष नैव कश्चित् शृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते ॥

व्यास

रविवार, 5 जनवरी, 1958

कबहूँ मिलिबौ, कबहूँ मिलिबो मन ही मन धीर धरैबौं करैं।
उरतें कढ़ि कै पै गरेतें फिरैं, मन की मन ही में सिरैबौ करैं।
कवि बोधा न चाव सरी कबहूँ, नित ही हरबा सों हिरैबो करैं।
सहतेई बनै कहते न बनै मन ही मन पीर पिरैबौ करैं।।

बोधा

जावक के भार पग धरति धरा पै भन्द
जल भार कुचन परी हैं छूटि अलकैं।
द्विजदेव तैसिपै विचित्र बरुनी के भार
आधे आधे दृगनि खुली हैं अध पलकैं।।
ऐसी छवि देखि अंग अंग की अपार
बार बार लोल लोचन सु काहू कै न ललकैं।
पानिप के भारन सँभारि ना सकति गात
लेव लचि लचि गात कचभारन के हलकैं।।

द्विजदेव

सोमवार, 6 जनवरी, 1958

रोस करि पकरि परौस तें लियाई घरै पी को
प्राणप्यारी भुजलतीन भरैं भरैं।
कहै पद्माकर न ऐसो दोस की जौ फेरि सखिन
समीप यों सुनावति खरैं खरैं।
प्यौ छल छपावै बात हँसि बहरावै तिय गद्गद
कण्ठ दृग आँसुन झरैं झरैं।
ऐसी धन धन्य धनी धन्य है सु ऐसो जाहि फूल की
छरी सों खरी हनति हरैं हरैं।

पद्माकर

माखन सौं तन दूध सौं यौवन
दधि सौं अधिकै उमगै ईठी।
जा छवि आगे छपाकर छाछ
समेत सुधा वसुधा सब सीठी।
नैनन नेह चुवै कवि देव
बुझावति बैन वियोग अँगीठी।
ऐसी रसीली अहीरी अहै तब,
क्यों न लगै मनमोहनै मीठी।

देव

मंगलवार, 7 जनवरी, 1958

अहीरिन मन कै महीरिनि उतरु न देय
नैना करै मथिनियाँ मनु मथि लेय।
लैकै सुघर खुरपिया पिउ के साथ
जैबे घन अमरैया सुअना हाथ।

प्रेम प्रीति कौ बिरवा, चले लगाय
सींचन की सुधि लीजौ, मुरझि न जाय।
जलवा में चमकै उजरी मछरिया
रन के बीच तरवारि।
सभा बीच मोरे पिउ की पगरिया
सिजिया मैं बिंदिया हमारि।

बुधवार, 8 जनवरी, 1958

इससे ज़्यादा कहने सुनने की ताब नहीं।
पर यह क्या? कहाँ चलीं बैठो भी तो
यह सब कहने का मतलब कुछ आदाब नहीं।

अच्छा हूँ पूछ लिया काफ़ी है यही दया
हाँ, और अपेक्षा नहीं, सुखी हूँ पर यह क्या

नस-नस में कुछ तीखा-तीखा-सा तैर गया।

मैं जो कुछ भी लिखता हूँ, व्यर्थ नहीं है।
हूँ जहाँ खड़ा, तुम अगर वहाँ आ जाओ
फिर कह न सकोगे—इसमें अर्थ नहीं है।

मालूम न पड़ती जीवन में कुछ खामी
सब कुछ था—होते रोटी के दो टुकड़े
अपने भी होते ठाठ उमर खय्यामी।

आ रहा बेदर्द झोंका मौत का,
ज़िन्दगी का दीपक बुझाने को।
हिल उठे हैं दूर कुछ संकेत,
अपने देश में मुझको बुलाने को।
आह ममता के कठिन ये पाश दाही
गला देंगे मुझे, मत बाँधो।
दो घड़ी यों देख पाओगे अधिक,
अब जा रहा हूँ फिर न आने को।

कवि स्व. सूर्यप्रताप सिंह

बृहस्पतिवार, 9 जनवरी, 1958

टेरि कहौं सिगरे ब्रज लोगनि
काल्हि कोऊ कितनो समुझैहे
माई री वा मुख की मुसुकानि
सम्हारि न जैहै न जैहै, न जैहै।

रसखान

कवि ठाकुर प्रीति करी है, गुपाल सो
टेरि कहौं सुनौ ऊँचे गले,
हमैं नीकी लगी सो करी हमने
तुम्हैं नीकी लगै न लगै तो भले।

ठाकुर

शुक्रवार, 10 जनवरी, 1958

राधा मोहन लाल कौ जिन्हैं न भावत नेह
परियौ मुठी हजार दस, तिनकी आँखिन खेह।

मतिराम

हाँसी में हरि हार हरौ रसखानि सु जो कहुँ नेकु तगा टुरि जैहे
एक ही मोती के मोल लला सिगरे ब्रज हाटक हाट बिकैहे।

रसखान

मन मोहन के बिछुरे संजनी
अजहूँ तो नहीं दिन द्वै गये हैं।
सखि वे, तुम वे, हम वे ही रहीं
पै कछू के कछू मन ह्वै गये हैं।

पद्माकर

शनिवार, 11 जनवरी, 1958

माँझी न बजाओ वंशी, मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है, जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे पल-पल डोलता
माँझी न बजाओ वंशी, मेरा प्रण टूटता
मेरा प्रण टूटता है जैसे तृण टूटता
तृण का निवास जैसे बन बन टूटता
माँझी न बजाओ वंशी मेरा तन झूमता
मेरा तन झूमता है, तेरा तन झूमता
मेरा तन तेरा तन एक बन झूमता।

केदारनाथ अग्रवाल

घुन खाये शहतीरों पर की बारह खड़ी विधाता बाँचे
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर बिसतुइया नाचे

बरसा कर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पाँच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के साँचे

नागार्जुन

रविवार, 12 जनवरी, 1958

कुन्दन कौ रंग फीको लगै, झलकै अति अंगन चारु गुराई।
आँखिन में अलसानि, चितौनि में मंजु बिलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकान नहीं, 'मतिराम' लहे मुसुकानि-मिठाई।
ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यों-त्यों खरी निखरै-सी निकाई।

x x x

मुंज भणइ मुणालवइ जुव्वण गयुं न झूरि
जो सक्कर सय खण्ड थिय सोविस मीठी चूरि।

x x x

हँसि हँसि यहु आलिंगन देल
मनमथ अंकुर कुसुमित भेल
जब निबि बन्ध खसाओल कान
तोहर सपथ हम किछु जदि जान।

x x x

ऐसा ही श्लोक सम्भवतः अमरुक में भी है—

धन्यासि या कथयति प्रियसंगमेऽपि
विश्रब्ध चाटुकशतानि रतान्तरेषु
नीवीं प्रति प्रजिहिते तु करे प्रियेण
सख्यः शयामि यदि किञ्चिदपि स्मरामि।

सोमवार, 13 जनवरी, 1958

प्रीतम-छबि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय
भरी सराय 'रहीम' लखि, आप पथिक फिरि जाय।

कोऊ कहूँ भूलि जिन कहियो, नेकी सों यह बाँनी
कैसे भिदै तासु उर अन्तर, ज्यों पाथर में पाँनी।

(प्रेमाभक्ति की 'बानी' सम्बन्ध में बख्शी हंसराज)

कानन दूसरौ नाम सुनें नहिं, एक ही रंग-रंग्यौ यह डोरौ।
धोखेहु दूसरौ नाम कढ़ै, रसना मुख बाँधि हलाहल बोरौ।

'ठाकुर' चित्त की वृत्ति इही, हम कैसे हुँ टेक तजैं नहिं भोरौ।
बावरी वे अँखियाँ जरि जाउ, जो साँवरौ-छाँड़ि निहारतीं गोरौ।

मंगलवार, 14 जनवरी, 1958

चंचल न दूजै नाथ, अंचल न खैंचो हाथ,
सोवै नेक सारिकाऊ, सुक तौ सोवायो जू।
मन्द करौ दीप दुति चन्दमुख देखियत,
दारिकैं दुराय आऊ द्वार तौ दिखायो जू।
मृगज मराल बालबाहिरै बिडारि देऊँ,
भायो तुम्हें केशव सो मोहूँ मनभायो जू।
छल के निवास ऐसे वचन विलास सुनि,
सौगुनो सुरत हू तें स्याम सुखपायो जू।

केशवदास

श्रम जलकन झलकन लगे, अलकनि कलित कपोल।
पलकनि रस छलकन लगे, ललकन लोचन लोल।

मतिराम

बुधवार, 15 जनवरी, 1958

फूल गुलाब के फूलि रहे दृग किंसुक से अधरा अधकारे।
झारि के लाज चतौवन किसलै सम जावक हैं अरुनारे।
तोष लखे मृग के मद की तन लीक अली अवली पतवारे।
मोद अनन्त भयो उर अन्तर आये बसन्त है कन्त हमारे।।

बलभद्र मिश्र

जहाँ ते पधारे, मेरे नैननि ही पाँव धारे,
बारे पे बिचारे प्रान, पैंड-पैंड पै मनो।
आतुर न होहु हाहा नैकु फैंट छोरि बैठों,
मोहि वा बिसासी को है ब्योरो बूझिबे घनौ।
हाय निरदई कों हमारी सुधि कैसैं आयी,
कौन बिधि दीनी पाती दीन जाति कैं मनो।

घनानन्द

कहिबे को विथा, सुनिबे को हँसी, को दया सुनि के उर आनतु है।
अरु पीर घटे, तजि धीर सखी, दुख को नहीं कापै बखानतु है।

कवि बोधा कहे में सवाद कहा, को हमारी कही सुनि मानतु है।
हमें पूरी लगी कै अधूरी लगी, यह जीव हमारोई जानतु है।

बोधा

अति छीन मृणाल के तारहु तो तेहि ऊपर पाँव दै आवनो है।
सुई बेह कै द्वार सकै न तहाँ, परतीत को टाँड़ो लदावनो है।
कवि बोधा अनी घनी नेजहुँ ते चढ़ि,तापै न चित्त डिगावनो है।
यह प्रेम को पन्थ करार है री, तरवार की धार पै धावनो है।

बोधा

सूधी चितौनि चितै न सकै औ सकै न तिरीछी चितौनि चितै
गुड़ियान को खेलिबो फीको लगै अरु कामकला को बिलास कितै।
लरिकापन यौवनसंधि भई दुहू बैरु को भाव मिलै न हितै
बिबि चुम्बक बीच को लोहो भयो मन जाइ सकै न इतै न उतै।

चिन्तामणि

शुक्रवार, 17 जनवरी, 1958

तोहिं गयी सुनि कूल कलिन्दी के हौहूँ गयी सुनि हेलि हमारी।
भूली अकेली कहुँ कर पी मन में लखि कुंजन पुंज अध्यारी।
गागर के जल के छलके घर आवत लौं तन भीगिगो भारी।
कम्पत त्रासन ये ही बिसासिनि मेरी उसास रहे न सम्हारी।

कुमारमणि भट्ट

वा निरमोहिनि ने रूप की रासि जऊ डर हेतु न जानति ह्वैहै।
बारहिं बार बिलोकि घरी घरी सूरतितो पहिचानति ह्वैहै।
ठाकुर या मन की परतीति है जो पै सनेह न मानति ह्वैहै।
आवत हैं नित मेरे लिए इतनौ तौ विसेष कै जानति ह्वैहै।

ठाकुर

अपने-अपने सुठि गेहनि मैं चढ़े दोऊ सनेह की नाव पै री।
अँगनान में भीजत प्रेम भरे समयो लखि मैं बलि जाऊँ पै री।
कहै ठाकुर दोउन की रुचि सौं रंग ह्वै उमड़े दोउ ठाँव पै री।
सखी कारी घटा बरसै, बरसाने पै गोरी घटा नन्दगाँव पै री।

ठाकुर

शनिवार, 18 जनवरी, 1958

काल्हि ही गूँथी बबा की सौं मैं
गज मोतिन की पहिरी अति आला।
आयी कहाँ तै यहाँ पुखराज की
संग एई जमुनातट बाला।
न्हात उतारी हौं बेनी प्रवीन
हँसै सुनि नैनन तैन रसाला।
जानति ना अंग की बदली
सब सों बदली बदली कहै माला।

बेनी प्रवीन

या जोवन अंजुरी को जल है
ज्यौं गोपाल भावै त्यों दीजै।

रविवार, 19 जनवरी, 1958

कमला क्लब में बच्चन जी का कविता-पाठ था। श्री राधेश्याम टण्डन और...जी बच्चन जी से अपनी पुरानी मित्रता भुनाना चाह रहे थे। एक समय के साथी आगे चलकर जब भिन्न स्थितियों में होते हैं, तो कमजोर उसे अपने पुराने दिनों के स्तर पर लाकर सन्तोष-लाभ करता है। जबकि इसी बात में सशक्त की महत्ता छिपी होती है। राधेश्याम जी का बार-बार बच्चन जी को Class fellow कहना इसी inferiority का द्योतक था।

अमीरों की आतिथ्य-भावना का स्वरूप ही दूसरा है—नौकर व्यवस्था करें।

बुधवार, 22 जनवरी, 1958

"I hate all bungling like sin; but most of all, bungling in state affairs, which produces nothing but mischief to thousands and millions" and "Mind, the politician will devour the poet. To be a member of the states, and to live amid daily jostlings and excitements, is not for the delicate nature of a poet. His song will cease, and that is in some sort to be lamented."

Goethe in his last conversation with Eckermann, March 1, 1832.

बृहस्पतिवार, 23 जनवरी, 1958

These terms, classic and romantic, stand for more than difference of

style. The classic sees man as master and the romantic as victim of his environment.

Alex Comfort

शनिवार, 25 जनवरी, 1958

आयी खेलि होरी घरैं नवल किसोरी कहूँ
बोरी गयी रंग में सुगन्धनि झकोरै है।
कहैं 'पद्माकर' इ कंत चलि चौकी चढ़ि
हारन के बारन के फंद-बन्द छोरै है।
घांघरे को घूमुनि सुं अरुनि दुबीचै दाबि,
आँगी हूँ उतारि सुकुमारि मुख मोरै है।
दन्तन अधर दाबि दुनरि भई सी चाँपि
चौहर पचौहर के चूनर निचौरै है।

x x x

देखु पद्माकर गोविन्द को अमित छवि
संकर-समेत विधि आनन्द सों बाढ़ो हैं।
झिलिकत झूमत मुदित मुसुकात गहि
अंचल को छोर दोऊ हाथन सों आढ़ो है।
पटकत पाँय होत पैंजनी झुनुक रंच
नैंकु नैंकु नैनन तें नीरकन काढ़ो है।
आगे नन्दरानी के तनक पय पीवे काज
तीन लोक-ठाकुर सो ठुनुकत ठाढ़ो है।

शुक्रवार, 31 जनवरी, 1958

आज महीना बीत गया। डायरी लाया था तो सोचा था कि रोज़ कुछ न कुछ लिखूँगा। पर कितना नीरस बीत गया, जैसे कुछ लिखने को सूझा ही नहीं।

शनिवार, 1 फरवरी, 1958

चन्द्रकान्ता के नृत्य से अधिक देखने योग्य उन रूप-लोभियों की मुद्राएँ जो उसके चारों ओर मँडरा रहे हैं पर छू नहीं पा रहे।

शनिवार, 8 फरवरी, 1958

कुछ पुस्तकें लाया हूँ; पुस्तकें कविताओं की: मालिक उनके भिन्न-भिन्न।
एक अध्यापक हैं—कविता विशेष पर लिखा है व्यतिरेक, अप्रस्तुत प्रशंसा।

उद्दीपन, विभाव, और रोला छन्द।

एक शोधक हैं–अध्यापक भी शायद–इस पंक्ति पर कालिदास की छाया है और इससे मिलती-जुलती पंक्ति घनानन्द और रत्नाकर की भी है।

एक पाठक की है–

कविता मन को छूती है।

भाषा कुछ टेढ़ी है।

एक पत्रिका है जिस पर तीन वाक्य किसी विद्यार्थी ने लिखे हैं–

1. Come along with me and let me kiss you.
2. My kisses are not so dangerous as the fatal kisses of Juddu.
3. You will be kissed by me very affectionately.

आज स्टेशन पर एक T.C. महोदय की आँखों में एक लड़की के प्रति ऐसा सतृष्ण भाव दिखा कि मन हुआ कि उस लड़की से कह दूँ कि भाई इन्हें Kiss कर लेने दे।

सोमवार, 10 फरवरी, 1958

आज लखनऊ से लौटते समय एक सज्जन को यह जानकर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि मैं हिन्दी का अध्यापक और अवस्थी होकर भी प्राचीन मान्यताओं को बदलने वाला हूँ। हिन्दी के अध्यापक के साथ रूढ़ि का भाव अन्योन्य भाव से लगा हुआ है। उसे प्राचीनता-प्रेमी होना ही चाहिए। वास्तव में यह वह मनोभूमि है जिसके माध्यम से 'नयी कविता' के प्रति स्थापित सारे दृष्टिकोण को समझा जा सकता है।

उन महाशय का कथन है कि कपड़ों में भी विशेषता होती है। मसलन विवाह के समय जामा, मौर इत्यादि का पहनना नितान्त आवश्यक होता है। इसके माध्यम से एक पवित्रता का Stimulus मिलता है। उन्हें कौन समझाये कि कपड़े वातावरण (प्राकृतिक जलवायु) और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप ही होते हैं। कुरता, धोती गरम देश के लिए हैं, पर पैण्ट, कोट आज की Industrial age की पोशाक है।

शुक्रवार, 14 फरवरी, 1958

जिससे खोई थी नींद मीर ने कल
इब्तदा फिर वही कहानी की।

शनिवार, 15 फरवरी, 1958

मुद्दतें गुज़रीं, तेरी याद भी आयी न हमें–
और हम भूल गये हों तुझे, ऐसा भी नहीं।
ग़ौर कर इस कैफ़ियत पर कुछ समझ यह सोज़ो-साज़–
इश्क में दिल दर्द हो जाता है, दिल दुखता नहीं।

फ़िराक़

कहते हैं गम से परेशान हुए जाते हैं
ये नहीं कहते कि इन्सान हुए जाते हैं।

जोश

अहले खिरद ने ये दिन दिखाये
घटते गये इन्सां, बढ़ते गये साये।

जिगर

तेरी बात से गो दिल में मलाल ऐ यार आता है
मगर जब देखता हूँ तेरी सूरत, प्यार आता है।

अकबर इलाहाबादी

रविवार, 16 फरवरी, 1958

बर्क ने काश न देखा होता
आज नशेमन अपना होता।
दे न सका आवाज़ अगर मैं
मुड़ के तुम्हीं ने देखा होता।
कैसे कहूँ वो गुज़रे इधर से
दिल तो यकीनन धड़का होता।

सोमवार, 17 फरवरी, 1958

न किसी की आँख का नूर हूँ न किसी के दिल का क़रार हूँ
जो किसी के काम न आ सके, मैं वह एक मुश्ते गुबार हूँ।
मैं नहीं हूँ नगमा-ए-जां-फ़िज़ा कोई सुनके मेरी करेगा क्या?
मैं बड़े ही दर्द की हूँ सदा किसी दिलजले की पुकार हूँ
मेरा रूपरंग बिगड़ गया, मेरा हुस्न मुझसे बिछुड़ गया
जो चमन खिज़ां से उजड़ गया मैं उसी की फ़स्ले-बहार हूँ
कोई फ़ातिहा पास आये क्यों, कोई चार फूल चढ़ाये क्यों
कोई आके शम्मा जलाए क्यों कि मैं बेकसी का मज़ार हूँ।
न ज़फ़र किसी का रक़ीब हूँ
न ज़फ़र किसी का हबीब हूँ
जो उजड़ गया वह नसीब हूँ
जो उजड़ गया वह दयार हूँ।

ज़फ़र

मंगलवार, 18 फरवरी, 1958

इश्क में तबीयत ने ज़ीस्त का मज़ा पाया।
दर्द दी दवा पायी, दर्द बेदवा पाया।

ग़ालिब

इससे बढ़ कर दोस्त कोई दूसरा होगा नहीं
सब जुदा हो जायें, लेकिन ग़म जुदा होता नहीं।

ज़िगर

इश्क सुनते थे जिसे हम, वोह यही है शायद
खुद बखुद दिल में है एक शख़्स समाया जाता।

हाली

दर्द से वाक़िफ़ न थे, ग़म से शनासाई न थी
हाय क्या दिन थे, तबीयत जब कहीं आयी न थी।

जलील मानिकपुरी

हम जिस पै मर रहे हैं वोह है बात ही कुछ और
आलम में तुझसे लाख सही, तू मगर कहाँ।

हाली

बुधवार, 19 फरवरी, 1958

मेरे दर्द की कहानी तेरे नाम तक न पहुँचे
मैं नज़र से पी रहा था तो ये दिल ने बद्दुआ दी
तेरा हाथ ज़िन्दगी-भर कभी जाम तक न पहुँचे।
उन्हें अपने दिल की ख़बरें मेरे दिल से मिल रही हैं
जो कहीं मैं रूठ जाऊँ तो पयाम तक न पहुँचे।
जो नक़ाबे-रुख़ हटा दी तो ये शर्त भी लगा दी
उठे हर निग़ाह लेकिन कोई बाम तक न पहुँचे।
ये निगाह बेनियाज़ी तुझे बेवफ़ा मुबारक
मगर ऐसी बेरुख़ी क्या कि सलाम तक न पहुँचे।
नयी सुबह पै नज़र है मगर साथ यह भी डर है
रफ़्ता-रफ़्ता यह सुबह भी कहीं शाम तक न पहुँचे।

शकील बदायूँनी

बृहस्पतिवार, 20 फरवरी, 1958

माधव हम रहल दुर देस
केओ न कहइ कुसल सनेस
युग-युग जीवहू वसकु लाख कोस
हमर अभाग हुनक नहिं दोस।
हमर करम भेल विहि विपरीत
तेजलनि माधव पुरबिल प्रीत
हृदयक वेदन बान समान
आनक दुख आन नहिं जान।

कुछ खटकता तो है, पहलू में रह-रह कर
अब खुदा जाने तेरी याद है, या दिल मेरा।

ज़िगर मुरादाबादी

शुक्रवार, 21 फरवरी, 1958

मैं चाहता हूँ कि बस एक ही ख़याल रहे
मगर ख़याल से पैदा ख़याल होता है।

अकबर इलाहाबादी

यह सर जो सलामत है दीवार को देखूँगा
या मैं रहूँ ज़िन्दां में या वो रहे ज़िन्दां में।

बिगड़ी है कुछ ऐसी कि बनाये नहीं बनती
इससे है ये ज़ाहिर कि यही हुक़्मे-ख़ुदा है।

इश्क में हर शै उल्टी नज़र आती है
लैला नज़र आता है, मजनूं नज़र आती है।

ऐ दिल तेरी अदा-ए-वहशत देखी
तेरी नैरंगी-ए-तबीयत देखी
खुलता नहीं भेद कि ए दिल तुझमें
हँस देने की रोते-रोते आदत देखी।

शनिवार, 22 फरवरी, 1958

बस कि दुश्वार है, हर काम का आसां होना
आदमी को भी मयस्सर नहीं, इन्सां होना।
रात दिन, ग़र्दिश में हैं सात आसमां
हो रहेगा कुछ न कुछ, घबरायें क्या?

मेहरबां होके बुला लो मुझे, चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूँ, कि फिर आ भी न सकूँ।

हम वहाँ हैं, जहाँ से हमको भी
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती।

कहते हैं जीते हैं उम्मीद पे लोग
हमको जीने की भी उम्मीद नहीं।

बोझ वह सर से गिरा है, कि उठाये न उठे
काम वह आन पड़ा है, कि बनाये न बने।

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी, कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान, लेकिन फिर भी कम निकले।

रविवार, 23 फरवरी, 1958

सौदा ख़ुदा के वास्ते कर क़िस्सा मुख़्तसर
अपनी तो नींद उड़ गयी तेरे फ़साने से।

सौदा

गो हाथ को जुम्बिश नहीं, आँखों में तो दम है
रहने दो अभी साग़र-ओ-मीना मेरे आगे

ग़ालिब

चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक के साथ तेज शै
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर को मैं।

ग़ालिब

बृहस्पतिवार, 6 मार्च, 1958

गाढालिङ्गनवामनीकृतकुचप्रोद्भूतरोमोद्गमा
सान्द्रस्नेहरसातिरेकविगलच्छ्रीमन्नितम्बाम्बरा।
मा मा मानद! माति मामलमिति क्षामाक्षरोल्लापिनी
सुप्ता किं नु मृता नु किं मनसि मे लीना विलीना नु किम्॥

अमरुकशतक

किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगाद्
अविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण।
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णोः
अविदितगतयामा रात्रिरेवं व्यरंसीत्॥

उत्तररामचरितः राम का कथन

(अनुराग के सम्बन्ध से गाल सटाकर कुछ-कुछ धीरे-धीरे क्रम के बिना कहते हुए और एक-एक बाहु को गाढ़ आलिंगन में लगाते हुए हम दोनों की, बीते हुए प्रहरों का भी पता न लग कर रात ही बीत गयी।)

शुक्रवार, 7 मार्च, 1958

त्रस्तैकहायनकुरंगविलोलदृष्टेः
तस्याः परिस्फुरितगर्भभरालसायाः।
ज्योत्स्नामयीव मृदुबालमृणालकल्पा
क्रव्याद्भिरंगलतिका नियतं विलुप्ता॥

उत्तररामचरितः राम का कथन

(डरे हुए एक साल के मृग के सदृश चंचल नेत्रों वाली और कम्पित गर्भ-भार से आलस्ययुक्त उन सीता का कोमल छोटे मृणाल के सदृश, चन्द्रिका से बने हुए की तरह और लता तुल्य कृश शरीर हिंस्र जन्तुओं से निश्चय ही नष्ट हुआ होगा।)

शनिवार, 8 मार्च, 1958

नाहं यियासोर्गुरुदर्शनार्थमर्हामि कर्तुं तव धर्मपीडाम्।
गच्छार्य पुत्रैहि च शीघ्रमेव विशेषको यावदयं न शुष्कः॥

अश्वघोषः सौन्दरानन्द

(गुरु के दर्शनार्थ जाना चाहते हो, धर्माचरण में बाधा नहीं डालूँगी। जाओ, आर्यपुत्र निस्सन्देह, पर शीघ्र इस विशेषक की गीली रेखाओं के सूखने के पूर्व ही लौट आओ।)

आशां महत्तरां मन्ये पर्वतादपि सद्रुमात्।
आकाशादपि वा राजन्नप्रमेयैव वा पुनः ॥

(राजन्, मैं आशा को वृक्ष सहित पर्वत से भी बहुत बड़ी मानता हूँ, अथवा वह आकाश से भी बढ़कर अप्रमेय है।)

नास्ति जातु रिपुर्नाम मित्रं नाम न विद्यते।
सामर्थ्ययोगाज्जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥

(न कभी कोई शत्रु होता है और न मित्र होता है, आवश्यक शक्ति के सम्बन्ध से लोग एक-दूसरे के मित्र और शत्रु होते हैं।)

रविवार, 9 मार्च, 1958

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।
विश्वासाद् भयमुत्पन्नमपि मूलानि कृन्तति ॥

(जो विश्वासपात्र न हो, उस पर कभी विश्वास न करें और जो विश्वासपात्र हो, उस पर भी अधिक विश्वास न करें, क्योंकि विश्वास से उत्पन्न हुआ भय मनुष्य का मूलोच्छेद कर डालता है।)

प्रह्लाद और इन्द्र की कथा से ज्ञात होता है कि जहाँ शील है, वहाँ धर्म; जहाँ धर्म, वहाँ सत्य; जहाँ सत्य, वहाँ सदाचार; जहाँ सदाचार, वहाँ बल; जहाँ बल, वहीं पर लक्ष्मी का निवास।

आशा या आशावान् की दुर्बलता के समान और किसी की दुर्बलता नहीं है।

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत् प्रशस्यते ॥

सोमवार, 10 मार्च, 1958

स्तुति-रूपी कन्या अभी क्वाँरी ही है, क्योंकि सज्जनों को वह पसन्द नहीं आती और असज्जनों को वह पसन्द नहीं करती।

एक संस्कृत सुभाषित

यस्मिन् महीं शासति वाणिनीनां
निद्रां विहारार्धपथे गतानाम्।
वातोऽपि नास्रंसयदंशुकानि
को लम्बयेदाहरणाय हस्तम् ॥

मंगलवार, 11 मार्च, 1958

असारे खलु संसारे, सारद्वयमुदाहृतम्।
कासारः शर्करायुक्तः, कंसारिचरणद्वयम्।
असारे खलु संसारे, सारं श्वसुरमन्दिरम्।
हरो हिमालये शेते, हरिः शेते पयोनिधौ।
असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्।
काश्यां वासः सतां संगः गंगाम्भः शिवदर्शनम्।
असारे खलु संसारे, सारद्वयमुदाहृतम्।
काव्यामृतरसास्वादः संगतिः सुजने जने।

बुधवार, 12 मार्च, 1958

यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा
स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः।
सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ
रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते ॥

(जो मेरा कौमार्य हरण करने वाला था, वही आज मेरा पति है, आज भी वैसी ही चैत की रात है, वही विकसित मालती की गन्ध है, कदम्ब फूलों से सुवासित परिणत वय का वही अनिल है, मैं भी वही हूँ, किन्तु जाने क्यों रेवा के तट पर कदम्ब तरुछाया में जो सुरत-व्यापार की लीलाएँ हुई थीं, उन्हीं में मेरा चित्त उत्कण्ठित हो रहा है।)

बृहस्पतिवार, 13 मार्च, 1958

पिब खाद च वामलोचने यदतीतं वरगात्रि तन्न ते।
नहि भीरु गतं निवर्तते समुदयमात्रमिदं कलेवरम् ॥

पुरातनप्रबन्ध, पृ. 19

(भोज की कन्या को नीलपरी दर्शनियों का उपदेश)

(खाओ-पियो, मौज करो, जो बीत गया सो कभी नहीं लौट सकता। अगर तुमने तय किया और कष्ट उठाया, तो वह तुम्हारे लिए बिल्कुल बेकार है, क्योंकि वह जो गया सो गया। असल बात यह है कि यह शरीर सिर्फ़ जड़ तत्त्वों का संघात मात्र है।)

मा गर्वमुद्वह कपोलतले चकास्ति
कान्तस्वहस्तलिखिता मम मंजरीति।
अन्यापि कापि सखि भाजनमीदृशानाम्
वैरी न चेद्भवति वेपथुरन्तरायः।।

(ऐ सखी, तू प्रिय की अपने हाथों अंकित मंजरी को इस प्रकार दिखाती हुई

गर्व कर रही है, यह उचित नहीं है। दूसरी कोई भी इस प्रकार के सौभाग्य का पात्र बन सकती थी, यदि हाथ की कँपकँपी बीच में विघ्न न पैदा कर देती।)

शुक्रवार, 14 मार्च, 1958

'धम्मपद' से

दीघा जागरतो रत्ति दीघं सनतस्स योजनं।
दीघो बालानां संसारो सद्धम्मं अविजानतं॥

5/1

(अनिद्रित के लिए रात बड़ी होती है, थके हुए के लिए रास्ता, सद्धर्म के अज्ञानी मूर्खों के लिए संसार (आवागमन का चक्र) बड़ा होता है।)

न पुप्फ गन्धो परिवातमेति
न चन्दनं तगरमल्लिका वा
सतञ्चगन्धो परिवातमेति
सब्बा दिसा सप्पुरिसो पवाति।

4/11

(चन्दन हो या तगर अथवा चमेली पुष्प की गन्ध हो, वायु के विपरीत नहीं जा सकती। पर सज्जन सत्पुरुष की सुगन्धि वायु के विपरीत भी फैलती है। सत्पुरुष सभी दिशाओं में अपनी गन्ध से व्याप्त हो जाते हैं।)

सील दस्सन सम्पन्नं धम्मठं सच्चवादिनं
अत्तनो कम्म कुव्वानं तं जनो कुरुते पियं।

16/9

(श्रेष्ठ चरित्र, अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न धार्मिक, सत्यवादी एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति जनप्रिय होता है।)

शनिवार, 15 मार्च, 1958

कर्णोत्तालितकुन्तलान्तनिपतत्तोयक्षणासंगिना
हारेणेव वृतस्तनी पुलकिता शीतेन सीत्कारिणी।
निर्धौताञ्जनशोणकोणनयना स्नानावसानेऽङ्गना
प्रस्यन्दत्कबरीभरा न कुरुते कस्य स्पृहार्द्रं मनः॥

क्षेमेन्द्र

(कर्णमूल से लेकर केशान्त पर्यन्त गिरते हुए जलकणों के संसर्ग से चक्राकार स्तनों पर हार की शोभा को धारण करने वाली, शीत से रोमांचित होकर सीत्कार करती हुई, अंजन के धुलने से लाल नेत्र प्रान्त वाली, खुले केशों से जल बरसाती

हुई रमणी स्नान की समाप्ति पर किसके मन को अभिलाषा से द्रवीभूत नहीं कर देती है।)

रविवार, 16 मार्च, 1958

एकस्य तिष्ठति कवेर्गृह एव काव्य–
मन्यस्य गच्छति सुहृद्भवनानि यावत्।
न्यस्याविदग्धवदनेषु पदानि शश्वत्
कस्याऽपि सञ्चरति विश्वकुतूहलीव।।

काव्यमीमांसा : 4 अध्याय

(कुछ कवि ऐसे होते हैं, जिनकी रचना अपने घर की चहारदीवारी के भीतर ही विचरण करती रह जाती है। कुछ कवियों की रचनाएँ उनके मित्रों के भवनों तक पहुँच जाती हैं और कुछ कवि ऐसे होते हैं, जिनकी रचना सभी के मुख पर पदन्यास करती हुई विश्वभ्रमण की इच्छा पूर्ण करती है, अर्थात् उनकी रचना के पद पठित तथा अपठित सभी के मुख पर स्थान प्राप्त कर लेते हैं।)

सोमवार, 17 मार्च, 1958

जीर्णा तरिः सरिदतीव गभीरनीरा
बालाः वयं सकलमित्थमनर्थहेतुः।
निस्तारबीजमिदमेव कृशोदरीणां
यन्माधव! त्वमसि सम्प्रति कर्णधारः॥

जगदानन्द राय (पद्यावली, 270)

(नौका जीर्ण है, श्री यमुना जी भी अति गम्भीर नीरपूरित हैं एवं हम सब बालिका हैं। ये तीनों बातें यद्यपि अनर्थ की कारण हैं, तथापि हे माधव! कृशोदरी गोपिकाओं के निस्तार का एक-मात्र बीज तो यही है कि इस समय तुम कर्णधार हो।)

मंगलवार, 18 मार्च, 1958

साहित्य की परिभाषा–

अपूर्वं यद्वस्तु प्रथयति विना कारणकलाम्
जगद्भावप्रख्यं निजरसभरात्सारयति च।
क्रमात्प्रख्योपाख्या प्रसरसुभगं भासयति तत्
सरस्वत्यास्तत्त्वं कविसहृदयाख्यं विजयतात्।।

अभिनवगुप्ताचार्य

बुधवार, 19 मार्च, 1958

स्थलं नास्ति क्षणं नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः।
तेन नारद नारीणां सतीत्वमुपजायते।।

पद्मपुराण, सृष्टि खण्ड, 49/20

(स्थान, समय और व्यक्ति के अभाव में ही नारी सती रह सकती है।)

शुक्रवार, 21 मार्च, 1958

Give give thine all
All thou ha'st and do'st
Give till thy hands and heart
And head are free.

Unknown

शनिवार, 22 मार्च, 1958

When I am dead, my dearest
Sing no sad songs for me;
Plant thou no roses at my head
Nor shady cypress tree.
Be the green grass above me
With showers and dew drops wet
And if thou wilt remember
And if thou wilt forget.
I shall not see the shadows
I shall not feel the rain
I shall not hear the nightingale
Sing on, as if in pain.
And dreaming through the twilight
That doth not rise nor set,
Haply I may remember
And haply may forget.

C. Rosseth

रविवार, 23 मार्च, 1958

About Love
I am one who when love
Inspires me, note, and in the
way that he

Dictates within, I give the outword

Dante

Love comes at his hour,
Comes with the flowers in spring,
Leaving the land of his birth,
Kypros, beautiful isle
Love comes, scattering
Seed for man on earth.

Theognis

सोमवार, 24 मार्च, 1958

To bring the dead to life
Is no great magic,
Few are Wholly dead :
Blow on a dead man's embers
And a live flame will start.

Let his forgotten griefs be now,
And now his withered hopes;
Subdue your pen to his handwriting
Until it prove as natural
To sign his name as yours.

Limp as he limped
Swear by the oaths he swore;
If he were black, affect the same;
If he had gouty fingers,
Be yours gouty too.

Assemble tokens intimate of him
A ring, a hood, a chairs—
Around these elements then build
A home familiar to
The greedy revenant.

So grant him life, but reckon
That the grave which housed him
May not be empty now!

You in his spotted garments
Shall yourself lie wrapped.

Robert Graves

(इसे Historical Novel के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।)

शनिवार, 5 अप्रैल, 1958

1. The Philosophy of literary form — Kenneth Burke
2. The Armed Vision. — S.E. Hyman
3. The critical performance — Hyman
4. The fire and the fountain — John press
5. Poet's grammar — Francis Berry
6. Teaching poetry — James Reeves
7. Form in Modern Poetry — H. Read
8. The disinherited Art — Perspectives in criticism series California Uni press
9. The Elements of critical theory
10. Context of criticism — Harry Levin
11. Critics and criticism — R.S. Crane
12. Methods and aims in the study of Literature — Cornell University Studies in English Literature — Lane Cooper

The Institutes of Vishnu — Jolly J
An Intepretation of India's Religious History 1911 — Hume R.A.
Comprehensive History of the Religion of Hindus. 3 Vols. 1962-5. — Pol. D
Sri Ras Panchadhyayi — Trivedi M.A.
सुधर्म बोधिनी — लाड़िलीदास (with ललिताचरण जी)
History of Dvaita Literature — B.N. Krishna, Murari Sharma — Annamalai Varsity
Development of Hindu Iconography — J.M. Banerjee
सिद्धान्त रत्नाकर — निम्बार्क सम्प्रदाय वाले विश्वेश्वरशरण
श्रृंगार रस सागर — बा. तुलसीदास
कीर्तन संग्रह — कांकरोली
रसिक अनन्यमाल — भगवत मुदित (नागरी प्रचारिणी सभा)

रसिक अनन्य सार — जतन लाल (बाबा वंशीदास)
रसिक माल — उत्तम दास (बाबा वंशीदास)
श्री राधावल्लभ का भाष्य — राजा विश्वनाथ सिंह, रीवाँ

(म.प्र. अग्रवाल, दरबार कॉलेज वाले)

अनन्य अली की वाणी (सम्पूर्ण) बाबा वंशीदास तथा बाबा तुलसीदास से प्राप्त
गो. रूपलाल की वाणी — बाबा राधाकृष्ण चरणदास से प्राप्य
रसिकदास की वाणी — बाबा वंशीदास से प्राप्य
ब्रज प्रेमानन्द सागर — मुखिया ब्रजवल्लभदास
History of Medieval Hindu India — C.V. Vaidya
Monograph on the Religious (Seets) in India — D.A. Pai

(A.U. Library)

The Bhakti Doctrine in Shandilya Sutra

Dr. B.M. Barua

सोमवार, 21 अप्रैल, 1958

Cyrano De Bergerac — A Play by Edmond Rostand

"You think a man who has handsome face must be a fool." Roxane

"While I stood in the drarkness underneath, other climbed up to win the applouse the Kiss."

Cyrano to Roxane

".....I had never known womanhood and its sweetness for you,
My mother did not love to look at me
I never had a sister later on,
I feared the mistress with a mockery, Behind her smile.
But you, because of you, I have had one friend not quite all a friend,
Across my life, one whispering silken gown."

Cyrano

I never but loved one man in my life,
and I have lost him - twice.....
"Gascoynes are free fighters, free lovers and free spenders."

Cyrano

"...homesickness a hunger more noble than the hunger of the flesh."

Laugh and be merry together like brothers akin,

guesting a while in the rooms of beautiful inn,
glad till dancing till steps stops,
and the lilt of music ends,
Laugh till the game is played,
and be you merry, my friends.

John Masefield
(Laugh and be merry)

रविवार, 11 मई, 1958

सन्ध्या, आँधी पानी में भीगते हुए महाराजा कॉलेज होस्टल मैसूर पहुँचे। बत्ती ग़ायब, भोजन भयंकर, चारपाई पर मैं सोऊँ या मेरे ऊपर वह सोये। देखा जायगा।

रविवार, 25 मई, 1958

आज शिवसमुद्रम, सोमनाथपुरम्, श्री रंगपट्टनम, वृन्दावन गार्डेन्स गया। भयंकर थकावट है, पर शिवसमुद्रम का वह बीहड़ सौन्दर्य, बल्कि भयानक सौन्दर्य जो एकबारगी अपनी ओर खींचता है और वृन्दावन का कृत्रिम सौन्दर्य कितने विपरीत हैं। सौन्दर्य की categories complimentation में ही सदा नहीं होतीं।

शनिवार, 31 मई, 1958

यह पृष्ठ तो कुछ याद रखने के लिए है, पर क्या-क्या याद रखूँ। स्मृतियाँ तो ऐसी हैं कि आती हैं चली जाती हैं–पीछे छूटे साथियों की, आगे चले जाने वाले यायावरों की, साथ में रस-भीनी बातें करने वाले संगियों की। पुण्य न कर पाने के, या रसीले पाप करने के अवसर चूक जाने की स्मृतियाँ, सभी तो मोहक हैं। पर–पर ज़िन्दगी को तो आगे बढ़ना है, कुछ आज साथ हैं, कुछ कल होंगे, पर समस्या आ जाती है कि, कुछ को हम बराबर साथ रखना चाहते हैं, पर वह हो नहीं पाता। मसलन आज मैं चाहता था कि इस मैसूर की झील के किनारे मैं कमलेश के साथ घूमूँ पर वह कानपुर में है, पर आशा का बन्धन तो है ही।

सोमवार, 2 जून, 1958

आषाढस्य प्रथमदिवसे, मेघमाश्लिष्टसानु
वप्रक्रीड़ापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।
तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधान हेतो
रन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।

x x x

"रूपं दर्शय नाऽत्र शंकरभयं सर्वे वयं वैष्णवाः।।"

(हे कामदेव) अपना रूप दिखाओ, यहाँ शंकर का भय नहीं है। हम सभी वैष्णव हैं।

"शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः।"

मंगलवार, 3 जून, 1958

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणी भारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः।।

उ.मे. 19

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा

पू.मे. 6

(गुणी जन से याचना करना अच्छा है, चाहे वह निष्फल ही रहे; अधम से माँगना अच्छा नहीं, चाहे वह सफल भी हो।)

बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते
न पीयते काव्यरसः पिपासितैः।
न विद्यया केनचिदुद्धृतं कुलं
हिरण्यमेवार्जय निष्फलाः कला।

माघ

बुधवार, 4 जून, 1958

क्व प्रस्थितासि करभोरु घने निशीथे
प्राणाधिको वसति यत्र जनः प्रियो मे।
एकाकिनी, वद कथं न विभेषि बाले
नन्वस्ति पुंखितशरो मदनः सहायः।

कवीन्द्रवचनसमुच्चय (509 संख्या)

(इस गहरी रात में ही करभोरु तुम कहाँ जा रही हो? प्राणों से भी अधिक प्रिय जो प्राणी है, वह जहाँ रहता है, वहीं जा रही हूँ। हे बाला, तुम्हें अकेले डर क्यों नहीं लग रहा है? क्यों, पुष्पित शर मदन मेरा सहाय जो है।)

शनिवार, 7 जून, 1958

बेलूर होयसला राजाओं की कुछ समय तक राजधानी रहा तथा हलेबीद या द्वार समुद्र की विनष्टि के बाद विजयनगर के राजाओं की राजधानी भी बना रहा।

यहाँ का केशव मन्दिर विष्णुवर्धन के द्वारा 1117 ई. में बनवाया गया। The

most exquisite specimen of Hoysala architecture which according to Ferguson, "combines constructive prosperity with exuberant decoration to an extent not often surpassed in any part of the world.

मुख्य मन्दिर में गर्भगृह, सुरभासी या vestibule, नवरंग या केन्द्रीय हॉल जिसमें तीन द्वार हैं पूर्व, दक्षिण और उत्तर। मुख्यद्वार (पूर्व) के स्तम्भों पर रति और कामदेव की सुन्दर मूर्तियाँ। द्वार के दाहिने ओर महाभारत की कथाएँ या रामायण की कथाएँ। इस पक्खे पर आठ स्तरों पर विविध मूर्तियाँ खुदी हैं।

Above the rails with their fringes are pierced stone windows or perforated screens, nearly twenty in number of which ten are sculptured with puranic scenes and the rest decorated with geometrical designs. The bracket figures on the pillar supporting the caves are of great artistic beauty. Two of them represent Durga and three huntresses holding a bow and the other shooting birds with arrows. Most of the other figures are either dancing or playing on musical instruments or dressing or decorating themselves. उत्तरी स्वर्गद्वार पर चौरी डुलाने वाली। उत्तर-पूर्व पर एक संहार का दृश्य—गरुड़ शरभ पर आक्रमण कर रहा, जो कि सिंह पर, जो कि हाथी पर, जो कि साँप पर, जो कि चूहा निगल रहा तथा एक सन्त इन पर आश्चर्य की दृष्टि डाल रहा है।

बृहस्पतिवार, 12 जून, 1958

आज एक कविता Quest में पढ़ी। अंग्रेजी में Emily Folk की कुछ यों है—

अनाहूत यह दिन जो आया है
कितना नीरस, अजब उदासी लाया
लौटा दूँ कैसे इसको
अनायास जीने तक चढ़ जो आया है।

भावानुवाद

बृहस्पतिवार, 19 जून, 1958

Script from A.I.R.
Indira Bhawan Hotel में Dinner.

सोमवार, 23 जून, 1958

आज हैदराबाद में उस्मानिया यूनिवर्सिटी देखने जा रहा था—रास्ते में प्रभुत्व ज्वर अस्पताल पड़ा, पर Government fever Hospital के लिए यह हिन्दी थी और बगल में ही मिनिस्टरों के बँगले थे। शायद प्रभुत्व का ज्वर वहीं से आया था।

शनिवार, 28 जून, 1958

एक वकील साहब अदालत में बड़ी देर तक कारण बताते रहे कि उनके मुवक्किल का गवाह क्यों नहीं हाज़िर हो सका। सबसे अन्त में जो कारण उन्होंने बताया, वह था कि 'गवाह मर गया है।'

X X X

कादम्बरी में वर्णन आता है कि राजा के न रहने पर दरबार के सारे जन जिस समय असंयत हो उठते थे, उस समय लोग भिन्न-भिन्न कार्यों में मशगूल हो जाते थे, 'कुछ चतुर लोग बन्दीजनों से राजा के पूर्वपुरुषों की यशोगाथा सुनते थे।'

रविवार, 29 जून, 1958

एक गोष्ठी हो रही थी कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह के सम्मान में। वे बड़ौदा यूनिवर्सिटी में हिन्दी के अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं। काफ़ी से अधिक प्रशंसा और औपचारिकता के बाद उन्होंने बोलना प्रारम्भ किया in most unimpressive way. हमारे यहाँ के अध्यापकों का एक बड़ा दोष है कि वे विशेषण-बहुल भाषा और एक प्रकार के Pseudo-Philosophism में बहुत पड़ जाते हैं। कुछ Literary Jargons और catch words हैं, जिनसे श्रोता पर असर डाला जाता है। आज इस प्रवृत्ति के बढ़िया उदाहरण फिर मिले।

कुँवर जी बोल रहे थे...हिन्दी की ज्योतिर्मयी आध्यात्मिक परम्परा को आगे बढ़ना ही चाहिए। मैं कुछ समझ ही नहीं पा रहा था कि हिन्दी की यह कौन-सी ज्योतिर्मयी परम्परा है और फिर आध्यात्मिक परम्परा—राम ही मालिक है। अगर आध्यात्मिक परम्परा ही है, तो फिर भाई दर्शन लिखो—धर्म-सिद्धान्तों में सर मारो—रस के, भौतिकता के इस क्षेत्र में क्यों आते हो। भक्ति काल के सूरदास जैसे श्रेष्ठ कवियों की भी—जिन्होंने कि धर्म को लोक-रस से मज्जित कर दिया—उसके आध्यात्मिक अर्थ किये जाने लगे हैं। जाने कब यह चिन्ता जाड्य दूर होगा, जब केवल टीकाएँ करना दूर होगा अपने मतलब की। 'हमसे कत करत रिसैयों' जब आध्यात्मिक अर्थ में प्रयुक्त होता है, तो ऐसा लगता है कि मिठाई से प्रहार करने का काम लिया जा रहा है। पर हिन्दी की ज्योतिर्मयी परम्परा के ठेकेदारों से कौन, कुछ, कह भी कैसे सकता है। वास्तव में हिन्दी के बौद्धिक क्षेत्र में एक बहुत बड़ी गड़बड़ी या overlapping है। यहाँ पर साहित्य-सर्जक, समीक्षक, अध्यापक, अनुसंधाता और भाष्यकार के क्षेत्र अलग-अलग नहीं हैं। और सबके क्षेत्र अलग-अलग भी हों, पर अध्यापक को जैसे यह जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त है कि वह हर दिशा में अधिकार जमाये रखे।

समीक्षक बन कर तो वह शायद माँ के पेट से आता है। विद्यार्थी की चमकदार

रचनाओं को भी वह अपने स्पर्श से मलिन करता रहता है। हर नये सिद्धान्त का विरोध करने का उसने ठेका ले रखा है। साहित्य सृजन करने वाले के लिए उसके मन में कोई सम्मान नहीं है। Ph.D. करने की, अनुसन्धान की तो उसे सहज व्यावसायिक आवश्यकता पड़ती है और साहित्य का व्याख्याता होने के कारण टीका, व्याख्या या भाष्य तो कम से कम वह कर ही सकता है। इस कारण हिन्दी के साहित्यिक क्षेत्र में अनेक भ्रम फैलते रहते हैं। इन लोगों के कारण नवीन रचनाओं के लिए कभी शिक्षा के क्षेत्र में अवकाश ही नहीं मिलता। विद्यार्थी की नवीन विचार-सरणि को भी ये दबाते हैं। परिणाम यह है कि हिन्दी का पाठक-समाज इतना अप्रबुद्ध है कि जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। उस समाज में केवल catch words की प्रशंसा होती है—मौलिक या विचारोत्तेजक बात का वहाँ कोई सम्मान न होगा।

.....जी ने जब कहा, कवि का काम असुन्दर में-से सुन्दर को निकालना है। वह सत्य का ग्रहीता ही नहीं, दाता भी है। जब.....जी ने कहा.....'मानव सत्य के पास पहुँच कर ही महान बनता है।' तो खूब ताली पिटेगी। पर यदि कोई वक्ता सत्य का लेखक के लिए क्या 'मूल्य' होता है—सौन्दर्य की अनुभूति की प्रक्रिया क्या होती है, इनके बारे में कुछ नया विचार रखना चाहे, तो सचमुच ही कुछ न मिलेगा।

बुधवार, 2 जुलाई, 1958

हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ :

1. 10-11 शती में देशी भाषाओं में श्रेष्ठ साहित्य नहीं मिलता जब कि तक्षण और स्थापत्य कला उस समय चरम सीमा पर थे। संस्कृत काव्यशास्त्र के मूर्धन्य आचार्य उसी समय हुए हैं।
2. प्रेम की allegory भक्त कवियों में किस रूप में आयी है। संवेदना को दर्शन और फिर Logical conclusion तक।
3. वीरगाथा काल की court poetry और रीतिकाल की court poetry में अन्तर?
4. क्या प्रेमाभक्ति revival है भक्ति का? किन सामाजिक परिस्थितियों में वह आगे बढ़ी?
5. 19वीं शती में जिस समय उर्दू में ग़ालिब और मीर बढ़ रहे थे (जो मुस्लिम शासन का decadant काल था वह) उस समय हिन्दी में एक तरफ़ से Mediocre ही क्यों हो रहे थे?
6. तात्त्विक रूप से भक्तिकाल और रीतिकाल का अन्तर क्यों बढ़ा?
7. Shifting of Literacy centres later रीतिकाल में बैसवारा एवं बुन्देलखण्ड, आधुनिक काल में काशी, कानपुर, काशी-प्रयाग और फिर अब दिल्ली—छोटे centres लखनऊ, पटना, कलकत्ता, हैदराबाद, बम्बई....

शुक्रवार, 4 जुलाई, 1958

लोग कहते हैं कि काव्य की भाव-भूमि नहीं बदलती—नहीं। भाव मूल में भले ही नहीं बदलें पर संचरण-भूमि बदल जाती है।

आज लोक व्यवहार का ज्ञान, कान्तासम्मित उपदेश, कीर्ति की प्राप्ति कवि के लक्ष्य नहीं रहे। वह यथार्थ के गहरे अनुभव से सम्पृक्त होना चाहता है, मात्र व्यवहार ज्ञान नहीं। कान्तासम्मित उपदेश कवि से अधिक कहानीकार, उपन्यासकार, निबन्धकार ने ले लिया है। 'जीवन की व्याख्या', 'जीवन की आलोचना', 'आत्माभिव्यक्ति', 'spontaneous outburst of personal feelings', मानवता के अंतस्तल' में निहित एकता की उपलब्धि चाहने लगे हैं। "युगचेतना को स्वर देना कवि का कर्तव्य माना जाने लगा है, मानव संस्कृति का निर्माण करना उसका लक्ष्य समझा जाने लगा है। अब उसे दरबार को जीत कर कवियश पाने का अधिकारी नहीं माना जाता।"

(ह.प्र. द्विवेदी)

वास्तव में यह बात वैसी ही है कि कोई कहे गुप्त काल की करेन्सी और आज की करेन्सी में कोई अन्तर नहीं है। अर्थशास्त्र का तनिक भी ज्ञान रखने वाली इसके पीछे की जटिल अर्थव्यवस्था, Modern Currency and banking and foreign exchange की समस्याएँ हैं। फिर आज के सिक्के का जितना महत्त्व और जितना बड़ा क्षेत्र है, उतना पहले नहीं था। लगभग यही दशा आधुनिक साहित्य की है।

प्राचीन काल में अभ्यास द्वारा काव्य सृजन-शक्ति का उपलब्ध होना स्वीकार किया गया है। पर आधुनिक काल में कवि को ऐसी कोई छूट देने को प्रस्तुत नहीं है। अब चमत्कृति ही महत्त्वपूर्ण नहीं रही।

राजशेखर ने काव्य मीमांसा में काव्य रचना की अपेक्षा काव्य पाठ को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है—

करोति काव्यं प्रायेण संस्कृतात्मा यथा तथा।
पठितुं वेत्ति स परं यस्य सिद्धा सरस्वती।

यह दरबारी काव्य का दर्शन था। पर आज, पाठ करने वाले को गायक कह देते हैं। यह सामान्य परिवर्तन नहीं है। राजशेखर ने तो सुन्दर पाठ करने वाले को वाग्देवी का वल्लभ तक कह दिया है।

विज्जका ने उन सहृदयों को श्रद्धा अर्पित की है, जो कवि के अभिप्राय को समझकर फिर गद्गद कण्ठ से इस प्रकार काव्य पाठ करते हैं कि कण्ठावरोध हो जाता है।

कवेरभिप्रायमशब्दगोचरं
स्फुरन्तमार्द्रेषु पदेषु केवलम्।
वदद्भिरंगैः कृतरोमांविक्रियैः
जनस्य तूष्णीं भवतोऽयमञ्जलिः।

पर आज का पाठक कहाँ मस्ती से झूम-झूम कर पाठ करता है। द्विवेदी जी के कथनानुसार उसका मन बुद्धि से सूक्ष्म आँखों से भर गया है। वह शोषक-शोषित के वर्ग-संघर्ष देखने लगता है। फ्रायड के प्रतीक एवं जुंग के Archetypal Patterns को ढूँढ़ने लगता है।

(काव्य में भी तो गुण होना चाहिए। ऐसा गुण जो चुगलखोर और दुर्जनों को भी सहृदय बना दे। जिस काव्य को सुनकर मात्सर्याहतचेता व्यक्ति रोमांच-कण्टकित न हो उठे, उसका सिर अपने आप न हिल उठे, उसके कपोल देश पर लालिमा न दौड़ पड़े, उसकी आँखों में आँसू न आ जायँ और उसकी वाणी अध्यारोपित वस्तु के कीर्तन में तन्मय न हो उठे, तो भला वह भी कोई काव्य है।)

संस्कृत कवि वल्लभ के श्लोक का रूपान्तर

मंगलवार, 8 जुलाई, 1958

कवि के status में अन्तर होता आया है—वैदिक काल में वह क्रान्तदर्शी है। ईश्वर भी 'कविर्मनीषी' है।

काव्येतिहास युग में वह प्रतिभावान् और व्युत्पन्न (सर्वज्ञ) माना जाने लगा। पर आधुनिक काल में उसकी सर्वज्ञता समाप्त हो गयी है। कलाओं का स्वतन्त्र क्षेत्र एवं स्वतन्त्र प्रभाव मान लिया गया है। अब वह राजकुमारों जैसे कोमल मति वालों (साहित्य दर्पण-काव्य मीमांसा) को ज्ञान सिखाने का साधन नहीं रही।

बुधवार, 9 जुलाई, 1958

चिन्तासमं यस्य रसैकसूतिरुदेति चित्राकृतिरर्थसार्थः।
अदृष्टपूर्वो निपुणैः पुराणैः कविः स चिन्तामणिरद्वितीयः।

राजशेखर : काव्यमीमांसा

(जिसके श्लोक का अर्थ, समझ में आते ही, सहृदयों को रस से ओतप्रोत कर देता है और जिसकी कविता में विचित्र कल्पनाओं का वह अलौकिक स्फुरण होता है, जो पुराने कवियों की दृष्टि से भी बाहर है, उस अद्वितीय कवि का नाम 'चिन्तामणि' है।)

बृहस्पतिवार, 31 जुलाई, 1958

आज प्रेमचन्द जयन्ती थी। कॉलेज में भी मनायी गयी और नगर में भी। दोनों जगहों के व्याख्यान वही stereo-typed, full of catch words। हिन्दी का पाठक कितना कम प्रबुद्ध होता है, इसके उदाहरण फिर मिले। प्रेमचन्द के नये मूल्यांकन को किसी ने करना ही नहीं चाहा और यदि एकाध ने कुछ attempt किया भी तो उसे applause नहीं मिला। 'वे भारतीय जीवन के कलाकार थे', 'वे आदर्शोन्मुख यथार्थवादी थे', 'वे विश्व के या भारत के श्रेष्ठ कलाकार थे' आदि phrases ही

गूँजते रहे—पर ये चीजें वे जिन अर्थों में थे, किसी ने भी इसे नहीं कहना चाहा।

एक दूसरी प्रवृत्ति और मिली। जो लोग संस्मरणात्मक बोल रहे थे, वे प्रेमचन्द की अपेक्षा अपने बारे में अधिक कह रहे थे। कोई कह रहा था कि मैंने ही उन्हें हिन्दी में लिखने के लिए प्रेरित किया, किसी ने बताया कि मेरी नियुक्ति की स्वीकृति उन्होंने ही post की। फिर ऐसी-ऐसी बातें कि प्रेमचन्द ने विभिन्न वर्गों का चित्रण किया, इसलिए वह किसानों के ही नहीं थे। एक सज्जन 'ग़बन' को सर्वश्रेष्ठ मान रहे थे।

सोमवार, 4 अगस्त, 1958

अप्रयासबोध और सहजानुभूति में अन्तर होता है। अंगद का पैर कह देने से अप्रयासबोध होता है सहजानुभूति नहीं।

शुक्रवार, 22 अगस्त, 1958

Preface to Les Miserables

So Long as there shall exist, by reason of law and custom, a social condemnation, which in the face of civilisation, artifiially creates hells on earth, and complicates a destiny that is divine, with human fatality; so long as the three problems of the age —the degradation of man by proverty, the ruin of woman by starvation, and the dwarfing of childhood by physical and spiritual right–are not solved, so long as in certain regions, social asphyxia shall be possible; in other words, and from yet more extended point of view, so long as ignorane and misery remain on earth, book like this can not be useless.

Victor Hugo, 1862 A.D.

रविवार, 24 अगस्त, 1958

It is a sign of mediocre intelligence to be able to fix one's attention upon details when comtemplating a great work of art; on the other hand, it is a sign of the mediocrity of a work of art (poetic or plastic) if one can not get beyond the details, if they, so to speak, impede the way to the whole.

C.Friedric Hebbel in his Journal (German writer)

Lyric poetry has something childlike about it, dramatic poetry something manly, epic poetry something senile.

C.F. Hebbel

A genuine drama may be compared to one of those great buildings which have almost as many passages and rooms below the earth as about it. Ordinary poeple only the former; the architect knows the latter also.

C.F. Hebbel

To present the necessary, but in the form of the accidental; that is the whole secret of dramatic style.

Ibid

The understanding no more makes poetry than salt makes food, but it is necessary to poetry as salt is to food.

C.F Hebbel

सोमवार, 25 अगस्त, 1958

That aspect of literature which symbolizes the substance of the originating experience we may call diction; the aspect which symbolizes the unity of the substance in a single act of comprehensive attention; we call the form of a piece of literature.

L. Abercrombie

बुधवार, 27 अगस्त, 1958

व्यंग्य और हास्य में अन्तर यह है कि पहले में मुद्रा गम्भीर रहनी चाहिए और हास्य में दंतुलियाँ खुल जाती हैं।

बृहस्पतिवार, 28 अगस्त, 1958

कुछ व्यक्तियों की एक गोष्ठी जमी हुई थी। Anatomical Analysis चल रही थी। वह जो सरला नटवानी है न B.A. पार्ट II में, उसकी आँखों में गज़ब का पानी है और अमिता सेन तो बिल्कुल 'मुग्धा प्रतीत होती है। भई, मेरी मानो या न मानो, पर सरोजिनी शर्मा की चाल अद्‌भुत है, शोभा है अंगरेज़ी विभाग की। आपने कुछ सुना Mrs. चावला का affair कपूर से चल रहा है। "अरे भाई इस समय तो सारे संसार में संगम करहिं तलाब-तलाई की स्थिति है।"

बाद में पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि सब-के-सब यूनिवर्सिटी की कक्षाओं में अनुशासन पर लम्बे उपदेश देने वाले अध्यापक थे।

शुक्रवार, 29 अगस्त, 1958

अध्यापक मित्र ने फ़तवा दिया, आज का सारा साहित्य चौपट चिन्तामणि है। प्रसाद की दार्शनिकता, पन्त का सौन्दर्य, गुप्त का तुक विधान, हरिऔध के गठे संस्कृत छन्द लिखने को साधना चाहिए और आजकल के कवियों की साधना कॉफ़ी हाउस है। इन लोगों ने केवल निराला का फूहड़पन और अस्पष्टता ले ली है। आचार्य पण्डित वहीं बैठे थे—बोल पड़े, क्या बक रहे हैं। पन्त, प्रसाद ने हिन्दी भाषा को चौपट कर दिया। साधना, काहे की साधना। दालमण्डी में तमाखू बेची प्रसाद

ने और ज़िन्दगी-भर निठल्लू बने घूमे पन्त। अरे लिखते थे हरिऔध जी, लिखते हैं सनेही जी। क्या मजाल जो छन्द के बीच सुई भी डाल सके।

एक पुराने कवि की आत्मा कहीं भटक आयी—बोल पड़ी—'क्या हरिऔध और सनेही की रट लगा रखी है। ऊटपटाँग खड़ीबोली घसीटने लगे। ब्रजभाषा का कसाव और चमक लाने के लिए साधना के खराद पर चढ़ना पड़ता है और ये बीसवीं सदी वाले साधना करना क्या जानें।

मैं वहाँ से भाग आया कि कहीं अभी रत्नाकर और भारतेन्दु को भी साधना की कसौटी से उतारने के लिए बोधा, पद्माकर या बिहारी न टूट पड़ें। एक चिट लिखकर सिर्फ मित्र के पास छोड़ दी कि कुछ नयी पत्र-पत्रिकाएँ, कुछ नया रचनात्मक साहित्य पढ़ और समझकर फ़तवा देने की कृपा करें—वरना आपकी साधना भी फ़तवेबाज़ी तक ही सीमित रह जायेगी।

(ठाकुर का कवित्त—"लोगन कवित्त करिबो खेल करि जानो है")

बृहस्पतिवार, 4 सितम्बर, 1958

अच्छा वक्ता वह होता है, जो अधिकांशतः नयी बातें न कहकर श्रोताओं की जानी हुई बातों को ही आकर्षक ढंग से दुहरा देता है। (इसमें अत्यन्त intellectual श्रोता अपवादस्वरूप होते हैं।)

बुधवार, 10 सितम्बर, 1958

"Everything that exalts life increases at the same time, its absurdity."

A. Camus

"By his very function, the artist is a witness for liberty and it is a justification for which he sometimes has to pay dearly."

Camus

"It is not the combat which makes artist out of us, but art which compels us to be combatants.

All normal people......had more or less desired the death of those they loved, at some time or another."

Camus

शुक्रवार, 12 सितम्बर, 1958

Talk from A.I.R. Lucknow at 8 P.M.

सोमवार, 22 सितम्बर, 1958

Talk from A.I.R. Lucknow at 2 P.M.

रविवार, 21 दिसम्बर, 1958

युगचेतना की फाइल में हेनरी जेम्स तथा फार्स्टर के उपन्यास सम्बन्धी विचार।

बुधवार, 24 दिसम्बर, 1958

सात लोक :
(1) पृथ्वी (2) अन्तरिक्ष (3) स्वर्ग (4) महर (5) जन (6) तपस् (7) सत्य।

सात पाताल :
अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

बृहस्पतिवार, 25 दिसम्बर, 1958

हरिदासी सम्प्रदाय के कवियों में 18वीं शती में नाम बढ़ाना—
(1) रूप सखी—वाणी सिद्धान्त रत्नाकर में

निम्बार्क में जोड़ना—
(1) रूप रसिक देव

1959

बृहस्पतिवार, 1 जनवरी, 1959

1959 स्वास्थ्य का वर्ष हो।

1959 अध्ययन का वर्ष हो।

1959 उच्च डिग्री का वर्ष हो।

1959 कीर्ति का वर्ष हो।

1959 सम्पन्नता का वर्ष हो।

1958 की बैलेन्स शीट मिलाने पर लगता है कि यदि दिसम्बर कष्ट, रोग, व्यथा न लाता तो श्रेष्ठ वर्ष कहा जा सकता था। लगभग 10,000 मील की लम्बी यात्रायें की गयीं (वर्ष प्रारम्भ की इच्छा पूरी हुई)। भाषाविज्ञान का अध्ययन हुआ। रिसर्च भी कुछ आगे बढ़ी। इस वर्ष इण्टर का परीक्षक पद भी मिला। रेडियो एवं साहित्य से भी आमदनी हुई। साहित्य के क्षेत्र में भी कुछ-न-कुछ बढ़ा, परन्तु वर्ष की समाप्ति बुरी हुई। चालू वर्ष के लक्ष्य स्वास्थ्य एवं Ph.D. हैं। भगवान सफलता दे।

वर्ष 1958 में साहित्य तथा परीक्षा सम्बन्धी आय रही 724/-

शनिवार, 3 जनवरी, 1959

अरे रे वाहदि काण्ह णाव छोड़ि
डगमग कुगति ण दीहि
तई इत्थि णइहि सन्तार टेइ जो चाहहि सो लेहि।

(प्राकृत पैंगलम् 12/9)

रविवार, 4 जनवरी, 1959

To speak ill of others is a dishonest way of praising ourselves.

Will Durant

मंगलवार, 6 जनवरी, 1959

अस्पताल से घर आ गया। डॉ. मिश्र की दवा शुरू हुई।

मंगलवार, 13 जनवरी, 1959

डॉ. लक्ष्मी बहादुर निगम की दवा शुरू हुई।

बृहस्पतिवार, 22 जनवरी, 1959

High Potency दवा ली।

शनिवार, 24 जनवरी, 1959

मुंशी अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह।

रविवार, 25 जनवरी, 1959

लेखक सम्मेलन।

शनिवार, 31 जनवरी, 1959

सोचा था कि इस बार 1 जनवरी को ही डायरी लाकर लिखना शुरू कर दूँगा। पर हैलट अस्पताल में विवश पड़ा रहा। डायरी कहाँ मिली और मिलती भी तो लिखता क्या? परेशान खुद, पर दूसरों को New Year Greetings केवल wish करता रहा। संयोग भी देखो, आज जब महीने का अन्तिम दिन है तो टहलते-टहलते 'साहित्य निकेतन' आ पहुँचा और यह डायरी मिल गयी, तो लिखने बैठा हूँ। 1 जनवरी का पेज पूरा भर डाला। पर जैसे नया वर्ष तो पुराना पड़ चुका है, वह उत्साह कहाँ से लाऊँ? पर चलो मान लो कि जब से डायरी मिली तभी से नया वर्ष। डायरी नववर्ष की प्रतीक। पर ऐसे कितने ही प्रतीक हैं जो subjective हैं और इसी कारण खोखले भी—असाधारणीकृत।

रविवार, 1 मार्च, 1959

III C, सायंकाल 6:30, गद्य।

मंगलवार, 3 मार्च, 1959

सायंकाल 9 बजे भुवनेश जी घर पर किताबें और पेपर्स

बुधवार, 4 मार्च, 1959

The Novel is a mirror carried along a roadway.

Stendhal

बृहस्पतिवार, 5 मार्च, 1959

आज के जीवन में वैयक्तिक intuition का स्थान expert advice लेती जा रही है और हम लोग इसके कला पर पड़ने वाले प्रभाव पर कम ध्यान देते हैं। आज की स्थिति में व्यक्ति यह अनुभव करता है कि सरकार अधिकतम जानती है—This is the age of knowledge.

शुक्रवार, 6 मार्च, 1959

Difference between vision and fact.

Poetry is responsible to the logic of poetry, which is partly the poet's fidelity to those sequences of imagery which are the thoughtful processes of the imagination, partly in his power to develop imagery and metaphor correctly and partly in his observation of the (often unwritten) rules of technique.

बुधवार, 13 अगस्त, 1959

आज मैं defeated महसूस कर रहा हूँ और उस defeat का frustration. M.A. class में humiliation मुझे लगातार उठानी पड़ रही है—पिछले वर्ष के propaganda से ही (इसमें प्रमुख हाथ राजकुमार, ब्रजलाल एवं शायद प्रेम नारायण जी एवं सिद्धनाथ का भी रहा है।) इस वर्ष वह चरमसीमा पर है जब सूरवाले लड़कों ने आने से इनकार किया। लड़कियाँ तो चली गयीं।

मैं ईमानदारी से कहना चाहता हूँ कि जिस दिन मैं यह अनुभव कर लूँगा कि मैं सचमुच ही अच्छा टीचर नहीं हूँ, उसी दिन कॉलेज की नौकरी छोड़ दूँगा—इस पेशे को छोड़ दूँगा। पर मन है कि 'यह अभिमान गवैहें गये हू न प्रान' कि मैं विभाग के बहुत-से लोगों से अच्छा पढ़ाता हूँ और अच्छे लोगों के standard पर ही पढ़ाता हूँ।

यह challange भी देना चाहता हूँ कि मुझे full class का compulsory पेपर दे दिया जाये और यदि मैं उसके साथ न्याय न कर पाऊँ, Reputation न बना लूँ तो मैं इस्तीफा दे दूँ। हो कैसे यह?

पर सचमुच ही जो authority में होते हैं, वे कितना अधिक परेशान कर सकते हैं। खासकर जब राजकुमार जैसा clerk प्रधान बन बैठता है, तब यही होता है—

"रहिमन चुप है बैठिये, देखि दिनन को फेर
जब नीके दिन आइहें, बनत न लगिहै देर।"

1960

Personal Memoranda

Policy No.	– 7210393
Insurance falls due on	– 21.12.60
Radio No.	– 981951 (Regd) J447112 Model No. TO 298
License No.	– J. 447112 Expires 31.12.60
Telephone No.	– 26004, 26305
Telegraphic Address	– Awasthi, Bagia, Kanpur
Name	– Devi Shanker Awasthi
Address	– 32/147, Mani Ram Bagia, Kanpur

मंगलवार, 5 जनवरी, 1960

Tale Review
Sidney Review
London Magazine
Partison Review–

कहानी, कथा-कहानी, वसुधा, नयी जिन्दगी, लहर, सरस्वती, दक्षिण भारती, युग प्रभात, इकाई, वसुधा।

साहित्य कोश : प्रथम भाग
: द्वितीय भाग

अनगता की आँखें, शब्द दंश : कल्पना
मधुरिमा – ज्ञानोदय
सती मैया का चौरा-कृति
संतुलन की रचना और समीक्षा

बृहस्पतिवार, 7 जनवरी, 1960

हिन्दी शब्द बनाइये

Integral, structure, form, texture, material, matter, finished denominator, norms, common, pattern, inter subjectives, signs, explication.

Craftsmanship (काश्तकारिता)

शनिवार, 9 जनवरी, 1960

Section S–9
Ministry of Education
Block No. A, Room No. IW3,
Curzon Road, Barracks
New Delhi
(Self addressed envelope 8"x4")
for Rumanian scholarship)

रविवार, 10 जनवरी, 1960

M.A. Extra class at 3 P.M.
11 AM. D.B.S. staff Meeting in the games room of D.A.V. college.

सोमवार, 11 जनवरी, 1960

५०) K.P. Bhatanagar com. volume
२१) आगरा खर्च 31 दिसम्बर, 59
१५) आगरा खर्च 6 जनवरी upto
३) डाक खर्च
८६)

आगरा ता. 28.3.60 को जाना

मंगलवार, 19 जनवरी, 1960

"Colour and fragrance and manifestations of spiritual energy are rare."

Ranade

(मीरा, रामानन्द में है)

बृहस्पतिवार, 21 जनवरी, 1960

Literary essays of Ezra Pound
Ed. T.S. Eliot

सोमवार, 25 जनवरी, 1960

५४) कपड़ा
८) सुधीर का पैंट
४) टिकट मेरे पास
२) टिकट अम्मा
८०) गेहूँ
२६) मसाला
५०) पेरी व परजों के कपड़े
२४०) शक्कर 2 बोरा
२५) चावल

बुधवार, 27 जनवरी, 1960

1. Literary Criticism 620.9
   Short history, 31744
2. Forms of modern Fiction 823.04 van. 31728
3. South India to Indian culture
   8934 Aij, 21824
4. पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ–22333 890 45A.Aqr
5. रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय 27563 891.2 Sing
   Religious consciousness 150.2

शुक्रवार, 29 जनवरी, 1960

१०) जमा
७०)

४) दिदिया ता. 3.4.60
२) टिकट
।=) दही
।।=) रिक्शा शक्कर के लिए
१) श्याम के A/c में

Notes after 31 जनवरी

Agra Varsity Library

1. The Disinherited of Art. 820.01, F 37 D

By soloman Fishman (Writer and Background)

2. The study of Literature – David Daiches 820.01 D 135

शुक्रवार, 5 फरवरी, 1960

Kavi Sammelan

Shri N.D. Singh

11, Pusa Road, New Delhi Telephone 36286

रविवार, 7 फरवरी, 1960

In the losing battle that the plot fights with the character, it often takes a cowardly revenge. Nearly all novels are feeble at the end. This is because the plot required to be wound up.

मंगलवार, 9 फरवरी, 1960

जनेऊ खर्च

८१)	धर्मशाला
२६)	मसाला
८०)	गेहूँ
७२)	शक्कर
२)	सूप

शनिवार, 20 फरवरी, 1960

क्वालिटी हॉल में सवेरे 9:30 पर नीरज अभिनन्दन समारोह।

रविवार, 21 फरवरी, 1960

Extra class B.A. 11 : 10 A.M.

बृहस्पतिवार, 25 फरवरी, 1960

Seminar ललित कला/विद्यापीठ की ओर से। Valerio House में 4:30 बजे

7 A.M. M.A. Extra class.

रविवार, 28 फरवरी, 1960

अशोक हॉल में कथा-साहित्य पर 3 बजे बोलना है।

2 बजे शर्मा रेस्तराँ में चाय। Dedication ceremoney of B.N. Gupta's Book.
12:30 बजे बाबू पुरवा
5 बजे K.K. College B.Y.S.

29 फरवरी के वाद Notes में

उपन्यासकारों की कविताओं पर एक लेख—धर्मयुग
विजनवती—इलाचन्द्र जोशी

मंगलवार, 1 मार्च, 1960

Extra class B.A. II 5 P.M.
submission of M.A. Attendence at 9 : 30 A.M.

बुधवार, 2 मार्च, 1960

शंकरदयाल के यहाँ जनेऊ
Extra class B.A. II 8 : 30 A.M.

बृहस्पतिवार, 3 मार्च, 1960

Ah, my Beloved, fill the cup that clears
Today, of past regrets and future tears
Tomorrow? Why, tomorrow I may be
Myself with Yesterday's
Seven thousand years.

Khayyam

शनिवार, 5 मार्च, 1960

7 : 45 A.M. गोपीनाथ दीक्षित।

रविवार, 6 मार्च, 1960

Extra class at 2 P.M.

सोमवार, 7 मार्च, 1960

कु. यश कौर लखनऊ से 8:30 बजे
शाम को 4 बजे कृष्ण नारायण कक्कड़ घर पर

मंगलवार, 8 मार्च, 1960

विशिष्ट द्वैतिक भक्ति दर्शन–सरनाम सिंह
कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर

मंगलवार, 15 मार्च, 1960

1. Indian and Indonesian Art
A. Coomarswamy
2. Moghul paintings
P. Brown
3. Christian and oriental philosophy of Art.
A. Coomarswamy
4. Indian Architecture — Percy Brown
5. History of Indian and Eastern Architecture — James Fergusson

शनिवार, 9 अप्रैल, 1960

Each song is love's stillness
Each star is time's stillness
A knot of time
Each sign is the stillness
of the shrick

Lorca

बुधवार, 13 अप्रैल, 1960

अग्रवाल टाइप स्कूल
(रज्जन टाइपराइटर मैकेनिक)
सवेरे 10"-11 के भीतर, शाम 3 से 6 तक।

शुक्रवार, 15 अप्रैल, 1960

Typing Instructions :
1. प्रेम को ठीक टाइप करें–मात्रा नहीं आ रही है।
2. संस्कृत श्लोकों की ओर अधिक ध्यान दें। प, य, म, द में confusion है। व, ब का अन्तर।
3. विराम चिह्नों का ध्यान रखें। लेखक के नाम के बाद : आखिर में पूर्ण विराम, रचना के नाम के बाद : आखिर में पूर्ण विराम।
4. तत्त्व।

मंगलवार, 26 अप्रैल, 1960

7 P.M. at S.M. Shukla's place Patakapur

बुधवार, 7 सितम्बर, 1960

गोस्वामी से षट् सन्दर्भ तथा गोपालदत्त वाली थीसिस।

शुक्रवार, 9 सितम्बर, 1960

लाइब्रेरी में
सूर सागर से
1. अपुन पौ आपुन ही बिसरयौ
2. अपुन पौ आपुन ही मैं पायो

मंगलवार, 8 नवम्बर, 1960

To Agra.

बुधवार, 9 नवम्बर, 1960

Viva– Voce of Ph.D. at Agra at 10 A.M.

शुक्रवार, 11 नवम्बर, 1960

आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी
जन्म बैशाख शुक्ल 4, सं. 1927
मृत्यु पौष कृष्ण 30 सं. 1995

रविवार, 13 नवम्बर, 1960

श्री लक्ष्मी नारायण दुबे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, नर्मदा महाविद्यालय
होशंगाबाद
for नवीन जी (अशोक से)

शुक्रवार, 25 नवम्बर, 1960

सवेरे नवजीवन पुस्तकालय।

1961

Pocket Diary

देवीशंकर अवस्थी

Name	–	Devi Shanker Awasthi, M.A., Ph.D.
Address	–	Institute of Post graduate (Evening) studies Delhi University, Delhi-6
Telephone No. (Business)	–	25334
Watch No.	–	Alpina, 272340
Bank Account No.	–	2045 (S/T P.N. Bank, kamla Nagar, Delhi)

In event of an accident please notify–
Mrs. Kamlesh Awasthi, M.A.
32/147, Mani Ram Bagia, Kanpur
Insurance Policy No. – 7210393 – 21.12.59

रविवार, 1 जनवरी, 1961 (आगरा)

950/- in the last year
Let this be a year of health, prosperity and fame.

आज जीवन में एक नया अनुभव हुआ। पुराना वाइस चान्सलर हट रहा है, नया आ रहा है। यूनिवर्सिटी ऑफिस में एक विचित्र feeling है। हम लोगों का मन भर-भर आता है। एक आपाधापी भीतर से, पर ऊपर से एकदम प्रशान्त। कुछ ऐसा वातावरण है—आज यहाँ का।

इस बार डायरी 1 जनवरी के पूर्व ही मैंने खरीद ली थी। सारे दिन बड़ी चहल-पहल भी रही। पर मन में कुछ लिखने का उत्साह नहीं था। अब रात्रि को एकदम शान्त भाव से लिखना चाहता हूँ—पर मन उमग नहीं रहा।

आज सवेरे-सवेरे ही भटनागर साहब को New year greet किया। कम्मो की याद बहुत आ रही है—अम्मा भी याद आ रही हैं। उनके पास जाने का मन है।

मंगलवार, 3 जनवरी, 1961 (आगरा)

भटनागर साहब के जाने के बाद Guest House कितना श्रीहीन हो गया है। मेरा भीतर आने को मन नहीं करता।

बृहस्पतिवार, 5 जनवरी, 1961

D.A.V. Liberary :

1. The business of criticism 31643, 8204 Gar — Helen Gardner,
2. The writer and his craft 31677, 8204 Cow — R.W. Cowden,
3. Critics and criticism 8204, Cra 31595 — R.S. Crane
4. Critical Approches to Literature 8204, Dia, 26290 — D. Daiches
5. An Introduction to Research in 31665 8209 San — Chaumcey Sandars
   English Literary History
   Anatomy of Criticism

Bank Draft — Varanasi — KO–44762
Kanpur — KO–44761

बुधवार, 11 जनवरी, 1961

6 P.M. Lalta Prasad Shukla
MC Taggart – Philosophy of Love

शनिवार, 14 जनवरी, 1961

7.30 Extra class M.A.
5.30 Iscus की शाम को मीटिंग।

रविवार, 15 जनवरी, 1961

आगरा
रात 11 बजे आगरा
Agra Varsity, Library
1. Study of Literature
2. Creative process 801G 42C.

सोमवार, 16 जनवरी, 1961 (आगरा)

1. Art of Poetry 821.9 V 25A (7) Valery
2. The philosophy of Literary form 820. B95 P Kenneth Burke

मंगलवार, 17 जनवरी, 1961

आगरा

भटनागर अभिनन्दन ग्रन्थ का समर्पण।

बृहस्पतिवार, 19 जनवरी, 1961

एकान्त उत्सव, कुहरिल रहस्यमय वातावरण। उत्सव की औपचारिकता और वाग्जाल की विभीषिका। मन करता है उठकर चला जाऊँ।

शनिवार, 21 जनवरी, 1961

सौरभ का अन्नप्राशन।

रविवार, 22 जनवरी, 1961

मुन्नो का विवाह।

मंगलवार, 24 जनवरी, 1961

संध्या 7-7:30 खन्ना को भोजन पर बुलाया है।

शुक्रवार, 27 जनवरी, 1961

गाँव जाना है।

शनिवार, 28 जनवरी, 1961

रविवार, 29 जनवरी, 1961

गाँव में रहना है।

मंगलवार, 31 जनवरी, 1961

टेलीफोन from 4479
1. ता. 1, 4,
3. लोकल 4, 4,
1 ट्रंकाल लखनऊ 4. 4.

बुधवार, 1 फरवरी, 1961

Obsessive Images. Joseph Waren Beach
The image in the Modern French Novel. Ulmani

शनिवार, 4 फरवरी, 1961

सन्ध्या 4 बजे कथाकार सम्मेलन Ch. Ch. college.
5:30 बजे फूलबाग में अमेरिकन प्रदर्शिनी।
7:30 बजे डॉ. श्री नारायण की लड़की की शादी (Macrobertganj में)।

शुक्रवार, 17 फरवरी, 1961

Prof. Ņagappa 'Triveni' 6 P.M.

शनिवार, 18 फरवरी, 1961

प्रातः 8 बजे नागप्पा जी का भाषण।

मंगलवार, 28 फरवरी, 1961

Preparation Leave for M.A.

बुधवार, 8 मार्च, 1961

संध्या 6 बजे staff club का होली मिलन।

बृहस्पतिवार, 9 मार्च, 1961

At 9 : 30 P.M. संस्कृत पढ़ाने के लिए शास्त्री जी आवेंगे।

मंगलवार, 14 मार्च, 1961

Preparation Leave for B.A. Departure for Delhi from Janta.

बुधवार, 15 मार्च, 1961

Interview at Delhi, Room 245 C, North Block, Central Secretariat

बृहस्पतिवार, 16 मार्च, 1961

M.A. Exams

सोमवार, 27 मार्च, 1961

लखनऊ-कानपुर बस, किताबों का Vender कह रहा है—टैगोर, बंकिम, शरत की किताबें देखिये, जासूसी में क्या रखा है?

मुन्नन...जनेऊ, बाजपेयी जी को देखना है।

मंगलवार, 28 मार्च, 1961

At 5 P.M. tea to Nandan

शुक्रवार, 31 मार्च, 1961

Dr. S.N. Sharma Dinner

शनिवार, 15 अप्रैल, 1961

लखनऊ।

रविवार, 16 अप्रैल, 1961

At 6 P.M. Meeting of Bharat Varsh Sahakari Samiti at Sahyogi Karyalaya.

बुधवार, 19 अप्रैल, 1961

1. Tilokotsawa at Modi's place of Dinesh Chandra Agarwal at 6 P.M. Dinner also.

2. Dinner at K.N. Sharma's place at 7 P.M.

रविवार, 23 अप्रैल, 1961

अनुराग का मुण्डन।

सोमवार, 24 अप्रैल, 1961

दिल्ली के लिए प्रस्थान।

मंगलवार, 25 अप्रैल, 1961

Interview in the V.C.'s Room at 10 : 30 A.M. at Delhi

बुधवार, 26 अप्रैल, 1961

Last date for Inter marks.

शुक्रवार, 28 अप्रैल, 1961

Last date for B.A. marks
for Dehradun

शनिवार, 29 अप्रैल, 1961

नवीन जी की वर्षी B.N.S.D. में 4:30 शाम।

मंगलवार, 2 मई, 1961

लखनऊ।

शुक्रवार, 5 मई, 1961

रवीन्द्रशती में टैगोर को लेकर बंगालियों का एक विचित्र...।

रविवार, 7 मई, 1961

अशोक सेन एवं कृष्ण मेनन कानपुर की रवीन्द्र समिति की ओर से बुलाये गये थे। मिनिस्टरों की ही धूम इस नगर में है—कोई यहाँ से है नहीं न! शाम का ballet भी बड़ा बोर रहा।

सोमवार, 8 मई, 1961

टैगोरशती के कानपुर के Lectures सुने। एक सज्जन केवल Superlatives की वर्षा करते रहे– ला. दीवानचन्द गाँधी के संस्मरणों एवं गीतांजलि तक सीमित रहे– He was listless– कानपुर के अनुरूप ही इस साहित्य-सभा के लिए वक्ता चुने गये थे।

बुधवार, 17 मई, 1961

प्रातः 9, श्री रमेश श्रीवास्तव के घर पर स्वरूप नगर में ज्ञानदेव अग्निहोत्री का नाटक-पाठ।

रविवार, 21 मई, 1961

नरेन्द्र सक्सेना के यहाँ पर डिनर—पाण्डव नगर में।

मंगलवार, 30 मई, 1961

रात जनता से दिल्ली को रवाना।

बृहस्पतिवार, 1 जून, 1961

शाम चार बजे W.U.S. Health Centre, Delhi University में Medical examination.

रविवार, 18 जून, 1961

लालगंज में सन्तोष का जनेऊ।

बुधवार, 5 जुलाई, 1961

"He is the only American I know of who has made what I call adequate Preparation for writing. He has actually trained himself and modernized himself on his own."

Ezra Pound

About T.S. Eliot in a letter to Harriet Mornoe dated 30.9.1914

शनिवार, 8 जुलाई, 1961

लखनऊ।

रविवार, 9 जुलाई, 1961

लखनऊ—आज कुछ कलाकारों से मिला।

सोमवार, 10 जुलाई, 1961

संध्या 5-5:30 बजे शर्मा जी के यहाँ चाय।

मंगलवार, 11 जुलाई, 1961

दोपहर में यादव चन्द्र जैन के यहाँ भोजन।
प्लाट, रेखा का एडमीशन।
घुट्टी, चच्चू, रुपयों वगैरह, सुधीर के कपड़े।
भटनागर साहब से HBTI
ए.पी. भटनागर : Library.
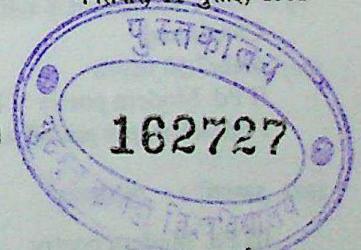
बुधवार, 12 जुलाई, 1961

सवेरे 9 बजे कॉलेज में।
शाम 8 बजे Shri S.K. Chauhan.
शाम 6:30 बजे कैलाश त्रिपाठी के यहाँ चाय।
श्याम सुन्दर राजा से शशि के बारे में (रमेश कुमार दीक्षित) कहना।

श्री प्रेमनारायण M.A. Geog III
for L.T. D.A.V.
or for B.T. in Unnao
पं. मुन्नालाल मिश्र को Psych. में प्रवेश के लिए कहना।

बृहस्पतिवार, 13 जुलाई, 1961

संध्या 7 बजे B.N.S.D. में साहित्यिकी की ओर से farewell
शाम 5 बजे कपूर साहब के यहाँ चाय।
3 बजे आदित्य भटनागर के यहाँ।

शुक्रवार, 14 जुलाई, 1961

शाम 6 बजे परिपूर्णानन्द वर्मा के निवास पर राही द्वारा आयोजित farewell.
सवेरे 8 बजे S.P. Nigam.
शाम 4 बजे A.P. Bhat.
40/- पंजाब टेलरिंग को देना।
20/- साहित्य निकेतन, ब्लॉक।

शनिवार, 15 जुलाई, 1961

दिल्ली प्रस्थान सन्ध्या 8:50-11 UP से।

सोमवार, 17 जुलाई, 1961

आज दिल्ली में ज्वाइन कर लिया। लगता है कि एक नये सिरे से जिन्दगी शुरू हो रही है। यह परिवर्तन थोड़ा-सा invigorate भी करता है। नये उत्साह से पढ़ना-पढ़ाना प्रारम्भ होता है। अपनी worth प्रमाणित करना सुखद ही है।

Continued
6:45-7:30
II Pd. Modern poetry V Paper.
I Pd. VII paper prasad.

मंगलवार, 18 जुलाई, 1961

III Pd. Modern poetry.
IV Pd. Essay & Translation.

बुधवार, 19 जुलाई, 1961

Padmavat IV Pd. Pre.
II Pd. History of Hindi literature.

बृहस्पतिवार, 20 जुलाई, 1961

III Pd. Chintamani + Novel.

शुक्रवार, 21 जुलाई, 1961

III Pd. Modern poetry

IV Pd. History of Hindi literature.

शनिवार, 22 जुलाई, 1961

Tutorial.

शनिवार, 29 जुलाई, 1961

आज अजित के लड़के की वर्षगाँठ थी, कम्मो, तुनुआँ और राजी की बड़ी याद आयी।

रविवार, 30 जुलाई, 1961

शाम को 5 बजे श्री गिरिजा कुमार माथुर के घर पर।

शनिवार, 12 अगस्त, 1961

Meter Reading 160:04

शुक्रवार, 18 अगस्त, 1961

रामजस कॉलेज में तुलसी जयन्ती सन्ध्या 3:30

सोमवार, 21 अगस्त, 1961

At 3.20 in the Hindi dept. Km. Sushma Pal for dessertation

बृहस्पतिवार, 14 सितम्बर, 1961

संध्या 8:30 डॉ. सुरेश अवस्थी के यहाँ भोजन

रविवार, 17 सितम्बर, 1961

Sociology of Aesthetics — Ph.D. thesis from Lucknow University

मंगलवार, 3 अक्तूबर, 1961

सुनना भी बड़ा धैर्य चाहता है।...

('कविता उपखण्ड में संकलित)

बुधवार, 4 अक्तूबर, 1961

1. प्रातः नयी दिल्ली स्टेशन
2. अजित से मिलना
3. बैंक
4. Provisions

बृहस्पतिवार, 5 अक्तूबर, 1961

भक्त कवियों का शरद-वर्णन निश्चित रूप से भेजना।

रविवार, 5 नवम्बर, 1961

'The failure and Trumph'

D.H. Lawrence Vivas

शनिवार, 25 नवम्बर, 1961

11 : 30 Meeting } Uni.
1 P.M. Lunch

बृहस्पतिवार, 30 नवम्बर, 1961

At Suresh Awasthi's place

रविवार, 3 दिसम्बर, 1961

Essays by diverse hands — Ed. Peter green (O : M3 : M2) K2
Literature & Belief — Ed M.H. Abram (O : M73 : N44 J8)

बृहस्पतिवार, 7 दिसम्बर, 1961

फो.—617664 श्री प्रभाकर माचवे, 128 रवीन्द्र नगर, नयी दिल्ली

1962

स्मरणीय (प्रथम पृष्ठ)

नाम	–	देवीशंकर अवस्थी
जन्मतिथि	–	5 अप्रैल, 1930
कार्यालय का पता	–	हिन्दी विभाग, इवनिंग स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-6
बैंक पासबुक नं	–	2845 S/F 002829 Fixed Deposit Receipt

सोमवार, 1 जनवरी, 1962

'न था कुछ तो खुदा था कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने न होता मैं तो क्या होता।'

ग़ालिब

हर एक चेहरे से उठती लपट
शहर में आग लगी हो जैसे।

मंगलवार, 2 जनवरी, 1962

5 जनवरी	–	An experiment in criticism (Notes)
12 फरवरी	–	Quotations about Fiction
5 अप्रैल	–	काव्य सम्बन्धी उद्धरण
15 मई	–	साहित्य और आलोचना सम्बन्धी उद्धरण
30 जून	–	फुटकर, विविध
21 अक्तूबर	–	प्रजातन्त्र पर टाकेवील का उद्धरण
30 अक्तूबर	–	Character in Fiction (Article by Mary Mecarthy)

4 नवम्बर – Science and Poetry – I.A. Richards (Notes)

3 जनवरी तथा 27 दिसम्बर – किताबें

बुधवार, 3 जनवरी, 1962

1. The Fiction and Reading Public — Q.D. Leavis
2. The Rise of Novel — Yan Watt
3. Long Journey — Raymond Williams
4. Poetry : A Critical Introduction — Batecon (Longmanns)
5. A Grammar of Metaphor — Christian Brooke Rose
6. The Mirror and the Lamp — Abraham
7. A Modern book of Aesthetics — Rader
8. The failure and Triumph of D.H. Lawrence — Vivas
9. Society and culture — Raymond Williams
10. The Age of Reason — Yoor Winters
11. The Psychology of Religion — W.H. Clark
    –The MacMillan Company, New York
12. Understanding Poetry — Brooks & Warren
13. Verbal Icon (Paperback) — Wimsatt
14. Understanding Fiction — Brooks & Robet Penu Warren
15. Art as Experience — Dewey
16. Morris Problems — Weitz in Aesthetics
17. Aesthetics (Philosophy of Art Criticism) — Beardsley
18. Contexts of Criticism — Harry Levin
19. Preliminary Essays — John Wain
20. The Author and the Public : Problems of communication, 1956
    Proceedings (Hutchinson) — P.E.N.
21. The Romantic Survival : A study in Poetic Evolution
    John Bayley
22. Sound and Poetry, 1956 — Congwin Instt. Essays
23. The chequered shade : Reflections on obscurity in Poetry
    John Press
24. The Intellectuals : A Controversial Portrait
    Ed. George B.de Luszar
25. The Language Poets use — Nowttonney

शुक्रवार, 5 जनवरी, 1962

An Experiment in Criticism –G.S. Lewis; I chapter : ....

बुरी अभिरुचि बुरी किताबों की ही अभिरुचि नहीं है। पढ़ने के ढंग पर निर्भर करता है। अच्छी किताब एक ढंग से और बुरी किताब दूसरे ढंग से पढ़ी जाती है।

(1) बहुसंख्या एक चीज को दुबारा नहीं पढ़ती।

(2) अधिकतर लोग इसे समय बिताने का एक जरिया मानते हैं और अधिक दिलचस्प जरिया मिल जाने पर बीच में ही छोड़ देते हैं।

(3) किसी कलाकृति को पढ़ने के बाद भी अधिकतर लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जबकि Literary लोगों की चेतना को ऐसा ही बदल देती है, जैसे प्रेम, धर्म या कोई गहन शोक।

(4) अन्ततः जहाँ अधिकांश लोग एक बार पढ़े हुए की कभी चर्चा नहीं करते, वहीं कुछ लोग होते हैं जो उन पर लगातार बात करेंगे, पंक्तियाँ दोहराएँगे, गुनगुनाएँगे—उनकी एक मूर्तिमती सत्ता सामने उपस्थित रहेगी।

अस्तु यह अन्तर केवल पसन्द (Like) करने का नहीं है, एक भिन्न activity है। यही स्थिति अन्य कलाओं और प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में भी कही जा सकती है।

Chapter-II : False Characterizations

कुछ और बहुत पीछे की हुई चर्चा में इतनी सावधानी और आवश्यक है कि जो बहुत-से हैं, उनमें भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो बौद्धिक, नैतिक, मानसिक, स्वास्थ्य की दृष्टि से हमसे (साहित्यिक कुछ) हीन नहीं होते। उनमें व्यावहारिकता, अच्छे मैनर्स एवं adaptability होती है जबकि हममें से कितने ही मूर्ख, अनैतिक आदि भी हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त एक कोटि से दूसरी कोटि में संक्रमण भी होता रहता है। इसके अतिरिक्त जो एक कला में एक कोटि का है, वह दूसरी कला में दूसरे ढंग का भोक्ता हो सकता है और जिनके responses सभी कलाओं के लिए क्षुद्र (Trivial) हैं, वे भी अत्यन्त बुद्धि प्रवण, अधीत एवं सूक्ष्म शक्ति (Subtle) हो सकते हैं।

पर ऐसे लोगों की बुद्धिमत्ता आदि भिन्न क्षेत्रों में होती हैं—उनकी सूक्ष्मता दर्शन या फिजिक्स में हो सकती है। इसी प्रकार प्रोफेसरों, स्कॉलरों एवं व्यस्त पुस्तक समीक्षकों का हाल है। उनके लिए text केवल कच्चा माल है। इसीलिए अपने विश्रान्ति के समय वे जो पढ़ते हैं, वह बहुत कुछ बहुमत जैसा होता है। कभी-कभी महत्त्वाकांक्षा एवं प्रतिद्वन्द्वितावश भी इसी दूसरी कोटि का पढ़ना होता है। Status Seaker भी इन्हीं में होता है जो कि फैशन के साथ अपनी रुचियाँ बदलता है। केवल समसामयिक चर्चा वाली वस्तुएँ पढ़ता है।

पर संस्कृति का पुजारी अपने को स्वीकार्य बनाने के लिए नहीं पढ़ता, सुनता या देखता बल्कि अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए, अपने परिष्कार

(Improvement) के लिए, एक अधिक पूर्ण व्यक्ति बनने के लिए पढ़ता है। पर क्लासिक्स का अध्ययन करने वाला यह व्यक्ति भी साहित्य का वास्तविक प्रेमी नहीं हो सकता। वह थोड़े ही प्रयोग करता है और थोड़े ही उसके प्रिय लेखक (हर देश के महनीय) होते हैं। (यह अन्तर game and exercise– क्रीड़ा और व्यायाम–का है।)

यह जो परिश्रम प्रसूत अध्ययन (जिसमें संस्कृति को ग्रहण करने की इच्छा ही रहती है।) है, यह आधुनिक युग में साहित्य को स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों में एक विषय बना देने के कारण बढ़ती पर है। सचेतन एवं submissive तरुणों के मन में यह बैठा दिया जाता है कि महान लेखकों को पढ़ना गुण (Meritorious) है। ऐसे में सबसे शोचनीय अवस्था उनकी होती है जो स्वयं सन्देहशील (agnostic) हैं पर जिनके पूर्व puritan थे–परिणामतः बिना puritan the dag के वे puritan consciousness में पलते रहते हैं, जैसे कि चक्की के पाटों को कुछ पीसने को न मिले और एक-दूसरे को वे रगड़ते रहें।

साहित्य का वास्तविक पाठक इस अर्थ में सीरियस होता है कि वह सम्पूर्ण मन (whole Heartedly) से पढ़ता है। वह अपने को अधिक-से-अधिक ग्रहणशील बनाता है। पर इसी कारण वह हर कृति को Solemnly या gravely नहीं पढ़ेगा। हलके हास्यमय को हास्य के रूप में ही वह ग्रहण करेगा और त्रासदी को त्रासदी के रूप में ही (न कि उससे purgation के लिए)।

यहीं पर साहित्यिक puritan से वह अलग होता है। शुद्धतावादी अपने पठन-पाठन में अतिरिक्त रूप से गम्भीर होता है। वे किसी भी वस्तु को हलके ढंग से लेने को तैयार ही नहीं होंगे। अफसोस यह है कि विश्वविद्यालय से ऐसे ही सीरियस पाठक निकल रहे हैं।

साहित्यिक पाठक को Mature भी कहा जा सकता है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि अपने मनोवैज्ञानिक विकास में प्रत्येक इस maturity को पा सकता है और प्रत्येक प्रारम्भ में बहुमत की भाँति पढ़ता है। लेविस का ख़याल है कि नर्सरी कथाओं के प्रति react करने की स्थिति से ही दोनों प्रकार के पाठक अलग होने लगते हैं।

पर यह अन्तर hasty हैं और attitudes को अधिक सतर्क रूप से देखना होगा।

Chapter-III : How the Few and the Many Use Pictures & Music

जिन चित्रों की बहुधा प्रशंसा होती है या बिकते हैं, वे वस्तुतः अपनी Narrative quality (चित्र के द्वारा जो वस्तु सामने आती है) के कारण आदर पाती हैं। रंग, रेखा या कम्पोजीशन पर शायद ही कभी ध्यान जाये। यथार्थ और उसमें वास्तविक या कल्पित सृजन की कठिनता ही प्रशंसा प्राप्त करती है by many.

पर एक बार खरीद लिए जाने के बाद इन चित्रों से उन लोगों की दिलचस्पी एकदम समाप्त हो जाती है, जैसे कि एक बार का पढ़ा हुआ उपन्यास।

यह दृष्टिकोण चित्र के उपयोग (Using) का है। इसके द्वारा कतिपय भावात्मक,

कल्पनात्मक गतिविधियों के लिए Self-starter का काम लिया जाता है। You do things with it. आप अपने को उसके सामने इस भाँति मुक्त नहीं करते हैं कि अपनी समग्रता में आपके साथ कुछ कर सके, न कि आप उसे इस्तेमाल करें।

अस्तु यह दृष्टिकोण वैसा ही है, जैसा कि एक पूजामूर्ति या खिलौने के प्रति होता है, जिसका कलात्मक होना जरूरी नहीं—उससे मात्र कुछ भावनाएँ या गतिविधियाँ जगनी चाहिए। बल्कि विशेषताएँ न हों, वही अच्छा है। लड़के की कल्पना को सबसे कीमती या जीवन में यथार्थ जैसा ही आकर्षित नहीं करता।

और इस प्रकार के उपयोग वाला दृष्टिकोण Vulgar या Silly ही नहीं होता। यह आत्मपरक प्रतिक्रियाएँ नाना प्रकार के स्तरों पर उठती हैं और नाना प्रकार की दिशाओं में मानवीय गतिविधि को प्रेरित करती हैं। एक चित्र वासना जगा सकता है एक के मन में, दूसरे के द्वारा कविता लिखा सकता है। पर इतना अवश्य है कि यह चित्र का सराहन नहीं होगा।

वास्तविक सराहन वह होगा जबकि हम चित्र के सम्मुख एकदम पूर्वग्रह रहित होकर बैठें और उसके द्वारा कोई आन्तरिक क्रिया हम परिचालित करें, स्वयं चित्र को अपने ऊपर कुछ करने दें। We sit down before the picture in order to have something done to us, not that we may do things to it.

समर्पण पहली शर्त है। देखो, सुनो और प्राप्त करो। समर्पण के पहले आप यह कह ही नहीं सकते कि कृति समर्पण योग्य थी या नहीं?

अधिकांश कला का उपयोग (use) करते हैं और कुछ उसे प्राप्त (receive) करते हैं। प्राप्त करने वाला समर्पण के बाद देखना है कि यह योग्य थी या नहीं और यदि नहीं तो उससे एकदम मुँह मोड़ लेगा।

खजुराहो की मूर्तियों में जो अश्लीलता देखेगा, वह अधिक-से-अधिक ऐसी मूर्तियाँ, यहाँ तक कि फोटोग्राफ देखने लगेगा जो सामाजिक नैतिकता की मर्यादा के भीतर हों। पर 'कुछ' लोग किसी बुरी रचना को वह reception नहीं दे सकते जो अच्छी रचना को देंगे।

इसलिए यह कहना गलत होगा कि अधिकांश enjoy bad pictures, वस्तुतः वे उन बुरी तस्वीरों द्वारा ध्वनित बुरे विचारों को enjoy करते हैं। चित्र को उसी रूप में वे देखते ही नहीं हैं। वस्तुतः ऐसे लोग बुरे composition से आनन्द नहीं प्राप्त करते, बल्कि उन बुराइयों को जान ही नहीं पाते।

संगीत में तो हम सभी many के साथ प्रारम्भ करते हैं और केवल 'ट्यून' की ओर ध्यान देते हैं। इस tune के प्रति भी एक दुहरा response होता है। एक तो सामाजिक, सान्धिक (Social and organic) होता है कि हम साथ ही गुनगुनाना या सिर हिलाना चाहते हैं और दूसरा भावात्मक response होता है। हम हीरोइक, उदास, हर्षोन्मत्त आदि बनते हैं as the tune seemed to invite us.

एक बार भावात्मक प्रतिक्रिया जाग्रत हो जाने के बाद कल्पनाएँ उत्पन्न होने लगती हैं। अत्यन्त शोक, बहादुरी से लड़े गये मैदान उभरने लगते हैं और इनसे ही हम रस प्राप्त करते हैं। पर यह organic या social response. अनुचित ही नहीं कहे जा सकते।

'कुछ' भी गुनगुना सकते हैं, उनके मन में भी भावात्मक प्रतिक्रियाएँ जाग सकती हैं। पर वे उस समय नहीं गुनगुनाते जबकि संगीत चल रहा होता है, वे तो बाद को उसका स्मरण करते हैं तथा एक या कुछ टुकड़ों का प्रत्यक्ष भावात्मक प्रभाव भी उन पर नहीं पड़ता है। वे सुनते हैं, ध्यान देते हैं और रचनाकार की रचना के पूरे structure को समझ लेने के बाद जो भावात्मक प्रतिक्रिया जागने देते हैं वह अधिक intelligent भी होती है और गहरी भी। वे उस रचना के कुछ अंश या संक्षेप (Precis) को चुनकर उसे समग्रता में ग्रहण करते हैं।

चित्र और संगीत के जनप्रिय उपयोग में समानता बहुत है। उनको use किया जाता है, न कि रिसीव। कैनवास पर दृश्य या संगीत रचना में श्रव्य बहुत कुछ अनदेखा या अनसुना इसी कारण रह जाता है। यदि उनमें इस्तेमाल कर सकने योग्य कुछ catchy न हुआ तो उसे अस्वीकृत कर दिया जायेगा। बहुत-से कुछ के संक्रमण की स्थिति में एक बेहूदी पर क्षणिक गलती भी होती है। ऐसा व्यक्ति जिन तस्वीरों में popular demand के तत्त्व होते हैं या संगीत में ऐसी धुनें सुनता है तो उसे अनिवार्यतः उपेक्षणीय मानने लगता है।

पर वास्तविक संगीत या चित्र प्रेमियों में यह transient होती है जबकि status seekers और devotees of culture में यह कभी-कभी एकदम रूढ़ और बद्धमूल (fixation) हो जाती है।

Chapter-IV : The Reading of the Unlitrary

शब्दार्थ की सत्ता और क्रम के कारण संगीत के दोनों सराहकों की भाँति साहित्य के कुछ और बहुत में अन्तर नहीं किया जा सकता। संगीत में सांगीतिक तत्त्व से अलग जाकर एकदम अश्रुत या असांगीतिक क्षेत्र में पहुँचना गलत हो सकता है, पर शब्द तो अपने से परे इंगित करता है, इसलिए जाना ही होता है।

(1) असाहित्यिक ढंग से पढ़ने वाले केवल Narrative पढ़ते हैं। सबसे निम्न कोटि के News फिर cheap fiction.

(2) उनके कान नहीं होते, मात्र आँख से पढ़ते हैं। लय वे पकड़ ही नहीं सकते।

(3) उन्हें शैली की कोई पहचान नहीं होती और न उस ओर ध्यान जाता है।

(4) कम-से-कम शाब्दिक गुण के साथ जो वर्णन होते हैं, उन्हें ही वे पसन्द करते हैं।

(5) वे Swift moving narrative चाहते हैं। unmusical मात्र tune चाहता है और असाहित्यिक मात्र 'घटना' (event)।

Most of the things which good writing gives or bad writing fails to give are things he does not want and has no use for. यह तथ्य बताता है कि क्यों अच्छे लेखन को वह महत्त्व नहीं प्रदान करता तथा क्यों वह बुरा लेखन पसन्द करता है। They lack the attentive and obedient imagination जो उन्हें इस क्षमता को प्रदान करें कि किसी दृश्य या भाव का full and precise वर्णन का समुचित उपयोग कर सकें। दूसरी ओर उस उर्वर कल्पना का भी अभाव होता है कि मात्र तथ्यों पर कुछ खड़ा कर सकें।

अच्छा लेखन उन्हें परेशान ही करता है।

एक और प्रकार का पाठक होता है जो शैली पर ही बल देकर पढ़ता है। (वह उर्दू, संस्कृत के प्रभाव, तत्सम, तद्भव शब्द, विशेषण, Preposition आदि को गिनता रहेगा, पर यह ध्यान न देगा कि इन सभी तथ्यों का अभिव्यंजन-क्षमता पर क्या प्रभाव पड़ा है? शब्द की 'वर्णध्वनि' या उसके महत्त्व (significance) पर उसका ध्यान कभी नहीं रहता। भाषा की अर्थवत्ता की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। ऐसा व्यक्ति Anti-literary होता है (मुख्यतः अध्यापक इसी प्रकार का होता है)।

जहाँ तक 'घटना' चयन का प्रश्न है, असाहित्य के तीन मुख्य प्रकार हैं :

1. जो 'उत्तेजक' हो—तात्कालिक, खतरे से भरा, सिर के बल खड़े कर देने वाला।

2. कुतूहल भाव की जागृति, प्रलम्बिति, अन्तिम सीमा तक खिंचाव एवं सन्तुष्टि चाहते हैं।

3. They like stories which enable them to participate in pleasure or happiness.

यह स्पष्ट रहना चाहिए कि असाहित्यिक इसलिए असाहित्यिक नहीं है कि इन ढंगों से वे कहानी को पसन्द करते हैं बल्कि इसलिए कि वे और किसी ढंग से उन्हें पसन्द ही नहीं कर पाते। वे साहित्यानुभव को समग्रता में ग्रहण करने में अक्षम होते हैं।

Chapter-V : On Myth

कुछ कथाएँ ऐसी होती हैं जो अपने साहित्यिक रूप से स्वतन्त्र भी मूल्यवान होती हैं, जैसे 'आरफियस की कथा'। इसके द्वारा आन्दोलित होना, उन कवियों द्वारा ही आन्दोलित होना नहीं है। (रामकथा) पर बहुमत की पसन्द वाली crude stories ऐसी ही नहीं होतीं—उनका संक्षेपीकृत रूप सन्तुष्ट नहीं करता, they need written up.

सहज मूल्यवान ये कथाएँ Myth कही जानी चाहिए। पर मिथ अपने ग्रीक या नृतत्त्वशास्त्रीय अर्थ में नहीं। तमाम ऊटपटाँग पुरानी कथाओं के बीच से केवल कुछ कथाएँ उभरती हैं। काफ्का की 'The Castle' जैसी कहानियाँ भी Myth हैं।

(1) यह साहित्येतर होती हैं।

(2) कुतूहल या आश्चर्य पर वह शायद ही कभी निर्भर करे।

(3) Human Sympathy is at a minimum. हम अपने को उन चरित्रों में दृढ़ता

के साथ प्रक्षेपित नहीं करते। वे पात्र किसी दूसरे संसार में आकार ग्रहण करते लगते हैं—जो कि हम यह भी महसूस करते हैं कि उनके कार्यों का pattern हमारे अपने जीवन से गहरी संगति रखता है, परिणामतः उनके माध्यम से एक व्यक्ति नहीं पूरे मानव समुदाय के प्रति भावनाएँ जगती हैं।

(4) यह अति मानवीय, अतिप्राकृत, fantastic होती हैं।

(5) उसका अनुभव दुख या सुखकारी हो चाहे, पर होगा गम्भीर (Grave)। Comic myth is impossible.

(6) The myth is not only grave but awe-inspiring. हम महसूस करते हैं कि एक महान क्षण को प्रेषित किया गया है।

अस्तु जो व्यक्ति मिथ को महान रूप में स्वीकार करता है, वह उसकी शैली, लेखन-विधि आदि पर ध्यान नहीं देता। पिछले अध्याय के अनुसार यह असाहित्यिक है पर वस्तुतः मिथ के ऐसे प्रेमी एवं कहानी के 'घटना' वाले पाठक में अन्तर होता है। अन्तर यह है कि while both use the same procedure, he used it where it is proper and fruitful and they do not.

प्रथम उस मिथ द्वारा तब तक move होता रहेगा, जब तक कि जीवित रहेगा, जबकि कथाप्रेमी 'घटना' को तत्काल भुला देगा। मिथप्रेमी extra-literary होता है और कथाप्रेमी unliterary.

कोई कथा कितना मिथ बन सकी है, यह पढ़ने वाले पर निर्भर करता है। असाहित्यिक incredible पर विश्वास करता है, पर impossible preternatural को तत्काल अस्वीकृत कर देगा। उसे वे silly समझेंगे। उनमें fantasy हो सकती है पर fantastic को वे नापसन्द ही करेंगे।

Chapter-VI : The Meanings of Fantasy

फैण्टेसी शब्द साहित्यक भी है और मनोवैज्ञानिक भी। वह narrative जो असम्भव एवं अतिप्राकृत से deal करे, साहित्यिक अर्थ में fantasy होगी। मनोवैज्ञानिक अर्थ में उसके तीन अर्थ होते हैं :

(1) delusion (हमारे लिए अनावश्यक)

(2) दिवास्वप्न morbid castle building.

(3) वे दिवास्वप्न जिन्हें कभी-कभी मनबहलाव के लिए प्रयोग में लाया जाता है और कभी-कभी ये आगे के कार्य के लिए प्रेरणा भी दे जाते हैं। Normal castle building.

यह तीसरा प्रकार भी egoistic and disinterested– दो प्रकार का हो सकता है। इनमें पहली से दूसरी अवस्था में संक्रमण होता है तथा दूसरी अवस्था से literary invention या construction, fiction की स्थिति आ सकती है। असाहित्यिक जब पात्रों में अपने को प्रक्षेपित कर किसी कथा में आनन्द लेता है तो एक प्रकार का

egoistic castel building ही होता है। पर भूत-प्रेतों या मखौल वाली कथाओं में वह दर्शक मात्र रहना पसन्द करता है, यह disinterested (and better) castle building है।

प्रेम, सफलता या उच्च वर्गों की कहानियाँ ऐसी होती हैं जिनके साथ प्रक्षेपण होता है और यह popular भी खूब होती हैं। यह प्रक्षेपित आनन्द वैसा ही है, जैसा कि दिवास्वप्नों से होता है—जिसके कि वे अभ्यस्त होते हैं। ऐसे पाठक Literary Fantasies पसन्द नहीं करेंगे—ये मनोवैज्ञानिक अर्थ वाली फैण्टेसी के ही प्रेमी होते हैं। इसका उल्टा अवश्य सत्य है। साहित्यिक टाइप इन फैण्टेसीज में भी रस ले सकता है।

असाहित्यिक टाइप, विचित्र मनोविज्ञान, अद्‌भुत संयोग (Monstrous psychology, preposterous concidence) को स्वीकार कर लेगा पर जिन प्राकृतिक नियमों एवं सामान्य साधारणताओं (General ordinariness) (भोजन, वस्त्र, मकान, रहन-सहन व्यवहारादि) से वह परिचित होता है, उन्हें दृढ़तापूर्वक लिखित देखना चाहता है। इसका एक कारण तो निष्क्रिय कल्पना है—उतना वे देख, पढ़, सुन चुके हैं, उसे ही भावित कर सकते हैं। पर एक अन्य गहरा कारण भी है—

He knows the day dream is unrealised : he demands that it should be. That is why the slightest hint of impossibility ruins his pleasure.

जितना अधिक पूर्ण एक व्यक्ति का पठन egoistic Castle building का होगा, उतना अधिक वह सतही यथार्थ की माँग करेगा। और उतना ही कम वह fantastic को नापसन्द करेगा। वह धोखा खाना चाहता है और कोई वस्तु धोखा नहीं दे सकती यदि यथार्थ से उसकी सहजता न होगी।

On Realism

साहित्य में एक यथार्थवाद प्रस्तुतीकरण का हो सकता है जिसमें निरीक्षित या कल्पित विस्तृतियों के द्वारा किसी वस्तु को हमारे निकट आस्वाद्य या विशद बनाया जाता है।

एक दूसरा यथार्थ वस्तु का होता है। A fiction is realistic in content when it is probable or true to life. इसमें पात्रों की बातचीत, व्यवहार, वस्त्र, स्थान, मौसम आदि नहीं पहचाने जा सकते पर सब कुछ सम्भाव्य एवं सच प्रतीत होता है।

ये दोनों यथार्थ एकदम अलग-अलग हो सकते हैं। एक साथ हो सकते हैं या एकदम कोई भी नहीं हो सकते।

ये चारों ही लेखन के अच्छे ढंग हो सकते हैं पर वस्तु का यथार्थ अधिक महत्त्वपूर्ण है आजकल। एक सामान्य धारणा है कि कथा वही अच्छी होती है जो यथार्थपरक होती है। जीवन की सत्यता की माँग साहित्य की अन्य सभी माँगों के ऊपर दिखाई देती है। जिनको पढ़ने के बाद हम कहें कि हाँ जिन्दगी इस तरह की होती है—एक तो सत्यता यह होती है पर जब हम यह कहते हैं कि ऐसा होता है

तो इसका क्या अर्थ है ऐसा सदैव होता है या ऐसा हो सकता है या कभी किसी प्रकार हो चुका है। हम उन घटनाओं या स्वभाव को देखते हैं जो मनुष्य जीवन के लिए सम्भव एवं विशिष्ट हैं, यदि परिस्थिति विशेष हो। पर यह परिस्थिति अपने आपमें इतनी सम्भव नहीं होती। अचानक कोई गरीब से अमीर बन जाये तो यह सम्भव परिस्थिति पर उतनी नहीं है, पर ऐसी परिस्थिति आ जाने पर मानव-व्यवहार की यथार्थता सम्भव धरातल पर व्यक्त की जा सकती है। अतः यह यथार्थ उससे भिन्न होगा जिसमें सब कुछ वैसा है जो हर एक के जीवन में घटित हो सकता है, जैसे कि 'वार एण्ड पीस' या 'गोदान'। आधुनिक युग के पूर्व की समस्त कथाएँ पहले वाले यथार्थ की हुआ करती थीं और आधुनिक युग की दूसरी प्रकार की।

अगर यथार्थवादी कथा को श्रेष्ठ मानने में यह कह दिया जाये कि यह दूसरे प्रकार वाला ही यथार्थ श्रेष्ठ होता है तो अतीत की तमाम क्लासिक कथाएँ बेमानी हो जाती हैं (जैसे ऑडिपस)। तर्क यह हो सकता है कि ऐसी कथाओं में इस प्रकार के जीवन की सम्भावना छिपी रहती है। पर क्या कोई यह कह सकता है कि क्या ये कहानियाँ एक remote accident से अलग (जीवन की सम्भावना आदि) पर विचार करने के लिए आमन्त्रित करती हैं? लेविस का कहना हे कि Attention is fixed on something concrete and individual. यही matter करता है, न कि जिन्दगी। सम्भावित यथार्थ वाली कहानियों की situations के आगे प्रश्नचिह्न लोग नहीं लगाते। अगर ठीक बन गयी तो उसे probable मान लेंगे।

वस्तुतः ऐसी कथाओं को यथार्थवादी सिद्धान्त में फिट करना बहुत उचित नहीं है। इन कथाओं को इसलिए मूल्यवान नहीं समझा गया कि इनसे यथार्थ का ज्ञान या बोध बढ़ेगा बल्कि इसके विलोम होता है—The hypothetical probability is bought into make the strange events more fully imaginable. अतः बजाय इस माँग के कि सम्पूर्ण साहित्य में यथार्थ होना ही चाहिए, अधिक उचित माँग होगी कि हर किताब में यह यथार्थ इतना अवश्य होना चाहिए, जितना कि होने का वह आभास दिलाती है (Pretends to have)।

बहुधा यथार्थवादी चाहेंगे कि केवल यथार्थवादी वस्तु पढ़ी जाये (शायद वे परियों की कथाएँ या रोमान्स को जब्त करा दें, क्योंकि वे मनुष्य को छलावे में डालती हैं।)

पर पहले कहा जा चुका है कि जो लोग egoistic castle building के छलावे में रहते हैं, वे एक ऊपरी सतह का यथार्थ अवश्य चाहते हैं। No one can deceive you unless he makes you think he is telling the truth. घोषित फैण्टेसी कभी भी छलावे में नहीं डालेगी। वस्तुतः डर उन गम्भीर दिखने वाले उपन्यासों आदि से होता है जो सम्भावित की आड़ में कोई सामाजिक, नैतिक, धार्मिक या अधार्मिक 'Comment on Life' देते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि 'कुछ' के लिए ये comments झूठे होते हैं— वह पढ़ते हुए इनसे अप्रभावित रह सकता है, He will not mistake

art for life or philosophy. वह बिना स्वीकार या अस्वीकार उसे पढ़ सकता है।

पर पलायन के बारे में?

इतना स्पष्ट है कि पढ़ते समय तात्कालिक और मूर्त से हम निश्चित रूप से पलायन करते हैं (इतिहास या विज्ञान पढ़ते समय भी) मात्र कल्पित या concieved वस्तुओं में। मुख्य बात यह है कि हम what we escape to कुछ अहंपरक हवाई किले बनाने में पलायन करते हैं, और यह अगर लाभप्रद नहीं तो हानिरहित, मनोरंजक, निर्मम या megalomanac हो सकता है। कुछ मात्र क्रीड़ा में, अपने को divert करने में तथा कुछ लोग disinterested castle building में तथा कुछ realistic fiction में। 'A grim and reader's actual distressful tale may offer a complete escape from the distress' नितान्त सामयिक एवं यथार्थपरक कथाएँ भी ऐसा करती हैं।

इस प्रकार पलायन हर प्रकार का पाठक करता है। पलायन अनिवार्य रूप से 'पलायनवाद' (ism) से बँधा नहीं होता। बहुधा लोग अयथार्थ (fantasy) वाली रचनाओं को बचकाना बताते हैं; क्योंकि उनका विचार होता है कि केवल बच्चे ही ऐसी चीजें पढ़ने वाले होते हैं। वस्तुतः यह आधुनिक युग की धारणा है। यह केवल फैशन के कारण बड़ों की जड़ीभूत अभिरुचि का परिणाम है। वस्तुतः यह बचकाना टेस्ट नहीं बल्कि normal and perennial human taste, temporarily a trophical in their elders by a fashion. उनका नहीं हमारा वाद व्याख्या माँगता है। यों बहुत से बच्चे भी इन कथाओं को वैसे ही नहीं पसन्द करते, जैसे कि बहुत-से बड़े पसन्द करते हैं।

इसके अतिरिक्त यदि 'बचकाना' शब्द को असहमति के अर्थ में प्रयोग करते हैं तो इस बारे में निश्चित हो जाना चाहिए कि ये बच्चों की उन विशेषताओं के बारे में हैं, जिन्हें कि overgrow करके हम सुखी और सन्तुष्ट हो जाते हैं। वे नहीं जिन्हें कि हर समझदार अपने पास रखना चाहता, अगर वह रख सकता। हम शारीरिक दृष्टि से तो बचकानेपन से दूर होकर सन्तुष्ट हो सकते हैं (गोकि यहाँ पर भी ईर्ष्या के बिन्दु हो सकते हैं।) यदि हम उतने घमण्डी, ईर्ष्यालु, निर्दय न हों, जितने कि बच्चे होते हैं, तो अच्छा होगा, पर who in his senses would not keep, if he could, that tireless curiosity, that intensity of imagination, that facility of suspending disbelief, that unspoiled appetite, that readiness to wonder, to pity and to admire? इसलिए बड़े होने में मूल्य है gain करने का, न कि खोने का। Marvels and adventures को रुचि न दे पाना सुखद नहीं है।

अगर फैण्टेसी-अस्वाद को हम बुरे अर्थ में बचकाना कहते हैं तो उसकी कमज़ोरियों को दिखाना होगा। एक मज़ेदार बात यह कि बचकानेपन से घृणा सबसे अधिक बचकानापन है। हम बच्चों के साथ कसी चीज़ को enjoy करने में शर्म क्यों महसूस करें?

On Misreading by the Literary

कभी-कभी साहित्यिक गलत ढंग से और असाहित्यिक सही ढंग से पढ़ता है। बहुधा साहित्यकारों की उनकी कलाकृति के लिए नहीं बल्कि उनके ज्ञान देने वाले facts के लिए प्रशंसा की जाती है। Literature of power को Literature of knowledge के रूप में ग्रहण किया जाता है। यह सच है कि 12 और 20 वर्ष की आयु के भीतर हम तमाम सूचनाओं (कभी-कभी गलत भी) को ग्रहण करते हैं, पर उनका इस रूप में प्रयोग बड़े होते जाने के साथ बन्द होता जाता है। पर बहुत-से असाहित्यिक गण इससे बच जाते हैं। वह कला को ज्ञान या जिन्दगी न मानेगा। अपने व्यवहार में वह नितान्त यथार्थवादी होगा पर कलाकृति एवं यथार्थ में confuse नहीं करता।

पर नितान्त सूक्ष्म और अनजानी रीति से यह गलत साहित्यिकों में विद्यमान मिलेगी। बहुधा लोग Tragic sense, view or philosophy of life के लिए Tragedy पढ़ना मूल्यवान मानेंगे। उसके कथ्य में मुख्यतः दो बातें मानी जाती हैं: (1) That great miseries result from a flow in the principal order. (2) That these miseries, pushed to the extreme, reveal to us a certain splendour in man, or even in the universe.

ये बातें भी हो सकती हैं, पर यदि उनको comment on life, इस रूप में लिया जाये कि मानवीय कष्ट का यह typical or usual रूप है तो गलत बात होगी। तमाम चीजें इनके अतिरिक्त हो सकती हैं। Real sorrow ends neither with a bang or whimper. The tragedian dare not present the totality of suffering as it usually is in its uncouth mixture of agony with littleness, all the indignities (Save for pity) and the uninterestingness, of grief. It would ruin his play, it would be merely dull and depressing. He selects from the reality just what his art needs; and what it needs is the exceptional. शोक में पड़े किसी आदमी को tragic ideas के grandeur के साथ approach करना नितान्त मूर्खता होगी।

यह निर्विवाद मालूम पड़ता है कि ट्रेजेडी को एक जीवन-दर्शन के रूप में लेना एक दुराग्रही एवं Camouflaged of all wish fulfillments है—क्योंकि इसमें pretentions are so apparently realistic. यह भ्रम त्रासदीकार द्वारा नहीं, आलोचक द्वारा उत्पन्न किया जाता है। लेखकों ने अपनी कला की माँग के अनुसार कहानियाँ चुनी थीं, न कि Human misery के रूप में दर्शाने के लिए। Tragedy और Comedy में जीवन की सत्यता का अन्तर नहीं होता।

वास्तविक जिन्दगी से दोनों क्रियाएँ अपने अनुरूप चयन करती हैं। The raw materials are all around us, mixed anyhow. It is selection, isolation and

patterning, not a philosophy that makes the two sorts of play. ट्रेजेडी हो या कॉमेडी या force. वे जिन्दगी के stuff से बनाई जाती हैं वे हैं additions to life rather than comments on it.

पर इसका अर्थ यह नहीं कि कलाकार किसी प्रकार विचार या भावनाओं में हल्का होता है—उसकी समस्त बुद्धि, ज्ञान, अनुभव तथा वास्तविक जीवन का एक flavour or feel, उसकी रचना में विद्यमान रहता है। पर इसमें कोई जीवन-दर्शन ढूँढ़ना बुद्धिमानी नहीं है। कोई भी रचना, complex and carefully made object होती है। Attention to the very objects, they are/is our first step. उनसे निष्कर्षित नीतियों की ओर ध्यान देना using होगा, instead of recieving. यह object क्या है?

One of the prime achievements in every good fiction has nothing to do with truth or philosophy. It is the triumphant adjustment of two different kinds of order. एक ओर तो घटनाओं (कथानक plot) का समयानुसार एवं कार्यकारण क्रम होता है (जैसा कि जीवन में होता है) और दूसरी ओर design के सिद्धान्तों के अनुसार विभिन्न दृश्यों या विभागों का एक-दूसरे से परिसम्बन्धन होता है। सारा विकास इस प्रकार का होता है कि shape of the whole work will be felt inevitable and satisfying. लेकिन इस दूसरे क्रम को पहले के साथ confuse नहीं करना चाहिए। हर घटना, व्याख्या, वर्णन, संवाद—यहाँ तक कि हर वाक्य-को आनन्ददायी होना चाहिए for its own sake.

कुछ लोग इसे मात्र टेक्नीक कहना चाहेंगे, पर वस्तुतः यह मात्र नहीं है। वस्तुतः आकार की उपेक्षा करके 'जीवन-दृष्टि' को महत्त्व देना आत्मछलावा है। जब हम किसी नाटक या उपन्यास के विन्यास के भीतर से गुजरते हैं तो उससे हमें अनेक interesting reflections ध्वनित होने चाहिए।

In reading imaginative work, I suggest, we should be much less concerned with altering our own opinions than with entering fully into the opinions and therefore also the attitudes, feelings and total experience of other men.

In good reading there ought to be no problem of belief. आजकल 'साहित्य' अकादेमिक विषय बन जाने के कारण गलत ढंग से पढ़ना बढ़ गया है। तमाम बुद्धिमान पर अरसिक जन पढ़कर उसका 'उपयोग' करने वाले ढंग पर सोचते या प्रश्न करते हैं।

'जीवन-दृष्टि' ढूँढ़ने वाले जन यदि स्वयं अच्छे विचारक होंगे तो उनके विचार अवश्य मूल्यवान होंगे।

IX – Survey

(1) एक कलाकृति या तो 'प्राप्त' की जा सकती है या 'प्रयुक्त'। प्रयुक्त

करना प्राप्त करने की अपेक्षा हीनतर है क्योंकि इसके द्वारा हमारी जिन्दगी अधिक चमकदार, सहज या कठिन हो सकती है पर कुछ जुड़ नहीं सकता।

(2) साहित्य के माध्यम शब्द होते हैं, अतः यहाँ पर उनका प्रयोग आवश्यक हो जाता है वस्तु तक पहुँचने के लिए। प्रयोक्ता यहाँ इस वस्तु तत्त्व को एक समय बिताने के माध्यम के रूप में, पहेली के रूप में, हवाई किले बाँधने में या जीवन-दर्शन के रूप में इस्तेमाल करता है, पर प्राप्तकर्ता कुछ देर के ही लिए सही, उसी में रहना चाहता है–an end for him. धार्मिक ध्यान या क्रीड़ा से उसकी तुलना की जा सकती है।

(3) यह विचित्र मालूम देगा पर प्रयोक्ता कभी भी शब्द का पूरा प्रयोग नहीं करता–उसके लिए एक हल्का-सा आभास काफी है वस्तु तत्त्व का। Words are for him mere pointers or signposts, पर अच्छे पठन में शब्द केवल सूचित नहीं करते। इसीलिए शब्दों के वर्ण, गन्ध, टेक्सचर, flavour या race की बात की जाती है।

(4) Good reading is always aural as well as visual (sound) ध्वनि भी अर्थ का हिस्सा होती है।

(5) What bad reading wholly consists in many enter as an ingredients into good reading. Excitement and curiosity obviously do. So does vicanious happiness; not that good readers ever read for the sake of it, but that when happiness legitimately occurs in a fiction they enter into it...(but) egoistic castle-building will not survive long in the right reader. पर तरुणाई (Youth) या अन्य किसी असुखी समय में यह उसे पुस्तकों के निकट भेज सकती है।

जहाँ तक मनोरंजन का प्रश्न है, यदि उसका अर्थ Light and playful pleasure है तो उसे साहित्यिक कृति से मिलना ही चाहिए, जहाँ तक पॉपुलर रोमान्स जैसी grip का प्रश्न है, उसे हर पुस्तक में होना चाहिए। A good book will be more; it must not be less. Entertainment in this sense, is like a qualifying examination. लेकिन जो एक को grip करता है, वह दूसरे को नहीं भी कर सकता।

जहाँ तक 'आलोचनात्मक अध्ययन' का प्रश्न है: ideally we must first receive it then evaluate it– पर ज्यों-ज्यों हम...

मंगलवार, 6 फरवरी, 1962

Modern Criticism

(Modern Literature Criticism : An Anthology)

Irving Howe

It is now in moments of extreme tension between writers and audience, that criticism takes place on a unique importance. To indulge in a useful simplification : the more problematic modern literature seems, the more

does criticism need to rehearse the nature of the problem. And that, in response to the growth during the present century of a distinctively modern literature, is what critism has for the most part been doing.

Inner shifts of critical doctrine have been less important than the common task of confronting the 'avaret garde' poetry and fiction of our time.

The most intense moment in the history of modern criticism, the moment of its greatest hold upon the imagination of serious young poeple, has probably just come to an end. This was a moment in which the sense of the collapse of received beliefs had become unusually acute. One generation had been wounded by the debris of political idealogies, another had come to feel that public life was inherently repulsive. Religion seemed for a time to claim the minds of a good many literary poeple, but most of these apparently felt that a genuine conversion placed demands upon their energy and credulity which they could not meet. As a result, religion tendes to become religious experience, and the study myths as the buried foundation of literature became a fascinating strategy for approaching religion without yielding to it.

In an age where intellectuals were both unusually sophisticated and usually susceptible to social malaise, it began to seem that literature retained a purity and good faith which few other experiences could provide. Literature alone had not betrayed modern man, literature alone could not betray him – so, one suspects many people have felt during the past few decades.

Criticism in turn, became the vehicle through which a cultivated elite not only exercised its powers of perception but reflected upon its sense of the human condition in the middle of the twentieth century; a sense that came through most significantly in the literature of our time but which seemed also to need a partial conceptualizing that criticism could provide. The critic became a guardian of taste, a priest of values, a protector of the undefiled word. And in some ways he seemed even more accessible to the audience than the poet or novelist, for the critic alked directly about the problems which the poet or novelist presented imaginatively.

शनिवार, 10 फरवरी, 1962

If idealism has been shown to be misguided philosophy then criticism founded on it will be misleading. If no serious philosopher now is an Idealist, then we must assume that critics who still use Idealist terms are unaware of the implications of the recent development in philosophy. This is by no means trivial point. Our whole intellectual outlook will

be different if we believe that there is some fixed Reality or Right, to be apprehended by intellectual intuition; our grandfathers did believe this; we do not. The collapse of Idealism typifies one of the fundamental changes that have come over our thought recently.

—Leo Aylem in 'Greek Tragedy and the Modern World'.

"Pre-social end, but as a felt relation– as a relation experienced from within... Whenever larger purposes be may glimpse in other situations, it is truth universally acknowledged that a single man in possession of a good novel must be in want of society."

(G. Armour Graig : The unpoetic compromise : on the relation between private vision and social order in 19th Century English fiction).

बुधवार, 14 फरवरी, 1962

A defence of Fiction

(Hudson Review Vol. XVI No. I Spring)

George P. Elliott

चार प्रकार की कथाएँ, Four types of fiction–

1. Narrative may look like an account of actual happenings (realistic Fiction).
2. Autobiography yet it must be wholly imagined.
3. The fiction may propose Ideas (Anatomy of satire).
4. As empty of ideas as a dream (Romance)

"A good story is a narrative fantasy which generates an imaginative reality and incarnates an idea of moral reality."

कथावाचक की कथा कहने की impulse के साथ चार प्रकार की impulses और मिश्रित होती हैं: (1) to dream, (2) to tell what happened, (3) to explain the nature of things, and to make a likeness.

1. Tale and Romance, "...As I slept I dreamed a dream. I dreamed, and behold, I saw..." Pilgrims Progress.

It is the fantasist's alchemy to obey the obscure laws of dream and of story at once, in such a way that his words will stimulate the same fantasy in the reader...a good tale is like a dream, is unlike a dream, and touches the truth.

नैरेटिव फैण्टेसी इन कुछ विधियों से स्वप्न जैसी लगती है: The poeple and images it evokes are vivid, solid and particular, and immediate yet around then loves a penumbra of significance. The fantasy puts disjunct parts of the world together in its own way, into a thing radically different from the visible world. ...In a good fantasy it is also done as a way of saying that the invisible world is not like the world we see and commonly live in but

thus. Identity is impermanent : substitution, metamorphosis, disguise are the stock in trade of romance.

In romance, in tales, in dream like stories, all things are pure and highly coloured. Motives appear to be clear : malice, fidelity, courage, desire, revenge, all the types of human impulse unpolluted. These are laws, some strange, some obscure, many usual, which cause and explain everything.

जो संयोग मालूम देता है, वह वस्तुतः immanent destiny होता है। यह एक प्राकृतिक नियतिवाद (Natural determinism) भी नहीं है क्योंकि there is nothing moral about the decision.

परन्तु विशुद्धतम फैण्टेसी कथा स्वप्न से जितना मिलती-जुलती है, उतना ही भिन्न भी होती है। स्वप्नदर्शी के पास वह दूरी नहीं होती अपने स्वप्न से जो कथावाचक या श्रोता को अपनी कथा से होती है।

Distance is one of the great goods of fcition– that distance midway between the abstractness of essay and the confrontation of drama, a wonderful distance permitting both a kind of extreme intimacy with characters and also a panorama of generations, both the full cold light of analysis and some of the heat of the scene.

A crucial difference between dream and story is language.

Fiction does not deal very much with those clear, definable sorts of truth which like the law of gravity explain the behaviour of things by a formula. Isolated, such formulas as stories yield may be wise and subtle. It psychology, moral philosophy and sociology among them could manage to encapsulate the truths of our behaviour in accurate formulas, there would be no further use for story except to amuse.

A symptom of story's excellena is that, as one reads along, one's mind enjoys a play of speculation about the story's meanings.

रविवार, 18 फरवरी, 1962

Stories of what Happened (Autobiography)

The story teller's own experience of men and things, whether for good or ill–not only what he has passed through himself, but even events which he has only witnessed or been told of– has moved him to an emotion so passionate that he can no longer keep it shut up in his heart. Again and again something in his own life or in that around him will seem to the writer so important that he cannot bear to let it pass into oblivion. There must never come a time, he feels, when men do not know about it.

The tale of Genji

The three forms of telling what happened are biography, history and autobiography.

Biography (and history) lacks one of science's fundamental tools, the verification of hypothesis by experiment, and the variables and imponderables it deals with are beyond control, are beyond identifying. इसीलिए अत्यधिक तथ्यात्मकता A Historical Novel– The subject matter of history proper is large social forces, their creation, movement, corruption, interplay, ossification, destruction, individuals are portrayed as they cause, lead or exemplify these forces. But the subject matter of fiction is the relationships among and within individuals as such, whatever their connection or lack of connection with society. These are mutually incompatible modes of representing character.

A kind of stubborn value attaches to an actual event which an imaginary event lacks. In many ways writers rely upon this to help them hold their readers. The obvious value that attaches to narrating actual events is truth, reality. But literarily, true story is only one of many ways to achieve this value; the value is essential, the way is not... The truth of a story is its conformance to reality, and reality does not often manifests itself powerfully in actual events or lines, but surely sometimes it does. Essentially the biographer, the autobiographer, and the writer of a fiction in the form of biography or autobiography are engaged in the same literary task : Behold the man.

एक वास्तविक और काल्पनिक व्यक्ति की जीवन-कथा का एक महत्त्वपूर्ण अन्तर यह भी है कि जो वास्तविक घटना है, उसकी एक सीमा है पर काल्पनिक की सीमाएँ अनिश्चित होती हैं। आदमी जो कुछ भी सोच या कर सकते हैं, वह इसकी सीमा के भीतर आ सकता है। It is especially attracted by strange and obscure motives; it blends with all the other communing forms of discourse, poetry, dramas, essay conversational, self. मात्र इस कारण, एक बड़ी सीमा तक लेखक और पाठक के लिए यह सुरक्षा होती है कि एक वास्तविक घटना या व्यक्ति के वर्णन से एक सीमा निश्चित हो गयी। यह सीमा सम्भाव्य या सम्भव की न होकर वास्तविक की होती है। A writer who is deficient in invention, and who is at the same time able to subordinate himself to another is especially at ease in biography.

As a piece of writing a well-executed-imaginary document is precisely as authentic as an actual one.

From The Long Revolution

Realism and the Contemporary Novel

Raimond Williams

Realism is not an object, to be identified, pinned down and appropriate. It is, rather, a way of describing certain methods and attitudes and the descriptions, quite naturally have varied in the ordinary exchange and development of experience.

यथार्थ का सामान्य प्रारम्भिक अर्थ था, कुछ दृश्यमान विस्तृतियों का सूक्ष्म एवं जीवन्त चित्रण करना (अश्क)—realism as opposed to idealisation and carricature। लेकिन प्रारम्भ से ही this technical sense was flanked by a reference to content. एक प्रकार की चीजें अधिक यथार्थवादी मानी जाती थीं, बजाय दूसरी प्रकार के। The most ordinary परिभाषा दैनिक, समसामयिक, हर रोज के यथार्थ के Term में भी बजाय वीरत्व, रोमैण्टिक या legendery subjects के। यह स्थिति मध्य वर्ग के उदय के साथ आयी है।

जब यथार्थवादी चित्रण प्रारम्भ हुआ तो एक और विकास हुआ कि within the main stream of ordinary, contemporary, everyday reality a particular current of attention to the unpleasant, the poor and the sordid could be distinguished. Realism thus appeared as in part a revolt against the ordinary, bourgeo is view of the world; the realists were making a further selection of ordinary material with the majority of bourgeois artists preferred to ignore. Thus relaism, as a watch word, passed over to the progressive and revolutionary movements.

फिर Naturalism आया जिसे प्रारम्भ में simple, ordinary everyday life के अर्थ में लिया गया। फिर unncessarily faithful, faithful portrayal of offensive incidents (Daily News : 1881) कहा गया। फिर उसे 'ईश्वर-विरोधी' बताया गया। और अन्त में उसे 'यथार्थवाद' से अलग कर लिया गया।

'Naturalism in art was reserved to the simple technical reference while realism, though retaining elements of this used to describe subjects and attitudes to subjects.'

20वीं शती का विकास और विचित्र रहा। पश्चिम में उसका प्रयोग in the sense of fidelity to psychological reality दिखाई पड़ा। तात्पर्य यह कि we can be convinced of the relaity of an experience, of its essential realism, by many different kinds of artistic method, and with no necessary restriction of subject matters to the ordinary, the contemporary, and the every day. सोवियत रूस में पुराने अर्थों को बनाये रखते हुए उसे 'समाजवादी यथार्थवाद' तक

बढ़ा दिया गया। इसके चार तत्त्व हैं–(1) Norodnost is in effect technical, though also an expression of spirit : the requirements of popular simplicity and traditional clarity as opposed to the difficulties of 'formalism', (2) Ideinost and Paritnost refer to the ideological content and partis on affiliations of such realism, समाजवादी, यथार्थवाद और बूर्जुआयथार्थवाद को इन तीन आधारों पर आसानी से अलगाया जा सकता है। पर चौथे तन्त्र Tipichnost के साथ समस्या चौड़ी हो जाती है।

ऐंजिल्स ने यथार्थवाद की परिभाषा ड़ी थी, "Typical characters in Typical situations" इस कथन में पूरा मार्क्सीय चिन्तन है। Tipichnost इसी परिभाषा का विकास है और यथार्थवाद के पूरे प्रश्न को प्रभावित करता है। सोवियत सिद्धान्ती कहेंगे कि टिपिकल को भ्रमित नहीं करना चाहिए। With that which is frequently encountered, the truly typical is based on 'comprehension of the laws and perspectives of future social development.' We can see that the concept of Tipichnost alters realism from its sense of the direct reproduction of observee reality! 'realism' becomes, instead, a principled and organised selection. If 'typical' is understood as the most deeply characteristic human experience, in an individual or in a society, then it is clearly not far from the developed sense of the 'convincingly real' criterion, now common place in the West in relation to works of many kinds, both realist and non-realist in technique. And it is not our business to pick from this complex story the one use that we favour, the one true 'realism'.

Contemporary themes, ordinary everyday life के faithful description, observed reality आदि का अंकन आज कम नहीं हुआ है। हम अकसर कहते हैं कि यथार्थवादी उपन्यासों की जगह मनोवैज्ञानिक उपन्यासों ने ले ली है–Yet realism as an intention, in the description of these states (direct study of certain states of consciousness, certain newly apprehended psychological facts), has not been widely abandoned. Is it merely that 'everyday, ordinary reality, is now differently conceived and that new techniques have been developed to describe this new kind of reality, but still with wholly realistic intentions. The questions are obviously very difficult, but one way of approaching an answer to them may be to take this ordinary belief that have abandoned (developed beyond) the realistic novel and to set beside it my own feeling that there is a formal gap in modern fiction which makes it incapable of expressing one kind of experience, a kind of experience which I find particularly important and for which, in my mind, the word, 'realism' keeps suggesting itself.

Novel is not so much a literary form as a whole literature in itself.

When I think of the realist tradition in fiction, I think of the kind of

novel which creates and judges the quality of a whole way of life in terms of the qulalities of persons. The balance involved in this achievement is perhaps the most important thing about it. प्रारम्भ में यह सामान्य-सी बात मालूम पड़ती है पर इसका मुख्य अन्तर इसमें है कि it offers a valuing of a whole way of life, a society that is larger than any of the individuals composing it, and at the same time valuing creations of human beings who, while belonging to and affected by and helping to define this way of life, are also, in their own terms, absolute ends in themselves. Neither element, neither the society nor the individual, is there is a priority. The society is not a background against which the personal relationships are studied, nor are the individuals merely illustrations of the aspects of the way of life. Every aspect of the personal life is radically affected by the quality of general, yet the general life is seen at it most important in complete personal terms. We attend with our whole senses to every aspect of the general life, yet the centre of value is always in the individual human person– not any one isolated person, but the many persons who are the reality of the general life.

सोमवार, 19 मार्च, 1962

The obvioust value that attaches to narrating actual events is truth, reality. But literarily, true-story is only one of many ways to achieve this value, the value is essential, the way is not. The truth of a story is its conformance to reality and reality does not often manifest itself powerfully in actual events or lives. It is the task of biographer of a person, real or fictional to choose and arrange a sequence of apparent events so as to manifest to the reader their hidden reality. Essentially the biographer, the autobiographer, and the writer of a fiction in the form of a biography or autobiography are engaged in the same literary task.

शनिवार, 31 मार्च, 1962

सौदा ख़ुदा के वास्ते कर क़िस्सा मुख़्तसर,
अपनी तो नींद उड़ गयी तेरे फ़साने से।

रविवार, 1 अप्रैल, 1962

मौत भी ज़िन्दगी में डूब गयी,
ये वो दरिया है जिसकी थाह नहीं।

फ़िराक़

आज पैग़ाम कोई लबे-एजाज़ तो दे,
मौत की आँख भी खुल जायेगी, आवाज़ तो दे।

फ़िराक़

क़ैदे-हयात औ बन्दे ग़म अस्ल में दोनों एक हैं।
मौत के पहले आदमी ग़म से नज़ात पाये क्यों?

ग़ालिब

ग़मे-जहाँ हो, ग़मे-घर हो, कि तीरे सितम,
जो आये, आये, कि हम दिल कुशादा (विस्तीर्ण) रखते हैं।

फ़ैज़

मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग,
मैंने समझा था कि तू है तो दुरख़्शां है हयात।

फ़ैज़

रात यूँ दिल में तेरी खोई हुई याद आयी,
जैसे बीराने में चुपके से बहार आ जाये,
जैसे सहराओं में हौले से चले बादे नसीम,
जैसे बीमार को बेवजह करार आ जाये।

फ़ैज़

मंगलवार, 1 मई, 1962

पण्डित जी का स्वभाव ही asocial है—कोई करे क्या? जीवन भर इतना self centred रहे कि उन्हें कभी किसी में अच्छाई नहीं दिखी।

बुधवार, 9 मई, 1962

आज कुछ अस्वस्थ अनुभव करता रहा। शायद ठण्ड लग गयी है। शाम को भारत रेस्तराँ गया। डॉ. जगदीश गुप्त आ गये। मेरी असावधानी कि बिना बिल का पेमेण्ट किये बाहर चला गया। उन्होंने बैरा दौड़ाया, बुरा तो लगा पर असावधानी मेरी थी। शायद अवचेतन में यह विद्यमान था कि सिन्दूर payment करेंगे। पर यह क्यों? अनुराग को आज चोट लग गयी थी, उसके कारण मन बड़ा चिन्तित रहा।

जगदीश गुप्त से वार्षिकी वाली उनकी रिव्यू की बात हुई। obstinacy अवश्य थी पर अन्ततः सारे तर्क स्वीकार कर लिये। मुझे नयी कविता में लिखने के लिए cursorily आमन्त्रित किया, पर ऐसे मैं क्यों लिखने गया?

बृहस्पतिवार, 10 मई, 1962

शिकागो स्कूल के Critics and Criticism की रिव्यू करते हुए W.K. Wimsatt ने कहा था "The Chicago critics are people who have a fine blue print of an automobile and sit around complaining that Henry Ford got started on the wrong principles."

In their hundreds of pages of theory and the history of theory only two examplifications of their method were offered : Maclean on 'Lear' and Crane on 'Tom Jones'.

(यही हाल हिन्दी के सिद्धान्तशास्त्रियों का है)

"What Eliot's criticism might look like without the poetry? It might seem less weighty because the reader inevitably tries to find the poet hiding behind the critic," Willard Yhorp in American writing in the 20th century.

इलियट Quotable quotations का आलोचक है–कवि भी like Pope.

मंगलवार, 15 मई, 1962

"Criticism, when it performs its functions, not merely expresses and defines the 'contemporary sensibility' : it helps to form it."

F.R. Leavis : scrutiny : 3, P, Page 319

"Where there is a steady and responsible practice of criticism a 'Centre of real consensus' will, even under present conditions, soon make itself felt.

Ibid

मंगलवार, 26 जून, 1962

Modern Art - for what it is worth is a return to infancy. Its perennial theme is the discovery of things, a discovery that can come about, in its purest form, only in the memory of infancy. That in the effect of 'all-pervading' consciousness of the modern artist, which makes him live from sixteen onwards in a state of tension, i.e. a sense, no longer propitious to the absorption of new ideas, no longer open-minded. And in art a thing can be well expressed only when it has been absorbed with an open mind. All that is left for artists to do is to go back and seek inspiration from the period when they were not yet artists, and that period is infancy.

Cesare Pavese in his Diary
(This business of living 12-2-42)

बुधवार, 27 जून, 1962

Great modern art is always ironic, just as ancient art was religious. In the same way that a sense of sacred was rooted in visions beyond the world of reality, giving them backgrounds and antecedents pregnant with significance, so irony discovers, beneath and within such visions, a vast field for intellectual sport, a vibrant atmosphere of imaginative and closely reasoned methods of treatment that make the things that are represented into symbols of a more significant reality. To treat a thing ironically it is not necessary to make a joke of it (Just as treating some thing as sacred did not mean making it into a liturgy). It is enough to create imaginative visions according to a standard that transends or governs them.

The same thing is apparent in your own initial approach to work that has turned out well : you begin with a discourse broader than the story that is to follow; you view that story with a certain non-challance, as though your interest embraced, a wider field than the story will cover; and you make it your aim to preserve this viewpoint, arranging the whole story, from the first word, the first comma, insuch a way that there shall be nothing superfluous in respect of the material play of the facts. It is a matter of avoiding digression and projecting clear-cut realism on to an enormous imaginary screen.

Cesare Pavese : Diary
26 Feb. 1942

शुक्रवार, 29 जून, 1962

'Symbol', it brings before you objectively, a vast countryside, as if seen through the wrong end of a telescope, presenting it as something wholly your own, implying infinite possibilities.

Pavese diary, 26.6.48

Our trouble is that we no longer believe in the distinction between things sacred and profane. Consequently things are either wholly profane or wholly sacred.

Taking it on a higher level, which means detaching oneself from profane things in order to come closer to sacred things, changes the viewpoint.

शनिवार, 30 जून, 1962

On Tradition

There is a concern for tradition that is modern concern, provoked

by something so simple as a sense of alienation from past, a feeling for history as distinct. It is motivated by the persuasion that tradition has been lost and is recoverable only in ...lty. From this arises a corollary concern with modernity in poetry.

The modern poet, then, is modern only in the light of tradition, only as distinguished from the old. His forms, his models, his subjects and his attitudes are different from and in opposition to the customary and expected forms, models subjects, and attitudes of his own youth and of his readers. Consequently to be modern depends on a tradition different from, upon the firm existence of customary expectations to be disappointed.

रविवार, 1 जुलाई, 1962

The new is parasitic upon the old. But when the new has itself become the old, it has lost its quality of newness and modernity and must shift for itself.

When the audience for poetry becomes satisfied with a customary response to a customary poem, when they demand of the poet that he writes to their expectations, when distinction is lost in commonness, there is need for the modern in art, for a poetry that is consciously different, even if its often mistakes difference form distinction. The poet must exasperate his reader, or succumb to him.

(J.V. Cunningham : Tradition & Modernity :
Wallace Stevens, Poetry December 1949)

सोमवार, 2 जुलाई, 1962

Charles Baudouin

Myth of Modernity

पिछली दो शताब्दियाँ Myth of progress से सुपरिचित थीं, हमारी अपनी नाती ने Myth of modernity को अख़्तियार कर लिया है। यह दूसरी मिथ अकसर पहली की शब्दावली में ही उपस्थित की जाती है।

But the tone of the myth is different and the words in which it is expressed have a different meaning.

Let us try to follow the transition :

प्रगति में विश्वास भविष्य में एक बेहतर संसार को देखता था; अतः यह अच्छा था कि भविष्य की ओर जल्दबाजी की जाये; अतः परिवर्तन और तृप्ति की Prestige. belief in progress beheld in science, and the techniques which science introduces, its most trust-worthy instrument; hence the prestige of the machine. And then, as will happen, the end was forgotten even as one approached it, the means became an end in themselve.

Speed and the machine are among the principal elements of the new myth. As speed is a product of the machine, and as, moreover, both speed and the machine are modern conquests, these three entities : speed, machinery and modernity, are immediately associated in a single closely-knit complex.

Thus, the modern myth is the myth of 'Modernity' yet all bygone epochs, were modern in their time. But this is not true. Our epoch has invented the trick of glorying in the fact of its own existence. Modernity's way of priding itself on its modernity is entirely, 'modern'. What has been called the end of eternity, is precisely reverse.

पर प्रगति का लक्ष्य हमने क्यों छोड़ा? दोनों महायुद्धों ने इस विचार को घातक चोट पहुँचायी।

Men ceased to believe in progress; but only to pin their faith to more tangible realities, whose sole original significance had been that they were the instruments of progress.

This exaltation of the present (not so much because it is the present as because it is something new) is a corollary of that very faith in progress which people claim to have discarded. The present is superior to the past, by definition, only in a mythology of progress. Thus one retains the corollary while rejecting the principle. There is only one way of retaining a position of whose instability one is conscious. One must simply refrain from thinking and surrender oneself to the vortex of the corollary. And then speed comes to our aid.

But every speed may be exceeded; every machine improved, will not the vortex end by plunging into the abyss? For every where the myth of modernity.

'Are not persons of distinction beginning to use the description of 'Modern' as an insult. (पर हिन्दी में ठीक इसका उल्टा है।) results in rising costs, in inflation.

प्रगति की मिथ में मानवता की अपनी आकांक्षाएँ होती हैं और 'आदर्श' का एक अर्थ होता है। पर 'आधुनिकता' की मिथ में मानवता पीछा करने वाले के आगे-आगे भागती लगती है। प्रथम में बीतते हुए क्षण को लक्ष्य की दूरी के घटाव से नापा जाता है पर दूसरे में कोई अन्त नहीं है; the value of the passing moment is measured by records, by comparison with previous moments; the most a man can do is incessantly to flee from the past, which he feels always at his heels.

प्रथम मानवता को reasons for happiness देता है पर दूसरा reasons for unhappiness क्योंकि उसमें मनुष्य अपने आपसे भागता है।

However, the contrast between the 'people' and the 'parvenu' is tending to become less obvious.

इन तीन समानान्तरताओं पर विचार किया जाना चाहिए–

The substitution of modernity for progress, of the record for ideal, of the philosophy of dictatorships for the ideology of democracy.

Distinction is opposed to modernity as equality is to quantity.

क्योंकि इस विचारधारा में factors of quantity की प्रमुखता है।

If one recalls the myth of Mercury who flies with wings at his heels, and is at once the god of speed and the god of thieves, one may come to believe, can it be true that whatever gives us wings delivers us from earnestness?

When one seems to have grown lighter, when one travels quickly, one is inclined to 'make a get-away', the temptation is so strong! The love of risk plays its part.

Honesty is based on a contract, and the contract, in its turn, is essentially a guarantee of stability. It brings matters to a stands till and says, thus shall remain. Every promise is the magnificent attempt of man to put fetters on time, to immobilize the flux of things.

The clean sweep

The modern man hankers after sensation...our rapid means of transport and information enable him to gratify this taste to Satiety. 'Satiety' : that is the operative word.

The great characterstic of the modern man is the fact that he forgets 'the dimensions of humanity.'

If it happens that we have to abandon the speed, we are struck by the fact that our sensations, less numerous, have in compensation become denser, more real, more rich in content and we are not sure that we have not after all gained by the change.

We ought to realise that there are things which call for discerning and respectfull attention and which can neither be simplified nor cut through, or they ...of it. And they are the most precious things.

रविवार, 8 जुलाई, 1962

"हमारे विश्वविद्यालयों के गम्भीरतावादी महानुभाव, जो सनातन शास्त्रीय पद्धति पर साहित्य के सिद्धान्तों का संग्रह करने में महाराज दक्ष की लक्षणा का लक्ष्यभेद कर चुके हैं, पर जिनका सामयिक साहित्य की परीक्षा करने का व्यावहारिक ज्ञान कछुए में मुँह के समान सदैव कायाप्रवेश ही किये रहता है। उक्त अन्तर्दृष्टि के बहुत बड़े हिस्सेदार हैं। अपनी क्षुधापूर्ति के लिए यदा-कदा जब इनकी जीभ खुलती है, तब एक

ही लपेट में किसी को सूफ़ी किसी को अभारतीय बनाती हुई अपना काम बना लेती है। बस, फिर वही कायाप्रवेश! क्या आश्चर्य है यदि सामयिक साहित्य को इन्हीं के कारण वांछित प्रगति न प्राप्त हो रही हो! ये ही अन्तराय बनकर अभ्युदयशील साहित्यिकों में दिग्भ्रम उत्पन्न करते हैं। उनसे सचेत रहना हम सबका काम है।"

नन्ददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, पृ. 70

सोमवार, 9 जुलाई, 1962

It is all very well to cut our way through traditions. Traditions, whether they relate to dress, or customs, or morals, are complicated things, as confused as the ancient portions of our cities... It is only too easy for the rationalistic mind to denounce the illogicality, and even the absurdity, of these survivals attempting to drive through their jungles the straight highways which are more to its taste.

In our own times the offensive against tradition has pushed forward in all directions with a fine in genous energy...As we discard ever more and more boldly, so we proceed to overturn whole catogories of opinions and conceptions. Yet, sooner or later the moment comes when we see, in some accidental fashion, that tradition had its merits.

It is true that traditions are the resultant of the play of conflicting empiricisms that fit themselves together as best they can.

One has to choose one's experiences.

मंगलवार, 10 जुलाई, 1962

Baudelaire and the Modern Man

The delibrate enology of the artificial, the unnatural, the declaration of war upon that nature which romanticism had regarded a kindly, but with which it had finally nauseated the more fastidious; and then an inverted romanticism, an anti-Roussean romanticism, a black mass of romanticism, that is what is incontestably new in Baudlaire, in contestably modern.

Baudelaire's attitude to nature; "Nature is a dictionary. The artist according to him takes his raw materials from nature, but he does not consider that nature already has a structure nor that she is worth representing for her own sake, nor that she is worth representing for her own sake, nor that she has a soul which the artist must divine ('for the forest of symbols' which she offers us, serves us to express ourselves only and not Nature : she is always the dictionary.) "To those doctrinaires who are so satisfied with nature, an imaginative man would assuredly have the right to reply : I find it useless and wear some to represent that which

exists, because nothing that exists satisfies me. Nature is ugly, and I prefer the monsters of my imagination to positive triviality."

It has been said that Baudelaire, in departing from nature, inaugurated the poetry of 'modernity' and 'the capitals'.

As for B's satanism is it not simply rejection of Nature in favour of his 'monsters'. शैतानिज्म की महानता है its will to create another world, to date the world from today. पर नीत्शे की बात बादलेयर में अधूरी रहती है। वह 'मूल्य-सृजन' या 'अतिमानव' की चर्चा नहीं करता। वह बात करता है 'the artificial' और 'the dandy' की। शैतानिज्म की misery यह है कि वह lost paradise के बदले में 'artificial paradise' प्राप्त करता है, and it is not deluded by them.

रूसो के लिए 'प्रकृति' और 'नैतिकता' एक ही हैं। कुछ लोग एक की कीमत पर दूसरे को नकार सकते हैं—बादलेयर के लिए दोनों चीजें अभी भी united हैं। He does not think it possible to shake off of the yoke the one without repudiating the other. And this is B's tragedy; for now only one path remains open to him : 'the artificial' which for him is identical with the perverse; he is in an 'impasse.'

The very notion of perversity proceeds from the belief in ... goodness of nature since, it defines the anti-natural and believes to be immoral. Suppress the dogma of the goodness of nature, and ... is no longer any place for the Baudelarian attitude, which is really the negative of romanticism.

Our epoch, which has killed nature, which has created modernity and the machine which like painted faces and has invented surrealism is unwilling to admit the B's genius went beyond his denial of nature in favour of 'artificial paradises'. It regards him as its precursor and its justification. It is because it sees him from this angle that it so rashly contrasts him with Hugo.

उनकी महानता को— We see in the complete artistic personality which was able to perceive the 'correspondences' of colour, perfume, sound, and ideas, and so to penetrate the essence of symbol. The greatness of Baudelaire is not to be found in the grimace which he imposed upon himself in order to obtain forgiveness for his greatness, and which is all that the more bigoted 'Baudelarians' are able to perceive. He was great, not so much because he sufficiently announced the modern world as because he for saw it sufficiently to be tortured by it. We do not find anything of his greatness in the 'maquillage', which he enlogised, but in the bitterness that impelled him to paint the complexion of a dandy or a pervert on the demigod that he harboured withing him.

रविवार, 15 जुलाई, 1962

'केवल सन्दर्भ नया होता है और वही नया अर्थ दे देता है, वह अपने आप नया हो जाता है और उसमें से नया अर्थ बोलने लगता है।'

अज्ञेय : आत्मनेपद, 139

बुधवार, 15 अगस्त, 1962

Lorca Poems

(1) Songs of the Whithered Orange Tree

Woodcutter
Cut my shadow.
Deliver me from the torture
of beholding myself fruitless.

Why was I born surrounded by mirrors?
The day turns round me.
And the night reproduces me
in each of her stars.

I want to live without seeing myself
and I shall dream
that ants and hawks
are my leaves and birds.
Woodcutter
cut my shadow.
Deliver me from the torture
of beholding myself fuitless.

(2) Farewell :

If I die,
leave the balcony open.
The child eats oranges
(From my balcony I see him).
The harvester seythes the corn

(From my balcony I hear him)
If I die,
leave the balcony open.

(3) The Dumb child :
The child is searching for his voice
(The king of the cricket had it).
In a drop of water the child was searching for his voice.
I do not want it to speak with,
I shall make with it a ring
that my silence will wear on its little finger.
In a drop of water the child was searching for his voice.
(The captive voice, in the distance, was putting on the garb of a cricket).

(4) Each song :
Each song is love's stillness.
Each star is time's stillness a knot of time.
Each sigh is the stillness of the shriek.

शनिवार, 1 सितम्बर, 1962

दोपहर 2:30 बजे डॉ. नगेन्द्र के कमरे में National Text Books (Hindi) के Board of General & working Editors की मीटिंग में भाग लेना।

बुधवार, 26 सितम्बर, 1962

"...all committees, at all times, are morally and intellectually inferior to the average level of the human beings who sit on them." Arnold Toynbee (Mankind the invincible mule : Limits of control.)

शुक्रवार, 28 सितम्बर, 1962

शाम 2:30 बजे देशबन्धु कॉलेज में छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य की सामाजिक व्याख्या पर बोलना है।

रविवार, 30 सितम्बर, 1962

National Text Books (Hindi) Board of working Editors की मीटिंग।

शनिवार, 13 अक्तूबर, 1962

Nature of critical process–Your winters.

1. The statement of such historical or biographical process knowledge लेखक के mind और method को समझने के लिए जितना आवश्यक हो।

2. उसके साहित्यिक सिद्धान्तों का विश्लेषण, जिससे कि वह क्या कर रहा है, जाना जा सके।

3. Paraghrasable content का एक rational critique (Motive of the poem)

4. Rational critique of the feeling motivated यानी भाषा और टेक्नीक (style) की विशेषतायें।

5. Final act of Judgment.

रविवार, 28 अक्टूबर, 1962

Exotic Perfumse

When, on an autumn evening, with closed eyes,
I breathe the warm dark fragrance of your breast,
Before me blissful shores unfold, caressed,
By dazzling fires from blue unchanging skies.
And there, upon calm and drowing isle,
grow luscious fruits amid fantastic trees,
These men are lithe : the woman of those seas,
Amaze one with their gaze that knows no quite,
Your perfume wafts me thither like a wind,
I see a harbour thronged with masts and sails
Still weary from the tumult of the gales,
And with the sailors song that drifts to me.
Are mingled odours of the tamarind,
And all my soul is scent and melody.

Baudelaire

सोमवार, 29 अक्तूबर, 1962

On Democracy

As social conditions become more equal, the number of persons increases who, although they are neither rich nor powerful enough to exercise any great influence over their fellows, have nevertheless acquired or retained sufficient education and fortune to satisfy their own wants. They owe nothing to any man, they expect nothing from

any man, they acquire the habit of always considering themselves as standing alone, and they are apt to imagine that their whole destiny is in their own hands.

Thus not only does democracy make every man forget his ancestors, but it hides his descendants and separates his contemporaries from him, it throws him back forever upon himself alone and threatens in the end to confine him entirely within the solitude of his own heart.

Alexis De Tocqueville
(Democracy in America)

मंगलवार, 30 अक्तूबर, 1962

Character in Fiction

Mary Mecarthy. (Partisan Review
March-April (1961)

मेरी मेकार्थी ने उपन्यास में चरित्र के ह्रास की चर्चा करते हुए लिखा है कि 20वीं शती में दो दिशाओं में कथा-प्रयोग हुए हैं : Sensibility and Sensation. पहले को उसने Feminine एवं दूसरे को Masculine कहा। पहले का विकास इंग्लैंण्ड में, दूसरे का अमरीका में। पर उसके अनुसार विषय-वस्तु पर इन दोनों का प्रभाव एक-सा रहा। 'Sensation and sensibility are the poles of each other, and both have the effect of abolishing the social, sensibility, like violent action, annihilates the sense of character.

Sensibility is only a refinement of sensation प्रेम क्रिया (रति) में हम सभी एक जैसे होते हैं, बजाय बातचीत या अन्य कार्यों में लगने के। रति की चरम सीमा में हम अपने को भी भूल जाते हैं। Sex annihilates identity तथा आधुनिक उपन्यासों में Sex को जितना स्थान मिला है, उतना 'चरित्र की अनुपस्थिति' का ज्ञापक है। इसी प्रकार वूल्फ़ की हीरोइन Mrs. Dalloway अपनी perambulating sensibility के कारण एक parnographic Novel की नायिका की भाँति ही remains a palpitant Organ. लेडी चैटरलीज़ लवर का 'पति' नपुंसक होने के कारण ही अधिक 'चरित्र' है।

Sensation and Sensibility are highest in a child.

अत्यधिक शोक या लोक गम्भीरता (Public solemnity) के अवसर पर सभी लोगों के साथ यह अनुभव होता है कि वे अपनी feeling को उनके वास्तविक स्रोतों या कारणों से हटाकर attach arbitarily to sights, smells and sounds. बच्चा तो इस attentive state of detachment में अधिकतर रहता है।

Now two characteristics of the child are that he can not act (to any purpose) and he can not talk (expressively); hence he is outside, dissociated.

And it is just this state of the dissociated outsider, that is at the centre of modern literature of sensibility and sensation alike. (कामू के 'अनजबी' या डॉ. ज़िवागो के माँ की मृत्यु वाले दृश्य इस स्थिति के रोचक उदाहरण हैं।)

इस तरह के inappropriate sensations, gestures, feelings आदि स्टेण्ढाल या टॉल्स्टॉय में भी मिल जाते हैं पर The world of twentieth century sensibility, in contrast to that of Tolstoy, is a world in a slow motion a world which, however happy it may seen, is a world of paralyzed grief, in which little irrelevent things, things that do not belong, are noticed or registered on the film of consciousness, exactly as they are at a funneral service or by a bored child in the Church.

In the modern novel of sensibility the shimmer of consciousness occupies the whole field of vision. Hapenings are broken down into tiny discrete sensory impressions.

बच्चे के लिए बोरडम के बीच एकमात्र यही रास्ता बचता है कि वह कुछ-कुछ तोड़ दे या किसी को पीट दे—चाहे अपनी माँ को ही—It can not cause things to happen in the world. This is precisely the situation of the hero of the novel of sensation; violence becomes a substitute for action. In the novel of sensibility, nothing happens, as people complain, there is no plot.

(A sustained power of mimicry is the secret of all creators of character. Joyce had it while woolfe did not. ज्वायस ने एक प्रकार की स्वगतोक्तियों के द्वारा 'चरित्र' को जीवित रखा है। यह कथन ही perfect mimicry है—Society के साथ उसके सम्बन्ध के द्योतक हैं।

A tragic novel might be written in an age not conducive to tragedy : it would be less reasonable to examine the general climate of thought in relation to such a novel, and it would be less reasonable to expect novels of such a nature to arise because the climate of thought was as it was.

रविवार, 4 नवम्बर, 1962

Science and Poetry

I.A. Richards

Both a passionate knowledge of poetry and a capacity for dispassionate analysis are required if it is to be victorily prosecuted.

Prosecuted

It will be best to begin by asking what kind of a thing, in the widest sense, is poetry? इसके उत्तर के बाद किस प्रकार हम इसका उपयोग या दुरुपयोग (use or misuse) कर सकते हैं? 'तथा' तथा इसको मूल्यवान मानने के क्या कारण (reasons) हैं?

मानवीय व्यवहार में कविता का स्थान और भविष्य निश्चित करने के लिए पहला कदम यह देखना होगा कि एक अनुभव (कविता का अनुभव जिसे दूसरे ही महसूस कर सकते हैं) का general structure क्या है? इसे धीरे-धीरे पढ़ना शुरू करें—अच्छा हो कि तनिक मुखर होकर—हर syllable को इतना समय देते हुए कि वह इस पर पूरा प्रभाव छोड़ सके तथा Let us read it experimentally, repeating it, varying our tone of voice until we are satisfied that we have caught its rythm as well as we are able, and whether our reading is such as to please other people or not– that we ourselves at least are certain how it should 'go'.

The first things to occur are the sound of the words in the mind's ear and the feel of the words imaginarily spoken. These together give the full body, as it were to the words, and it is with the full bodies of words, that the poet works, not with their printed signs. The full bodies reflect the whole meaning of the words as the printed signs cannot.

Next arise various pictures 'in the mind's eye, not of words but of things for which the words stand.

इसके बाद यह अनुभव जो आन्दोलन उत्पन्न करता है, दो धाराओं प्रमुख और गौण (Major and Minor) में बँट जाता है। गोकि इनके अगणित अन्तर्सम्बन्ध आगे भी होते रहते हैं। The Minor branch we may call the intellectual stream; and the other, which we may call the active or emotional, stream, is made up the play of our interests. पर बौद्धिक धारा माध्यम या उपकरण मात्र है, गोकि यही सरल है follow करने में। विचार उन वस्तुओं की ओर इंगित करते हैं जिनके कि वे हैं।

The real of pure thought is not an autonomous state...our thoughts are pointers and it is the other, the active, stream which deals with the things which thoughts point to.

Every experience is essentially some interest or group of interests swinging back to rest.

To understand what an interest is we should picture the mind as a system of very delicately poised balances, a system which so long as we are in health is constantly growing. Every situations we come into disturbs some of these balances, to some degree. The ways in which they swing back to a new equipoise are the impulses with which we respond to the situation. And the chief balances in the system are our chief interests.

It is incredibly complex assemblage of interests to which the printed poem has to appeal. Sometimes the poem is itself the influence which disturbs us, sometimes it is merely a means by which already existing disturbances can right themselves. More usually perhaps it is both at once.

1964

स्मरण पृष्ठ

रघुवीर सहाय	:	दृश्यालेख के कवि, Poet of Common sense.
मुक्तिबोध	:	Critic as poet
शमशेर	:	Miniaturist or a pure poet (A sensitive (emotional, non visual)
कुँवर नारायण	:	An intellectual
अज्ञेय	:	An Exotic
केदारनाथ सिंह	:	A sensitive pure poet

Determined–प्रतिविहित

अजित–1. धूमकेतु : एक श्रुति
आलोचना के आठ-दस अंक
2. Poetry-Drew तथा अन्य बहुत-सी किताबें
रज्जबबानी–सुश्री कानन बाला
अशोक–Poetry : Feb. May 1964
French number
Times literary supplement, arant Garde No. Sense & sensibility in Modern poetry Miror and the lamb

Abrams

दीर्घतपा
रमेश गौड़–परिन्दे
क ख ग
श्री रामदरश मिश्र– 1. मानवमूल्य और साहित्य
2. उर्वशी

श्री विश्वनाथ त्रिपाठी—आधुनिक साहित्य बोध : परिसंवाद
आलोचना का 26वाँ अंक

PERSONAL MEMORANDA

Name	:	Devi Shanker Awasthi
Address	:	C–5/16 Model Town, Delhi–9 Post-Graduate Evening Institute Delhi University, Delhi
Telephone	:	Office 225334
Scooter No.	:	DLO 4788
Life Insurance Policy No.	:	7210393
Premium Due	:	21.12.64
General	:	Prize Bonds : AB 693432, 33, 34, 35, 36 AB 694222, 23, 24 , 25, 26

बृहस्पतिवार, 2 जनवरी, 1964

An Introduction of Existentialism...... Robert G. Olson

अरस्तू ने साधारण व्यक्ति के मूल्य दैहिक सुख, सम्पत्ति और सम्मान बताये थे, स्पिनोज़ा ने सम्मान के स्थान पर 'यश' रखा और शायद बहुत से लोग आज उसके स्थान पर सामाजिक स्वीकृति रखना चाहें।

लेकिन ऐसे दार्शनिक बराबर होते आये हैं जो इन सामान्यजन मान्य मूल्यों को denounce करके एक ऐसे mode of life पर बल देते आये हैं जिसमें कि इन मूल्यों से उत्पन्न होने वाले frustrations को mitigate किया जा सके। अस्तित्ववादी भी इसी परम्परा के दार्शनिक हैं।

The tragic sense of life which gives impetus to movements of salvation is far from being nihilistic पश्चिम में महान लेखनों-ऐस्काइलस-शेक्सपियर की तरह अस्तित्ववादी have mastered the technique of reaffirming the value of life while boldly depicting its horrors.

सामान्यजन की कही जाने वाली मूल्य धारणाओं के साथ ही परम्परा से प्राप्त कुछ और मूल्य भी होते हैं जो बराबर लोगों के मन में रहते हैं और जाने-अनजाने second line of defence का काम करते हैं। अतः जब अस्तित्ववादी proclaims that the messages of salvation and consolation sanctioned by tradition

are no less vain than the hope of fulfillment through wordly pursuits, the ordinary man is doubly offended. अस्तित्ववादी कहता है कि despair था, इसीलिए मेरे कहने पर तुम उसके प्रति conscious हुए और यदि अगर और ध्यान दोगे तो I will help you master despair.

If, of course, the existentialist's un-compromising rejection of the so called wordly values and of traditional messages of salvation is unwarranted or if their own message of salvation rests upon illusions peculiar to themselves, then the movement may properly be regarded as nihilistic in effect. But the movement is not nihilistic in intent.

शुक्रवार, 10 जनवरी, 1964

Ways of knowledge and experience

Louis Arnaud Reid
(Allen & Unwins)

बृहस्पतिवार, 6 फरवरी, 1964

सवेरे वात्स्यायन जी को फोन

शुक्रवार, 7 फरवरी, 1964

अनुसन्धान परिषद् की गोष्ठी

रविवार, 9 फरवरी, 1964

कृष्णबल की बहिन का विवाह, सायं 7 बजे

सोमवार, 10 फरवरी, 1964

At 3 : 30 Meeting with Dr. Nagendra, Arts Faculty

मंगलवार, 11 फरवरी, 1964

विशेष दीक्षान्त समारोह 3:30 P.M.

बुधवार, 12 फरवरी, 1964

रमेश गौड़ से शाम को 6 बजे wenegers में।
5 बजे कॉफी हाउस में परसाई
'Ivan's childhood' रिवोली में शाम 3:30

शनिवार, 15 फरवरी, 1964

डॉ. नगेन्द्र 12 बजे

सुरेश अवस्थी को सफ़दरजंग अस्पताल में देखना 4 बजे

शुक्रवार, 21 फरवरी, 1964

कानपुर के लिए प्रस्थान, रात्रि को 10 बजे

रविवार, 23 फरवरी, 1964

प्रयाग में विवेचना की गोष्ठी में 'चारुचन्द्रलेख' पर निबन्ध पाठ

सोमवार, 24 फरवरी, 1964

वाराणसी

मंगलवार, 25 फरवरी, 1964

लखनऊ

रविवार, 1 मार्च, 1964

दिल्ली लौटना

सोमवार, 2 मार्च, 1964

To LIC Rs. 352.66 Cheque No. B 152618/UP Co-operative Bank D.A.V. College, Kanpur

शनिवार, 7 मार्च, 1964

डिनर अशोक के साथ रात 8 बजे

रविवार, 8 मार्च, 1964

पिकनिक, लोदी गार्डेन्स

रविवार, 15 मार्च, 1964

10 A.M. writer's Meet विज्ञान भवन तथा लंच 1:15 P.M.

The Modern Poets

M.L. Rosenthal

Exquisite chaos

Philip Larkin is typical of a younger group of self snubbers and self loathers (who, neverthless, have never thought to put down their wretched mirrors) He is forever promising to be a wit and then appealing to the reader to pity him instead......not a world's sorrow and loss of meaning, but the sullenness of a man who finds squalor in his own spirit and fears to liberate him self from it.

Robert Lowell and the Poetry of confession

A reluctance to destroy himself any more rapidly than he was already doing may have been one of the causes of Dylan Thomas's refusal to look steadily into the abyss in his poetry. But in the most powerful work of the modern period the great push is often precisely in that direction. Eliot's interest in the inexpressibly horrible Pound : violence, crane's suicidal symbolism and the psychological self-probings of younger poets all point the same way. किसी इनमें से लिखा है– 'I get the feeling' one of them has written me that the madhouse is not for away from many poets, writing now. I think there is something wrong in both my feeling that this should become accepted as part of the state of affairs and my feeling that this should be countered consciously and fiercely...I think too that this kind of writing...will hurl poetry us a tree it can't descend from...where will it go? Can it make a 'return', can it reaccept the culture that after all fed it and flung it on its way?

We are now far from the great Romantics who, it is true, spoke directly of their emotions, but didnot give the game away even to themselves. They found, instead, cosmic equations and symbols, transcendental reconciliations with, this lime tree lower my prison, or titanic melancholia in the course of which merging a sense of tragic fatality-with the evocations of the nightingale's song the poet lost personal complaint in the music of universal forlornness whitman took American poetry to the very edge of the confessional in his 'calamus' poems and in the quivering avowal of his helplessness before the seductions 'blind loving wrestling touch, sheath'd hooded sharptoothend touch'. more recently under the influence of symbolists Eliot and Pound brought us into the forbidden realm itself, although a certain indirection in their work masks the poet's actual face and psyche from greedy eyes.

Robert Lowell's poetry has been a long struggle to remove the mask, to make his speaker unequivocally himself. His chief mask has been that of the 'crucified' man overwhelmed by compassion and at the same time a boisterous participant in the human ordeal. For him it is a mask of moral guilt, for the present decadence of values and the crash of a great tradition. He charges himself with all the meanness of contemporary New England, as he sees it sunken commerialist degradation. He is also a social critic as uncomproming in his structure as any marxists. So his mask is a composite one.

शुक्रवार, 21 अगस्त, 1964

1 P.M. Lunch Gwyer hall, DU

मंगलवार, 1 सितम्बर, 1964

शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट–वि.ना. साही

"नयी कविता की बहसों में यह मान्यता अन्तर्भुक्त रही है कि न सिर्फ कविता का ऊपरी कलेवर बदला है, या नये प्रतीकों या बिम्बों या शब्दावली की तलाश हुई है, बल्कि गहरे स्तर पर काव्यानुभूति की बनावट में ही परिवर्तन आ गया है लेकिन बहस में इस पर बल कम दिया गया है। चेतना के जो तत्त्व काव्यानुभूति के आवश्यक अंग दिखते थे, उनमें से कुछ अनुपयोगी या असार्थक दिखने लगे, कुछ अन्य जो पहले अनावश्यक या विरोधी लगते थे, काव्यानुभूति के केन्द्र में आ गये और कुल मिलाकर काव्यानुभूति और जीवन की काव्येतर अनुभूतियों में जो रिश्ता दिखता था, वह रिश्ता भी बदल गया।"

हमारे चारों ओर रोजमर्रा का एक जीवन है। इसी का अतिक्रमण करने की कोशिश कविता करती है (शमशेर)। आत्मपरकता की वस्तुपरकता की तलाश करते हैं। तलाश की यह मुद्रा वस्तुपरकता या सच्चाई की अनुपस्थिति अर्थात काव्यानुभूति की अपर्याप्तता मानकर चलती है।

चीजें जन्म लेती हैं, लेकिन वे अपनी गति से निरन्तर अस्तित्व में स्थापित नहीं होतीं। इस निरन्तर अस्तित्व के लिए एक बाहरी प्रमाण की आवश्यकता है। यही शमशेर की काव्यानुभूति का आरम्भ स्थल है।

'आज तक हिन्दी में विशुद्ध सौन्दर्य का कवि यदि कोई हुआ है तो वह शमशेर है। शमशेर ने किसी विषय पर कविताएँ नहीं लिखी हैं। उन्होंने कविताएँ, सिर्फ कविताएँ लिखी हैं। या यों कहें कि एक ही कविता बार-बार लिखी है।'

'वक्तव्य उन्होंने सारे प्रगतिवाद के पक्ष में दिये', कविताएँ उन्होंने बराबर वे लिखीं जो प्रगतिवाद की कसौटी पर खरी न उतरतीं। मार्के की बात यह है कि इनमें से कोई भी पहलू दिखावा नहीं है। ये दोनों ही मुद्राएँ उनके निजीपन की वास्तविक

आवश्यकता से ही उपजती हैं। उनकी कविताएँ तो उनके लिए नितान्त निजी हैं ही, प्रगतिवाद से उनका उलझाव भी कम निजी नहीं है। ...इन दोनों के बीच एक खाई है, जिसे वे भर नहीं पाते?

मनोविश्लेषण को ही काव्य-विश्लेषण का पर्याय मानने वाले इस स्थिति को विभाजित व्यक्तित्व का सटीक उदाहरण समझकर सन्तुष्ट हो जायेंगे लेकिन मनोविश्लेषण आदमी के व्यक्तित्व के बारे में जो कुछ भी बतलाता हो, कविता के बारे में कुछ नहीं बतलाता। क्योंकि कविता का आधार वह निजीपन है, मनोविश्लेषण का 'अहं' जिसके आगे सतही मालूम पड़ता है।

शमशेर का प्रगतिवाद उनकी कविता के हाशिये तक सीमित रह गया। क्या इस निष्कर्ष से शमशेर की काव्यानुभूति के केन्द्र तक पहुँचने में सहायता मिलती है?

शायद! क्योंकि प्रगतिवाद शमशेर के लिए मात्र वह नहीं है जो वह है, बल्कि वह है जो उसकी निजी जरूरत को पूरा करता है, उनकी काव्यानुभूति की बनावट का अंग बनकर प्रस्तुत होता है।

कविता और जीवन की अभिन्नता अनुभूति के स्तर पर है। काव्यानुभूति और जीवनानुभूति एक ही वस्तु है।

काव्यानुभूति और प्रगतिवाद एक तरह के सह-अस्तित्व में आमने-सामने दर्पण की तरह रखे हुए हैं—कविता और हाशिए पर की लिखावट की तरह, लेकिन यह सहअस्तित्व निरपेक्षता नहीं है, साक्षात्कार है। रिश्ते का अभाव नहीं है, रिश्ते की सम्भावना है। वस्तुतः सम्भावना ही वह आधारभूमि है जिसमें आत्म और वस्तु दोनों का अस्तित्व है। इस सम्भावना को सिर्फ दिमागी कौल की तरह नहीं, बल्कि सीधी, माध्यमहीन जीवन की धड़कन की तरह अनुभव करना ही काव्यानुभूति है।

'बिम्बों का सृजन ही काव्यानुभूति की वह नैसर्गिक अवस्था है, जहाँ वह जीवन की अनुभूति से एकाकार होती है। बिम्ब आत्मा की वस्तुता और वस्तु की आत्मा की तलाश है।'

शमशेर की कविता के हाशिए पर सिर्फ मार्क्सवाद का ही नाम नहीं लिखा है। दूसरी तरफ एक और हाशिया है जिस पर एक और इबारत है जो एक दूसरे अर्थ में वर्जित है। उस इबारत का नाम शमशेर देते हैं—अति यथार्थवाद। उनके लिए अतियथार्थवाद शुद्ध आत्मपरकता है, जिस तरह मार्क्सवाद शुद्ध वस्तुपरकता है। दोनों हाशियों की तरफ कवि का रुख एक जैसा नहीं है—मार्क्सवाद या वस्तुपरकता वह है जिसका कवि क़ायल है, लेकिन जिसे वह काव्यानुभूति में ला नहीं पाता। अतियथार्थवाद वह है जो बरबस काव्यानुभूति में फूट पड़ता है पर कवि जिसका कायल नहीं है, जिसे दबा कर, निकाल कर कविताओं में से अलग कर देना चाहता है। ......इन दोनों हाशियों के बीच शमशेर की काव्यानुभूति एक व्याकुल शान्ति की तरह स्थिर है।

शब्द के पोले पड़ने का मतलब है कि अर्थ को परिभाषा के तात्विक कैवल्य की भाँति नहीं बल्कि प्रक्रिया की तरह देखा जाय। तब शब्द के अर्थ टूटने लगते हैं, और वे परिभाषा का अर्थ नहीं, जीवन की अनुभूति का अर्थ देने लगते हैं। शब्द की अर्थशक्ति में इतना बड़ा परिवर्तन हिन्दुस्तान में एक बार और हो चुका है, जब गुमनाम ध्वनिकार ने व्यंजना शक्ति का आविष्कार किया। ...ध्वनि-सिद्धान्त तत्त्वतः घटित को अस्तित्व की तरह फैलता हुआ देखने का प्रयास है। क्या ध्वनि-सिद्धान्त और बाद में विकसित होने वाले विशिष्टाद्वैत और शुद्धाद्वैत में कोई असंलक्ष्यक्रम रिश्ता है? ...शब्दों के प्रति शमशेर की, और समूची नयी कविता की दृष्टि हिन्दुस्तान की पुरानी उपलब्धियों से अलग नहीं है, बल्कि उनके मध्य में स्थापित है। आज की कविता की समस्या लगभग उसी शक्ल में सामने आती है, जिस तरह वह ध्वनिकार के सामने आयी थी। उसमें पहले की सभी दृष्टियों का समाहार हो गया। शमशेर की कविता, समूची नयी कविता को ठीक-ठीक देखने के लिए नयी कविता के प्रतिमान की ज़रूरत नहीं है बल्कि कविता के नये प्रतिमान की जरूरत है।

कविता शब्दों और शब्दों के संयोग से नहीं बनती, बल्कि शब्दों का जाल जो यथार्थ पर फेंका जाता है, उससे बनती है। यह फेंका हुआ जाल ही अर्थ है और अगर यथार्थ स्थिरता नहीं, गत्यात्मक प्रक्रिया है तो शब्दार्थ को भी गत्यात्मक प्रक्रिया होना पड़ेगा। यही शमशेर के शिल्प की समस्या है।

माध्यम : जुलाई, 1964

बुधवार, 2 सितम्बर, 1964

बाँस का पुल की रिव्यू—लक्ष्मीकान्त वर्मा

'पिछले दो दशकों के बीच हिन्दी-कविता की सारी छटपटाहट दो सीमाओं के बीच बँधी रही है: पहली तो यह कि रोमाण्टिक मिज़ाज से मुक्त हो, वह सर्वथा नये भावों के धरातल छूने में सफल हो जाय और दूसरे यह कि वह प्रयोग के माध्यम से और कुछ नहीं तो एक नया क्रम, एक नयी व्यवस्था के उपादान जुटा सके।'

'क्या नयी़ कविता केवल बिम्ब के जाल में उलझ कर समाप्त हो जायगी?'

'क्या वास्तविकता को सही-सही व्यक्त करना काव्य का आदर्श है या परिवेश के सन्दर्भ से संपृक्त सार्थक अभिव्यक्ति और अनुभूति की गहराई, कविता का धर्म है? हर अच्छी कविता वास्तविकता के अतिरिक्त भी कुछ होती है जो वास्तविकता को अर्थ देती चलती है या उस अतिरिक्त के सन्दर्भ में वास्तविकता का अर्थ सार्थक हो जाता है।'

'विषय महत्त्वपूर्ण तब होगा जब हम इन विषयों को नये अर्थ-सन्दर्भों से जोड़ सकें।'

हमारी अपनी पीढ़ी को जिस व्यंग्यात्मक स्थिति का दर्द है उसे मुद्रा, बिम्ब और चीख की सीमाओं को पार करके एक नये धरातल पर, शायद सन्तुलन के धरातल पर, तटस्थता के धरातल पर ले आना चाहिए। अज्ञेय से लेकर तीन सप्तकों तक की कविता हमारी गत पीढ़ी के मेलोड्रामा की प्रतिक्रिया में कहीं मसोसी हुई अनुभूतियों के बीच झूलती रही है।

The Poet understand also that the events of ones own time rarely touch the poet or artist. His knowledge of the present is not a knowledge of wars, what's in the newspaper and latest high brow opinion, but of how his contemporaries talk.

माध्यम : जुलाई, 1964

मंगलवार, 1 दिसम्बर, 1964

Patel Chest Hospital में भरती हुआ Endocarditis रोग के कारण

बुधवार, 2 दिसम्बर, 1964

मन बड़ा खिन्न रहा। जीवन में पहली बार मृत्यु भय लगा in the context of family responsibility

बृहस्पतिवार, 3 दिसम्बर, 1964

आज भी मन प्रसन्न नहीं था, सफ़दरजंग जाने की तैयारी में रहा।
शाम को Dr. Pental आये।

शुक्रवार, 4 दिसम्बर, 1964

आज तबियत बेहतर रही। Patel Chest में ही रहने का निश्चय हुआ।

शनिवार, 5 दिसम्बर, 1964

यथा अर्थ
यह एक जीवित उपस्थिति है...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

मेरे बेड के चारों ओर बेड हैं...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

बत्ती बुझाकर नर्स ताश खेलने लगी।...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली, 5 दिसम्बर, 1964

सोमवार, 7 दिसम्बर, 1964

वात्स्यायन जी आये। काफ़ी देर बैठे।

मंगलवार, 8 दिसम्बर, 1964

आज Sponging कराई। नर्स गोखले ने बहुत सावधानी से स्पांजिंग करायी। शरीर बड़ा हल्का रहा।

बुधवार, 9 दिसम्बर, 1964

श्रीमती कमला सांघी आयीं।

बृहस्पतिवार, 10 दिसम्बर, 1964

खिड़की पर की चार कविताएँ

हवा को...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

इस खिड़की के बाहर भी...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

आह ऊँचा करो पलँग को...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

खिड़की पर टँगा...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली, 10 दिसम्बर, 1964

खिड़की पर से दो कविताएँ

अपनी खिड़की से मैं सुनता हूँ...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

मैंने पहली मंजिल की अपनी खिड़की से हाथ बढ़ाकर...

('कविता उपखण्ड' में संकलित)

पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली, 10 दिसम्बर, 1964

शुक्रवार, 11 दिसम्बर, 1964

भारत जी, बिन्दु जी, डॉ. निर्मला जैन आये।

मंगलवार, 15 दिसम्बर, 1964

आज Sponging करायी पर नर्स मूर्ख थी और callous तकलीफ़ हुई। ठण्डे पानी के कारण। द्विवेदी जी आये देखने।

बुधवार, 16 दिसम्बर, 1964

आज से institute में Duty resume कर ली। काफ़ी नाटक रहा।

बृहस्पतिवार, 17 दिसम्बर, 1964

डॉ. साहा से Fitness Certificate ली। दोपहर में सपरिवार डॉ. रमानाथ त्रिपाठी आये।

बुधवार, 23 दिसम्बर, 1964

Last working day before vacations

शनिवार, 26 दिसम्बर, 1964

Last pages of the Diary – Notes

चिट्ठियाँ लिखानी

1. निशंक
2. मार्कण्डेय
3. मनोज
4. Link
5. हरिव्यास
6. माधव जी

Addresses

Ved Prakash (पुष्पा गुप्त)
2723/Churi Wallan
Delhi
Telephone : 272506

Kanta
27/26 East Patel Nagar,
New Delhi–12
Telephone : 566611

ओमप्रकाश
4/14 रूप नगर, दिल्ली
Telephone : 221108/274718 office

भारतभूषण अग्रवाल
टेलीफोन : 73618/साहित्य अकादेमी
43981

कामनवेल्थ एश्योरेन्स कं.
3620/21, नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज, दिल्ली-6
Telephone : 271889

अशोक वाजपेयी
Telephone : 618384

S.P. Trivedi
Ram Kuti 24, Ram Nagar
New Delhi

W.U.S. Health Centre
Telephone : 228908

R.S. Kushwaha
Telephone : 31123

स. ही. वात्स्यायन
Telephone : 74674

A.P. Saxena
7, Sikandara Hutments
New Delhi
Telephone : 43379/35102

श्रीकान्त वर्मा
Telephone : 33580

डॉ. प्रभाकर माचवे
Telephone : 627664/40161/Ext.

नेमिचन्द्र जैन
3 एफ, जंगपुरा एक्सटेंशन
नयी दिल्ली–14
टेलीफोन : 70162

Lal Behari Pandey
C/37, Rohatak Road (Barsati)
Delhi
Telephone : 5197

डॉ. चानना
टेलीफोन : 52210

Smt. Kamla C/o Mahandra Acharya
13 C, Firojshah Road
New Delhi
Telephone : 40616

श्री अशोक सेक्सरिया
16, लार्ड सिनहा रोड
कलकत्ता-16

डॉ. स्नातक
टेलीफोन : 221643

पुरुषोत्तम प्रसाद
I-सी, 34 रोहतक रोड
नयी दिल्ली-5

डॉ. सावित्री सिन्हा
टेलीफोन : 224231

श्री सुरेश अवस्थी
टेलीफोन : 273585/271524

डॉ. नगेन्द्र
टेलीफोन : 226344

देवेन्द्र कुमार
Telephone : 44251

आय विवरण 1964-65

43) कल्पना
20) धर्मयुग
47)50 वार्षिकी
30) रेडियो
1500) टैक्स्ट बुक
100) चारुचन्द्रलेख की रिव्यू और T.A.

Pay details Deductions

520 626.60 43.33 PF
65 84.12 25.00 Income Tax
41.60 542.48 11.79 Premium
626.60 4.00 Health centre
320.00 अनुवाद 84.12
40.00 माध्यम (10 शुल्क)
40.00 हिन्दुस्तानी

40) चेक धर्मयुग मार्च
40 आजकल
50) धर्मयुग जुलाई
41)80 परीक्षक का Uni.
30) परीक्षक H.S.
100) किताब बिक्री साथी से
100) किताब 'साहित्य'
50) रानी
50) सा. हिन्दुस्तान
60) धर्मयुग
40) रेडियो 21 अक्तूबर
150) कहानी विविधा की रॉयल्टी
40) रेडियो फरवरी
30) आजकल
821)80

1965

Personal Data

Name	Devi Shankar Awasthi
Address	C 5/16 Model Town, Delhi–9
	Deptt. of Hindi And Instt. of Post Graduate (Evening) Studies, University of Delhi–6.
Telephone	Business 225334 (2 PM – 9 PM)
Telephone	Residential 224216 (Mr. Srivastava)
Bank A/C	S/F Saving Bank A/C 2845
Life Insurance	I 7210393, II 7274202 (S.S)
Scooter Regd. No.	UP1–6336

Incase of accident please communicate with
Mrs. Kamlesh Awasthi, C 5/16 Model Town, Delhi–9

शुक्रवार, 1 जनवरी, 1965

मंगल	III Final	
बुध	II Pre	III F
बृह.	II final	III Pre.
शुक्र	II pre.	

To say more than human things with human voice,
That can not be; to say human things with more
Than human voice, that, also can not be;
To speak humanly from the height or from the depth
of human things, that is a cutest speech.

(Wallace Stevens :
Collected poems, P. 300)

From my balcony, I survey the yellow air,
Reading where I have written,
'The spring is like a belle undressing.'

(Wllace Stevens)

सोमवार, 4 जनवरी, 1965

The half pay leave to a teacher in respect of each completed year of service shall be admissible to 20 days. The half pay leave may be mentioned to a teacher on medical certificate on private affairs. No half pay leave may be granted to a teacher in temporary employment except on medical certificate.

Half pay leave may be given in advance on production of medical certificate to a permanent teacher of the University for a period not exceeding 90 consecutions days at any one time at the discretion of the sanctioning authority only commutted leave.

The commutted leave not exceeding half the amount of half pay leave may be granted on medical certification only to a teacher in permanent employment subject into following conditions :

(1) Commutted leave during the entire service shall be admitted limited to a maximum of 240 days.

(2) When Commutted leave is granted, twice the amount of such leave will be debited to the half pay leave.

gross : On left page
550
90
68.75
44
752.75

Deductions : P.F. : 45–83
I.T 28
WUS : 4.50
L/C pre : 11.79

बृहस्पतिवार, 7 जनवरी, 1965

Hindi Directrate Library

1. Modern Book of Aesthetics — Rader (Melim)

701.17; R117M; R5XN J7, K2

2. The language of criticism

And

The structure of poetry 019 J 32 (92954) R.S. Crane

3. Structure of Aesthetics 24221 By F.E. Starshott

(हिन्दी निदेशालय पुस्तकालय)

रविवार, 10 जनवरी, 1965

New letter No. Collector of Central Excise letter No. II–79–ET/64/25556

Dated 28.7.65

Ministry of Steel mines & industry.

D–I/A–7 Lodhi Road N.D.

सोमवार, 11 जनवरी, 1965

The Bourgeois poet – Karl Shapiro

I am an atheist who says his prayers.

I am an anarchist, and a full professor at that.

I take loyalty oath.

बृहस्पतिवार, 14 जनवरी, 1965

खेमका के लिए

Bible, Translation in India, Pakistan and Ceylon J.S.M. Hooper

Revised by W.J. Culshaw, Oxford university press. 1963

शुक्रवार, 15 जनवरी, 1965

1. दो चट्टानें–रमेश गौड़
2. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर–श्रीमती सिन्हा
3. अणिमा : 4–स्नेहमयी
4. मित्रोमरजानी–भारतभूषण

सोमवार, 18 जनवरी, 1965

हसन शहीर की चित्र प्रदर्शिनी त्रिवेणी गैलरी, 3 पी.एम.

बुधवार, 20 जनवरी, 1965

1. Fiction and the criticism of Fiction

Kenyon review : 1956 Philip Rahum

2. Mass Society & Post Modern Fiction

Irving Howe, Partisan Review (Summer 1959)

3. Partisan Review 1948

बुधवार, 20 जनवरी, 1965

4. Techniques in fiction

Robie Macauley and George Lanning

5. Realism in our time : Literature and the class struggle

George Lukacs
(Harper & Row)

सोमवार, 25 जनवरी, 1965

Shanker Chattopadhaya
160A, Lans down road, Cal. 29. Phone : 46–2956

बृहस्पतिवार, 28 जनवरी, 1965

Dr. Saha को दिखाना 10 A.M.
श्री रमाकांत त्रिपाठी
47, एन, एस. रोड, कलकत्ता-34
श्री रामाधार सिंह
Language Division P.P.N. 1/222
Calcutta-14

शनिवार, रविवार, 30-31 जनवरी, 1965

भाषा की जो समस्या इस समय सरकार की सारी गलतियों के कारण उत्पन्न हो गयी है, उसका एक ही परिणाम मुझे नजर आता है कि अगले पच्चीस वर्षों में भारतवर्ष तीन भागों में बँट जायेगा। पूर्वी भारत में पूर्वी और पश्चिमी बंगाल को एक में मिलाकर असम और उड़ीसा के कुछ हिस्सों के साथ एक शासन होगा। दक्षिण भारत हैदराबाद के उत्तरी हिस्से को छोड़कर एक हो जायेगा और पुख्य भारत में उत्तर भारत, गुजरात तथा महाराष्ट्र होंगे। इस विघटन को रोकने का एक ही

उपाय है कि सख्ती और दृढ़ता से मन, वचन और कर्म से एक भाषा को स्वीकार कर लिया जाये, भले ही वह अंग्रेजी ही क्यों न हो।

मंगलवार, 2 फरवरी, 1965

रेडियो पर रेकार्डिंग, 11 बजे सवेरे

बुधवार, 3 फरवरी, 1965

एकेडेमिक काउंसिल के इलेक्शन।

बृहस्पतिवार, 4 फरवरी, 1965

अशोक की दावत।

बृहस्पतिवार, 18 फरवरी, 1965

Health Centre :
Eye
Wed 10.2
Thurs 05.0
Friday 12.2
Dental
Mon 8.30 – 9.30
Wed 8.30 – 10.30
Fri 8.30 – 9.30
ENT :
Mon 10.30
Thurs 10.30
Satur 10.30

बृहस्पतिवार, 25 फरवरी, 1965

In my craft or sullen art
Exercised in the still night
When only the moon rages
and the lovers lie abed
with all their griefs in arms.

I labour by singing light
Not for ambition or bread
or the strut and trade of charms
on the ivory stages
But for the common wages
of their most secret heart

Dylan Thomas

राशन कार्ड नं. 177227
नया स्कूटर 5835

सोमवार, 1 मार्च, 1965

डी.एच. लॉरेन्स की ब्रिटिश बूर्जुआ सोसाइटी पर:–
Nicely groomed like a mushroom
standing there so sleek and erect and eyeable
and like a fungus, living On the remains of a bygone life
Sucking his life out of the dead leaves of greater life than his own
(How beastly the bourgeois is)

बृहस्पतिवार, 4 मार्च, 1965

Auden's picture of the invalidism of middle class British Society, with its obvious similarity to Lord Chatterley's condition :–

I don't want any
        more hugs,
make me some fresh tea
        fetch me some rugs.
(It's no use raishing a shout)

सोमवार, 22 मार्च, 1965

Greek Tragedy and the Modern World

Leo Aylen

मनुष्य के बारे में एक बात एकदम निश्चित है कि उसकी मृत्यु होगी। इस स्थिति में अभी दो ही रास्ते हैं कि या तो इन चीजों को भुलाए रखने की कोशिश

की जाये या फिर धीरे-धीरे हम अपने को इस तरह तैयार कर सकते हैं कि मरते समय तक भय न रह जाये।

हमारी पीढ़ी के लिए जो बात बड़ी विशिष्ट है वह है Intellectual nature of awareness of the destructive forces with which we are surrounded. One of the functions of tragedy is to help people to come to terms with the thought of death. The greek tragedies at any rate are conspicuous for their clear headed acceptance of the fact of death.

हम अपनी सीमाओं से भी परिचित होते हैं। एथेन्सवासियों को ट्रेजेडी सहायता नहीं थी, जब वे भले-बुरे के बारे में सोचते थे। और उन सबमें मानवीय सामर्थ्य की सीमा का सतत बोध मिलता है।

अपनी परम्परा के मूल्यों के प्रति सप्रश्न होने के लिए हम विवश हैं। हम अपने द्वारा किये जाने वाले अभूतपूर्व लाभों एवं विनाशों से परिचित हैं। Should we say that christianity and scientific method are responsible for more human misery that all the quietist eastern ways of life put together? Is it because both church and scientists forgot the whole community of which they we both members? Is it because the community was too lazy to think deeply about the aims of either church or scientists? इनके कोई प्रत्यक्ष उत्तर नहीं हैं।

इस तरह के सवालों का उत्तर देते समय या सामाजिक इतिहास की विवेचना में हम अपनी जिन्दगी को कला, विचार, धर्म, राजनीति आदि के शीर्षकों में बाँटकर नहीं देख सकते।

इस प्रकार हम विवश हैं अपनी और अपने समाज की मृत्यु की awareness के प्रति मानवीय शक्ति और सीमा के प्रति तथा अपनी परम्परा के प्रति सप्रश्न होने के लिए—ऐसी जिज्ञासा जो न केवल राजनीतिक है और न नैतिक, न धार्मिक और न कलात्मक। हम जिन्दगी को अपने पूर्वजों की बजाय निम्न तरीके से देखते हैं। यह मुख्यतः विज्ञान के विकास के कारण हुआ है। उदाहरणार्थ, quantum physics का प्रभाव has been to make us see that no intellectual system is certain.

The kind of awareness which has been forced on us seems very similar in many ways to the kind of awareness which produced greek tragedy.

I believe that our society has a need which only tragedy can fill.

There can not be a tragic drama unless the audience to some extent shares the writer's pre-occupations are tragic ones.

It seems obvious that there is no such thing as tragedy. There are only plays, some of which have always been called tragedies, some which have always been called tragedies, some of which have usually been called tragedies at certain times in history the atmosphere has been conductive to the production of such plays.

There are those who say that religion appeals to the irrational in us. I am saying that religous beliefs should be tested by ordinary experience. There are those who say that in matters of moral action, we can intuit? What is right? I am not sure that I understand, what moral action is; all conscious action is a result of decision between opposing courses, and in all decisions we use value-judgements.

There are those who say that we should judge art by separate values from those of real life, presumably adhering to the idealist belief, in a separate science of aesthetics. Hobson says, we have no right to resent in the theatre an authors philosophy merely because it is different from our own.

Of course we have right to resent it. अगर हम गलत का प्रतिरोध नहीं कर सकते तो रंगमंच गम्भीर समस्याओं के लिए अनुपयुक्त हो जायेगा।

We are asked sometimes to abandon our values in the theatre. But 'our values' is the exact equivalent of the way in which we judge."

It used to be thought possible to reach objectivity. Now not even scientists talk in these terms. If this is true of science, how much more necessary is it for a critic of tragedy which touches on all the fundamental things of life to realize that there is no objectivity.

The common Ground of Tragedy

We could say of every extant greek tragedy that it was a lively meditation, conducted in public, into some issue of permanent significance, using song and dance and verse dialogue to represent an event in ancient history which embodied the particular issue, so that the audiences understanding of the issue should be deepened. This is the common ground of the tradegy.

तीन fundamental points :

(i) In every tragedy the action is initiated by both men and 'theoi', Every tragedy represents action that is doubly determined. The world view of greek tragic poets is one where men's actions are complimented by the actions of other beings, and men's action are given significance by fulfilling the purposes of other beings.

(ii) In every tragedy chorus is central. The chorus speaks beyond their own understanding, and thereby enelighten ours.

(iii) The poetry, especially that of choruses, has multiple reference. It is possible to see these plays as thought provoking images of religious moral and socio-political issues. But the images have application at one and the same time to all these categories. The tragedians attitude of mind was determined by a desire to bring all facets of experience to bear on the

issues about which they were concerned, with the result that it is impossible to say if an issue is religious, political or moral.

The tragedians have a determination to feel after some utilimate, in expressible order behind human experience and the powers of nature, personal and impersonal; they have a hope that somehow this order and the process of human justice can be related. The experiences of tragedy affronts our belief in the order, or our hope in its relation to human justice.

It is necessary to add that great tragedy is not 'patriotic'.

(i) The greek poets are not concerned primarily with 'making a good plot' they allow in consistencies, and fail to fill in gaps in the story. हमें याद रखना चाहिए कि अरस्तू ने जिस mythos को ट्रेजेडी का सबसे आवश्यक तत्त्व माना है, उसका वास्तविक अर्थ 'plot' न होकर story है। इसलिए यह कहना उचित होगा कि story पर ध्यान दिया गया है, न कि प्लाट पर।

(ii) यह नाटक 'चरित्र' के नहीं हैं। General pattern द्वारा subordinated चरित्र-चित्रण। आवश्यकता पड़ने पर इस क्षेत्र में वे पूरी ऊँचाई पर उठ जाते हैं।

चरित्र-चित्रण characterisation is shown often by means of highly pregnant lines of poetry. इसीलिए इसे अभिनेता या दर्शक के लिए miss कर देना बहुत आसान होता है।

(iii) All the talk of tragic hero is irrelevant.

The purpose of tragic poet was didactic; they were concerned to show the way in which a person should live, and the limits of human power; they were especially concerned with life in the society they knew, and used their drama to present the images of what that society could be. Their method was historical and ritualistic, a use of poetry to understand the way in which the world's order had worked in the past, as the best, or only way of understanding how it works now. Their means was of drama put on a festival for the entire population. It was an all purpose drama including song, dance, verse, ritual and slapstick. The Centre of the drama was an image of the community, a dancing, singing chorus. It was a means for everyone to discuss and ponder the important issues of life and death, and at the same time a union of all social activities. Tragedy is vulger; it is blantantly, theatrical, it is for the ordinary poeple; it is about vulgar things activity like death.

Tragedy represents wrong actions and their consequences.

The Greek poets described in actions which disrupted the order of things, where a person, our stepped the limits of human 'moira'. As a result catastrophic follows and innocent human beings suffer. our sympathies are roused by the predicament after innocent suffers, but the poets do no more than show us the reasons why they suffer, comfortless as thereafter are.

The tragic writer looks at a mass, a group of people killed for no apparent reason, and tries to find some reason. जैसे एक करने में एक तथा शक्ति और सौन्दर्य होता है, दूसरी ओर विवशता भी, वैसे ही In tragedy we are asked to watchmen being swept down waterfalls, not only the man waterfalls two. In Greek Tragedy which has no heroes, we are asked to watch the waterfall, in Shakespeare more to watch the man.

एक ईसाई के लिए all experience is to be seen as experience of God. इसमें आनन्ददायी अनुभव को तो समेटना आसान है पर दुखदायी अंशों को ईश्वर के साथ सम्बद्ध करके अनुभव करने में Tragedy उभरती है।

The viewpoint of tragedy is the view point of death.

We become aware of a desperate need for life to shape itself into a pattern, and as the pattern forms we discover with horror that we have to make a choice, to accept the pattern as real, or deny it as illusion. We have to declare or deny our relationship with avlanche as it crushes us, the lion as he tears us, our own invention as it explodes on us. It is because this reasons to be the fundamental part of the activity we call tragedy.

Tragedy + Philosophy Great drama does not arise from conditions in society.

Most useful intellectual skill is that of in mentioning or discriminating between images and analogic for our experience. The aims suggest that the activity should be imaginative, speculative, eclectic provisional and above all, not specialised. Philosophy with its certain systems is not a possible medium for this activity. Rational Poetry such as Greek tragedy is.

The development of quantum physics has meant an end of certain philosophical systems. Before this the most important rational activity was the understanding of logical connections; now it is the making of relevant images, secondly, if there are no certain systems, there is only me, and my experience, and the experience of others in so far as I can understand it by analogy with my own. Profitable discussion, therefore will be in terms of analogies and images. And the medium for this is rational poetry.

शुक्रवार, 9 अप्रैल, 1965

Poetry and the Theatre

Philosophy has come to an end, and philosophers no longer claim that their craft can illuminate experience in the way that people need, Scientists, when they talk in ordinary words about the nature of the world, can only use analogy. Moralists, when they claim to intuit the light, are confronted with different and conflicting claims.

The wheel has come full circle, and we now see that primitive cultures which thought analogy was the best way of understanding the world were right. To master the method of analogy in the craft of poetry.

If the dramatist is to enlarge his audience's understanding he will have to represent decision in an artificial way.

Shakespear's uses of history

Geoffrey Bullough

उद्देश्य

1. Values of human life which Shakespeare apparently wished to foster by writing about history.

2. Dramatic use he made of historical themes for theatrical purposes.

The first use of history was to make him select significant moments, to form patterns out of the chaos of the chronicle's details, to search for parallels and contrasts in character and incident, to seek ways of suggesting that the bitter quarrels, the downfalls of selfishmen and parties were cosmically fated and fell into a design of poetic justice.

He may be said to have learned his dramatic craft largely in the school of history. By the time he had finished his first tetralogy he knew how to organize the most refractory material into a dynamic, well inter-related design, how to modulate through narrative, discussion, passionate utterance, irony, pathos, of logue and solilogy, how to keep his separate to shift the focus between individuals, पर कमज़ोर चरित्र को दिलचस्प बनाना आगे चलकर सीखा।

In treating of English history Shakespeare had chosen periods of descard and class dissension of war either civil or foreign, in order to teach the lessons of concord and degree.

In both of his great love tragedies Shakespear's poetic opulence is used not only to enforce the or same opportunities afforded by story and character but also to rise above them. In Antony and Cleapatra the poetry makes us suspend our ethical standards and accepts and rejoice in behaviour which sets law, duty morality, as we share in a fever and a passion which are not only of the flesh but of the spirit.

The appeal is from sober reason and judgement to our fellow feeling, ouur participation in natural passions and appetites which are good in themselves and so powerful that most of us have had both bliss and bane from them. By with and eloquence which rise above but do not ignore the ways of ordinary lovers, Shakespeare refines, and intensifies the Antony-

Cleopatra relationship and makes it enviable as well as reprehensible, until finally we regard their deaths as both morally right and artistically suited to a passion which so enlarges the sphere of our emotiobnal experience. In Antony and cleopatra the ethical uses of history are for once transcended and Shakespeare has at last written an historical tragedy in which the whole movement is a poetic unity in conception and execution.

बुधवार, 14 अप्रैल, 1965

Understanding Drama C. Bruts

Fiction & Drama

1. कहानी का method नाटक के समान objective हो सकता है।
2. उसका प्रभाव sharp contrasts पर निर्भर हो सकता है।
3. बहुत कम description हो।
4. तथा परिस्थिति को ज्यादातर संवाद से आगे बढ़ाया गया हो।

Differences :- सामान्यतः कथा में बहुत थोड़ा action होता है, what goes on consists almost entirely of the comments of the characters on a situation. Not much happens overtly. The characters talk, about a situation instead of participating in it, they are not really influenced by it and so what we have is a kind of photographic glimpse of static characters. But in general drama apperently works with the greater success when characters act out a situations themselves instead merely viewing it, even though they be very diverse and significant spectators.

2. दूसरे कहानी में सूच्य या लिखित चीजें भी महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा करती हैं पर नाटक में यह सुविधा नहीं प्राप्त होती।

3. लेखक कहानी में मानसिक दशाओं का एक प्रत्यक्ष, तात्कालिक वर्णन उपस्थित कर सकता है, नाटक नहीं।

4. Drama demands a more overt form of action. The ability of fiction to describe setting and properties of all kinds to look at both the outer world of things and the inner world of mind, to shift easily from present to past, means that it has a variety of resources with which to take an apparently slight or trivial situation and extend it as it were, into a much fuller and richer meaning. It can take a difference of attitude which appears only, at the level of casual conversation and give it a dramatic substance. Lacking all these devises, drama must present the difference of attitude in an actual clash of character, where the words are not merely descriptive but are accompaniments of action or indications of action to come.

Poetry & Drama

The poem can be said to be dramatic in these ways : the emotion springs from some definite occasion; the play of thought and feeling is developed in terms of the occasion (rather than expressed in abstract terms); and the poet's attitude to the situation is carefully controlled even involving dramatic shifts and sharp reversals, (that is, it does not get out hand, becoming sentimental, vague or monotonous.)

Drama and poetry are both concerned with presenting situations which will be meaningful, poetry uses imagery, rhythm, symbols, statements, as the words of the author or some character, spoken to himself or someone else. Drama depends almost entirely on what people do and say to each other : meanings, thought, feelings must in the main be externalised in conduct (though the conduct need not be violent or sensational).

Drama is brief compressed, concerned with crucial events, people are disturbed unusually tense; there is a great increase in emotional pressure. So poetic language becomes natural in drama which achieves real intensity.

बुधवार, 29 अप्रैल, 1965

प्रेमधन

दृश्य रूपक का नाटक

कार्तिक-1938 वै. आ. का.

नये नाट्यशास्त्र की आवश्यकता: प्रथम हमारे भाषा के नाटक लिखने वालों के अर्थ भाषा दृश्य-काव्य के निरूपण लक्षण तथा भेद, रीति, नियम और उदाहरण का बताने वाला कोई साहित्य का ग्रन्थ नहीं, और जो संस्कृत में 'षष्ठ परिच्छेद', साहित्य दर्पण में श्री विश्वनाथ कविराज रचित, दशरूपक सूत्र इत्यादि हैं, अब उनमें बहुत-से गड़बड़ समय और भाषा-परिवर्तन के कारण हो गये और कितनी बातों का विरोध पड़ गया। अतएव मुख्य तो इनका आश्रय लेकर और उस समय से इधर के बने नाटक तथा अंग्रेजी, बँगला, इसी रीति से हमारी भाषा के भी (जो हैं) और गुजराती, महाराष्ट्री से भी जाँचकर नये तरह पर खासकर इस नागरी भाषा में कोई ग्रन्थ होना अत्यन्त आवश्यक है।

(इसके बाद फार्म सम्बन्धी गड़बड़ियों की ओर संकेत)

लेखन + अभिनय

जानना चाहिए कि नाटक वहाँ तक नहीं है कि जहाँ तक उसमें नकलपन आवे,

किन्तु नाटक और अभिनय वह वस्तु है जब देखने वाले को इसका परिज्ञान न रह जाये कि हम नाटक देखते हैं वा सत्य लीला; जिसके शब्द-शब्द से रस चूता और पद-पद पर नये आनन्द का मजा मिलता जाये और देखने वाले उस रस में रंगकर तनमय दशा को प्राप्त हो जायें। अवश्य उत्तम नाटक और अभिनय वही है परन्तु तब तक यह कैसे हो सकता है कि जब तक सत्कवि की कविता न हो, और चतुर नट नाट्य में प्रवीण न हो, निश्चय जानिए कि दोनों एक-एक मिल तब ही ग्यारह की संख्या प्राप्त करते हैं, केवल बनाने वाला क्या करेगा जब खेलने वाला ठीक नहीं। ...मण्डली जो बड़ी होती है...अच्छे-अच्छे नाटकों को भी वे अपनी तौर पर सँवारती और बनाती भी हैं।

(आरम्भ शूर की बात करके उन्होंने कहा कि पारसी कम्पनियों के आने के साथ सारा जोश ठण्डा हो गया)

संयोगिता स्वयंवर और उसकी आलोचना

'कथा वा बीज उत्तम है' 'परन्तु ग्रन्थ प्रबन्ध और नाटक रचना इसकी बिल्कुल ही निकम्मी निकली।'

"अब थोड़ा-सा प्रस्तावना के ख़ात्मा और कथा-प्रवेश पर लिहाज करना उचित है–

प्रथम तो लिखते हैं कि 'पृथ्वीराज वेश बदलकर चन्द्र के संग जयचन्द्र की सभा में आते हैं।' (बस काफी था और यदि आप पात्र सूचना या कथारम्भ के योग्य नहीं मानते तो बेफायदाः नाटक का मजा खराब करने वाली गुप्त बात क्यों यहाँ प्रगट करते हैं?)

'...बलिहार-बलिहार कहाँ तो संयोगिता आती है और आप अभी साज-सामान ठीक करना चाहते हैं। प्रस्तावना काहे को यह तो बनियों का ठाठ हुआ कि कोई सौदा पटता ही नहीं। जाओ जोरू से भी सलाह कर आओ।'

अब देखिए समागम की दशा आप देख ही चुके, नायक-नायिका के स्वभाव का परिचय मिल ही गया होगा, नाटक के प्रबन्ध का कुछ कहना ही नहीं, एक गँवार भी जानता होगा कि स्थान परिवर्तन के कारण गर्भांक की आवश्यकता होनी है अर्थात् स्थान के बदलने में परदा बदला जाता है, और इसी परदे के बदलने को दूसरा गर्भांक मानते हैं; सो आपने एक ही गर्भांक में तीन स्थान बदल डाले...।

(इसे नाटक व्याख्या कहें या कहानी)

हम नहीं जानते इस अंक से क्या फल सिद्धि समझी गयी है।

Radical Innocense

Ihab Hassan

American Novel does not only over presence : it explores and enlarges the modalities of our being, "to be alive, to both the whole man alive; that is the point". "D.H. Lawerence, and at its best, the novel and the novel supermely, can help you. It can help you not to be a dead man in life."

ज्यादा महत्त्वपूर्ण enquiry होगी the nature of the contemporary self in action and reaction, in stress and freedom, in ascent and denial sallying forth to confront experience and recoiling again to preserve its sanity or innocense.

The actions and recoils of the contemporary self engage that dense area of reality wherein our epochal consciousness and our literary forms meet. The movements of the self suggest, the regions of tension and repose in our cultural life : The hero while life still beats in his fictive art, mediates between self and world in that imaginative dialectic form we have agreed to identify as the novel.

A dark impulse of 'resistance' permeats contemporary letters, ओ कोनोर और नॉर्मन मेलर दोनों ही ने माना है कि violence and distortion must be the means of projecting a vision to which society is hostile, contemporary world presents a continued affront to man, and that his response must therefore be the response of the rebel or victim, living under the shadow of death.

The Contemporary self is also post romantic. The contemporary recoils, from the world against itself, It has discovered absurdity. Its recoil is one of its awareness, a strategy of its will.

"If the modern temper, as distinct from the romantic, lies in the admission that men are mortal, this admission determines the nature of the raw material with which the artist much work. An element of despair, a destructive element is one of the signs by which we shall know him– the other is the constructive use to which this element is put."

Wright Morris

Precisely what the new hero stands for, no one can yet define. He is not exactly the liberals's idea of the victim, not the conservative's idea of the pariah, not the radical's idea of the rebel or perhaps वह यह सब कुछ है और विशेषतः इनमें से एक भी नहीं है।

His capacity for pain seems very nearly saintly, and his passion for heresy almost criminal. But flawed in his sainthood and grotesque in

his criminality he finally appears as an expression of man's quenchless desire to affirm, despite the voids and vicissitudes of our age, the human sense of life.

बृहस्पतिवार, 29 जुलाई, 1965

Fiction and the criticism of fiction

Philip Rahv

The Novel is at the present time universally recognized as one of the greater historic forms of literary art. Its resources and capacities appear to be commensurate with the realities and consciousness of the modern epoch and its practitioners, having inherited a good many of the functions once exercised by poetry and drama, no longer feel the slightest need to engage in the kind of apologeties that were quite common even as late as a hundred years ago उपमा को unruly, unpredictable, ungovernable, rude plgbean energy from unprocessed reality से मिली।

Now that the novel is broadening, growing, begining to be a great serious impassioned living from of literary study and social research, now that by means of analysis and psychological enquiry it is turning into contemporary, moral history, now that the novel has imposed, upon itself the investigations and duties of science, one may again make a stand for its liberties and previleges." Goneourt Brothers in the introduction of their novel 'germinie Lacerteux" (1864).

इसमें विज्ञान वाली बात छोड़ दी जाये तो अब भी मान्य होगा।

The one question arising in connection with it is whether it is still necessary at this date again to make a stand for the novel's liberties and privileges.

20वीं शती की आलोचना एक सिद्धान्त और व्यावहारिक पद्धतियों (practical procedures) dealing with the prose medium that are as satisfactory is their exactness, subtlety and variety as the theory and procedures worked out in the past few decades by the critics of poetry.

The criticism of poetry has of late acquired a rich consciouness which may be defined objectively as the self consciousness of the medium-an historic acquisition that, acting as a force in its own right, has already considerably affected the writing of poetry and may be expected to affect it even more in the near future.

इतने श्रेष्ठ उपन्यासकारों ने भी Theory of fiction के क्षेत्र में उस कोटि का

योग नहीं दिया जैसा कि कवियों ने दिया है। इन लोगों ने अपने व्यवहार से कथा माध्यम को प्रभावित किया है—सिद्धान्त-चर्चा से अलग रहते हुए। केवल प्रोफेशनल आलोचक और पण्डित ही काम करते रहे।

It is precisely the fact of signal progress that we have witnessed in the criticism of poetry that accounts in some ways for the obserable lag in the criticism of fiction. किसी अन्य क्षेत्र की भाँति ही आलोचना के क्षेत्र में भी प्रगति एवं रेखात्मक, संगत और अग्रसारित नहीं होती। एक क्षेत्र में प्राप्त लाभ को दूसरे क्षेत्र में मुआवजा देना पड़ता है। कविता-क्षेत्र में आलोचना की अत्यधिक सफलता ने कथा-समीक्षा को प्रभावित करना शुरू किया है और यह प्रभाव सदैव शुभ या स्वस्थ ही नहीं है।

For the commanding position assumed by poetic analysis has led to the indiscriminate importations of its characteristic assumptions and approaches into a field which requires generic critical terms and criteria of value that are unmistakbly its own. Just as Zola or ejarcourt brothers associated the novel with science for the sake of the prestige that this conjuction seemed to confer upon their literary ambitions, so now critics of fiction are attempting to assimilate, it to the poem, thus impeding an adequate inspection of the qualities and effects of prose-medium. This effort to deduce a prosdics from a poetics is 'an fond' doomed to fail for it is simply not the case that what goes for a microscopic unit such as the lyric poem goes equally well for the macroscopic compositions of the writer of narrative prose.

इस प्रभाव के तीन biases हैं :

The first bias is manifested in the current absession with the search for symbols, allegories and mythic patterns in the novel - a search conducted on the unanalysed assumption that to locate such symbolistic fictional work is somehow tantamount to a demonst ration or its excellence यह तथ्य कि इस प्रकार के प्रतीक या पैटर्न उत्तम और अधम सभी प्रकार के उपन्यासों में मिलते हैं, उनके दिमाग में नहीं आता।

The second bias, even more plainly deriving from the sensibility of poetry, is the one identifying style as the essential activity of imaginative prose, and identification that confuses the intensive speech proper to poetry with the more openly communicative, functional and extensive language proper to prose.

The third bias is that of technician, which may be defined as the attempt to reduce the complex structure and content of the novel to its sum of techniques, among which language is agian accorded a paramount place.

जहाँ तक पहले आग्रह का प्रश्न है एक तो symbolism, allegory myth आदि पर्यायों की तरह प्रयुक्त होने लगे हैं। The younger critics have taken to using all three terms almost inter changeably and always with an air of offering an irrefutable proof of sensibility, with the result that they have been nearly emptied of specific meaning and turned into little more than pretentious counters of approbations. But the more these terms lose their reference to anything concrete beyond themselves, the easier becomes their conversion into verbal symbols in their own right, symbols of admission and belonging to a school at present academically and critically dominant.

इसमें उपन्यास के कथात्मक विकास की ओर ध्यान न देकर किसी एक स्थिति या भाषा-प्रयोग का विश्लेषण किया गया है।

What at bottom is the animating idea behind this exaltation of symbolism in current critical practice? As I see it its source is not directly literary but is to be traced to an attitude of distaste towards the actuality of experience an attitude of radical devaluation of the actual if not down right hostility to it, and the symbol is ofcourse reality available as a means of flight from the actual into a realm where the spirit abideth forever. अगर थर्टीज में साहित्य और जिन्दगी के अन्तर को भुला दिया गया था तो अब उनके नजदीकी और अनिवार्य सम्बन्ध की चेतना नहीं रह गयी है।

Hence the effort now we are witnessing to overcome the felt reality of art by converting it into some kind schematism of spirit; and since what is wanted is spiritualisation at all costs, critics are disposed to purge the novel of its characteristically detailed imagination working through experiential particulars– the particulars of scene, figures and action : to purge them, that is to say, of their gross immediacy and direct empirical expressiveness. It is as if critics were saying that the representation of experience, which is the primary asset of the novel, is a mere appearance; the really and truly real is to be discovered, somewhere else at somewhere else at some higher level beyond appearance, the novel, however, is the most empirical of all literary genres; existence is its original and inalienable datum; its ontology if we may employ such a term in relation to it, is 'naive' commonsensical, positing no split between appearance and reality.

फिक्शन की व्याख्या एक चीज है और उसे dissolve करना दूसरी। और प्रतीकों में dissolve करना यथार्थ का अस्वीकार है। वस्तुतः यह सिद्धान्त प्रतीकवाद का भी न होकर Meta physics का है। The obsession with symbolisation is at bottom expressive of the reactionary idealism that now afflicts our literary life and that passes itself off as a strict concern with aesthetic form.

This is not to say that fiction excludes symbolisation बल्कि उसमें बहुत अधिक होते हैं, symbolics devices प्रचुरता से और उनका प्रतीकात्मक import भी। लेकिन symbolic import के माने हैं that is nothing more mysterious then its overplus of meaning its suggestiveness over and above its tissue of particulars, the actual representation of which it is comprised, and that is scarcely the something as treating these particulars as clues which it is the ingenious critics task to follow up for hidden or burried meanings that are assumed to be the 'real point' of the text under examination पर इसमें धीरे-धीरे text का महत्त्व समाप्त हो जाता है। एक बार प्रतीकों की खोज के बाद उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है। पर text एक शीशी या पीपा नहीं है। वह अपने आपमें सम्पूर्ण है और प्रतीक खोजी आलोचक भाव और कला के पुराने अस्वीकृत द्वैध को ही स्थापित करते हैं। प्रतीक fictive reality के integral part होते हैं और इसीलिए नितान्त बौद्धिक specification को व्यर्थ कर देते हैं।

दूसरी bias भाषा सम्बन्धी है। इसमें style के आधार पर टॉलस्टॉय को जेम्स या जेन ऑस्टिन से inferior उपन्यासकार कहा जायेगा। जबकि in applying other criteria character creation, for instance, or the depth of life out of which a novelist's moral feeling springs or the capacity in constructive a plot (plot, that is the Aristotetion sense, as the soul of an action) to invest the contingencies of experience with the power of the inevitable– we shall be persuaded soon enough that Tolstoy far outranks Jane Austen. जाहिर है कि कठिनाई भाषा वाली कसौटी के कारण है। Which when applied unilatelly is likely to expose us to false valuations.

F.R. Leavis भी इस खतरे को समझते हुए कहते हैं, "with the novel it is so much harder to applly in a critical method the realisation that everything the novelist does is done with words here, here and here, and that is to be judged as an artist (if he is one) for the same kind of reason as a poet is. Poetry works by concentration; for the most part, success or failure is obviously locally. But prose depends ordinarily on cumulative effect, in such away that a page of novel that is on the whole significant may appear undistinguished or even bad.

पर इस खतरे को समझते हुए भी लीविस इसी को अपनाते हैं क्योंकि उन्हें दूसरा रास्ता नहीं दिखता।

The trouble lies in his reluctance to draw a sharp enough distinctions in principle between prosaic and poetic speech. Is it really the case that language plays the same role in both media? In looking to narrative prose for "fictional analogues of lyrical moments" are we not in effect ignoring

the crucial differences between the use to which language is put in poetry as against its use in prose and hence denying the latter the status of a seperate genre?

रूसी रूपवादी आलोचकों ने भी भाषा का यही कविता वाला दृष्टिकोण उपन्यास पर अपनाना चाहा था। अपेक्षाकृत उदार रूपवादी विक्टर Zhirmunsky ने विरोध करते हुए कहा था :

A novel and a lyric poem are not to be equated as works of verbal art because the relation in them between theme and composition is quite different. Words in a novel say by Tolstoy or Stendhal are closer to everyday speech and openly communicative in function whreas in a poem the verbalization is wholly determined by the aesthetics design and is in that sense an end in itself. निश्चय ही शुद्ध रूपवादी गद्य भी होता है, जिसमें शैली और संघटन (composition) के तत्त्व प्रमुख होते हैं पर यह अलंकृति ही निश्चित रूप से इसे स्टेण्डल, टॉलस्टॉय या दास्तोवस्की जैसे उपन्यासों की नैरेटिव भाषा से अलग करती है। लोग extensive rather than intensive verbal means से मुख्यतः ये लोग expressiveness प्राप्त करते हैं। This ornamenty prose is mainly distinguished by the fact that it keeps the reader's attention fixed on the small detail : The words, their sounds, their rhythm. 'It is the opposite of Tolstoy's or Stendhal's analytic prose इसमें अपेक्षाकृत छोटी इकाई बड़े फ्रेम से स्वतन्त्र होती है, उससे कृति की समग्रता नष्ट होती है। इसका अर्थ केवल काव्यात्मक उदात्त भाषा ही नहीं है, यह crudely realistic भी हो सकती है, जैसे कामू का प्रोज़।

The norms of the novel cannot accomodate a declaration of independence by the smaller unit, the word, the phrase, the sentence or the paragraph. Normatively the language of the novel does not possess the autonomous valve that it has in poetry. In prose the relation between the word or sigh and its represent is more firmly fixed and necessarily conventionalised than in poetry, where this relation is continually man suverted so as to exploit the discard no less than the concord of sign and referent.

सुजान लैंगर ने प्रश्न किया है कि क्यों सभी साहित्य विधाओं में गीत सबसे अधिक शाब्दिक माध्यम (verbal means)–शब्द और इसकी शक्तियाँ, ध्वनि, छन्द, अनुप्रास, तुक और अन्य लयात्मक devices पर निर्भर करता है। उसका उत्तर है: the motif...of a lyric is usually nothing more that a thought, a vision, a mood, or a poignant emotion, which does not offer a very robust frame work for the creation of a piece of virtual history. "The lyric poet uses every

quality of language because he has neither plot nor fictitious characters nor usually any intellectual argument to give his poem continuity. The lure of verbal preparation and fulfillment has to do nearly everything."

Actually the dramatic as well as the narrative resources of the modern poetic medium are extremly limited and the imagery it employs, however dramatic its impact on its own chosen ground, is not substitute for bodying forth of character in action.

क्रिस्टोफर काडवेल ने कविता और गद्य की भाषाओं का अन्तर बताया है : Poetic word is the logos, the word made flesh, the active will ideally ordering, whereas the novel's word is the sign, the reference, the conversationally pointing gesture... Poetry concentrates on the immediate affective associations of the word "where as the story goes first to, the object or entity symbolized by the word." In order to draw its association with that, "The poem and the story both use sounds which awake images of outer reality and affective reverberations; but in poetry the affective associations are organised by the structure of the enter reality portrayed. Hence here of the novel is not like the 'hero' of poetry, a universal common 'I', but a concrete individual. "कविता का पाठक कविता और उसके शब्दों में रहता तथा कवि से तादत्म्य करता है जबकि उपन्यास का पाठक लेखक के 'कथात्मक संस्कार' में डूबता है जिसमें कि he finds 'a more or less' consistent mock reality that has sufficient stuff in it. To stand between him and the external reality 'यानी की तादत्म्य शब्दों से नहीं उनके माध्यम से mock reality से होता है। इसीलिए लय, precision और style are alien to the novel... Novels are composed of scenes, actions, stuff and people, just as plays are." A 'jewelled' style.

is a disadvantage to the novel because it distracts the eye from the things and people to words–not as words as black outlines but as symbols to which a variety of feeling-tone is directly attached."

सार्त्र ने एक बार कहा था कि 'poet is writer who refuses to 'utilize language' उपन्यासकार के बारे में उलटकर कहा जा सकता है 'novelist is a writer who is more often than not perfectly willing to utilize language.

कवि के लिए हमेशा मुख्य समस्या style की है, पर उपन्यासकार के लिए नहीं। जेम्स या दास्तोवस्की जैसे लेखकों की नोटबुक्स बताती हैं कि उनका सरोकार to define their subject, to see their way through the plot, the complications of the intrigue, the arrangement of scenes, the temproral sequence the narrative perspective or point of view आदि रहे हैं, न कि भाषा।

भाषा के मामले में हम उपन्यासकार से केवल यह माँग कर सकते हैं कि उसकी

भाषा कथ्य के अनुरूप रहे जिससे fiction reality खण्डित न हो। नदी के द्वीप का कथ्य गोदान की भाषा में नहीं कहा जा सकता। अज्ञेय की Themes प्रूस्त की भाँति undramatic हैं, वे poetic ironic हैं।

Memory the intermittences of heart, nostalgia for childhood, the vocation of the artist, illusion and disillusion with the great social world. There is of course action in froust but this action is rendered undramatically, mode shifting from analytic meditation to rhapsody and back again; and meditation and rhapsody are closely allied to the poetic medium. The intrinsic nature of prousts themes and his conception of them as enchanted realm's as he put it in which 'the dust of reality is mixed with magic sand' are such that they demand a master of language for their realization.

मंगलवार, 3 अगस्त, 1965

So far as Mr. Mark Schorer's essay "Technique as Discovery" is concerned I think I have already dealt with it to the extent that it ur uniquely puts emphasis on style as an element of novelistic technique. For the rest, what is mainly to be objected to in Mr. Schorer's approach is his exclusive and almost vindictive emphasis on technique which leads him to say that "When we speak of technique in the novel we speak of nearly everything." His notion is that because technique objectifies the materials of art it also ipso facto evaluates, them in a moral and intellectual sense. To me this formulation represents a monistic scheme a violent simplification that leaves out of account any number of problems, such as that of creative personality, of the conditioned historical outlook prompting writers to settle upon some techniques while rejecting others, and the problem of the personal and unforeseen which, as malraux has noted is always present in our experience of a masterpiece. If by some chance the text of Hamlet had been lost to us, we would plainly be unable to imagine it despite all our accumulated knowledge of Shakespear's techniques. And how are we to reconcile Mr. Schorer's point of view with Proust's precept that style is essentially a matter not of technique but of vision? The implication of that precept is that the technique of a true artist is dictated by an inner need and can be initated only superficially vision is inimitable.

In a way everything Mr. Schorer says about the importance of technique is true, but true only in the trite sense that the novelist cannot render a single scene without some kind of technique, adequate, But does

Mr. schorer really intend us to understand him in this altogether obvious manner. He remarks that if Thomas Wolfe had the right sort of respect for technique and the ability to pursue it.

He would have written "a great novel on his true subject the dilemma of romantic genius." Plausible at this sounds, does it actually mean anything more than if wolfe had been a different kind of man he would have written different books? Tautologies are not insights. There is something interior to technique and that is sensibility. Wolfe's sensibility was such that he was unable to coneine of the subject of romantic genius ungenuinely novelistic spirit; all he could do is spill the subject rather than express it : and the sensibility of wolfe is not something he could alter. Sensibility can be cultivated under the appropriate conditions but it can scarcely be learned as a technique is learned. Let us beware of regarding Technique of as some sort of gimmick which it takes a certain account of intelligence to master after which the writer is at liberty to create to the top of his bent, one detects in such idea an unconscious predisposition toward scientism, toward purely manipulated notions of the creative process and tendency to subject to rationalisation. Let us recall T.S. Elliot's statement about massenger that he to as a brilliant master of technique without being in any profound sense an artist. This can only mean that even though without technique we can do nothing in art, Technique is not merely enough.

सोमवार, 9 अगस्त, 1965

American short Novels की भूमिका में R.P. Blackur

Fictions are what we make of ourselves, and they cannot help reflecting something of our character and forecasting something of our fate one of the honest common places of conversation is that knowledge of a strange country is better gained from its imaginative literature than from its guidebooks, history and statistics.

(महाभारत में दिल्ली में सहायता नहीं मिलती।)

In the sense in which it is pertinent today this can be detached from the mass of impertinence every writer is necessarily in some relation to his actual society and its culture when it has one and the relation remains actual even when the writer lies, exaggerates or denies, or revolts against that society.

Great writers perhaps prophesy and enact the history and characters of great countries by giving their feelings form and their thought the special twist of idiom. The writers at the time their countries reach a new stage of identity, Lesser writers perhaps reflect that identity, its lapses and recoveries, the hypocrises and sincerities of custom and behaviour by which it gets along.

Literature is the free will of the soul cireling about the will of things and the will of history.

शुक्रवार, 13 अगस्त, 1965

Time (13/8/65)

India (Pride and Reality)

(1) Tiny and turkey necked, shy as a school boy in his rumpled dhoti and brown loafers, Shastri both matches the diminished stature of India and reflects its inchoate strength.

(2) What threatens it today is bureaucracy—
an Indian nightmare more overwhelming than
anything dreamed of by Kafka...New Delhi
is being strangled in Paper.

(3) The key to Indian art, letters and entertainments is escape.

बुधवार, 18 अगस्त, 1965

The condition of the Novel.

(1963 में लेनिनग्राद में होने वाले परिसंवाद की Report, New Left Review. No. 29, Jan-Feb 1965)

Alain Robbe-grillet

'...The novel is not a tool and that from society's point of view, it indeed probably serves very little purpose at all.

The Novalist is certainly engaged he is bound to be a anyway but no more or less than anyone else in the sense that he is a citizen of system and lives within certain social customs and rules, among them religious and sexual prescriptions. He is engaged to the exact extent that he is unfree. And one of the particulars and very virulent, forms that this restriction of freedom takes place at the moment is precisely the pressure brought to bear by society when it tries to make the writer believe that he is writing for it or against it, which comes to the same thing.

The writer suffers, likeway one else, from the misfortunes of his fellow men. It is dishonest to pretend that he writes to cure them.

The form of a novel seems much more important to me than the plot – even an anti-fascist plot. At the moment of creation I feel the necessity to use certain forms, but I don't know what they mean and even less consequently what purpose they can serve.

The novel is not a means of expression by which I mean that it knows in advance the truths or the questions which it sets out to express. The novel for us, means search which does not even know what it is searching.

I write to try to understand why I feel the desire to write.

The socialist camp sharing the illusions of the bourgeois world, about the political power of art, sharing the same cult of obsolate artistic forms, the same language in which to couch its criticism and in the end same values.

"Decadent"? in relation to what? In human? Is'nt it rather your conception of man which needs revivifying... We only have the right to address the masses when we have pleased the ruling elite.

Sartre– (sum up करते हुए उठे हुए विचार बिन्दुओं को रखा)

In the east as in the west we do not choose our situation. We do not decide to write for a minority public, while the writers from the socialist countries choose a mass one. It is an objective fact that a mass public is not yet available to western writers or if it is they have to pass by way of the bourgoisie to reach it.

2. Reality– शकाली सारूत ने कहा कि–

This reality had to be discovered. This is the core of whole problem; Creation? Expression? or Discovery? There is no contradiction between these terms– one can certainly discover through creation, but one should make this clear. समाजवादी यथार्थवाद expression of reality की बात करता है पर वह भी creation ही होता है–उपन्यास creation ही होता है–उपन्यास 'Every writer lies in order to tell the truth.'

3. Values– रोब्ब गिये ने कहा कि 'नोवा रोमां' का विरोध करने वाले established values के आधार पर बात करते हैं। जैसे कि संसार बना-बनाया प्राप्त हुआ है और उसे वर्णित कर देता है, पर ज्यानोव Zdanov तक ने कहा है कि For socialist realism the task is to interpret the present in the light of the future.

शुक्रवार, 22 अगस्त, 1965

जो यथार्थ हमारे सामने है, सचमुच भयावह है

धर्मयुग, 15 अगस्त, 65, गुलाबदास ब्रोकर

Modern Man in search of a soul

Contributions to Analytic psychology

सोमवार, 25 अगस्त, 1965

If one is to suppose that the future is as regourously determined as the present, the statement is terriable, it binds the writer hand and foot... But if as I think the future, though it can no doubt be thought of with optimism, is nonerthless a development which is by definition unknown, uncertain, than to treat the existing world from the point of view of what it will become, of what others are going to make it, is precisely to contest the present in the name of the future. This is why literature must always retain a critical function even if one's perspective is optimistic as a matter of principle, perhaps there has precisely been too much insistence here on the positive role of literature and not enough on its function of discovery and as a critical mirror. In any case, this problem of the novelist's discovery of his values should be discussed further.

मंगलवार, 26 अगस्त, 1965

4. Decadent का क्या अर्थ है?

कोई समाज डिकेडेण्ट होता है, इसलिए उसके व्यंजक साहित्य को भी कहना चाहिए? पर तब फ्यूडल समाज के लिए प्रेमचन्द डिकेडेण्ट हो जायेंगे। यों लेखक के निजी contradiction से भी नये रूप उभर सकते हैं।

Is there a dialectical relation between social developments and the novel?

5. The relation of man to man, that is to say responsibility.

The totality is what the writer and his readers have a common. साहित्य अनिवार्यतः कमिटेड होता है। For a man's totality today is the fact that we risk dying in an atomic war if we do not concert our efforts to prevent it. This does not mean that the writer is obliged to write about atomic war : it means that a man who is afraid of dying like a rat can not be quite. sincere if he is satisfied writing poems about birds. Something of his epoch must be related in his work in one way or another.

शुक्रवार, 27 अगस्त, 1965

Artsfaculty गीता कपूर

बुधवार, 1 सितम्बर, 1965

Fictions are what we make ourselves and they cannot help reflecting something of our character and forecasting something of our fate.

The writers come....at the time their countries reach a new stage of identity. Lesser writers perhaps reflect that ideality.

R.P. Blackmur
In the Introduction of American short novel.

मंगलवार, 19 अक्तूबर, 1965

L.C. Jain, M.I.C. की अदालत में 10 बजे

मंगलवार, 16 नवम्बर, 1965

सविता जैन: 4:30 बजे
Last page
Pledged to M/S Prem Nath Motors Pvt. Ltd., Sindhia House, New Delhi for fiat car – 2021034 Pass Book No.

Last page of name & address & Tel No.
Taxi stand (मॉरिस नगर) 227110
दुर्गाशंकर अवस्थी, 289/88 मोती नगर (नारायण कुटीर), लखनऊ
दिवाकर पाण्डेय, उदासीन काटेज, हुसैनी आलम, हैदराबाद-2
सुदेश कपूर, 3570 जटवाड़ा स्ट्रीट, दरियागंज, दिल्ली-6
गीता कपूर, 3754/3 कूचा परमानन्द, फैज़ बाज़ार, दिल्ली-6
Uberoi opticians, 43-N कनॉट सर्कस, नयी दिल्ली (कान्टेक्ट लेन्स)
जावेद अहीर, जैन ग्लेज़िंग नं. 13, सदर थाना रोड, दिल्ली
उपेन्द्र के नौकर के लिए 226664
Director Public Relations, Delhi 223481

Last pages of the Diary 1965
मनोहर काले 24/29 शक्ति नगर, दिल्ली
कु. सविता जैन 7/35 दरियागंज, दिल्ली

ईवनिंग इन्स्टीट्यूट 225334

श्रीकान्त 33579
डॉ. नगेन्द्र 226344
श्रीमती सिन्हा 224231
डॉ. स्नातक 221643

डॉ. सुरेश अवस्थी 273585/45947
425548
श्री नेमिचन्द्र जैन 70162
श्री भारतभूषण अग्रवाल
73618/43581 Ext.
श्री वात्स्यायन 74674
राजकमल प्रकाशन 274463/274718
खेमका 265749/48016 (होटल)
श्रीवास्तव जी 224612
K.L. Gandhi 225251
रघुवीर सहाय 76230 घर/277520
K.M. Agrawal 263879 घर/55359
कान्ता 566681
ओम प्रकाश 221108
प्रयाग नारायण त्रिपाठी 40527
श्रीमती विमला गुप्त 221235, 44713
श्री बालकृष्ण राव (दिल्ली में) 77763
राजेन्द्र अवस्थी 77341

श्याम सुन्दर पाण्डेय 272663
40091 हिन्दुस्तान टाइम्स

श्री परमेदर सिंह सेठी 225360
1240 चालीगंज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6
मोहन राकेश 522, राजेन्द्र नगर,
नयी दिल्ली-52167

महेन्द्र भल्ला 51911
श्री कृष्ण गोपाल वर्मा 169
जुबली हॉल
श्री रमेश काला Fc/18 ग्वायर हाल
A.P. Saxena 43379
श्रीमती निर्मला जैन·224074
सिस्टर अनम्मा सी 9/ए मॉडल टाउन
डॉ. ओझा 225658
डॉ. रामसिंह (लॉ) 145 जुबली हॉल

राजेन्द्र यादव 229961
लक्ष्मीचन्द्र जैन (कलकत्ता) 75522

राजीव सक्सेना 619315, II–E/24, लाजपत नगर
डॉ. कैलाश बाजपेयी H. 26ए साउथ एक्सटेंशन-I, नयी दिल्ली
डॉ. रामचरन मेहरोत्रा 0/4, जयपुर 76275
विपिन बिहारी मिश्र, कानपुर 39008 for kanpur 051
उमाशंकर केदारनाथ, कानपुर 36004 052/23609
वीरेन्द्र स्वरूप उर्फ वच्चू बाबू कानपुर 35925
नरेश चन्द्र चतुर्वेदी दुकान 36935/38303

कविताएँ

(1953-1964)

आम थे बौराए / मैंने पूछा / ये ग्रेनाइट की चट्टानें, वह दूर्वादल के मूल /
जगत की रीति-नीति में बहुत बड़ी जीत चाहिए /
जी चाहता है तोड़ दूँ, हर महल दीवार को /
एक दिन तारे ने चाँद से कहा / अनिवार्यता / आज मेरा प्यार उमड़ा है /
पुकारता तुम्हें / आकांक्षा / लेना, देना और जीना /
जिन्दगी में बहुत जन प्यारे लगते / हर तरह से हम दबे आज तक /
ऐसे में मेरा उत्तर / बवण्डर / पत्थर, बालू और पानी की लकीरें /
संक्रमण / चश्मा पहने, तहमद बाँधे / परीक्षार्थी और निरीक्षक /
बलि और वामन / मन में कितने ही वाल पेग / पत्र की समस्या /
तमस : तीन आशय / एक मोनोलॉग / प्रवाह के साँचे /
एक रचनात्मक सुझाव : नये सूट का उद्घाटन / कंचनवती का संशय /
यह वर्ष खत्म फिर एक बार / नये वर्ष के पहले दिन /
चिटक गयीं मन की दीवारें / जी हाँ! मैं कुण्ठाग्रस्त हूँ /
हम देवताओं के गुनाह हैं / यह संझा भी प्रतिदिन जैसी ही बीत गयी /
दर्द तो नहीं / सुनना भी बड़ा धैर्य चाहता है / उदासी : तीन बिम्ब /
यथा अर्थ / मेरे बेड के चारों ओर बेड हैं /
बत्ती बुझाकर नर्स ताश खेलने लगी

खिड़की पर की चार कविताएँ

I हवा को / II इस खिड़की के बाहर भी /
III आह! ऊँचा करो पलँग को / IV खिड़की पर टँगा

खिड़की पर से दो कविताएँ

I अपनी खिड़की से मैं सुनता हूँ /
II मैंने पहली मंजिल की अपनी खिड़की से हाथ बढ़ाकर

आम थे ब्रौराए
महुए की कलियाँ भी टपकीं
कवि देख रहा है
प्रकृति सुन्दरी को
देखा उसने अज्ञात यौवना को
कवि मानस मचल उठा
बोल फूटे लोकगीत के
'औचक आप जोबनवा मारेसि बान'
अचानक लगा मदन का बाण
भीग गया तन-मन-प्राण
और तभी
'महुआ रोवे ठाढ़ आम बौराए'

3 जनवरी, 1953, पांडेनपुरवा (रायबरेली)

मैंने पूछा :
तुमसे, उनसे, सबसे;
कितना बोझा सर पे,
भय का, धी का, आत्मा का।

फिर इन पर भी
टाइपराइटर की 'की' पर
टूटती उँगली का
रेडियो ऐक्टिव* तरंग का
भीतर की उमस
बाहर के दबाव का।

आकाश पर चढ़ा हूँ।
भूगह्वर में गया हूँ।
उबर नहीं सका हूँ।
तारक पुंज, नीहारिका, नेबुला
ग्रहों, उपग्रहों की गति
स्तर भेद पृथ्वी के
सर्दी गर्मी के नाप के
सबका, यानी कि
ज्ञान का बोध
अजाने के अजान का बोध
जिज्ञासा का दुख
लाया हूँ।

* रेडियो ऐक्टिव–रेडियम का प्रभाव डालने वाला यानी विद्युत प्रभाव डालना।

पूछता हूँ फिर तुमसे केवल तुमसे
या फिर अपने भर से :
क्या करूँ? कैसे उतारूँ सर से?
अज्ञान ज्ञान के अन्तर को
अनजान कर यूँ।
कहो फिर गुफा गह्वर निवासी
वन दिखा दूँ।

पर, पर कुछ नहीं।
पर यह व्यर्थ
उत्तर...उत्तर...उत्तर, उत्तर इतना मात्र है
केवल इतना मात्र
कि टूटने दो मत कमर
सहज, दृढ़शील होवे उमर।
हर क्षण के अंकुर–पल्लव–फल
को ग्रहण कर लो।
शक्ति ले लो
बोझा ढो लो।
शायद भविष्य की सन्तानें कृतज्ञ हो पाएँ
इसलिए वर्तमान को जी लो।

7 जनवरी, 1954, कानपुर

ये ग्रेनाइट की चट्टानें, वह दूर्वादल के मूल
असंख्य द्रुमों की छायाएँ गये आज हम भूल
गये आज हम भूल, याद रहा यूरेनियम
माइसीन, अल्फाड्रग औ' कुण्ठा का कर्दम
रहे ताकते स्विच, रडार, अणु, विविध आँकड़े
मन छूट गया, रही खोजती बुद्धि भाव
ये ग्रेनाइट की चट्टानें।

10 जनवरी, 1954

जगत की रीति-नीति में बहुत बड़ी जीत चाहिए
मनुष्यता के गीत में हमें संगीत चाहिए
नादवृन्द ध्वनि मन्द्र हो—
मनुष्यता जहाँ पै इन्द्र हो
उसी समाज में युद्ध
की पीठिका पै द्वन्द्व हो

29 मई, 1954

जी चाहता है तोड़ दूँ, हर महल दीवार को
मनुष्य की साधना दुर्निवार को।
हर तरफ नष्ट की ध्वनि
हर ओर गिरता हुआ जीवन
मैं निहारूँ आँख से
मैं सुनूँ कान से।
ऐसी कुछ भावना मेरे मन समाई है
कि मैं तुमसे, उनसे, अपने से
कहूँ : नहीं चिल्लाऊँ या दहाड़ूँ जोर से
या कि बिलख-बिलख कर रोऊँ।
यों वर्णनीय कहने को कुछ कथ्य नहीं
सुनने योग्य श्रुतिगोचर कुछ तथ्य नहीं
आत्मा में उपलब्ध सत्य नहीं
पर वक्तृत्व शक्ति पर बस मेरा है।
अचानक ही जेनेवा, बॉयू, कॉफी,
पालम का अड्डा, हड़ताल की माफी,
भूख औ' टूटी आशाएँ,
फिर इन सबसे ऊपर अपनी
बेकारी कहो सुनायें या भोंपू पर चिल्लायें।
ऐसा कुछ मन मेरा है :
कहूँ मैं अपने से
चिल्लाऊँ तुमसे
दहाड़ूँ उनसे
आखिर रोऊँ सबसे।

1954, कानपुर

एक दिन तारे ने चाँद से कहा
अन्धकार ने प्रकाश से कहा
पशु ने फिर मनुष्य से कहा
कि :
मान जा
हार जा
ओरे बावरे
फिर से जीतेंगे हम
फिर से सद्यःस्फुटित धरित्रिखण्ड
की भाँति ज्वालाएँ उबलेंगी
फिर से गैसें भभकेंगी
फिर से हम होंगे
'क्या आत्मा वही दिन है'।
(मनुष्य स्वगत —क्या सचमुच हम हार मान गये हैं?)

1954, कानपुर

अनिवार्यता

जाऊँगा नहीं, मैं
जाऊँगा नहीं :
करौंदी के, बेत के
कचनार के उन निकुंजों में
जो अब अनस्पर्शित नहीं रहे
जो अब सबके सब रौंद गये।

अतिपरिचय है बन्धु!
जीवन की अति साधारणता;
सम्बन्ध का दृढ़बन्ध
मन को न सोहता
अपरिचित का आकर्षण
फिर मुझे खींचता, मोहता।

यह प्यास! आह कितनी दुर्दमनीय!
इन अतल जलवाली गम्भीराओं में
पुण्डरीकों वाले जलाशयों में
कूप में, तड़ाग में
बहते अन्तःसलिल में भी तृप्त होती नहीं।

बन्धु! मैं तो पपीहा हूँ
चातक हूँ, सीपी हूँ,
हाँ, सर्प भी हूँ
स्वाति का अनाघ्रात बिन्दु मेरी अनिवार्यता।

ए.डी. शंकरन, 1954, कानपुर

आज मेरा प्यार उमड़ा है।
जानना चाहोगे क्यों,
आज मैंने बेची मूँगफली
ठेले भर थी।
पैसे जेब में छह रुपये तीन आने हैं।
पकौड़ियाँ भरोसे की
और दूध पल्टू की दूकान
का रात के भोजन के साथ
मैं उसे खिलाऊँगा स्वयं।
तभी तो मेरा प्यार उमड़ा है
समझे क्यों?

9 नवम्बर, 1954, कानपुर

पुकारता तुम्हें

पुकारता तुम्हें
जब मैं तो जैसे
नीरवता बढ़ जाती है
निविड़ नीरव और नीरन्ध्र
अन्धकार में मैं
घबड़ा रहा।
चाहता हूँ तुम्हारा नाम जपूँ
चिल्लाऊँ जोर से
जिससे कि प्रतिध्वनि
होती हो।

आकांक्षा

धीमे से बोलो,
सूर्य जा रहा है नीचे दृष्टिपथ से दूर—
निकट मेरे आओ।
गिरते-मरते पंखियों के पंख-सा;
मेमने की अन्तिम पुकार-सा
सूरज यह—
घिर रहे तम के विरुद्ध
कर रहा आखिरी शिकायत।
हरी घास पर सूरज का लाल रक्त
काला पड़ता जाता है।
वायु में चरमराती पत्तियों का,
इनमें छिपे झींगुरों का
शोर सिर्फ रह जाता है।

वर्धमान अन्धकार में
आकुलता मन में पसर रही
ज्यों सोख्ते पर काली स्याही।
मन करता है—
तुम्हारा नाम जपूँ : चिल्लाऊँ जोर से;
जिससे आये प्रतिध्वनि
निकट तुम्हारी भाँति।

दिन के विरल और छोटे आकार
वस्तु के, बढ़ते जाते हैं
अब प्रमदाजन की आकांक्षा बढ़ती जाती
मैं भी तुम्हारे कपोल पर होंठ रख विश्राम चाहता।

वृन्त से टूटे कुसुम को
जैसे कि गिरे तारे को
मुलायमियत से—
धरती सहज स्नेहवश ले लेती है
वैसे ही हम-तुम, आओ
सोने चलें :
परस्पर सुकुमार गुम्फित हो।

18 नवम्बर, 1954, नैनीताल
'माध्यम' पत्रिका के अगस्त, 1966 अंक में प्रकाशित

लेना, देना और जीना

जीवन की अशेष सम्भावनाएँ चुकें नहीं
मन के विकार ये यों ही मिटें नहीं
निर्धूम अग्नि-से
निस्पन्द वायु-से
निस्तब्ध ताल-से
निर्विकार स्थितप्रज्ञ से
हमको होना नहीं।

यह सही है कि
पूर्व युगों से लेना हमें,
और आगे आने वाली पीढ़ियों को
बहुत कुछ देना हमें।
फिर भी हम भूलें क्यों
कि लिया है और लेना है
जीवित वर्तमान से
क्षण की विराटता से।
फिर वर्तमान में हम चुकें नहीं,
डूबें नहीं, थकें नहीं, बस।

ए.डी. शंकरन, 1954, कानपुर
'युगचेतना' पत्रिका में प्रकाशित

जिन्दगी में बहुत जन प्यारे लगते,
बहुत दृश्य मन को अपने भाते।
माँ की स्नेहभरी चुमकार
बहन का ममतामय दुलार।
स्नेही मित्र, शुभचिन्तक, सम्बन्धी
यक्षप्रिया, अज की इन्दुमती
और मृणाल के बन्दी।

खड़ी फसल, लहलहाते धान
गन्ध वायु पर मेघों की सरपट चाल
अभिराम हरिताभ पहाड़ी
निर्झर, सरिता, तटिनी
तट के वृक्षों की माल।
पर नहीं कभी उतने भाये
मेरे मन को।
जितना यह शब्द
मुझे मन भाता है।
नहीं प्रिया भी इतनी प्यारी
ना प्रिय लगती मुझे नौकरी।
जितना इसके सुझाव, अर्थ
गर्म छवि और
स्मृति के सेन्सेशन*
एक साथ नाच जाते मस्तिष्क में
बचपन की हमजोल जोड़ियाँ
औ वयःसन्धि की उसके
संग लुकाछिपी।

---

* सेन्सेशन—प्रत्यक्ष अनुभव, बोध।

कॉलेज के मृदु मधुर स्वप्न
नरगिसी, बाल मधु की तरल हँसी।
जीवन का, मधु का, तरुणाई का
सचमुच यह सबसे
प्यारा मोहक शब्द
बना है 'प्यार–प्यार'

25 जनवरी, 1955, कानपुर

हर तरह से हम दबे आज तक
मन मुड़ गया कटकर के शक
राह ही जोहते रहे हम जिन्दगी भर
कब मिलेगा अहं को मेरा (या गैर) मस्तक।

दुनिया ने दी मुझको शिकायत
मैंने भी की दुनिया की शिकायत
नतीजा क्या हुआ नहीं मालूम
पर तब से मेरे और उसके बीच
चलती रहती है एक जंग की हालत

28 फरवरी, 1955, कानपुर

ऐसे में मेरा उत्तर

जब नींद सारी दुनिया को आती हो
जब व्याकुलता मन को कुरेद जाती हो
जब ऊर्जस्वित मेघ अजस्र धार को आकुल हो
जब स्नेह की सम्पूर्ण चुक गयी थाती हो :

तो...
तब...
ऐसे में...
गन्धमादन सुरभि को प्राणी में
ओषधि-द्रुमाली से आच्छादित दरियों में
हम क्या विचरें, आत्म-सर्जना करें?
यदि हाँ!
तो मैं प्रश्नहीन
हम अति विपन्न दीन।

पर मेरा प्राप्तव्य
मेरा उत्तर सम्भाव्य
कुछ और ही
जो इन टूटी हुई जंजीरों से
(जो हमें अब भी मरोड़ती जाती हैं)
मुक्त है
पर जो वृत्त के भीतर है
जो केन्द्र से सम्पृक्त है।

प्राप्त कर जिसे
जग सो सके
जिससे कि शान्ति मिल सके
और मेघ-धार
उगाने में स्नेह का पौधा
समर्थ हो सके।

27-28 फरवरी, 1955, कानपुर
'माध्यम' पत्रिका के अगस्त, 1966 अंक में प्रकाशित

बवण्डर

आता है
आने दो
जीवन की धूलि को छितराने दो
दबाव कम है वायुमण्डल में
एक विशिष्ट स्थान और काल में
उसे भरने दो
समतल करने दो
उसको आना है।

अतिव्याप्ति, अव्याप्ति को
मौसमी सन्तुलन से साधे है।
उच्छृंखलता नहीं गति से भरा है।
अन्तरिक्ष के दबाव को
तराजू की डंडी-सा
साधने दो
समता के स्तर पर लाने दो
उसे व्याप्त होना है।

कहते हैं कि प्रेत बाधा
परिवर्तन की चक्रगति को
रूढ़ि का विश्वास कर रहा आधा।
यह न तेजी का तीर निकला
यह गति मध्य ठहरता चला।
पतित पदत्राण को

घुमाकर, झकझोरकर
जीवन के कथ्य से भरने दो
उसे कहना है।

तेजोष्ण चक्रवात आता है
प्रखर मध्याह्न के प्रतीक को आने दो
रश्मि का प्रतीक ही नहीं
परिणाम भी है।
आता यदि तोड़ने तो तोड़ जाने दो
रुद्ध वातावरण को प्रखर अभिव्यक्ति देने दो
तेजोमय उसे करना है।
दानी आता है
शक्ति का सोता है
गगन के खोखले को
स्रोतस्विनी-सा
गहरे गर्त को भरने दो।
भँवर-सा चक्र के वेग में
कुछ तो नष्ट होने दो;
क्योंकि आखिर समता का हेतु है,
दान करना है।

ए.डी. शंकरन, 1955, कानपुर
'माध्यम' पत्रिका के अगस्त, 1966 अंक में प्रकाशित

पत्थर, बालू और पानी की लकीरें

पत्थर की लकीर
मैं :
शाश्वत हूँ, नित्य हूँ
आगामी शक्तियों की मैं आलोक रेखा
मुझमें केन्द्रित
इतिहासों की, युगों की
दुर्निवार अनाहत आत्मा
इतिहास :
जो भूत से भविष्य तक फैला।
मैं हूँ नहीं
कोमल-कमल-पाणि
अँगुलियों से खचित रे
बल्कि यों कहें
नुकीली अनियारी तेज धार
अथवा
सहस्र-सहस्र लहरों का अविराम प्रहार
निर्माण की मेरे पीठिका है।
इसलिए मेरी विनष्टि भी
लाख-लाख अणुओं की अविराम वर्षा
हथौड़े, छेनी की अबाधित तृषा है।

मित्र मेरी!
यह सच है,
तुम सब कुछ हो;
पर इतना भी स्वीकारो

कि मात्र एकरस-एकरूप हो।
मेरे जाने;
अहं तुम्हारा स्रष्टा का ही बाधक है।
मैं वृंत पर फुल्लप्राय, विकसित
औ' सहज सुगन्धि प्रधावित
अन्ततः झरितमान कलिका-सी
केवल बालू की रेखा हूँ।
समीपी अतीत औ'
सन्निकट भविष्य तक ही फैली
मेरी आलोक कणिका है।
पर ओ अमर आलोक रेखा!
ओ आलोक की कालखण्ड व्यापिनी कणिका!
पाऊँ कैसे मैं यह
अहं की दिगन्त प्रसारित मरीचिका।
पर क्षोभ नहीं, खेद नहीं
मेरी यह जीवन की अन्तः सार्थकता
वर्तमान के जीवित अंशमात्र में ही
रहती मैं उपस्थिता।
मेरा अस्तित्व मिटता है
तो अनागत की असंख्य लकीरों को
रास्ता भी छोड़ता है।
आने वाले हर नये जल में
निर्माता के हर नये शिल्पी द्वारा
मैं सतत बनती रहूँगी
मिटती रहूँगी।
मैं रूखा आलोक नहीं
जल की सरस रेखा।

एडी. शंकरन, 23 मार्च, 1956
'राष्ट्रवाणी' पत्रिका के दिसम्बर, 1956 अंक में प्रकाशित

संक्रमण

प्रखर शिशिर के हहराते झोंकों-से
जीवन के दिन बीत गये।
पतझड़ के नीरस तरु के पत्तों-से
भी रीत गये।

कितना दौड़े-भागे
अपने सबके पीछे-आगे
पर रह न सके ये पत्ते जो सबके सब पीले।

यों ही खड़े रहे ठूँठ-से
मन को मार
दिन दो-चार
फिर उन सारे झोंकों से हम जीत गये।

उन गिरते पत्तों की पीताभा
आयी पहले अँखुओं में
फिर बदल गयी ललछौंही पत्ती की
स्वस्थ गाल की लाली में।
अँखुए, कोंपल
फूल, फल
गदराई सुरभि, बिखरती शोभा
सबके प्रति मनुपुत्रों का मन भी लोभा
अनायास ही बसन्त की मादकता जो ठहर गयी।

ए.डी. शंकरन, 1956

'माध्यम' पत्रिका के अगस्त, 1966 अंक में प्रकाशित

चश्मा पहने, तहमद बाँधे
झुका मेज पर,
लिखता जाता, पढ़ता जाता
बढ़ता जाता, बोझ ज्ञान का।

यह नन्ही, छोटी, उत्पाती
आती, शोर मचाती
मिट्टी तिनके चिथड़े लाती
दवात गिराई, निब तोड़ी
नहीं इसे किंचित आभास
लिखता मैं नाटक-उपन्यास
गढ़ता कविता की परिभाषा सप्रयास।

मैं अब वह कवि रहा नहीं
मैं वैसा लेखक बना नहीं
यह बतलाना चाह रहा मैं उसको!
जो देखे चिड़िया, तीतर, पंखने डैने
बेसुध हो कविता रचता, गाता गाने

यह तो मैं हूँ,
खुली अलमारियाँ कमरे भर की
चारों ओर कुसुम नहीं, कागज फैलाये
मोटी पोथी, चाय की चुस्की; बस मन भाये
बस इतना ही मन भाये
छोटी चिड़िया कभी न आये

1956

परीक्षार्थी और निरीक्षक

निरीक्षक— बनी-बनाई ये श्रृंखलाएँ
सूखे मुँह, व्यस्त केश
उड़ते पर्चे, लिखते पेन
बेतरतीब बढ़ी ये दाढ़ियाँ
ही क्या कम हैं
जो यहाँ हम हैं।

वाचक— मत्थे पर सिकुड़न पड़ती
सुखे बाल खुजाये जाते
"हे भगवान! अन्नपूर्णा देवी
बुद्धामाता!
सब कष्टों की हो तुम ज्ञाता
यह सेवक इस चक्रव्यूह में पड़
शरण तुम्हारी आता
रक्षा कर दो माता
तुम्हें चढ़ाऊँगा माँ! मैं दूध-बताशा।"

निरीक्षक— अध्यापक हूँ या पुलिसमैन
यह ओहदा मैं समझ न पाया
हो इनविजिलेटर गद्दी पर पदासीन।
हर विद्यार्थी मेरे लिए चोर बना है
हर विद्यार्थी का मैं दुश्मन।
कर रहा हूँ चहलकदमी
रगड़ूँ एड़ियाँ तीन घण्टे।
मिलें तब दो रुपये टंकारते

(भले साल भर बाद)
अच्छा हटाओ जी, आओ चलें चाय पियें।

वाचक— परीक्षाएँ हो रही हैं
क्योंकि नौकरी चाहिए
कुमारी को वर चाहिए
वर को सुशिक्षित वधू चाहिए।

1956

बलि और वामन

आने वाले दिन पंक्तिबद्ध हैं।
दिन जो हम जीते हैं
वही विराट हैं
हैं विशालतम
फिर आगे के क्षण :
छोटे धुँधले पड़ते जाते हैं।

हम बौने हैं
वामन का प्रतिरूप :
नापेंगे इस विराट को।

पर बड़ा नहीं है क्या
वह नरपति बलि का बल
जो धुँधले छोटे क्षण की
आस लगाये बैठा है।
बैठा है आस लगाये
कर अस्वीकार इस विराट को।

दूरागत वह क्षण ही
उसकी आशा, मर्यादा, आस्था
जिसकी खातिर वह जीता है।
पर हम तो बौने हैं
नापेंगे इस विराट को ही
वर्तमान को ही।

ए.डी. शंकरन, 1956

मन में कितने ही वाल पेग
यानी कि खूँटियाँ
टँगे हैं विविध वस्त्र सज्जित,
नामांकित हैं।
बुना किसने
सिला किसने
धोने और परिष्कृत करने वाले
का नाम भी जड़ित है।

और लो अचानक ही एक दिन
सारी खूँटियाँ ढक गयीं
और फिर खूँटियाँ न रहीं
केवल दीवाल रह गयी
और ये रंगीन कपड़े मात्र

ए.डी. शंकरन, 1956, कानपुर

पत्र की समस्या

पाती तुम्हें लिखूँ तो कैसे...?
बहुत दिनों से अलग हुई हो।
डर लगता है क्या लिख बैठूँ,
हाँ, तुम बिल्कुल छुई-मुई-सी हो
तुम जो बिल्कुल छुई-मुई हो।
विरह-गीत लिखना,
प्यार के उपमान देना
चुम्बनों का भेजना
सच जानो : कठिन हुआ है।
तुमसे कितने दिन से अलग हुआ हूँ;
भूल गया हूँ।

कभी शुरू-शुरू के आकर्षण प्यार से,
फिर घर-बच्चों के दुर्वह भार से
बस, कठिन सरकती गाड़ी में जुते बैल-सा
हतप्रभ रहने का मैं केवल अभ्यस्त बना।
यह बोझ बहुत दिनों में लगता है हल्का
खाली यों ही बैठे खींचा करता कुछ बीता खाका।
और न आओ कुछ दिन तो सच मानो
रातें होंगी चाँदी की, दिन भी होगा सोने का।

पाती तुम्हें लिखूँ तो कैसे, डर लगता है,
और पाती लिखने को, बड़ा मन करता है,
कुछ घड़ियाँ हैं ऐसी जो उकसा देती हैं;
सुनो, व्यर्थ का मान पिया से कर बैठी हो,
और पिया का चैन सदा को हर बैठी हो।

एडी. शंकरन, 1956, कानपुर

'माध्यम' पत्रिका के अगस्त, 1966 अंक में प्रकाशित

तमस : तीन आशय

● प्रकाश आता है :
आँखों के परदे उन्मुक्त कर जाता है।
पर मन को
सम्पुटित भी तो कर जाता है।

लाल-पीले और ताड़ के
यानी—
रंग और सुगन्ध के
सुन्दर और शिव के
मध्य हमें व्यस्त भर कर जाता है।

पर आओ
उतरें गहरे मन में, जीवन में
सत्य के फानूसी स्तरों में।
पर कैसे?
मैं बताऊँ;
अन्धकार के सहारे
क्योंकि
प्रकाश वहाँ निष्फल है।

●● प्रकाश में रात को नींद नहीं आती
मन में विचार नहीं आता
स्वप्न भी केवल ललचाता है।
इसलिए आओ :
हम-तुम, सब

प्यारे तम की गोद में चलें;
जहाँ चिन्तन का पथ है,
जहाँ स्वप्न का जल है,
जहाँ नींद की नगरी है,
जो शक्ति का पहला सोता है,
तथा हम सभी को प्यार देता है।

●●● कक्ष अन्धकाराच्छन्न
मन मोहाविष्ट
ऐसे में
कैसे मन को
अन्तरतम को
लौ मिल जाये।

अचानक ही जब
कहीं से कोई खोई-सी किरण कौंध जाये।
प्रतिभा को उन्मुक्त कर दे
मन को जाग्रत बना दे
तब तम का प्रभाव-प्रसार
सार्थक हो जाये।

ए.डी. शंकरन
'राष्ट्रवाणी' पत्रिका के मई, 1956 अंक में प्रकाशित

एक मोनोलॉग

बहुत थक गया हूँ।
क्यों...............?
धरती नापी आज बहुत है।
'क्यों..............?'
विधि का कहना, मन की छलना,
सामाजिक रहना।
'तो फिर क्या?'
यही कि शक्ति देगी एक प्याला चाय
'आमलेट के संग?'
सोने में सुगन्ध।

एडी. शंकरन
'राष्ट्रवाणी' पत्रिका के मई, 1956 अंक में प्रकाशित

प्रवाह के साँचे

मन के सहस्र कगार
प्रवृत्ति की सहसा धार
टूटे : स्रोत फूटे।

व्यक्तित्व बह जाय
इस रस से आलुप्त हो
डूब भी जाय।

पर तुम रह जाओ;
यों कि–
उनसे भी कह जाओ
जिनको अभी आना है।

मेरा अहं नहीं–
तो फेन ही पहुँचे
नमी से जाँचे :
यों ही इस प्रवाह को
मिल जायेंगे कुछ साँचे।

एडी. शंकरन
'राष्ट्रवाणी' पत्रिका के मई, 1956 अंक में प्रकाशित

एक रचनात्मक सुझाव : नये सूट का उद्घाटन

बनवाया सूट नया सर्ज का
सिलवाया अब्दुल टेलर से।
जा रहा पहनकर था, कॉलेज को,
इतने में आये मेरे दोस्त—
"सूट सिलाया दो सौ का
अरे सूम दस और निकाल।"
कहा, "अरे इनॉगुरेशन तो करा दे।
नाम अखबार में छपेगा
नये रास्ते का खोजी जायेगा कहा"
बात कुछ नयी थी,
साथ ही परम्परा की गोद में पली थी।
यश के साथ उपयोगिता मिली थी;
यही कि,
कुछ लोगों—उद्घाटनकर्ताओं
को और भी रोजी मिली थी।
हुए परस्पर विचार गुम्फित—
बुलाया कौन जाये।
कई नाम सुझाये।
नेता, मिनिस्टर, साहित्यिक
प्रिंसिपल औ' प्रोफेसर
अफसर, डायरेक्टर एवं
मठ के महात्मा याद आये।
पर न कोई फिट बैठ पाया
न योग्यता की कसौटी
पर पूरा उतर पाया

तभी यह रचनात्मक सुझाव याद आया :
बोले सर्वहारा मित्र मेरे
'क्रान्ति होनी चाहिए
इनॉगुरेशन के ढंग में।'
कुछ रीति ऐसी हो कि शोषित,
दलित लोगों के काम आये।
हुआ निश्चय सर्वसम्मति से
"सभी कपड़ों का–सभी नये कपड़ों का–
करें उद्‌घाटन ऐसे
कि जो बेकपड़े हों।"
पिलाई उन्हें चाय जाय
और एक दिन का मेहमान भी
जिससे कि चम्पत हो न जायँ।
करने लगें यदि हम सब लोग
ऐसा ही तो
चौथाई गृहहीन, वस्त्रहीन, अन्नहीन
दिन-प्रतिदिन पाते रहें
वास वसन और सुमधुर अंश
कुछ अपनी सरकार का भी
बोझ हल्का हो जाय।
मानो-न-मानो
पसन्द आपको आये-न-आये;
इसलिए मतार्थ प्रचारित है।
सम्मतियाँ भेजें
विचार प्रकट करें
तब सुझाव पारित किया जाये।

17 दिसम्बर, 1956, कानपुर

कंचनवती का संशय

पीड़ा क्या सच ही
प्रतीक्षारत है?
पर हमने तो उसे चाहा नहीं
स्वीकारा नहीं;
बन्धु क्योंकर उसने किसी
दूसरे को सँवारा नहीं?
यह सौभाग्य है मेरा?
सफलता यह सारी कर्म-विधि की है?
अदृष्ट की है या खुद मेरे ही द्वारा
सृष्ट की है?
इतना तो मैंने जाना नहीं
पहचाना सुखमात्र को;
फिर यह सारी भवितव्यता
क्योंकर
मुझको गढ़ेगी, रूपाकार देगी?
क्या इसलिए कि–
सुख-मात्र अधूरा है,
उससे निर्मित व्यक्तित्व भी खण्डित है।
इसीलिए हम क्या प्रताड़ित हो लें?
दुख सह लें?
अकथ्य पीड़ा में भी दह लें?
पकी ईंट-से
तपाये कंचन का वर्ण ले लें?

ए.डी. शंकरन

'राष्ट्रवाणी' पत्रिका के दिसम्बर, 1956 अंक में प्रकाशित

यह वर्ष खत्म फिर एक बार
फिर से नूतन संकल्प जगें
नूतन संकल्पों का मिथ्यापन
फिर एक बार।

नया नहीं कुछ
पर फिर से नूतनता
फिर से ग्रीटिंग* का
शिष्टाचार
यह वर्ष खत्म फिर एक बार

31 दिसम्बर, 1956

* ग्रीटिंग—अभिवादन

नये वर्ष के पहले दिन
तुम क्या सच ही नूतन?
गये वर्ष के अन्तिम दिन
सच ही तुम हुए पुरातन।
पर केवल उतने ही नये रहे तुम
आने वाला
जितना हर दिन होता
बीता दिन हुआ पुराना उतना ही
जितना हर गुजरा क्षण लगता है।
वर्ष-वर्ष का लेखा ले लो
वर्ष-वर्ष की शीट मिला लो
यों बस मन को हल्का-भारी कर लो।

31 दिसम्बर, 1956

चिटक गयीं मन की दीवारें
लालसा फिर निर्बन्ध हुई
भगीरथ अनुगामी गंगा में डूब गया
अनजाने ही सगरपुत्रों का मोक्ष हो गया
यद्यपि मैं तपस्यारत हो न सका।

1957, कानपुर

जी हाँ! मैं कुण्ठाग्रस्त हूँ।
मेरा सारा व्यक्तित्व समर्पित इन कुण्ठाओं को,
ये वे प्राचीरें जिनसे मैं रक्षित, पालित
जिनकी सहज शक्ति से मैं परिचालित।
जिनमें जीवन का, कामना का
रस परिरक्षित है
मुझमें पशु की नहीं, मनुष्य की कुण्ठाएँ ही
जीवित हैं।

1957, कानपुर

हम देवताओं के गुनाह हैं

हम देवताओं के गुनाह हैं
क्योंकर उन्होंने हमें पाला
क्योंकर पिलाया दूध का प्याला।
इसीलिए हम सर्प बने स्याह हैं।
यों परिमल—परागप्रिय
यह सत्य है,
सत्य यह भी है कि
अधिवेशनों में देवी के वचन
हमने पत्थरों पर खुदवाये हैं
मंच पर लटकाये हैं।
मिथ्या यह भी नहीं कि
हमने उनके चरण भी चापे हैं
गुरु कहा है
आचार्य माना है।
पर तब था, उद्देश्य कुछ और :
'वह क्या?'
निज स्वार्थ लाभ ही आस्था का चरम आयाम है।
मानिए आप या न मानिए
अग्रदूत उनको माना है
इसीलिए उनसे
उद्घाटन भी करवाया
'क्व सूर्यप्रभवः वंशः'
माना है।
पर वह सब अतीत है
वह सब बीता व्यतीत है।

‘वह भी’ था,
पर अब ‘वह’ मिथ्या है
‘यह भी’ देख लो
हो सकता है ‘यह भी’ मिथ्या हो
सच में तो
हम न ‘यह’ हैं
और न ‘वह’ हैं।
हम खुद ही क्या हैं
धुरी से उतरे पहिये हैं।
बुरा न मानो देवियो
आचार्यो
आदरणीयो
हम हैं वे पुंसत्वहीन
जिनका बुरा न मानो।
धुरी, आस्था,
मर्यादा, प्रभु
ये सब वे तालियाँ
जिन्हें बजा हम जीते हैं।
यों हम आपके ही गुनाह हैं
सर्प स्याह हैं।

1958, कानपुर

यह संझा भी प्रतिदिन जैसी ही बीत गयी
खड़िया बादल लिपटाये
हुए सुनहले, ललछौहें
फिर सारी वेला कालेपन में डूब गयी।
गोल सुनहरे चित्रों वाले बादल

आकाश, क्षितिज, पेड़ों की फुनगी
सबमें तम की अखण्डता व्याप गयी।
ट्विन* इंजन वाला जहाज
सर पर से निकल गया

और मेरे मन में एक भय की लहर दौड़ गयी
कहीं परीक्षण करने न निकला हो
हाइड्रोजन बम का
और फिर यह मेरी लहराती गृहस्थी
जीवन की सरस अशान्तियाँ
किसी जहरीली ध्वंसोपरान्त की

शान्ति की सफेदी या कालिमा में न डूब जाये।

1958, कानपुर

* ट्विन–दो

दर्द तो नहीं
दर्द की याद बाकी है।
जो कचोटती नहीं
पर हल्की-सी सिहरन भर दे जाती है।
दर्द के वे पुराने खँडहर
मैंने रक्षित नहीं छोड़े व्यतीतों
नये प्रासाद उन बीतों पर
मन ने, तन ने जोड़े।
पर यह कहते निशान :
"दर्द कभी यहाँ था
व्यक्तित्व पर छाया था।"
अब भी बाकी है।
यों एक संशय भी शेष है
कि दर्द की नींव क्या
कमजोर होती है?
उस पर सम्प्रति बने भवन का
क्या खँडहर होना बाकी है?

दर्द तो नहीं
पर दर्द की याद बाकी है।

1960, कानपुर

सुनना भी बड़ा धैर्य चाहता है।
अहं की तुष्टि
जीवन का उद्दिष्ट अर्थ
पर वक्ता का अहं
करता है केवल अनिष्ट

3 अक्टूबर, 1961, दिल्ली

उदासी : तीन बिम्ब

1. नूपुर झर गये
   यूँ ही
   सपने ज्यूँ।

2. बाढ़ थी जो
   सहसा उतर गयी।
   तर न सके पर
   हम सहसा।

3. मेज, कुरसी, दवात, गिलास
   सबमें भरी स्याही
   पर कागज के श्वेतपत्र
   केवल श्वेत, श्वेत, श्वेत...।

21 फरवरी, 1962, दिल्ली

यथा अर्थ

यह एक जीवित उपस्थिति है
जिसे समय नहीं तोड़ सका।
आकृति विचित्र
रूखी चट्टानों के केश
और लटकती लम्बी नाक
जिसे किसी भी घूँसे से तोड़ा जा सकता है।
पर शायद केश नहीं काट सकता कोई भी,
न डिलाएला और न लैला।
चेहरा-मोहरा सब शायद अदुरुस्त
पर पॉलिश्ड।
और दिमाग में हैं कुछ कविताएँ
कुछ काले-सफेद चित्र खासे बोल्ड!
यह मेरी जीवित उपस्थिति है
तोड़ नहीं सकता जिसे समय

5 दिसम्बर, 1964, पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली
अवस्थी जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर
15 जनवरी, 1967, 'धर्मयुग' में प्रकाशित

मेरे बेड के चारों ओर बेड हैं
और बेड पर मरीज हैं
एक मरीज मैं हूँ।
और बेड, बेड नहीं दर्पण हैं
और हर मरीज मेरा चेहरा है।
टूटा, लिजलिजा, रोता
जीने के लिए बिलबिलाता।
काश, मेरे पास इन सारे मेरे
प्रतिबिम्बों के प्राण होते
तोतों, चिड़ियों में बन्द।
मैं उन सबकी गरदनें मरोड़ देता
और फिर ये मेरे ही लिजलिजे
प्रतिबिम्ब जीने की भीख न माँगते
इन मुर्दा डॉक्टरों और सड़ी हुई नर्सों से।

5 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

बत्ती बुझाकर नर्स ताश खेलने लगी।
सिर ढककर मरीज सब कराहने लगे।
नींद की गोलियाँ शीशियों में भड़भड़ाने लगीं।
और यह सभी मिलकर इस भयावह कमरे को भरा-पूरा बना गये।
ड्यूटी रूम की चारपाई अजब ढंग से चरमराने लगी।
सहसा कमरे में अन्धकार उतर आया
और
अकेले-अकेले मरीजों से भरा यह सूना कमरा
एकदम से समृद्ध हो उठा।
अकेलापन चारपाइयों के नीचे दुबक गया
खर्राटे इस समृद्धि का संगीत बन गये।
नींद की गोलियाँ निगलते हुए मैंने भी
अन्ततः इस समृद्धि को भोगना चाहा।

5 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

खिड़की पर की चार कविताएँ

I

हवा को
और धूप के रंगों को
आकार देता
ऊपर बाहर टँगा
गुम्बद एक आसमानी
नीचे गुलाबों के पास खिले गुलाब
और पाम के नीचे मरीजों का झुण्ड
जो गुलाबों से अनजान।
और इन सबों से लोहा लेती
यह खिड़की जो
इन सबसे भी बनी रहती अनजान।
यही मेरा भी कवच है
निरस्त्राण है, इनसे लड़ने को;
और शायद यही चश्मा भी,
इन सबको निहारने को
खासकर लाल और पीले गुलाबों की गन्ध
मैं यहीं से, केवल यहीं से
देख पाता हूँ
और धूप को सूँघ लेता हूँ
और हवा को भी मनमाफिक
ढाल लेता हूँ।

10 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

II

इस खिड़की के बाहर भी
एक दुनिया होगी
पर मैं नहीं जाऊँगा।
उस दुनिया से ही शायद बसों का
शोर आता है
और रेहड़ी के घोड़ों की पटापट टपाक।
वहीं कहीं से गुलाब और कुन्द
की मिली-जुली गन्ध,
इस ऊँचाई तक घुस आती है
पर मैं वहीं नहीं जाऊँगा।
ये कहकहे, ये शोर
ये चिल्लाती हुई आवाजें
आह बन्द करो
इस खिड़की को।
मैं न जाऊँगा, न जाऊँगा, न जाऊँगा
इस ऊँचाई से नीचे।

10 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

III

आह! ऊँचा करो पलँग को
मैं धूप देखना चाहता हूँ।
इस खिड़की के बाहर के आकाश
में टँगे होंगे कुछ सितारे
धूप रहते भी जो मुझे नजर आते।
और उनके पार का एक रंगीन शोर
जो छनकर पहुँचता है
और सब कुछ को व्यर्थ कर जाता है
मुझको, खिड़की को,
तुमको और
मैं यहीं से कूदकर
इस मुक्तिप्रदा आत्महत्या के माध्यम से
उस शोर और धूप में मिल जाना
चाहता हूँ।

10 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

IV

1\. खिड़की पर टँगा
आश्वस्त भी करता है,
मुझे,
आकाश का टुकड़ा, नीला-चौकोर
कुछ कटा-पिटा भी
पेड़ों से, मकानों से, बियाबानों से।

2\. आँखें माध्यम हैं
नहीं वाहन हैं
गन्ध की :
जो खिड़की के बाहर की
खुली-चटकीली धूप से आती है।
धूप की गन्ध यह
कुछ खास तरह की होती है
जिसमें सड़क भी है और बस के मुसाफिर भी
और लम्बे कोटों वाली लड़कियाँ भी
उसी में घुली-मिली हैं।
धूप गन्धवती है
और आँखें सिर्फ बाह्य हैं।

10 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

खिड़की पर से दो कविताएँ

I*

अपनी खिड़की से मैं सुनता हूँ
लाल गुलाब की गन्ध
और जगे हुए पेड़ों का शोर।
खिली हुई धूप का संगीत भी
मुझ तक चुपचाप चला आता है।
और मैं इस बेड पर लेटा, सोया
इन सबके सपने देखता हूँ
पर मित्रों से बहाना भी करता हूँ
कि मैं स्वप्न नहीं देखता।

10 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

* इस कविता का शीर्षक अवस्थी जी ने 'बहाना' दिया था। परन्तु कविताओं की एकरूपता की दृष्टि से शीर्षक हटा लिया है। सं.

II

मैंने पहली मंजिल की अपनी खिड़की से हाथ बढ़ाकर
चुटकी भर पीला गुलाब बगल में खिले लाल गुलाब पर डाल दिया
और बगल में ही खिले सफेद और काले गुलाबों की ओर
धूप को थोड़ा-सा खिसका दिया।
गन्ध का रंग और धूप की हवा ऊपर तक चली आयी
जिसे मैंने दूसरी मंजिल की खिड़कियों तक जाने से रोक लिया।
फिर जमीन और आसमान दोनों से ही अलग
धूप, (और) गन्ध और मर्मर सब केवल मुझ तक रह गये।
मैं खुश हूँ कि स्वार्थी नहीं हूँ?

10 दिसम्बर, 1964
पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

ललित गद्य
(1955-1966)

साइकिल और घोड़े का अन्तर

पहाड़ और दोस्त

डेफ़ोडिल के फूल

शार्टकट और शून्य

दुलारे दउवा

छोटी यात्राएँ : फुटकर बातें

मतभेद और झगड़े का भेद

इण्टरव्यू

चौराहा दर्शन

दिल्ली-दंगल

लेखक का परिचय-आलेखन स्वयं यानी बकलमखुद

साइकिल और घोड़े का अन्तर

(देवीशंकर अवस्थी का यह पहला व्यंग्य लेख जून, 1955 में 'प्रवाह' पत्रिका में छपा था। इसके साथ जुड़ी एक अन्तर्कथा यह है कि 'प्रवाह' में भेजने से पहले यह व्यंग्य लेख उन्होंने 'युगचेतना' में डॉ. देवराज को भेजा था। डॉ. देवराज ने 28 मार्च, 1955 को यह कहते हुए चिट्ठी लिखी कि चित्र अच्छा है पर छोटा है। दुर्भाग्य से इस लेख का एक-दो पन्ना खो गया है। इसलिए यह और छोटा हो गया है पर है ऐतिहासिक। इसलिए अधूरा ही पूरा मान लें। अगर 'प्रवाह' का यह अंक किसी से मिल जाय तो लेख पूरा हो सकता है। सं.)

प्यारे दोस्त,

तुम्हारा पत्र ठीक समय पर मिल गया था, उत्तर की देर के लिए माफी चाहूँगा। बड़े जिद्दी हो, जानता हूँ जल्दी क्षमा न करोगे। तुम्हारा स्वभाव ही हमेशा से कुछ अफसरी बू से भरा हुआ रहा है, सो भाई, एक्सप्लेनेशन ले लो; और क्या करोगे? बीच में एक सप्ताह के लिए बाहर चला गया था—अपने परिवार के एक शुभचिन्तक के यहाँ। वे बड़े आदमी हैं, व्यापार करते हैं और अनुभवी कहलाते हैं। पिता जी को मित्र और हितेच्छु के नाते लिखा था, "वह शिव पढ़-लिख बहुत चुका। एम.ए. करके आखिर करेगा क्या? आजकल तो पचासी रुपये की नौकरी भी ढूँढ़े नहीं मिलती। इसे मेरे पास भेज दो, कुछ रोजगार-पात सीख कर चार पैसा पैदा करने की जतन करे। तुम्हें भी बुढ़ापे में कुछ सहायता ही मिलेगी।"

उन्होंने संकेत कर दिया था कि यों तो होता सब ग्रहों के प्रताप से है, फिर भी वे चार पैसे अपने पास से लगा कर कोई न कोई धन्धा करा देंगे। बात सब घर को जँची और कुछ ताजगी तथा नयेपन के आनन्द में मैं भी चला गया।

अपने उन शुभचिन्तक की छत्रछाया में (जिन्हें सब लोग पण्डित जी सम्बोधित करते हैं) एक सप्ताह गुजार कर लौटा हूँ, प्राण बचाकर और बड़ा भारी जीवन-दर्शन का पुलिन्दा बाँधकर। चाहो तो तुम्हें भी कुछ हिस्सा पार्सल कर दूँ। इस पत्र में

अपनी वहाँ प्रथम दिन की दिनचर्या लिखे दे रहा हूँ—शायद मेरी परिस्थिति का कुछ अनुमान कर सको। फिर यदि क्षमायोग्य समझा जाऊँ तो क्षमा कर देना।

रात की गाड़ी से दो के लगभग वहाँ पहुँचा और फिर अपनी पुरानी आदत भी ठहरी; तुम अनुमान कर सकते हो कि जिस कदर बमुश्किलतमाम सबेरे आठ बजे नींद टूटी। सामने सहन में पण्डित जी...

प्रवाह : जून, 1955

पहाड़ और दोस्त

प्रिय मित्र,

तुम्हें याद होगा कि पहली बार जब मैं मसूरी जा रहा था, तो वह मेरा पहाड़ देखने का पहला अवसर था। यों कानपुर से बनारस के रास्ते में विंध्याचल की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ पड़ती हैं, पर संयोग की बात ऐसी कि रात को ही सदैव उधर से निकला और अन्धकार तथा नींद दोनों ने पर्वतीय शोभा ही नहीं, आकार-प्रकार को भी देखने से वंचित रखा। मुझे याद है कि उस बार की मसूरी यात्रा में मेरा मन उत्कण्ठा और कुतूहल से भरा हुआ था। और इस बार नैनीताल आने के समय हृदय में उल्लास उफना रहा था। उस बार की उत्कण्ठा के पीछे मेरे मन में शायद गहरे में एक बात और थी, कहना यह चाहिए कि इस युग में सबसे गहरी बात वही होती है। मसूरी जब जा रहा था तो पहाड़ देखने से भी बड़ी उत्कण्ठा नौकरी प्राप्ति की थी। नौकरी—जो पहाड़ की चढ़ाई से भी अधिक मुश्किल है और उसके पा लेने पर पहाड़ी की चोटी पर शीतल वायु में विश्रान्ति पाने से कहीं अधिक सुख प्राप्त होता है—के लिए ही उस बार जून में मसूरी गया था। भाई! तुमने मजाक उड़ाया था कि अबे मैं जानता हूँ, नौकरी वगैरा का तो बहाना है, जा रहा है अम्माँ से रुपये लेकर गर्मियों में पहाड़ का आनन्द लेने। मेरी एक भी सफाई सुनने को तुम तैयार नहीं थे, पर आज जब अक्टूबर के महीने में वाकई मैं नैनीताल घूमने आया हूँ, तो तुमको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि 95 फीसदी मैं नौकरी के लिए ही गया था; रहा गर्मियों का प्रश्न, सो गर्मियों में तो मैं अब भी पहाड़ पर नहीं जाता। अपने राम ठहरे जरा देहाती आदमी, बचपन से ही जेठ-आषाढ़ के महीने अमराइयों में बीते हैं। मुझको तो दोपहर में लू के थपेड़ों में सुनसान सड़कों पर घूमने में उतना ही मजा आता है, जितना कि दिसम्बर की रात में हम लोगों को बिहारी केवट की नाव लेकर गंगा-विहार करने में आता था।

लगे हाथों तुम्हें एक सलाह दे दूँ कि यदि पर्वतीय रमणीयता का आनन्द लेना हो, चटखदार मौसम के मजे लूटने हों, तो यहाँ सितम्बर-अक्टूबर के महीने में आना चाहिए। जून के महीने में तो यहाँ कुछ ठण्डक अवश्य होती है, बाकी सब

कूड़ा-नागर-सभ्यता के सारे दोष, श्री-हीन प्रकृति दिखाई देती है। मुझे याद है कि मसूरी में जून के महीने में 'केमिल्स बैंक' के सामने नंगी पहाड़ियाँ खड़ी रहती हैं और इस बार मैंने देखा कि भोजीपुरा से लेकर यहाँ तक हरियाली, सुषमा और नाना प्रकार की वनस्पतियाँ फैली हुई हैं। चार-पाँच दिन पहले ही पानी बरस कर बन्द हो चुका था। प्रसाद जी मुझे याद आ रहे थे—

धीरे-धीरे हिम आच्छादन
हटने लगा धरातल से।
जगीं वनस्पतियाँ अलसाई
मुख धोतीं शीतल जल से।।

भोजीपुरा के बाद नींद खुलने के बाद दो ही चीजें दिखाई देती थीं—या तो पानी या हरियाली। हलद्वानी के कुछ पहले से ही रेलवे लाइन के किनारे-किनारे एक प्रकार की घास प्रचुर मात्रा में उगी हुई थी। उसके छोटे-छोटे कसरत से खिले हुए लाल फूल, उनके पीछे धानों की धानी हरीतिमा, उनके भी पीछे केले के या गन्ने के खेत और फिर दूर पर पेड़ों से भरी पहाड़ियाँ सचमुच ही उस महाकवि की पंक्तियाँ बार-बार गुनगुनाने को बाध्य कर रही थीं—

स्वर्ण-शालियों की कलमें थीं,
दूर-दूर तक फैल रहीं।
शरद-इन्दिरा के मन्दिर की
मानो कोई गैल रही।।

काठगोदाम से नैनीताल का रास्ता तो बेहद खूबसूरत है। बायीं ओर खिले फूल, ऊँचे पेड़ और सहज अकृत्रिम ढंग से उगी हुई झाड़ियाँ, दाहिनी ओर गहरे खड्ड, घाटी में बहती हुई कौला नदी, सीढ़ीनुमा खेत और इन सबके मध्य छाया-प्रकाश के नाना रंग और सड़क के मोड़ सब इतने मधुर हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता, 'सिम्पली-वण्डरफुल'। प्यारे भाई, तुमसे नैनीताल आते समय मन के उल्लास की बात कह रहा था। सौन्दर्य की 'सब्जेक्टिविटी' को मैंने इस बार किताबों के बाहर स्वयं भी अनुभव किया। यों हरद्वार से देहरादून तक का शिवालिक की पहाड़ियों के मध्य से गुजरने वाला रास्ता कहीं अधिक आकर्षक है, बजाय किच्छा से काठगोदाम के रास्ते के। परन्तु वे सारे दृश्य मेरे मन को इतना उल्लास-रंजित नहीं कर पाये थे। उस बार दिनकर का 'मेरे नगपति मेरे विशाल' बार-बार मन में गूँज जाता था और उस गूँज के पीछे बढ़िया नौकरी की आकांक्षा विद्यमान थी, परन्तु इस बार इस शोभा का केवल पान कर रहा था, कोई कामना नहीं थी। चरम-सुख और चरम-दुख वहीं होता है जब आदमी की वृत्तियाँ शिथिल पड़ जायें, विशेषकर इच्छाएँ।

मुझे सड़क के पहाड़ी मोड़ बहुत भाते हैं। घुमावदार सड़क मानो कोई अजगर पड़ा हो। इन मोड़ों पर जब बस घूमती है तो और भी अधिक आनन्द मिलता है।

एक अच्छी-खासी मजेदार बात याद आ रही है कि चक्करदार सड़क के प्रभाव से मेरे पीछे दाहिनी ओर सीट पर बैठी हुई खूबसूरत और चंचल लड़की के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। चिंगम, नीबू और सन्तरों का कुछ असर नहीं पड़ रहा था। उसे बार-बार कै हो जाती थी। मैं सोच रहा था कि त्रिया-चरित्र तो बड़ा विषम बताया गया है फिर इन विषम सड़कों पर क्यों वे परेशान होती हैं। पर मेरे वैज्ञानिक दोस्त दिनेश का कहना है कि पाजिटिव दोनों हो जाते हैं असल में एक को तो निगेटिव होना ही चाहिए। एक बात और, वाहिनी शब्द का अर्थ विद्वानों ने सेना और नदी बताया है। सेना की उपमा उमड़ती हुई नदी से दी जाती है। रास्ते में जब कौला या किच्छा नदी की पत्थरों से टकराकर उछल-उछलकर बढ़ती हुई लहरें मैंने देखीं, तो लगा कि जोश में घोड़े कुदाती हुई सेना और इन लहरों की गति में सचमुच बड़ा साम्य होता है।

तुम्हारे स्वार्थ की एक बात। तुम बहुत बड़े भक्त हो न? अकसर मेरी नास्तिकता पर मुझे बुरा-भला कहते हो। यहाँ आकर एक दिन शाम को मैं आस्तिक हो गया और नैनीताल की मशहूर नैना देवी के मन्दिर में सादर प्रणाम कर एक मनौती मान आया हूँ कि इस बार यदि मेरा प्यारा बबर शेख (तू), हे नैना देवी, यदि किसी सुनयना के साथ हनीमून मनाने यहाँ आ सका, तो मैं तुम्हारा पाँच पैसे का प्रसाद चढ़ाऊँगा (और खुद ही खा जाऊँगा)। सब मित्रों का समाचार देना। आशा है कानपुर अपनी जगह पर कायम होगा।

सस्नेह

....

(2)

प्रिय बालकृष्ण,

हटन काटेज, नैनीताल

अक्टूबर, 55

तुमने अपने पत्र में नैनीताल और मसूरी का अन्तर पूछा है। जहाँ तक उसकी स्थिति का प्रश्न है, मैं अपने आतिथेय श्री अग्निहोत्री जी (जो यों तो विज्ञान के विद्यार्थी हैं, पर अब जंगल (विभाग) वाले हो गये हैं) द्वारा दी गयी एक बहुत बढ़िया प्रयोगवादी उपमा लिख रहा हूँ। उनका कहना है कि नैनीताल सीधी रखी हुई कड़ाही की तरह है जिसकी तलहटी में झील है और उसकी उठी हुई ऊँचाइयाँ ये पहाड़ियाँ हैं जिन पर यह नगर बसा हुआ है; जबकि मसूरी उल्टी हुई कड़ाही है जिस पर कि नगर स्थित है। बनावट के इस आकार-प्रकार के कारण नैनीताल में ऊँचाइयाँ-निचाइयाँ बहुत हैं और मसूरी अपेक्षाकृत सपाट। पर शहर मसूरी ज्यादा शानदार और चकाचौंध

करने वाला है। तुम्हारे जैसे तड़क-भड़क के प्रेमी मसूरी को ज्यादा पसन्द करेंगे। यों नैसर्गिक सुषमा की दृष्टि से नैनीताल का मसूरी कोई मुकाबला नहीं कर सकती। एक बात सुनकर शायद तुम्हें हर्ष होगा कि यदि अधिक दिन मैं यहाँ रह गया, तो मेरी आतिथेया मुझे बिल्कुल सभ्य बना देगी और फिर तुम्हें शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। आने के बाद तीन-चार दिन तक तो प्रातःकाल उठकर नल का ठण्डा-ठण्डा पानी मैं प्रेम से पीता था, पर उस दिन शान्ति जी ने देख लिया, बहुत नाराज हुई और अब बेड-टी पीने लगा हूँ। सभ्य होने लगा न?

तुम कद में जरा छोटे हो, इसलिए तुम्हें नैनीताल की सबसे ऊँची चोटी का नाम बताता हूँ—चीनापीक। शुरुआत में तो इसका रास्ता बड़ा सूखा और नीरस है, पर लगभग आधी दूर पहुँच जाने के बाद चीड़, देवदार और अंगूर के पेड़ों के जो घने अंचल प्राप्त होते हैं, उनको देख ऐसा प्रतीत होता है कि मानो किसी अति पटु शिल्पी ने पन्ने के वस्त्र इन पर्वतों को पहना दिये हैं। पेड़ों से भरे हुए ढाल बड़े लुभावने लगते हैं और इनके बीच से निकलते हुए बादलों को देखकर मुझे एक ग्रीक पुराणगाथा को चित्रित करने वाले चित्रकार की याद आ जाती है। चित्रकार का नाम शायद बुजेल है। गाथा यों हैं कि सर्वशक्तिमान जुपिटर एक बार इयो (Io) नामक एक सुन्दरी पर आसक्त हो गया। अपनी पत्नी के भय से वह बादल के वेश में जाकर अपनी प्रेयसी से मिला था। चीनापीक के इस दृश्य को देखकर मुझे ऐसा लगता था मानो जुपिटर इयो से मिल रहा है।

पिताजी को मेरा प्रणाम कहना। यदि छुट्टी मिल जाये तो चार-छह दिन के लिए घूम जाओ।

स्नेही

....

(3)

प्रिय राधाकृष्ण,

हटन काटेज, नैनीताल

अक्टूबर, 55

तुम्हारा कहना था कि मसूरी तुम्हें ज्यादा सुन्दर लगती है। मेरा अनुमान है कि बालकृष्ण की भाँति तुम भी नगर की चकाचौंध से काफी अभिभूत हो, अन्यथा निसर्ग-सुषमा की दृष्टि से नैनीताल और मसूरी का कोई मुकाबला नहीं। नैनीताल की पहाड़ियों में वन्य-सम्पदा ही अधिक नहीं है, वहाँ झील की अपनी निराली शोभा भी है। वास्तव में झील ही नैनीताल की प्राण-शक्ति है। इस झील में चलने वाली पालदार नावों (Yacht) को देखकर मेरे मन में मेघदूत की विप्र-क्रीड़ा 'परिणत गज

प्रेक्षणीयं ददर्श' पंक्ति बार-बार गूँज जाती है। मुझे ये नावें श्वेत गज की भाँति ही (आकार में भी और समाज पर बोझ की दृष्टि से भी) ज्ञात होती हैं। पर घबड़ाओ नहीं, किसी यक्ष-प्रिया को मुझे सन्देश नहीं भेजना। इस झील पर जानते हो सबसे अधिक आनन्द किस समय प्राप्त होता है—जब मैं सबसे छोटी वाली नाव को अकेले ही बिना मल्लाह के लेकर उस जलराशि में घण्टों चक्कर लगाया करता हूँ। इस बड़ी झील के अतिरिक्त और भी कुछ छोटे-छोटे तालाब सरीखे हैं। ऐसा ही एक छोटा-सा ताल सेक्रेटेरियट के पास है। दूसरा 'लैण्ड्स एण्ड' से 'टिफिन टाप' जाने के रास्ते में पड़ता है। एक बड़ी मजेदार बात बताऊँ, 'लैण्ड्स एण्ड' जाने वाले रास्ते का नाम 'प्रासपेक्ट रोड' है। मैं रास्ते में सोचता जा रहा था कि सचमुच पृथ्वी ही सबसे बड़ा 'प्रासपेक्ट' है और जहाँ पृथ्वी का अन्त, वहीं 'प्रासपेक्ट' भी समाप्त। 'लैण्ड्स एण्ड' नैनीताल की पहाड़ियों के पश्चिमी सिरे पर है। यहाँ पर पहाड़ एकदम सीधा खड़ा है और सामने दूर तक फैले हुए हरियाले मैदान दिखाई पड़ते हैं। नीचे एक तालाब के किनारे एक छोटी-सी बस्ती है।

'लैण्ड्स एण्ड' से 'टिफिन टाप' गया। अकेला था ही। यह रास्ता बड़ा ही मनमोहक है—एकदम सुनसान, पेड़-पौधों, घास और झाड़ियों से भरा हुआ। वैजयन्ती जैसे कुछ फूल खूब खिले हुए थे। बीच-बीच में या तो चिड़िया चहकती थीं, या कोई कीड़ा घास से होकर निकले, तो उसकी सुरसुराहट अथवा पहाड़ियों के मध्य से गुजरने वाली हवा की गूँज सुनाई देती थी। प्रकृति की एकान्त सुषमा मन को कितना उन्मुक्त कर देती है, यह मैंने उसी दिन जाना था। चलते-चलते पहाड़ियों के बीच में रुक कर मैं जोर-जोर से विचित्र ध्वनियाँ मुँह से निकालने का प्रयत्न करता, उनकी गूँज पहाड़ियों में प्रतिध्वनित हो उठतीं और मैं आनन्द से विभोर हो उठता। आस्कर वाइल्ड ने एक बहुत बढ़िया बात कही है—"Easy impulse that we strive to strangle broods in our mind and poisons us" उस दिन मैं अपने मन के जमे हुए विष को उस एकान्त में जैसे निकाल डालना चाहता था। भाषा की उत्पत्ति के इस सिद्धान्त में निश्चित रूप से कुछ सचाई है कि मनुष्य ने पशु-पक्षियों की बोली की नकल की होगी। जब कोई निश्चिंत समय और निश्चित गन्तव्य सामने न हो, तो भटकने का वास्तविक सुख प्राप्त होता है। उस दिन ऐसे ही मैं इधर-उधर घण्टों भटकता रहा। खूबसूरत पत्तियाँ और फूल चुनता रहा। वह सारी अमूल्य-श्री मैंने किताबों के बीच रख दी है, आकर दिखाऊँगा। जब ऐसे ही भटकता, अपने गर्दभ स्वर में गाता 'टिफिन टाप' पहुँचा तो वहाँ दस-बारह 'टूरिस्ट' इकट्ठे थे। कैमरे क्लिक-क्लिक कर रहे थे। अपने साथ लाये हुए अण्डे, मक्खन और डबलरोटियाँ उड़ाते जा रहे थे। पत्नियाँ और प्रेयसियाँ उन्हें अधिक प्रगल्भ बना रही थीं। मुझसे भी वहाँ की छोटी-सी चाय की दुकान वाले ने पूछा, साहब, कुछ चाय-बिस्कुट लाऊँ? मैं झुँझला उठा था, यहाँ इस सुन्दर स्थान पर यदि चाय और बिस्कुट न होते; यदि

केवल पानी पीने के लिए एक नल मात्र होता तो कौन-सा कहर बरपा हो जाता, पर मैं जानता हूँ ऐसा सोचने वाले कम ही हैं। मनुष्य प्रकृति और पहाड़ से असली प्रेम खो बैठा है; उसे वहाँ भी उतने ही सुख-साधन चाहिए जितने अपने ड्राइंगरूप में उपलब्ध हैं। तभी तो यह चाय की दुकान, तड़क-भड़क कपड़ों में प्रणयिनी पत्नियाँ। मुझको उस वातावरण के भीतर यह सब इतना 'अनफिट' महसूस हो रहा था कि कुछ समय के लिए वहाँ से उतर कर नीचे पेड़ों के बीच की समतल भूमि पर चला गया। यहाँ पर तो वास्तव में वन्य, अकृत्रिम सौन्दर्य ही होना चाहिए था। लिपस्टिक, रूज और कासमेटिक्स से मुक्ति यहाँ पर तो लोगों को मिले, जिससे कि ये युवक, कैमरामैन इस सुषमा का अधिक जमकर उपयोग कर सकते। कृत्रिम चुहलबाजियाँ नहीं, उच्छलित आनन्द की प्रगल्भता उन मुखरा तरुणियों में मुझे अपेक्षित लगती थी। पर मेरी कौन सुनेगा और मैं सुनाऊँ ही क्यों?

'टिफिन टाप' को 'डोरोथीसीट' भी कहते हैं। यहाँ बैठकर डोरोथी नामक अतल सुन्दरी इस नैसर्गिक सुषमा को रंगों और कूची के द्वारा अंकित करती थी। मैंने उसके चित्र देखे नहीं, पर फिर भी ऐसा लगता है कि इस स्थान की शोभा बिहारी की उस नायिका से कम नहीं है जिसकी छवि आँकने के लिए अनेक चित्रकार आते, पर उस प्रतिक्षण वर्द्धमाना शोभा चित्रण करने में समर्थ न होते थे। यहाँ से हिमालय के हिम-तुषार मण्डित शिखर भी दिखाई पड़ते हैं और दूर तक फैले हुए हरिताभ मैदान भी; नैनीताल की फीरोजी झील, गोल्फ के मैदान, फ्लैट की सक्रियता यहाँ से देखे जा सकते हैं। यह चोटी मानो निर्विकार स्थितप्रज्ञ की भाँति हर एक की गति को निहारा करती है।

पर सबसे सुन्दर दृश्य तो रात के समय झील पर पड़ने वाले प्रकाश के प्रतिबिम्बों का है। तुम दर्शन और मनोविज्ञान के आदमी हो। एक फार्मूला लिख रहा हूँ जो सम्भवतः अरस्तू से मान्यता भी प्राप्त कर सकता है। पता नहीं तुम्हारी मान्यता उसे प्राप्त हो या नहीं, क्योंकि दूसरे की बात को मानना तुम्हारे लिए नितान्त अपमानजनक है। अस्तु, फार्मूला यह है—यथार्थ + कल्पना = प्रतिबिम्ब = कला = निरपेक्ष सत्य। इसके बारे में विस्तृत व्याख्या और बहस वहाँ आकर करूँगा। तुम्हारी एक भविष्यवाणी सत्य हुई कि चलते समय जो पन्द्रह किताबें लाद कर लाया था उनमें से सात पेज और ग्यारह लाइन पढ़ सका हूँ, बाकी तो घूमना, सोना, रमी खेलना और गप्प उड़ाना बस इतना ही हो पाता है। अब दो-एक दिन में चलने ही वाला हूँ। मन में एक ही बात बढ़ रही है कि यहाँ सुरेन्द्र से अकारण लड़ जाने के कारण, 'नदी के द्वीप' पढ़कर नौकुछिया ताल का जो बिम्ब मन में बन गया था, उसे देखने न जा सका। पर मन ही मन अज्ञेय की इस सान्त्वना को दुहरा रहा हूँ—

पार्श्व गिरि का नम्र, चीड़ों में
डगर चढ़ती उमंगों सी

बिछी पैरों में नदी, ज्यों दर्द की रेखा
विहग शिशु मौन नीड़ों में
मैंने आँख भर देखा।
दिया मन को दिलासा—पुनः आऊँगा
भले ही बरस दिन-अनगिन युगों के बाद।

भाभी को मेरा सलाम कहना।

स्नेही

....

प्रतिभा : फरवरी, 1956

डेफ़ोडिल के फूल

कहते ही नहीं, बल्कि कविता गवाह है कि एक जमाने में डेफ़ोडिल के फूल ने वर्ड्सवर्थ के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। आप कविता के प्रेमी चाहे न हों, पर हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट अथवा डिग्री कक्षाओं में कहीं न कहीं, किसी न किसी ने वर्ड्सवर्थ की ये पंक्तियाँ अवश्य पढ़ी होंगी। आइए, एक बार हम फिर कवि के मन में गहरे अंकित उस पुष्प-मुद्रा को देखें—

For oft, when on my couch I lie
In vacant or in pensive mood,
They flash upon that in ward eye
Which is the bliss of solitude;
And then my heart with pleasure fills,
And dances with the daffodils.

और यह पुष्प कवि को मदमस्त करे भी क्यों न? मेरे एक बॉटनी पढ़े मित्र का कहना है, यह नरगिस की जाति का फूल है। पता नहीं, यह कहाँ तक सही है; पर कर्णिकारवर्णी (पीले कनेर) इस पुष्प की शोभा अपनी ही है। नीचे के चार दलों पर खिला यह कुसुम सचमुच ही स्वर्णपत्रों पर खिले पीत अरविन्द जैसा ज्ञात होता है।

पर मेरा दुख दूसरा है। आज इसे लेकर, लखनऊ जैसे सांस्कृतिक नगर में तीन घण्टे चक्कर लगा आया, पर ऐसा न मिला कोई, जिसे यह भेंट कर सकता। भेंट के लिए सुपात्र, और सुपात्र के लिए भेंट कठिन सम्भावनाएँ हैं। मैं सोच रहा था कि साइकिल के हैंडिल पर—वृन्त को भीगे कपड़े से लपेटे—लगे इस डेफ़ोडिल के फूल की ओर कोई तो आकर्षित होकर पूछे, 'यह काहे का फूल है?' और मैं अपना पुष्प-ज्ञान प्रदर्शित करते हुए कह सकूँ कि इतना भी नहीं जानते, इसको तो वर्ड्सवर्थ अमर कर गये हैं : यह डेफ़ोडिल है, डेफ़ोडिल! अथवा मेरा मन करता कि हजरतगंज में विचरती हुई किसी सुन्दरी को एकाएक यह भेंट देकर, मैं निःशब्द आगे बढ़ जाऊँ; धन्यवाद भी न सुनूँ। इस विचार के साथ ही मेरे मन में कालिदास गूँजने लगते हैं। उनके जमाने में नागरियाँ अपनी नील अलकों को पीत कर्णिकार से

मण्डित करती थीं; और यदि यह मेरी अरालकेशी इस फूल को धारण करे, तो...सुनते हैं, प्राचीन 'गुड ओल्ड डेज़' में उज्जयिनी और कौशाम्बी, पाटलिपुत्र और कांची की नगरियों में सुन्दरियों के यूथ पुष्पोद्यानों में निस्संकोच भाव से पुष्पभेंट ग्रहण किया करते थे। मैं यही निस्संकोच भाव ही तो चाहता हूँ। एक अर्थ में फ्रायड गलत नहीं है। पर उसके व्याख्याताओं (जो एक-दो नहीं, अब लाखों हैं और उसका नाम लेकर पानी पीते हैं) ने उसे गलत प्रचारित कर दिया है। हाँ, तो मैं दावे के साथ इतना भर कहना चाहता हूँ कि मेरा मन इस दुविधाहीन भाव की उपलब्धि मात्र चाहता है। यदि कोई स-इन्द्रियता इस भाव में है भी, तो वह निष्कलुष और सहज है। पर स्थूल नैतिकता से दब कर, आज के पुरुष-स्त्री का मन यौन-अभिभूत हो गया है। फ्रॉयडीय व्याख्याताओं ने इस आब्सेशन को और बढ़ावा ही दिया है। फिर भला, क्यों निःशब्द भाव से दी गयी मेरी भेंट को कोई स्वीकार करे!

न करे स्वीकार। मैं कॉफीहाउस में पहुँच गया। वहाँ इसे एक कवि-मित्र को समर्पित कर दिया। उन्होंने शिष्टाचार के नाते ग्रहण कर (क्योंकि शिष्टाचार ही तो आज की संस्कृति का द्योतक है) उसे सूँघा और चट से कहा : No Smell : गन्धहीन। तो क्या सचमुच गन्ध आवश्यक है? निर्गन्ध पुष्प का आकार क्या पर्याप्त नहीं है?? उसकी प्राणशक्ति गन्ध तो नहीं; और फूल का प्राकृतिक अभिप्राय तो नासिका से नहीं, चक्षु से है। इन्द्रियों की इस सापेक्षिक ग्राह्यता को लेकर, अकसर विवाद और मिथ्या भ्रम की सृष्टि हो जाती है। चाक्षुष 'आब्जेक्ट' नासिका के विषय बन गये हैं, और परिणाम है कि फूल मिलते ही हम सूँघना चाहते हैं; चाहे कमल हो, या डेफ़ोडिल। उसे देखना मात्र हमें गवारा नहीं; वैसे ही जैसे कि मुद्रित पृष्ठ को भी लोग आँख से पढ़ना नहीं, कान से सुनना चाहते हैं। फलस्वरूप अनावश्यक रूप से संगीतात्मकता पर जोर दिया जाता है। यदि यह प्रवृत्ति बढ़ जाये, तो सम्भव है कि कुछ दिनों में लोग नासिका से आगे बढ़ कर, हर फूल को मसल कर देखने का अभ्यास डालें कि यह कोमल है या कठोर; और उसी के अनुसार उसकी श्रेष्ठता या निकृष्टता का निर्धारण करना चाहें। कविता में कोमलकान्त पदावली स्थापित ही हो चुकी है। यदि फूल में भी हो जाये, तो सम्भवतः ऐसे अतीन्द्रियों को अधिक सन्तोष मिले, जो उसका मापदण्ड गन्ध बनाये हैं। पर ऊपर से कैसा भी अभ्यास डालें, भीतर से हमारी सहज दृश्यलुब्धता उभर ही आती है। हम फूल को वन और उपवन में, लता और क्षुप में ही नहीं रहने देते, उसे सामने मेज पर भी रखते हैं; प्रिया की लम्बमान नील अलकों को भी उससे सज्जित करते हैं और कोट के बटनहोल में स्थान देते हैं। उद्यान से ही पवन-विकीर्णित सुगन्धि हमें तृप्ति नहीं दे पाती, उसके रंग और रूपाकार हमें मुग्ध करते हैं। उसकी सुरभि ही नहीं, वर्ण, गठन और शैली का इसी कारण विशेष महत्त्व है।

इन्द्रियबोध की इस विषमता की बात करते-करते मुझे एक अन्य मजेदार प्रसंग

याद आ गया है। आन्द्रेज़ीद ने अपने जर्नल्स में एक परिचित का उल्लेख किया है, जो अपनी खाने की मेज पर तमाम-फलों के ढेर को सजा लेता था। उन्हें देख कर ही उसे एक प्रकार का ऐस्थेटिक आनन्द मिलता था। परन्तु उन फलों को न वह स्वयं खाता, और न मेज पर उपस्थित अन्य किसी को खाने देता। यह व्यक्ति भी रसना की वस्तु को आँखों का विषय बना बैठा था। इस व्यक्ति की याद करते ही, मुझे आजकल के अनेक पण्डित और आलोचक याद आ जाते हैं, जो नये साहित्य को न स्वयं पढ़ते हैं (मैं व्यक्तिगत रूप से हिन्दी के अनेक स्वनामधन्य विद्वानों से पूछ चुका हूँ कि वे हिन्दी की कौन-कौन सी पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। उत्तर नकारात्मक मिला है, अथवा यह कि जो मुफ्त आ जाती हैं, कभी-कभी उन्हें उलट-पुलट कर उसी समय देख लेते हैं, जब वे आती हैं। इस पर भी ये लोग विरोध करने को सदा तैयार रहते हैं। मन होता है, कहूँ कि भाई आप क्लासिक्स ही पढ़ें और उन्हीं पर लिखें, पर दोहरी चाल क्यों चलते हैं।), और न यह चाहते हैं कि कोई दूसरा पढ़े, और आँख की वस्तु को कान से सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। यदि कभी आँख से देखना भी चाहते हैं, तो परिचित दृश्यमात्र और यदि कभी हम उन्हें कान से सुनाना भी चाहें, तो केवल अभ्यस्त राग और परिचित शब्द ही वे सुन सकते हैं। शब्द, अर्थ और दृश्य का नयापन उनके लिए ऊलजलूल और दिमागी बहक मात्र है।

मेरा तो यह निश्चित मत है कि काव्य के लिए बिम्ब (इमेज) अधिक आवश्यक है, बजाय श्रुतिसुखदाता के। बड़ा कवि वह है, जो विराट अनुभूतियों, सूक्ष्म भावनाओं एवं गूढ़ विचारों के भी बिम्ब उपस्थित कर दे; न कि उन्हें संगीतमय बना कर कर्णप्रिय कर दे। तभी वाल्मीकि या व्यास जयदेव से कहीं अधिक बड़े कवि हैं। मैं फिर जोर देकर कहना चाहता हूँ कि काव्य का संगीत की अपेक्षा चित्र से अधिक गहरा सम्बन्ध है; और चित्र के लिए जैसे सदैव नवीनीकरण आवश्यक है, पुरानी कृतियों की प्रतिकृतियाँ आनन्द देती हैं, पर उनसे चित्रकला आगे नहीं बढ़ती। उसका उपयोग अभ्यास के लिए अच्छा हो सकता है, पर आगे का विकास नहीं द्योतित किया जा सकता। वैसे ही काव्य के लिए नये बिम्बों, दृश्य-विधानों, रूपकों एवं उपमानों की अनिवार्य आवश्यकता है। इस तथ्य को स्वीकारना होगा।

तो, भाई कविमित्र, मेरे दिये हुए इस डेफ़ोडिल के फूल को सूँघो मत, उसे देखो, देख कर फिर पहचानो, यह उससे भी बड़ी बात है।

कल्पना : 1956

शार्टकट और शून्य

तीसरा पहर बीतता जा रहा है। जाड़े के दिन हैं, अन्धकार सोख्ते पर तेजी से पसरती हुई स्याही की भाँति चारों तरफ से बढ़ता आ रहा है। खून की गरमी मर चुकी है, हड्डियों में दर्द उभर आता है, ठण्डी हवा बेधती चली जाती है। जिन्दगी के साठेपन तक तो मन में पाठा बनने की उम्मीद सँजोए रहा, पर आज तीन दिन से वह भी जाती रही। साठ पार किये बरस बीत गया पर तब से ढला हूँ, बढ़ा नहीं। लगता है जिन्दगी की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी ढलान पर आ गया हूँ। परसों मेरे सहपाठी शिवशंकर शर्मा अचानक आ गये थे। बचपन की बहुत-सी बीती बातें याद आयीं। घटनाएँ और कहानियाँ दुहराई गयीं। शर्मा अपनी जिन्दगी को सफल कहता है; स्वाभाविक रूप से वही अधिक बोलता रहा; अपनी सफलताएँ गिनाईं—कैसे रोमांस से लेकर ऊँचे पदों तक उसने हाथ मारे। आज भी मेरा कन्धा दुख रहा है जहाँ पर हाथ मारते हुए उसने सहानुभूति से भरा कहकहा लगा पूछा था—यार! तू जिन्दगी भर बुद्धू ही बना रह गया। आखिर बात क्या है? पहले तो तू बहुत तेज था पढ़ने में भी और बात करने में भी, पर अब तो लू लगे हुए आम के समान तू सिकुड़ कर रह गया है।

शर्मा जैसे मरम को कुरेद गया हो। जिस प्रश्न को मैं अन्तर के कोने में दुबकाए था, जिसे ऊपर लाने का मेरा साहस न पड़ता था, उसे ही शर्मा अनायास कह गया। तब से मैं सोच रहा हूँ, सचमुच बात क्या है? वह सही ही तो कह गया, मेरा, आज धुँधियाले बिन्दु से अधिक व्यक्तित्व ही क्या है? सरस्वती की मुझ पर कृपा हुई नहीं, लक्ष्मी दयालु सिद्ध नहीं हुई, काम की मार भी जैसे अनदेखी चली गयी। जिन्दगी के बहीखाते को खोल कर देखना चाहता हूँ, पर इतना साहस अब भी नहीं जुटा पाया हूँ कि उसे उलट-पुलट सकूँ। आँखों के सम्मुख अन्त का बड़ा-सा शून्य और विराट आकार धारण कर लेता है।

आज सोचता हूँ कि मनुष्य पर कितने-कितने प्रभाव कहाँ से आकर पड़ते हैं, उसके जीवन को विविध मोड़ इनसे ही प्राप्त होते हैं। तब बारह, तेरह वर्ष की अवस्था थी, बड़े भाई साहब नगर में पढ़ते थे और मैं भी नगर में रहने की लालसा से डट कर पढ़ता, और जम कर खेलता था। नाते-रिश्तेदार 'होनहार बिरवान के

होत चीकने पात,' 'कहते और मैं कहावत का अर्थ तो न समझता पर अपनी प्रशंसा अवश्य भाँप जाता। इस प्रशंसा से उत्साहित हो और अधिक प्रशंसा की कामना रख परिश्रम करता। यहीं से मन में प्रशंसा और प्रसिद्धि प्राप्त करने की आकांक्षा जाग्रत हो गयी। नगर पहुँचा, उन दिनों स्वातन्त्र्य आन्दोलन की धूम थी, मुझे प्रसिद्धि का एक नया मार्ग मिल गया। लीडर का चस्का लगा, कक्षा में प्रथम से उतर द्वितीय श्रेणी में पहुँच गया। इसी समय हाल ही में ब्याह कर आयी कवयित्री भाभी ने साहित्य में रुचि बढ़ाई, उन्होंने कविताओं की पुस्तकें भेंट कीं और मैं धीरे-धीरे साहित्य और राजनीति का सम्मिलित प्राणी बन बैठा अथवा यों कहें कि मैं यशलिप्सु बना, राजनीति की 'चमक' और साहित्य की 'वाहवाही' दोनों बटोरनी चाहीं। कॉलेज यूनियन के निर्वाचनों में भाग लेता, उत्सवों का संयोजक बनता, बड़े लोगों के भाषण करवाता और फिर चन्दे की रकम से चाय पी सन्ध्या समय कविगोष्ठियों में जाता, जहाँ तुकबन्दियों के सुनाने में मैं भी हिस्सा लेता। धीरे-धीरे पढ़ाई समाप्त कर रोजी का प्रश्न हल करने के लिए अध्यापकी ग्रहण की, पर मन ऊँची छलाँगें भर रहा था, मिनिस्टिरी के सपने देखा किया और कुछ समझ आ जाने के कारण कविता छोड़ आलोचना लिखना चाहा।

सौभाग्य या दुर्भाग्यवश किसी कहानीकार की एक कहानी पढ़ राजनीति के बालुकाभीतिवत यश को छोड़ साहित्य में पूरी तरह आने का संकल्प किया। मुझे याद है कि शहर की राजनैतिक पार्टी की एक अत्यावश्यक बैठक में मैं इसलिए न पहुँच पाया था क्योंकि मुझे ट्रेन पर रुक उधर से गुजरते हुए साहित्य महारथी से भेंट करने स्टेशन जाना था (तब मेरे मन कुछ ऐसी धारणा बन गयी थी कि पढ़ने-लिखने से अधिक आवश्यक कार्य साहित्यकारों से व्यक्तिगत सम्पर्क बनाना तथा अपना दल खड़ा करना है)। परिणाम यह हुआ था कि मुझे म्युनिसिपैलटी का टिकट न मिल सका था। धीरे-धीरे राजनीति से अपने को बिल्कुल खींच लिया, पर पढ़ने में ठीक से मन न लगता (कक्षा के लिए अधिक पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती)। धन्यवाद है पाठ्यक्रम निर्धारण करने वालों को, कि एक ही कोर्स 10-5 वर्ष चलता था और एक बार का पढ़ा दस-पाँच वर्ष काम देता था। कॉफी हाउस में पुराने-नये मित्रों के साथ गप्पें हाँकी जातीं या फिर परनिन्दा साहित्य का निर्माण कर समय का काम तमाम किया जाता। राजनैतिक दल से इस्तीफा दिया तो नगर साहित्यकार समाज में दाखिल हो गया, उसका संयोजक भी बना। परिणाम आज सोचता हूँ—अन्य मित्र अपने निबन्ध, कहानियाँ और कविताएँ पढ़ते, मैं उनकी रिपोर्ट बना कर अखबार में भेजता, जहाँ समस्त सूचना के बाद छपता—संयोजक सूर्य वर्मा। मैं इतने पर ही फूल उठता। कभी कोई मुझसे लिखने को कहता तो बड़े गर्व से उत्तर देता, भाई, इस कदर सोशल हो गया हूँ कि फुरसत ही नहीं मिलती। पाँचेक वर्ष बाद पाया कि मैं साहित्य के पथ पर जहाँ का तहाँ खड़ा हूँ जबकि साथी लोग साहित्य के इतिहास की शोभा बढ़ाने लगे हैं।

इन्हीं दिनों मेरे मौसेरे भाई ने अपने व्यापार में एक लम्बी रकम पैदा की। उनकी सामाजिक स्थिति ऊँचे आसन पर बिराजने लगी। बहुधा सभा-समितियों का उन्हें अध्यक्ष बनाया जाता जहाँ मैं साधारण आमन्त्रित व्यक्ति की भाँति उपस्थित होता। मैंने भी व्यवसाय करने की ठानी। शीघ्र ही नौकरी छोड़ पुस्तकों के प्रकाशन एवं बिक्री का कार्य प्रारम्भ किया। माताजी के पुराने जेवरों के बल पर यह कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रकाशन के कार्य में लाभ धीमी गति से होता है और पुस्तकों की बिक्री तो भारतवर्ष में केवल दो महीने होती है। मैंने कुछ दिन लम्बी रकम मिलने का रास्ता देखा, लाटरी और क्रासवर्ड पहेली में भी हाथ आजमाया पर 200-300 रुपये हाथ से निकालने के अतिरिक्त मिला कुछ नहीं। खाली समय में शैतान, अंग्रेजी कहावत के अनुसार, दिमाग पर हावी रहता, बुद्धि कुछ न कुछ तिकड़में सोचती रहती। एक अन्य हमपेशेवर के सुझाव पर स्कूल में चलने वाली एक पुस्तक का जाली संस्करण निकालने की सोची गयी। पर शीघ्र ही चार सौ बीस में जेल में बन्द होने की नौबत आ गयी। इसी शिवशंकर शर्मा ने समय पर सहायता कर छुड़ाया, वरना...।

शर्मा ने एक बार फिर से राजनीति में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। उसका कहना था कि अपनी बुद्धि का प्रयोग मुझे राजनीति में करना चाहिए। 'गट्स' हों तो राजनीति में बढ़ते क्या देर लगती है? दूसरे दिन से ही शहर की राजनीति में भाग लेने लगा। दुकान पार्टी के अधिवेशनों, हैण्डबिलों, निमन्त्रणपत्रों और सूचनाओं के छपने में लग गयी। कुछ लगन से काम करने पर प्रान्तीय कमेटी का सदस्य भी चुन गया। पर आखिर मन तो मेरा ही ठहरा न—कुत्ते की पूँछ 12 वर्ष बन्द करने पर भी टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। उन्हीं दिनों प्रान्तीय असेम्बली के लिए चुनाव हुए। मुझे अपनी पार्टी का टिकट न मिला तो क्रोधित हो दूसरी पार्टी में सम्मिलित हो गया। दूसरे चुनाव तक पुलिस की दलाली से लेकर अछूतोद्धार तक अनेक कार्य किये। इस बार दूसरी पार्टी का टिकट अवश्य मिला पर पहली से जीत न सका। मन में असीम निराशा व्याप गयी। पेटीशन दायर कर एक दिन ट्रेन पर आते समय एक पत्रिका खरीद ली। पहली कहानी मेरे एक पुराने विद्यार्थी की थी जिसमें उसे सम्पादकीय टिप्पणी लगाकर सशक्त कथाकार घोषित किया गया था।

मन में सुषुप्त साहित्य प्रेम फिर से जाग्रत हुआ। फिर कलम उठानी चाही। थोड़ा-बहुत पढ़कर दो-एक निबन्ध प्रकाशनार्थ भेजे, परन्तु कुछ दिनों बाद ससम्मान उत्तर आ गया कि 'यह तो साहित्य में दो युग पीछे की समीक्षा-प्रकृति है। आज जीवन के मान बदल चुके हैं, नवीन ढंग का मूल्यांकन होना चाहिए। केवल व्याख्या और भावोच्छ्वास अब उचित नहीं है।'

यह उत्तर पाकर कुछ नये लोगों से पूछताछ कर और एकाध निबन्धों में उद्धरण पढ़ नये कवियों की रचनाएँ खरीद लाया। उन्हीं दिनों एक मित्र ने बताया कि हिन्दी के नये साहित्य पर अंग्रेजी और फ्रांस के नये साहित्यकारों का बहुत प्रभाव है। अतः

इलियट, एज़रा पाउण्ड, लारेंस, ज्वायस, सार्त्र और लुई मैक्नीस आदि साहित्यकारों की कृतियों पर अच्छी-खासी रकम खर्च की। पर न रस आया, न मन लगा और न इतनी शक्ति दिखी कि सब पढ़ कर पचा सकूँगा। अंग्रेजी कवियों में कभी वर्ड्सवर्थ, शेली और टेनीसन कुछ समझ में आ भी जाते थे, पर इन लोगों का तो सही अर्थों में एक भी अक्षर पल्ले नहीं पड़ा। इतना होने पर भी मन को बहुत दिन चलाता रहा कि एक न एक दिन सरस्वती का ऐसा वरदान मिलेगा कि अचानक ही मैं कविता करने लगूँगा, नया उपन्यास लिख डालूँगा, निबन्धकार बन जाऊँगा और न जाने क्या-क्या...। इस प्रतिभा को प्राप्त करने के लिए पहाड़ों पर गया, समुद्र के तट पर घण्टों बैठा, अजन्ता और खजुराहो देखा तथा ढलती उम्र में एक विवाह भी किया; पर वह वरदान नहीं ही प्राप्त हुआ।

आखिरकार फिर से मुदर्रिसी खोज पढ़ाने लगा और साल भर होने को आया रिटायर हो गया हूँ। मिले हुए प्राविडेंट फण्ड से घर का खर्च चला रहा हूँ।

जिन्दगी के आखिरी दिन हैं। सोचता हूँ काश एक बार फिर से तरुणाई लौट आती तो किसी एक दिशा में जमकर काम करता। यश के गहरे आकर्षण और जल्दबाजी ने किसी ओर का न रखा। मिनिस्टर बन न सका, साहित्य के इतिहास में अमर हो न सका, कामिनियों के भ्रू-विलास का लक्ष्य बनने के स्वप्न भी न देख पाया और वैभव की सुखदायी गोद कभी नसीब न हुई। जिन्दगी का लेखा-जोखा गिनकर देखता हूँ तो रोकड़ बाकी शून्य नजर आता है।

पर अभी दो हौसले बाकी हैं—एक तो शतरंज का मशहूर खिलाड़ी बनना चाहता हूँ और दूसरे, उपनिषदों का अध्ययन कर उनकी सामाजिक व्याख्या करना। पता नहीं ये मनमोदक कभी साकार भी हो सकेंगे।

युगचेतना : दिसम्बर, 1956

दुलारे दउवा

दुलारे दउवा 82 वर्ष के हैं। वे बीमार हैं सुनकर मैं जैसे अप्रतिभ रह गया। जन्म और आन से ठाकुर, पेशे से किसान और स्वभाव से मनुष्य, ऐसे हैं दुलारे दउवा। पिछले 60 वर्षों में वे सिर्फ एक बार बीमार पड़े हैं—वह भी मियादी बुखार था, ऐसा गाँव के बड़े-बूढ़ों का कहना है; बाकी न मालूम इंफ्लुएंजा, प्लेग, हैजा और चेचक के कितने मरीजों को वे कन्धे पर लाद कर सिंघौर के घाट पहुँचा आये होंगे। मुझे स्वयं याद है कि पिछले 15 वर्षों में उनकी कार्यविधि और शैली में कोई अन्तर नहीं पड़ा है। सुबह से शाम तक निरन्तर काम से रहना उनकी आदत है। और कुछ नहीं तो घर में बैठे हुए वे सनई की गुण्डी बगल में दबाए चर्खी पर सुतली कातते ही मिल जायेंगे या जानवरों की चरही साफ करने में जुट जायेंगे। ऐसे दुलारे दउवा बीमार हैं। वे गठिया से, खाँसी से जकड़ गये हैं।

मेरा मन इस कर्मवीर को देखने के लिए बेचैन हो उठता है; पर मैं ठहरा बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध का प्राणी—मेरा समय, कार्य और अवकाश महीनों पहले घड़ी की टिक्टिक के द्वारा निर्धारित किया जा चुका है। जाने दो, दुलारे दउवा तुम यहीं से मेरा प्रणाम लो, शुभकामनाएँ स्वीकारो और यदि तुम्हारी मृत्यु निकट ही आ गयी हो तो जीवन में जैसी वज्र-दृढ़ता तुमने दिखाई है वैसी ही दृढ़ और स्थिर शान्ति के भागी बनो। तथा हम लोग जिन्हें कि तुम सदैव टिटिहरी की उपमा देकर मजाक उड़ाते थे—टिटिहरी जो सदा पी-पी चिल्लाया करती है, कभी अपने आप पानी लेने का साहस नहीं कर पाती—वे तुम्हारी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करेंगे (गोकि ईश्वर—पर आस्था का अभाव है, पर निश्चित शब्दावली द्वारा कर्तव्य जो पूरा करना है), एकाध स्केच लिखेंगे, और संस्मरणों की भी सोचेंगे (क्योंकि जनयुग है न!) अथवा अपने उपन्यास में तुम्हें गाँव का हीरो बनाकर रखना चाहेंगे (क्योंकि प्रेमचन्द की परम्परा में नये हस्ताक्षर करने हैं)। पर मैं जानता हूँ, तुम इन सबसे बड़े हो, तुम उन लोगों में हो जिन्हें समाज की धुरी कहा जाता है, उन लोगों में हो, जिनके कारण गाँव अभी भी पवित्रता का स्पर्श किये रहते हैं; उनमें हो जो अभी भी सामन्तों के उच्च गुणों को बचाये हैं।

दउवा मझोले कद, साँवले रंग के कसे हुए व्यक्ति हैं। इस बुढ़ापे में भी होली का रंग समाप्त हो जाने के बाद जब वे अपनी सफेद दाढ़ी को बीच से काढ़कर ऊपर बाँध देते हैं और शीश पर जयपुरी साफा बाँधते हैं तो अनायास ही राजस्थान के मध्ययुगीन वीरों की याद ताजा हो उठती है। आजकल भी 15 घण्टे रोज का परिश्रम करते देख जब मैंने दउवा की शक्ति का रहस्य पूछा तो हँसते हुए बड़े स्नेह से उन्होंने उत्तर दिया—'का कहित है बबुआ, तुम लोग सीकिया पहलवान बने हौ। अरे करी का, का कहित है, न घिव मिलै न दूध, माठा तक सार नसीब नहीं। हमरी महतारी दूनों जून अढ़ाई-अढ़ाई सेर दूध चढ़ाय देंय। जब औटत-औटत सेर भर रहि जाय तब सारे का चढ़ाइ जाई। कहित रहे लाला, लोंदवा भरि तो घिव खाइत रहै।'

दुलारे दउवा अपनी तरुणाई में जवार के कसरती जवान माने जाते थे। दउवा को कसरत और गठे हुए शरीर के प्रति इतना प्रेम था कि वे जीव सुलभ वासनाओं से अपने को अधिकांशतः मुक्त रख पाये थे। बातों ही बातों में दउवा ने एक दिन बताया कि 'लाला, का कहित है जवानी मां 1500 बैठक और आठ सौ दण्ड रोजाना भांजित रहै। पचीस बरस तक मेहरिया ससुरी का पास नहीं फटकै दीन (दउवा का विवाह 13 साल की अवस्था में और गौना 18 साल में हुआ था), गर्मी, जाड़ा, बरसात खेत-खरिहान में राति बितै देइत रहै। जसकन्ना, कनकुआ, छुनका देखित है, सारि घरै मां लहँगा के तरे नहिं बैठि रहत; बाहर खैतनौ माँ पसिनी, चमरनिन कैती निहारा करत हैं। तबहीं, का कहित है कौनौ के खाँसी आवति है, कौनौ के खरहरी (डायरिया) होति है।"

परन्तु कसरती शरीर का यह पट्ठा कभी दंगल में न उतरता था। इसलिए नहीं कि दंगल में लड़ने से दउवा डरते थे, बल्कि इसलिए कि दंगल में उतरना वे अपनी पुरानी खँडहर शान के विरुद्ध समझते थे। आजकल की भाषा में कहें तो दंगलों को वे 'प्रोफेशनुमा' लोगों के लिए मानते थे और वे ठहरे 'अमेच्योर' पहलवान। जिसका लड़ने का मन हो, जो उनकी 'गिरह' और 'टँगड़ी' की करामात देखना चाहता हो, आकर घर के अखाड़े में लड़े। खिलाएँगे उसको वे, आतिथेय वे स्वयं होंगे, स्वागत में नौकर की भाँति खुद इधर-उधर दौड़ेंगे। पर जिस समय लँगोट बाँधकर अपनी नम्र दृढ़ता के साथ वे अली पर मिट्टी चढ़ा कर जय बजरंग कहते हुए हाथ मिलाते थे, वह धज देखते ही बनती। कहते हैं कि एक बार सिंहोलेश्वर के दंगल में कुछ गंगापारियों ने उन्हें बार-बार एक जोड़ के लिए ललकारा—क्योंकि अपने घर के अखाड़े में किसी नामी गंगापारी को वे हरा चुके थे—तो मारे क्रोध के दंगल में अपने जीवन में पहली और अन्तिम बार उतर एक पहलवान को इतनी जोर से उठा कर पटक दिया कि वह बड़ी मुश्किल से मरने से बचा और दुलारे दउवा को दो साल तक रायबरेली की कचेहरी का दौड़ा करने के बाद मुक्ति मिली। तभी से मामला, मुकदमा और कचेहरी का नाम सुनते ही वे कान पकड़ने लगते हैं।

गीता का यह श्लोकार्द्ध 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' उन पर पूरी तरह लागू होता है। उन्होंने मेरे देखते-देखते कलमी आम का एक बाग लगाया, कटहल का जखीरा तैयार किया तथा अमरूद, नीबू और पपीता का बड़ा-सा बागीचा खड़ा कर दिया। इस अमरूद के बाग की कथा अत्यन्त रोचक है। एक बार दउवा मेरे यहाँ आये; पेड़-पौधों के शौकीन होने के कारण वे हमारा अमरूदों का बाग देखने चले गये। बाग-घूमते घामते कहीं उन्होंने दो-चार अमरूद तोड़ लिए। तकवाह ने कुछ मुँह बनाया और मन ही मन कुछ बड़बड़ाया भी। दउवा की अनुभव से पकी आँखों से ताकने वाले का यह मनोभाव छिपा न रह सका। पानीदार आदमी ठहरे वे। अमरूद वहीं तकवाह के सामने फेंक कर चले आये और दूसरे ही दिन उन्होंने अपने 'उसरहवा' खेत में पाँच पेड़ अमरूद के, आठ मील दूर सेमरपट्टा के बाग के कुंजड़े से लाकर गाड़ दिये। उनका दिन-रात चौबीसों घण्टे का समय वहीं बीतने लगा, अकसर वे अपनी रोटी भी वहीं मँगा कर खा लेते थे। हहराती लू के झोंके और गरजते गगन घन की अजस्र धार, शिशिर की मर्मान्तक तीखी वायु जैसे उनके शरीर को परस ही न पाते हों। अनाघ्रात भाव से काम करते हुए दउवा को उस समय अपनी धान की खेती से जो बारह सौ मिले उन्हें वहीं आठ फुट का कुँआँ बनवाने में खर्च कर दिया।

गाँव के नवयुवक उन्हें 'उसरहवा भूत' कहते, स्त्रियाँ आपस में खुसुर-फुसुर करतीं कि दउवा आजकल प्रेत सिद्ध कर रहे हैं, पर असल में उनके तो मन को बात गड़ चुकी थी। आज उस बंजर-बन्ध्या धरती में तीन बीघे का लहलहाता बाग खड़ा है। बाग के एक हिस्से के लगभग 20 पेड़ों को उन्होंने सेहुंड़ और नागफनी से अलग घेर दिया है, यह हिस्सा गाँव के लड़कों को अमरूद खाने के लिए है। लड़के वहाँ जायें, मनपसन्द अमरूद खाएँ पर मजाल नहीं कि 15-16 साल से ऊपर का लड़का वहाँ घुस जाय। जब तक अमरूद न पकेगा, दउवा स्वयं रखवाली करेंगे, उस समय लड़के भी नहीं जा सकते। इस नियम को सभी इतना समझ गये हैं कि परम्परा की भाँति इसका पालन होने लगा है। लड़कों को भी अपना यह हिस्सा इतना प्रिय है कि वे इसके सींचने और गोड़ने में तो मदद देते ही हैं, उसके पेड़ों की डालों पर 'गलहर' भी नहीं खेलते।

जिस समय दउवा बाग में हों और आप पहुँच जाइए। वे एक-एक पेड़ दिखावेंगे, एक-एक पत्ती और फूलों का विवरण देंगे। वनस्पतिशास्त्र के विद्यार्थी भी उतना ध्यान अपने प्रयोगों के विकास पर नहीं देते जितना कि बीस तक की गिनती मात्र जानने वाला यह निर्लिप्त ग्रामीण। हर पेड़-पौधे की पूरी हिस्ट्री उन्हें जबानी याद है। ग्राफ और चार्ट सब उनके मस्तिष्क पर अंकित रहते हैं। अकसर वे मेरे यहाँ के बाग से पेड़-पौधे ले जाते हैं। एक बार मैं अपने वनस्पति प्रेमी अग्रज के साथ दुलारे दउवा के बाग पहुँच गया। डहलिया और गुलदाउदी को जिस समय डलिया और गुलयादी

कहते हुए इन फूलों के सौन्दर्य को उन्होंने दिखाया तो उनकी आँखों में आँसू भर आये। अँगोछे के छोर से आँखें पोंछता हुआ चार पुत्रों का यह कृषक पिता अपने वनस्पति पुत्रों से भी इतना स्नेह रखता है, इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वास्तव में मैंने यह बहुत बाद में अनुभव किया कि दउवा के स्नेह का स्रोत इतना अनाविल और मुक्त है कि वह एक ही ओर नहीं बहता। महान पुरुषों की प्रतिभा की भाँति अनेक पक्षों को वह आप्लावित करता है। मैंने दउवा का यही निर्मल स्नेह बाद को पशुओं के प्रति देखा। तकिया के मेले से लाये बछेड़े के बीमार पड़ने पर उन्होंने तीन दिन नींद और भोजन का परित्याग कर उसकी परिचर्या की। कहते हैं कि अपनी जमीन की कमाई का एक खासा बड़ा हिस्सा दुलारे दउवा घोड़ों और बैलों पर खर्च कर चुके हैं। पशुओं के रंग, रूप, गुण, दोषों की उन्हें अद्‌भुत पहचान है।

कर्मठ दउवा को आज के जीवन के सबसे अधिक कर्मरत पेशे राजनीति से कोई मतलब नहीं है। गाँव पंचायत में वोट डालने वे जाते नहीं, राजनैतिक दलों के स्वरूप में वे अब तक केवल टोपी के अन्तर को स्पष्ट कर पाये हैं, बाकी उनके अनुसार सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं जो अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हैं। नमक सत्याग्रह तो उनकी समझ में आ गया था, क्योंकि उसको भगवान के अवतार महात्मा गाँधी चला रहे थे, पर आगे की बातें उनकी समझ में आती नहीं। जमींदारी का हटना उनके लिए दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

स्नान करने के बाद एक लोटा जल शिवलिंग पर चढ़ाने तक उनके धर्म की सीमा है, तीर्थ गेगासों की गंगा तथा व्रत जन्माष्टमी, देवउठान एकादशी और शिवरात्रि वर्ष में तीन हैं। परन्तु उनका मन कितना प्रबुद्ध है अपने दैनिक व्यवहार में, उनका धर्म भीतर से कितना दृढ़ है और उनकी नैतिकता कितनी पुष्ट है, यह दउवा के तनिक भी सम्पर्क में आने वाला जान सकता है। आलसी और चोर को वे एक ही दिन में पहचान जाते हैं, पाप और पुण्य की उनकी परिभाषा अच्युत है तथा 82 वर्ष के बूढ़े दुलारे दउवा गाँव की बहू-बेटियों की मर्यादा और लज्जा के सबसे सशक्त और सजग रक्षक हैं।

टूट जाये पर झुके नहीं ऐसे तुम्हारे व्यक्तित्व को मेरे अनन्त श्रद्धा संवलित प्रणाम, लो दउवा स्वीकार करो।

साहित्यकार : जून, 1957

छोटी यात्राएँ : फुटकर बातें

रायबरेली से कानपुर जाने वाली पैसेंजर ट्रेन में इंजिन के पीछे कुछ माल के डिब्बे लगे हुए थे। उनके बारे में दो सहयात्रियों ने बड़े मजेदार ढंग से बताया कि ये क्यों लगे हुए हैं? एक ने कहा, 'आजकल कलयुग में सारी दुनिया हो गयी है बेईमान। ये साले ड्राइवर इसलिए इन डिब्बों को जोड़ देते हैं कि कहीं कुछ मिल जाये तो उठा कर रख लें। आम, अमरूद, गन्ना, गल्ला, दूध, भूसा जो भी हाथ लग गया, वह इन डिब्बों में हुआ गायव। कोई देख भी नहीं सकता और अपना काम तो सध ही गया।' दूसरे यात्री ने पहले को डाँटते हुए कहा, 'इसी अक्ल से बम्बई तक नौकरी करने जाओगे? कहीं सरकार के हुकुम के बिना ऐसा हो सकता है कि कोई डिब्बा जोड़ ले अपने मन से।' उसने वतलाया कि आजकल रेलों पर दुर्घटनाएँ बहुत होती हैं और उनमें ज्यादातर आगे के डिब्बों में बैठे हुए मुसाफिरों को ही खतरा रहता है, इसलिए सरकार ने सवारी गाड़ियों में इंजिन के बाद मालगाड़ी के खाली डिब्बे लगाने शुरू कर दिये हैं, जिससे मुसाफिरों की जान की हिफाजत हो सके।

ज़ाहिर है कि दूसरा अधिक बुद्धिमान, पर कम 'ओरिजिनल' है। पर दोनों ने मुझसे कहा कि आप यह भी नहीं जानते और मेरी अज्ञानता पर खेद और विवशता प्रकट करते हुए यह सब बताया था।

लखनऊ आ रहा था। डिब्बा छोटा, जैतीपुर तक खासी भीड़ रही। मेरे पार्श्व में पैंट, बुश्शर्ट, चश्मे में आवेष्टित एक भलेमानुस से बैठे थे। साथ में एक और मित्र भी थे। उनके मित्र अभी युवावस्था पार करने की ओर थे, पर मेरे भलेमानुस प्रौढ़ावस्था की नियताप्ति पर थे। कुछ देर तक *नेशनल हेरल्ड* पढ़ा (या उलटा) पर गंगापुल पर पहुँचते-न पहुँचते गाड़ी के खड़खड़ के ऊपर अपनी आवाज हावी कर उन्होंने शेरोशायरी का करिश्मा दिखाना शुरू किया। इस कमाल को सुनने के लिए मैंने भी अपने कान खड़े किये (साहित्य में दिलचस्पी अकसर फेस करता रहता हूँ न!)। छह-छह पैसे से लेकर टकइहल तक शेरों का खजाना खुला हुआ था। एक स्टेशन

और पार हो गया पर शायरी का प्रवाह अप्रतिहत रहा। मैंने कुछ चिढ़कर इस न्यूसेन्स का कारण जानना चाहा। थोड़ी देर के बाद ही मैं समझ पाया कि भलेमानुस पड़ोसी के पड़ोस में ही एक सद्यःपरिणीत युग्म बैठा हुआ है। पर सद्यःपरिणीत के जो भावात्मक निहितार्थ हैं–लजाई, संकुचित पर आन्तरिक अभिलाषाओं से प्रदीप्त आँखें एवं मसृण कोमल सौन्दर्य–उसका वहाँ अभाव था। पर वह शायद दोस्त उस काली बदशकल लड़की पर अपनी इस मुखर प्रतिभा का रोब जमा रहे थे। देखने-सुनने में समझदार, गम्भीर लगने वाले महाशय कितनी हीन रुचि एवं नीच वृत्तियों से आक्रान्त निकले? मुझे गहरा धक्का लगा।

मैं 'वूमन ऑफ रोम' पढ़ रहा था। उसे अपनी सीट पर रखकर मैं पेशाब घर की ओर गया। लौटकर देखा तो उसकी भूमिका को उतने ही जोर से उनके मित्र पढ़ रहे थे। यह उपचार शायद मित्र की शायरी के रुआब को निष्फल कर अपनी अंग्रेजी प्रतिभा का सिक्का जमाने के लिए प्रारम्भ हुआ था। एक ओर अनवरत गति से काव्य पाठ और दूसरी ओर अंग्रेजी किताब का सस्वर पारायण–मैं कबीर को याद करने लगा–

चलती चक्की देखि कै दिया कबीरा रोय।
द्वै पाटन के बीच में साबित बचा न कोय।।

इन दोनों पाटों के मध्य में मैं किससे कहूँ–'भाई जान, यह मूर्खता है, इससे कुछ लाभ नहीं, आप मेरी पुस्तक उठाकर शिक्षित होने का केवल ढोंग रच रहे हैं।' मेरा मन हो रहा था कि कह दूँ कि आपसे अच्छा तो यह बद्रीनाथ का पण्डा है जो लड़ता-झगड़ता डब्बे के भीतर घुस आया है और अब आराम से फर्श पर बैठ कर बीड़ी सुलगाने के चक्कर में है। पर इस सबसे क्या? मुझे लखनऊ तक मन को कसमसाते हुए आना पड़ा, अपनी किताब मुझे तभी वापस मिली और उस काव्य-रस से तभी वंचित होने का सौभाग्य आया जब लखनऊ स्टेशन से कुछ पहले मवैया ब्रिज के निकट गाड़ी सिगनल के अभाव में खड़ी हो गयी। वे दोनों अत्यन्त शीघ्रता से प्रसन्न मुद्रा में रेल के नीचे उतर गये।

कुमाऊँ की पहाड़ियों की यात्रा! पीलीभीत में किसी ने टॉयलेट के सामान का झोला ही उड़ा दिया। मैंने भी सोचा कि चलो चोर की हजामत बनेगी। काठगोदाम पहुँचा, वहाँ दो दिन से सारा ट्रैफिक रुका पड़ा था क्योंकि वर्षा के कारण पहाड़ियाँ टूट गयी थीं और रास्ते बन्द थे। अजीब-अजीब चेहरे, पर सभी के मुखों की मुद्राएँ परेशानी से अंकित। मुझे इन चेहरों और मुद्राओं का अध्ययन करने में मजा आ रहा था। प्रथम श्रेणी के विश्राम-गृह के बाहर एक समृद्ध परिवार बैठा था। प्रौढ़ा

माँ का कहना था कि दो दिन से पड़े हुए हैं, हमें प्रयाग लौट चलना चाहिए पर किशोरी कन्या का हठ था कि नहीं, एक दिन तो इन्तजार करो। इतने में पिता ने आकर बताया कि रोडवेज वाले कह रहे हैं कि निश्चित सूचना हमें 11 बजे के बाद दे सकेंगे। तीन-चार विश्वविद्यालय के नौजवान एक स्थान पर खड़े थे। वे यदाकदा सतृष्ण भाव से सुन्दरियों का अवलोकन करते तथा पैदल ही नैनीताल चलने का कार्यक्रम बना रहे थे। एक कहता कि 15 मील ही तो है, पर दूसरा कहता कि बच्चू, यह हजरतगंज की ट्रिप नहीं है, पहाड़ पर चढ़ना पड़ेगा तो हुलिया तंग हो जायेगी, तब तक एक नवयुवती पार्श्व से होकर गुजरती है और तीसरे जन जरा जोर से कहते हैं कि लास्ट इयर मैंने कश्मीर में पच्चीस-पच्चीस मील की सैर एक ही दिन में की है।

लगभग तीन घण्टे बाद साढ़े दस के करीब रास्ते खुले और अपना मोटरों का कारवाँ आगे बढ़ा। गत वर्ष की याद हो आयी जब मैं नैनीताल अक्टूबर में गया था। उस साल भी अक्टूबर में ऐसी भयंकर वर्षा हुई थी कि मोटर की कौन कहे, ट्रेन भी दो-तीन स्टेशन पहले ही रुक जाती थी। पर जिस दिन मैं गया, उस दिन ही रास्ता खुल गया था और आज भी मेरे जाने के दिन ही रास्ते खुल गये। इस Coincidence को याद कर मेरा मन मिथ्या गर्व से भर उठा। मैं अब सोच रहा हूँ कि मनुष्य अपने कर्तव्य का ऐसा ही मिथ्या अभिमान करता है, अन्यथा मुझसे और रास्ते के खुलने से शायद बादरायण सम्बन्ध भी नहीं है, पर मन तो नानाविध सम्बन्ध जोड़ता रहता है।

कानपुर से लखनऊ दूसरे दर्जे में जाने की सोची (क्योंकि तीसरे दर्जे की खिड़की पर बहुत भीड़ थी और गाड़ी छूटने वाली थी)। डिब्बे में जब दरवाजा खोल कर घुसने लगा, तो उस बारह सीटर डिब्बे के बारहों मुसाफिर मुझे आँखें फाड़कर देखने लगे—गोया मैं अनधिकृत रूप से उनके स्थानों पर कब्जा जमाना चाहता हूँ। उन आँखों की अमर्षमूलक अवज्ञा ने तत्काल मुझे तीसरे दर्जे की याद दिला दी। जहाँ कि निश्चित स्थान से अधिक का बैठना ही स्वाभाविक है और कम बैठना आश्चर्य की बात, यात्री का डिब्बे में जाना, वहाँ अमर्ष को जन्म नहीं देता है; अधिक से अधिक आसपास बैठे दो-चार मुसाफिर कुनमुनाए और फिर सहज भाव से स्थिति की स्वीकृति। पर इस दर्जे के खोखले सभ्यों—

We are the hollow men
We are the stuffed men

में केवल एक भावना काम करती है—'मैंने अधिक पैसे खर्च किये हैं उनका मैं भरपूर

उपयोग कर लूँ।' यदि वह सारे डिब्बे में अकेला ही पैर फैला सके, तो सबसे अधिक खुश हो, उसकी ट्रेजडी यह है कि अपनी तुलना तृतीय श्रेणी से नहीं, प्रथम श्रेणी से करता है। इस वर्ग के बारे में सोचते-सोचते मुझे फिर इलियट याद आ जाते हैं–

Shape without form, shade without colour,
Paralysed force, gesture without motion.

अगल-बगल बैठे चाहे जिन्दगी बीत जाये, शून्य दृष्टि से क्षितिज ताकते-ताकते आँखें दर्द करने लगें, 'टाइम्स' और 'रीडर्स डायजेस्ट' नींद भले ही ला दें पर पड़ोस के मानव प्राणी से खुलकर मिलने और बात करने में इनका 'एट्टीकेट' नष्ट होता है। हाय रे शिष्टाचार! आओ श्याम एक बार फिर थर्ड क्लास की ओर लौट चलें, वहाँ जिन्दादिली है, मनुष्य का आन्तरिक एकत्व बाहर मूर्तिमान होकर उपस्थित है। वहाँ पर मौसम की हरियाली या बदकिस्मती है। क्या नहीं है वहाँ? बस, आँख और कान भर चाहिए आपके पास। बाबा तुलसीदास को याद कर लो, सेकण्ड क्लास छोड़ने के पूर्व–

आवत ही हरषे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए कंचन बरसत मेंह।।

रानीखेत महीने भर बाद फिर आया हूँ। खूबसूरत घाटियाँ बादलों से भरी हुई हैं। लगता है बादलों की झील लहरा रही है। इस अंचल को लोग बहुधा पत्थरों का देश कहते हैं, पर मेरा मन होता है कि मैं इसे बादलों का देश कहूँ। हाथ में बादल, कोट की बांह के भीतर बादल, मुँह फैलाओ तो भीतर बादल, साँस लो तो नाक में बादल, घाटी बादलों की, झील और चोटी बादलों की, आरामकुर्सी जिससे कभी-कभी ढुलक भी पड़ते हैं और शिखर ऊपर दिखलाई पड़ते हैं। अज्ञेय की पंक्ति है–

शरद चाँदनी बरसी,
अंजुरी भर कर पी लो।

मैं कहना चाहता हूँ–

आओ बादल को मुँह, जेबों, गोदी में भर लो।
अंजुली भर कर पी लो।।

रानीखेत से चौबटिया गया। ऊँचे-ऊँचे मैजेस्टिक देवदारुओं के मध्य से निकलती तारकोल की सड़क अखिल विश्व के बीच यात्री की जिज्ञासा की भाँति बंकिम गति से चली जाती है।

चौबटिया का उद्यान : उसके बारे में क्या कहा जाये? वहाँ एक पेड़ का नाम है 'मजनू' उसके पास पिकनिक लायक स्थान बनाये गये हैं। इन प्रमोद कुंजों में

जाकर उस रोमाण्टिक वातावरण में रोमाण्टिक संवेदना आपने आप जाग पड़ती है। इस वातावरण के मध्य यदि थोड़ी-सी 'हनीमूनिंग' हो जाती है, तो क्या बुरा?

आज दोपहर एक मित्र और सहयोगी सपरिवार आ गये, एक दिन की 'प्लेज़र ट्रिप' पर। इन लोगों ने उन्हें रोक लिया। कैम्प में रात को साथ ही सोए। रात में उनके एक बच्चे ने बिस्तर खराब कर दिया। इस गड़बड़ी में उनके सभी बच्चों ने जो हंगामा मचाया, तो हम सभी जाग पड़े और प्लेज़र ट्रिप में रात को सोने का हम सभी का आनन्द जाता रहा। मैं सोचता रहा कि बच्चे जहाँ एक ओर अनगिनत घरों में आनन्द और उल्लास की सृष्टि करते हैं–वहीं घूमने-घामने के आनन्द को नष्ट करते हैं, मनुष्य को अगत्यात्मक और सुरक्षा प्रिय बना देते हैं पर वे कभी-कभी सामाजिक जीवन के लिए, व्यक्तिगत जीवन के लिए चेक्स और वैलेंसेज का काम भी करते हैं। मेरी मिसेज दोस्त सवेरे अस्वस्थ होते हुए भी घूमना चाहती थीं, पर उनके छोटे बच्चे ने जिद करके रोक दिया। मैं प्रसन्न होकर मित्र-दम्पति को वहीं छोड़ अकेला ही घूमने चल दिया।

आगरे से मथुरा वृन्दावन की ओर जा रहा था। अशिक्षित से सहयात्री ने पूछा, 'कहाँ जा रहे हो बाबू?' मेरे बतलाने पर कहा, 'दर्शन करने जा रहे हो, तब तो आप गिरिराज (गोवर्द्धन पर्वत) भी जायेंगे।' मैंने उत्तर दिया, 'हाँ, यदि अवसर मिल गया तो अवश्य जाऊँगा।' उसने कहा, 'बाबू जरूर जाना, वहाँ तो लला-लली नित्य विहरें।' मैं इस श्रद्धा और विश्वास को देख दंग रह गया। उपर्युक्त वाक्य कहते-कहते उसका मुख जैसे चमक उठा था। अचानक ही मेरे मन में ब्रजभाषा के अनेक कवि कौंध उठे–

टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि,
काल्हि कोऊ कितनो समुझै है।
माई री वा मुख की मुसुकानि
सम्हारि न जैहे, न जैहै, न जैहे।।

मथुरा में नाव वाले ने मुझे बताया कि ब्रज है यह, यहाँ तो सब रसिया रहत हैं। इसी रस में बावरे होकर सूर को कहना पड़ा था शायद–

ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंससुता की सुन्दर कगरी अरु कुंजन की छाँहीं।।
वे सुरभी, वे बच्छ दोहनी, खिरक दुहावन जाहीं।।

वसुधा : जुलाई, 1957

मतभेद और झगड़े का भेद

अभी उस दिन विदेश के एक हवाई अड्डे पर पत्रकारों से बातें करते हुए नेहरू जी कह रहे थे कि यह सही है कि हममें मत-विभिन्नता हो जाती है, आपस में तीखा मतभेद हो जाता है, पर उसके मानी यह नहीं हैं कि झगड़ा हो गया है। रेडियो पर यह रिपोर्ट सुन मैं तनिक चौंका। मतभेद और झगड़े का तात्विक अन्तर समझने की चेष्टा कर रहा हूँ क्योंकि अब तक उनमें मैं एक प्रकार की एकता देखता था जैसी कि अद्वैतवादी ब्रह्म और जीव में देखता है। यानी कि मतभेद बीज है, अंकुर झगड़ा। मतभेद भस्मावृत्त अग्नि तथा झगड़ा प्रस्फुटित रिपोर्ट स्फुलिंग। पर अब रेडियो के नये आलोक में नये अर्थों का भावन करने की कोशिश की।

मतभेद को यदि दो खण्डों में तोड़ दिया जाये तो इसका रूप होगा—मत+भेद—मतभेद। मत के अर्थ नकारात्मक होते हैं जैसे कि यह काम मत करो यानी कि यह काम न करो। सो इसके अनुसार इसका अर्थ हुआ कि भेद नहीं। पर दूसरे विद्वान मित्र का कहना है कि यह तब होता जब कि शब्द 'भेदमत' होता। परन्तु इस अर्थ के एसोसिएशन से मैं असह्य अर्थ पर पहुँच गया, यानी कि मत अगर बाद में आता तो नकारात्मक होता पर हुआ उल्टा अर्थात पहले आ गया, सो यह निगेटिव अब पॉजिटिव हो गया और मतभेद का अर्थ हो गया भेद करो, भेद हुआ।

परन्तु एक उलझन फिर आ जाती है कि भेद करो और झगड़ा करो। इन दोनों में सूक्ष्म विभेद क्या कोई सम्भव है? पर होगा जरूर क्योंकि नेहरू जी ने कहा है, और आज आप्तता कहीं होती है तो केवल राजनेता के वाक्यों में। सभ्यता ने इस दृष्टि से बहुत अधिक विकास किया है। वाक्य की आप्ता विकसित होकर ऋषि, मुनि, अध्यापक, पण्डित, विचारक से राजनेता के पास पहुँच गयी है। विश्वास न होता हो तो अखबार उठा कर देख लें। साहित्यकारों को कान्फ्रेंस का उद्घाटन मुख्यमन्त्री कर रहे होंगे और समाचारपत्र के चार कालम उनके भाषण के टेक्स्ट से भरे हैं, आधा कालम उस कान्फ्रेंस की तैयारी और साजबाज के वर्णन में और आधा कालम उस सम्मेलन के साहित्यकार सभापति के भाषण और प्रमुख अभ्यागतों के नाम गिनाने में बीत गया होगा! यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन के सदस्यों को कर्तव्य

का, ज्ञान का, नीति का और सद्विचार का उपदेश दे रहा होगा राज्य का शिक्षित (?) शिक्षामन्त्री। कहना व्यर्थ है कि विज्ञान कांग्रेस का अधिवेशन तो प्रधानमन्त्री के आशीर्वाद बगैर सफल ही नहीं हो सकता।

पर बात मैं विकास की कर रहा था; श्याम कहता है कि राजपुरुष का सम्मान तो पहले भी अधिक था। छत्रसाल ने जब भूषण की पालकी में कन्धा लगाया तो यही स्वाभाविक रूप से व्यंजित होता है कि वह अधिक बड़ा व्यक्ति था। इस बड़प्पन के कारण ही तो उसका कन्धा मशहूर हो गया, पर उस पालकी को बुन्देलखण्ड से महाराष्ट्र तक ले जाने वाले बदलू या मंगल ऐसे ही किसी कहार का नाम अमर नहीं हो पाया। यह कोई भी इतिहासवेत्ता नहीं कह सकता कि कालिदास विक्रमादित्य की अपेक्षा अधिक सम्मानित अथवा सम्पन्न था। कालिदास ने अपने युगादर्श को रघुवंश में प्रतिविम्बित करते हुए कहा है कि राजा गवाक्ष से अपने पैर नीचे लटका देता था और दर्शनोत्सुक जनता प्रफुल्ल मन लौट जाती थी। आप कहेंगे कि आगत युग कवि अथवा कलाकार को मान देता है पर यदि वाल्मीकि, कालिदास या भवभूति अमर हैं तो राम, विक्रमादित्य अथवा अशोक को आगत परम्परा ने कम मान नहीं दिया। वास्तव में बड़ा व्यक्ति हर क्षेत्र का बराबर होता है। पर यह भी कैसे कहूँ बकौल धर्मवीर भारती हाकी के खिलाड़ी ध्यानचन्द के बराबर का पदक मिलने के कारण महादेवी जी का मान-महत्त्व कम हो गया है—तर्क को आगे बढ़ा कर देखें तो आपको यह भी ध्वनित हो सकता है कि ओलम्पिक खेलों की अपेक्षा परिमल-पर्व अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। पर हम अवान्तर प्रसंगों में चले गये, बात तो सभ्यता के विकास की हो रही थी। तब राजपुरुष सम्मानित अधिक था, उसकी सत्ता भी बड़ी थी, समृद्धि का वही स्वामी था, पुरस्कार, पदक और उपाधि वही वितरित करता था; परन्तु विचारक, उपदेशक और नीतिज्ञ का ढोंग नहीं भरता था (अपवादों की बात मैं नहीं कर रहा—जनक जैसे नीतिवान विचारक थे और आज भी चिन्तक राजसत्ताधीश हो सकते हैं) वह सलाहें लेने आश्रम जाता था, दीक्षान्त भाषण करने नहीं। वह उपदेश ग्रहण करने जाता था, प्रवचन और वक्तृता के लिए नहीं। राजनेता संस्कृति के क्षेत्र में अनुगामी था अग्रचेता नहीं। और आज...है न विकास? एक घटना इसी सबन्ध में याद आ गयी है। मेरे एक मित्र एक प्रदेश के शिक्षामन्त्री से मिलने गये कि उनके महाविद्यालय की एक सांस्कृतिक संस्था का उद्घाटन कर दें। उनका विद्यालय उस राज्य की सबसे बड़ी शिक्षण संस्थाओं में से एक है। मन्त्री महोदय ने कहा क्या मिनिस्टर इतना चीप हो गया कि वह कॉलेज की समितियों का उद्घाटन करता घूमे, आज आप मुझे बुलाते हैं कल जवाहरलाल को बुलाइएगा। मेरे मित्र ने उनको समझाना चाहा कि चीपनेस (सस्तापन) तो आपके मन का है, बाकी मेरे कॉलेज की समितियों-संस्थाओं में डॉ. सी.बी. रमन, निराला, रामचन्द्र शुक्ल, प्रो. रुद्र तथा इसी कोटि के दर्जनों अन्य विद्वान आ चुके हैं तथा मिनिस्टरों में भी

कोड़ियों आ चुके हैं, उनके नाम नहीं गिनाऊंगा क्योंकि 'वह' तो सीवर टट्टी का भी उद्घाटन करता है। मिनिस्टर साहब की वाणी इस मीठी फटकार को सुनकर नरम तो पड़ गयी, पर मेरे स्वाभिमानी मित्र यह कहते हुए उठ कर चले आये कि 'चलिए कोई तो आदर्श उपस्थित करने वाला मिनिस्टर मिला, आपके आदर्श पर बधाई।'

यह दूसरी बात है कि उसी हफ्ते अखबार में यह खबर पढ़ने को मिली कि...के शिक्षामन्त्री ने आज एक जलपानगृह का उद्घाटन करते हुए अच्छी मिठाइयों के महत्त्व पर जोर देते हुए राष्ट्र की स्वास्थ्य योजना में रेस्तरां के महत्त्व को बतलाया।

फिर हम लोग भटक गये। बात तो मतभेद और झगड़े के भेद की हो रही थी। आप फिलहाल यह भी सोच सकते हैं यह भी वैसी ही कोई राजनयिक पदावली है कि जैसे कि 'अमरीका की पीपुल्स कैपिटलिज़्म और रूस चीन की पीपुल्स डेमोक्रेसी।' डेमोक्रेसी की परिभाषा लिंकन ने पीपुल (जन) के साथ सम्बद्ध करके ही दी थी। परन्तु पीपुल माने जन और 'जन' रूसी राज्यशास्त्र में होता है सर्वहारा और सर्वहारा का अर्थ होता है एक रहस्यमय ढंग से कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य, सो पीपुल्स डेमोक्रेसी (जनवादी प्रजातन्त्र) का असली अर्थ है, पार्टी-प्रजातन्त्र और यह पार्टी प्रजातन्त्र भी 'पोलित ब्यूरो' प्रजातन्त्र में कैसे बदल जाता है इसको जानने के लिए आपको या तो रूस जाना पड़ेगा या फिर अमरीका। अमरीका को हमारे गाँव के लोग पाताल लोक भी कहते हैं और इस प्रकार जो हमारे यहाँ मूल है, वह वहाँ पर ऊर्ध्व है। वेदान्त ऊर्ध्व मूल अश्वत्थ की विवेचना पहले ही कर चुका है और गीता का भी कहना है—

या निशा सर्वभूतानां
तस्यां जाग्रति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि
सा निशा पश्यतो मुनेः।

यानी कि ज्ञान के क्षेत्र में सारे अर्थ उलट जाते हैं। एक चीनी कथा भी है कि बुद्धि के विकसित होने पर ज्ञान की किंचित उपलब्धि के बाद वस्तुओं के प्रकृत अर्थ बदल जाते हैं, 'वह पहाड़ के रूप में नहीं देखता, समुद्र और पृथ्वी, गृह और नक्षत्र सब उसके निकट बदल जाते हैं (आगे इस कथा में कहा गया है परन्तु जब ज्ञान की पूर्णावस्था होती है तो फिर से प्रकृत अर्थ लौट आते हैं और पहाड़, समुद्र, नक्षत्र आदि अपने नॉर्मल अर्थों में सामने आ जाते हैं)। सो ज्ञानी अमरीका में भी सब कुछ प्रतीक है। वहाँ पीपुल-जन के मानी हैं जो जन को अपने साथ दौड़ा सके, यानी कि अखबार का मालिक है, प्रचार और विज्ञापन के अधुनातन उपकरणों से इस जन पर आक्रमण करने के लिए लैस है। इतना धनी है कि कांग्रेस और सीनेट को अपने जरखरीदों से भर सके और साम्यवाद को तथा तटस्थ व्यक्ति को भरपेट ही नहीं चौड़े मुँह गालियाँ दे सके; यह है पीपुल्स कैपिटलिज़्म। इस कैपिटलिज़्म (पूँजीवाद)

में प्रधान चीज है कैपिटल यानी पूँजी, पीपुल नहीं क्योंकि वह और उसकी मनुष्यता तो कौड़ियों के मोल खरीदी जा सकती है।

आपको यह सारी चीजें असंगतियाँ प्रतीत होती हैं। पर असंगति तो मौलिकता का मूल लक्षण है। यदि ये एकेडेमिक (अकादमीय?) शब्द होते तो इनका अर्थ भी निश्चित होता। मेरे लिखे तो एकेडेमिक दृष्टिकोण और मौलिकता परस्पर विरोधी बात है। जीवन के अन्य सारे क्षेत्रों में मौलिकता सम्भव है पर अकादमियों एवं 'इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीज' में? शान्त भी रहिए। आप सहमत हों न हों पर रसवाद को सर्वश्रेष्ठ, सार्वभौम और सार्वकालिक घोषित करना होगा तथा प्रेमचन्द के कथा-साहित्य अथवा अज्ञेय (पर नहीं अज्ञेय या बच्चन कोर्स में रखने लायक हैं ही कहाँ, हिन्दी कविता तो विपथगा हो चुकी है। प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी ने आखिरी लुटिया डुबो दी है) की कविताओं को विभाव, अनुभाव और संचारी भाव में बाँटना होगा। यदि इन खानों में ये नहीं अँट पाते तो निर्विवाद भाव से उन्हें निकृष्ट घोषित कर दें। पर खबरदार आलोचना के इस शाश्वत (?) मानदण्ड पर उँगली उठाई। विश्वविद्यालयों, कॉलेजों के धुरन्धरों के पास चले जाइए और भक्तिकाल, रीतिकाल की उन्मुक्त प्रशंसा सुनिए। और आधुनिक साहित्य की पतनोन्मुख अवस्था पर हम एक उपदेश भी (यह दूसरी बात है कि पिछले 10 वर्ष में उन्होंने किसी पत्रिका का एक अंक भी न देखा हो) ग्रहण करें। इन लोगों के इसी मत के अनुसार पुस्तकालयों में केवल आलोचना की पुस्तक खरीदनी चाहिए और इस प्रकार इन अध्यापकों-विद्यार्थियों के माध्यम से साहित्य को रचना चाहिए।

इस सारी लिखा-पढ़ी के बाद भी यदि आप मतभेद और झगड़े का भेद न समझ पाये हों तो इसमें मुझसे आपका केवल मतभेद हो सकता है, अनुरोध है कि झगड़ा न कीजिएगा।

धर्मयुग : 3 मार्च, 1957

इण्टरव्यू

इण्टरव्यू शब्द ही बड़ा मजेदार है। यों इण्टरव्यू आपका होता है यानी कि या तो आप इतने बड़े हैं कि कोई विभिन्न समस्याओं (अगर समस्या भी न हो तो कुछ समस्या स्वयं उत्पादित कर) पर आपका मत जानने के लिए इण्टरव्यू देने की आपसे प्रार्थना करता है; अथवा आप इतने आत्म-प्रशंसक, गरजमन्द हैं कि दूसरों से अपना इण्टरव्यू लेने की प्रार्थना करते हैं। 'आपन मुख आपनि करनी, भाँति अनेक बार बहु बरनी' वाली बात चरितार्थ करते हैं तथा नौकरी माँगते हैं।

भाइयो, मैं इतना बड़ा आदमी नहीं कि कोई मुझसे इण्टरव्यू देने की प्रार्थना करे। मेरा स्थान दूसरी श्रेणी में आता है। सच कहता हूँ मुझे तो इण्टरव्यू का बुलावा मिलते ही इतनी प्रसन्नता, सिहरन और उत्सुक्ता ज्ञात होती है जितनी कि सुहागरात के दिन किसी को अपनी नयी-नयी बीवी से मिलने जाते समय होती होगी (यह उपमा बुजुर्गों के कथन के आधार पर है)। इण्टरव्यू का एक और सुख है जो विवाह से बिल्कुल मिलता-जुलता है, वह है वेशभूषा सम्बन्धी! कुछ नये कपड़े पिताजी से कहकर इसी बहाने बन जाते हैं; आप विश्वास करें खुशहाल शौकीन दोस्तों के शृंगार प्रसाधन—क्रीम, स्नो, पाउडर तथा सुगन्धित केशरंजन इण्टरव्यू के लिए मिल जाते हैं जो कि फिर कभी वापस नहीं होते।

फिर सबसे बड़ी बात यह कि जीने का सहारा भी तो इस जटिल जिन्दगी में चाहिए। नया सूट कटवाने से लेकर सुन्दर सी बीवी लाने के सपने दिन-रात आने लगते हैं (सोते में कम, जगते में अधिक)। दोस्तों को डिनर, लंच तथा सिनेमा के अग्रिम वादे मिल जाते हैं और वे बेवकूफ डिनर आदि की उम्मीद में मुझे उस दिन क्रीम-कॉफी पिला देते हैं। इण्टरव्यू से महानतम लाभ यह कि पिताजी घर से निकालते नहीं। जैसे ही मामला क्लाइमैक्स पर पहुँचने को हुआ, वैसे ही कोई न कोई इण्टरव्यू मेरी अप्लाई किये रहने की बुद्धिमानी के कारण आ टपकता है और मेरा दैनिक कार्यक्रम यथावत चालू रहता है; यानी कि सवेरे देर तक सोना, शाम को देर तक हजरतगंज में घूमना और दिन में अखबारों की कटिंग काट कर टाइप कराने की व्यवस्था करना, गरज यह कि बेकार होते हुए भी बेकार न मालूम पड़ना।

कभी न कभी आपको भी इण्टरव्यू के लिए जाना ही पड़ेगा। अतः आप लोगों को कुछ गुरुमन्त्र बता दूँ ताकि वक्त जरूरत 'आश्चर्य मल्हम' की तरह काम आये। दुनिया-देखे लोगों का कहना है कि 'विद्या साथ होनी चाहिए', 'जिसम मौका महल' 'देखकर काम निकाला जा सके।

पहली बात तो यह कि प्रार्थना-पत्र भेजने के बाद पहला कर्तव्य इण्टरव्यू-पत्र मँगाने की व्यवस्था करना होता है। तात्पर्य यह कि सम्बन्धित क्लर्क या सुपरिटेण्डेण्ट को कभी-कभी कैप्स्टन सिगरेट पिला दें, दो बीड़े मगही पान थमा दें, आते-जाते दोनों हाथ जोड़ खीस निपोर और मस्तक को किंचित टेढ़ा झुका कर अकसर नमस्ते किया करें। सौभाग्य से यदि कॉफी हाउस के निकट मिल जायें तो पोटैटो वेफर्स की प्लेट के साथ बनी-बनाई कॉफी का एक प्याला देने से न चूकें।

इसके पश्चात आपके पिताजी, चाचाजी या बछिया के ताऊजी (यानी आप बछिया के समान घिघियाने वाले हुए) जरा अच्छे से कपड़े बनवा ही देंगे। कपड़ों में भी बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। जरा मौकामहल का ध्यान यहाँ रखना आवश्यक है। उदाहरणार्थ आप रेडियो में नौकरी के लिए जा रहे हैं तो जरा क्लीनशेव हों, पाउडर का प्रयोग कर शार्कस्किन का सूट पहनकर जायें और यदि सूचना या पंचायत या समाज कल्याण विभाग को सुशोभित करना चाहते हों तो खद्दर का कुरता-पायजामा और सदरी यथेष्ट है। नियोजन विभाग के ग्रामीण हिस्से में खाकी हाफपैण्ट और गबरून की कमीज अच्छा प्रभाव डालती है। लखनऊ यूनिवर्सिटी के लिए सूट के साथ टाई आवश्यक है और इलाहाबाद के लिए बो। आगरा विश्वविद्यालय में भिन्न-भिन्न रंगों के कोट-पैण्ट अथवा मात्र पैण्ट-कमीज से काम चल जाता है। हिदू विश्वविद्यालय के लिए दुलंगी खद्दर की धोती और कुरता अच्छी पोशाक मानी गयी है यों वहाँ की जातीय पोशाक अँगोछा है। अलीगढ़ के लिए पालीगढ़ी पायजामा प्रसिद्ध हो ही गया है, उसके ऊपर अचकन हो तो सोने में सुहागा वरना चिकन के काम का कलीदार कुरता भी अच्छा रहता है। इसके भी ऊपर बिना क्रीज के ऊँची गाँधी टोपी (मिल के कपड़े की) बड़ा प्रकाश फेंकती है।

कपड़े बन गये, जूते आपके कुछ नये-पुराने पड़े ही होंगे जरा उनको भी सहेज लें। पर बिना होल्डाल और अटैची के ठाठ अधूरे हैं। इनके बिना आपके हमपेशा लोगों पर प्रभाव नहीं पड़ता। ओह, ठीक, जरा याद कीजिए कि गनपत का होल्डाल फटा है, महेन्द्र की अटैची तो काफी खूबसूरत है और क्या मौके पर याद आया कि गोपी के पास नया होल्डाल है। फिर क्या, जरा चलो तेजी से दोनों चीजें स्वयं लाओ, वापस लेने वस्तु का स्वामी स्वयं आवेगा; सिद्धान्त यही है।

तीसरे यह पता लगाइए कि जहाँ आप जा रहे हैं क्या वहाँ कोई आपके परिचितों और जानकारों का परिचित और जानकार तो नहीं रहता, जिसके यहाँ आराम से दो-एक दिन ठहरा भी जा सके और दुखिया पेट को भी कुछ...।

चौथी बात यह कि यदि आप सौभाग्य या दुर्भाग्यवश साहित्यकार हैं, तो एक बोझ और उठाइए—अपनी रचनाओं की फाइल का। इस फाइल में आपके कस्बे से निकलने वाले 'विश्व सन्देश' से लेकर अनुसन्धान पत्रिकाओं तक में छपी आपकी रचनाएँ नत्थी रहनी चाहिए। यदि इतने पर भी बोझ काफी न होता हो, फाइल पतली हो रही जा रही हो तो कश्यप, व्योमकेतु, उरोज, श्याम, गुंजार, शेफाली वर्मा और अकलंक शर्मा आदि अनेक छद्मनामों और तखल्लसों से लिखी रचनाओं को भी अपनी कहकर फाइल में लगा सकते हैं। एक फाइल चाहें तो अप्रकाशित रचनाओं की भी ले लें (इसमें हाई स्कूल से एम.ए. तक लिए गये 'नोट्स' बीच-बीच में लगाकर मोटा करें और यह बतावें कि यह आपका रिसर्च का कार्य है) और इण्टरव्यू के समय धीरे से यह भी बता दें कि आप लक्ष्मण पर एक ऐतिहासिक उपन्यास, कालिदास पर एक सांस्कृतिक नाटक अथवा एक महाकाव्य लिख रहे हैं, जिसमें विश्व की प्रमुख नैतिक और सामाजिक समस्याओं यथा युद्ध और शान्ति या होमोसेक्सुअल प्रश्नों का नया हल प्रस्तुत किया जायेगा।

अब अन्तिम और सबसे महत्त्वपूर्ण बात आपको बतानी है, वह है जिसके लिए कबीरदास 500 वर्ष पूर्व ही प्रतीकात्मक भाषा में कह गये थे—

कासी काठें घर करै, पीवे निर्मल नीर।
मुकुति नहीं हरिनांव बिनु, यों कहे दास कबीर॥

मैं जानता हूँ कि आप पाठकों में से कइयों की भौंहों में बल पड़ गये हैं। आप जानना चाहते हैं कि इसका क्या अर्थ? तो संक्षेप में बात यह कि कबीर का कहना है कि चाहे जैसी योग्यता हो, चाहे जैसे ठाठ हों और चाहे जैसी शकल हो, बिनु सिफारिश मुक्ति नहीं होनी। सो प्यारे भाइयो! जरा पहले यह पता लगाइए कि इण्टरव्यू लेने वालों पर किसका 'पडवा' जोरदार बैठता है। बस उसी के खालिस 'डालडा' के एक टीन की मालिश कर दीजिएए आपका काम फतह। एक बात का ध्यान आप भी रखें कि असली मक्खन की तलाश में घूमे कि मामला बण्टाढार हुआ।

यह तो हुआ सिद्धान्त पक्ष यानी 'थ्योरी'! कुछ व्यावहारिक जगत में हुए करिश्मे भी जान लें तो आपको मौके पर काम देंगे। मेरा अनुमान है कि इतना तो आप सब जानते ही हैं कि इण्टरव्यू लेने के लिए एक समिति या बोर्ड का गठन किया जाता है; इसमें मैंने एक से लेकर 15 आदमी तक बैठते देखे हैं। आपको पहले ही यह चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि इन सदस्यों के बारे में जरा होशियार रहें, क्योंकि इनमें एक से एक 'लतहे' जानवर आ सकते हैं। जैसे कि मान लीजिए, कोई 'सेठ एण्ड कम्पनी' आपका इण्टरव्यू अपने कॉलेज की नियुक्ति के लिए ले रही है, आप विश्वास रखें कि कोई भी मोटी तोंद पर हाथ फेर जरा गला साफ करके यह पूछ सकता है, 'क्यूँ जी, आपने पीएच.डी. पास की सो तो की, एम.ए. भी करी या ना करी।' आप जरा सँभल कर उत्तर दें, क्योंकि अगले ही क्षण यह प्रश्न हो सकता है

कि 'एम.ए. में आपके कितने विषय थे?' यदि आप बुद्धिमान हैं तो तत्काल अपने सातों या आठों पर्चों के नाम गिना सकते हैं।

सुनते हैं इण्टरव्यू लेने वालों में ऐसे भी अद्‌भुत जीनियस होते हैं जो यह पूछ बैठते हैं कि इस कमरे की लम्बाई 16 फीट और चौड़ाई 12 फीट, मेरी उम्र बताइए। आप स्वयं सोच सकते हैं कि कमरे के आकार से उम्र का क्या सम्बन्ध? परन्तु उत्तर देने वाले भी कम नहीं होते! सुना है कि ऐसे प्रश्न का उत्तर दिया गया 56 साल। स्पष्ट करते हुए उन्हीं ने बताया कि मेरे एक चचेरे भाई की वय 28 साल है और वे आधे पागल हैं, इसलिए आपकी उम्र निश्चित रूप से दुगुनी होनी चाहिए।

तो बन्धुओ! इण्टरव्यू के किस्से कहाँ तक सुनाऊँ, वे तो अनन्त हैं और उनकी कथा भी अनन्त है। आपको नाना भाँति के अनुभव और उपदेश उनमें मिलेंगे। परन्तु सबसे बड़ा अनुभव तो अस्वीकृत होकर लौटने में है। उस समय शंकर का सारा मायावाद जिसको बड़े-बड़े पण्डित घोखते-घोखते मर जाते हैं, एक क्षण में समझ में आ जाता है। बल्कि यों कहें कि कौंध जाता है। मन सांसारिक मोहमाया को त्याग कर राम की बहुरिया बनने को उत्सुक हो उठता है।

एक बात और जरा अपने इण्टरव्यू के अनुभवों और मेरे परामर्श के परिणामों को अवश्य लिख कर मेरे पास भेज दें (बैरंग नहीं)।

धर्मयुग : 25 मार्च, 1957

चौराहा दर्शन

जब कभी अपने घर के इस तिकोने बारजे पर आकर खड़ा होता हूँ तो मेरा मन केवल इस नीचे सामने वाले चौराहे को देखते रहने का हुआ करता है। पता नहीं कैसे विचार, कितने दृश्य मेरे सामने से आते-जाते रहते हैं। ये जो हजारों व्यक्ति पास से गुजर जाते हैं, इनके मन में क्या है? मैं जानना चाहता हूँ, इनके पीछे कौन-सा इतिहास है जो इनकी आँखों में झाँका करता है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ हैं जो इन्हें इधर-उधर दौड़ा रही हैं। प्रभु, मुझे संजय बना दो, यह जो महाभारत इनके घरों में, पेटों में, दिलों और दिमागों में छिड़ा हुआ है इसे मैं जान लूँ, देख लूँ। लिखने-पढ़ने का व्यवसाय करता हूँ और बकौल मुंशी प्रेमचन्द लेखक को अपनी आँखें खुली रखनी चाहिए। पर मुंशी जी, आँखें खुली रखने से ही तो सब कुछ नहीं हो जाता। आँखों के पीछे देखने वाली नजर भी तो आवश्यक है, पर जो कुछ जरूरी है वह सब क्या यहाँ मिल जाता है?

यह जो चिन्तामग्न चेहरा लिए युवक चला जा रहा है, क्या इसकी चिन्ता एक है, जो मैं अनुमान कर लूँ। इसे नौकरी नहीं मिल रही है, सूट सिलाने को बाप ने पैसे नहीं दिये, प्रेमिका को सिनेमा दिखाने और क्वालिटी में चाय पिलाने लायक जेब नहीं है। यह सब तो अर्थ के विविध रूप हैं, और इसी आधार पर आप मार्क्स को सही मान सकते हैं। पर मैं और देख रहा हूँ। इस युवक की चिन्ताएँ इतनी ही नहीं हैं। यह आज कॉलेज के इलेक्शन में हार गया है, आज इसके छोटे भाई ने इसका कहना नहीं माना है, इसकी तथाकथित प्रेयसी ने इसे प्रेम का प्रतिदान नहीं दिया है, उसका कहना है कि वह किसी दूसरे से प्रेम करती है।

पर जाने भी दीजिए, ये तो सब युवकों के चोंचले हैं। वह किशोर भी देख ले जिसका गेंद नाली में गिर गया है। उसकी माँ आज उसे बिना बताए किसी पड़ोसी के घर गप्पें लड़ाने चली गयी है और वह भूखा है। या फिर सामने की दुकान की लाल इमरतियों की ओर सतृष्ण भाव से ताकने वाली उस लड़की को ही आप निहार लें, लालसा मूर्तिमती हो उठी है, पर करे क्या। बप्पा ने उसे आज एक अधन्ना मुश्किल से दिया है, उसकी मूँगफली तो मिल सकती है, पर इमरती...! जाने भी दो,

संसार मिथ्या है, इमरती मिथ्या है, इनका मोह उचित नहीं है,—कुछ ऐसी ही शनि दृष्टि से मुँह बिचका कर चलते-चलते एक नजर से इमरती के थाल की ओर देखकर वह आगे बढ़ गयी। मुझे हिन्दी की एक कहावत याद हो आती है—

नारि मुई घर सम्पति नासी, मूड़ मुड़ाय भए संन्यासी।

अर्थ मुझसे न पूछिए, मैं तो केवल वैराग्य की बात कह रहा हूँ। मेरे एक दोस्त हैं वे सुन्दर वस्तुओं का भावन करते हैं, उन्हें ताकते नहीं। मेरे एक दिन बहुत पूछने पर उन्होंने बताया कि 'भाई संस्कार गहरे हैं, हिम्मत नहीं पड़ती बगल से गुजरती हुई सुन्दरी को देखने की, पर मन में चाव तो होता ही है। दृष्टि को निराशापूर्ण बनाना होता है।' मुझको एक सुविधा है, चौराहे के ऊपर खड़े होकर मैं सभी को ताक सकता हूँ।

अभी-अभी दो रिक्शे चौराहे पर से निकले। एक नया रंगीन था, दूसरा कुछ टूटा सा। पहले पर एक तुंदिल सेठ जी और दूसरे पर एक हल्का-फुल्का रंगीन नौजवान। पहले का चालक अधिक स्वस्थ था पर पीछे वाला टुटियल रिक्शा आगे निकल गया। मैं सोचने लगा, बोझ भी कितनी महत्त्वपूर्ण बात है। हजार रंगीनी हो, लाख उमंग हो, पंखों में उड़ने की ताकत भी हो परन्तु बोझ रख दीजिए कि सब गायब। पुराने तौर-तरीके के माँ-बाप इसीलिए बोझ रख देते थे कि लड़का उड़कर जाने न पावे, उनके सर पर शादी का भार लाद दो। एक सहपाठी थे मेरे, मेरी उनकी कक्षा में प्रतिद्वन्द्विता थी—प्रेम की नहीं, परीक्षा के अंकों की—और उसमें बहुधा वे जीत जाया करते थे। मैं उस स्कूल के दरजों को पास कर कॉलेज चला आया और उनका पिण्ड छूट गया। पाँच-छह साल बाद मिले तो मालूम हुआ कि डाकखाने में क्लर्क हैं। बताया कि इण्टर से फिर पढ़ना छोड़ दिया क्योंकि घर में बीवी ही नहीं उसका प्राकृतिक परिणाम एक बच्चा भी आ चुका था, उनका भरण-पोषण करना था। मैं एक डिग्री कॉलेज में पढ़ा रहा हूँ तथा अभी भी उमंगें लहरें लेती हैं।

रिक्शे के बोझ की ही एक घटना और याद हो आयी जो मेरी एक मित्र ने सुनाई थी। एक दिन वे एक रिक्शे से आ रही थीं। रिक्शे वाला भी कुछ रंगीन तबियत का रहा होगा। उसने रिक्शा तेजी से आगे बढ़ाया (युवती जब दिलों की धड़कन को तेज कर देती है तो बेचारे रिक्शे वाले के पैरों का क्या दोष?) और बगल से निकलते हुए तीन-चार छात्रों की साइकिलों को पार कर गया। युवक छात्रों की भी धड़कन तेज हुई, एक ने दूसरों को ललकारा क्या बुड्ढों की तरह चल रहे हो। रिक्शा वाला एक सवारी बैठा कर भी हमसे आगे निकल गया; दूसरा कुछ हाजिर जवाब था, उसने कहा कि एक तो अगर ऐसी ही सवारी हमारी साइकिल पर होती तो इतना ही तेज मैं चलाता और फिर 'मैडम इज़ ओनली फेदरवेट' (मेरी मित्र शरीर से क्षीणकाय और दुर्बल हैं)।

मेरा यह चौराहा भी कुछ अजीब है। यह पहली बात तो छराहा है, यानी कि

यहाँ से छह रास्ते गये हैं या छह रास्ते यहाँ से निकलते हैं। उद्गम और मुहाना दोनों यहीं माने जा सकते हैं। इस कथन से आप बहुत से दार्शनिक तथ्य निकाल सकते हैं पर मैं तो फिलहाल ऐसे ही छोड़े दे रहा हूँ, फिर कभी दर्शन-चर्चा करूँगा। हाँ तो इस चौराहे के एक नुक्कड़ पर सोने-चाँदी की दुकान है और उसके ठीक सामने हलवाई बैठता है। हलवाई की दुकान के नीचे ही नीम की दातून की छड़ें बेचती हुई एक बुढ़िया। क्या तुक मिला है दाँत साफ कीजिए तब मिठाई खाइए। चौराहे के विविध कोनों में अनेक रूप रूपाय वाले यशःकार्यों को आप देख सकते हैं। यह बोधराज है, इसका कहना है कि जूते में उसकी जैसी पालिश सारे हिन्दुस्तान में कोई नहीं कर सकता। दूसरे सज्जन मण्डी का चुना हुआ फल बेचते हैं और तीसरे सज्जन अखबारों की दुकान लगाते हैं जिनके यहाँ खरीदने वाले कम और पढ़ने वाले अधिक होते हैं। यहाँ पाठक भी अनेक प्रकार के हैं। एक सज्जन एक अखबार खरीदते हैं पर खरीदने के पहले तीन-चार अखबार 'देख' लेते हैं और यह देखना पन्द्रह मिनट का होता है जिसमें से पाँच मिनट वे 'वांटेड' का कालम देखते हैं। दूसरे यह कहते हुए आते हैं कि मेरी 'न्यूज' आयी हो तो खरीद लूँ और फिर वे न्यूज देखने में पूरी न्यूज देख कर अत्यधिक निराशापूर्वक (?) सर हिलाते हुए रख देते हैं। एक और पाठक हैं जो पत्रिका तभी खरीदेंगे जब उनके मित्रों की कोई चीज उसमें हो और यदि मित्रों की चीज हुई तो फिर खरीदना बेकार है क्योंकि वह तो उन्हें उनसे पढ़ने को मिल ही जायेगी। पर एक सज्जन अत्यधिक 'कांशस' हैं। वे दो गज की दूरी पर खड़े होकर अन्य अखबार पढ़ने वालों के साथ अखबार पढ़ा करते हैं अपने हाथ से छूते ही नहीं हैं।

आज इतनी चर्चा इस चौराहे की, आगे फिर आपको इसके निहितार्थों से परिचित कराऊँगा। फिलहाल तो कापियाँ जाँचनी हैं, कॉलेज में छात्र जान खाए हैं।

कलजुग : फरवरी, 1957

दिल्ली-दंगल

प्रिय भाई,

आप भी बड़े दंगली जीव हैं, मैं भाग रहा हूँ और आप हैं कि ललकारे जा रहे हैं—अरे, लड़ने के लिए नहीं तो लिखने के ही लिए। लिखना भी किसके बारे में—दिल्ली के दंगल की बाबत। लिखने के पहले जरा खोपड़ी के बाल सहला लेने होते हैं, पता नहीं मेरे अराल केश रहेंगे भी या नहीं? भाईजान, दिल्ली अपने आपमें लिखने का विषय है फिर उसके दंगल के पीछे ही आप क्यों पड़े हैं? देखिए, हमारे उपराष्ट्रकवि ने तो दिल्ली के बारे में नीम के पत्ते चबाते हुए (या एम्प्रेसो कॉफी पीते हुए) अनेक कविताएँ लिख डाली हैं और उनका चलाया हुआ विशेषण 'रेशमीनगर' वैसे ही चल गया है जैसे सरकारी टकसाल का नया पैसा। अब आप ही बताइए कि रेशमी नगर की सरसराहटों में जो दंगल होगा उसे देखने के लिए मामूली सामर्थ्य की जरूरत पड़ेगी? पर मैंने पहले ही कहा कि आप दंगली जीव हैं—दंगलशास्त्र में इनके दो प्रकार बताए गये हैं : प्रथम तो वे जो स्वयं लँगोटा बाँध कर भुजदण्ड ठोंकते हुए मैदान में ललकारते हैं और दूसरे वे जो लड़ने वालों को और ललकारते हैं कि लड़ जा बेटा; पर आप एक तीसरे किस्म के हैं जो शास्त्रों में नहीं मिलते : यानी कि आप ललकारते हैं दर्शकों को। उन्हें देखने के लिए ही नहीं ललकारते, देख कर बयान देने के लिए भी विवश करते हैं।

माना कि आप सम्पादक हैं और इस नाते आपका पुनीत दायित्व है कि लोगों से जबरदस्ती लिखवाएँ। पुराने जमाने में मार-मार कर हकीम बनाया जाता था और अब चिट्ठी पर चिट्ठी लिख कर लेखक। युग-परिवर्तन का यह ज्वलन्त उदाहरण पता नहीं 'परिवर्तन' लेखक पन्त जी (सुमित्रानन्दन) के दिमाग में क्यों नहीं आया? अस्तु, कठिनाई मेरे सामने सबसे बड़ी यह है कि इस माया नगरी में कोई एक दंगल होता हो तो उसकी रिपोर्टिंग की जाये? यहाँ तो ना जाने केहि वेष में नवदंगल मिलि जाय। अब मैं रहता हूँ दिल्ली नगर की उत्तरी सीमा में, वहाँ से दक्षिणी सीमा तक पहुँचने में जो 20-22 मील का पैराव पैरना (तैराव तैरना) पड़ता है वह अपने आप में अमरीकन फ्रीस्टाइल दंगल है। दिल्ली की बसों का इन्तजार मैं उसी प्रकार करता

हूँ जैसे कोई अपनी प्रिया का करें और बसें इस तरह मटकती, उछलती, गजगामिनी बनी चली जाती हैं जैसे कि आपकी वांछिता कोई लिफ्ट ही न दे। लिफ्ट मिल भी जाये दो घण्टे की मंजिल पार कर पहुँचने के बाद तो दंगल में दिलचस्पी कम हो जाये तो अस्वाभाविक न कहा जायेगा। पर चूँकि आपका आग्रह था इसलिए चाय, कॉफी, कोको कोला पीते हुए मैंने साहस को बनाये रखा।

अब दंगल वर्णन लिख्यते : दिल्ली राजधानी है और सबसे बड़े दंगल राजनीति के स्तर पर होते रहते हैं। अब आप जानते ही हैं कि फरवरी से लेकर अब तक चुनाव, मन्त्रिमण्डल आदि के जोड़े अखाड़े में छूटते रहे हैं। इन दंगलों में जो पट्ठे उतरते हैं वे भी व्यक्ति नहीं होते उनके पीछे राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के दांवपेंच होते हैं, व्यापक आर्थिक नीतियों के निर्धारण का प्रश्न रहता है। देखिए, आप तो बम्बई के निवासी हैं और इस अखाड़े के दो उस्तादों की भिड़न्त वहीं पर हुई थी। और फिर जब उस्ताद मेनन पहलवान जीत गये तो राजधानी में महीनों अटकलबाजी चलती रही—कॉफी हाउस इस अफवाह से भरे रहे कि अब मुरारजी भाई का होल्डाल पैक होने वाला है और तथाकथित दक्षिणपन्थियों को हटा दिया जायेगा। टी.टी.के. साहब के वक्तव्य इस तरह से आने लगे गोया कि वे फाइनेंस मिनिस्टर हों। पर यह जो नेहरू नाम का रेफरी है, इसने अपना करिश्मा दिखाया—सब कुछ ज्यों-का-त्यों रहा। पूँजीपतियों को इस स्टेटस से चैन मिली और दिल्ली के पूँजीपति अखबारों ने नेहरू की प्रशंसा में, कैबिनेट-निर्माण क्षमता की दाद में कालम पर कालम रंगे। पर अभी भी मामला निबटा कहाँ है, टी.टी.के. साहब को कैसे समेटा जाये? उस व्यक्ति की पार्लियामेण्ट में उपस्थिति ही भाई मोरारजी के लिए सिरदर्द है और अगर वह महाशय कैबिनेट में भी कूद आये तो क्या सचमुच ही कांग्रेस का वामपक्षीय दल अधिक शक्तिशाली न हो जायेगा। अब तक का इतिहास यह रहा है कि नेहरू (वामपक्षीय) सरकार के प्रधान रहे पर वास्तविक शक्ति दक्षिणपन्थियों या यथास्थिति बनाये रखने वालों के हाथ रही है। पर अब शतरंज के मोहरे स्थिति बदल रहे हैं। घोड़ा ढाई घर की मार करने लगा है (घोड़ा अधिक प्रगतिशील होता है न)—नेहरू चाचा हैं ही, स्वराष्ट्र मन्त्रालय उनके विश्वस्त शास्त्री जी सँभाले हैं, सुरक्षा मेनन पहलवान के पास है अब अगर इसी टीम में टी.टी.के. महोदय भी आ गये तो भाई जी कहाँ तक वाक आउट करेंगे? पर नहेरू जी हैं कि आँसू पोंछते ही रहते हैं, पाटिल थे ही, साथ में उनके ही दर्शनानुगामी रामसुभग सिंह को लगा दिया गया है। खेती कराओ, अन्न उपजाओ और चीन के बवण्डर को मत उकसाओ। इस दंगल के इस नियम से आपको परिचित हो जाना चाहिए कि जो बहुत शोर मचाता है उसके मुँह में लगाम देना होता है और लगाम है सरकार में कोई पद। पड़े-पड़े खेत गोड़िए, बाकी दिल्ली में पूछता कौन किसे है?

इस दंगल के और भी दाँवपेंच हैं, अब आपको कहाँ तक गिनाऊँ पर अगर

दिल्ली के अखबारों की नाड़ी पर हाथ रखे रहें तो बहुत कुछ यों ही समझ में आ जाता है। इनमें गायत्री देवी को पार्लियामेण्ट की हीरोइन बनाया जायेगा, सुरक्षा विभाग के विरुद्ध तनिक-सी रिपोर्ट मिलते ही सम्पादकीय टिप्पणी जड़ी जायेगी। बजट के प्रस्ताव समाजवादी व्यवस्था के हैं या नहीं इसके लिए इनकी प्रतिक्रिया मैं पढ़ लेता हूँ, आँकड़ों के गोरखधन्धे में कौन फँसे? जिस दिन मैंने पढ़ा कि बजट 'रियलिस्टिक' है उसी दिन समझ गया कि पूँजीपतियों के लाभ के लिए गुंजाइश काफी होगी। भाई, अब थक गया हूँ। अभी दो घण्टे बस में यात्रा करने के बाद अपने घर पहुँच पाऊँगा। दिल्ली में एक बड़ा दंगल आजकल 'हिन्दी' को लेकर भी हो रहा है—अगर सकुशल रहा तो अगली किस्त में उसके हालचाल लिखूँगा।

आप अच्छे होंगे। जरा बदन पर मालिश कराते रहें, पता नहीं किस दिन किस दंगल में घसीट लिए जायें।

रंग : जून, 1962

लेखक का परिचय-आलेखन स्वयं यानी बकलमखुद

(एक वयोवृद्ध कवि को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जाना है। आयोजकों की योजना है कि उक्त ग्रन्थ में नगर के प्रत्येक प्रमुख साहित्यकार का चित्र एवं परिचय रहे। प्रस्तुत लेखक के पास चित्र और परिचय भेजने का परिपत्र आने पर उसने जो कुछ अपने बारे में लिखा, उसे ग्रन्थ सम्पादकों के पास भेजने के बजाय गलती से 'तुंग शृंग' के सम्पादक के नाम पोस्ट कर रहा है। —लेखक)

श्री.........अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादक जी,

आपने अपने सम्पादकत्व में श्रद्धेय......... जी के साथ ही जो हम लोगों का भी अभिनन्दन करने का निश्चय किया है, वह एकदम मौलिक सूझ तो है ही—हम लोगों के चित्त को अत्यधिक आलादित करने वाला प्रसंग भी है।

अब देखिए यदि आपकी आज्ञा हो (मेरी अत्यन्त तीव्र अभिलाषा है) तो मैं अपने 10-12 मुद्राओं के चित्र भेजना चाहता हूँ (कहिए तो ब्लाक बनवा कर भेज दूँ या फिर छापने के लिए फ़ी चित्र कुछ फीस दे दूँ)। इन चित्रों द्वारा मेरे जीवन के वे अनेक पहलू जनता के सामने आवेंगे जिनसे कि वह वैसे ही लाभान्वित होगी जैसे कि श्रमदान करते हुए मन्त्री के चित्र से। तथा मेरी ही भाँति अन्य पाठकगण चित्र खिंचवाने का आयोजन करके आत्मतुष्टि प्राप्त कर सकेंगे। एक बात और—चित्र के व्यवसाय में लगे हुए लाखों व्यक्तियों का रोजगार बरकरार ही नहीं, वर्द्धमान भी रहेगा (ठीक संख्या हमारे आँकड़ा विभाग के डिप्टी सेक्रेटरी बता सकेंगे)।

हाँ तो मैं विविध मुद्राओं के चित्र छपवाना चाहता हूँ। एक चित्र में मैं किताबों-कागजों के बीच फाउण्टेन पेन लिए नीचे सर गड़ाए बैठा हूँ। बगल में टेबुल लैम्प जल रहा है, पृष्ठभूमि में किताबों से भरा रैक और आलमारी है (आपको एक राज़ की बात बता दूँ, यह फोटो मैंने अपने एक धनी दोस्त के यहाँ खिंचवाया था; क्योंकि अपने यहाँ न तो मेज है, न कुर्सी। किताबें पिछली सात पुश्त से कोई आलमारी भर कर मेरे घर कभी नहीं रहीं, आगे कभी 'मित्रों की पुस्तक माँग कर वापस न की' करने की मेरी काया से हो जाये तब दूसरी बात है, परन्तु मार्क ट्वेन की तरह मुझे यह शिकायत तो तब भी बनी रहेगी कि दोस्त कम्बख़्त आलमारियाँ भी क्यों

नहीं देते?)। इसी के साथ दूसरा चित्र है, जिसमें मैं टेलीफोन कान से लगाये बैठा हूँ, सामने टाइप राइटर रखा है, कागज इधर-उधर बेतरतीब बिखरे हैं, तनिक मेरी व्यस्तता का अनुमान तो लगाइए। एक चित्र में चाय की मेज पर कुछ साहित्यकारों-पत्रकारों के बीच भी घुस बैठा हूँ, एक में मोटर चला रहा हूँ, और जनाब एक फोटो में तो मैं असली बरजिया घोड़े पर सवार हूँ, लगाम मेरे दाँतों के बीच दबी है (सुना था कि महारानी लक्ष्मीबाई इसी प्रकार लगाम पकड़े दोनों हाथों से तलवार चलाती थीं) और दोनों हाथों में राइफल लिए निशाना साधे हुए हूँ (पर सम्पादक जी क्या कहूँ उस मरे घोड़े को, ठीक से खड़ा ही नहीं होता था, सो दो आदमियों ने उसे दो तरफ से थाम भी रखा है)। बहरहाल मेरे इन चित्रों द्वारा आपको एवं 'पबलक' को यह ज्ञात हो जायेगा कि मैं कैसी प्रतिभा एवं रुचि वाला व्यक्ति हूँ।

प्रिय सम्पादक जी, अब सवाल उठता है परिचय का। सो हमारे अब्बाजान का नाम-धाम जानकर आप कीजिएगा क्या? कोई पुलिस में तो देना नहीं है। रहा मेरा नाम, सो आप यों भी जानते हैं और मैं हर फोटो के पीछे बड़े-बड़े हरूफों में लिखे भी दे रहा हूँ। पर ध्यान रखिएगा कि मैं शंकर में श के ऊपर बिन्दी रखता हूँ, आप ङन् में क लगाकर शङ्कर लिखने की शुद्धता न करें। तथा अगर अंग्रेजी में नाम छापना हो (दोनों भाषाएँ ही रखनी ठीक होंगी इस इंडिया दैट इज़ भारत में) तो Shanker में Ker के स्थान पर Kar न कर दें और अवस्थी में W के तथा अन्त में आई के स्थान पर आपके यहाँ V और Y न कम्पोज कर दिया जाये, इसका भी ध्यान रखिएगा। मेरे लिए यह बातें भाषाविज्ञान के अहम प्रश्न हैं, इसीलिए लिख रहा हूँ।

शिक्षा की बात तनिक सूक्ष्म-सी है। आखिर शिक्षित किसे कहा जाये और शिक्षा का मापदण्ड क्या है? हमारे तो आदि गुरु सुदामा ब्राह्मण हैं, उन्होंने अपनी सारी समस्याएँ समाधित कर दी हैं : 'शिक्षक हौं सिगरे जग को'। जन्म से ही जब मैं शिक्षक होकर पैदा हुआ हूँ तो फिर शिक्षा की बात उठाना सरासर बेवकूफी ही कही जायेगी। यों अपना एक रूप कवि ओंकार नाथ पाण्डेय के शब्दों में यों भी है–

तोता मैना आहिन ना
पढ़ै कहौ कैसे पढ़ी
खोपरी खपावै का,
रटबु जाय भारे मां।
खेती पाती कहौ काम
काजु काछी कुरमिन क्यार
बनिया न बाटू परै
को कवारे मां।
चारि मास आम खाब,
चारि अठूली चबाय

चारि मास बीति जइहें
ससुरारि के सहारे मां।
करित नाहीं ठठ्ठा,
हम घोटित सिलबट्टा
बातैं गढ़ित गट्ठा
ऐसी रहित बैसवारे मां।

भाई, इधर मैंने साहित्यिक कार्यों में एक अभिनव प्रयास किया है। साहित्य की मेरी व्याख्याएँ सर्वथा मौलिक हैं। उदाहरणार्थ, एक आर्थिक व्याख्या उपस्थित कर रहा हूँ। प्रसाद जी की ये पंक्तियाँ आपको याद ही होंगी—

शशि मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आये।

ये पंक्तियाँ उस समय लिखी गयी थीं जब सुँघनी साहू की मशहूर दुकान घाटे पर चलने लगी थी। पैसों की कमी थी इसलिए पाउडर खरीदकर नहीं आ पाया तथा चेहरे पर काली झुर्रियाँ भी पड़ने लगी थीं (चन्द्रमा में भी कालिमा होती ही है) जिनको कि पाउडर से ढका जा सकता था, पर अब घूँघट डाल लिया गया है (हाथों-पैरों के गोरेपन से लोग सुन्दर समझ लेंगे)। दीप दो कारणों से अंचल के भीतर छिपा हो सकता है—दोनों कारण आर्थिक ही हैं—उसमें स्नेह (चिकनाई) की कमी होगी और लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे या फिर इस डर से कि यदि कहीं बुझ गया तो बिना पैसे इसे जलाने की दियासलाई कहाँ से आवेगी?

मेरी शोध का विषय भी अनुसन्धान के क्षेत्र में सर्वथा अभिनव प्रयोग है। उपेक्षित विषयों की ओर अनुसन्धित्सु समाज का ध्यान खींचने का मेरा यह प्रयास ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त करेगा। विषय है, 'हिन्दी गालियों का ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक एवं भाषावैज्ञानिक विवेचन।' इस अध्ययन में गालियों का इतिहास, मूल स्रोत, व्यापकता के मानदण्ड, व्युत्पत्ति, ध्वनि-अर्थ सम्बन्धी-परिवर्तन आदि अनेक अध्याय होंगे, बीच-बीच में कुछ अनध्याय चर्चा भी रहेगी। (इसकी प्रेरणा मैंने डॉ. बरसाने लाल से चुरा ली है, वे नाराज होंगे तो क्या कर लेंगे?)

इधर आपने एक विचित्र प्रवृत्ति देखी होगी—किताबों के फ्लैप पर प्रकाशक की ओर से लेखक और रचना की एक स्तुतिमूलक टिप्पणी छपी रहती है जो अधिकांशतः लेखक के हाथ की लिखी होती है। कतिपय उदाहरण लें—

1. *हिन्दी के समसामयिक कवियों में नये अर्थबोध, काव्य-सौष्ठव और शब्दों की ध्वन्यात्मकता की दृष्टि से अज्ञेय का स्थान बहुत ऊँचा है। 'इन्द्र धनु रौंदे हुए ये' की विज्ञप्ति।*

2. *साफ-सुथरी खरी और गहरी आलोचनाओं के लिए नामवर सिंह पूर्व परिचित हैं (इतिहास और आलोचना की प्रकाशकीय विज्ञप्ति)।*
3 *......हासोन्मुख नैतिक मानदण्डों के बीच जिस उदीयमान मर्यादा की स्थापना की गयी है वह केवल लेखक की पैनी दृष्टि तथा अपने युग के व्यापक विक्षोभ और अन्तर्मन के सूक्ष्म ज्ञान का परिचय देती है (अन्धायुग की प्रकाशकीय स्तुति)।*

प्यारे भाई, अब पता नहीं अभिनव शोधों वाली अपनी अलिखित पुस्तकें कोई छापे, या न छापे; इसलिए तब तक आप ही प्रस्तावित अभिनन्दन ग्रन्थ में निम्न बातें छापने का कष्ट करें, मैं कृतकृत्य हो जाऊँगा।

श्री...हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय भाषाओं की नयी पीढ़ी के विवेकपूर्ण समीक्षकों में अग्रणी हैं। उन्होंने यद्यपि लिखा कुछ भी नहीं है, पर जो कुछ सोचा-विचारा है, उसमें इतनी धार है कि वह अभी किसी प्रचलित माध्यम या मापदण्ड पर पूरा अट नहीं पा रहा है। उनसे हमें भविष्य ही में नहीं, वर्तमान में भी बहुत आशा है। वे पढ़ते-लिखते चाहे कम हों, पर सोचते कलपते (यह कलपते शब्द उसी मूल 'क्लृप्' धातु से निकला मानिएगा जिससे 'कल्पना' बना है) ज्यादा हैं।

उनकी रचनाओं (कृति-साहित्य) में भावशबलता का गुण पूरी मात्रा में है। पर यह भावशबलता काव्यशास्त्र के ग्रन्थों में वर्णित शबलता से भिन्न है। यह दोनों पक्षों में एक-दूसरे की पूरक बनती है। तात्पर्य यह कि श्री.....की शृंगार रस की रचना में सहृदय समाज हास्य रस प्राप्त करता है और हास्य-व्यंग्य की कृतियों से वीभत्स और करुण की निष्पत्ति होती है। यहाँ भी यह ध्यान देने योग्य है कि केशवचन्द्र वर्मा के उस हास्य-व्यंग्य से यह नितान्त भिन्न श्रेणी की बात है, जिसके मूल में पं. इलाचन्द्र जोशी ने वेदना ढूँढ़ निकाली है।

- श्री.....ने कुछ सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर भी निबन्ध लिखे हैं जिनमें भारतवर्ष की आध्यात्मिक समस्याओं का निरूपण हुआ है (भारत-साधु-समाज और नन्दाजी के वे अत्यन्त काम के होंगे, उन्हें चाहिए कि लेखक से पत्र-व्यवहार करके प्रकाशित करवा दें)।
- वे कई पत्रों के भविष्य सम्पादक और आकाशवाणी के आगामी सफल वार्ताकार हैं।

मुझे अपने बारे में संक्षेप में तो केवल इतना ही कहना है। आशा है प्रकाशित करने में असुविधा न होगी। हाँ, यह तो बताइए कि मेरे साथ चाय पीने कब आ रहे हैं? आशा है, शरीर से पुष्ट और मन से कुण्ठाग्रस्त होंगे।

भवदीय,
आपका ही
स्नेही...

पुनश्चः सम्पादक जी! क्या बताऊँ इन नयी शैली वाक्यों के मारे अजहद परेशानी है। बातें ये सब ऐसे ढंग से लिख देते हैं कि मन को छू जाती हैं पर कमबख़्ती में यह जो शिक्षक की वैनिटी है, उनका महत्त्व भी स्वीकार नहीं करने देती। अब जनाब इनको लीजिए : और कुछ नहीं तो अपने शौक और व्यसन ही गिनाने लगे और किस अदा, किस मस्ती के साथ। कोई कॉफी पीने का शौकीन है तो कोई छायादार सड़कों पर घूमने का; किसी को एकान्त पसन्द है तो दूसरे को मोटर हाँकना अच्छा लगता है; एक जनाब विवाह न होने को खुशकिस्मती मानते हैं (पता नहीं अब भी मानते हैं या नहीं, तो दूसरे साहब बहादुर बेकारी को अपना पेशा समझते हैं। अब मेरे सामने समस्या यह है कि कौन से शौक कैसे गिनाऊँ कि पूरी लाइट पड़ जाये। बहरहाल सोच-समझ कर लिख रहा हूँ, आपको इनसे अच्छे सूझ जायें तो अपनी ओर से घटा-बढ़ा भी सकते हैं–

- दूसरे की नकल करना (लाभ बहुत से हैं, कभी लिखूँगा)।
- सुन्दर वस्तुएँ (जिनमें लड़कियाँ मुख्य हैं–जरा कान में कह रहा हूँ, अध्यापक की मर्यादा भी तो रखनी है न!) देखने का।
- दूसरा कोई पिलावे तो ठण्डे रम से लेकर ह्विस्की तक पीने का व्यसन है।
- गर्मी की धूप में सड़क पर घूमना और जाड़े की रात में नौका विहार करना मेरे विशिष्ट व्यसन हैं (गोकि इन्हें प्रयोग में कभी नहीं लाता)।

(जन्म संवत जानबूझकर भूला हूँ क्योंकि, असली उम्र जरा घटा कर रखना चाहता हूँ। वैसे यदि लिखना जरूरी हो तो आप सन् 32 से लेकर 35 तक रख सकते हैं, यह आपके ऊपर छोड़ता हूँ।)

लहर : अप्रैल, 1966

एकांकी
(1957-1965)

बोनस की बदौलत

सम्पत्ति की सीख

परामर्श लिमिटेड : एक अनाटक

बैरंग बारात

तिल का ताड़

मदारी की करामात

प्रेरक छन्दों की गूँज

बोनस की बदौलत

पहला दृश्य

(मिल मजदूरों की छुट्टी होने का शोर। पृष्ठभूमि में मिल, सामने सड़क का दृश्य। जिस पर से होकर कुछ लोग आ-जा रहे हैं। फुटपाथ से मिली हुई एक छोटी-सी चाय की दुकान है। दुकान टीन और लकड़ी के तख्तों से बनी है। भट्ठी पर एक बड़ी-सी अलमुनियम की केटली चढ़ी है। दुकान के सामने एक काठ की तिपाई पड़ी है जिस पर दो-तीन आदमी बैठे हैं। दो-तीन आदमी दुकान के सामने खड़े चाय पीते हैं और बात भी कर रहे हैं। खड़े-खड़े चाय पीने वालों में से एक आदमी सड़क की ओर मुँह करके आवाज देता है–'अरे शिवराम, इतनी जल्दी कहाँ दौड़े जा रहे हो, आओ, एक प्याला चाय तो बुद्धु की बनाई पी लो।')

सड़क पर जाता हुआ व्यक्ति : *(जिसे शिवराम कहा गया था)* भाई बहुत जल्दी में हूँ, हमको अगर छोड़ दो तो बहुत अच्छा हो, रामजियावन भइया।

रामजियावन : अरे ऐसी भी क्या जल्दी है?

शिवराम : भाई, आजकल कुछ विशेष काम में फँसा रहता हूँ।

रामजियावन : कौन-सा काम? क्या भावी लड़के की शादी का अभी से कुछ डौल बाँधने लगे हो?... *(हँसता है)*

रामजियावन : अरे ऐसी भी क्या जल्दी है?

शिवराम : भाई, तुमसे मजाक में तो हम पार पाने से रहे। कल इतवार है, हमारे घर आओ सब लोग, तब तुमको सब बताएँ। तुम्हारी भाभी गाँव से बढ़िया गुड़ लायी है। कल सवेरे हमारे ही घर कुछ चाय-पानी हो और वहीं सबको वह काम भी बतावेंगे। काम ऐसा जिसमें समय भी खराब न हो और कुछ मिलने का भी डौल रहे।

बुद्धू : *(चाय वाला)* अच्छा, कल सवेरे तो हम लोग चाय पिएँगे ही, अभी यह लो एक प्याला तुम पियो।

शिवराम : लाओ बुद्धू भाई, अब तुम कह रहे हो तो पी ही ली जाये। सब जल्दी-जल्दी चाय पीते हैं और फिर एक-दूसरे को जयराम जी कहते हुए चल देते हैं।

दूसरा दृश्य

(एक मजदूर के मकान का दृश्य। एक हाते के भीतर मकान है। मकान में भीतर जाने का एक दरवाजा है जो बाहर के एक खपरैल में खुलता है। खपरैल में शिवराम बैठा दिखाई देता है। तीन व्यक्ति आते हैं और जयराम जी कह कर अभिवादन करते हैं, एक-दूसरे का)

शिवराम : आओ भाई जियावन, लालता, बुद्धू आओ। *(घर की ओर घूम कर)* अरे सुनती हो, जरा कुछ खाने-पीने को दे जाओ और गरम-गरम चाय भी।

स्त्री आवाज : अच्छा, अभी लल्लू के हाथ भेज रही हूँ। *(एक लड़का हाथ में एक बड़ी सी पीतल की तश्तरी में कुछ खाद्य पदार्थ लाकर रखता है।)*

जियावन : *(खाते हुए)* हाँ, यह तो बताओ, कल तुम कौन-सा काम कह रहे थे?

शिवराम : भइया देखो, इस महँगी के जमाने में 60 रुपये में तो गुजर होती नहीं। खर्चा ठहरा लम्बा, एक तो शहर में ऐसे ही बीवी-बच्चों को लेकर रहना और फिर गाँव में बप्पा को भी हर महीने कुछ न कुछ खर्च भेजना ही पड़ता है। एक दिन ऐसे ही कुछ परेशानी में बैठा था कि पड़ोस के गोपाल बाबू ने पूछा—'क्या बात है? जब मैंने सब बताया तो कहने लगे कि तुम मिल के टाइम के अलावा कुछ और काम ऐसा क्यों नहीं कर लेते जिसमें तुम्हारी बीवी भी मदद किया करे और उससे कुछ आमदनी हो जाये।

लालता : यह गोपाल बाबू कौन हैं?

विराम : बड़े अच्छे आदमी हैं, यहीं कालेज में ऊँची दर्जा में पढ़ते हैं।

लालता : तो फिर उन्होंने कौन-सा काम सुझाया?

शिवराम : काम तो उन्होंने कई सुझाए पर सब में कुछ न कुछ रकम

लगती है। मैं बड़े पसोपेश में पड़ा था कि उसी बीच मालिकों ने बोनस की घोषणा कर दी। उसी से तथा थोड़ा-सा और जोर-बटोर कर हमने काम चलाया। कहो बुद्ध, तुम कैसे चुपचाप बैठे हो?

बुद्धू : भाई, यह गोरख-धन्धा हमारी समझ में आ नहीं रहा है। तुम्हारे घर में रंग-बिरंगे कपड़े चारों तरफ फैले हैं। चारपाई के बान, पाटी, सेरवा सभी पर रंग पड़ा है। यह सब माजरा क्या है?

शिवराम : अरे, यही सब देखने के लिए तो तुम लोगों को बुलाया है। आओ, जरा भीतरी कोठरी में चल कर देखो।

तीसरा दृश्य

(कोठरी 12 फुट लम्बी तथा 8 फुट चौड़ी होगी। एक दरवाजा सामने खुलता है और एक पीछे। एक बिजली का बल्व लगा है और कुछ रंगीन कपड़े, एक छोटी-सी काठ की चौकी तथा रंग एवं छापे इधर-उधर रखे हुए हैं।)

शिवराम : गोपाल बाबू से सलाह लेने के बाद यह तय पाया गया कि काम कुछ हल्का होना चाहिए, जिसमें अधिक सीखने, ट्रेनिंग लेने की जरूरत न पड़े। हमको लगा कि छपाई का काम ऐसा ही है, इसको औरतें और समझदार बच्चे भी कर सकते हैं, इसीलिए इसको शुरू किया।

बुद्धू : लेकिन कुछ तो सीखना पड़ता ही है।

शिवराम : यों तो घास काटना भी सीखना पड़ता है, नहीं तो खुरपी, हँसिया घास की जगह हाथ काट लेती हैं। एक छापे वाले के यहाँ काम सीखा है।

बुद्धू : तो कुछ फीस-वीस भी देनी पड़ती होगी।

शिवराम : कुछ नहीं, शुरुआत में 15-20 दिन तो कुछ नहीं, बाद में दुकानदार खुद थोड़ी मजदूरी भी मुझको देने लगा था। शुरू में हम 8 आने गज की सस्ती मारकीन 15-20 गज ले आये थे, उसी पर सीखते रहे। बाद को जब अच्छी तरह सीख गये तो अपना यह काम जमा लिया।

जियावन : यह सब कैसे क्या लाये हो, इनको कहते क्या हैं, जरा यह तो बताओ।

शिवराम : जरा सब्र करो सब बताता हूँ। देखो यह छोटी-सी चौकी जो है इसे पटिया कहते हैं, 4-5 रुपये में मिल जाती है। इस पर आठ रुपये के करीब यह कम्बल जड़ा हुआ है। यह रंग घोलने वाला जो बर्तन है इसे ठटरी-पटरी या गदिया कहते हैं—3 रुपये में यह मिल जाता है। शुरुआत में हम छापा सिर्फ 80 रुपये का लाये थे। बाद को धीरे-धीरे और लाते गये। अब तो हमारे पास 200 रुपये के आसपास के छापे होंगे। कपड़ा भी शुरुआत में 40 रुपये का ही लाये धे। और रंग-गोंद में 6-7 रुपये खर्च हुए थे। इस तरह सब मिला कर हमने 140 रुपये के लगभग खर्च किये थे, शुरुआत में।

लालता : लेकिन कपड़े रंग कर क्या तुम फेरी लगा कर बेचने जाते थे या कहीं और कोई दुकान भी खोल ली है जिस पर भाभी बैठती हों बेचने के लिए।

शिवराम : *(थोड़ा-सा मुस्करा कर)* मिल में काम करने और कपड़ा छापने के बाद फेरी लगाना बूते की बात नहीं है और अपने ठहरे मेहनतकश आदमी, दुकान-ऊकान अपने बस का रोग नहीं।

बुद्धू : तो फिर कैसे बेचते हो?

शिवराम : शुरुआत में जो कपड़ा हम खरीद कर लाये थे वह रंग कर यहाँ के कपड़े के दुकानदारों के यहाँ बेच आये। कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा और अब तो हमको अपना कपड़ा भी नहीं खरीदना पड़ता, दुकानदार खुद कपड़ा दे देता है, हम छाप कर दे आते हैं और अपनी मजदूरी ले आते हैं। अब तो सुना है कि सरकार कोआपरेटिव के जरिए हम लोगों की कुछ सहायता भी करेगी और छापे की नयी-नयी डिजाइनें भी सिखाने का इन्तजाम करेगी। सुनते हैं कि अमरीका में छापे के कपड़े की बड़ी माँग है। अच्छा, आओ चले चाय पी लें, वहाँ बाकी बातें होंगी।

चौथा दृश्य

(सेटिंग वैसी हो जैसी कि दूसरे में थी, कोई कटोरी में चाय पी रहा है कोई गिलास में। एक लोटे में बनी बनाई चाय रखी है।)

शिवराम : यह काम कैसा लगा आप लोगों को?

जियावन : काम तो बहुत अच्छा है। पर एक बात नहीं बताई कि आमदनी इसमें कितनी हो जाती है?

शिवराम : आमदनी तो अगर जम कर काम करें तो ज्यादा भी हो सकती है, पर हम लोग ऐसे ही थके-माँदे रहते हैं इसलिए थोड़ा ही काम कर पाते हैं। फिर भी डेढ़ से लेकर 2 रुपये रोज तक कमा लेते हैं। हमारी तो सलाह है कि तुम लोग भी कोई काम करो।

लालता : हाँ, अपने गोपाल बाबू से जरा एक दिन हम लोगों को भी मिला दो। आज तो देर हो गयी है, फिर जिस दिन उनको फुरसत हो पूछ लो, हम लोग आ जायेंगे, उनकी सलाह से कोई काम कर लेंगे।

जियावन : आज दिन बड़ा अच्छा शुरू हुआ। अब हम लोग चलें शिवराम भाई।

लालता : हाँ, हाँ, अब चला जाये देर हो रही है।

(सब लोग आपस में जयराम जी की करते हुए चले जाते हैं)

(पटाक्षेप)

श्रमजीवी : कानपुर, 3 जनवरी, 1957

सम्पति की सीख

(एक मिल मजदूर के मकान का दृश्य, भीतर से हुक्का गुड़गुड़ाने तथा एकाध बच्चों के रोने का स्वर सुनाई देता है। बाहर से एक पुरुष पुकारता दिखाई देता है।)

पुरुष स्वर : सम्पति भाई...ओ, सम्पति भाई...

(भीतर से आवाज आती है)

: अरे कौन? जगतू दादा हैं क्या?
आओ, आओ, दादा, भीतर दहलीज में चले आओ।

जगतू : *(भीतर जाते हुए)* आया भाई आया, कहो, क्या कर रहे हो?

(मजदूर के घर का भीतरी भाग, एक अँगीठी के सामने सम्पति टाट पर बैठा है)

सम्पति : ऐसे ही जरा हाथ सेक रहा था, जाड़ा काफी पड़ रहा है। और बताओ दादा, क्या हालचाल हैं? आज कैसे भूल पड़े?

जगतू : अरे भाई, झंझटों में फँसे रहने के कारण मिलना-जुलना कम होता है। सोचा कि चलूँ, तुमसे बहुत दिनों से भेंट नहीं हुई सो मिल लूँ और कुछ काम भी था तुमसे।

सम्पति : कौन काम है दादा? *(दूसरी ओर मुँह करके)* अरे सुनती हो, जगतू दादा आये हैं, जरा कुछ चाय-पानी तो इनको पिलाओ। हाँ दादा, अब बताइए कैसे आये?

जगतू : सम्पति भाई, अब तुमसे क्या कहें? तनखाह में ठीक से पूरा नहीं पड़ पाता। कोई न कोई झंझट ऐसा निकल आता है कि हाथ खाली का खाली रहता है। परसों झुल्लू का मुण्डन है और टेंट में अब कुल पाँच रुपये बचे हैं, सो भाई दसेक रुपये का इन्तजाम करा दो तो काम चल जाये।

सम्पति : दादा, आप अपने हैं, आज्ञा हो तो एक बात कहूँ।

जगतू : कहो भाई।

सम्पति : इसे तो आप मानेंगे ही कि अपनी आमदनी के भीतर पैर न फैलाकर दूसरे के आगे हाथ फैलाना बुरी बात है। अभी पिछले महीने आपको जो भत्ता मिला था उसे आपने क्या खर्च कर डाला। पर दादा, यह न समझना कि आपको रुपये दे रहा हूँ इसलिए यह सब सफाई माँग रहा हूँ। असल में बहुत दिनों से आपसे इस बारे में बात करना चाहता था।

जगतू : भाई, उन रुपयों का यह समझ लो कि 20 रुपये गाँव भेज दिये। नहर की सींच भरनी थी। 20 रुपये सत्यनारायण की कथा में खर्च हो गये झुल्लू के जनम की मानी पड़ी थी। उसकी अम्मा बहुत दिनों से झगड़ रही थी सो उसे 50 रुपये की 'हवेल' बनवा दी।

सम्पति : दादा, हम लोगों के घरों की तो यही खराबी है कि बेकार के कामों में तो हम बहुत खर्च कर देते हैं और अपनी आमदनी बढ़ाने का कोई उपाय न करके करम पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और इन औरतों को तो सिवा गहने-कपड़े, कथा, ब्याह-शादी के और कुछ सूझता ही नहीं है।

(एक थाली में चाय का लोटा, दो गिलास और एक पीतल की तश्तरी में कुछ खाने का सामान लिए हुए सम्पति की स्त्री का बगल के दरवाजे से प्रवेश)

स्त्री : हाँ, ले बैठे न मेहरारुओं की बुराई। मैं तो कहती हूँ कि जहाँ दो मर्द इकट्ठे हुए कि लगे कुबड़ाई' करने औरतों की। न हों हम लोग तो आटा-दाल का भाव मालूम पड़ जाये। खाने को नसीब न हो जो बैठे-बैठाए हुकुम चला देते हो। लो दादा, चाह-पियो, जीजी अच्छी तरह हैं न, उनसे कह देना कि हमने बुलाया है। दादा तुम इनकी बेकार की बातों पर ध्यान न देना। मेहरियां तो घर की लच्छिमी होती हैं, जेवर बन गया तो घर में ही तो सम्पदा रही, कहीं बाहर तो नहीं चली गयी। मुझको तो कहते-कहते...।

सम्पति : *(बीच में टोकते हुए)* अच्छा, अच्छा, देखो, तुम्हारी दाल में उफान आ रहा है, उसे जाकर सम्हालो फिर हँसुली-टीका बनवानो।..दादा, चाय पीते जाओ नहीं तो ठण्डी हो जायेगी।

जगतू : बात तो तुम ठीक ही करते हो। छोटे हो पर बुद्धिमान हो, बेटा तुम्हीं कुछ बताओ कि कैसे क्या किया जाये।

सम्पति : दादा, यह तो सब आप लोगों का आशीर्वाद है पर जो सबसे पहली ध्यान में रखने की बात है वह है कि खर्चा ठीक कामों में होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि हम लोगों को अपनी आमदनी बढ़ाने के जरिए ढूँढ़ने चाहिए।

जगतू : भइया, जरा मुझे खुलासा करके समझा।

सम्पति : आप अपने को ही देखिए। आपको सौ रुपये के करीब भत्ता मिला था। आपने उसमें से 20 रुपये सिर्फ कथा में खरच किये। चाहते तो कथा 5 रुपये में भी हो सकती थी। भगवान की भक्ति तो अपने मन की भावना है, उसको तड़क-भड़क और दिखावे से तो कुछ मतलब है नहीं, आपने पूरे मुहल्ले में परसाद न बाँटा होता तो भगवान नाराज थोड़े ही होते, और अगर चढ़ावे में इतनी ज्यादा रकम रख दी गयी तो भगवान कोई रोजगार तो करते नहीं हैं कि जितने ही जो रुपये लगावे उतना ही उसको बढ़िया चीज देंगे। दादा, आप यह न समझें कि भगवान की पूजा का मैं विरोध कर रहा हूँ।

जगतू : अब तो कहोगे कि झुल्लू के मुण्डन में भी कम खर्च करो। पर पास-पड़ोस, जाति-बिरादरी के लोग क्या कहेंगे?

सम्पति : दादा, फिर तुम दिखावे के चक्कर में पड़े। हम लोगों का यही तो दोष है कि अपनी हैसियत से बाहर दिखाने की कोशिश करते हैं। जाति-बिरादरी वाले जो समझदार होंगे, कभी भी फजूलखर्ची की तारीफ नहीं करेंगे। ऐसे कामों में शह वही लोग देते हैं तो मौके पर फिर एक पैसे की भी सहायता नहीं करते। अब अगर आप झुल्लू के मुण्डन में पूरे मुहल्ले को भोज देने के बजाय सिर्फ एक-एक कप चाय सब को पिला दें तो क्या कुछ बुरा होगा? यह तो दादा अपनी-अपनी समाई की बात है, उसी के हिसाब से खर्च करना चाहिए। आपस की बढ़ा-चढ़ी इस मामले में बहुत नुकसानमन्द है।

जगतू : सो कैसे?

सम्पति : मान लीजिए आज आप अपने सामने वाले नरायन दाऊ के पोते के छेदन की बात मन में सोच कर उसी हिसाब से कर्ज लेकर खर्च करना चाहते हैं। कल आपका पड़ोसी या मैं खुद उसी तरह आपसे भी दूना कर्ज लेकर अपने लड़के का उत्सव मनाने की बात सोचूँगा। इस तरह समाई का ख़याल न करके आपस की बढ़ा-चढ़ी सबको नुकसान पहुँचाती है।

और फिर लड़के का प्रेम क्या रुपये खर्च करने से थोड़े ही प्रकट होता है। वह तो आपके मन में है ही। उसी रुपये को लड़के के हित में दूसरी तरह आप खर्च कर सकते हैं।

जगतू : सम्पति भाई, तुम तो बड़ी नयी-नयी बातें कर रहे हो। अच्छा यह बताओ कि लड़के के हित में दूसरी तरह रुपये खर्च करने का क्या मतलब है?

सम्पति : यही कि इस रुपये को आप उसके पढ़ाने-लिखाने में खर्च कर सकते हैं। इस रुपये को आप बचा कर लड़के को घी-दूध खिलाने की अलग से व्यवस्था कर सकते हैं जिससे कि उसकी तन्दुरुस्ती बने।

जगतू : भइया, तुमने अभी गहनों को बुरा कहा है। पर गहना तो अपने घर में ही रहता हैं, धन मौके के लिए पड़ा रहता है, जरूरत पर काम आता है। हारी-बीमारी में उसे बेच कर काम चलाया जा सकता है।

सम्पति : मैं आपकी इस बात से दादा बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। हम लोगों को चाहिए कि जिस चीज की जिस समय ज्यादा आवश्यकता हो, उस समय उसी पर खर्च करना चाहिए। गहने न होने से हमारा कोई काम रुकता नहीं है। हम मजदूरों को विलास की चीजों से दूर ही रहना चाहिए। हमारी मुख्य जरूरतें हैं कि खाने को भरपेट भोजन मिले, पहनने को मजबूत कपड़ा मिले, रहने को साफ-सुथरा मकान हो और हमारे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का ठीक-ठाक बन्दोबस्त हो। जब यह सब हो जाये तो फिर गहना गढ़ाने की बात उठती है।

जगतू : परन्तु मौके-बेमौके के लिए उनके रूप में धन तो घर में पड़ा रहता है। इस बात का तुमने कोई जवाब नहीं दिया।

सम्पति : दादा, मैं खुद ही कह रहा हूँ। एक बात बताइए कि सोने-चाँदी की जो चीज आप गड़ाते हैं, वह क्या एकदम शुद्ध मिलती है?

जगत : न, उसमें कुछ न कुछ मेल अवश्य हो जायेगा। यह तो सम्भव ही नहीं कि सुनार के हाथ से चीज शुद्ध निकल आये।

सम्पति : इसके मानी हैं कि जितने का सोना खरीदा, दाम उससे कम हो गये। दूसरी बात यह है कि जिस भाव आप सोना-चाँदी खरीदते हैं, जब बेचने जाते हैं क्या उसी भाव बिकता है?

जगतू : यों तो भाई यह बात बाजार के रुख पर है, पर रोजाना के

लेन-देन में सराफों के यहाँ के खरीदने और बेचने के भावों में एक-दो रुपये का अन्तर जरूर होता है।

सम्पति : यानी कि दाम और भी कम हुए। अब आप सरकार द्वारा दी गयी सुविधाओं का तनिक ध्यान दें। डाकखाने में रुपया जमा कर दें, मारे जाने का कभी डर नहीं। जब कि गहने को चोर चुरा ले जा सकता है। आपको ब्याज अलग से मिलेगा। वहाँ से आप नेशनल सेविंग सर्टीफिकेट खरीद दें आपको 12 साल बाद ड्योढ़ा रुपया वापस मिलेगा। सरकार में ही नहीं और बैंकों में भी इसी तरह अपना रुपया जमा कर सकते हैं।

जगतू : पर भाई, डाकखानों, बैंकों में तो बड़ी-बड़ी रकमें जमा होती होंगी? हमारे जैसे लोग वहाँ कैसे जा सकेंगे?

सम्पति : ना दादा, ऐसी बात नहीं। डाकखाने और बैंकों के सेविंग वाले खाते में आप छोटी-छोटी रकमें जमा कर सकते हैं। इसके अलावा आप अपनी सहकारिता समिति के हिस्से खरीद सकते हैं जिन पर आपको लाभ मिलेगा। और छोटे-मोटे फुरसत के धन्धे चला सकते हैं जिनसे आमदनी बढ़ेगी। बात ठीक कह रहा हूँ या नहीं, आप ही बताइए जगतू दादा।

जगतू : बेटा, तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। तुमने आज मेरी आँखें खोल दीं। भगवान तुम्हें सुखी रखे। अच्छा अब मैं चलूँगा। थका हूँ, आराम करने का मन है। राम-राम, अब मैं रुपये न लूँगा, ऐसे ही काम चलाऊँगा।

सम्पति : अच्छा दादा, जयराम जी की।

(जगतू जाने को उठता है, भीतर से स्त्रीकण्ठ की आवाज आती है : दादा, हमारी जीजी को जरूर भेज देना।)

जगतू : अच्छा बहू।

(पटाक्षेप)

श्रमजीवी : कानपुर, फरवरी, 1957

परामर्श लिमिटेड : एक अनाटक

आखिर इस नाम को पढ़ते ही आप चौंकते क्यों हैं? साधारण-सी तो बात है इस परम मौलिक (?) जमाने में। आपको किसी भी प्रकार के परामर्श की जरूरत है, सीधे हमारे कार्यालय में पधारें, हम सेवानुसार आज्ञा देने को प्रस्तुत हैं।

लिमिटेड शब्द से भी घबड़ाने की बात नहीं है। इसका अर्थ हमने युगीन संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए थोड़ा मौलिक कर लिया है, इसके द्वारा आपको अपेक्षाकृत 'नये अर्थ का भावन' होगा क्योंकि पुराने शब्दों का 'मुलम्मा' उतरने उतराने लगा है। लिमिटेड कम्पनी कई आदमी मिलकर चलाते हैं, इसके नये अर्थ के अनुसार एक ही आदमी कई प्रकार के परामर्श दे सकता है; जैसे कि वह इनकमटैक्स और सन्तति निग्रह, गृहकलह और दिल के वाल्व की खराबी, फेफड़ों के रोग और जेल से निकल भागने की तरकीब आदि अनन्त प्रकार की समस्याओं पर आजमूदा सलाह दे सकता है।

आइए कुछ देर आपको अपने इस परामर्श कार्यालय की हवा खिला दूँ। यह देखिए, बाबू जगमोहन लाल किसी सम्बन्ध में आ रहे हैं। जरा आप काउण्टर के पीछे छिप कर सुनें।

पहला दृश्य

जगमोहन लाल : परामर्श की जरूरत है, यह लीजिए फीस पाँच रुपये।

परामर्शद : अपनी समस्या तत्काल कह दीजिए।

जगमोहन लाल : मैं शादी करना चाहता हूँ।

परामर्शद : कर लीजिए अभी आपकी आयु ही क्या है?

जगमोहन लाल : पर पहली बीवी घर में घुसने नहीं देगी।

परामर्शद : तो दूसरा मकान बनवा लीजिए।

जगमोहन लाल : रुपये कहाँ से लाऊँ?

परामर्शद : कर्ज लीजिए या फिर किराए पर रहिए।
जगमोहन लाल : और यदि बीवी मुकदमा दायर करे तो।
परामर्शद : पाँच रुपये और निकालिए तो मुकदमे के बारे में सलाह दूँ।
जगमोहन लाल : अभी तो नहीं हैं।
परामर्शद : अच्छा तो कल दस बजे आना तब तक इस बारे में विचार कर रखेंगे। जरा एक सिगरेट तो निकालना।

दूसरा दृश्य

परामर्शापेक्षी : जरा एक कठिन परामर्श के लिए आया हूँ।
परामर्शद : स्पेशल फीस एक रुपया निकालिए।
परामर्शापेक्षी : गुरु, यह लो। बात यह है कि आजकल लोग नाना प्रकार के दौड़ों पर निकलते हैं। मिनिस्टर के, कलक्टर के, नेता के, पुलिस के तो दौड़े सुने थे, पर अब लोगों के पैदल, सायकिल, मोटर आदि के दौड़े होने लगे हैं। मतलब यह कि इनके 'वर्ल्ड टूर' होने लगे हैं।
परामर्शद : तो क्या आप इन्हें बन्द करवाना चाहते हैं। यह बहुत आसान बात है। हर देश की सरकार को लिख भेजिए कि ऐसे लोगों को बन्द कर दे। बस काम खतम।
परग्मर्शापेक्षी : आपने पूरी बात तो सुनी नहीं। मैं भी कोई वर्ल्ड टूर करना चाहता हूँ, जरा कोई मौलिक योजना सुझाइए।
परामर्शद : पर तुम क्यों टूर पर निकलना चाहते हो, अपना मतलब समझा कर कहो। दूसरे यह बताओ कि तुम्हारे पास समय कितना है। मतलब यह कि कहाँ और क्या चाहते हो।
परामशपिक्षी : टूर करने का मतलब ही जब आप नहीं समझते तो सलाह क्या खाक दीजिएगा।
परामर्शद : नहीं बात यह है कि तुम्हारा उद्देश्य जान लेने पर उसी हिसाब से सलाह दूँगा। लेकिन देखो जरा जल्दी करो क्योंकि दस मिनट से अधिक समय मैं किसी को नहीं देता।
परामर्शापेक्षी : अब देखिए आप कि इन टूरिस्टों की अखबार में फोटो छपती है। लड़के-लड़कियाँ उनके हस्ताक्षरों के लिए दौड़ते हैं। चाय और डिनर की धूम मचती है, दुनिया ऊपर से देखते हैं। हमने सुना है कि खर्चा भी इन्हें कुछ विशेष नहीं पड़ता। हर

देश की सरकार इन्तजाम करती है। रही समय की बात सो अपने राम रोड इंस्पेक्टर ही कहे जा सकते हैं। मुझको समय का तनिक भी लालच नहीं है और फिर यह भी तो शुभ कार्य महान साहस का ठहरा।

परामर्शद : बिलकुल महान कार्य है प्यारे। *(दो-चार सेकण्ड रुक कर)* तुमको बैलगाड़ी पर वर्ल्ड टूर करना चाहिए। एक छोटी आरामदेह हल्की सी गाड़ी, उस पर एक बोरा सत्तू और एक बोरा शक्कर। सतुआ कई प्रकार के हों और अलग-अलग पैकटों में हों जैसे मकई के सत्तू नीले रंग के पैकेट में, चने के सफेद रंग के पैकेट में और मखाने तथा लाई के गुलाबी रंगों के पैकेटों में रखे जा सकते हैं। बैल जरा मजबूत होने आवश्यक हैं। बस फिर क्या जहाँ तुम पहुँचो वहीं तुम्हारे लिए हिन्दुस्तान से खाने के लिए यह एनर्जी पाउडर (सत्तू) हवाई जहाज से मँगाया जाया करेगा। आप यों खाइए सब कुछ, पर दिखावा यह रहे कि सतू ही मुख्य भोजन है। तुम भी अखबारों में अमर और तुम्हारी बैलगाड़ी तथा भोजन भी अमर। अच्छा नमस्कार।

परामर्शापेक्षी : धन्यवाद। आठ-दस रोज बाद मैं ऐसा ही करूँगा और आपका प्रचार अन्य देशों में भी करूँगा।

तीसरा दृश्य

एक परामर्शक : परामर्शद जी, मैं नेता बनना चाहता हूँ। उसके बारे में मुझे कुछ ऐसे मूल सूत्र बताइए जिससे कि मैं सफल बन सकूँ। यदि नेता न बन जाऊँ तो अफसर ही बन जाऊँ। दोनों सलाहों के लिए यह 10 रुपये लीजिए।

परामर्शद : नेता की अनेक मूलभूत विशेषताएँ होती हैं उन्हें मैं तुम्हें लिखाए दे रहा हूँ। मुझे पूरी उम्मीद है कि एक दिन तुम नेता बन सकोगे।

पहला सिद्धान्त तो यही जान लो कि जबान और पान बदलने पर ही अच्छे रहते हैं। भौतिक जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है कि अपनी पिछली बातों, विचारों या कथनों पर चिपके न रहें।

दूसरी मुख्य बात यह है कि हर एक से मीठा बोलें पर जड़ अपनी छोड़कर प्रत्येक दूसरे की काटें।

तीसरे, विश्वास किसी का न करें पर अपने अवसर की ताक में सदैव रहें।

चौथे, नानारूपा-नाना वेशा या 'जेहि दिशि बहै बयारि, पीठि ताही दिशि दीजै' सफलता का मूल मन्त्र है।

पाँचवें, लोगों से मेल-जोल खूब बढ़ावे परन्तु हर एक पर अपने व्यक्तित्व का सिक्का जमाने का प्रयत्न करें।

छठे, ईमानदारी आपकी उन्नति के मार्ग में रोड़ा है।

सातवें, जब आपका छोटा-सा दल बन जाये तो फिर अपने बड़े स्वार्थ और दल के लोगों के छोटे स्वार्थों का ध्यान सदैव रखें।

अफसर पर भी यह बातें कुछ न कुछ लागू होती हैं। कुछ बातें छूट भी जाती हैं और कुछ बढ़ भी जाती हैं। अफसर को केवल अपने अफसर से मीठा बोलना चाहिए बाकी से कड़वा।

दूसरे, उसे जनता से सदैव अपने को दूर रखना चाहिए।

तीसरे, तीन दिन में होने वाले काम को तीन वर्ष के लिए लटका रखना चाहिए। चौथे, सदैव अपने छोटे-बड़े स्वार्थ का ध्यान रखना चाहिए।

अच्छा भाई मेरा समय समाप्त, अब आप जा सकते हैं, मैं आपकी सफलता की कामना करता हूँ। यों असफल भी हो जायें तो मुझे कुछ दुःख न होगा क्योंकि फीस मिल गयी है। आओ मेरे दोस्त, काउण्टर के पीछे से निकल आओ। देखा मेरा बिजनेस; मुझे बधाई दो और अपने घर जाओ।

कलयुग : मार्च, 1957

बैरंग बारात

(पृष्ठभूमि में शहनाई बजती रहती है। कुछ लोगों की बातचीत का कोलाहल भी सुनाई देता है।)

(चलो भाई, मुहूर्त का समय हो गया। जल्दी करो, मोटर तैयार है। दूल्हे को कहो जरा जल्दी करे। देखो, उधर रामधन को मिठाई खिलाओ, पानी लाओ इधर...अरे भाई पान तो लाना, ठण्डाई मीठी ज्यादा है और मिर्च का झल्ला भी जोरदार है।)

एक आवाज : अरे राधे चच्चा, अब देर दार काहे की? हम सब बाराती सजे बैठे हैं। देखो मसुरी पण्डित तक धोबी के ऐसे दामाद बने ठने गले में दुपट्टा, सर पर साफा बाँधे जमे हैं।

दूसरी आवाज राधेलाल की : *(गम्भीर स्वर में)* हूँ, हूँ सब ठीक है।

पहली आवाज : ठीक क्या है चच्चा काहे की खातिर मुँह लटकाए बैठे हो। अभी लड़की वालों की तरफ से अगवानी का बुलौवा नहीं आया कि आपको मिठाई खाने को नहीं मिली सो मुँह लटकाए बैठे हो।

राधेलाल : *(कुछ तेज होकर)* सोमनाथ, खोपड़ी न चाटो। अगवानी नहीं होगी।

सोमनाथ : अगवानी नहीं होगी तो क्या शादी बिना अगवानी के होगी।

राधेलाल : *(बिगड़ कर)* शादी नहीं करेंगे। बारात लौट जायेगी। जब तक पाँच हजार रुपये और एक मोटर साइकिल मुल्लु के लिए न आ जायेगी, हम शादी नहीं करेंगे। जाओ, चुपचाप बैठो। मैंने उनसे कहला भेजा है; घण्टा भर होने को आये अब तक जवाब तक नहीं आया। अपने को न जाने कहाँ का नवाब समझ रखा है। पड़े हैं मेरे पाले। मिल का मैनेजर है मेरा लड़का, उसे सेंत में ब्याह लेना चाहते हैं।

(कुछ क्षणों के बाद)

एक स्वर : लड़के वाले तो बड़े रोजगारी मालूम होते हैं। शादी करने आये हैं कि लड़का बेचने।

दूसरा स्वर : कहते हैं पाँच हजार नकद और एक मोटर साइकिल या उसके दाम पहले हमारे हाथ आ जायें तभी बारात उठेगी ऐसे नहीं। अब तुम्हीं बताओ शंकर, क्या किया जाये।

शंकर : चलो दादा, हम बात करते हैं।

(विश्राम)

शंकर : चच्चा, भाँवरों की मुहूर्त दो घण्टे बाद है। वहाँ सब तैयार है, अगवानी के लिए चलिए न।

राधेलाल : हमको कुछ मूर्ख समझ रखा है क्या? तुम्हारे जैसे हजारों हमने चराए हैं। बिना हमारी माँग पूरी किये...

शंकर : चच्चा, हम लोग तो सेवक हैं, आपकी बारात की सब तरह से खातिर करना चाहते हैं पर आप ही सोचिए कि इतनी बड़ी रकम कैसे सम्भव है?

राधे : नहीं सम्भव है तो बारात लौट जायेगी।

शंकर : चच्चा, आपको हमारी इज्जत बिगाड़ने से क्या मिल जायेगा। और फिर आप ही तो कहते थे कि हम करार-मदार कुछ नहीं करेंगे। जो देना हो अपने आप दे देना, हम एक रुपये में शादी करते हैं।

राधे : मुझको यह नहीं मालूम था कि आप लोग इतने नीच हैं। सात हजार रुपया सिर्फ लड़के की पढ़ाई में खर्च हुआ है। मिल का मैनेजर है हमारा मुल्लू। हीरा जैसा लड़का तुमने सोचा था मुफ्त में ही भँवराय लेंगे। बिना इतना लिए हम एक कदम नहीं बढ़ाएँगे। चाहे मकान बिके चाहे जेवर, पर मुझे इतने मिलने चाहिए। इतना देने की समाई नहीं थी तो हमारे दरवाजे क्यों आये थे? बैठाए रहो लड़की अपने घर।

शंकर : चच्चा, कुछ देर का समय दीजिए। देखिए जो इन्तजाम हो सकेगा करूँगा।

(विश्राम)

(फिर बारातियों की विविध आवाजें। बुड्ढा बड़ा खुर्राट है।...ठीक तो है इतने पढ़े-लिखे मैनेजर लड़के के लिए रकम ज्यादा तो है नहीं।... दूसरे की इज्जत लेना ठीक नहीं है। ...देखो क्या होता है आदि।)

शंकर की आवाज : राधे, चच्चा कहाँ हैं?

कई आवाजें
एक साथ : इधर हैं। भाई साहब इधर आ जाइए।

शंकर : चच्चा, जरा इधर एकान्त में आ जाइए।

राधे : सब यह लोग हमारे ही हैं, कोई संकोच नहीं। जो कुछ कहना हो निस्संकोच कह डालिए।

शंकर : चच्चा, खेद के साथ कहना पड़ता है कि...

राधे : *(बीच में टोक कर)* रुपये का इन्तजाम नहीं कर पाये।

शंकर : नहीं, रुपये के इन्तजाम का सवाल ही नहीं उठ पाया। लड़की शादी से इनकार कर रही है।

एक स्वर : क्यों?

शंकर : उसका कहना है कि ऐसे नर-पिशाचों से मैं शादी नहीं करूँगी, जो लोग विवाह के पवित्र कार्य को रोजगार और पैसा कमाने का साधन बनाये हैं। उसका कहना है कि आप लोग उसके साथ अपने लड़के की शादी के लिए तो आये नहीं, आप तो रुपये के साथ शादी करना चाहते हैं। उसका कहना है कि रुपये के बल पर वह हर्गिज शादी नहीं करेगी। यदि करना है तो ऐसे ही करें, वरना वापस लौट जायें।

राधे : *(तमतमाए स्वर में)* यह मजाल, सोमनाथ, सबसे कह दो बारात वापस चलेगी, फौरन तैयारी करो। मुल्लू, तेरा चेहरा क्यों उतर गया। इससे बढ़िया तेरी शादी करेंगे। तू भी कपड़े उतार दे। जल्दी चलने की तैयारी कर। वे चन्दौसी वाले 20 हजार दे रहे थे, उनको आज ही तार किये दे रहे हैं।

सोमनाथ : अरे चच्चा, एक तो आप बैरंग बारात वापस लिए चल रहे हैं ऊपर से कहते हैं कि मुल्लू का चेहरा उदास क्यों है? मुल्लू जरा सुनो तुम।

(दो सेकण्ड के बाद)

बातचीत धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में होती है।

सोमनाथ : मुल्लू, यार तुम लोग क्या तमाशा कर रहे हो। चारों ओर लोग क्या कहेंगे। हँसेंगे, जब बिना शादी हुए बारात लौट जायेगी।

मुल्लू : तुम तो मेरे बड़े पुराने साथी हो सोम, तुम्हीं बताओ पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन मैं कैसे कर सकता हूँ। आखिरकार वे पागल तो नहीं हैं। अनुभवी आदमी हैं, कुछ ठीक ही बात कर रहे होंगे।

सोमनाथ : यह सब बातें तुम मन से कह रहे हो? अपनी धन-लिप्सा को तर्क का आधार भर दे रहे हो। क्या अपनी मिल के हर वृद्ध अनुभवी की बात मान लेते हो।

मुल्लू : पर पिताजी की आत्मा को कष्ट पहुँचेगा।

सोमनाथ : मुझे तब आश्चर्य होता है जब तुम्हारे जैसा समझदार आदमी ऐसी बात करता है। उनकी आत्मा को नहीं लोभवृत्ति को धक्का लग रहा है। वे पुराने ख़यालों के आदमी हैं, रुपये वगैरह को इतना महत्त्व देते हैं। जरा समझाकर कह दो कि रुपये का लालच वह त्याग दें, फिर थोड़ा सा नाराज भी हो जायेंगे तो क्या बारात तो बैरंग नहीं लौटेगी? मेरी यह पक्की सलाह है तुम्हें।

मुल्लू : धन्यवाद दोस्त। मैं ऐसा ही करता हूँ।

(कुछ सेकण्डों के बाद)

(शोर होता है, राधेलाल की आवाज सबसे ऊपर सुनाई देती है– जल्दी से बारात अगवानी के लिए चले। बाजे बजने लगते हैं।)

(कुछ क्षणों के बाद)

सोमनाथ : कहो मुल्लु बाबू, पत्नी कैसी मिली? प्रसन्न हो न। मेरी सलाह अनुचित तो नहीं रही?

मुल्लू : लज्जित न करो भाई, मैं तुम्हारा बड़ा एहसानमन्द हूँ।

सोमनाथ : लो राधे चच्चा आ रहे हैं। चच्चा पैर छूता हूँ। सुना है आप बहुत नाराज हैं कि बारात बिना रुपये के बैरंग लौट आयी, आपको अपने घर से खर्च करना पड़ गया।

राधेलाल : बेटा, मुझे माफ कर दे। मैं नाराज जरूर था पर वह तो लक्ष्मी आयी है। मेरी बारात बैरंग नहीं लौटी वह तो बीमा होकर लौटी है। मैं गलत था उस समय। शादी रुपये के लिए नहीं बहू के लिए होती है। अरे मुल्लू, इसको मिठाई तो खिला।

श्रमजीवी : कानपुर, 12 दिसम्बर, 1957

तिल का ताड़

(पृष्ठभूमि में कई पुरुष स्वरों की ध्वनियाँ, एक स्वर कुछ ऊँची आवाज में उठता है और फिर धीरे-धीरे अन्य स्वर शान्त हो जाते हैं।)

पुरुष स्वर : दोस्तो, आज हम सब यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं, यह सब आप लोग जानते ही हैं। अकसर हम सब देखते हैं कि आपस में हम लोग एक-दूसरे से मारपीट करने और लड़ने को तैयार हो जाते हैं। गोकि होता यह सब गलतफहमी के कारण है। आमने-सामने सीधी बात न करके सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही लोग बहकने लगते हैं।

कई स्वर : हाँ जयराम भइया, होता तो अकसर ऐसा है। आप जैसा समझें हम लोगों को बतावें।

जयराम : अब इसी भूरेलाल को लिया जाये। कल यह गली के नुक्कड़ पर गुस्से से लाल डण्डा लिए मुझे मिल गया। पूछने पर मालूम हुआ कि जनाब जा रहे थे मौजीलाल से युद्ध करने। क्यों भाई भूरे, क्या बात थी?

भूरेलाल : भइया, वह तो आप मिल गये और मुझे लौटा ले आये वरना उसकी हड्डी-पसली कल तोड़ कर रख दी होती। पता नहीं क्यों यह आजकल हमसे खार खाए बैठा है। इसने हमारे लड़के रमउवा को कल नल से पानी नहीं भरने दिया। इसके लड़के ने उसे कल मारा भी। बुधुवा का कहना है कि यह दो-तीन दिन पहले हमारी औरत पर बुरे-बुरे इलजाम भी लगा रहा था।

जयराम : क्यों मौजी, क्या बात है? यह भूरे ठीक कह रहा है क्या?

मौजी : मैं क्या बताऊँ जयराम दादा, पता नहीं कहाँ-कहाँ की बातें यह कर रहा है। जहाँ तक नल से पानी लेने का सवाल है,

वह मेरे बाप-दादों का तो है नहीं जो मैं मना कर सकूँ और हो भी तो लोग कुआँ-पौशाला चलाते हैं, मैं क्यों मना करने लगा। बात सिर्फ इतनी हुई थी कि कल मेरी ड्यूटी सवेरे थी और इसकी दूसरी शिफ्ट में थी। मुझे जल्दी नहा कर मिल पहुँचना था सो हमने रमुआ से दो मिनट रुकने को कहा था। वह मानता नहीं था तो जरा-सा कान पकड़कर अलग कर दिया था और कोई मेरी दुश्मनी तो थी नहीं।

भूरे : पर कल ही तुम्हारे लड़के घनश्याम ने रमुआ को पीटा। क्या तुमने सिखाया नहीं था?

मौजी : भूरे, तुम तो मुफ्त में इलजाम लगाते हो। मुझको तो मालूम भी नहीं कि किसने किसको पीटा। ऐसा ही था तो तुम आकर मुझसे कहते या खुद ही दो चांटे लगा दिये होते।

जयराम : लेकिन भूरे, मैंने तो कल दोपहर में खुद दोनों लड़कों को लड़ने से अलग किया था। पहले कबड्डी खेल रहे थे, फिर खेलते-खेलते आपस में लड़ने लगे। घनश्याम कुछ तगड़ा पड़ता था इसलिए मारने में वह बीस पड़ गया, बाकी मार एक-दूसरे को दोनों रहे थे। असल में अब वे दोनों पढ़ने-लिखने लायक हो गये हैं, उनको अब स्कूल भेजा करो तो उनका मन किसी रचनात्मक काम में लगे, वरना खाली समय वे दिन भर शैतानी और लड़ाई की ही सोंचेंगे।

भूरे : पर भइया अभी सबसे बड़ी बात तो रही गयी। हमारी औरत पर मौजी ने इलजाम कैसे लगाया, यह जरा इनसे आप पूछिए। बुद्धू ने अपने कानों आप सुना था।

मौजी : मैंने तो इसकी मेहरिया की कोई बात ही नहीं की। आप बुद्धू से जरा पूछिए।

जयराम : क्यों बुद्धू, तुमने कौन-सी चुगली जाकर भूरे से की, जो वह मरने-मारने को तैयार हो गया।

बुद्धू : दादा, कल संझा को मैं गली से निकल रहा था, तो मौजी मियाँबीवी बातें कर रहे थे और उसमें किसी लछमीना का जिकर कर रहे थे, जिसका चरित्र अच्छा नहीं है। लछमीना भौजी भूरे की बीवी का नाम है, सो यही बात मैंने भूरे से कही थी। इसमें मैंने झूठ क्या कहा, जो आप डाँट रहे हैं।

मौजी : राम-राम बुद्धू, पहले हमसे तो पूछ लिया होता, बस सुनी और ले दौड़े। लछमीना हमारे गाँव की एक औरत का नाम है।

कल चिट्ठी आयी थी कि वह कहीं भाग गयी है, उसी की बातें हम लोग कर रहे थे। विश्वास न हो, तो यह चिट्ठी देख लो, हमारी जेब में पड़ी है। अब जयराम भइया, आप ही निपटारा कर दें कि कसूर किसका है, जो इसने जाकर फोरमैन से हमारी शिकायत की कि मौजी हड़ताल के लिए मजदूरों को उकसाता है।

जयराम : क्यों भूरे, क्या ख़याल है तुम्हारा?

भूरे : *(शर्मिन्दगी के साथ)* मुझसे गलती हुई है मौजी भाई, माफ कर दो। कल फोरमैन से मैं खुद कबूल कर लूँगा कि मैंने गलत बात कही थी।

एक अन्य स्वर : भइया, अभी मौजी ने हड़ताल की बात कही। इधर खबर उड़ रही है कि मालिक लोग बोनस बाँटने से इनकार कर रहे हैं तथा बैठकी भी करने वाले हैं।

जयराम : शीतल दादा! यह खबर कौन उड़ा रहा है।

शीतल : मिल में सुनाई पड़ा था। कोई कह रहा था कि अखबार में निकला है। मजदूरों में आज बड़ी हलचल मची थी। कुछ लोग तो कल से ही गेट पर धरना देने और भूख-हड़ताल करने की सोच रहे थे।

जयराम : मेरी समझ में नहीं आता, ये कुछ स्वार्थी लोग क्यों बेकार के लिए वितण्डावाद फैला कर तुम लोगों का नुकसान कराने को तैयार रहते हैं। और आप लोग हैं कि चट से बहकावे में आ गये। मिल-जुल कर पहले इकट्ठे होकर बात तो जान लेते, यूनियन से सलाह कर लेते, फिर आगे कुछ करने को तैयार होते।

शीतल : अच्छा, तो भइया अब तुम्हीं बताओ कि असली बात क्या है?

जयराम : बात अभी ऐसी कुछ खास नहीं है। मालिकों ने सरकार को लिखा है कि इस साल उन्हें लाभ बहुत कम हुआ है, सो वे लोग बहुत थोड़ा बोनस दे सकेंगे।

शीतल : यह तो गलत बात वे लोग कह रहे हैं।

जयराम : एक वाक्य में तो गलत-सही का निपटारा होता नहीं, शीतल दादा। इस सवाल पर सरकार भी विचार करेगी, आप लोगों की यूनियन भी पूरी जाँच-पड़ताल करेगी और फिर उस हिसाब से मालिकों से बातचीत करनी होगी। लाभ-हानि बहुत सी

चीजों पर निर्भर करती है, उसकी पूरी छानबीन किये बिना किसी की नीयत पर सन्देह न करना चाहिए। हो सकता है कि वाकई मालिकों की नीयत में कुछ खोट हो, पर पहले से कुछ चिल्लाना या उत्तेजित होना बुद्धिमानी का काम नहीं है। यह ठीक नहीं है कि किसी ने कहा—कौवा नाक ले गया और आप बजाय यह देखने के कि नाक अपनी जगह पर है या नहीं, कौवे के पीछे दौड़ने लगें।

शीतल : और बैठकी के बारे में क्या खबर है?

जयराम : हाँ, यह तो बताना मैं भूल ही गया था। बात यह है कि इस बीच कुछ रेलों की आवाजाही की गड़बड़ी के कारण यहाँ पर कोयला बहुत कम आ पाया है। मिलों में कोयले का बहुत थोड़ा स्टाक है। मालिकों ने सरकार को केवल यह खबर दी है कि कोयले का यदि जल्दी प्रबन्ध न किया गया तो उन्हें बैठकी करनी पड़ेगी। पर सरकार ने, हमारे लेबर कमिश्नर को यह आश्वासन दे दिया है कि कोयला बहुत जल्दी पहुँच रहा है। रास्ते में इस समय मालगाड़ियाँ हैं और 2-4 दिन में कानपुर पहुँच जायेंगी। इसलिए बैठकी की कोई सम्भावना नहीं है, आप लोग उससे घबड़ाएँ नहीं।

शीतल तथा अन्य मजदूर : लो हम लोग बेकार ही भड़भड़ा रहे थे। खामखाह तिल को ताड़ बनाये परेशान थे। छाया को भूत कह कर चिल्ला रहे थे।

जयराम : देखो भाई लोगो, आज से एक बात की गिरह बाँध लो कि कभी बिना सही बात को आमने-सामने समझे मुफ्त में बात का बतंगड़ नहीं बनाओगे। चाहे आपसी मसले हों या मिल के, कभी भी तिल का ताड़ बना कर परेशान न होना। आपस में मिल-जुलकर यूनियन वगैरह से बात करके सही चीज को हमेशा पहले जान लो फिर उसी के अनुसार काम करो। अच्छा भाई, अब चला जाये। मुझको एक जगह और जाना है। मौजी भाई, भूरे भाई राम-राम, अब लड़ना नहीं तुम लोग।

सभी मजदूर : नहीं भइया, आप निश्चिन्त रहें।

(राम-राम, नमस्ते आदि की ध्वनियाँ धीरे-धीरे डूब जाती हैं)

श्रमजीवी : कानपुर, 1957/58

मदारी की करामात

(पृष्ठभूमि में डमरू बजने की आवाज)

डिग डिग डिग डिग

एक पुरुष स्वर : आ जाओ भाई, आ जाओ।

देखो नाच बन्दर का, बताएगा हाल समन्दर का, यह घूम-घूम कर आया है, नाच-नाच कर आया है। तरह-तरह के खेल देख लो, बन्दर का भाई नाच देख लो।

आओ भाई आओ।

कुछ लड़कों व पुरुषों के स्वर : 'हे बन्दर वाले इधर आओ'

'आया बाबू आया' 'बबुआ साहब आया' मैं खेल दिखाने आया।

'देखो नाच बन्दर का' कहते हुए—**फेड आउट**

(पाज़)

फेड इन : अरे नाच बेटा नाच, देख बाबू लोग खड़े हैं, देख बेटे देख, ये बच्चे तेरा नाच देखने को बेकल हैं। तू नाच दिखा दे नाच, अच्छा-अच्छा, अब समझा, तूने कपड़े नहीं पहने हैं, सो रूठा बैठा है। ले पहन ले यह जरी का कामदार कुरता, यह ले सलवार जो पंजाब में बनवाया है। यह टोपी जो तू काश्मीर से लाया है।

तुम ठुमुक-ठुमुक कर नाचो बन्दर, तुम कूद-कूद कर नाचो बन्दर। अरे, वह नाच दिखा दे जो तूने दिल्ली में दिखलाया था। वह नाच दिखा दे जो तूने कुरुक्षेत्र के क्षेत्र में दिखाया था, जहाँ सरकार विकास का काम कर रही है, उसको क्या कहते हैं बेटा 'सामुदायिक योजना'।

डमरू बजता है, मदारी वाह भाई वाह, कमाल कर दिया, वाह भाई वाह कहता जाता है।

अच्छा जरा यह तो बता दे कि वे बुढ़ऊ वहाँ बाबूपुरवा के श्रमदान में टोकरी लेकर कैसे चलते थे। हाँ, ठीक भाई ठीक, जरा कमर भी झुका लो। हाँ, ऐसे ही तो सड़क पर वे मिट्टी डाल रहे थे।

(भीड़ से हँसी की आवाज तथा अस्फुट ध्वनि वाकई बिल्कुल बुड्ढे की नकल कर रहा है बन्दर)

जरा तू भी इस लकड़ी पर चढ़ जा। अरे नहीं चढ़ता। चढ़ जा बेटे जैसे खतीमा के बिजली घर पर तार बाँधने वाला खम्भे पर चढ़ गया था। ठीक, थोड़ा और चढ़ जा, थोड़ा और। अच्छा बच्चू-जरा किताब तो पढ़ दो। यह बबुआ जो तुम्हारे सामने खड़े हैं, समझते हैं कि यही पढ़े हैं। अरे, तुम तो कितने ही मदरसों को घूम आये हो, हाँ जी मुआयना कर आये हो, जरा दिखा दो कि कैसे कुरसी पर बैठकर डेस्क पर किताब रख कर लड़के पढ़ते हैं।

अरे भाई, तुम तो भूल गये। इतना सर झुकाकर किताब पढ़ोगे तो आँखों पर बहुत जोर पड़ेगा, एक फुट की दूरी से पढ़ो। हाँ-हाँ।

यह रही तुम्हारी कुरसी, यह रही डेस्क। लो लड़को देखो, मेरा बन्दर तुमसे अच्छा पढ़ रहा है।

एक लड़के की आवाज : पढ़ कहाँ पा रहा है। पन्ने तो पलटता ही नहीं और बोलता भी नहीं।

मदारी : अरे हमारा बन्दर होशियार विद्यार्थी है, तुम्हारी तरह थोड़े ही है। पन्ना पूरा पढ़ने पर ही तो पलटेगा।

(इसी समय पेज पलटने की ध्वनि)

यह देखा न पन्ना पलटा। और जोर-जोर से तो पढ़ने पर शोर होता है, यह मन ही मन समझ कर पढ़ता है, याद करता है। क्यों रे समाजी, ठीक है न?

अच्छा सिर हिला रहे हो, बोल नहीं रहे हो, हम अब समझे, तो तुम ससुराल जाना चाहते हो। जाओ भाई, पर जरा अपना होल डाल, चमड़े का सूट केस तो ठीक कर लो। जरा कपड़े-लत्ते पहन लो। कुछ बीवी के लिए सौगात भी ले

जाओगे कि ऐसे ही जाकर मूसल ऐसे खड़े हो जाओगे। क्या ले जाओगे, हैण्डलूम का बेड कवर ले जाओगे कि बनारस की साड़ी या काश्मीर का दुशाला, चलो तुमको सहकारी समिति वाली दुकान से खरीद दें।

यह देख तुम्हारी ससुराल। नेक सासु जी, ससुर जी के पैर तो छू लो। हाँ-हाँ, और पहली बार बीवी के भी पैर छूने चाहिए। अरे लो तुम तो नाराज होकर हमीं को मारने दौड़े। *(डण्डा पटकने की आवाज)* अच्छा भाई अच्छा, बीवी के पैर न छुओ पर नाराज न हो, नहीं समझेगी कि उजड्ड हो।

पर देखो, बीवी नाराज हो गयी। तुम्हारे साथ आने को तैयार ही नहीं है। तुम्हारी सासु के पीछे छिप रही है। अरे लेव तुम तो बड़े गुस्सैल हो। डण्डा लेकर उसी को मारने दौड़ पड़े। अरे भाई नहीं, नहीं न मारो बस बस।

(बन्दर की सी चीखने की आवाज, कुछ डण्डों के धमाके की ध्वनि)

(पाज़)

अच्छा भाई चलो। चलो बहूरानी मान जाओ, चलो।

अच्छा भाई, अब तो तुम्हारी बहू भी आ गयी। इसी खुशी में एक नाच तुम दोनों का हो तो जाये।

(डमरू की ध्वनि फेड इन)

(फिर फेड आउट)

दिखाओ भाई, डर क्यों रहे हो।

तुमने तो इससे बड़ी-बड़ी भीड़ें देखी हैं। वहाँ भाखरा में जब पं. नेहरू ने बाँध का उद्घाटन किया था तब भी तो तुमने नाच दिखाया था, तब कितनी भीड़ थी पर तुम नहीं डरे थे। जब लाखों मन पानी नहरों में दौड़ पड़ा था तब उसको देखकर तुम नहीं डरे थे। जब हजारों आदमियों की खुशी की आवाजें सारे आकाश में भर गयी थीं तब तुम भी खुशी से उछल पड़े थे। सड़कें बनती तुमने देखी हैं, बनती रेल लाइनों के किनारे तुम नाचे हो, पुलों और बाँधों को तुमने पार किया है। इंजन और हवाई जहाजों की घरघराहट तुम चितरंजन और बंगलौर में देख चुके हो, फिर क्यों डरते हो।

अरे राम रे राम, इस कुत्ते से डर रहे हो। भाग-भाग कुत्ते। *(एक डण्डा पड़ने और कुत्ते के चीख कर भागने की आवाज)*

(डमरू की ध्वनि और हल्के-हल्के पैरों में घुँघरू बजने की आवाज)

ठुमुक-ठुमुक कर नाचो, घूम-घूम कर नाचो।
देश-देश के हाल बताओ, जगह-जगह के ख़ेल दिखाओ।
घर बाहर औ अन्दर, उछल-कूद कर नाचो बन्दर।
बस बेटे बस।

तो अब भूखा है, पैसे माँग ला, रोटी ले आ, अमरूद-केले ले आ। दे दो बाबू भूखा है, बड़ी दूर से चलकर आया है। पैसों की ध्वनि।

एक लड़के की आवाज-ले बन्दर लड्डू। दूसरी आवाज-ले बन्दर चुकन्दर। भीड़ के डिस्पर्स होने की ध्वनि और फेड आउट होती हुई डमरू की ध्वनि तथा 'नाच देख लो बन्दर' की आवाज।

1962 (अप्रकाशित)

प्रेरक छन्दों की गूँज

(पहले कतिपय अस्पष्ट ध्वनियाँ जय भारत माता आदि अस्फुट रूप से सुनाई पड़ती हैं। धीरे-धीरे कुछ दूर दो दिशाओं से हल्की, पर स्पष्ट निम्नलिखित पंक्तियाँ एक के बाद एक उभरती हैं।
उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है?
झण्डा ऊँचा रहे हमारा तथा विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।)

एक गम्भीर पुरुष स्वर : आज पन्द्रह अगस्त है, हमारा स्वतन्त्रता दिवस है। हमें स्वतन्त्र हुए 16 वर्ष बीत गये हैं पर कहीं निकट के ही मुहल्लों से आती...प्रभात फेरी की इन पंक्तियों ने मन के वातायन अनायास मुक्त कर दिये हैं। उस ऐतिहासिक राष्ट्रीय संग्राम के कितने ही चित्र-विचित्र दृश्य मन-पटल पर उभरे आ रहे हैं। आशा और निराशा के, उत्साह और क्रान्ति के उद्‍बोधन और मिट जाने की कामना करने वाले कितने ही स्वर जैसे काल के विस्तीर्ण अन्तराल को एक क्षण में पाटकर स्मृतियों के सेतु से कानों में भरे जा रहे हैं।

स्त्री स्वर : कैसा अद्‍भुत वह समय था, जब राष्ट्रीय चेतना के विविध वेतालकों के शत-शत कण्ठों से निनादित होता स्वर कोटि-कोटि जनों की मरने की, मिटने की, शहीद हो जाने की प्रेरणा दे सका था। कैसी ज्वलनशील वह स्थिति थी जब प्रलय के आवाहन किये जाते थे, जब जड़ चेतन को उठ खड़े होने के लिए उद्‍बोधन किया जाता था, एवं जब वर्तमान की दयनीय दशा को व्यतीत के गौरवमय परिप्रेक्ष्य में देख कर कवि का मन मुक्ति की अप्रतिहत वांछा से भर उठता था।

पुरुष स्वर : आज मेरे मन-क्षितिज पर उन प्रेरक छन्दों के स्वर फिर गूँज उठे हैं। यह गूँज केवल स्मृति की ही नहीं है जैसे कह रही है कि अभी भी कार्य पूरा नहीं हुआ है। ये छन्द आज भी प्रेरक हैं, प्रेरणा देते हैं कि राष्ट्र की समृद्धि का अभी विकास होना

है। भूमि मिल गयी है, पर भवन अभी निर्मित नहीं हो सका।

स्त्री स्वर : और ये स्वर हमें यह भी याद दिलाते रहते हैं कि हमने जो स्वातन्त्र्य-मणि अर्जित की है, यह अनायास लब्ध न होकर संघर्ष और बलिदान द्वारा अर्जित की गयी है। उसकी हमें रक्षा करनी है। सम्भवतः उन स्वरों की तल्खी आज भी हमें डुबो जाती है। सचमुच ही मन के आकाश पर आज उन्हीं स्वरों के मेघ घुमड़ रहे हैं।

पुरुष स्वर : अंग्रेजी साम्राज्यवाद की झुलसाने वाली तपन में भारतेन्दु जैसे नाहर कवियों से भारतवर्ष की दुर्दशा देखी नहीं गयी। वे दुर्दशा के मूल कारण को समझ कर ही सब भाइयों को मिल कर संघर्ष करने के लिए आमन्त्रित करते हैं और यदि कुछ नहीं कर सकते ये लोग तो जिस बात की वे कामना करते हैं वह मुर्दों को भी जिन्दा कर देने वाली है।

स्त्री स्वर : हाय पंचनद, हा पानीपत, अजहूँ रहे तुम धरनि विराजत।
हाय चित्तौर निलज तू मारी, अजहूँ खरो भारतहि मंझारी।
जा दिन तुर्क अधिकार नसाओ, सो दिन क्यों नहिं धरनिसमायो।
रह्यो कलंक भारत नामा, क्यों रे तू बारानसि धामा।
तुम में जल नहिं जमुना गंगा, बढ़हू वेग करितरल तरंगा।
धोवहु यह कलंक की रासी, बोरहु बिन लट मथुरा कासी।
कुस कन्नोज अंग अरु बंगहि, बोरहु किन निज कठिन तरंगहि।
बोरहु भारत भूमि सवेरे, मिटे करक जिय के तब मेरे।

राष्ट्रीय इतिहास बोध की पहली स्थिति थी तथा संगठन के अभाव में कुछ न कर सकने की विवशता थी जो कम से कम रोने के ही लिए मिल कर बैठने के लिए आमन्त्रित करती है। परन्तु स्थिति वही नहीं रहती है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच और माध्यम से शीघ्र स्वातन्त्र्य की माँग उठने लगी—'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' गाँधी के नेतृत्व में कोटि-कोटि जन इस संघर्ष के संकल्प के लिए हथेली में प्राणों का जल लेकर उठ खड़े हुए। इस नये दौर में उत्साह और विश्वास का स्वर ही अधिक स्पष्ट नहीं होता, अपने इतिहास की भी अधिक सूक्ष्म चेतना प्राप्त हो जाती है। अतीत के स्मरण चिह्नों के भीतर नये अर्थों एवं भावसंकल्पों की प्रतीति होने लगती है। यह देखें—स्कन्दगुप्त के मातृगुप्त नहीं हैं। भारतवर्ष के जयशंकर प्रसाद हैं जो मातृभूमि के

वीरों के सामने देश का गौरवपूर्ण इतिहास उपस्थित कर रहे हैं, जिसमें कि सभ्यता की प्रथम किरणें भारतवर्ष को ही आलोकित करती हैं जहाँ पर निर्वासित होते हुए भी राजकुमार राम का उत्साह सिन्धु सा ही विस्तृत और अथाह रहा तथा जिनके पौरुष का प्रतीक सेतुबन्ध आज भी रत्नाकर में भग्न-भग्न पड़ा है। इस देश ने जातियों का उत्थान-पतन भी देखा और नाना प्रकार की विपदाओं को हँसते-हँसते झेला भी है। निराशा की कोई बात नहीं है। आज भी हमारे पास वही सम्पदा है। आओ उसी पर हम सर्वस्व निछावर कर दें हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार।

स्त्री स्वर : हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और पहनाया हीरक हार।
जो हम, लगे जगाने विश्व लोक में फिर फैला आलोक।
व्योम तम पुंज हुआ तब नष्ट अखिल संसृति हो उठी अशोक।
विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत।
सप्त स्वर सप्त सिन्धु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत।
बचा कर बीज रूप में सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत।
अरुण केतन लेकर निज हाथ, वरुण पथ में हम बड़े अभीत।
सुना है दधीचि का वह त्याग, हमारा जातीयता का विकास।
पुरन्दर ने यष्टि से है लिखा अस्थि-युग का मेरा इतिहास।
सिन्धु का विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह।
दे रहा अभी दिखाई भग्न भग्न रत्नाकर में वह राह।

एक पुरुष स्वर : यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि।
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शाल की सिंह को भी सृष्टि।
जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ झड़ी प्रचण्ड समीर।
खड़े देखा झेला हँसते—प्रलय में पले हुए हम वीर।
चरित के पूत भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा सम्पन्न।
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।

स्त्री स्वर : हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव।
वचन में सत्य हृदय में तेज प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त वही है देश, वही साहस है वैसा ज्ञान।
वही है शान्ति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-सन्तान।
जिए तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

पुरुष स्वर : राष्ट्र कवि की भारत-भारती प्राचीन इतिहास के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान अधोगति एवं भविष्यत के लिए सन्देश देने वाला युगान्तकारी काव्य हमारे मानस को एकबारगी कभी आन्दोलित कर सकता था।

समयावरण से पार करके ऐतिहासिक दृष्टि की।
जो देखते हैं आज भी हम पूर्वकालिक सृष्टि की।
तो दीखता है दृश्य ऐसा भारतीय विकास का।
प्रतिबिम्ब एक सजीव है जो स्वर्ग या आकाश का।

स्त्री स्वर : परन्तु इसी पृष्ठभूमि पर हम देखते हैं कि कितना बड़ा परिवर्तन हो गया है—

वे ही नगर, वन, शैल नदियाँ जो कि पहले थीं यहाँ।
हैं आज भी, पर आज वैसी जान पड़ती हैं कहाँ?
कारण कदाचित है यही—बदले हम स्वयं आज हैं।
अनुरूप ही अपनी दशा के दीखते सब साज हैं।

दूसरा पुरुष स्वर : इस विश्वास से सम्भवतः घबरा कर कवि प्रकृति की गोद में एकान्त की ओर भागा था। पर शीघ्र ही उसने अनुभव किया कि अरे यह तो अपने देश की सुषमा है जो अनन्त आकारों में रूपायित हो उठी है। फिर तो उसका राष्ट्र-प्रेम द्विगुणित हो उठा। देश की निसर्ग शोभा के कितने ही ध्वनिचित्र मन को मसृण और संवेदनशील बनाने लगे। एकबारगी इस शोभा को निहार रामनरेश त्रिपाठी पूछ उठे—

वह देश कौन-सा है?.
मन मोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसका चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?
नदियाँ जहाँ सुधा की, धारा बहा रही हैं।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?
जिसके बड़े रसीले फल, कन्द, नाज मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है?

अधिक विश्वस्त, प्रदीप्त एवं निश्चित स्वरों में इस नैसर्गिक गरिमा का अंकन निराला की वाणी ने किया था—

स्त्री स्वर : भारति जय विजय करे, कनक शस्य कमल धरे।
लंका पदतल-शतदल, गर्जितोर्मि सागर जल।

धोता शुचि चरण-युगल, स्तव बहु अर्थ भरे।
तरु-तृण-वन-लता-वसन, अंचल में खचित सुमन।
गंगा ज्योतिर्जल, कण, धवलधार हार गले।
मुकुट शुभ्र हिम, तुषार, प्राण प्रणव ओंकार।
ध्वनि दिशाएँ उदार, शतमुख शतरव मुखरे।

प्रथम पुरुष स्वर : देश के प्रति अनुराग की इस वृद्धि के साथ यह स्वाभाविक ही था कि उसके लिए जूझने की प्रेरणा भी सामने आवे। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' जैसे भाषाविद् की 'झुकी कमान' संघर्ष के लिए प्रस्तुत मनोवृत्ति की प्रतीक है। उसके साथ ही जो आकाशवाणी विभिन्न वर्गों को सम्बोधित करती हुई लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है वह कवि की अपनी, दिल की आवाज है।

प्रथम स्त्री स्वर : छोड़ो अधूरा अब यज्ञ ब्रह्मण। वेदान्तपारायण को बिसारो।
विदेश ही का बलि वैश्य देव, और तर्पणों में रिपु-रक्त डारो।
शास्त्रार्थ-शस्त्रार्थ अभी से चलो दिखाओ, हम अग्रजन्मा।
धोती सम्हाल, कुश छोड़, सबाण दौड़े, आगे गयी धनुष के संग व्योमवाणी।

दूसरा स्त्री स्वर : कभी-कभी प्रतीकात्मक रूप से पुराने वीरों के माध्यम से भी जागरण का यह सन्देश प्रसारित किया जाता रहा है। यह निराला के गुरु गोविन्द सिंह हैं जो एक-एक पर सवा-सवा लाख सुसज्जित सेनाओं की भी बलि दे देने का साहस रखते हैं। भारतवर्ष के शेरों की गोद में जो स्वर आ गये हैं, उन्होंने सिंह की गोद से उसका शिशु छीनना चाहा है, ऐसे क्षणों में बकरे की माँ विवश भाव से मौन रह जाती है। सिंहनी नहीं, इसलिए फिर एक बार जागो का यह निर्घोष है :

पुरुष स्वर : जागो फिर एक बार,
समर अमर कर प्राण।
गान गाए महा सिन्धु से,
सिन्धु नद तीरवासी।
सैंधव तुरंगों पर,
चतुरंग संग।
सवा-सवा लाख पर,
एक को चढ़ाऊँगा।
गोविन्द सिंह निज नाम कहाऊँगा।

किसने सुना था वीर, जन महेन अति दुर्जय संग्राम राग।
फाग को खेला रण—बारहों महीनों में।

द्वितीय पुरुष स्वर : शेरों की माँद में—आया आज स्यार। जागो फिर एक बार।
सिंह की गोद से—छीनता है शिशु कौन?
मौन भी क्या रहती वह—रहते प्राण? रे अजान।
एक मेषमाता ही—रहती है निर्निमेष।
दुर्बल वह—
छिनती सन्तान जब—जन्म पर अपने अभिशप्त।
तप्त आँसू बहाती है—किन्तु क्या योग्य जन जीता है।
पश्चिम की उक्ति नहीं—गीता है, गीता है।
स्मरण करो बार-बार—जागो फिर एक बार।

यह उद्‌बोधन के स्वर प्रेरित न करें—यह सम्भव नहीं था। कितने ही अपना घर-द्वार, परिवार, पत्नी, प्रेमी, पुत्र छोड़ कर इस राह के राही बने। पर कवि को कभी-कभी संशय होता है कि कहीं ऐसा न हो कि बलिदान के क्षणों में मन में कायरता आ जावे और इस शहीदाने पथ को वे बिसर जायें। 'सुमन' पहले से ही सावधान किये देते हैं—

स्त्री स्वर : रणभेरी सुन कह विदा, जब सैनिक पुलक रहे होंगे।
हाथों में कुंकुम थाल लिए कुछ जलकण ढुलक रहे होंगे।
कर्तव्य प्रलय की उलझन में—पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
वेदी पर बैठा महाकाल—जब भर अंजलि चढ़ा रहा होगा।
बलिदानी अपने ही कर से, निज मस्तक बढ़ा रहा होगा।
तब उस बलिदान प्रतिष्ठा में—पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे—जब महाकाल की माला में।
माँ माँग रही होगी आहुति—जब स्वतन्त्रता की ज्वाला में।
पल भर भी पड़ असमंजस में-पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

दूसरा स्त्री स्वर : ज्यों-ज्यों संग्राम का रूप गहरा होता है, ज्यों-ज्यों मन में आवेग घर करता है एवं जितना ही वर्तमान हीनावस्था के प्रति मन में ग्लानि और आक्रोश बढ़ता है, कवि के उद्‌बोधन का क्षेत्र उतना ही विस्तृत बनता है एवं उसका स्वर उतना ही सशक्त और सधा हुआ होता जाता है। उद्‌बोधन एवं संघर्ष के लिए आमन्त्रण चेतन मनुष्यों को ही नहीं, जड़ पर्वत के प्रति भी उन्मुख होता है। गंगा, जमुना सागर आदि को भारतेन्दु ने भी सम्बोधित किया था, पर उस सम्बोधन में

विवशता की निराशा थी, पर दिनकर का हिमालय के प्रति सम्बोधन राष्ट्रीय संग्राम के इस दृप्त सैनिक का है जो अतीत की याद तो करता है, वर्तमान की दुर्दशा भी दिखाता है पर संघर्ष के लिए अविनयभाव से सन्नद्ध है :

पुरुष स्वर : मेरे नगपति! मेरे विशाल। साकार दिव्य गौरव विराट!
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल—मेरी जननी के किरीट।
मेरे भारत के दिव्य भाल—मेरे नगपति मेरे विशाल।
जिसके द्वारों पर खड़े क्रान्त—सीमापति तूने की पुकार।
पद दलित इसे करना पीछे—पहले ले मेरा सिर उतार।
उस पुण्य भूमि पर आज तभी—रे आन पड़ा संकट कराल।
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे—हँस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।

स्त्री स्वर—तीखा : कितनी मणियाँ लुट गयीं। मिटा-कितना मेरा वैभव अशेष।

एक करुण स्वर : तू ध्यान मग्न हो रहा इधर—वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
कितनी द्रुपदा के बाल खुले—कितनी कलियों का अन्त हुआ।
कह हृदय खोल चित्तौर यहाँ—कितने दिन ज्वाल बसन्त हुआ।

वृत गम्भीर पुरुष स्वर : रे रोक युधिष्ठिर कौन यहाँ—जाने दे उनको स्वर्ग धीर।
पर फिरा हमें गाण्डीव गदा—लौटा दे अर्जुन भीम वीर।
कह दे शंकर से आज करें—वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे, हर-हर बम का फिर महोच्चार।

—दिनकर

स्त्री स्वर : युद्ध का रंग और गहरा होता है। सफलता बार-बार हाथ आते-आते रह जाती है। साम्राज्यवाद अपना चंगुल और मजबूत करता है, स्वतन्त्रता का सैनिक और अधिक शक्ति से भर कर प्रलय मचा देना चाहता है। आवेश की यह चरम परिणति है जब सैनिक कवि नवीन ऐसी तान सुनना चाहते हैं जिससे चारों ओर प्रलय मच जाय, विप्लव की आधी में सब नष्ट हो जाय।

विप्लव गान

पुरुष स्वर : कवि! कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये।
एक हिलोर इधर से आये—एक हिलोर उधर से आये।
प्राणों के लाले पड़ जाये—त्राहि-त्राहि रव नभ में छाये।
नाश और सत्यानाशों का—अन्धकार जग में छा जाये।
बरसे आग जलधि जल जाये—भस्मसात भूधर हो जाये।

पाप पुण्य सद् असद् भाव की—धूल उड़ उठें दाएँ बाएँ।
नभ का वक्षस्थल फट जाये—तारे टूक-टूक हो जायें।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये।

दूसरा पुरुष स्वर : स्पष्ट है कि प्रलय जैसे इस संघर्ष में कितने ही गोलियों के शिकार हुए, कितने ही घोड़ों के नीचे कुचले गये, जेलों में सड़ाए गये। साम्राज्यवाद ने बेहिसाब अत्याचार के द्वारा जनता के नैतिक बल को तोड़ देना चाहा पर बड़े से बड़ा दमन आज तक स्वतन्त्रता की पुकार को रोक नहीं सका, जनता सदा से जीतती आयी है। दिल की कविता शहीदों के इस बलिदान से भयभीत होने का सन्देश न देकर खुशी का समाचार मानती है।

स्त्री स्वर : यही दिन था शहीदे कौम ने जब प्राण त्यागा था।
यही दिन था हमारा रहनुमा जब हम से बिछुड़ा था।
जनाजा धूम से उस वीर वर का हमने उठाया था।
चढ़े वह देश वेदी पर यही वर उसने माँगा था।
विजय की घड़ी थी वह, उसे हम गम नहीं कहते।
वह शादी कौम की थी हम उसे मातम नहीं कहते।

पुरुष स्वर : सुभद्रा कुमारी चौहान प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की ज्वलन्त आहुति झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की याद दिला कर संग्राम के नैतिक बल को और अधिक प्रबुद्ध करनी चाहती हैं। 'बुन्देले हरबोलों के मुख से' सुनी गयी यह कहानी रानी की मर्दानगी है जो फिरंगी को देश से दूर करने के लिए प्रयुक्त हुई थी। मर कर भी वास्तव में वह उस ज्योति को जला गयी है जिसकी रक्षा आज के सैनिक को करनी है।

दूसरा स्त्री स्वर : सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में फिर से, आयी नयी जवानी थी।
गयी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।

प्रथम स्त्री स्वर : कुटिया में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान।
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान।
नाना धुंध पन्त पेशवा, जुटा रहा था सब सामान।

बहिन छबीली ने रणचण्डी का कर दिया प्रकट आह्वान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो, सोयी ज्योति जगानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।

पुरुष स्वर : कवि का स्वर एवं शहीदों का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता, वह उपजाऊ धरती है जिस पर कमजोर बीज भी पनप जाता है। जब ये दोनों कवि का स्फूर्तिदायी स्वर एवं शहीद के बलिदान, एक साथ मिल कर देश को अनुप्राणित करें तो यह आश्चर्य की बात न होगी कि सुकुमार पुष्प भी यही कामना करे कि उसे मातृभूमि के लिए शीश चढ़ाने के लिए जाने वाले वीरों के पथ पर फेंक दिया जाये, उसे प्रेमी-माला में गुँथ कर प्रियतमा को आकृष्ट नहीं करना है, सम्राट के शव पर भी नहीं चढ़ना, यहाँ तक कि देवार्चन के लिए उसका उपयोग किया जाये यह भी वांछा नहीं है, यह वांछा वस्तुतः माखनलाल चतुर्वेदी के फूल की ही नहीं देश के प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु की थी–

द्वितीय स्त्री स्वर : चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के, शव पर हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।

प्रथम स्त्री स्वर : वन्दना के स्वरों में स्वर ही नहीं, अर्चना के रनकणों में एक कण और मिला देने का ही नहीं, स्वयं कवि अपना शीश बलिदान कर देने के लिए उत्सुक है। कवि सोहनलाल द्विवेदी के इस निवेदन को कौन भूलेगा–

पुरुष स्वर : वन्दना के इन स्वरों में, एक स्वर मेरा मिला लो।
बन्दिनी माँ को न भूलो, राग में जब मत्त झूलो।
अर्चना के रत्न कण में, एक कण मेरा मिला लो।
जब हृदय का तार बोले, शृंखला के बन्द खोले।
हों जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।

स्त्री स्वर : माधव शुक्ल की यह सात्विक और बलिदानी भावना हमारे मन में आज भी प्रेरणा बनकर गूँज जाती है। आज भी यह बात उतनी ही सार्थक है जितनी उस समय थी। हम गरीब

रहें पर हमारा देश आजाद रहे, हमारा सर हमारे प्राण चाहे न रहें पर राष्ट्र हमारा स्वतन्त्र रहे!

दूसरा पुरुष स्वर : मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे, सामां न रहे ये साज रहे।
फ़कत हिन्द मेरा आजाद रहे मेरी माता के सर पर ताज रहे।
मेरी टूटी मड़इया में राज रहे, कोई गैर न दस्तनदाज़ रहे।
मेरी बीन के तार मिले हों सभी, इक भीनी मधुर आवाज रहे।
ये किसान मेरे खुशहाल रहें, पूरी फसल ही सुख साज रहे।

और इस परवाने ने अपना स्वरूप भी स्पष्ट किया है। उनकी वास्तविक प्रेमिका आजादी है। ये तूफानी दरिया हैं और सबसे बड़ी बात यह कि वे मनुष्य हैं एवं उनके अनुसार मनुष्यता की सबसे बड़ी विशेष कला यही है कि वह *दानवता* के आगे शीश नहीं झुकाती। एक अप्रसिद्ध कवि की यह प्रेरक वाणी आज भी *दानवता* को भयभीत करने के लिए यथेष्ट है—

भोले हरिणों के युगल नयन, उस दुष्ट वधिक से थे।
मेरे आँसू सरिता में, तू अपने पाँवों को धो ले।
मेरा इसमें कुछ दोष नहीं, हम तो स्वर के दीवाने हैं।
है आजादी जिनको लैला, हम वे मजनू मस्ताने हैं।
मृदु तानों पर मरने वाले, हम बीन बजाना क्या जानें।
हम वे सागर गम्भीर नहीं, जो मर्यादा में मरते हैं।
हम तो तूफानी दरिया हैं, जो बाँध तोड़ क़र बहते हैं।
तरु होकर अपने कुसुमों को, हम कैसे स्वयं मसल डालें।
इन विद्रोही उद्‌गारों को, हम कैसे स्वयं कुचल डालें।
मानव हैं दानव के आगे, हम शीश झुकाना क्या जानें।

स्त्री स्वर : धीरे-धीरे यह अनुभव किया जाने लगा कि देश उठ कर जाग रहा है। अब एक नयी राष्ट्रीयता, एक नयी कौमियत हिलोरें लेने लगी है। युगों के बाद भारतमाता फिर जागी है, फिर से देशवासियों में निराली लगन लग गयी है—

उठो सोने वालो सवेरा हुआ है, वतन के फकीरों का फेरा हुआ है।
जगो तो निराशा निशा खो रही है, चलो मोह की कालिमा धो रही है।
न अब कौम कोई पड़ी सो रही है, तुम्हें किसलिए मोह घेरे हुआ है?

उठो सोने वालो सवेरा हुआ है।
इस जागरण के हिमाद्रि तुंग शृंग से स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता की पुकार पर देश के जो अमर्त्य वीर पुत्र आगे बढ़े तो फिर कोई शक्ति उन्हें रोक नहीं सकी।

पुरुष स्वर : निराला ने जिस श्यामा का आह्वान किया था वह जमकर नाची। उस नृत्य की लय में स्वतन्त्रता आकर रही। और आज जब ये छन्द मन में प्रेरणा बन कर गूँजते हैं तो यह भी कहने को मन होता है कि इस गूँज का उपयोग होना चाहिए। छन्दों का यह क्रम जुड़ता रहे। यह गूँज परम्परा बन जाये, यही हम सबकी कामना भी है और प्रयास भी।
पर नहीं और भी स्मारक होंगे—देश का निर्माण उनका सर्वश्रेष्ठ स्मारक होगा और कठिनाइयों के इन प्रेरक छन्दों की गूँज उनकी सर्वोत्तम यादगार होगी। हम विश्वास करते हैं कि छन्दों का यह क्रम जुड़ता रहेगा और शहीदों के प्रति हमारी श्रेष्ठतम श्रद्धांजलि भी होगी।

1965 (अप्रकाशित)

चिट्ठियाँ और पत्र
(1956-1964)

पत्नी कमलेश के नाम चिट्ठियाँ

मित्र नामवर सिंह को सम्बोधित पत्र

पत्नी कमलेश के नाम चिट्ठियाँ

32/147, बगिया मनीराम, कानपुर
18.08.56

सबसे अधिक प्रिय,

यह पत्र मैं तुम्हें लखनऊ रोडवेज के बस स्टैण्ड से लिखना शुरू कर रहा हूँ ताकि कानपुर पहुँचते-पहुँचते पूरा हो जाये और तत्काल तुम्हारे पास भेजा जा सके। लखनऊ मैं परसों 16 को दोपहर में कानपुर से आया था और इस समय 3 बजे लखनऊ से प्रस्थान कर रहा हूँ।

यह हिस्सा 4 के लगभग नवाबगंज से लिखा जा रहा है। मेरे आगे ही एक लड़की अपने पति या सम्बन्धी के साथ बैठी है और मैं अपनी सीट पर अकेला बैठा हूँ, बादल घिरे हैं, हल्की फुहार पड़ रही है और मुझे तुम याद आ रही हो, रानीखेत की यात्रा याद आ रही है, जबकि मेरे पार्श्व में इसी लड़की की भाँति तुम बैठी हुई थीं, और मैं बजाय बाहर के दृश्य देखने के तुम्हारी छविमुद्रा का पान करने लगता था। सच रानी, मन विह्वल हो उठा है इस समय। दिनेश तुम्हारे जाने के बाद जब आया था तो उसने कहा कि श्याम अभी जाना उतना नहीं अखर रहा होगा, चार-छह दिन बाद और अधिक मन व्याकुल होगा। बात उसने बड़े अनुभव की और सत्य कही थी। पिछले 4 दिनों से सचमुच ही मन तुम्हारी याद कर-करके थकने लगता है। छोटे वाले कमरे में ही अधिकांशतः रहता हूँ और उसकी दीवारें लगता है कि काटने दौड़ पड़ेंगी। बार-बार तुमसे मिलने को उत्कण्ठित हो उठता हूँ। मन की दशा को कैसे लिखूँ।

उन्नाव 5 बजे : पत्र तुम्हारा सुधीर के हाथ लखनऊ चलते समय मिल गया था। एक दवा Senecio होम्योपैथिक भेज रहा हूँ। इस शीशी में दो खुराकें हैं—एक अभी रात में ले लेना और दूसरी कल सुबह। कुछ थोड़ा-सा मन में गरमी या सिर में दर्द लगे तो परेशान न होना। यदि यह दवा कल रात तक असर न करे तो परसों सवेरे ही मुझे सूचना मिल जानी चाहिए, जिससे कि दूसरी दवा भेज सकूँ। उम्मीद तो है कि इससे काम चल जायेगा।

लखनऊ में जिज्जी के घर में गया था। उनकी सबसे छोटी वाली लड़की की

3-4 दिन हुए मृत्यु हो गयी है। तिवारी जी भी मिले थे। जिज्जी कुछ दुखी थीं।

हाँ बिट्टन जी से कह दूँगा कि उनके ऊपर मैं कोर्ट में मुकदमा चलाने वाला हूँ, क्योंकि 15 अगस्त को मेरा पता लगाते हुए पाण्डेय जी वहाँ लखनऊ में दद्दा के घर आये थे। मैंने कल सोचा कि उनसे मिल लिया जाये। नतीजा यह कि 2 से 3 तक मैं उनके मोहल्ले का चक्कर लगाता रहा, पर पाण्डेय जी के दौलतखाने का पता नहीं लगा और मैंने कल रात फिर 10 बजे बशीरतगंज पहुँचकर ही खाना खाया, उस चक्कर में दोपहर का भोजन ही नसीब नहीं हुआ।

कानपुर छह बजे : रात तक चाय, कॉफी और दूध ही जीवनाधार रहा। अतः जो मुझे मानसिक और शारीरिक कष्ट उठाना पड़ा, उसके लिए हर्जाने का दावा मैं करना चाहता हूँ, यह दूसरी बात है कि पाण्डेय जी को ही मैं अपना वकील बनाऊँ। हाँ यह भी सोच रहा हूँ कि ब्रजेश को इस मुकदमे का जज बना दिया जाये। बिट्टनजी तक मेरा अभियोग पहुँचा देना और फिर उनसे कह देना कि अपने प्यारे खत में (जो वे पाण्डेय जी को लिखेंगी), इस कटु बात को वहाँ तक पहुँचा दें।

सुधीर को बुखार आ गया है तेजी से। अब समस्या सामने यह है कि यह दवा और पत्र लेकर तुम्हारे पास कौन आये। तुम्हारे यहाँ की दुकान में भाई साहब ही नहीं, बापू और मामा भी बैठे हैं, नहीं तो उन्हीं को दे देता। खैर यदि दवा न पहुँच पाये और तुम्हारे पास केवल डाक से खत पहुँचे तो कल कैलाश को दोपहर के पहले ही मेरे पास घर पर ही भेज देना।

स्वीटेस्ट, तुम चार लाइनों के छोटे से खत में टरका देती हो तथा आज 10 दिन में कुल दो खत तुमने लिखे, जबकि कायदे से अब तक 5 पत्र कम से कम आने चाहिए थे। आज लखनऊ से लौटते ही मैंने लेटर बाक्स खोला, घर पर पूछा, पर तुम्हारा कोई पत्र नदारद। यह बहुत बुरी बात है।

स्वीटी कमल, छुट्टियाँ मेरी 21 तक हैं, एक दिन को बुलवा लो न। मन तुमसे मिलना चाहता है, लाखों बातें हैं। किसी तरह से तिकड़म लगाओ। रानी फिर वहीं पढ़ाई-लिखाई की भी बातें हो जायें।

हाँ डार्लिंग एक बात मजेदार सुनो। नागार्जुन की एक कविता है 'कालिदास के प्रति' उसकी पहली लाइन है—'तुम कवियों की ईर्ष्या के विषय चिरन्तन' इसी वजन पर बहुत से दोस्त कवियों ने मिलकर एक कविता बनाई है 'श्याम के प्रति' 'तुम पतियों की ईर्ष्या के विषय चिरन्तन'। हाँ, सुरेन्द्र दीक्षित भी मिले थे और बनारस के मेरे एक प्यारे दोस्त और मधुर कवि केदारनाथ सिंह ने तुम्हें प्रणाम कहा है।

पत्र खूब लिखना।

शतशत चुम्बन भेजता और याद करता हुआ

तुम्हारा ही 'श्याम'

पुनश्चः एक कविता भेज रहा हूँ। अब से 8-9 वर्ष पहले यह मुझे पूरी याद

थी। एक दिन दद्दा कहीं जा रहे थे तो मैंने भाभी को जाकर यह कविता दिखाई, उन्हें भी यह अच्छी लगी, क्योंकि शायद उनके मन की बात थी इसमें। उन्होंने पूरी कविता उस अखबार से उतार ली और याद कर लिया था। कल उनके पुराने कागजों में यह लखनऊ में मिल गयी। भाभी ने मुझे दिखाया और मैं इसे लेते आया। भेज रहा हूँ, पढ़ना। मेरे मन की भी ऐसी अवस्था है, अन्तर इतना है कि इसमें प्रवासी शब्द है और तुम मेरे लिए प्रवासिनी बन बैठी हो। कविता सुरक्षित रखना। हाँ गीत की अन्तिम पंक्तियों से मैं सहमत नहीं हूँ।

हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रणय का गीत पूरा रहेगा। उन्मत्त होकर मैं गाता हूँ और गाने को उद्यत हूँ।

इस पते पर भी लिख सकती हो, पर लिफाफे पर तुम्हारा नाम कहीं न रहे।
77/1 हाल्सी रोड,
कानपुर।

•

32/147, मनीराम, बगिया, कानपुर
20.08.56

(5 PM)

कमल मधुरतम,

तुम्हारे ऊपर गुस्सा लगातार बढ़ता जा रहा था, और बहुत डाँटकर पत्र लिखने जा रहा था कि तब तक जीजा ने पत्र लाकर दिया, वहाँ रमेश बुक डिपो में डाकिया दे गया था, सवेरे से तीन बार Letter box मैंने खोला और अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिलने के आधा मिनट पहले बालकृष्ण से दिखलाया। पत्र का मिलना था कि गुस्सा वैसे ही गायब हो गया जैसे ईथर को हवा में रख देने से उड़ जाता है यानी कि मुझे Etherial Anger था। आज तुम्हारे पत्र के लिए जितना मैं तड़पा हूँ, डियरेस्ट तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकतीं। मैं सवेरे से बेचैन था। इतनी अधिक उत्कण्ठा या न मिलने पर गुस्सा तो उस दिन लखनऊ से लौट कर भी न आया था, क्योंकि उस दिन जब तुम्हारा पत्र न मिला तो चिन्ता हुई कि अब दवा और पत्र कैसे भेजा जाये (सुधीर को बुखार आ गया था) सोचा कि बापू की दुकान की ओर चलूँ, यदि कोई कैलाश, गणेश मिल जाये तो उनको ही दे दूँ। वहाँ पहुँचकर देखा कि भाई साहब फुटपाथ पर खड़े दुकान बन्द करवा रहे हैं, बापू थे नहीं। मैं साहस कर चला गया और फिर घुमा-फिरा कर उन्हें पत्र दे दिया और यह भी हालाँकि कह दिया कि यह अनुचित है कि आपके हाथ पत्र भेजूँ, पर इस समय क्षमा करना, क्योंकि और कोई रास्ता नहीं है। दवा की शीशी पत्र में रखी ही थी, उनसे केवल इतना कह दिया कि उसमें केवल एक टूटने वाली चीज है, जरा सँभाले रहिएगा।

दवा होम्योपैथिक की एक आध दिन में असर करती है। तुम मुझे परसों तक प्रतीक्षा करके समाचार दो, यदि कोई असर नहीं है तो फिर एक Sure दवा मैं भेजूँगा, वह काफी कीमती भी है, लखनऊ से मैं 8-10 दवाएँ जान आया हूँ। तुमको By the way इतना बतला दूँ कि लखनऊ जाने का मेरा प्रमुख उद्देश्य इन दवाओं की जानकारी ही थी। असल में यहाँ होतीं तो, अब तक मैंने सब ठीक कर लिया होता, पर तुम्हारे वहाँ होने के कारण बड़ी ही असुविधा है। किससे दवा भेजूँ, कैसे Instructions दूँ और कैसे समाचार जायें! कभी-कभी तो मन होता है कि छोड़ूँ इस लोकलाज को, आखिर मैं बेशर्म तो हूँ ही और बिना बुलाए ही तुम्हारे यहाँ आ जाऊँ। अम्मा से भी दो एक बार तुम्हारे बुलाने को इशारा किया तो उन्होंने कहा कि अगहन में (नवम्बर शायद पड़े) आवेगी, गौने के बाद ही, इससे पहले कैसे आ सकती हैं।

ऐसी स्थिति में मुझे तो लगता है कि अक्टूबर में भी मैं दशहरे में तुमसे न मिल पाऊँगा, क्योंकि तुम्हारे यहाँ कोई इतनी Care या बुद्धिमानी दिखाता ज्ञात नहीं होता कि एकाध बार झूठमूठ ही बुला भेजे। जब तुम यहाँ थीं तब तो अम्मा ने दो-चार बार कहला भेजा कि मिल जायें, पर अब वह कुछ नहीं दिखाई देता। खैर, तुम्हारा मन तो वहाँ बहनों-भाइयों की उछलकूद में रमने लगा और मेरी याद अब उतनी नहीं आती, पर जरा मुझसे मेरी उत्कण्ठा और व्याकुलता दिन-दिन बढ़ती जाती है। Darling you won't believe but I was unable to sleep today in the noon. I was merely tossing over the bed. I who was a object of complaints from you that you sleep too much, you want to sleep for whole of the dayAnd whole of the night. I often try to concentrate over studies but it's all futile. Since morning I could not read even two pages of a book, after reading one or two sentences my mind goes to you, I begin to brood and recollect about you, about the days spent with you. Sometimes you and often your words and deeds creep in my mind. In such a state of mind you may imagine how I can read or think about literature. I repeat sentences and words but I do not understand them as if their meanings and implications have gone with you, Kamal, my sweet heart, infact you have given new meanings, new ideas and new outlook about the things and world and now this changed out look is again in vacuum without you.

I am glad to know Rani, that you are reading something and that you have finished 'Meghdut' the most sweet and enchanting work of that immortal poet 'Kalidas.' Here I May tell you the psychology of present state of your mind. Now a days due to seperation of your clear one, you are at an state of emotional temprament and so you have liked the emotional part that of message of 'विरह' in the 'उत्तर मेघ'। But the 'पूर्व मेघ' Part of that book is neither less important nor less beautiful. The descriptive beauty shows the keen observation to the poet and best of it is that poet

has a deep and profound love and aquaintance with his country; one thing more, this portion depicts the cultural aspect of that age. I have marked some loving passages which are very much dear to me. You may read them again, one is 'तस्योत्संगे प्रर्णायेनि स्रस्त गंगादुकूलम' and now you may Imagine this simile with the position when you are lying in my lap (गोद) in the same position as described in that stanza.

Dear, the whole book is a marvellous example of poetic genius and it is the most lovely garland of 'विरहीजन' live I and you. You need not send that book as I have another copy with me, instead to sending it to me you may please quote some pieces which appeal to your liking. One thing more please do write atleast one page in English in every letter, so that you may have a practice of writing in English. This will prove helpful for your exams also.

प्रिये, जानती हो कहाँ सोता हूँ, छोटे वाले कमरे में तुम्हारे ही पलँग पर, पर उतना चौड़ा पलँग इधर-उधर करवटें बदलने का ही काम देता है। इस समय मेरी आँखों के सामने रानीखेत का वह दृश्य फिर आ गया है, जहाँ अपने होटल से हम लोग थोड़ा-सा ऊपर जाकर एक पुल की मुँडेर पर बैठा करते थे।

पत्र तुम्हारे सब मेज पर नहीं, जेब में डाले रहता हूँ और जब मन होता है निकालकर पढ़ने लगता हूँ।

तुम्हारे कॉलेज जाने के बारे में क्या निश्चित हुआ और हाँ 'भारत दुर्दशा' की डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल वाली पुस्तक तुम भेज देना, तुम्हारे पास और भेज दूँगा, अभी भाभी के लिए लखनऊ भेजनी है।

Picture के कार्यक्रम में यदि घर भर आ सकता है तो फिर तुम क्यों नहीं आ सकतीं। आ जाओ दुलारी प्यारी कमल, तुम्हें जिससे देख तो लूँ। तुम्हारी तस्वीर ही आजकल मेज पर रखी सहारा देती है।

बालकृष्ण कह रहे हैं कि भाभी को लिख दो कि श्याम की और मेरी दशा एक ही है, तुम लोगों की याद में हम लोग तड़प रहे हैं। उसकी भी बीवी आजकल मायके में है नागपंचमी से ही)।

स्वास्थ्य मेरा ठीक हो रहा है। तुम चिन्ता न करना। मेरा घूमना और भीगना जारी है बाकायदा। आज मैं सवेरे श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र, Vice chancellor, सागर यूनिवर्सिटी से मिलने गया था। उनके यहाँ स्थान होने पर उन्होंने मुझे वहाँ ले लेने का वादा किया है। इस साल भी वहाँ जगहें थीं, पर मुझे पता न चल पाया था।

अपने समाचार देती जाना, पढ़ना भी खूब। यदि 'नीलकण्ठ' पढ़ चुकी हो तो मुझे भेज देना। अपनी सम्मति भी स्पष्ट रूप से उसके ऊपर लिखना। M.C. को लेकर मैं बहुत परेशान हूँ, परसों शाम को दवा भेजूँगा। फिर हो सके तो कैलाश को

किसी बहाने भेज देना, न हो सुधीर के ही बहाने। सुधीर का बुखार अभी उतरा नहीं है, कुछ कम है। कल श्याम नारायण शायद कुछ सामान लेकर आवेंगे। पत्र जैसे ही मिले, वैसे ही समाचार देना। एक पत्र परसों सवेरे ही डाल देना कि M.C. हुआ या नहीं। चिन्ता न करना।

With Profound Love,

तुम्हारे लिए पागल
'श्याम'

•

32/147 मनीराम बगिया, कानपुर
21.8.56

प्रियतमे,

कल एक खत लिख चुका हूँ, जब तक यह पहुँचेगा, तब तक वह मिल चुका होगा। सबसे जरूरी बात जो कहनी है, वह यह कि पत्र मुझे, देवीशंकर C/o उमाशंकर केदारनाथ, हाल्सी रोड के पते पर भेजा करो। जो खत Urgent हों, उन्हें बगिया के पते पर भेजो पर उनमें ऊपर ए.डी. शंकरन लिखा करो बजाय देवीशंकर अवस्थी के तथा C/o मुरलीधर पाण्डेय अवश्य लिख दिया करो, क्योंकि यदि देवीशंकर के नाम से मनीराम बगिया चिट्ठियाँ आती हैं तो डाकिया रमेश बुक डिपो में दे जाता है और वहाँ से एकाध चिट्ठी के गायब हो जाने का खतरा है। जैसा कि तुम जानती हो कि Newly married couples की चिट्ठियाँ अक़सर लोग पढ़ना चाहते हैं।

श्यामनारायण सिंह आ रहे हैं, जरा इनकी खातिर करा देना, बिल्कुल नौकर की तरह Treat न करना।

आज लेख को पूरा करने के निमित्त अभी अंचल के संग्रह 'वर्षान्त के बादल' के पन्ने उलट रहा था। एक स्थान पर मन अटक गया।

सारी रात हवा गरजी है, बादल बरसे सारी रात।
बिजली की तड़पन में मेरे प्राण न सोये सारी रात।।

पर रात ही क्यों, दिन भी तो इन छुट्टियों में उतना ही दूभर हो उठा है—

आज बरसते बादल, दिन काटे न कटे।
धुँधला-धुँधला सूनापन गहरा होता है,
बिछुड़न डूबा मन व्याकुलता में रोता है
आ जाती हो लौट-लौट कर बार-बार तुम मेरे मन में
आँसू रुकी मचलती आँखों की श्यामलता ले चितवन में
दग्ध पपीहे सा मेरा मन
जल बूँदों के गीत बिसरकर

प्राण! तुम्हारा नाम रहे
आज बरसते बादल दिन काटे न कटे।

इसी संग्रह में 'अंचल की एक और कविता है 'मेरी तुम'। वह कविता मेरे बारे में अत्यन्त सही है। लो, सुनो—

मेरे पौरुष की दृढ़ता का भाल झुका—गौरव टूटा
मिलते ही पहले दिन तुमने मेरा विजयी मन लूटा
डोल उठा संकल्प हुआ अस्थिर सुख का विश्वास अचल
मेरी अविनाशी क्षमता में जागी कैसी क्षुब्ध अनल
जी करता है कर दूँ, तुमको नयी शक्ति का उदयाचल
तुम्हें विजित जीवन पर छायी कहूँ अमरता की हलचल।

तुम्हें तमाम कविताएँ सुना-सुना कर बोर कर रहा हूँ, यद्यपि यह जानता हूँ कि तुमको कविता-साहित्य आदि से उतना प्रेम नहीं है, पर आदत से और पेशे से मजबूर हूँ। इस सम्बन्ध में एक मजेदार कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। पुराने जमाने में किसी गुरुकुल में एक विद्यार्थी पढ़ता था, उसे पहलवानी, कुश्ती आदि का बड़ा शौक था और वह हर समय मल्लयुद्ध की ही बातें करता था। उसका विवाह हुआ, गुरुओं ने आशीर्वाद देकर उसे गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने की आज्ञा दी। सुहागरात को उसने रात के दो बजे के लगभग आकर अपने गुरु का दरवाजा खटखटाया। गुरु जी ने घबराकर पूछा—बात क्या है, खैरियत तो है। उसने कहा कि खैरियत ही तो नहीं है। 'वह' तो बैठी रो रही है। गुरु जी ने कहा-सब हाल विस्तार से बताओ। चेले ने कहा कि "जब हम लोग शयनकक्ष में गये तो वह मुँह झुकाए बैठी रही, मुझे बात करने का कोई Topic न सूझा तो मैंने कहा कि लाओ हाथ बढ़ाओ, तब तक हम पंजा लड़ावें। मैंने पंजा लड़ाने के लिए हाथ बढ़ाया तो वह मुँह घुमाकर रोने लगी और मैं तब से हैरान हूँ कि कैसे चुप करूँ।" गुरू जी ने डाँटते कहा कि तू अपनी आदत से वहाँ भी मजबूर रहा। सुहागरात प्रेम करने के लिए होती है कि पंजा लड़ाने के लिए।

यही दशा इस समय मेरी है, मैं तुम्हें कविताएँ लिखता जा रहा हूँ। खैर!

'युगचेतना' का एक अंक भेज रहा हूँ। 'साहित्यकार' का भी नया अंक आया है, उसे एकाध दिन बाद भेजूँगा, पर मेरी सारी पत्रिकाएँ सुरक्षित रखना। उपन्यास 'चाणक्य' भी तुम्हारे पढ़ने के लिए भेज रहा हूँ। इसको शीघ्र ही पढ़कर वापस कर देना।

कल मेरा कॉलेज 11.45 से 2.45 तक का है। चार बजे के लगभग घर आऊँगा। यदि श्यामनारायण जल्दी में हों तो फिर डाक से लिखना। जल्दी में चार लाइन घसीटकर फुरसत न पाना। बाकी सब ठीक ही है। सुधीर अभी पूरी तरह अच्छा नहीं हुआ। अजय को भी आज बुखार आ गया है। रेडियो पर गाना

सुनकर वह अकसर कहता है कि मोटर वाली मामी बोल रही है। उसे इस समय 103.3 बुखार है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। भीगने-भागने से थोड़ी-सी खाँसी गले में खराश हो जाने के कारण हो गयी थी, पर अब वह भी ठीक हो रही है। लो मेरे हजार चुम्बन स्वीकार करो,

मिलने को उत्सुक

'श्याम'

•

1 PM

21.08.56

अभी-अभी मैंने एक डॉक्टर को और Consult किया, उन्होंने सबसे अधिक प्रभावशाली एक इन्जेक्शन का नुस्खा लिखकर दिया है। नुस्खा तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। यदि थोड़ा Bold बन सको तो वहाँ किसी डॉक्टर के यहाँ इनको लगवा लो। अब मैं क्या बताऊँ, तुम्हारा वहाँ भेजना मुझको बहुत अखर रहा है, इस बात को लेकर। यह इन्जेक्शन, तो पहले लगातार दो दिन लगेंगे और फिर दो दिन का Gap छोड़कर फिर दो इन्जेक्शन लगातार लगेंगे। चारों इन्जेक्शन 12-13 रुपये के लगभग आवेंगे। पहले दो शायद 1 रुपये में आ जावेंगे, पर दूसरे दोनों 11-12 के हैं। यदि तुम लगवाने की व्यवस्था वहाँ कर सको तो इन्जेक्शन मैं भेजूँ। जल्दी सूचना दो।

कपड़े ज्य़ादातर तुम्हारी रुचि के पहनता हूँ यानी धोती, कुर्ता (रेशमी) और नागरा तथा जंगाने का अब प्रश्न नहीं उठता, क्योंकि ठीक से नींद ही नहीं आती है। रानी, मैं तो खुद तरस रहा हूँ कि कब कमल आकर परेशान करे, कब मैं उसको घूँसे मारूँ और दबाकर चूम लूँ।

दिनेश का Appointment नहीं हो सका, क्योंकि वे Fit in नहीं करते थे Qualification में। दिनेश तुम्हारी बहुत याद करते रहे। इस समय रात के बारह बज रहे हैं, सामने मेज पर तुम्हारी फोटो रखी है, उसे उठाकर चूम लेता हूँ, पर इससे तो दर्द और भी उभरता है। सच में, इस समय मन किस कदर छटपटा उठा है, तुमसे मिलने के लिए। मन बन्धन तोड़ने लगता है मर्यादा के, बरसाती नदी के समान।

भेंट की आशा में,

तुम्हारा ही तो बहुत प्यारा

'श्याम'

32/147, मनीराम बगिया, कानपुर
24.08.56

मेरी कमल, Dearest to the soul,

मेरे मन में इस समय कितनी पीड़ा है, इसे इस कागज पर कैसे लिखूँ? आज तीन-चार दिन हुए उत्कण्ठित हृदय लेकर घर आता हूँ, कम्पित हाथों से लेटर बॉक्स खोलता हूँ और किंचित भर्राए गले से आकर पूछता हूँ 'मेरी कोई डाक'। और उत्तर हर व्यक्ति से 'न'। बोलो रानी, यह क्या अच्छी बात है, जो तुम मुझे इतना कष्ट देती हो? अभी-अभी सवेरे का गया रात 10 बजे आया और तुम्हारा कोई समाचार न पाकर मेरे आँसू उमड़ पड़ना चाहते हैं, बरबस रोके हूँ। कहते हैं कि पुरुष की आँखों में आँसू न आने चाहिए और सचमुच मैं कड़े दिल का गिना जाता रहा हूँ, जिसके कि शीघ्र आँसू नहीं आते, पर कमल डियर, तुमने न मालूम क्या बना दिया है कि हर बार याद कर मन उमड़ पड़ता है, और फिर जब चार दिन से सान्त्वना का पत्र भी न मिला हो। मैं नियमित रूप से पत्र लिख रहा हूँ, पर तुम्हारी ओर से कोई उत्तर ही नहीं मिलता। मन न माना, इसलिए शिकायत कर दी, खैर, पर अब परेशान न करूँगा, अपने दर्द को मन के भीतर दबा लूँगा। क्यों अपनी पीड़ा की शिकायत कर तुम्हारे मन को भी दुखाऊँ, तुम्हारे मन के हर्ष को कम करूँ। यहाँ मन नहीं लगता, सोचता हूँ 4-6 दिन की छुट्टी लेकर कहीं बाहर ही घूम आऊँ।

कल बापू और भाई साहब मिले थे। बापू से सम्बन्धित एक Application का Draft भी मैंने लिखा था। भाई साहब ने यह भी कहा कि बापू ने कहा है कि यदि अवस्थी जी चाहते हैं तो जब से चाहें, भरती करा दें। उनसे तो मैंने कुछ नहीं कहा, पर यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि इसके द्वारा वे क्या कहना चाहते हैं। क्या उनका मतलब है कि मैं तुमको वहाँ से लेकर कॉलेज आऊँ और फिर-आने-जाने का प्रबन्ध भी सब कर दूँ। यदि ऐसी ही बात है तो फिर वहाँ बुलाया क्यों था? मैं यहाँ अपनी रुचि का आप प्रबन्ध कर लेता। मैं वहाँ इस तरह करने नहीं आऊँगा। भाई साहब कॉलेज आवें, मैं फार्म भरवा दूँगा। उसको वे ले जाकर ऑफिस में जमा करें, मोटर वाले से बात भी करवा दूँगा। तुमको लेकर कॉलेज आवें, वहाँ तुम्हारे नाम लिखने व Classes की सब व्यवस्था करा दूँगा और यदि यह सब करने में वे असमर्थ हैं तो फिर सूचना देना, मैं दूसरा Step सोचूँगा।

भाई साहब, यह भी कहने लगे कि किसी दिन हो जाइए। मैंने हाँ हूँ में बात टाल दी, पर मुझे थोड़ा बुरा अवश्य लगा, यह बुलाने का क्या ढंग है? यदि उन्हें साथ ही बुलाया था तो यह कहते कि आपको अम्मा ने बुलाया है, कल आप अवश्य

आ जाइए या अन्य किसी ढंग से कह सकते थे, यह चलती बात मुझे बुरी लगती है। खैर पर तुम किसी से कुछ मत कहना, यह तो केवल तुम्हारी Information के लिए लिख दिया।

इन्जेक्शन लेने शुरू कर दिये होंगे। उनका असर शीघ्र लिखो। प्रिये, तुम्हारा पत्र कई दिन से न आने से मुझे यह भी शंका है कि कहीं तुम्हारी तबीयत खराब न हो गयी हो अतः यदि बहुत अनुचित न समझो तो शीघ्र ही समाचार दे दो, वरना कोई बात नहीं है, मैं मजबूर न करूँगा। अपने जीवन का तो एक ही सिद्धान्त रहा है क्रि अपने सुख के लिए दूसरों को कष्ट मत दो।

हरदोई से पाण्डेय जी का पत्र आया है। कोई खास बात नहीं लिखी, बस कुशल-क्षेम लिखा है और यह पूछा है कि लखनऊ मैं कब तक आ रहा हूँ। मैंने उत्तर कल दे दिया है। बिट्र्टन से बता देना।

लखनऊ रेडियो का मेरा कार्यक्रम शायद 25 सितम्बर को फिर होगा, अभी बिल्कुल भी निश्चित नहीं है। हाँ तुम्हें एक चीज लिखना भूल गया था कि इस बीच एक दिन 'जोगन' देख आया था और कल 'Helen of Troy' देखना चाहता हूँ, सोमवार-मंगल तक 'देवता'। चलोगी तो नहीं किसी में। तुम्हारे बालिका वाले कार्यक्रम का क्या हुआ। तुम यदि पसन्द करो तो बालिका में भी Admission ले सकती हो और सब समाचार देना। घर में सबको मेरा यथायोग्य। जिज्जी तो चली गयी होंगी। बिट्टन जी एवं ब्रजेश को मेरा स्मरण कराना।

कल क्राइस्ट चर्च वाले जनेश्वर वर्मा मिले थे। उन्होंने विवाह की बधाई देते हुए ससुराल के बारे में पूछा, जब मैंने बताया कि कैलाश चन्द्र पाण्डेय की छोटी साली से मेरा विवाह हुआ है तो कहने लगे कि उनके यहाँ तो एक बार मैं खाना भी खा आया हूँ। अरे आज दोपहर में सुरेन्द्र पाण्डेय का लड़का धीरेन्द्र पाण्डेय मिला (धीरेन्द्र का नाम बालकृष्ण ने हरिजन रखा था। कैसे? यह सब मिलने पर बताऊँगा) वह कहने लगा कि अवस्थी जी आपकी शादी विपिन की बहिन के साथ हुई है न? कहने लगा कि उनके घर के Each and every member of the family को जानता हूँ और वे लोग भी मुझे By name जानते हैं।

रात्रि के 12 बज रहे हैं। इस समय मन बड़ा विक्षिप्त है, अब बन्द कर रहा हूँ यद्यपि नींद न आवेगी।

शतशत चुम्बनों के साथ,

तुम्हारी ही नहीं,
तुम्हारे पत्र की भी प्रतीक्षा में,
'श्याम'

•

24.08.56

पुनः अभी तय नहीं है, पर शायद इतवार को पिकनिक पर बिठूर जाऊँ। अपने प्रोग्राम लिखना।

'श्याम'

25.8.56 (प्रातः 8 बजे) कल रात बहुत ऊटपटाँग लिख गया हूँ क्षमा करना। उस समय की मानसिक अवस्था ही ऐसी थी।

'श्याम'

•

Department of Hindi
D.A.V. College, Kanpur
25.08.56

कम्मो प्रिये,

देखो तुम्हारे ऊपर 10 पेज का कर्ज लदा हुआ है और तुम हो कि ब्याज चुकाने का भी नाम नहीं लेती हो। यह बहुत बुरी बात है। एक भी खत तूने पिछले 10 दिन से नहीं लिखा और जब नक्शा दिखाना होगा, तब मेरे ऊपर असर दिखा देगी क्यों न कमोल।

परसों शाम को लखनऊ गया था, पर बशीरतगंज तक गया ही नहीं, बाहर ही बाहर कल सवेरे लौट आया। रात सुरेन्द्र के यहाँ रहा था। सुरेन्द्र की पत्नी ने तुम्हें लखनऊ बुलाया है और मैं उन्हें बुला आया हूँ।

और रानी, एक मजेदार बात बताऊँ। कल रात 10 बजे के लगभग भाई साहब और भाभी सिनेमा (दो आँखें और बारह हाथ) देख कर शर्मा रेस्ट्रां की ओर आये। बालकिशन वगैरह के साथ मैं खड़ा था, भाई साहब थोड़ा-सा झेंपे, फिर साथ ही हम लोगों को भी ले गये। खैर खाने-पीने का मन हम लोगों का था ही नहीं, सिर्फ एक-एक कोका-कोला पिया। भाई साहब ने कहा कि 'दो आँखें और बारह हाथ' बहुत अच्छी तस्वीर है, तो कम्मो डार्लिंग तुम कब उसे देखने चलोगी? तुम लोग 'नया दौर' जो देखने जाने वाली थीं, उसका क्या हुआ?

तुम जो उस दिन अस्पताल हो आयीं, उसके लिए बिट्टी दिदिया बहुत खुश हैं, तुम्हारी बड़ी प्रशंसा कर रही थीं। बिट्टन का वहाँ जाने के बारे में क्या निश्चय हुआ। चित्रा, सन्तोष को कल यहाँ भेज देना, मैं कल शायद दोपहर में तीन बजे की गाड़ी से जाऊँगा, अतः दोपहर में ही भेज देना।

और जो नये समाचार हों, देना। दीवाली की बधाइयाँ अभी से। तुम्हारे लोगों के फार्म कालेज में कब तक भरे जावेंगे? दीवाली की छुट्टी कितने दिन की हो रही है?

कल रात तेरी बड़ी याद आती रही। मैं बिहारी सतसई पढ़ रहा था और जितना

ही पढ़ रहा था, उतना ही तुम्हारी याद भी आ रही थी। कल यदि शाम की गोष्ठी 9.30 बजे न समाप्त हुई होती तो मैं शायद कल रात वहाँ पर अवश्य आता।

और अपने हाल दो। तुम चिकन की साड़ी ले आयी या नहीं। यदि लखनऊ से मँगाना चाहती हो तो मुझे रुपये दे देना, मैं वहाँ से लेता आऊँगा।

जवाब जल्दी से देना। आजकल तुमसे रोज कॉलेज आकर मिलने का मन होता है और नये हाल क्या हैं? बताओ न डियर।

अच्छा लो अनगिनत चुम्बन।

तेरा ही

तो

•

77/1, Halsey Road, Kanpur
हिन्दी विभाग, दयानन्द कॉलेज, कानपुर
30.08.56

Dearest Darling,
My own Kamal.

आज सवेरे लखनऊ से लौटा, यद्यपि जानता था कि तुम्हारा पत्र मुझे आज मिलेगा नहीं, पर मन में कहीं एक क्षीण आशा विद्यमान थी कि शायद मिल ही जाये, पर आशा दुराशा मात्र रही। तुम्हें तो मुझे तड़पाने में ही मजा आता है न? मनोविज्ञान में इसे Sadism कहते हैं।

कम्मो डियर, तुम यह जानने को उत्सुक होगी कि लखनऊ जाने का मेरा मिशन सफल हुआ या नहीं? मुझे अफसोस है कि हम लोग सफल नहीं हुए। कैलाश बाबू काफी जिद्दी किस्म के आदमी हैं, वे झुकने के लिए तैयार नहीं हुए और न हमारे प्रस्ताव को स्वीकार किया। वास्तव में उसके कुछ और Complication भी पैदा हो गये हैं। जब तुम्हें मिलूँगा, तब बताऊँगा। मुझे ऐसा लगता है कि उस लड़की का Love-Affair और भी किसी से।

भाभी तुम्हें बहुत जोरों से पूछ रही थीं। मन्नो जिज्जी वहाँ पर गयी थीं, अनूप की तबीयत ठीक नहीं थी। बिट्टन के बारे में भी भाभी पूछ रही थीं। परसों अपनी शादी की दूसरी मास तिथि है। याद है न? उसे Celebrate कर लेना, थोड़ी देर चाहे बाहर ही घूम आना और मुझे एक प्यारा सा खत जरूर लिखना।

My sweet heart, now come to the real problem. What is the reaction of those injections? Have they gone futile and if they proved useless, have you taken advice from that compounder? Please intimate me with latest developments. One thing more, I think you and bittan both of you, should get your urine examined to ascertain the pregnancy. Tomorrow I shall be

going to Dr. Seth about bittan's admission and then I will talk about the examination of urine.

Ask your compounder to give advice and if he fails to do anything, inform me at once I will try once more either medically or mechanically.

What about your studies? Has form arrived? No then write down a letter to the registrar again. I think 'Bhai Sahab' must have taken admission by this time.

कल Tablets भी भेज दूँगा, पर वे उतना Effective नहीं होंगे जितना कि यह इन्जेक्शन होंगे। आज ही श्याम नारायण के द्वारा अपना मन्तव्य सूचित करो। मैं तो समझता हूँ कि मैं इन्जेक्शन भेज दूँ और तुम दो दिन पहले और फिर दो दिन का Gap देकर किसी अपनी Friend आदि से मिलने के बहाने इन्जेक्शन लगवा आओ। इस समय थोड़ा Bold बन जाओ और जरा लज्जा का त्याग कर दो, नहीं तो फिर खासी परेशानी में फँसना पड़ेगा। इस समय मैं भी बहुत अधिक Perturbed हूँ। जल्दी सूचना दो।

तुम्हारा ही तो

'श्याम'

इन्जेक्शन का पर्चा नहीं भेज रहा, क्योंकि लेकर तो मैं ही भेजूँगा, तुम कहाँ खरीदने जाओगी, पर अपने विचार लिखो

'श्याम'

•

4.30 PM

मनीराम बगिया, कानपुर

02.09.56

बड़ी सुहानी कम्मो रानी,

अभी-अभी 'कल्पना' पढ़ रहा था, उसमें एक कहानी है, 'देवी या दानवी'। कहानी की एक पात्र है 'इन्द्रा'। इन्द्रा को पढ़ते ही मेरा मन भर आया, इस समय आँखों में आँसू आ गये हैं। क्यों? तुम्हारी याद अत्यन्त तीव्रता से आयी और मैं तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। शायद कैलाश आता होगा, उसको दे दूँगा।

एक और बात सुनो प्रिय, थोड़ी देर पहले सो रहा था, उतने में रेखा की एक सहेली लीलो आयी। उसकी आवाज कान में पड़ी और मैंने सपना देखा कि कैलाश आया है और कह रहा है, जीजाजी लो यह पत्र लो, कमलेश जीजी ने दिया है। 'बस' नींद खुल गयी और मैंने पूछा क्या कैलाश आया है? मालूम हुआ नहीं।

कल जब बड़े चौराहे से तुम गुजर रही थीं तो मुड़-मुड़ कर मैं देखता जा रहा था कि एक बार तो मुड़ कर तुम भी देख लो, पर मैं जानता हूँ कि भाई साहब और

बिट्टन के संकोच के कारण तुमने सिर नहीं घुमाया। घर में रात आकर मैंने बता दिया था कि कमलेश इत्यादि के साथ मैं संगीत सम्मेलन गया था। दिदिया कह रही थीं कि मुझे मालूम होता तो मैं भी चलकर कमलेश को देख आती।

तुम्हारे पढ़ने के बारे में मैं Registrar को Special permission के लिए लिख रहा हूँ। देखो यदि मिल जाये। अम्मा कह रही हैं कि Admission नहीं लिया तो Tutor वगैरह से पढ़ती रहें। मुझको बहुत डाँटा कि सब तुम्हारी वजह से हुआ। एक और मजेदार बात याद आ गयी। अभी 4-5 दिन पहले अम्मा कह रही थीं कि मुझे आजकल ऐसे सपने आते हैं कि मुझे लगता है कि श्यामे की बहू के लड़का होने वाला है। मैं मन ही मन मुस्कराता रहा। उम्मीद है कि आज तुम्हें नहा-धोकर छुटकारा मिल गया होगा। अम्मा और कुछ तो नहीं कह रही थीं। दूसरी पुड़िया खाने की तो जरूरत नहीं होगी। वह नुस्खा जो मैंने Injections के साथ भेजा था, सुरक्षित रखना।

बिट्टन ने यदि न शुरू की हो तो उनसे क़हो कि दवाइयाँ खानी शुरू कर दें, क्योंकि वे ताकत की दवाइयाँ हैं और उनके लिए तो इस Pregnancy Period में और भी आवश्यक है। मैं चाहता हूँ कि 5 सितम्बर से तुम आना शुरू कर दो।

यशोधरा भाभी ने भेज दी है, उन्हें दूसरी मिल गयी है, उसे किसी के हाथ भेज दूँगा। 'अर्थशास्त्र में मूलाधार' नामक एक किताब Economics की मेरे पास है, कहो तो भेज दूँ।

नये हाल सभी देना। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना, क्योंकि इसके बाद यदि खाने-पीने में जरा गड़बड़ी करोगी तो फिर Women's diseases में बुरी तरह फँस जाओगी। ...सम्बन्धी शिकायत ऐसे तो तुम लोगों को रहती है। इसलिए जरा दूध, घी और फलों का नियमित प्रयोग करना तथा अधिक गरम एवं अधिक ठण्डी पर बादी वस्तुओं का कुछ दिनों के लिए बिल्कुल बहिष्कार कर दो जैसे कि घुइयाँ आदि।

अपने और समाचार देना। खुश हो न? पढ़ाई बराबर किये जाओ। उसमें किसी प्रकार की ढील न पड़नी चाहिए? तुम्हें Good second class लाना है, इतना ख़याल रहे।

हाँ तुम्हें Family planning centre में मुझे दिखाना है, जिससे कि तुम्हारा danger period निकाला जा सके।

सारे समाचार विस्तार से देना। तुम्हें जिस चीज की आवश्यकता हो निःसंकोच लिखना। मेरे मन में तो यह साध होती है कि कमल मुझसे कुछ लाने की इच्छा तो प्रकट करे, पर तू है कि कह देती है कि मुझे किसी बात की आवश्यकता ही नहीं है।

अच्छा, अब बोर तो नहीं हो रही है मेरी सबसे प्यारी कमल, ले पत्र समाप्त कर रहा हूँ। I have not written any thing in English in this letter but you

will try in full then atleast a part of that answer would be in english. I am sending back that envelope, you may see it again.

With love which is fathoms
deep and always encircles you.
yours only
'Shyam'

पुनः आज मेरे एक बहुत घनिष्ठ मित्र राधाकृष्ण अवस्थी (जिनसे विवाह में न आने के कारण मैं गुस्सा था) मिले थे। वे और उनकी श्रीमती जी हम लोगों का सप्ताह के पहले किसी दिन entertain करना चाहते हैं Valerio या Shadygrove में। तुम्हारा क्या विचार है। सूचित करना।

•

रात्रि दो बजे के लगभग
हिन्दी विभाग, दयानन्द कॉलेज, कानपुर
14-15.12.56

My Darling kammo,

I have just finished the fairing work of article. नयी कविता : कुछ सैद्धान्तिक विचार। I was deeply longing for when doing this job and again I am in dire necessity of you after finishing it. I wish that I could have received a warm kiss from you as a reward for this article; but my dearest you are at distance from me and perhaps may be sleeping a sound sleep and this is all useless wishful thinking. I have one thing more with me to be faired up, will you help me in that?

कमल पलकें बुरी तरह भारी हो रही हैं, आँखें झपक रही हैं और मैं बुरी तरह drowsiness महसूस कर रहा हूँ। अतः अब सवेरे-सवेरे 10 बजे। आज प्रातः 4 बजे के लगभग मैं तुम्हारा बड़ा ही मधुर सपना देख रहा था कि First class compartment में तुम्हारे साथ बैठा हुआ रेल से कहीं जा रहा हूँ। थोड़ी देर बाद तुम्हारी गोद में सिर रखकर सो जाता हूँ। फिर न जाने।

हाँ धर्मयुग की फोटो के बारे में डियर, लोगों के क्या Reactions रहे? किसने-किसने देखा? यहाँ तो काफी लोगों ने देखा है, कॉलेज में भी कई अध्यापकों ने देखकर बधाई दी। फोटो मैंने नहीं फड़वाई। सबको देखने दो न, फिर यदि उससे मैं फाड़ने को कहता तो वह उत्तर यह न देता कि फिर छपवाई ही क्यों है?

Girl's section के Librarian से मैंने कह दिया है, और अब उससे परिचय करा दूँगा तुम लोगों का। जिस किताब की आवश्यकता होगी, वह तुम लोगों को अपने या बालकृष्ण के नाम से Issue कर देगा।

प्रिये, उस दिन तुम लोगों को चाय न पिलाने का कारण यह था कि पाण्डेय जी आये नहीं थे, भाई साहब बड़े भी हैं, और College में Students भी हैं। Staff के कमरे में ले जाकर पिलाते नहीं बना। कुछ संकोच भी हो आया, तुम सोच ही रही थीं कि कैसे लड़के घूर-घूर कर देख रहे थे।

'श्याम'

•

हिन्दी विभाग, दयानन्द कॉलेज, कानपुर

मेरे मधुर हृदय,

ए.डी. शंकरण के नाम Addressed तुम्हारी पाती आज मिली। कैलाश के हाथ एक पत्र भेज भी चुका हूँ और एक पत्र बिट्टन के हाथ सवेरे मिला होगा। जरा सब मिलाकर जोड़ डालो कितने हुए।

Dearest, आज तुम्हें कॉलेज में देखकर कितनी प्रसन्नता हुई, उसका अन्दाज नहीं कर सकती हो, पर तुमसे वहाँ पर एक वाक्य भी नहीं बोल सका, क्योंकि वहाँ पर मुझे अध्यापक की गुरु गम्भीर मुखमुद्रा (जिसमें भृकुटियाँ जरा टेढ़ी हों, हँसी गायब हो) बनानी पड़ रही थी, पर मन हो रहा था कि बढ़कर तुम्हें बाँहों में भर लें और तेरे शिरीष मृदुल कपोलों पर दो-दो चपतें उस समय लगा देता, जब तुम क्लास रूम से बढ़कर तेजी से मेरी ओर आना चाह रही थीं। बिट्टन से मैं बात कर रहा था और इधर-उधर तुमको ढूँढ़ रहा था। तुम दिखाई नहीं दे रही थीं और मैं परेशान। सोचा कि जरा सहेलियों की लज्जा कर रही होगी। तब तक तू कूदती दिखाई दी। फिर क्या कहूँ उस क्षण को। मैं असल में लगभग 11-12 से Girl's section के Staff-Room में बैठा हुआ था, तुम लोगों का Mrs. Saxena वाला Class हो रहा था। Staff-Room में आकर उन्होंने ही मुझे बताया कि विजय लक्ष्मी और कमलेश आयी हैं।

पर तुम लोग काफी बुद्धिमान निकलीं। मैं दो बार 3.15 पर वहाँ गया पर आप लोग नदारद। तब तक तो बिट्टन का History का Class ही था। मैंने रमेश श्रीवास्तव से कह दिया था। Mrs. Verma से भी बता दिया था। शाम को College Staff Council की मीटिंग में दोनों मुझसे पूछने लगे कि आपकी साली साहिबा आयीं नहीं। मैंने कहा शायद कल से आवेंगी। मेरा वहाँ जाने का उद्देश्य क्या था दुबारा, जानती हो? तुम्हारे लिए Scarf वहाँ लाया था कि प्रथम दिन अपने College में आने के उपलक्ष्य में तुम्हें दूँगा। उस समय इसलिए न दिया था कि फिर सारे समय कहाँ लिये रहोगी, पर तुम लोग जल्दी ही भाग आयीं।

हिन्दी में पं. कृष्णशंकर का Class attend किया होगा। उनसे मैंने कह दिया था। कहने लगे वह तो मेरी बेटी की तरह है। मैंने कहा—नहीं, बहू कहिए। फिर बताने लगे कि उसकी बड़ी बहन (बिट्टन) को तो मैंने देखा है। इसको भी देखा है, जब

काफी छोटी थी। तुम लोग हिन्दी Attend किये रहो और Sociology भी Attend करो। मदन मोहन और V.K. Mathur दोनों से मैंने कह दिया है और चन्दू बाबू से हर एक के पास लिखवाकर भिजवा दिया है। अब ठाठ से हर Class Attend करो। कभी कोई पूछे तो मेरा Reference दे देना।

प्रिये, अब एक खबर सुनकर जरा खुश हो लो। तुम आज ही कॉलेज आयीं और आज ही 15 रुपये महीने हम लोगों को D.A. मिलने की घोषणा की गयी। मेरी कम्मो सचमुच बड़ी भाग्यशालिनी है।

रानी, अब देख कल जल्दी मत भाग आना। 11 बजे तक रुकना, उस समय मैं वहाँ आऊँगा, अपने पीरियड्स समाप्त करके तो तुझे Scarf दूँगा, यशोधरा में रख कर। शायद दोपहर में 11 के बाद भी मैं आऊँगा।

अम्मा, दिदिया भी आज खुश थीं कि तुम कॉलेज जाने लगीं। अम्मा पूछने लगीं कि अब मैं दूसरों से यह कह सकती हूँ या नहीं कि बहू को कॉलेज में भर्ती करा दिया है। मैंने कहा अब ढोल पीट दो कि बहू ठाठ से पढ़ रही है।

बिट्टन के क्या हाल हैं? वे भी प्रसन्न हैं न? अम्मा आज क्या कह रही थीं? तुमसे फिर बहुत-सी बातें करने का मन है। हरदोई वाले पाण्डेय जी कब आ रहे हैं। बिट्टन से बता देना बहुत से लोग बिट्टन को ही मेरी वीवी समझ रहे थे। Mrs. Indra Verma (History Deptt.) पूछ रही थीं कि विजय लक्ष्मी अवस्थी, मैंने कहा नहीं पाण्डेय। कहने लगीं यह कैसे? तब मैंने समझाया कि कमलेश अवस्थी है, यह मेरी Sister-in-law हैं। उन्हें यह जानकर कुछ खेद हुआ कि मेरी Wife History नहीं लिये है।

पूरे समाचार देना। पत्र मुझे बराबर लिखोगी। यह मत समझना कि अब तो उनके कॉलेज में ही पहुँच गयी हूँ। प्राणाधिके, सचमुच हम लोग कॉलेज में रोजाना थोड़े ही मिल पायेंगे और फिर बात तो बिल्कुल ही नहीं कर पावेंगे। तेरी कुछ सहेलियाँ मिली होंगी। हमारे-तुम्हारे बारे में क्या कह रही थीं। मुझे देखकर काफी कानाफूसी लड़कियाँ इधर-उधर करने लगी थीं। उत्तर अतिशीघ्र देना।

'श्याम'

•

32/147, बगिया मनीराम, कानपुर
21.09.56

Kammo, my darling,

यह खत तुम्हें निहायत Depressed mood में लिख रहा हूँ। रानी, अगर मैंने आज तुम्हें किसी समय डाँट दिया हो तो क्षमा करना, मेरी मनःस्थिति आज सन्ध्या को बड़ी विचित्र हो गयी थी। तुम्हारे यहाँ से लौटकर बालकृष्ण को भी डाँटा, खुद

पर बड़ा गुस्सा आया कि या तो मैं शाम को भाषण में फिर जाता ही नहीं या फिर तुम्हें ही उस समय ओमप्रकाश के यहाँ न ले जाकर सीसामऊ छोड़ जाता। द्विधामूलक स्थिति में न तो मैं भाषण सुन सका, न व्यवस्था में कुछ भाग ले सका और न तुम्हारे Sweat सम्पर्क में Evening ही Enjoy कर सका। तुम्हारे घर से साइकिल चलाता हुआ तब 8 मिनट में आर्यसमाज हॉल पहुँचा तो भाषण समाप्त होने में कुल 20 मिनट बाकी थे। हम लोगों के पहले ही डॉ. अग्रवाल वहाँ आ गये थे। मैं तो वह 20 मिनट भी भाषण में Concentrate न कर सका, क्या बताऊँ मन तुम्हारे ही पास रखा हुआ था। बार-बार तुम्हीं दिमाग में सामने आ जाती थीं। डिनर में भी डॉ. अग्रवाल के यहाँ गया, पर बोलने का मन न हुआ और फिर उन्हें पहुँचाने स्टेशन भी नहीं गया। इस समय अत्यधिक थकावट महसूस कर रहा हूँ। एक तो आज Cycling भी बहुत करनी पड़ी। भाई साहब को भी मैंने एक Mild झाड़ बताई। सच कमल! इस समय मन हो रहा है कि रो पड़ूँ पर एक ओर जीजा पढ़ रहे हैं, अम्मा भी थोड़ी दूर पर हैं, नीचे दिदिया हैं, यह विवश मन इस समय रोने के लिए स्थान भी नहीं पा रहा है। कम्मो, इस समय तुम क्यों नहीं दौड़कर मेरे पास आ जातीं, तुम्हें आलिंगन में कस लेने से मेरे आँसू सूख जावेंगे। मन कितना छटपटा रहा है, इसकी पीड़ा को क्योंकर अनुभव करोगी। टाक Fair करनी है, पर इच्छा है कि फाड़कर फेंक दूँ। यदि तुम्हें मेरे से इतनी दूर रहना है तो बता डियर फिर आकर मेरे मन को क्यों इतना मथ दिया? तूने आज मुझसे शाम को क्यों नहीं जोर देकर यह कहा कि नहीं भाषण में जाने का कोई काम नहीं है, चलो मेरे साथ घूमने चलो। यदि तुमने इतना कह दिया होता तो क्या मैं चल न देता; मेरे लिए तू अधिक Important है, बजाय उस भाषण के जिसे कि वाकई मैं सुन भी नहीं सका। सारा समय सड़कों की दूरी नापने में कट गया। मेरे मन में तुलसीदास की एक पंक्ति ही गूँज रही है—

"डासत ही गयी बीति निशा;
कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो"।

बिस्तर बिछाने में ही रात बीत गयी कभी नींद भर सो ही नहीं पाया।

और उर्दू का एक शेर तो तुमने सुना ही होगा—

न खुदा ही मिले, न विसाले-सनम—या
दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।

मैं अपना थोड़ा-सा मानसिक विश्लेषण उपस्थित करना चाहता हूँ जिससे भविष्य में तुम मुझे उचित राय दे सको।

जिस समय मैं किसी द्विविधा या अन्तर्द्वन्द्व में होता हूँ, मैं रोशनी के लिए दूसरों की ओर देखता हूँ और उस समय तनिक से संकेत में मुड़ना चाहता हूँ। जैसे कि आज मैंने तुम्हारी इच्छा की एक झलक भर पा जाने के उपरान्त वैसा ही करना

चाहा। अगर तुम तनिक जोर देकर कह देतीं तो में शाम आज तुम्हारे ही साथ बिताता, पर तुम्हारी मेरे ऊपर ढालने की वृत्ति और चुप्पी ने विवश कर दिया कि मैं Wrong Step लेता चला जाऊँ।

मैं जो दरवाजे से भाग आया तो कोई कुछ कहता तो नहीं रहा। अम्मा बुरा तो नहीं मान गयी। मैं जल्दी में उनसे यह भी कहना भूल गया कि कल सवेरे उनको डॉ. बनवारीलाल के यहाँ जाना है। अब उनसे कह देना कि सोमवार को सवेरे 9 बजे वे वहाँ पर आ जायें। मुझे आज बिट्टन और ओमप्रकाश पर भी बड़ा गुस्सा आया। पहले बिट्टन तुम्हें छोड़कर चली गयीं और फिर मैं ओमप्रकाश के घर इसलिए गया कि उनकी पत्नी आवेंगी तो साथ ही तुम भी चली आओगी, पर वे न आयीं, इस कारण भी काफी अव्यवस्था हो गयी। Any how throw it away, be happy and cheerful. We should be careful in future not to commit such mistakes. You have not written me in English since a long time has passed. Please do write in English to me. One thing more After our departure from meston road, so many ladies came to that function. Whether Bittan was asking some thing or not? तुम कहीं उन पर जाकर अपने स्वभाव के अनुसार बरस तो नहीं पड़ी थीं। अपने को Control में रखने का सतत् प्रयत्न करना चाहिए।

ऊपर चाँदनी फैली हुई है और सुमन की यह पंक्तियाँ मन में फिर उभर रही हैं– "चाँदनी छाई किसी की याद आयी"। उस दिन ऊपर छत की चाँदनी में मदमस्त होकर हमारा-तुम्हारा जीना और परिरम्भ मुझे फिर आकुल बना रहा है। अज्ञेय की एक पंक्ति है–

शरद चाँदनी बरसी
अंजुली भरकर पीलो।

मैं चाँदनी को अंजलि भरकर पीना और तुम्हारे मदिर होंठों को पिलाना चाहता हूँ जिनके तनिक से स्पर्श से मेरा रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता है।

अम्मा पूछ रही थीं कि कमलेश वगैरह भाषण में आयी थीं या नहीं। मैंने ना ही कर दी। कौन उनको पूरा विवरण बताने बैठे। हाँ मेरी Radio-talk के बारे में तय नहीं है कि 9-9:30 के बीच होगी या 2-2:30 के बीच। तुम दोनों समयों पर सुनना। 9 बजे न हो तो कॉलेज से जरूर चली आना, पर सुनना जरूर। मैं अपनी टाक का एक ही श्रोता चाहता हूँ—कम्मो को।

और नये समाचार देना। मेरा स्वास्थ्य ठीक है, परेशान न होना। इधर दो-तीन दिनों में Strain ज्यादा पड़ गया था, पर अब ठीक हो जायेगा। तुमने आज तो Tonic मँगाया नहीं होगा। भाभी के Injection लगने शुरू हो गये होंगे। उनकी रिपोर्ट मुझे देना। और अगर Successful हो जाये तो भाभी से कहना कि मेरी फीस Consultation की भेज दें।

तुम्हारे लिए एक किताब 'अर्थशास्त्र के मूलाधार' रखी है, किसी दिन भेज

दूँगा। अपने हाल देती रहना। लखनऊ जाने के पूर्व मुझे तुम्हारा पत्र मिल जाना चाहिए। मैं सोमवार की शाम को लखनऊ जाऊँगा। 4:30 बजे शाम की गाड़ी से बालकृष्ण भी जावेंगे। और घर के समाचार देना। खूब प्रसन्न रहना। रोना बिल्कुल नहीं। सम्भव हुआ तो 1 अक्टूबर को पुनः मिलूँगा।

तो इस लिफाफे में लिपटे मेरे लाखों चुम्बन आ रहे हैं, इन्हें स्वीकार करना। मेरा मन इस समय चारों तरफ से तुमसे घिरा है और तुमको घेरे रहना चाहता है। मैं तो सोचता हूँ कि 25 दिन की छुट्टियों में तुमसे दूर बाहर कैसे रहूँगा।

तेरे ही लिए

विह्वल और पागल
'श्याम'

•

22.09.56

My sweet heart,

इस समय रात के सवा दस बजे हैं, दिन भर की थकावट से चूर हूँ। सवेरे 11 बजे कॉलेज गया था और शाम को 7 बजे लौट कर घर पहुँचा हूँ। 11 बजने में दस मिनट बाकी थे, तब परेड होकर मैं तुम्हारे कॉलेज के फाटक पर से गुजरा, पर तुम नहीं दिखाई पड़ीं। कॉलेज में आज Radio-Talk साफ की, फिर उसे शाम को Post किया।

इस समय रानी, मन नहीं लग रहा है। फ्रांसीसी उपन्यासकार इमाइल जोला का उपन्यास 'Germinal' पढ़ रहा था, पर 20 पृष्ठ के आगे पढ़ने का मन नहीं हुआ। नींद भी नहीं आ रही है, क्या करूँ? कम्मो, जरा तुम आकर मुझे सुला जाती तो कितना अच्छा होता। मेरे एक मित्र हैं पं. रमानाथ अवस्थी, उनकी कविता है—

रात आयी सुधियाँ लायी
दिन बटोर ले गया।

दिन में तो काम की भागदौड़ के कारण मन लगा रहता है, पर शाम होते ही उदासी घेरने लगती है। याद आने लगती है। सच बताना कि क्या तुमको भी इतनी ही याद आती है।

हाँ एक बात बताओ, वह मेरी खूबसूरत फाइल, जो छोटी-सी थी और खटके के साथ बन्द होती और खुलती थी, क्या तुम्हारे पास है। समझ गयी न, काली-काली थी। मुझे यहाँ मिल नहीं रही है और एक डायरी भी गायब है। रमानाथ अवस्थी की किताब 'रात और शहनाई' का भी पता नहीं है, लिखना इनमें कोई चीज तुम्हारे पास है तो नहीं?

डियर, आज मैंने तुम्हारे खत की इन्तजारी बहुत की, पर तुमने तो जैसे शपथ खा रखी है कि तड़पने दो श्याम को, पर पत्र न लिखूँगी। ठीक है अपना-अपना भाग्य। मेरे जैसे डाक के शौकीन आदमी को उसकी बीवी ही पत्र नहीं लिखती। परसों मैं लखनऊ जाऊँगा। यदि बहुत परेशानी न हो तो पत्र लिख देना, जिससे कि लखनऊ से लौटते-लौटते मुझे कम-से-कम तुम्हारा एक पत्र तो मिल जाये। बुधवार को मेरी Class डेढ़ बजे समाप्त हो जायेगी। क्या उस दिन कुछ देर कहीं घूमा-घामा जाये?

और नये समाचार देना। मेरा कल का खत मिल गया होगा।

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

प्रातः : 9:30
Department of Hindi
D.A.V. College, Kanpur
26.09.56

मेरी ही कमल,

आज रात 1 बजे के लगभग जब लखनऊ से घर आया तो तेरी प्यारी मीठी चिट्ठी मिली। पढ़ते-पढ़ते तेरी याद इतनी उमड़ी कि मेरे आँसू आ गये, मैंने दो बार पढ़ा और फिर उसी समय उत्तर देने की सोची, पर फिर लिखा भी कि कोई जाग रहा है, अम्मा दिदिया कहेंगी चैन नहीं है, आते ही प्रेम-पत्र लिखा जाने लगा, क्योंकि तुम्हारी याद सारी रात Haunt करती रही, मैं ठीक से सो नहीं सका।

प्रिये, कल तुमने Radio Talk सुनी होगी। मैं रेडियो पर बोलता जा रहा था और सोच रहा था—तुम्हारे बारे में। मुझे ऐसा लगा कि तुम मेरे सामने बैठी हुई प्रेममयी नजरों से देख रही हो। Talk के दोष लिखना। घर में और किसने-किसने सुना था?

I also went in the girl's section and remained at the gate, Bal krishna went inside but he was not able to search you or Bittan.

तुमने जब बिट्टन से कहा कि श्याम बहुत नाराज हो रहे थे तो कुछ कहा तो नहीं उन्होंने। लखनऊ में तुम्हारी बड़ी याद आ रही थी। 'धर्मयुग' के चित्र को लेकर बड़ी चर्चा है, लोग बड़ी शिकायतें कर रहे हैं कि मुझे बताया तक नहीं। सुरेन्द्र दीक्षित और सुरेन्द्र तिवारी दोनों तुमको पूछ रहे थे। दिनेश तो कानपुर ही आया हुआ है। उसको उसकी ससुराल भेज रहा हूँ कि बिना बुलाये चले जाओ। जन्मपत्री उसको दी है, अब गणना करके बताएगा, पर general features काफी अच्छे हैं।

मुझसे उस दिन एक बड़ी गलती हो गयी। मैं सोमवार को सवेरे अस्पताल आने के लिए बिल्कुल भूल गया। अम्मा कहीं आयी हों और आकर लौट गयी हों, मैं

सचमुच बड़ा शर्मिन्दा हूँ। उनसे कह देना कि श्याम माफी माँग रहे हैं। हाँ अब मुझे फुरसत है, जिस दिन वे चाहें, उस दिन मैं उनको दिखा दूँ। तुमसे या भाई साहब से कहला दें एक दिन पहले और मैं आ जाऊँगा अस्पताल।

मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है। गोकि तुम्हारे चले जाने के बाद मेरा वजन चार पौण्ड घट गया है। पहले 8 पौण्ड बढ़ गया था, शादी के बाद।

और वहाँ घर के समाचार देना। गिरिजा कुमार माथुर आजकल मास्को गये हुए हैं। वहाँ से लौटकर आने के बाद उनका Transfer भोपाल हो जायेगा।

हाँ जिज्जी के यहाँ मैं कल जा नहीं पाया। पिछली बार जब खेमका के साथ गया था, तब भी उन्हें मालूम हो गया था। कहीं नाराज न हो गयी हों। मैं इस बार जाना तो चाहता था, पर एक दिन में कहाँ-कहाँ जाया जाये। फुरसत ही नहीं मिल पायी और आज छुट्टी होते हुए भी इसलिए भाग आया कि यहाँ तेरा पत्र रखा होगा और मेरा मन लखनऊ में लग नहीं रहा था। जरा सोच, कम्मो रानी कि पहले मुझे लखनऊ में कभी बुरा न लगता था, पर कल Talk के बाद ही मुझको लगा कि जल्दी-से-जल्दी निकल जायें। 'धर्मयुग' वाली फोटो जिज्जी ने भी देखी थी, फिर सारे मुहल्ले में देखी गयी। डॉ. मेहरोत्रा के यहाँ तो 'धर्मयुग' आता ही है, उन्होंने भी उसे देखा और दद्दा के यहाँ कह कर भेजा था। भाभी आजकल खूब पढ़ने में जुटी हैं। तुम भी खूब पढ़े जाना, तुम्हारे नम्बर सबसे अच्छे आने चाहिए, इतना याद रखना। तुमको जितना समय और सुविधा मिल रही है और किसी को नहीं मिल रही है। मेरा एक लेख 'कल्पना' में आ रहा है। एक 'युग चेतना' में भेज रहा हूँ। खूब मौज से रहना। मैं कहीं जाने का वैसा कार्यक्रम बनाऊँगा।

तेरा
'श्याम'

•

27.09.56
या
28.09.56

प्रियतमे,

इस समय रात के 12-1 बजे हैं, तुम्हारा पत्र मुझे आज शाम को मिला। इसलिए मैं सवेरे 10.45 पर लाल इमली के पास तुम्हें नहीं मिल सका। कल मिलने पर प्रोग्राम तय करूँगा, पर यदि न आ पाऊँ तो बुरा मत मानना, क्योंकि कल मैं जरूरत से ज्यादा व्यस्त हूँ प्रताप नारायण मिश्र जयन्ती समारोह के सिलसिले में। फिर मैं और किसी दिन श्रीमान के दर्शन प्राप्त करूँगा।

डियर, यह पत्र भी शायद तुम्हें कॉलेज जाते समय मिलेगा और तुम इसको पढ़ने का जल्दी कष्ट न करके घर में रखकर कालेज चली जाओगी और फिर शाम को फुरसत के समय पढ़ने के बारे में देखा जायेगा और उत्तर देने के बारे में तो कहा ही क्या जाये? ऐसे पत्र तो रोज ही न ननद को, न देवर को, स्वेटर बुना, बस आते ही अपने दूल्हे के लिए शुरू कर दिया। इसलिए तुम आराम से मेरे स्वेटर का विचार छोड़ अपनी पढ़ाई में लगो। अपनी तो जिन्दगी ही मस्ती और फक्कड़पन की रही है।

पत्र से ऐसा मालूम पड़ता है कि 25 को ए.बी. रोड के चार घण्टे के चक्कर में रेडियो टॉक भी नहीं सुनी, नहीं तो कुछ लिखती अवश्य, जबकि मैं केवल तुम्हारे ध्यान के लिए ही टॉक पढ़ रहा था, रेडियो पर, पर बेकार की चीजों में समय नष्ट करना ठीक नहीं। मैं व्यर्थ ही में तुम्हें बार-बार समय नष्ट करने के लिए कहता हूँ। मुझे दुख है कि मैंने लोई को तुम्हारे पास गाँठ लगाने भेजकर खामखाह सबकी नजरों में नीचा बनाया और शर्मिन्दा किया।

In Dushahra recess I intend to visit Agra and Mathura in connection with my research work, but it is not yet certain, much of the programme depends upon the purse and other circumstances. I have purchased one magazine 'समाज कल्याण' for your Sociology paper. If it is helpful to you then keep it with you otherwise return it to me.

Don't bother about my health. Somehow it is alright. Mentally I am not unsound and physically I am not a cripple and this is enough about one's health in the present time. Today I caught slight cold but I know tomorrow I shall be alright and will be able to paddle my 'Dakota' over the Kanpur streets.

And about 1st October, the decision depends solely upon you. I will come to the girl's section and if you are not in your... then please accompany me and if you are then ask Bittan to inform me about your inability. But if you are in a position to accompany me, then come to the college after taking permission from अम्मा and others to remain outside upto 7 P.M.

•

6 पी.एम.
मनीराम बगिया, कानपुर
29.09.56

मेरी कम्मो रानी,

तू है तो बड़ी सुहानी, पर करती है मनमानी। आज सवेरे से तेरे पत्र का इन्तजार कर रहा था गोकि मन में यह भी था कि नाराज होकर इस नालायक व्यक्ति को उत्तर

न दो। अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला। उसका हल्का कलेवर देखते ही समझ गया कि गुस्सा काफी है और फिर पहला सम्बोधन तो खैर सब कुछ प्रकट कर देता है।

खामखाह अपनी बातों को मेरे ऊपर ढालने का प्रयत्न करती हो। मुझे पत्र लिखना और पाना अच्छा लगता है, पर तुम लिखती हो कि लिखने वाले की गुस्ताखी माफ कीजिएगा। मुझे तुम्हारे साथ घूमना सुखद लगता है, पर जनाब का निर्देश है कि 1 अक्टूबर को मैं कहीं न जाऊँगी, क्योंकि मुझे परेशानी होगी और समय नष्ट होगा। अच्छा ही है मेरे भाग्य पर तरस खाओ, पर मेरा साथ हमेशा दो।

रानी, क्यों मुझे इस कदर रुला रही हो। तुम अगर मुझसे कहलाना ही चाहती हो तो तुम्हें क्षमा कर दिया। यो उसमें कोई क्षमा करने की बात तो तब उठती, जब मैं दोषारोपण करता और तुम्हें तो मैं इतना प्यार करता हूँ कि क्षमा या दोष उसके दायरे के बाहर है। इन शब्दों में तो एक परायापन है। जो हमारे-तुम्हारे बीच है ही नहीं। जानती हो, आज आँसू IV Yr. में पढ़ा रहा था, जब उसमें यह पद आया– 'बाँधा था किसने विधु को इन काली जंजीरों से' तो मेरे सामने तुम आ उपस्थित हुईं।

पर डार्लिंग, कभी-कभी मन को जब कोई बात चुभ जाती है तो कह डालता हूँ क्योंकि यदि कहा न जाये तो फिर बात मन में पड़ी-पड़ी गाँठ बन जाती है, जो दो प्रेमी हृदयों के लिए ठीक नहीं। भला तुमने तनिक यह सोचा कि जब मैं लखनऊ रेडियो स्टेशन पर बैठा तुम्हारी मूर्ति को अपनी कल्पना से प्रत्यक्ष किये टॉक पढ़ रहा था, जब बीच-बीच में मेरा मन तुम्हारे पास आ जाये कि कमल ऊपर बैठी टॉक को प्रेम से सुन रही होगी, कि उसका श्याम बोल रहा है और जब मैं यह उम्मीद करता था कि पहुँचते ही तुम्हारी प्रशंसात्मक चिट्ठी मिलेगी तो उसके स्थान पर होता यह है कि तुम टॉक सुन ही नहीं सकीं। मेरे दिल को इससे कितना धक्का लगा। तुम्हे मेरी डायरी का वह अंश याद होगा। उसे मैंने Second Night बाद लिखा था। उसमें तुम्हारे उस शाबाश शब्द पर, जो कि तुमने मेरा Academic career जानकर कहा था, टिप्पणी दी थी कि इससे अधिक बहुमूल्य पुरस्कार मुझे जीवन में अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में दूसरा नहीं मिला। अतः मैं तो अपनी टॉक पर तुम्हारी राय और प्रशंसा चाहता था, और दुनिया भर की नहीं, पर तुम बिट्टन की बात की Care कर लेती हो, स्वेटर के मामले में घर वालों की बातों की Care करने को तैयार हो, पर मेरी प्यारी कमल, मेरे भी मन की तो Care कर लो। मैं तो सारी दुनिया की परम्पराओं और रूढ़ियों को तुम्हारे लिए तोड़ता हूँ और तुम उन्हीं में बँधना चाहती हो। I don't care for anybody else I simply care for you.

तुमको मैंने वह पत्र लिख तो दिया, पर तुम सोच नहीं सकती कि परसों से मैं कितना क्षुब्ध हूँ।

कल सवेरे बरसते पानी में मैं कॉलेज से बकरमण्डी के चौराहे तक आया-गया और आज भी सीसामऊ तक आया कॉलेज से, पर तुम शायद आज कॉलेज जल्दी

आ गयी थीं क्योंकि लाल इमली के सामने से जब मैं गुजरा हूँ तब घड़ी में 10.43 थे। रास्ते में अनेक रिक्शे दो-दो लड़कियों के मिले। हर रिक्शे को दूर से ही देखकर मेरा मन उछल पड़े कि तुम हो, कि अब मिली कम्मो, पर हर बार निराश होना पड़ता। आखिर गोपाल टॉकीज का चौराहा आ गया और मुझे लौट आना पड़ा। फिर छेदीलाल गुप्त (लाइब्रेरियन) से मालूम हुआ कि तुम बालकिशन को पूछ रही थी। हम लोग पौने चार पर girl's section फिर पहुँचे, पर तुम नहीं मिलीं। मेरा मन इस समय इस कदर छटपटा रहा है कि कुछ कहना नहीं। कैसे तुमसे मिलूँ। इस समय पितृपक्ष है, कल पिताजी का श्राद्ध है, अन्यथा मैं अभी वहीं आ खड़ा होता। इस समय मुझे नैनीताल याद आ रहा है, जब तुम मेरे कन्धे पर हाथ रखकर ऊपर चढ़ रही थीं।

पर अब फिर देखो, तुम मेरे मन को दुखा रही हो। तुम कहती हो कि पहली को तुम न चलोगी कहीं घूमने। मैं क्या कहूँ सिवा इसके कि मेरे मन को इसमें गहरी पीड़ा होगी। दूसरी बात तुमने लिखी कि 11 और 2.45 के बीच मिल लेना, जिस समय Girl's Section लड़कियों से खचाखच भरा होता है, काफी तानाकशी होगी। यदि तुम्हें यह पत्र कॉलेज आने के पहले मिल जाये तो 3.15 तक रुकना। 3 P.M. पर मैं कॉलेज आऊँगा। सम्भव हुआ तो रास्ते में ही भेंट करूँगा। आज जब छेदीलाल से मालूम हुआ कि बालकिशन के बारे में तुम पूछ रही थीं तो मेरा ख्याल हुआ कि शायद अभी आठवें घण्टे में तुम General Section आओ। मैं Class में पढ़ाता जाऊँ और इधर-उधर किसी लड़की को देखते ही चौकन्ना होऊँ कि तुम आ रही हो, पर तुम नहीं आयी।

आज 10 दिन होने को आये, तुम्हारी शक्ल तक नहीं देखी। अच्छा जरा मुस्कराकर बता दे कि अब नाराज तो नहीं हो।

हाँ, तूने Ring वाला जूड़ा बाँधना सीखा या नहीं। पहली को Ring वाला जूड़ा कर कॉलेज आना और White dress में। मैं dress और जूड़ा देखते ही समझ जाऊँगा कि मेरा पत्र मिला या नहीं और मेरी रानी मुझसे प्रसन्न है या नहीं? और Scarf भी लेती आना, शाम को घूमने के समय बाँध लेंगे। मैंने जो Programme पहली के बारे में लिखा था, वह तुम्हें पसन्द है या फिर सिनेमा का ही तय रखूँ।

हरदोई वाले पाण्डेय जी का पत्र आया है। मैंने उनका उत्तर दे दिया है। पत्र में उनकी हिन्दी में भी काफी गलतियाँ हैं, पर यह बात कहीं बिट्टन से न कह बैठना।

तुमने यह नहीं लिखा कि अम्मा अस्पताल अब किस दिन आयेंगी। मैं आज भाई साहब से कहना भूल गया था। 'समाज कल्याण' मेरे ख़याल से तुम्हारे Sociology वाले Papers में काम देगा। मैं हर महीने इसे Contribute करने की सोच रहा हूँ। एकाध लेख भेज दूँगा तो सब पैसे वसूल भी हो जायेंगे।

और नये समाचार देना। भाभी के समाचार भी। मैं यह जानकर कृतज्ञ हुआ कि घर में अकसर लोग मुझे याद करते हैं। कल मुझे श्री परमात्मा शरण जी कचहरी

में दिखाई पड़े थे, पर कोई बात नहीं हुई। लखनऊ से मेरी शिकायत लिखते हुए बड़ी जिज्जी का कोई पत्र तो नहीं आया। हाँ देखो इधर मेरे 3 लम्बे पत्र तुम्हारे पास पहुँचे हैं, उनका एक साथ खूब लम्बा उत्तर मुझको लिखो, तब तुझे क्षमा करूँ, समझी न और ले यह दो चाँटे भी, दण्डस्वरूप अपने हाथों लगा लेना।

श्रीमती जी, मेरा स्वेटर बुनना कब से शुरू कर रही हो और स्वेटर में ही टरका दोगी कि कोटी भी बुन दोगी।

बहुत-सी बातें करनी हैं, पर तेरी शक्ल देखते ही याद रही तो सोमवार को करूँगा। घर से आज्ञा लेकर आना शाम को 7 बजे तक की।

अमित प्यार और अनन्त चुम्बनों के साथ,

तेरे लिये पागल
'श्याम'

•

Department of Hindi
D.A.V. College, Kanpur
मनीराम बगिया
02.10.56

मेरी अपनी कमल,

वहाँ से लौटकर फिर कल तेरी बड़ी याद आयी। रात को गोदाम सोने के लिए चला गया था, क्योंकि नीचे नौटंकी हो रही थी, वहाँ बड़ी देर तक फिर तेरी याद करता रहा था।

मैंने घर में यह बता दिया था कि तुम गिर पड़ी थीं, अम्मा बहुत चिन्तित हो उठीं। कहने लगीं कि वह शायद अच्छी मुहूर्त में नहीं गयी, जब से गयी, कोई-न-कोई परेशानी उसके ऊपर बनी ही रहती है, लोगों ने नजर भी लगा दी।

हाँ, कल बुधवार होगा। कॉलेज जल्दी समाप्त हो जायेगा। मेरी Class तो 11 से 1.30 तक होगी। डेढ़ के बाद में कॉलेज आऊँगा तेरे यहाँ। यदि मुझे देर हो जाये तो 2 बजे के करीब Girl's Section के दरवाजे पर मेरा इन्तजार करना, बल्कि यही अच्छा रहेगा कि 2 बजकर पाँच या 10 मिनट पर मैं उस जगह जाऊँ, जबकि अधिकांश लड़कियाँ चली गयी हों। बिट्टन से भी कह रखना कि ऊन लेने चलना है। कॉलेज से फिर हम लोग परेड की ओर आ जायेंगे Refugee market में और वहाँ फिर मेरे ख़याल से वही खरीद ली जाये लाल इमली वाली।

मुझे एक जगह जाना है, अतः जल्दी में और बड़ा पत्र नहीं लिख रहा हूँ और फिर बारी तो तेरी बड़ा पत्र लिखने की है। सुधीर से कल घूमने वगैरह के विषय में कुछ मत कहना।

हाँ, आदित्य भटनागर आज कह रहा था कि आजकल बड़ी Badminton प्रैक्टिस हो रही है, क्या यूनिवर्सिटी चैम्पियनशिप जीतने की बात चल रही है? मैंने कहा बड़े नालायक हो, जो दूसरे की बीवी के बारे में इस कदर Interested रहकर पता लगाया करते हो। ओमप्रकाश भी तुम्हें पूछ रहा था। तुम्हारे पेन में क्या खराबी है, मेरी समझ में नहीं आता। Flow तो काफी बढ़िया है, निब जरा-सा खरखराती है। मैं उसी से लिख रहा हूँ क्योंकि मेरी कलम कल कहीं गिर गयी, शायद Shady grove में। हाँ एक बात और कल तुम्हें मैं तुम्हारे रुपये दे आया था या नहीं? मेरे पास वह लिफाफा है नहीं और यह मुझे याद नहीं पड़ता कि तुम्हें जीने में दे दिया था या नहीं। कल तुम मुझे ऊपर ले गयीं और फिर मैं मुश्किल से छूट पाया और वह भी घण्टे सवा घण्टे बाद।

पत्र लिखना। चोट कहीं तंग तो नहीं कर रही।

तेरा ही तो

'श्याम'

•

दोपहर : 12.15

हिन्दी विभाग, दयानन्द कॉलेज, कानपुर

09.10.56

बहुत गुस्से में रूठी, मुँह फुलाये

मेरी कम्मो,

सुन तुझे एक पुरानी कहावत सुनाऊँ—'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।' तो यह कहावत मुझे आज पूरी होते हुए दिखाई दी। कहाँ तो मैं कल शाम से इस कदर नाराज था कि तुम्हें खूब-खूब नाराज होकर पत्र लिखूँगा, पर रात दस बजे तक फुरसत ही मिली, प्रेमचन्द जयन्ती के अवसर पर मुझे भाषण देना था, उस नाराजी के ही कारण मैं खूब जोश-खरोश से बोल आया और सवेरे तक गुस्सा जरा ठण्डा पड़ गया, इसलिए पत्र न लिखा था। अभी 12 बजे सुधीर ने खाना खाते समय लेटर बॉक्स से तुम्हारा पत्र निकालकर दिया और कहा कि भाभी की चिट्ठी आयी है। चिट्ठी पढ़ी तो तेरा गुस्सा पढ़कर मजा आ गया। मैंने सोचा चलो बराबर हुआ। जितना कष्ट मुझे कल हुआ, उतना ही मैडम कमलेश अवस्थी को भी हुआ, खूब मजा आ रहा है, इस समय अहा हा-हा-हा। क्या बात हुई है, ला तेरे मुँह को चूम लूँ।

Darling, अब कैफियत सुनो। तुमसे बालकृष्ण ने यह बताया था कि मेरा आठवाँ पीरियड है। यह Class सितम्बर में लगना शुरू हुआ, अतः बहुत पिछड़ा था। फिर पिछले दो Turns में लखनऊ जाने के चक्कर में इसे छोड़ चुका था। अब यदि इसे

रोज-रोज छोड़ दूँ तो बुरा लगता है। लड़के शिकायत करते हैं। 'आँसू' खत्म करना था। अतः 3 बजे मैंने बालकृष्ण को भेजा कि जाओ कम्मो से कह आओ कि मैं 3:15 के लगभग आऊँगा, तब तक इन्तजार कर लें। वह वहाँ जब पहुँचा, तब तक आप जा चुकी थीं। उधर 3.15 पर Class छोड़कर जब मैं भागा-भागा वहाँ पहुँचा तो तुम मुझे नहीं मिलीं। मैंने हवा के Against बकरमण्डी में चौराहे तक अत्यन्त तीव्र गति से साइकिल भगायी, पर तुम्हारा रिक्शा नहीं मिला। मैं इतना अधिक उदास हो गया कि चुपचाप कॉलेज लौटकर Department के कमरे में कुर्सी पर सिर रखकर लेट गया। विभाग की मीटिंग हो रही थी। लोगों ने पूछा क्या बात है, मैंने कह दिया तबीयत ठीक नहीं है। मैं तो खुद ही यह सुनकर कि तुमने मुझे बुलाया है और बिट्टन नहीं है, बड़ा प्रसन्न हुआ था कि आज इम्पीरियल चाट हाउस में चाट खावेंगे, खूब बातें करेंगे और सेंट भी वही Evening in Paris जो मैं लाया था और तनिक-सा मुस्करा दे और देख जब मेरे पास कल आवेगी तो खूब सज-धजकर। जरा अच्छी-सी साड़ी पहनकर, पाउडर और सेंट लगाकर और चोटी करके ही। मैं भी तो अपनी कम्मो का रूप कल जी भरकर निहारूँ।

अभी कॉलेज जाना है। थोड़ी देर अब सोऊँगा। इसलिए भी कि शायद आज ही शाम को आना पड़े तो फिर रात्रि जागरण के लिए तैयार रहूँ। अब नाराज तो नहीं हो। अच्छा मुझे माफ कर दो।

With love and affection
mingled with kisses
yours own
'श्याम'

•

कुछ देर घूमे पर तू न मिली। जरा देर तुझसे इन्तजार न करते बना, मैंने तो तेरा इन्तजार 25 साल किया है। मुझे तो यह बड़ी प्रसन्नता थी कि तूने मुझे बुलाया तो। अरी कम्मो, तूने जहाँ इतनी देर Wait किया था, बेशर्मी करके वहीं थोड़ी देर और रुक जातीं। जब तुमने मुझे बुलाया तो फिर यह तो तुझे निश्चित ही रहना चाहिए था कि मैं आऊँगा अवश्य। कल शाम को स्वयं मेरा Mood बहुत खराब हो गया था। बालकिशन को बड़ी बुरी तरह डाँटा कि तुम ठीक टाइम से नहीं गये, इसीलिए वह चली गयीं।

अच्छा जी, खैर जाओ माफ किया। अब आइन्दा ऐसा मत करना, नहीं तो दोनों कान पकड़कर तेरे होंठों का चुम्बन लूँगा। समझीं।

पाण्डेय जी का मन नहीं माना, आ ही गये। उन्हें मेरा नमस्कार देना, अगर पूछें तो। पसनी में अगर बुलाया जायेगा तो अवश्य आऊँगा, अन्यथा उसके बाद अपने

मन से इस बार तुझे रोज शाम को घुमा दूँगा। पसनी में भइया को तू क्या-क्या देगी, यह कुछ लिखा ही नहीं मारे गुस्सा में। अरे भई बिट्टन के हाथ जो पत्र भेजा था, उसका तो उत्तर दे देती।

अच्छा एक बात और तूने फिर Inland Letter का झगड़ा चलाया। लिफाफा लिख, बड़े-बड़े पत्र रख, समझीं मेरी प्यारी कमल रानी।

अब तो कल मिलेंगे ही। रोजाना दिन गिनता हूँ। आज अगर कॉलेज आवेगी तो मिलेगी ही। बड़ी बेसब्री है।

अच्छा जब आऊँ, तब खूब सुना लेना। मैं सिर झुकाकर, नाक रगड़कर, हाथ जोड़कर तेरे सारे अभियोग सुन लूँगा और तेरा दण्ड भी स्वीकार कर लूँगा, पर दण्ड कौन-सा? 'प्रभात फेरी' में नरेन्द्र शर्मा वाला 'अपराधी' गीत पढ़ लेना। मैंने शायद किताब की पोख्ती पर लिख भी दिया है।

'हूँ दण्डनीय स्वीकार मुझे
कर लो बन्दी निज भुज बन्धन में
चुप कर दो चंचल अधरों में
बस एक अचेतन चुम्बन में।'

पर हाँ देख, एक गजब न करना कि तू कहीं यह प्रतिज्ञा कर बैठे कि मेरे साथ कभी घूमने न जायेगी या कि कभी कॉलेज में न मिलोगी।

इस समय कुछ सूझता ही नहीं कि क्या लिखें। तेरा गाल फुलाये, आँसू भरा चेहरा केवल सामने उभर आता है। अच्छा अब मुँह धो डाल, पाउडर लगा ले।

•

शरद पूर्णिमा
दोपहर : 12 बजे
C/o Lt. Col K.P. Bhatnagar
Vice Chancellor, Agra University, Agra
12.10.56

Kammo Darling,

अभी दस बजे मैं लगभग आगरा पहुँचा हूँ। ट्रेन में रात काफी भीड़ रही, फिर भी मैं सोता ही आया, क्योंकि तुम जानती ही हो कि मैं कितना धाकड़ सोने वाला हूँ। कल शाम को मेरी यह बड़ी इच्छा हो रही थी कि तुमको भी अपने साथ आगरा लेता आऊँ। दुनिया भर से आज लोग ताजमहल, उस सौन्दर्य के अमर प्रतीक, जिसके लिए सरोजिनी नायडू ने कहा था, 'Tajmahal was built on bones of beauty, which were once alive' की शोभा निहारने आते हैं। सौन्दर्य और प्रेम की इस जीवित पुकार के साथ बहुत से लोग अपना Honeymoon

प्रारम्भ करते हैं। ऐसी स्थिति में तुम खुद सोच सकती हो कि मेरा मन लाने को क्यों न करता तुम्हें। पर-पर...लोग कहते Research को नहीं, घूमने जा रहे हैं। शायद तुम भी तैयार न होतीं। अतः मन मारकर चला आया। मेरा एक खत आज सवेरे मिला होगा।

भटनागर साहब के बँगले में ठहरा हूँ। Vice Chancellor का मेहमान हूँ, मेरे भी ठाठ हैं। रहने, खाने-पीने का घर से अधिक आराम है, इतना ही समझ लो। मैं जिस कमरे में ठहरा हूँ, उसमें वैसे ही ठाठदार दो पलँग बिछे हैं जैसे रानीखेत में मालरोड वाले उस ठाठदार होटल में देखे थे। दूसरा पलँग खाली पड़ा है, और फिर से मुझे तुम्हारी याद सता रही है। मुझे रानीखेत और नैनीताल के दृश्य पुनः अपनी याद में प्रत्यक्ष दिखाई पड़ रहे हैं।

रानी, मेरा स्वेटर जल्दी से बुन डालो, क्योंकि अब सर्दी पड़ने लगी है और बिना स्वेटर के मुझको कष्ट होता है और यह तो मैं भूल ही गया था कि जाड़े में बिना दस्तानों के साइकिल चलाने में अजहद तकलीफ होती है। सो तुम्हें दस्ताने भी बुनने होंगे। देखो तुम्हें काम-पर-काम बताता चला जा रहा हूँ, नाराज न होना कि श्याम तो पढ़ने ही नहीं देता।

सुधीर इतवार को तुम्हारे घर आवेगा। अजातशत्रु समीक्षा उसे दे आया हूँ। बिट्टन वगैरह के कुछ हाल मिले क्या? भाभी के समाचार दो, मुझे अत्यधिक उत्सुकता है। मैंने तो भाई साहब को काफी मना कर दिया, पर वे मान नहीं रहे थे।

अभी पत्र समाप्त कर रहा हूँ। रात को ताजमहल के सामने से तुम्हें दूसरा पत्र लिखूँगा, और थोड़ी देर में खाना खाऊँगा और फिर दो घण्टे सोकर थकान उतारूँगा रात की। आज मैंने नहाया भी खूब है। नहाने से सफर का सारा Strain जैसे धुल गया। सो लेने के बाद यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी जाऊँगा, वहाँ से तीन घण्टे पढ़कर फिर घूमने निकल जाऊँगा और रात को फिर ताज देखकर लौटने का विचार है। यहाँ आगरा में जमुना में खूब बाढ़ आयी हुई है। नदी के किनारे की सड़कों पर पानी भरा है और एक-आध जगहों पर तो छोटी वाली रबड़ की नावें भी चल रहीं हैं, पर इससे परेशान मत होना कि श्याम कहीं अरक्षित न हों। जहाँ पर मैं ठहरा हूँ, वह जगह नदी से 2-3 मील दूर है और यहाँ तक पानी कभी नहीं आ सकता। समझ लो कि परमट में बाढ़ है और मैं सीसामऊ में तुम्हारे घर बैठा हूँ।

अपने पूरे समाचार विस्तार से देना। घर के भी हालचाल लिखना। मेरे आने के बाद अम्मा वगैरह कुछ कह तो नहीं रही थीं। उनका चश्मा अभी बन गया कि नहीं।

पत्र मुझे तत्काल लिखना, क्योंकि यहाँ बाहर तुम लोगों के पत्र ही साहस देते हैं और पत्र छोटा-सा मत लिखना, खूब बड़ा लिखना। मैं सोचता हूँ कि आगरा में

मंगल या बुध तक रहूँ और फिर यहाँ से मथुरा या वृन्दावन जाऊँगा। मथुरा में सम्भवतः मेरा पता होगा...

C/o पं. कृष्णदत्त बाजपेयी
क्यूरेटर
मथुरा म्यूजियम, मथुरा

शेष शुभ। तुम स्वस्थ होगी।

अशेष प्यार के साथ

तेरा
'श्याम

पुनः डियर, यह ले शरद पूनो के उपलक्ष्य में तुझे एक तोहफा भेज रहा हूँ। पिछली पूर्णिमा को तुम्हें याद हो, हम दोनों ऊपर छत पर थे, जब तेरे दर्द हो गया था।

•

रात्रि : 10 बजे
ताज मैदान, शरद पूनो
19.10.56

मेरी मधुर कम्मो,

फाउण्टेन पेन घर में ही छोड़ आया हूँ, अतः पेंसिल से लिख रहा हूँ जो रास्ते में भटनागर साहब के चपरासी से ले ली थी। यद्यपि अक्षर दिखलाई नहीं पड़ रहे, पर अन्दाज से लिखता जा रहा हूँ।

Darling इस समय मैं ताजबीबी के सामने बैठा लिख रहा हूँ। मुझे यह शब्द ज्यादा Appeal करता है, बजाय ताजमहल के। ताजमहल शब्द में सौन्दर्य की उस प्रतिमा को उचित स्थान नहीं मिल पाता, जिसके लिए यह बनाया गया है। अब एक मुसलमान के अभी-अभी उच्चारण किये गये उस शब्द ने मुझे उस अर्थ को और पहचानने में सहायता की।

पत्र दोपहर में लिख गया था, पर डाक में डालने की याद नहीं रही, अतः अब साथ ही यह पत्र भी आ रहा है, गोकि अब सब पत्र तुम्हें सोमवार को ही मिल पावेंगे।

इस समय इस कम्पाउण्ड में लगभग तीस-चालीस हजार आदमी होंगे। चारों ओर शोरगुल मचा हुआ है, पर मेरा मन इन सबसे दूर या तो चमकते हुए इस सौन्दर्य को देखता है या शाहजहाँ और मुमताज की ओर लौट जाता है या फिर अपनी स्वीटी कमल के पास दौड़ आता है।

यहाँ अनेक खूबसूरत लड़कियाँ अपने प्रेमियों, पतियों एवं सब किसी के साथ घूम रही हैं, ऐसे उद्दीपन में मुझे तेरी याद क्यों न आवे। यद्यपि सुनते हैं कि इस साल औरतें कम आयी हैं, क्योंकि पिछले दो-तीन साल यहाँ बड़ी गुण्डई हुई। कई

लड़कियों को Molest किया गया। इस साल तो पुलिस आदि का भी प्रबन्ध बहुत है।

ताजमहल का सौन्दर्य, मेरी सुन्दर कम्मो, दो प्रकार का है। उसमें एक Massive grandeur भी है और Decorative beauty भी। इसी के साथ एक तीसरा भी पक्ष है उस कथा का, जो इसके साथ जुड़ी हुई है, जिसके कारण ताजमहल सुन्दर इमारत ही नहीं, प्रेम और सौन्दर्य का अमर प्रतीक भी बन गया है।

आज मुझे पाण्डेय जी की भी बड़ी याद आती रही। उनका शरीर इस भीड़ में सहायता कर सकता था। उन्हें भी आज एक पत्र लिख रहा हूँ। आज यहाँ रिक्शा आदि के भाव बहुत बढ़ गये हैं। मैं 1 रुपये सवारी पर रिक्शे में आया था। अब देखो लौटते समय क्या लें। यहाँ से भटनागर साहब का बँगला 3-4 मील है भी। चाँदनी में ही यह पत्र लिखा जा रहा है।

चाँदनी में ताजमहल की शोभा अनेक गुना बढ़ जाती है। उसका श्वेत पत्थर और पच्चीकारी का काम उसमें चमक उठता है। ऐसा लगता है कि फूलों-पत्तियों के स्थान पर बल्ब जड़े हुए हैं। पीछे जमुना अपने उफान पर है। आगरा की कई सड़कों पर पानी भरा है। मेरा रिक्शा भी पानी के बीच से आया था।

मुझे इस भीड़ को देखकर ऐसा लग रहा है कि लोग ताजमहल देखने नहीं तमाशा देखने आये हैं। उसके वास्तविक सौन्दर्य का अनुभव तो बहुत थोड़े लोग कर पाते हैं। अच्छा अब बन्द कर रहा हूँ क्योंकि मेरे अगल-बगल बैठे लोग मुझे सनकी समझ रहे हैं। एक ने रिमार्क कसा है कि कोई विरही है, दूसरा कह रहा है, नहीं कवि है और तीसरे ने जो कहा, उसे मैं सुन नहीं पाया, बाकी बँगले पर पहुँचकर लिखूँगा।

प्रेममूर्ति ताज तेरी जय हो। मैं तुझे प्रणाम करता हूँ। तुझसे एक वरदान और आशीष चाहता हूँ कि मेरा और मेरी कम्मो का प्रेम अक्षय, अटूट और मंगलमय हो। हम दोनों भी तुझे एक साथ प्रणाम करने आवेंगे, पर आज मेरा अकेला प्रणाम स्वीकार कर लो।

●

रात्रि : 12:30
20.10.56

बँगले में लौट आया हूँ। इस समय ताज में बुरी तरह भीड़ बढ़ चुकी थी। भीतर घुसने के लिए चार फर्लांग लम्बा 'क्यू' लगा हुआ है। लोग इस समय भी जा रहे हैं। भारत ही नहीं, विदेशों से भी अनेक लोग इसकी सुषमा का पान करने आये हैं। लौटते समय भी मैंने 1 रु. दिया रिक्शे के लिए।

आज लाइब्रेरी गया था। तीन घण्टे वहाँ काम करता रहा।

डीयर, एक बात तुझे विचित्र-सी बताऊँ। मैं जीवन में अब तक बाहर जाने के लिए कभी भी नहीं हिचकिचाया, पर ना जाने क्यों अबकी बार मेरा मन कानपुर

छोड़ने का नहीं हो रहा था। इसलिए चलते-चलते इतनी देर हो गयी। सोच सकती हो, ऐसा क्यों? मन तो तुम्हारे पास रखा रहता है। यदि मुझसे कोई जोर देकर कहता कि मत जाओ, तो मैं न आता।

आज मैंने जब अपना पैण्ट पहना तो उसमें रानीखेत वगैरह के तमाम कागज और टिकट वगैरह निकले। टिकट गणेश, कैलाश के लिए भेज रहा हूँ। यहाँ पर लोग कोट-पैंट पहनने लगे हैं, अभी, पर मैं तो सूती बुश्शर्ट ही पहनकर ताज देखने गया था।

अच्छा अब सोने की आज्ञा दें एक मीठे चुम्बन के साथ। दिन भर का थका हूँ। खूब जल्दी से मीठा-मीठा उत्तर लिखो।

तेरा ही तो प्रेमी
'श्याम'

•

वृन्दावन
27.10.56

Kammo, the dearest,

आज सवेरे वृन्दावन आया। गोकि तुम्हारे ऊपर गुस्सा बहुत था कि इतना कहकर आया था कि तुमने एक भी पत्र नहीं लिखा। पता नहीं लोग कहते हैं कि नारी का हृदय कोमल होता है। आज 10 दिन पूरे हो गये, न तो तुम्हारा कोई पत्र, न घर से और न उस बालकृष्ण ने ही कुछ समाचार दिया।

पर वृन्दावन की उस प्रेमभूमि में, जिसके कण-कण में राधा-कृष्ण और कृष्ण-गोपियों की प्रणय लीलाएँ अंकित हैं, जिसके हर वृक्ष की पत्ती रासलीला, दानलीला, चीरहरण और महारास की साक्षी हैं, उसी मधुर स्थल पर मेरा भी प्रेमी मन तुम्हारे लिए समुत्सुक हो उठा। मैं चाहने लगा कि मेरी भी राधा, श्याम की श्यामा यहाँ पर होती। तुम जानती हो कि प्रेमाभक्ति पर मैं रिसर्च कर रहा हूँ और प्रेमाभक्ति में रसराग कृष्ण से भी अधिक महत्त्व 'रसिकेश्वरी' का है। अतः स्वाभाविक था कि मैं अपना मान भूलकर अपनी मानिनी कम्मो को सबसे पहले पत्र लिखूँ। अब तक निश्चित कर रखा था कि एक पत्र तुम्हें अवश्य और लिखूँगा यहाँ से चलने से पहले, पर यह Shortest Possible होगा यानी उसका मैटर यों होता—

O.K.

Shyam

पर यह पत्र तो वृन्दावन लिखा रहा है, जिसके लिए स्वयं भगवान कृष्ण ने कहा था—

ऊधो, ब्रज बिसरत नाहीं
हंस सुता की सुन्दर कगरी औ' वृक्षन की छाँहीं।
वै सुरभी, वै बच्छ, दोहनी, खरिक दुहावनि जाहीं।

प्रिये, आज जब सवेरे मैं बस से उतरा तो अपने अनुसन्धान कार्य के नीरस प्रसंग में उलझने के पूर्व मैंने सोचा कि वृन्दावन के कुछ खास-खास स्थान देख लूँ। कॉलेज के एक कामर्स विभाग के सहयोगी सपरिवार आये थे, वे भी मिल गये। उनके साथ घूमता रहा। जब शाह बिहारीलाल के मन्दिर पहुँचा तो मुझे तुम्हारी बड़ी जोरों की याद आयी। अन्दाज लगाओ वहीं पर क्यों? नहीं बूझ पायी तो लो सुनो। जरा याद करो कि टेढ़े खम्भे वाले मन्दिर का चित्र तुमने कहीं देखा है। जब बिट्टन और पाण्डेय जी परसाल घूमने आये थे तो टेढ़े खम्भों वाले मन्दिर की सीढ़ियों से उतरते हुए बिट्टन की एक फोटो है, बस मुझे वही याद हो आयी और मैंने सोचा कि अगर आज तुम भी उसी प्रकार हमारे साथ होती तो कितना अच्छा होता। यों तो हर जगह मैं अकेले गया, पर हर जगह तुम्हारी याद, तुम्हारा मुख मेरे मानस चक्षुओं के सामने ही रहा।

कल मैंने ठाकुर का एक सवैया पढ़ा था, यद्यपि तुम्हारी रुचि कविता में नहीं है, फिर भी शायद तुम्हे यह पसन्द आ जाये—

ऐसे कबौं कहा कारज होत है जो मग माँझ कबौ दरसाने।
ये दिन ऐसे ही बीतत हैं, हमहूँ तरसी, तुमहूँ तरसाने।
ठाकुर और विचार कछू नहिं, ये अभिलाख हिये सरसाने।
कै हमहीं बसियै नन्दगाँव, कि आप ही आप बसौ बरसाने।

इसका अर्थ लगाओ और न समझ में आवे तो जब मैं आऊँ तो पूछना, बता दूँगा। एक पंक्ति और सुन लो—

"मोहिनी डारि कै मोहन जू वह मोहनी मूरत क्यों न दिखावत।"

Dear, तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करना। मथुरा में भी मैं बड़े आराम से ठहरा हूँ। म्यूजियम के क्यूरेटर महोदय हैं। उनके कारण अनुसन्धान-कार्य में भी बड़ी सुविधाएँ मिल जाती हैं। खाना भी उन्हीं के यहाँ खाता हूँ।

वृन्दावन से शाम को मथुरा लौट जाऊँगा और फिर कल सवेरे आऊँगा। परसों मथुरा रहूँगा तथा फिर 30 तारीख को सवेरे वृन्दावन आऊँगा और शाम को फिर मथुरा। 31 को दोपहर तक आगरा पहुँचूँगा और वहाँ से 1 तारीख को कानपुर प्रस्थान। तुम चाहो तो मुझे आगरे को पत्र लिख सकती हो। यह पत्र तुम्हें 29 को मिल जायेगा और यदि तत्काल उत्तर लिखकर डाल दो तो मुझे 30 को नहीं तो 31 को शाम तक अवश्य आगरा आ जायेगा। आगरा का पता वही C/o भटनागर साहब, वाइस चांसलर।

स्वेटर मेरा पूरा होने को आ रहा होगा। क्या मैं उम्मीद करूँ कि जब तक मैं कानपुर पहुँचूँगा, तब तक पूरा हो जायेगा?

भाभी के समाचार क्या हैं? भाई साहब ने ऑपरेशन कराया ही होगा। आशा है कि ऑपरेशन कुशलतापूर्वक Successful सिद्ध हुआ होगा।

बिट्टन का क्या कोई समाचार आया। उनके क्या हाल हैं? दीवाली बाद कानपुर आवेंगी या नहीं? बापू के मुकदमे में क्या हो रहा है। सारे समाचार Along with your sweet words and tender feelings should come to me at once. I am longing for them. I must get them in Agra upto 31st of October.

Rest is O.K. How are your studies? I hope you are busy with your books now.

With sweet kisses and deep, clasped embraces.

your's lover

'Shyam'

यह प्रेम पाती तुम्हारे ही श्याम द्वारा लिखी गयी, जो हमारी प्यारी कम्मो को मिलनी है।

•

University Guest House
Agra University, Agra
30.10.56

मेरी मधुर कम्मो,

आज सवेरे ही मथुरा से एक पत्र तुम्हें डाला है। पत्र कुछ नाराजी में लिखा था, पर अब तुम उसे पढ़कर नाराज न होना। मेरा सारा गुस्सा तेरे पत्र ने धो दिया है, पर इतना तुम सोच सकती हो कि मेरा क्रोध उचित ही था। भला सोचो कोई इतनी दूर पड़ा हो और उसकी प्यारी कम्मो की एक लाइन भी उसे न मिले, तो कितनी निराशा हो। मैं दिन भर सवेरे 7 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक वृन्दावन की गलियों, सड़कों, गोस्वामियों एवं महन्तों के घरों की खाक छानकर शाम को जब लस्त-पस्त भूखा मथुरा लौटता, तो मन में केवल एक उत्साह होता कि कम्मो का पत्र आया रखा होगा, पर जब वाजपेयी जी से पूछें—कोई डाक? तो उत्तर मिले न। अब जरा मेरी मानसिक स्थिति का तुम तनिक अनुमान लगाओ। खाना फिर अच्छा न लगे और सोना उससे भी बुरा।

पर पता नहीं डाक में क्या गड़बड़ी है, जो तुम्हारा 19 तारीख का लिखा पत्र मेरे मथुरा जाने तक यानी 25 तारीख तक न आया था और आज लौटकर आने पर मिला, पर इतनी शिकायत फिर भी है कि तुमने 25 के बाद कोई पत्र और नहीं लिखा। देखो आज शाम की डाक और कल की डाक का मैं और इन्तजार करूँगा। कल दोपहर को मैं यहाँ से रवाना होऊँगा और शाम को कानपुर पहुँच जाऊँगा। मेरा

यह पत्र शायद तुम्हें कल शाम की डाक में मिले और मथुरा से लिखा पत्र शायद सवेरे ही मिल जाये। अस्तु रानी, कल 1 नवम्बर है, ध्यान रखना। मैं तुम्हारी याद लिये इतनी दूर चला आऊँगा।

तुम्हारे लिए मैं कुछ नहीं ला पा रहा हूँ, इसका मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है, पर क्या बताऊँ, पॉकेट बिल्कुल खाली हो गयी है, वृन्दावन में तमाम किताबें खरीदनी पड़ गयीं।

डाक निकलने का टाइम हो रहा है, इसलिए अब और बड़ा पत्र न लिखूँगा। भाभी को मेरी ओर से Clear off पर Congratulate कर देना। आखिरकार भाई साहब नहीं माने।

ब्रजेश का स्वास्थ्य, आशा है अब ठीक हो रहा होगा। और सब ठीक है।

बस इस समय लगता है कि कैसे जल्दी से कानपुर पहुँच जाऊँ तेरे पास और तुझे आलिंगन में कसकर उत्कण्ठा से चूमता रहूँ। भगवान ने चाहा तो अब दो-एक दिन में मिलेंगे ही।

और नये समाचार देना। बस प्यार और उत्कण्ठा के साथ।

तेरा ही पागल
'श्याम'

कम्मो रानी बड़ी सुहानी
मत करना तुम मनमानी।
पढ़ते जाना कसकर तुम
जिससे रहे न कोई सानी।

ए.डी. शंकरन की ओर से कमलेश को।

●

रात्रि : 10 बजे
Department of Hindi
D.A.V. College, Kanpur
15.11.56

कम्मो,

यह तो तुम्हें मालूम ही हो चुका है कि मैं बीमार हूँ पर शायद यह अनुभव तुम नहीं करना चाहतीं कि बीमारी में यदि तुम्हें अपने पास पाने में असमर्थ हूँ तो कम-से-कम तुम्हारे पत्र की आशा मैं अवश्य कर सकता हूँ। बुखार परसों दोपहर से है, पर कल दोपहर तक मैं उसे Neglect करके घूमता रहा। आखिरकार फिर बुखार और बढ़ा तथा उसने लेटने को मजबूर कर दिया। दवा डॉ. राजेन्द्र जैन की हो रही

है। आज अभी तक कोई विशेष फायदा नहीं है। शायद कल कुछ मालूम पड़े। कल 10 बजे इंजेक्शन लगाने आवेगा। बुखार में पैर और सिर दोनों बहुत दर्द करते हैं, यह तुम्हें मालूम ही होगा।

बिट्टन के लिए पाण्डेय जी ने एक Present और बहुत से प्रेम सन्देश दिये थे, वे जब मैं मिलूँगा, तब उनको दूँगा, बता देना बिट्टन से।

परसों 17 तारीख को शाम को 6 बजकर 10 मिनट से लेकर 6:30 के बीच में मेरा लिखा फीचर 'आखिरी भत्ता' ब्रॉडकास्ट होगा, अगर बोर न महसूस करना तो उसे सुन लेना।

मेजपोश के लिए जो कपड़ा तुम लाई थीं, उसका उपयोग अभी तक हुआ या नहीं।

परसों लाइब्रेरी से किताब तो तुम लायी थीं?

आशा है कि सोमवार को कॉलेज जा सकूँगा। आज वे सज्जन आये थे, जो अपनी लड़की की शादी करवाने के लिए मेरे पीछे पड़े हैं। जिनकी पत्नी बहुत लड़ाका है। कुछ देर बैठकर चले गये थे।

तुम्हारा ही
'श्याम'
(बुखार में)

•

प्रातः : 10.30 बजे
हिन्दी विभाग
दयानन्द कॉलेज, कानपुर
मनीराम बगिया
17.11.56

मेरी प्राणशक्ति कम्मो,

कल दोपहर तक तुम्हारे पत्र का इन्तजार करने के बाद अपनी आदत के मुताबिक तुम्हें झल्लाकर एक पत्र लिखा है, शायद आज मिला होगा। पढ़कर तुम रोई जरूर होगी, पर तुमने भी अपना बदला निकाल लिया है, शाम को जब लेटर बॉक्स से तुम्हारा पत्र लाकर सुधीर ने कहा—लो दादा, भाभी का पत्र आया है, तो मैं काँपते हाथों से पत्र लेकर पढ़ने बैठा। सुधीर सामने खड़ा था और तुम्हारा पहला पैराग्राफ पढ़ते-पढ़ते मेरी आँखों में आँसू आ गये। मैंने पत्र पुनः बन्द करके रख दिया। जब सुधीर चला गया तो मैंने पुनः उसे पढ़ना शुरू किया। मेरे आँसू बहते जा रहे थे और मैं पत्र पढ़ रहा था। सच मान रानी, कल मैं खुद तुझसे मिलने के लिये व्याकुल था। मुझे बार-बार तेरे Eye-sore की याद हो आती थी और सोच रहा था कि अपनी उतनी भयंकर तकलीफ में भी जो कम्मो बराबर मेरे

आराम और सोने का आग्रह कर रही थी और अन्ततः मुझे सुला ही दिया था, अगर आज वह मेरे पास होती तो मुझे कितना सुख देती। खैर, तू पास न थी, पर मेरी डार्लिंग की अनन्त कामनाएँ और असंख्य चुम्बन तो मेरे चारों ओर कवच की भाँति मुझे सुरक्षित किये रहते हैं। तो खुश हो जा, मेरा बुखार आज उतर गया है। सवेरे टेम्परेचर 97.1 था, यदि शाम तक न बढ़ा (जैसी कि उम्मीद है) तो फिर परसों शायद कॉलेज भी आ सकूँ। यह भी हो सकता है कि Weakness आ जाने के कारण परसों की बजाय कॉलेज मंगल को आऊँ। आज तो दोपहर में केवल डबलरोटी का एक टुकड़ा लूँगा, खाना कब मिलेगा। डॉ. राजेन्द्र दिन में एक-दो बार देख जाता है, बड़ी लगन से दवा दे जाता है और तुम्हें पूछ जाता है। एक दिन उसने अपने घर खाने पर बुलाया है।

दिदिया कोटी के लिए नाराज नहीं है। स्वेटर के लिए उन्होंने कहा था कि तुम पढ़ने में व्यस्त होगी, इसलिए खुद बुन देने के लिए कहा था, पर कल चूँकि तुम्हारे यहाँ से मुझे देखने कोई नहीं आया, इसलिए दिदिया को कुछ बुरा लगा था। तुम जानती ही हो कि हमारे घर इस तरह की Formalities पर लोग बहुत ध्यान देते हैं, जिन पर कि तुम्हारे यहाँ नहीं दिया जाता। दिदिया कह रही थी कि आज भाई साहब अगर दुकान वगैरह में व्यस्त थे तो कैलाश, ब्रजेश वगैरह तो देखने आ सकते थे। ऐसे तो अब सब कोई हो गया है, तो क्या बीमारी में ब्रजेश वगैरह नहीं आ सकती हैं। मैंने कहा कि उन लोगों के यहाँ बीमारी वगैरह का इतना महत्त्व नहीं है, पर दिदिया को बहुत सन्तोष नहीं हुआ। कहने लगीं कि बेचारी कमलेश घबड़ा रही होगी और मारे संकोच के किसी से यहाँ तक आने को कह भी न सकती होगी। तुम अब चिन्ता न करना, पढ़ती जाना। सम्भव हुआ तो बुध को मैं थोड़ी देर के लिए आ जाऊँगा, तब उस किताब से तुम्हें कुछ पढ़ा दूँगा।

आज शाम को 6:10-6:30 के बीच मेरा फीचर 'आखिरी भत्ता' सुनना, अब शायद मेरी टॉक 4 दिसम्बर अथवा 11 दिसम्बर को होगी। रडियो पर कुछ काम हो गया था। पाण्डेय जी को उस दिन भर मैंने बड़ा बोर भी किया और मेरे चक्कर में पड़कर दिन भर वे भूखे भी रहे (यानी दोपहर को केवल चाय-टोस्ट पर रहना पड़ा) इसके लिए बिट्टन से तुम मेरी ओर से क्षमा माँग लेना।

पाण्डेय जी की चिट्ठी कल मेरे पास आयी है। पुलिस वाला रिजल्ट आ गया, उसमें वे नहीं आये। अब उन्होंने सरकार से nomination की कोशिश कराने के लिए कहा है, कल वे दद्दा से मिलने आये भी होंगे लखनऊ। मैंने भी दद्दा को लिख दिया है, पर हमें उम्मीद नहीं कि कुछ हो सकेगा। पाण्डेय जी को उत्तर मैंने

कल ही लिखा है। बिट्टन से कह देना कि उनको पत्र लिख रही हों तो लिख दें कि आज ता. 17 नवम्बर के National Herald में रेलवे में 12 Sub-Inspector of Railway Protection Force की जगहें उनके लायक निकली हैं, उनमें वे Apply कर दें। जगहें अच्छी हैं, कुछ कोशिश देखी जायेगी, बाद को।

लखनऊ में जिज्जी के यहाँ भी गया था मैं। पाण्डेय जी नहीं गये। इस बार तिवारी जी भी मिले थे। तुम्हारी जिज्जी की मूर्खता इस बार भी मेरे सामने आयी। मुझसे पूछ रही थीं कि महीने में कितने चक्कर सीसामऊ के लगते हैं। मैंने कहा कि यह तो आप बजाय मुझसे पूछने के अपने माँ-बाप को लिखकर पूछ लीजिए, क्योंकि मैं तो झूठ भी बोल सकता हूँ।

सूट के लिए भाई-साहब आये तो थे, पर मैं बीमार पड़ा था, इसलिए जा नहीं सका। आज भी शायद वे आवें, पर अभी आज मैं बाहर जाने की स्थिति में नहीं हूँ। भाई साहब और भाभी को भी तो उनकी ससुराल से सूट और कोट मिलना है। भाभी के लिए तो भाई साहब कहने लगे कि रुपये की चिन्ता न करिए, बढ़िया-से-बढ़िया कपड़ा खरीदवा दीजिए। मैंने उन्हें बताया कि लेडीज कोट लायक एक विलायती कपड़ा मैं 30 रुपये गज देख आया हूँ। अब अच्छा हो जाऊँ तो एक दिन तुम भी चलकर सब कपड़े देख लो और जो चाहो पसन्द कर लो। घर से तो तुम लोगों के कोट बनने की कोई उम्मीद होगी नहीं और सब क्या हाल है? सावित्री, सुषमा नहीं आयीं तो अब तुम आने के लिए उनसे न कुछ कहना और न Invite ही करना। मुझे सोमवार को ही यह मालूम हो गया था कि वे लोग नहीं गयीं। आदित्य कहने लगा कि ये लीग Sports देखने चली गयी थीं और सुषमा मारे संकोच के इसीलिए आज Girl's section की ओर नहीं गयी।

अबकी बार लखनऊ में भाभी से और मुझसे एक हल्की-सी झड़प हो गयी थी। मिलने पर बताऊँगा।

प्रिये, अब थक गया हूँ। गोकि पत्र बन्द करने का मन नहीं हो रहा है! उत्तर फौरन देना, सुधीर के ही हाथ। इसको थोड़ी देर चाहे रोक लेना।

प्यार भरे हृदय के साथ
तुम्हारा ही
'श्याम'

अजय की तबीयत भी खराब है। उसे 3-4 दिन से काफी तेज बुखार है। कल रात से उसे काफी बेचैनी है। तुमने दिदिया के पत्र का जवाब भी नहीं दिया। उन्हें अलग से पत्र लिखना।

दोपहर : 1.15
Department of Hindi
D.A.V. College, Kanpur
18.11.56

My Sweet Angel,

अभी-अभी सुधीर ने तुम्हारा प्यारा लिफाफा लाकर दिया। उसकी मोटाई देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। ऊपर आकर खोला तो उसमें एक पुराना पत्र भी निकला। पत्र तो कल का लिखा हुआ था और मेरे पत्र के उत्तर में कुछ लिखा नहीं गया था। इधर-उधर के References भी सब के सब Disjointed हैं।

मुझको कल शाम को ही यह पता चल गया था कि Mrs. Shukla कॉलेज आयी थीं और मैंने यह अन्दाज लगाया था कि वे तुमसे जरूर मिली होंगी। एक दिन उनके यहाँ चलना जरूर है। यह भी सूचना आ गयी थी कि तुमने बालकृष्ण का पता लगाने की कोशिश की थी।

मेरी तबियत, डार्लिंग, अब बिल्कुल ठीक है। बुखार अब बिल्कुल नहीं है। अभी-अभी 5 दिन बाद मैंने मूँग की दाल, रोटी, लौकी की सब्जी तथा टमाटर का सूप एवं नींबू का अचार खाया है। (तुम्हारे मुँह में पानी तो नहीं भर आया) दवा राजेन्द्र की ही खा रहा हूँ। रोज आकर देख जाता है। उसने Complete rest लेने के लिए कहा है।

बिट्टन वाले पत्र से जो उद्धरण तुमने दिया, उससे यह Clear नहीं हो पाता कि 'हम लोग अस्पताल में कब मिले थे।'

बिट्टन की जो 'Present' है, वह तुम्हें बताये देता हूँ पर उनको मत बताना, वरना सारा मजा किरकिरा हो जायेगा। छोटा-सा सफेद कंघा जो पाण्डेय जी की जेब में था, वह उन्होंने निकालकर मुझे दिया था कि यह मेरी प्रेम भेंट दे देना, पर देखो बताना मत। जरा उत्सुकता बढ़ने दो।

मेरा वह पत्र मिलते ही फौरन मुझे डाक से पत्र लिखना, मैं कल शाम की डाक में तुम्हारे पत्र का इन्तजार करूँगा। खूब बड़ा Poet या लेखक या प्रश्न पर तुम लोग Notes चाहती हो। कुछ Notes तो Already तुम्हें मैं दे आया हूँ। मुझसे तो Text और Questions बैठकर Discuss करो, यह शायद अधिक लाभप्रद हो। Questions तो कॉलेज में लिखाये ही जावेंगे। Mrs. Shukla के यहाँ जब चलना तो उनसे भी उनके Notes माँग लाना।

Something more about love,

1. Upon the thresholds of wedding nights, stand an angel smiling, his fingers on his lip.

2. Love is the sublime crucible in which is consummated the fusion of man and women.

3. To love is a consummation.

Rest O.K.

Love and kisses to my sweet
Kammo
By his only
'Shyam'

•

लखनऊ
05.12.56

Darling,
यह लाइनें समय निकालकर, दूसरों की आँखें बचाकर लिख रहा हूँ। इस समय मन का बाँध टूट गया है। मन तुम्हारी ओर भाग रहा है। कपूर साहब के छोटे भाई की शादी में थोड़ी देर पहले सम्मिलित हुआ था। खत्रियों में जयमाल बड़े समारोह से होता है। वधू जयमाल लिये धीरे-धीरे मृदु मन्द मन्थर गति से आयी, नीची आँखों, काँपते हाथों से उसने वर के गले में जयमाल डाली। वर ने भी अपने अरमानों का हार उसे पहनाया। तुम स्वयं समझ सकती हो कि उस समय मेरे मन की आँखों के आगे तुम्हारे कितने चित्र नहीं गुजर गये। तुम्हारी जयमाल के समय की सलज्ज मुद्रा, वही गति और दृष्टि-निक्षेप सभी याद हो आये। 1 जुलाई की सन्ध्या मेरी आँखों में उतर आयी। उस वर-वधू की आँखों में मुझे अपने सारे सपने, समस्त उमंगें, सम्पूर्ण अभिलाषाएँ, निखिल भावनाएँ दिखाई पड़ रही थीं। रानी, मैं कुछ लिख नहीं पा रहा हूँ। रत्नाकर के कृष्ण जैसी मेरी स्थिति है–

नेकु कही नैनन सों अनेक कही सैननि सों
रही सही सोऊ कहि दीनि हिचकीनि सों।

मेरा गला भरा हुआ है, मेरे नेत्र भरे हुए हैं, मेरा मन भरा हुआ है। कम्मो तू आ जा, तुझे चिपटाकर रो लेने का मेरा मन है। सच, क्या तू इस समय मुझे नहीं मिलेगी, मेरी
Kammo, The dearest.

•

कानपुर
07.12.56

कानपुर अभी 10:30 के करीब आया, रास्ते में भाई साहब मिले। मामा की दुकान पर पहुँचा तो कैलाश आ गया। उसने तुम्हारी कापी दी, पुर्जा उसके भीतर मिला।

गोकि मैंने कापी बड़ी ललक से खोली थी कि तुम्हारा पूरा पत्र होगा। फिर भी कानपुर आते ही तुम्हारी भाभी मिलीं तो मुझे ऐसा लगा कि मेरा फूलों से स्वागत किया गया है।

तुमने जो परसों चिट्ठी दी, उसे मैंने अभी तीसरी बार पढ़ा। कम्मो मेरी प्राण! जितनी बार मैंने पढ़ा है, मेरी आँखों ने आँसू बहाये हैं। मुझे डार्लिंग माफ कर दो, मैंने तुम्हें व्यर्थ में ही तमाम डाँटा था। मुझे इस समय बड़ा दुख हो रहा है, बल्कि आश्चर्य हो रहा है कि अपनी कोमल कम्मो को मैंने इतना डाँटा कैसे? बोलो, माफ कर दिया न, तुमने यह कैसे सोच लिया कि तुम कॉलेज आतीं और मैं मुँह घुमा लेता। ऐसी स्थिति आने के पहले ही...।

मेरे तो मन का यही कष्ट था कि तुमने मेरे प्रेम का रिक्शे में तिरस्कार कर दिया था। जब तुम ऊपर घर जाने लगी थीं, उस समय भी एक बार कह देतीं कि ऊपर आ जाओ तो मैं सब कुछ भूल जाता। तुम कल्पना नहीं कर सकतीं कि रिक्शे से उतरने के बाद मेरा मन कैसे छटपटा रहा था। सुमति के यहाँ गया, पर बैठा न रहा गया तो फिर लौटकर आया, पर इसीलिए और जल्दी उठकर भागा कि कहीं बापू के आगे मैं जोर से रो न पड़ूँ या ऊटपटाँग कहकर चिल्ला न पड़ूँ। ए.वी. रोड गया, पर कहीं मन न लगा, बालकिशन के साथ घर आया। दो-चार झाड़ उन पर भी पड़ी।

दूसरे दिन बुधवार को मुझे पहले-पहल सूट पहनना था, मेरा मन सूट पहनने का नहीं था। मैं सोच रहा था कि पहले-पहल मैं सूट पहनूँ और तुमसे कलह किये हूँ। मैंने जबरदस्ती उसे पहना, पर नहीं मेरा सूट अत्यन्त सौभाग्यशाली है। उसने तुम्हें मुझसे ला मिलाया। जिस समय तुम लाइब्रेरी में आयी और बालकृष्ण ने मेरी बाँह दबाकर तुम्हारी ओर इशारा किया तो मेरा मन हुआ दौड़कर तुमको चूम लूँ, माफी माँग लूँ और कहूँ कि मेरी कम्मो रानी, इस तरह मुझसे नाराज होकर इतना कष्ट अब कभी न देना, पर अध्यापक जो ठहरा, अपने को संयमित किया। वहाँ चपरासी खड़ा था, लड़के खड़े थे और तुम्हारी राज खड़ी थी। एक बात बताऊँ मेरे मन में उस दिन कुछ ऐसी भावना थी कि शायद तुम आ जाओ, तुम आ गयी—

'जाको जा पर सत्त सनेहू,
सो तेहि मिलहि न कुछ सन्देहू।'

तुम्हारा आँसू वाला प्रश्न पूरा कर दिया है। कल आऊँगा, तुम्हारे 10 रुपये मेरे ऊपर उधार रहे। लखनऊ में न पाण्डे जी से मिल सका और न जिज्जी के यहाँ ही गया। मेरी रेडियो टॉक अब 8 जनवरी को निश्चित हुई है। तुमको इस बार Fair करना होगा। अच्छा, लो मेरे अनगिनत चुम्बन, आलिंगन। मेरे हृदय की अजस्र भावनाएँ लो। लो अपने पागल क्रोधी श्याम के मन का अमित प्यार भी, मेरी Kammo, the dearest.

•

दोपहर : 2 बजे
21.12.56

मेरी ही कम्मो,

अभी 2 घण्टे पहले तुम्हारा पत्र मिला था। मैं कल शाम पत्र की प्रतीक्षा में बहुत अधिक रहा। पौने पाँच बजे मैं एक काम से बाहर चला गया था, पर 5.30 पर फिर लौटकर घर इसीलिए आया कि तुम्हारा पत्र मिलेगा, नाराज तो नहीं हुआ, पर कुछ उदास अवश्य हो गया। सोचा कि शायद डाक में लेट हो गया होगा। आज सवेरे से भी तीन बार लेटरबॉक्स देखा, फिर 11:30 पर सुधीर ने आकर कहा कि दादा, लो भाभी की चिट्ठी आयी है, मैं बड़ा प्रसन्न हो गया।

असल में तुमने मुझे जो दुबला देखा और यहीं से जाने पर हर बार देखती हो, पर दो दिन में ही मैं वहाँ दुरुस्त हो जाता हूँ, उसका कारण भी तुम्हीं हो। यदि यहीं पर तुम रहो तो मैं स्वस्थ हो जाऊँ। तुम्हें याद होगा कि जब तुम यहाँ थीं तो अकसर लोग कहते थे कि शादी के बाद अवस्थी का स्वास्थ्य अच्छा है और जब तुम्हारे पास वही रहता हूँ तो तुम्हारे सान्निध्य का आनन्द मुझे मोटा कर देता है, तो अभी आओ न?

तुमको मैंने नहीं लिखा था, इधर मेरा स्वास्थ्य जुकाम बिगड़ जाने से लगातार ठीक नहीं रहता था, फिर 2-4 दिन दवा खायी तो अब जाकर ठीक हुआ हूँ। जिस दिन तुम्हारे यहाँ आया था, उस दिन तो मैंने खाना 4 बजे शाम को खाया था।

अजित तुम्हारी प्रशंसा में मुझे बधाई दे रहा था। तुमसे मिलकर वह भी प्रसन्न था। तुम्हारा पत्र, उसने पहला पैराग्राफ पढ़ लिया था। सूट और टाई उसने देखी थी। कहने लगा कि हाँ हमारे कहने पर तो कभी पहना नहीं, अब बीवी के कहने पर पहन रहे हो।

बनारस मैं 26 की शाम को जाऊँगा। 2-3 दिन बनारस रहूँगा। फिर लालगंज जाऊँगा। 1-2 तारीख तक कानपुर लौटूँगा।

तुम Darling मुझे बड़ी कड़ी सजा दे रही हो कि मैं बनारस से लौटने पर तुम्हारे पास आऊँ। जब तक मैं बनारस से लौटूँगा, उस समय तक तुम...में होगी और मैं फिर कई दिन प्रतीक्षा करूँ, तब जाकर कहीं यानी जनवरी तक तुमसे मिल पाऊँ। यह कितना बड़ा अत्याचार मेरे ऊपर होगा। आज 21 है, 8 जनवरी तक 15 दिन से भी ऊपर हुए। और हम लोगों को मिले भी 10-12 दिन हो चुके हैं। यदि तुम आज्ञा दे दो तो अथवा 25 की शाम को केवल एक रात के लिए आ जाऊँ, खाना मैं अपने घर से खाकर कुछ लेट यानी 9 बजे के लगभग पहुँचूँ और सवेरे तुम्हारे यहाँ

से चाय पीकर लौट आऊँ। मुझे लिखना, मैं तुम्हारी आज्ञा की प्रतीक्षा में रहूँगा। उस दिन मेरा मन बहुत विवश हो उठा था, यदि अजित के स्थान पर और कोई होता तो मैं शायद रवाना करता और रात भर रह जाता। तुमको मैं बनारस ले चलता, परन्तु वहाँ पर दादा, भाभी, बाबा वगैरह सभी लोग हैं, उनके सामने घूमना अच्छा नहीं लगता है। एक प्रकार का चैक लग जायेगा वहाँ पर। फिर मैं Conference में भी Busy होऊँगा, पर तुम्हारे साथ मेरा कहीं बाहर घूमने चलने का मन है। अब से जनवरी तक देखा जायेगा।

कल कॉलेज में मुझे तुम्हारी मधुरिमा मिली थीं। मैं Mrs. Baijal के पास प्रेमचन्द स्मारक के सम्बन्ध में गया था। वहाँ पर हरा कोट पहने वे इम्तहान दे रही थीं। मुझे देख-देखकर बहुत मुस्करा रही थीं, पर मैंने उस समय कोई खास Lift नहीं दी और लड़कियाँ भी देख-देखकर मुस्करायीं। बैजल मुझसे पूछने लगीं कि आपकी ही पत्नी फोर्थ इयर में पढ़ रही है। मैंने कहा—जी हाँ। कहने लगीं कि कौन तपस्या आपने की थी जो इतनी सुन्दर और Well behaved लड़की आपको मिली। कहने लगीं कि Class में भी उसका Behaviour बहुत अच्छा है। मुझसे कहा कि उसे M.A. जरूर कराइएगा। फिर कहने लगीं कि वहाँ से क्यों आती है, यहाँ क्यों नहीं बुला लेते। मैंने कहा कि अब आपकी आज्ञा है तो बुला लूँगा। पूछा कि नाम क्या है, मैं भूल गयी हूँ। इसी प्रकार बड़ी देर तक तुम्हारी बड़ाई करती रही और मुझे जलन होती रही कि कम्मो की तारीफ कर रही हैं, मेरी नहीं। मधुरिमा अगर मिलेंगी तो तुम्हें बतावेंगी, क्योंकि वे सबसे आगे बैठी सुन रही थीं।

भाभी आने वाली थीं, आयीं या नहीं और समाचार देना। कॉलेज 3 जनवरी को खुल रहा है। कॉलेज से कुछ कापियाँ आवेंगी, तब तुम्हारे पास देखने के लिए भेज दूँगा।

इंगलिश में जो किताब कॉलेज में पढ़ाई जानी है, उसे ही तुम खरीदना, मेरे ख़याल से Prose वाली ही ठीक रहेगी। ठीक से पढ़ती जाना। उत्तर बहुत शीघ्र देना।

प्यार के साथ

कम्मो को यह

पत्र लिखा उसके Darling ने।

कापियाँ कॉलेज से आ गयी हैं। हिन्दी का B.A. II का पर्चा भेज रहा हूँ। इसे सँभाल कर रखना तुम भी और बिट्टन भी। मैं आकर देखूँगा और पर्चा मत खोना। यही एक है।

'श्याम'

•

148, New Bashiratganj
Rajindra Nagar, Lucknow
Rajendra Mansion, Pandariba, Lucknow
24.02.57

Sweetie,

कल शाम को चार बजे तक तुम्हारा पत्र न आया तो मुझे बड़ी निराशा हुई। यद्यपि मैं Awfully काम में Busy था, पर फिर मन न लगने लगा। कई बड़ी-बड़ी गलतियाँ कर गया। तब तक भाभी का टेलीफोन आया कि मेरा पत्र आया है। मैंने फौरन मँगवाया। उस समय यहाँ कश्मीर के प्रधानमन्त्री बख्शी गुलाम मुहम्मद थे, पर मैं पढ़ूँ कैसे, यह मेरे लिए अधिक महत्त्वपूर्ण था। किसी प्रकार Bathroom जाकर भीतर से दरवाजा बन्द किया। बड़ी ही खुशी थी। यद्यपि पत्र छोटा था, पर साथ का चित्र सारी बातें स्वयं कह रहा था, पर कम्मो मैं तो इतना सुन्दर नहीं हूँ जितना तुमने मुझे बनाया है, पर चित्रकला में आजकल एक पद्धति Impression के नाम से चल रही है, उसके अनुसार चित्रकार के मन में जैसी भावना होती है, उसको वही रूप वह देता है, ना कि उसकी निश्चित रूपरेखा की ओर ध्यान देने के। सो मैंने तो सोचा कि शायद तुम मुझे अपने मन में इतना ही सुन्दर समझती हो। बहरहाल मेरे मन को बड़ा सन्तोष मिला।

अब सुनो, काम की हालत यह है कि खाना, पीना, सोना सब यहीं पे होता है। रात को 3:30 बजे सोता हूँ, सवेरे 6:30 बजे उठता हूँ और दिन में एक भी मिनट सोने को नसीब नहीं होता है। खाना सिर्फ एक समय खाता हूँ। गरदन की चिक अभी ठीक नहीं हुई, पर उसकी परवाह करना बेकार है। तुम सोच नहीं सकती हो कि यहाँ काम की दशा क्या है। अभी कल तक यही हाल रहेगा। बालकिशन भी लखनऊ में हैं। हाँ, बिट्टन से बता देना कि परसों शाम से पाण्डेय जी भी मेरे चक्कर में पड़कर इसी प्रकार दो रातों से जग रहे हैं और काम कर रहे हैं। रात को रह भी मेरे ही साथ रहे हैं। हम लोग अकसर तुम लोगों की याद कर लेते हैं। पाण्डेय जी एक लड़की को पढ़ाते हैं, उसका घर का नाम बिट्टन है तथा स्कूल का नाम कमलेश। एक और मजेदार बात, कल वोटर लिस्ट में एक नाम था कमलेश भंटनागर। दिनेश ने मुझे दिखाया और मुझे उस समय तुम्हारी बड़ी याद आयी। दिनेश दिन में कई बार अपनी बीवी से टेलीफोन पर बात करता है, मेरे मन में होता है कि यदि तुम्हारे यहाँ फोन होता तो मैं भी यहाँ से दो-तीन बार तो ट्रंक मिलाता ही। मेरे आसपास दो-दो टेलीफोन रखे रहते हैं, पर मैं तुमसे बात नहीं कर पाता। इन दिनों कॉलेज में भी छुट्टी है, वरना मैंने वहीं को मिलाया होता। कल सवेरे ही तुम्हारे खत का बेसब्री से इन्तजार करूँगा। नहीं लिखोगी तो मुझे बड़ा कष्ट होगा।

छोटा ही पत्र लिखो, पर लिखना जरूर। कल मैं एक शादी में गया था। वहाँ पर हम लोगों की शादी की लोगों ने कई बार याद की थी।

प्रिये, मैं तुम्हारे इम्तहानों में कानपुर ही रहूँगा। कहोगी तो तुम्हारे पास ही रहूँगा वरना दिन में एक बार तो मिल ही जाऊँगा। तुम्हारी English और Sociology का परचा एक ही दिन है? राज मिलें तो कह देना कि उसके भाई का काम 28 को अवश्य हो जायेगा। पहले ही हो गया होता, पर Concerning आदमी इलाहाबाद चला गया था। अब वे लौट आये होंगे।

पढ़ाई ठीक से चलाये जाना। मैं 27 की शाम या 28 को सवेरे आऊँगा। अच्छा अब विदा दो, लो मेरे चुम्बन। टेलीफोन की घण्टियाँ घनघना रही हैं, मेरी पुकार हो रही है। किसी प्रकार इतना समय निकाल पाया हूँ जबकि दद्दा ने यह समझ लिया है कि मैं तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ।

बिट्टन ठीक होंगी। लो गुप्ता जी भी आ गये। अब भागूँ।

तेरा ही तो

'श्याम'

•

26.02.57

प्रियतमे,

परसों तुम्हें एक खत लिखा था, कल दिन भर इलेक्शन था, एक मिनट को भी दम मारने की फुरसत न थी। परसों रात भर जागा और कल सवेरे 8:45 बजे से मोटर लेकर निकला हूँ तो फिर रात 10 बजे फुरसत मिली। उस समय तक थककर इतना चूर हो चुका था कि फिर हिम्मत न थी कि कुछ लिखने बैठता। कल चौथी रात को जाकर सोया। पाण्डेय जी भी लगातार मेरे साथ ही रहे थे। आज भी दोपहर तक साथ रहे। सवेरे हम लोग मन्नो जिज्जी के यहाँ गये थे।

डार्लिंग, देखो इतने दिनों के बीच तुमने मुझे कुल एक पत्र लिखा। कल भी कुछ नहीं और आज भी कुछ नहीं आया। देखो यह बड़ी बुरी बात है। मैं यों तो अत्यधिक व्यस्त हूँ परन्तु फिर भी एकान्त के क्षणों में तुम्हारी कितनी याद आती है, यह कभी सोचा है, जबकि दिनेश दिन में 20 बार टेलीफोन पर बात करता है। डॉ. मेहरोत्रा अपनी पत्नी से बातें करते हैं, यहाँ तक कि बालकिशन की भी पत्नी यहीं पर हैं। कल पोलिंग एजेण्ट Mrs. Dinesh and Mrs. Mehrotra को बनाया गया। मैं सोचने लगा कि यदि तुम यहाँ होतीं तो तुमको भी बनाया गया होता।

डियर, मैं परसों 28 को सवेरे यहाँ से चलूँगा और तुमसे सम्भव हुआ तो 28 को ही कॉलेज में मिल लूँगा या फिर एक मार्च को घर आऊँगा। तुम तैयार रहना, हम लोग उस दिन 'बसन्त बहार' देखने चलेंगे।

और अपने समाचार कभी-कभी तो दो। लो वे सारी चीजें जो मैं हर पत्र में भेजता हूँ।

पता मैंने अपने हाथ से टाइप किया है।

कम्मो का 'श्याम'

•

19.04.57

मेरी कम्मो,

तुमको कल खत मैंने इसलिए नहीं लिखा कि शायद पाण्डेय जी बोटिंग का प्रोग्राम बनावें और जब कल शाम को 4-5 बजे वह आये तो मैं एक बार बहुत प्रसन्न हुआ कि शायद तुम अभी मिलोगी, पर निराशा ही हाथ लगी। हम लोग (पाण्डेय जी, बालकृष्ण और मैं,) फिर शाम को नाव पर घूमने गये। काफी देर घूम-घामकर फिर लौटे। मैंने तो पाण्डेय जी से कह दिया था कि वे आज भी रुकें और कल बिट्टन के इम्तहान खत्म होने पर शाम को कोई कार्यक्रम रखें, पता नहीं कि वे रुके या नहीं।

सुना कि उस दिन अम्मा काफी नाराज थीं। पहले तो बोली नहीं और फिर जब तुमने जॉनी वॉकर की तरह 'तेल मालिश' की आवाज लगायी तो एक झाड़ पड़ी। लिखना क्या Reaction थे घर-भर के।

रानी और तुमने ब्लाउज अभी अपना सिला या नहीं। मैं आज अपने लिए कुरते का कपड़ा लेने जाऊँगा। चप्पलें भी लाना चाहता हूँ पर यह सब पहनकर तुम्हें दिखायें कैसे? तुमने तो अपने घर का दरवाजा ही मेरे लिए सवा महीने के लिए बन्द कर लिया है। डार्लिंग, तुम कितनी कठोर हो! मैं कैसे यह सारा समय बिना तुम्हारे बिताऊँगा। अम्मा-दिदिया रोज कहती हैं कि कमलेश के अब तो इम्तहान खत्म हो गये, तुम क्यों नहीं जाते, जाओ दो-एक दिन रह आओ पर मैं टरका देता हूँ बहाना करके। किसे क्या बताऊँ? तुम्हें तो मैं खुद समझा रहा था, पर मैं क्या करूँ, मुझे कौन समझावे, कभी-कभी मन बहुत ही बेचैन हो उठता है कम्मो; लगता है तुम बहुत दूर पड़ी हो, मैं बहुत दूर। मैं बहुत शीघ्र अब कानपुर के बाहर चला जाऊँगा, क्योंकि यहाँ पर रहकर तुमसे न मिलना, मेरे ऊपर बहुत बड़ा Torture होगा, डियर। यहाँ मैं तड़पूँगा। तुम्हारे बिना बाहर रहूँगा तो विवशता का सन्तोष रहेगा। मेरी रानी, तुम भी रोना नहीं, दुखी न होना। किसी प्रकार थोड़े दिन और काट डालो, फिर तो हम लोग साथ-साथ रहेंगे। दिनेश का पत्र आया था। उसकी बीवी के बेबी होने वाला है, पर भाई साहब की तरह वे भी Oprate कराने के चक्कर में हैं। लक्ष्मी के लड़के के बारे में तुम्हें बता ही चुका हूँ। भाभी का Sociology का पहला पेपर खराब हो गया है।

Mrs. Mehrotra के Economics वाले पेपर अच्छे नहीं हुए। बिट्टन के History

वाले पेपर्स कैसे हुए हैं? कल का पर्चा तो अच्छा नहीं आया था। क्या बताया जाये इस बार फोर्थ इयर के पेपर का ट्रेण्ड जेनेरली खराब रहा। आज मैं चन्दू बाबू से बात करने की सोच रहा हूँ। कल शायद मैं लखनऊ जाऊँगा।

डार्लिंग मेरी जो किताबें तुम्हारे पास हैं उनको तुम कैलाश के हाथ भेज देना, विशेषरूप से लाइब्रेरी की जो किताबें हों, उनको तो फौरन ही भेज देना। लाइब्रेरी में तत्काल जमा करनी हैं। वहाँ Annual stock taking हो रही है और सुनो तुम्हारे आसपास कोई कुमुदलता वर्मा रहती है, यदि तुम्हें उसका घर मालूम हो तो उसके पास से लाइब्रेरी (Girls Section) की एक किताब है, उसे मँगवा कर भेज देना। छेदी लाल ने मुझसे कई बार कहा मैं तुमसे हर बार कहने को भूल जाता रहा। यदि सम्भव हो तो जरूर मँगवा लेना। राज को पत्र अवश्य लिख देना।

तुम्हारे यहाँ 28 ता. को क्या Function है। मैं तो शायद 23 को चला जाऊँगा और फिर 2 ता. को सवेरे लौटूँगा, फिर 3 को सवेरे जाऊँगा तो 6 को लौटूँगा, फिर 8 को चला जाऊँगा तो फिर 23 को वापस होऊँगा। 26 को तुम्हारा गौना बनता है। 3-4 दिन यहाँ रहकर फिर हम लोग गाँव के ट्रिप पर 10-15 दिन को चलेंगे।

तेरे पढ़ने के लिए कहो तो कुछ उपन्यास वगैरह भेज दूँ। जल्दी लिखना, जिससे कि जाने के पहले ही मैं तुम्हें भेज दूँ बल्कि जो मेरी किताबें लेकर आवे, उसी के हाथ मैं रवाना कर दूँ। कुछ पढ़ती-लिखती रहना। मुझे पत्र का उत्तर बराबर दिये जाना। अपने लिए इस बार 2-3 रंग के साटन के पेटीकोट, दो-एक काले ब्लाउज जरूर बनवाना। यदि तुम्हारे लिये कपड़े आवे तो जार्जेट की साडियों की बजाय बढ़िया सूती धोतियाँ खरीदना।

और अगले पत्र में। मेरे अशेष चुम्बन और आलिंगन।

तेरा ही
'श्याम'

•

दोपहर : 2 बजे
26.04.57

My sweetheart,

तुम्हारा पत्र कल रात मिला। मैं उस दिन सोच-सोचकर हैरान था कि सुधीर को मैंने इतना प्यार भरा और लम्बा खत दिया, पर तुमने उत्तर न दिया. सुधीर ने लौटकर मुझे यह भी नहीं बताया था कि पत्र उन्होंने रास्ते में बस में गिरा दिया है। कल रात तुम्हारा पत्र पाने के बाद मैंने उसे उसके लिए खूब डाँटा। क्या बताऊँ कम्मो, उस समय मुझे बड़ा कष्ट हुआ, मुझे रात बड़ी देर तक नींद नहीं आयी। एक तो जिसने उस पत्र को पढ़ा होगा, वह क्या कहेगा और दूसरे इसलिए कि मैंने उसमें

20 रुपये रख दिये थे कि मोटर साइकिल वाले हिसाब में इस महीने 20 रुपये की कमी रही जा रही थी, वह पूरी हो जाये। एक-एक पैसा जोड़कर ही समझो कि मैंने वे रुपये तुम्हें भेजे थे, पर क्या बताऊँ मेरे साथ यही हमेशा होता है कि जहाँ मैंने कुछ रकम बचाने की कोशिश की, वहीं मेरे ऊपर एक करारी चपत बैठ जाती है। कल मोटर साइकिल खरीदने का मेरा सारा उत्साह भंग हो गया।

कम्मो, तुम सोच नहीं सकतीं कि तुमसे मिलने के लिए मैं कितना परेशान हूँ। मैं कितने दिनों से कितनी लालसा के साथ 19 अप्रैल का इन्तजार कर रहा था कि बस उसी दिन से मौज, बोटिंग, सिनेमा, मार्केटिंग की Chain शुरू कर दी जायेगी। तुम्हें दिन-रात मैं अपनी बाँहों में कसे रहूँगा, तुम्हारे होंठों को अपने होंठों में बन्द रखूँगा। तुम मेरी अंकशायिनी बनी रहोगी, पर दो दिन पहले ही बापू ने सब गड़बड़ कर दिया। मुझे इससे जबरदस्त Shock लगा है। तुम्हें मैं समझाता रहा हूँ पर मेरा मन स्वयं बड़े दबसट में पड़ गया था। क्या बताऊँ अपनी-अपनी तकदीर है। मेरे भाग्य में कुछ नहीं लिखा है कि देर से तुम मिलीं, फिर तुम्हारे गौने में देर लगी और फिर निर्लज्जतापूर्वक मैंने बराबर आना-जाना शुरू किया तो वह भी लोगों से न देखा गया और एक रोक लगा दी गयी। कम्मो, तुम्हीं बताओ मैं कैसे धैर्य धारण करूँ। मुझे तमाम प्रारम्भिक रातें याद हो आती हैं।

अभी राधाकृष्ण और उनकी Wife कह रही थीं कि देवीशंकर भी कितने बेवकूफ हैं कि वहाँ जाते नहीं। इन्तजार के बाद में यही तो दिन हैं, मजे लूटने के, इन दिनों ये नहीं जाते। दिनेश भी यही कह रहा था कि अब तो परीक्षा वाला भूत भी सिर से उतर गया, अब तो तुम्हें जाना ही चाहिए, पर मैं अपना कष्ट किसे सुनाऊँ। 'बिरह बिथा की कथा अकथ अथाह महा।' कम्मो मेरा मन कभी-कभी इतना व्याकुल हो उठता है कि सब लोकलाज, मर्यादा-बन्धन, सम्मान-अपमान भूलकर मैं दौड़ आऊँ और तुम्हारे वक्ष की गहराइयों और गहराइयों में अपना मुख छुपा लूँ पर तुम और तुम्हारे घर वाले सभी बहुत निष्ठुर हैं। इनसे अच्छी मेरी अम्मा हैं जो Young Heart के aspirations का ख़याल रखती हैं। तुम्हारे यहाँ तो मेरा आना burdan होता है, यह कोई नहीं सोचता कि इससे हमें-तुम्हें कितना सुख मिलता है।

रानी, एक पत्र मेरा तुम्हें कल मिला होगा। अज्ञेय की एक कविता है–

"अकारण उदास भर सहमी उसाँस अपने सूने
कोने (कहाँ तेरी बाँह?) मैं जाता हूँ सोने
फीके आकास के तारों की छाँह में बिना
आस, बिना प्यास अन्धा विश्वास ले, कि तेरे
पास आता हूँ मैं तेरा ही होने। अपने घरौंदे
के उदास सूने कोने मैं जाता हूँ सोने।"

यही हालत तो मेरी है।

जब यह पत्र पहुँचेगा तो तुम्हारे यहाँ काफी धूमधाम हो रही होगी। तुम सभी कार्यों में व्यस्त होगी और मैं इस घरौंदे के उदास कोने में चुपचाप पड़ा होऊँगा। मेरी भी याद कर लेना कम्मो। मैं रात को भी आजकल सिर्फ तुम्हें सपने में देखता हूँ।

Poetry Selection मिल गया। मुझे इसी की जरूरत थी।

मैंने दो कुरते और एक पैण्ट तथा एक बुश्शर्ट (सब खद्दर के) और सिलवा ली है। एक जोड़ी खूबसूरत से चप्पल भी खरीद लाया हूँ। कॉलेज अब बन्द है। मैं आज रजिस्टर ठीक कर रहा हूँ, क्या तुम कराने नहीं आओगी। देखो, मैं तुम्हारी इतनी याद कर रहा हूँ।

मुनआँ का रिजल्ट आज निकल गया, पास हुए या नहीं, समाचार देना। तुमने राज को पत्र लिखा कि नहीं। न लिखा हो तो अवश्य लिख देना। ...में मुझे कुल 40 रु. के लगभग मिले। उनमें भी 20 रु. तो गिर ही गये, शेष सब भी खर्च हो गये हैं, उपन्यास अब तुम्हारे लिए अच्छे-अच्छे भेज दूँगा। मुंशी का एक रखा हुआ है, जरा साहित्यिक Taste को ही develope करो, पर मैं तुम्हें कमलेश श्याम क्यों न लिखूँ। मैं किसी से नहीं डरता और न मुझे किसी की शरम है। पिछली घटना से मुझे बड़ा क्षोभ है। मैं किसी की कोई भी Care नहीं करूँगा। मेरा कोई ख़याल नहीं रखता तो मैं ही क्यों रखूँ।

बापू का स्वास्थ्य अब कैसा है। उस दिन सुधीर जब तुम्हारे यहाँ आया, तब भी अम्मा से और यह कहते नहीं बना कि अवस्थी जी को भेज देना। खैर जाने दो। इस समय तो अपने मन की विफलता का अनुभव मैं ही करता हूँ।

अब मैं शायद 3 तारीख को प्रातः इलाहाबाद जाऊँगा।

तुम अपने सब समाचार देना। आज दिद्दी आयी हैं। तुम्हारी याद यहाँ पर हर एक प्रत्येक दिन कर लेता है। बड़ी उत्सुकता से 26 मई की प्रतीक्षा हो रही है। मेरा स्वास्थ्य अगर तुम्हें ठीक रखना है तो अब तुम मेरे पास आ जाओ। आजकल मेरा सारा कार्यक्रम फिर बिगड़ गया है। खूब मीठे-मीठे चुम्बन भेज रहा हूँ और नमकीन से आलिंगन भी (क्योंकि नमक तुझे पसन्द है।)। लम्बा उत्तर लिखना। Sex वाली किताबें पढ़ डालीं या नहीं।

सप्रेम तेरा ही
'श्याम'

•

रात्रि : 11 बजे
11.05.57

मेरी मधुरे,

आज अभी फिलासफी झाड़ते हुए तुम्हारा पत्र मिला। मुझे कल से ही तुम्हारे

पत्र की अत्यधिक उत्सुकता थी। आज सवेरे भी जाकर लेटरबॉक्स देखा, अभी शाम को घर से निकलते समय मैंने बड़ी आशा के साथ लेटरबॉक्स में झाँककर देखा तो लिफाफा दिखा, मैंने सोच लिया—तुम्हारा ही होगा। सौभाग्य से वह तुम्हारा ही निकला। साथ में पाण्डेय जी का भी पत्र था। अम्मा वगैरह को वह पत्र जल्दी से पढ़कर सुनाया और ऊपर के कमरे में जाकर पत्र पढ़ना शुरू किया। शुरुआत ही बहुत प्यारी थी यानी तुम्हारी चित्रकला के साथ जो भावनाएँ आ रही थीं, वे बहुत ही महकदार थीं। यद्यपि भीतर पत्र तुमने कुछ परेशान होकर लिखा था। मेरा भी एक पत्र तुम्हें आज ही मिला होगा।

पर कम्मो तुम्हारा अभियोग बिल्कुल मिथ्या है कि मैं तुमको अब पत्र नहीं लिखता। इधर लगातार मैं तुम्हारे साथ ही रहा हूँ और जब साथ नहीं रहा तो हमेशा ही उतने ही लम्बे-लम्बे पत्र लिखे हैं। अब सही बताओ कि क्या सचमुच ही मेरे पत्र अब रूखे होते हैं। असल में तुम अपने प्रेम की अधिकता में यह सोचना भूल जाती हो कि दूसरा भी उससे कम प्रेम नहीं करता (ज्यादा भले करता ही, क्योंकि बकौल तुम्हारे तुम्हारा स्वभाव बच्चों जैसा है और बच्चे जल्दी ही प्यार करते हैं और भूल भी जल्दी जाते हैं, उनके प्रेम में उतनी स्थिरता नहीं होती है, जबकि Matured love अधिक गहरा होता है, emotional उतना भले ही न हो।)।

डियर, ऐसे पत्र की आशा मैं बहुत दिनों से कर रहा था। तुम्हें याद होगा कि एक बार जब मैंने अपनी Analysis तुम्हें लिखी थी। (तब अस्पताल में झगड़ा हुआ था) तभी तुम्हें लिखा कि तुम भी अपने बारे में ऐसी ही विवेचना कर डालो, पर उस समय तुमने ध्यान नहीं दिया। मैं चुपचाप अब तक प्रतीक्षा करता रहा कि कब तुम्हारा आत्मविश्लेषण आवे और कब मैं सारी परिस्थिति को एक नये Perspective में तुम्हारे सामने उपस्थित करूँ।

देखो रानी, अब तक हम लोगों ने अपने-अपने Viewpoint रखे हैं, पर पति-पत्नी are not separate persons, they make a whole, a complete self इसलिए let us think in the terms of this whole. मेरी आदत सबसे सम्मान पाने की, सबसे आज्ञा पालन कराने की बन गयी है। एक प्रकार का Authoritative attitude मैंने अपना लिया और दूसरी ओर तुम स्वयं कह रही हो कि मेरी बातों पर तुम ध्यान नहीं देतीं तथा तुम्हारी आदत Avoid करने और आज्ञा के उल्लंघन की पड़ गयी है। अब इन दो विरोधी बिन्दुओं में संगति कैसे बैठे? तुमने एक दिन अभी कहा कि यदि मैं 24 घण्टे सिर्फ तुम्हारे निकट रहूँ तो तुम प्रसाद चढ़ाओ, ऐसे ही कभी-कभी मेरा मन करता है कि यदि बिना विरोध किये तुम मेरी एक भी बात मान लो तो मैं प्रसाद चढ़ाऊँ। अभी इलाहाबाद जाने के पहले तुमने स्वयं मुझे बुलाया और कहा कि घूमने चलेंगे, परन्तु जब मैं आया कि चलो चलना है, अम्मा भी आवेंगी तो तुमने पचास अड़ंगे लगाये। तो फिर हो क्या? कम्मो, तुम शायद मानने को तैयार

न होगी, पर मैं अपना सारा अधिकारी वाला रूप तुमसे अलग ही रखने की चेष्टा करता हूँ। तुम्हें मनाकर, प्यार कर, समझाकर ही बात कहता हूँ पर तुम अम्मा की बात का, बापू की बात का, बिट्टन या ब्रजेश की बात का ध्यान रखोगी, पर मेरी बात का नहीं, बस यही मुझे बुरा लग जाता है। मुझे ऐसा महसूस होने लगता है कि तुम मुझे अपने अन्तरमन से प्यार नहीं करतीं, पर हाँ तुम्हें थोड़ा-सा सीरियस अवश्य होना चाहिए। मन से यह भ्रम निकाल दो कि सीरियसनेस बुढ़ापे की निशानी है, पर जिम्मेदारियाँ कुछ सीरियसनेस अवश्य माँगती हैं। यों मैं स्वभाव से ही बहुत भावनात्मक कभी नहीं रहा। जब छोटा था, तब भी नहीं। मेरे सारे दोस्त मुझे सदैव ही बुद्धिवादी कहा करते थे।

तुम मेरे कपड़ों पर इतनी बार नाराज हुई, पर क्या तनिक भी मेरे अनुसार साफ-सुधरे रहने की तुमने कोशिश की। मेरी 25 साल की आदत छुड़ाना चाहती हो और अपनी आदत सुधारने की आयु होते भी नहीं। फिर विशेषकर जब भगवान ने तुम्हें रूप दिया है तो मैं भी उस रूप को उचित वेश में देखना चाहता हूँ। रही Active होने की बात तो Active होने के कारण ही तो मैं कपड़ों पर ध्यान नहीं दे पाता। दुनिया में कहीं भी Active आदमी अपनी रूप-सज्जा पर ध्यान दे ही नहीं सकता, क्योंकि इनके लिए जितना समय खर्च करना पड़ता है, वह उसे बेकार नष्ट होता प्रतीत होता है। मैं स्वयं (यहीं रात को पानी बरसने लगा जिसकी बूँदें पड़ी हुई हैं) कभी-कभी महसूस करता हूँ कि जितनी देर में पैण्ट मैं लोहा करूँगा, उतनी देर में तो कुछ पढ़-लिख डालूँगा या और दूसरा काम कर लूँगा।

मुझे तो रानी आश्चर्य तब होता है जब Life की Values तुम कपड़ों-लत्तों आदि में देखती हो, तब भी स्वयं ठीक से नहीं रहती हो। मेरा जिस परिवार में लालन-पालन हुआ, वहाँ लाखों रुपयों की आमदनी होते हुए भी खद्दर आदि ही पहने जाते रहे। तो जीवन के अन्य क्षेत्रों में बड़ा बनना चाहता हूँ क्योंकि Ultimately कपड़ों का महत्त्व नहीं रहता। डियरेस्ट, इसी आदर्श को लेने के कारण आज मैं अपना थोड़ा-बहुत स्थान बना सका हूँ। मैं Self-made आदमी हूँ जो कुछ अर्जित किया, स्वयं मैंने। बाप या भाई के रुपये, पद या अधिकार मेरे पीछे नहीं रहे। अपने से कहीं अधिक धनी आदमियों को मैं इसी कारण अपने पीछे चलाता रहा हूँ। यह मैं आत्म-प्रशंसा के भाव से नहीं कह रहा पर यह भी नहीं कहता कि अच्छे कपड़े पहनना मुझे पसन्द नहीं है। स्वभाव से मुझे खूबसूरत चीजें पसन्द हैं, पर मैं अपनी Care नहीं कर पाता। यदि तुम्हें मुझको ठीक से देखना है तो आकर स्वयं मेरी व्यवस्था सँभालो, जो शायद तुम्हारे किये न हो।

अब रही ससुराल की बात। सो यह सत्य है कि मुझे गहरा असन्तोष है। इससे अधिक प्रेम (सत्कार की तो मैं बात भी नहीं करता, क्योंकि यह समायी की बात है।) मुझे अपने मित्रों के यहाँ मिला है। मैं महीनों खेमका आदि के यहाँ रह आया

हूँ पर कभी ऐसा नहीं लगा कि उनको खल रहा हूँ पर तुम्हारे यहाँ तो सबका भाव ऐसा रहता था, जैसे कि मैं उनके सिर पर बोझ हूँ और यह भाव बापू-अम्मा, भाई साहब आदि सभी में उभर आता था। सबसे कम यह भाव बिट्टन में उभरा है, शायद इसलिए कि वे समझती थीं कि मेरे आने से उनका फायदा अधिक है, नुकसान तो थोड़े-से खाने भर को है, पर मुझे उनके बारे में कुछ अधिक नहीं कहना, क्योंकि वह भी जिन्दगी का एक पहलू और एक अनुभव था। ईश्वर न करे कि अब तुम्हें वहाँ कभी अधिक दिन रहना पड़े और जब तुम वहाँ न होगी तो मेरे सीसामऊ आने का कोई प्रश्न नहीं उठता।

तुमने और भी अनेक बातें बिल्कुल गलत लिखी हैं मेरी स्वीटी। यह कहना कि तुम मुझे दिल भर प्रसन्न न कर सकीं, ठीक नहीं है। तुमने मुझे प्रसन्न ही अधिक रखा है, अप्रसन्न कम। यह सब जो अभी लिखा है, वह इसलिए कि अप्रसन्नता के जो कारण हैं, वे भी न रह जायें।

पर जो बात मुझे सबसे अधिक कष्ट दे रही है, वह मेरी रानी, तुम्हारी आत्मपीड़न की वृत्ति है। जब कहीं कोई बात नहीं है, तब तो तुम प्राण देने की सोचती हो, यदि सचमुच ही कोई गम्भीर समस्या हो तो क्या होगा? इतनी Defeatist mentality क्यों? मुझे तुम क्यों इस प्रकार नष्ट कर देना चाहती हो, क्या तुम्हारे बिना मैं एक क्षण भी जीवित रह सकूँगा।

राज को तुमने पत्र लिख दिया होगा। कहानियों की एक और किताब रखी हुई है। 'सेमल के फूल' किसी के आते-जाते भेज देना। मधुरिमा के यहाँ हो आओ न। सुषमा के घर जब यहाँ आ जाओगी, तब चलेंगे। राज को लिख देना कि तुम 29 तारीख तक यहाँ आ जाओगी।

पढ़ाई के बारे में अब कुछ अफसोस करने से बनता नहीं। मैं शायद कल 12 तारीख, इतवार को लखनऊ जाऊँ। ब्रजेश से मिल आऊँगा।

पाण्डेय जी को अपनी नौकरी में तमाम U.P. के देहातों का दौरा करना पड़ेगा। 2-3 दिनों में निकलेंगे, फिर शायद 15 जुलाई तक लौटकर आयेंगे। तब तक बिट्टन टापेंगी बैठकर और मुझे गालियाँ देंगी कि अवस्थी जी ने कहाँ भिजवा दिया है। घड़ी के बारे में लिखना कि मामा लाये या नहीं।

समाचार पूरे दिये जाना। अब तुम्हारे आने के आज से 15 दिन रह गये हैं। रोज दिन गिनता जाता हूँ। परेशान न होना। मैं तुमसे तनिक भी नाराज नहीं हूँ मेरी प्यारी कम्मो। मैं तुझे डाटूँगा भी नहीं, पर मेरी बात मान लिया करोगी, ऐसी मुझे आशा है।

अच्छा लो बहुत-बहुत प्यार और अगणित चुम्बन और आलिंगन। प्रसन्न हो न! नाराज न होना।

तेरा ही पागल
'श्याम'

शाम : 6 बजे
मनीराम बगिया
13.05.57

मेरी मानिनी

दो पत्र लिख चुका हूँ। यह तीसरा है। कल रात जब ऊपर जाकर लेटा तो चाँदनी खूब खिली हुई थी। बड़ा ही सुहावना मौसम था। मुझे अचानक वह पूर्णिमा याद हो आयी, सोचो कौन-सी? वह जिसमें रात को सीसामऊ में सबसे ऊपर छत पर हम लोग गये थे। शायद भादों की रात थी। है न तुम्हें याद? तुम्हारी इतनी याद आयी कि मुझे फिर घण्टों नींद ही नहीं आयी। तुम्हारे अनेक रूपचित्र मेरी आँखों के सामने से गुजरते रहे। क्या तुम्हें भी किसी दिन चाँदनी देखकर मेरी याद आयी है।

आज बुद्ध पूर्णिमा है। सवेरे अपने एक मित्र वीरेन्द्र जैन की एक लम्बी कविता पढ़ता रहा और बार-बार यशोधरा के बहाने तुम्हारी याद आती रही। आज तीन-चार दिन से मेरी तबीयत ठीक नहीं है। डॉक्टर ने Complete rest करने के लिए कहा है, पर उस उल्लू को कौन समझाये कि तुम्हारे बिना मुझे Rest मिल ही कैसे सकता है।

पता नहीं क्यों आज तीन-चार दिन से मेरी कामिनी कम्मो मुझे बड़े बुरे-बुरे ख़याल आते हैं। अकसर मेरे दिमाग में आता है कि मेरा हार्ट फेल हो जायेगा। फिर सोचता हूँ तुम्हारा क्या होगा? कहीं ऐसा न हो कि राह चलते ही हार्ट फेल हो जाये और मैं तुमसे बात भी न कर पाऊँ। इसी तरह की बेसिर-पैर की बातें दिमाग में गूँजा करती हैं, पर डियर तुम घबड़ाना नहीं, कोई खास बात नहीं है। तुम्हारे यहाँ पर न होने के कारण जो despondency दिमाग में छायी रहती है, वही इस रूप में प्रकट होती है।

तुम्हें पिछले पत्र में बहुत ऊटपटाँग लिख गया हूँ, बुरा तो नहीं माना। बुरा न मानना मेरी प्यारी, कह दो कि नाराज नहीं हो। मुझे ऐसा लगता है कि तुम बहुत नाराज हो।

हाँ, कल मुझे अपने मकान के नीचे राज मिल गयी थी। कहने लगी कि मैं तो सोचती थी आ गयी होंगी। मैंने बता दिया कि 29 तक आयेंगी। कह रही थी कि कमलेश जरूर पास हो जायेगी। उसकी general Knowledge काफी है। बगल में सुमन से मिलने आयी थी। तुमने उसे पत्र लिखा या नहीं।

कल आदित्य के घर गया था। सुषमा कह रही थी कि भाभी मुझसे बहुत लड़ती हैं। कहती हैं भाभी न कहो। पूछ रही थी कि भाई साहब आप ही बता दीजिए कि क्या कहा करूँ? मैंने कहा—जो आदमी कुछ कहने से चिढ़ता है तो उसे नहीं कहा जाना चाहिए।

आज भाई साहब को अम्मा ने बुलाया था। चच्चू वगैरह के लिए पूछने को। तुम्हारी अम्मा की क्या बात हुई।

मैंने रन्नो के लिए जो लड़का बताया था, वह रन्नो को देखना चाहता है।

एक Instruction बुरा न मानो तो पहले भी मैं तुमको लिख चुका हूँ कि इस बार सस्ती 20-22 वाली रद्दी साड़ियाँ आप न खरीदें। लेना ही है तो 20-25 की सूती धोतियाँ बढ़िया आती हैं, उन्हें ही खरीदना।

आज सवेरे एक किताब पढ़ रहा था, उसमें मतिराम के एक सवैये में कहा गया था कि शादी होकर आते ही लला जी अपनी दुलही के चेरे हो गये। अपने हाथ से बाल बाँधते हैं, श्रृंगार करते हैं और आभूषण पहनाते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम भी आ जाओ तो ऐसा ही मैं भी करूँ।

मेरी तबीयत के लिए परेशान न होना, दो-चार दिनों में ठीक हो जाऊँगा। इधर दौड़-धूप में कुछ Strain ज्यादा पड़ गया है।

आज भाई साहब से यह भी ज्ञात हुआ कि मौसी की मृत्यु हो गयी है। सुनकर दुख हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।

जिज्जी के अभी कुछ हुआ या नहीं। कैलाश दुकान आता हो तो कह देना कि यहाँ हो ले, मैं तुम्हारे पढ़ने के लिए और अच्छी किताबें दे दूँगा। और पूरे समाचार लिखना। यहाँ सब कोई ठीक है। जीजा अपने Transfer को रद्द कराने के लिए दो महीने की छुट्टी ले रहे हैं।

तुम्हारे प्रियतम के अनेक चुम्बन और आलिंगन। लखनऊ कल नहीं गया।

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

कानपुर
25.06.57

मेरी ही कम्मो,

अभी-अभी ब्रजेश का पत्र मिला। मैं आज आदित्य भटनागर के यहाँ बेहद व्यस्त हूँ। सवेरे का गया अभी शाम को 5 बजे घर कपड़े बदलने आया हूँ। मैं तुम्हें लिवाने कल शाम के पहले यहाँ से चल नहीं सकता, परन्तु तुम जरा सोचो कि अम्मा से क्या कहूँ तथा जिज्जी और तिवारी जी वहाँ पर क्या समझेंगे। मान लो अभी (ईश्वर न करे) जिज्जी की तबीयत कुछ गड़बड़ हो गयी तो तुम्हें भी जिन्दगी भर का पछतावा रहेगा। यह मैं जानता हूँ कि जिज्जी का व्यवहार जरा सख्त और रूखा होगा, पर आदमी कड़े-से-कड़े व्यवहार को बर्दाश्त करता है। समझ लो कि

10-15 दिन के लिए जेल में बन्द हो। अस्पताल में तुम्हारा मन जब जरा ऊब जाये तो स्पष्ट होकर जिज्जी से कह दो कि तुम थोड़ी देर को घर जाना चाहती हो, पर अभी आना बहुत उचित मुझे नहीं लगता है। फिर भी यदि तुम आना चाहती हो तो मुझे एक पत्र तत्काल फिर से दो, लिफाफा मैं साथ रखे दे रहा हूँ जिससे 28 तक मुझे मिल जाये और मैं जालन्धर जाने के पूर्व सुधीर वगैरह किसी को तुम्हें लेने भेज दूँगा। कल मैं अम्मा के पास भी जाऊँगा। उनसे भी सलाह लूँगा। तुम्हें पढ़ने के लिए किताबें पहुँचाने को मैंने दिनेश को भी लिख दिया है तथा अपने एक और दोस्त परमानन्द श्रीवास्तव को भी लिखा है। शीघ्र ही तुम्हारे पास किताबें पहुँच जायेंगी।

तुम्हारी खाँसी और तबीयत को सुनकर मुझे बहुत चिन्ता हो रही है तथा तुम वहाँ, डाक्टर को दिखलाकर दवा अवश्य ले लो। यह याद रखना कि यदि तुम तनिक भी मेरी आज्ञा मानने को तैयार हो तो दवा अवश्य ले लेना तथा Thoroughly डॉक्टर को अवश्य दिखा देना। इसके लिए मैं कोई Excuse भी सुनना पसन्द नहीं करूँगा। यदि तुमने डाक्टर को नहीं दिखाया तो मेरी जबर्दस्त लड़ाई तुमसे हो जायेगी तथा अपने स्वास्थ्य का समाचार लगातार देती जाना। खाँसी-जुकाम तुम्हें है तथा बर्फ वगैरह से बचाये रखना। इस समय लखनऊ में एन्फलुएन्जा बड़ी जोरों से फैला हुआ है। समझ गयी न मेरी जिद्दी कम्मो जी।

तुम मेरे ऊपर नाराज अवश्य हो रही होगी कि मैं तुम्हें लेने नहीं आ रहा, पर दूरदर्शिता के नाते मैं आना उचित नहीं समझता। मैं तुम्हें अपने निकट रखने के लिए उतना ही बेचैन हूँ, जितना तुम मेरे पास रहने को। आज भी मैं आदित्य से शिकायत कर रहा था कि ऐसा चांस आ जाता है कि तुम्हें अपने पास रख ही नहीं पाता। डार्लिंग, मैं तुम्हें 5 जुलाई के लगभग आकर अवश्य ले जाऊँगा। तब तक तुम थोड़ा-सा धैर्य धारण किये रहो, यही अम्मा और दिदिया की भी सलाह है।

बाकी सब ठीक है। मेरे गले में भी आज तीन दिन से तकलीफ है, खराश काफी जोरों पर है। मैं गरम पानी के गरारे करता हूँ तथा Throat paint भी इस्तेमाल करता हूँ, चिन्ता न करना।

और नये समाचार देना, मेरा जी लगा रहेगा। अच्छा अब चलूँ, आदित्य इन्तजार कर रहा होगा। वहाँ तुम्हें सब बहुत पूछते हैं। अच्छा गर्मागर्म बहुत से चुम्बन और आलिंगन भी।

तुम्हारा ही
'श्याम'

पुनः यदि तुम्हारा मन न लग रहा हो तो तत्काल लिखो। पत्र लिखने में संकोच न करना, अस्पताल में बैठे-बैठे लिख देना।

•

रात्रि : 10 बजे
जालन्धर
01.07.57

मेरी अपनी मधुरे,

तुम कल्पना नहीं कर सकती हो कि कितनी याद तुम्हारी आ रही है। हर क्षण पारसाल की उन्हीं क्षणों में घटित होने वाली घटनाएँ दिमाग में छायी हुई हैं, लोगों को ठीक से उत्तर देने की स्थिति में नहीं हूँ। दिमाग पर एक अजीब-सा नशा सवार है। जैसे दौड़कर सुरेश बाबू से कहना चाहता हूँ कि Importance तुम्हारी नहीं, मेरे दिन की है। आज मेरा Wedding day है, आज मैं उसी का उत्सव कर रहा हूँ। कैसे कहूँ पर मैं सबको यह बताये दे रहा हूँ कि आज मेरे लिए कितना-कितना प्यारा दिन है।

और अब यह पत्र लिखने बैठा हूँ तो लगभग वही समय है, जबकि पारसाल जयमाल का Function हो रहा था। मैं आज बहुत प्रसन्न हूँ पर तुम नहीं हो, इसलिए यह सारी प्रसन्नता व्यर्थ-सी ज्ञात होती है, पर मैं रोके हूँ। आज तो मेरे जीवन के चरमतम हर्ष उल्लास के दिन की वर्षगाँठ है। आज ही तो मुझे सारे जीवन की सार्थकता की उपलब्धि हुई थी। कम्मो, मेरी समझ में नहीं आता तुम्हारे लिए क्या लाऊँ। तुम देखो मुझे कैसी परेशानी में डाल देती हो कि मैं सोच ही नहीं पा रहा कि क्या लाऊँ। अगर कुछ ख्वाहिश किये रहो तो मुझे लाने में ऐसी परेशानी न मालूम पड़ा करे।

तुम कानपुर आ गयी होगी, इसी आशा से यह पत्र भी कानपुर को ही लिख रहा हूँ और दोपहर में एक Greetings का तार भी तुम्हें अपने बालकृष्ण और खेमका के नाम से भेजा है।

डार्लिंग, मैं जहाँ तक 4 जुलाई की रात तक कानपुर पहुँच जाऊँगा। कल तो शायद मैं अमृतसर जाऊँ, फिर परसों 3 तारीख को सवेरे फर्रुखाबाद को प्रस्थान और वहाँ से फिर कानपुर।

रानी, मुझे माफ कर देना कि मैं 1 जुलाई को तुम्हारे साथ न रह सका, पर कोई बात नहीं अगले साल मैं अवश्य रहूँगा। दिल्ली में खेमका की Wife से भी मिल आया। आज सुरेन्द्रशंकर अवस्थी के यहाँ गया था, उनकी पत्नी भी तुम्हें पूछ रही थीं। कल उनके साथ ही मार्केट जाऊँगा। मार्केट में शायद तुम्हारे लिए कुछ अच्छी चीज मिल जाये।

जिज्जी का स्वास्थ्य ठीक होगा। हाँ देखो, यह पत्र मिलते ही मुझे एक पत्र तुम मनीराम बगिया के पते से लिख देना, जिससे कि मुझे वह घर पर रखा मिले।

कम्मो 1 जुलाई की मेरी करोड़ों, असंख्य बधाइयाँ भी। रानी, यह दिन कितना मीठा है, कैसा प्यारा है। मेरे अनन्त चुम्बन, संख्यातीत आलिंगन लो मेरी हृदयेश्वरी।

स्वीटी मुझे भी अपने चुम्बन भेज दो न, देखो तुम्हारा श्याम तुम्हारे लिए पागल हो रहा है। जल्दी से उसे मिल जाओ न।

मैं यहाँ आराम से हूँ। एक शानदार कोठी में ठहरा हूँ। खाने-पीने रहने का सभी ठाठ का प्रबन्ध है। रास्ते में भी बड़े आराम से आये। स्पेशल बोगी रिजर्व थी, उसी में हम लोग घर की तरह लेटे आये। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। तुम्हारा गला वगैरह अब कैसा है? मुझे उसी की बहुत चिन्ता है। अपने स्वास्थ्य का समाचार अति शीघ्र देना।

उत्तर अति शीघ्र,
तुम्हारी याद में बेचैन
तुम्हारा अपना
'श्याम'

•

Golden Day
1.7.58

Kammo Darling,

आज 1 जुलाई है, हम लोगों का Wedding day है, और तुम हो कि आज प्रसन्नता की बजाय रो-रोकर दिमाग और खराब कर रही हो तथा दिन को अप्रसन्न बना रही हो। यह बुरी बात है। मैं जितनी भी देर रहा, तुम रोती रहीं, एक भी बात नहीं की। यदि ऐसा ही है तो कहो मैं भी न आऊँ। एक तो ऐसे ही दूसरे लोग घेरे रहते हैं, जो दो-चार मिनट का समय बचता भी है, उसको तुम इस प्रकार नष्ट कर देती हो।

देखो पागलपन न करो। यहाँ घर ले आने में कोई Complication पैदा हो सकता है। बच्चे को Jaundice (पीलिया) हल्का-सा है, उसे दस्त भी हो रहे हैं, इसलिए भी दो-तीन दिन Hospital में रहना ठीक है। तुमको मैं प्रतिदिन पुस्तकें दे जाया करूँगा। नर्सों से भी दोस्ती करो। वे तो कुछ पढ़ी-लिखी हैं। उनसे पढ़ने-लिखने, देश-दुनिया की बातें करो। कहानी की किताबें उन्हें भी पढ़ने को दिया करो। 'युग चेतना' का अंक और भेज रहा हूँ। उसमें मेरा भी निबन्ध है। नर्सें शिकायत कर रही थीं कि तुम Care नहीं करती हो बच्चे की। यह बुरी बात है। उसकी देखभाल ठीक से करो। वह कमजोर है। डॉ. आनन्द से नीचे जीजा-दिदिया ने बात की थी। वे हँस रही थीं, बहुत कुछ तुमको समझाया भी होगा। मुझको तुम बैठकर प्यारी-प्यारी चिट्ठियाँ ही वहाँ से लिखा करो। तुमको पैड वाले कागज कुछ भेजे दे रहा हूँ। डॉ. आनन्द ने कहा था कि जैसे ही नारा गिरेगा, वैसे ही मैं फुर्सत दे दूँगी। तुम वहाँ की और

दूसरी औरतों से भी बात किया करो। Sociology तुमने पढ़ी है। Hospital और बच्चों में Social problems हैं। वहाँ औरतों से मीठे ढंग से बात करके बच्चा पैदा होने, उनकी Care रखने, Hospital के बारे में उनके दृष्टिकोणों या उनकी Opinion व्यवस्था के बारे में यह सब Collect करो। देखो, तुम्हें कितना मजा आवेगा। दूसरों के जो Genuine कष्ट हों, उनको नर्स या डॉक्टर से कहकर दूर कराने की कोशिश करो, पर लड़ना नहीं, बल्कि धीरज से और प्रेम से Approach करो। कभी-कभी डाँट पड़ जायेगी पर उन्हें tactfully handle करो—मसलन कि और भाई मुझे डाँट लो, पर उस बेचारी की ओर कुछ ध्यान दे दो। कभी उनसे Indirectly यह बता दो कि Health ministry में हम लोगों की पहुँच है, यदि वे लोग Transfer वगैरह चाहें तो कुछ कराया जा सकता है। यही सब नुस्खे होते हैं। बहरहाल तुम Hospital की Problems की Sociological Study कर डालो। तुमको बहुत मजा मिलेगा। Points note करती जाओ, बाद को एक निबन्ध उसी का बन जायेगा।

अच्छा bye-bye। अब प्यार से एक मीठा चुम्बन भेज दो। तुम्हें तो मैं अनगिनत भेज रहा हूँ। पहली जुलाई की अमित बधाइयाँ और प्यार। अब बिल्कुल ही मत रोना। मुझे आज ही एक पत्र लिखकर रख लेना, चाहे आज चार ही अक्षर लिखो। कल उसे पूरा करके तब भेजना, पर लिखना शुरू कर दो। तुम्हारा पत्र मैंने पढ़ लिया है। उस पर कुछ भी टीका-टिप्पणी करना व्यर्थ है। इतना ही कहूँगा कि यदि ऐसे ख़याल अपने से दूर रख सको तो मुझे जरूर सुकून मिलेगा। अच्छा अब रानी जरा हँस दो और मेरे बच्चे को मेरी ओर से प्यार करते हुए एक बार चूम लो, चूम लिया न! अच्छा प्यार-प्यार।

तेरा
'श्याम'

•

77/1, हाल्सी रोड, कानपुर
25.10.58

प्रिय कमलेश,

अभी-अभी तुम्हारा पत्र डाक से मिला। एक पत्र कल शाम कापी के साथ मिला था। इसी समय गणेश आ गया है, अतः जल्दी में यह पत्र लिखकर भेज रहा हूँ।

अनाम को ग्राइपवाटर न पिलाना। Abdec Drops के लिए यदि तुम्हारे पास रुपये हों तो मँगा लेना, वरना मेरे रुपये आने पर मैं भेज दूँगा। बार-बार इधर-उधर की दवाएँ बदलना ठीक नहीं रहता। ईगल चप्पल कम्पनी मेस्टन रोड में इस समय Clearance sale हो रहा है, पर क्या बताऊँ आज मेरे पास बिल्कुल रुपये नहीं हैं।

कम्मो, तुम्हारा पत्र पढ़कर मेरा मन अत्यधिक खिन्न एवं उद्विग्न हुआ। मुझे

सचमुच अपनी अम्मा पर अत्यधिक गुस्सा आ रहा है कि उन्होंने बेकार बात का बतंगड़ बनाया। मैंने तो केवल उस शादी के Probable Consequences उपस्थित किये थे। इसके अतिरिक्त मेरा कोई उद्देश्य न था। तुम बिना किसी संकोच के यह बात कह दो कि चूँकि मामा ने विरोध नहीं किया, इसलिए हम लोगों का कोई भी विरोध कहीं पर नहीं है। वे शौक से करें, अम्मा के नाम एक पत्र रख दे रहा हूँ। उन्हें चाहो तो दे देना। इस समय मैं क्षोभ में शायद कुछ कड़ा लिख जाऊँगा, बाद को शान्ति के साथ लिखूँगा।

तुमको इस समय इस तनाव की हालत में रहने पर कुछ असुविधा मालूम होती हो तो लिखो, मैं ले जाऊँ—किसी की आँख देखने की बरदाश्त मेरे भीतर नहीं है। भाई साहब ने मुझसे बात किये बिना कैसे मेरे ऊपर सारे दोष लगा दिये। दूसरी बात यह कि यदि कैलाश अथवा भाई साहब इत्यादि को यहाँ आना बुरा लगता है तो तुम बिल्कुल न भेजा करो। मुझे आवश्यकता होगी तो सुधीर को भेजकर या स्वयं आकर काम कर जाऊँगा। तुम व्यर्थ में किसी को तकलीफ न दो। नोट्स आज सुमन के यहाँ से मँगवाऊँगा। दिनेश से मैं कह दूँगा कि शीघ्र ही भिजवा दें।

घर लगभग पुत गया है। तुम्हारे कमरे में मैंने अपना पढ़ने-लिखने का इन्तजाम जमीन पर कर लिया है। पढ़ने वाले कमरे में तुम्हारा पलँग कर दिया है। मैं इसी में पढ़ता हूँ और इसी में जमीन पर ही सोता हूँ। यद्यपि तुमको थोड़ी Inconvenience होगी, पर मेरी पढ़ाई में अधिक disturbance न होगा।

और सब ठीक है। कॉलेज 27 तारीख सोमवार को खुल जायेगा। कॉलेज जब आना तो मुझसे मिलना। विवेक या अनाम की पसनी में मैं न आऊँगा, क्योंकि क्रोध में शायद कोई बात मेरे मुँह से गलत ढंग से निकल जाये।

और समाचार देना। अनाम को प्यार। तुम्हें भी।

तुम्हारा ही 'श्याम'

•

26.10.58

कम्मो डार्लिंग,

एक पत्र कल भेज चुका हूँ, मिला होगा। भाई साहब के नाम एक पत्र भेज रहा हूँ। उसे पढ़कर दे देना। मैं समझता हूँ कि काफी Coolly यह पत्र मैंने लिखा है। जानबूझकर ही कहीं पर कोई व्यंग्य मैंने आने नहीं दिया। फिर भी यदि कोई अंश तुमको खटके तो बाकायदा तुम्हें सेंसर करके उतना काट देने का अधिकार है। पढ़कर फिर भाई साहब को दे देना और स्वयं अपनी ओर से मेरी स्थिति Clear कर देना। तुमने जो मिथ्या भ्रम अम्मा के मन में पैदा कर दिया था कि पाण्डे जी को मैंने भड़काया है, वह भी साफ कर देना।

यह भी आज ही लिखना कि कल मुझे किस समय वहाँ आना चाहिए। ऐसा हो कि मेरा समय भी खराब न हो तथा उन लोगों को बुरा भी न मालूम हो। मन्नो जिज्जी आ रही हैं या नहीं? यदि कल मैं न आऊँ तो कैसा रहे? ऐसा न हो कि तुम्हारी अम्मा नाराज हों कि मौके पर अवस्थी जी नहीं आते। देखो, तुम्हारे घर वालों से मैं कितना डरने लगा हूँ।

तुमको हरा वाला खद्दर का कपड़ा मिल गया होगा, पर यह नहीं लिखा तुमने कि कैसा लगा? सुधीर तुम्हारे लिए कुछ खर्चा लेकर आ रहे हैं। विवेक को जो कुछ देना चाहो, इससे मँगा लेना। तुम्हारे पास तो पैसा बिल्कुल न होगा। मुन्नो के पास मैं गया था, पर उसने अभी तक नकल ही नहीं की है। तुम्हारी समाजशास्त्र की एक कापी मुझे यहाँ मिल गयी है, उसे भी मैं भेज रहा हूँ—लिखो कि भेजूँ या नहीं। आज रात को दिनेश जावेंगे। बालकृष्ण की पत्नी परसों यहाँ आयी थीं।

और नये हाल देना। यह देखो 8 दिन के भीतर मेरा चौथा पत्र है। शेष सब ठीक है। सुमन के यहाँ से कापी मँगा ली है। उसे भी आज भेज दूँगा। मेरा अनाम अच्छा होगा। उससे कह देना कि उसके पापा याद करते हैं।

इस बार चुम्बन तुम्हारे लिए नहीं, उसके लिए है। अच्छा होगा 5 तुम भी ले लो। दो आँखों पर, एक होंठों पर और दो गालों पर।

स्वास्थ्य तुम्हारा ठीक होगा। मेरे रुपये जैसे ही आयेंगे, वैसे ही तुमको Abdec Drops लेकर भेज दूँगा।

तुम्हारा
'श्याम'

भाई साहब के पत्र को पढ़ने के बाद लिफाफा बन्द करके देना।

•

32/147, Mani Ram Ki Bagia, Kanpur
20.11.58

Kammo Dolly,

सोचता हूँ कि अब तुम एक बेटे की माँ बन गयी हो, अतः Dolly न लिखकर और कोई बड़ा भारी नाम सम्बोधित करूँगा, जो काफी गुरुता एवं बड़प्पन से भरा हो, पर मुझे तो अपनी कम्मो बिल्कुल गुड़िया जैसी भोली-भाली और प्यारी लगती है, जो कभी-कभी रूठ जाती है। है न यही बात।

अच्छा पहले एक खुशखबरी सुनो, फिर लड़ाई-दंगा होगा। मैंने 'स्वास्थ्य सुधारो आन्दोलन' कल से प्रारम्भ कर दिया है। परसों शाम को 7 रुपये की दवाएँ लाया हूँ। एक शीशी स्वर्ण मधु और एक शीशी पाचन सुधा और इस तरह की चार शीशियाँ खानी होंगी। पर देखो दवाओं के रुपये तुमसे वसूल करूँगा, क्योंकि तुम्हारे कहने

पर ही इसे शुरू किया है, पर सिर मुड़ाते ही ओले पड़े—कल से दवा खानी शुरू की और कल से ही मुझे जुकाम हो गया। रात को तो काफी तकलीफ रही और उस समय तुम्हारी याद भी बहुत आयी कि यदि तुम होती तो जरा प्यार से चिपटाकर कुछ कष्ट कम कर देती। हाँ, तुमने Calron मँगाई या नहीं। इस बीच फिर तुम बहुत weak हो गयी हो। अगर न मँगाई हो तो मँगवा लेना, क्योंकि तुम्हारा Health ठीक रहने से मेरे अनाम का भी स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अनाम प्यारे के टीके अब बिल्कुल ठीक होंगे। लिखना, मुझे उसकी बड़ी चिन्ता लगी रहती है।

और कम्मो Menses हो गये, यह कितना अच्छा हुआ। जैसे पूरा भार दूर हो गया। उस दिन डॉ. कमला न मिलीं, यह अच्छा ही हुआ, नहीं तो बेकार ही दो-चार रुपये मत्थे ठुक जाते। अच्छी तरह से हो गया है न?

परसों शाम को जनेश्वर वर्मा और उनकी पत्नी मिली थीं। तुम लोगों को बहुत पूछ रहे थे।

शनिवार को बस तुम एक बात कहकर फौरन भागी। मैं तो तुमसे बात भी न कर पाया। यह लिखना कि पिछले हफ्ते सूरज, जो मिर्जापुर रिहन्द बाँध में हैं, तुमसे मिलने आये थे कि नहीं। यहाँ मुझसे पत्र तो लिखा ले गये थे।

डियर कम्मो, मैं तुम्हारी तलाश में इतना और अधिक रहा कि तुम सोच नहीं सकती। इधर मुझे अपनी जिन्दगी में बहुत अधिक अकेलापन रहा है। उस दिन मैंने देखा कि मेरे पास कमीजें बिल्कुल नहीं हैं तो मैं कमीजें लेने के लिए बाहर निकला, पर मेरे साथ कोई था ही नहीं। मैंने बीच में सोचा कि कोई दोस्त मिल जायेगा, पर कोई भी न मिला और मैं refugee market तक जाकर बिना कपड़ा देखे लौट आया। बालकिशन भी न थे और इस बीच तुम भी नहीं थीं। मैं कल भी सवेरे कॉलेज में तुमको खोजता रहा कि यदि मिल जाओ तो साथ चलकर कपड़ा खरीद लावें, पर तुम नहीं मिलीं, फिर आखिर आदित्य के साथ जाकर मैंने एक कमीज खरीद ली। अभी एक कमीज का कपड़ा और लेना है, वह जिस दिन तुम चलोगी, उसी दिन लाऊँगा। कल तुम कॉलेज क्यों नहीं आयी थी। मैं सारे कॉलेज में ढूँढ़ता रहा। सिद्धान्तालंकार वाली Anthropology की किताब निशंक के हाथ भेजी है, मिली होगी और हाँ मुरारी का स्मृति ग्रन्थ अब लौटा दो। उसे बहुत दिन हो गये, नहीं तो फिर बेकार पैसे पड़ जायेंगे।

राज मिली थी। उसने Girl's section जाना शुरू कर दिया है। मैं कल वहाँ गया था। एक दिन राज कॉलेज भी आयी थी।

और समाचार देना। बिट्टन के कोई समाचार इधर तो नहीं मिले? अम्मा की साँस कैसी है? ब्रजेश के क्या हाल हैं?

इन दिनों यदि तुम दूध के साथ बादाम ले लिया करो तो बहुत अच्छा रहे। After delivery तो तुम कुछ ठीक से खा-पी न सकीं। सम्भव हो तो अब ले लो

और हाल क्या हैं? यहाँ सभी ठीक हैं। अच्छा तो बहुत-सा प्यार और तमाम चुम्बन। अनाम को भी मेरी ओर से प्यार कर लेना। तुमको यहाँ कब बुलावाया जाये। बम्बई वाले कपड़ों के बारे में किसी ने कुछ कहा तो नहीं?

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

Vice-Chancellor's Lodge
Agra University, Agra
26.12.60

कम्मो डियर,

मैं परसों दो बजे दिन में यहाँ आ गया था। खाना तुमने जो बना दिया था, उसे रास्ते में ही खा लिया था। इस बार डार्लिंग आगरा में तुम्हारी बड़ी याद आयी। जानती हो क्यों? जहाँ-जहाँ तुम्हारे साथ पिछली बार घूमने गये थे, वे सारे स्थान याद आते रहे। ट्रेन जैसे ही जमुना ब्रिज पार करके घुसी, वैसे ही फोर्ट दिखाई पड़ा और मुझे याद आया कि हम लोग ताँगे पर बैठकर इसी सड़क से एतमातुद्दौला देखकर लौटे थे, फिर जब मैं रिक्शे से आ रहा था तो एतमातुद्दौला भी दिखाई पड़ा, पर सबसे ज्यादा याद तो कल आयी, जब मैं फोटो लेने के लिए बाजार गया। मैंने अपना रिक्शा ठीक ताज कॉरोनेशन होटल के सामने रुकवाया और एक बार मन हुआ कि ऊपर जाकर पूछें कि 11 नम्बर कमरे में कौन ठहरा है?

फोटो मैं ले आया हूँ, फोटो सब मिलाकर अच्छी हैं। तुम्हारी फोटो ज्यादा अच्छी आनी ही चाहिए।

अभिनन्दन ग्रन्थ[1] छप रहा है और मैं उसका कार्य देख रहा हूँ। अभी तय तो नहीं है, पर शायद मैं 2 तारीख तक वहाँ पहुँचूँगा। इसी बीच Linguistics वाला Seminar भी Attend कर लूँगा।

कल दोपहर मैं मथुरा चला गया था। वहाँ पर Kishori Raman Girl's degree college का Convocation था। भटनागर साहब के साथ ही मैं भी पहुँच गया था।

तुम सीसामऊ किस दिन पहुँची? घर में और कोई खास बात तो नहीं हुई। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक होगा। तुनुआँ[2] के क्या हाल हैं? उसकी तबीयत ठीक होगी। मेरी याद करता है या नहीं। चि. सौरभ[3] के तो रोने वाले चौके-छक्के लग ही रहे

---

1. अभिनन्दन ग्रन्थ—कालका भटनागर अभिनन्दन ग्रन्थ।
2. तुनुआँ—देवीशंकर जी का ज्येष्ठ पुत्र, जिसे वे लाड़ से तब तुनुआँ कहकर पुकारते थे। वास्तव में अन्ततः उनका नाम अनुराग रखा गया। उनका जन्म 27.06.58 को हुआ।
3. सौरभ—देवीशंकर जी का कनिष्क पुत्र, जिसे कभी-कभी वे राजी बाबू भी कहते थे। अन्ततः उनका नाम वरुण रखा गया। उनका जन्म 27.8.60 को हुआ।

होंगे। इस बार उसे लक्ष्मी बहादुर को अवश्य दिखा लेना—उनके घर जाकर दिखा लेना, पर उसके पेट, गैस आदि तथा रोने और जगने के सारे Symptoms बता देना। एक कागज पर पहले से ही सारे Symptoms लिख लेना। इस काम को तत्काल करना, देर न हो और सब ठीक है। वहाँ सभी लोग ठीक होंगे। ब्रजेश के हाल देना। सबसे मेरा यथायोग्य कहना।

और सब ठीक है। मेरी चिन्ता न करना। मैं बड़े आनन्द से हूँ।

तुम्हारा ही तो
'श्याम'

•

श्री वी.एन. खन्ना
Incharge Publications,
Agra University, Agra
01.01.61

कम्मो स्वीटी,

सबसे पहले नये वर्ष की मेरी शुभ कामनाएँ एवं ढेर सारे प्यार की गठरी लो।

आज बहुत सर्दी है यहाँ, कल से पानी बरस रहा है और इस समय दिन भर की आपाधापी और थकान के बाद मैं अपने पलँग पर बैठा हूँ तो तेरी बड़ी याद आ रही है। मुझे लग रहा है कि कैसे दौड़कर पहुँच जाऊँ, पर नये साल का पहला कष्ट मैं यही दे रहा हूँ कि अभी 5 तारीख तक यहीं रहूँगा और 6 को सवेरे कानपुर पहुँचूँगा। कानपुर से तत्काल ही लखनऊ चला जाऊँगा। लखनऊ में उस दिन मेरी 8:30 बजे रात को टॉक है। लखनऊ जाने के पहले मिल अवश्य लूँगा। सवेरे 10 बजे के पहले ही मैं तुमसे मिलने आऊँगा।

यहाँ मैं Linguistics वाला सेमिनार भी Attend कर रहा हूँ तथा छपाई[1] का काम भी बड़ी जोरों से चल रहा है। परसों छपने का काम खत्म हो जायेगा और फिर जिल्द बँधनी प्रारम्भ हो जायेगी।

अरे हाँ, तेरा एक Formal सा पत्र परसों शाम को मिला था। तुम मुझसे तो नाराज होती हो, पर कैफियत यह कि यहाँ पर आदित्य, कृष्णशंकर जी[2], रेखा आदि सभी क़े पत्र पहले मिल गये। मुझे तुम्हारा पत्र सबसे बाद में मिला और वह भी इतना औपचारिक लगता था कि किसी दूर की परिचिता ने लिखा है। मैंने कई बार पढ़ा कि शायद कुछ प्यार की बात मिल जाये, पर वहाँ तो रूखी-सूखी चर्चा मात्र थी।

---

1. छपाई—कालका प्रसाद भटनागर अभिनन्दन ग्रन्थ।
2. कृष्णशंकर जी—डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में अवस्थी जी के गुरु, बाद में सहयोगी, बाद में भी दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज में अध्यापन के लिए आ गये थे।

रानी, इस समय मुझे सचमुच ही घर की बड़ी याद आ रही है। कानपुर से मेरी सारी चिट्ठियाँ यहाँ आ गयी हैं। तुम लोग, आशा है, खूब मजे में होंगे। ब्रजेश के क्या हाल हैं? बाजपेयी जी तो अब आ रहे होंगे। भाई-साहब के लिए मैं कोशिश करूँगा, पर वह काम तो कानपुर से ही होगा। Sports Committee के Chairman चन्दूबाबू हैं।

भटनागर साहब ने आज नये वाइस चांसलर श्री एल.पी. माथुर को चार्ज दे दिया। परसों शाम से ही यहाँ इस Change over के कारण बड़ी उथल-पुथल रही। भटनागर साहब कल दोपहर को दो बजे कानपुर के लिए चल देंगे। मैं रहूँगा तो उनके ही बँगले में, पर खाना मेरा खन्ना के यहाँ से आ जाया करेगा। तुम लोग कोई भी चिन्ता न करना।

दवा मेरी बिल्कुल खत्म हो गयी है, पर किया क्या जाये? और चारा भी नहीं है। कल से मेरा पेट कुछ गड़बड़ है, पर कोई खास परेशानी की बात नहीं है। डार्लिंग, मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैलाश, गनेश, मुनन जी के लिए क्या लाऊँ, मेरे यहाँ रहते-रहते तुम उत्तर तो क्या दे पावोगी, पर यदि तीन तारीख को तुम पत्र डाल दोगी तो मुझे 5 को मिल जायेगा।

भाभी कहाँ हैं? अम्मा-बापू को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

2, साउथ मार्केट फ्लैट
किदवई नगर, नयी दिल्ली-3
02.06.61

प्रिय कम्मो,

जिसकी हम लोग शंका कर रहे थे, वही हो रहा है। मेरे Heart को लेकर काफी बड़ा तूफान उठ खड़ा हुआ है। यहाँ दिल्ली यूनिवर्सिटी में Heart के रोगों का बहुत बड़ा research centre है। यहाँ के Specialist को मेरा Case refer किया गया है। आज सवेरे Electro Cardiogram हो गया है, पर एक्स-रे अब सोमवार को होगा। देखो क्या होता है? स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। यहाँ नयी जगह में कोई जोर वगैरह भी नहीं चलता। देखा जायेगा। सब कुछ भगवान के अधीन मानकर चलना ही ठीक है। तुम परेशान न होना। अभी किसी से कुछ कहना भी नहीं। मैं 6 या 7 तारीख को सवेरे पहुँचूँगा।

मेरा मन स्वयं परेशान और क्षुब्ध है, लेकिन क्या करूँ? जैसे पहली बार एक जबरदस्त Fail होने की अनुभूति हो रही है अथवा जैसे कि परोसी हुई थाली वापस

खिंची जा रही है, पर अपना-अपना भाग्य। मुझे शायद यह अपमान और मानसिक अशक्ति भी बरदाश्त करनी है।

कम्मो डार्लिंग, पर तुम निराश न होना। तुनुआँ और राजी दोनों अच्छी तरह होंगे। मेरी याद करते हैं कि नहीं? कम्मो, इस समय मन हो रहा है कि यदि तुम पास होतीं तो बड़ा अच्छा होता। कुछ सान्त्वना मिलती रहती।

अच्छा, शेष मिलने पर। तुम्हारे मामा जी से उनके ऑफिस में मिल आया हूँ। बड़े प्रेम से मिले थे।

शेष ठीक ही है।

तुम्हारा ही

'श्याम'

मनीराम बगिया को सूचना मैंने दे दी है।

•

दिल्ली विश्वविद्यालय

18.07.61

कम्मो डार्लिंग,

आखिरकार मैं दिल्ली आ ही गया। उस दिन की अपनी भावनाओं का वर्णन कर सकने में मैं स्वयं असमर्थ हूँ। मुझे लगता था कि जैसे स्नेह के एक बड़े स्रोत से मैं कटकर अलग हो रहा हूँ। इसी कारण स्टेशन पर मैं बुरी तरह से रो पड़ा था। मुझे सबसे अधिक रुला दिया था पं. कृष्णशंकर जी ने। वे स्वयं रो पड़े और फिर जिस बाँध को मैं रोके हुए था, वह टूट ही गया। शुक्ल जी सचमुच ही मुझे बेटे की तरह चाहने लगे थे। मैं स्वयं उनके बिना यहाँ अभाव का अनुभव करूँगा।

कम्मो, सच कहूँगा कि उस दिन तुम सब लोगों का अभाव नहीं, बल्कि मित्रों का बिछोह मुझे कष्ट दे रहा था, क्योंकि यह जानता था कि तुम लोग तो अभी कुछ दिनों में मेरे निकट आ जाओगी, पर ये सारे प्यारे मित्र और सम्बन्धी शायद हमेशा के लिए कुछ दूर पड़े जा रहे हैं। तुम्हारे पास मैं जानबूझकर आने से कतराता रहा, क्योंकि यह निश्चित था कि तुम रो पड़ोगी, पर कम्मो यहाँ साउथ एवेन्यू में आकर तुम सबसे अधिक याद आ रही हो। मैं कल से अनेक बार कल्पना कर चुका हूँ कि इस समय इस Well furnished flat में अगर तुम होतीं तो कितना अच्छा लगता। इस समय सब खाली-खाली लगता है। कल रात तो बड़ी देर तक उसी कारण नींद नहीं आयी। इस समय भी मैं पत्र लिख रहा हूँ और तिवारी जी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि शायद तुम्हारा पत्र ला रहे हों। दस बज रहे हैं, पर वे आये नहीं। शायद ट्रेन लेट हो।

तुनुआँ के पैर उस दिन स्टेशन में दर्द कर रहे थे, रात को बहुत परेशान तो नहीं किया। मैं सोचता हूँ कि यदि वह होता तो अनेक चीजों को देख-देखकर पूछता कि 'डैडी यह क्या है?' राजी बाबू के क्या हाल हैं? स्टेशन पर भी—वह मेरा चश्मा खींच रहा था। दोनों मेरी याद करते हैं या नहीं? सुधीर[1] से तुमने बैंक का चेक जमा करा दिया होगा। सुधीर भटनागर साहब के पास गये या नहीं? यदि न गये हों तो मेरा पत्र तथा अलबम और फोटो ग्रुप लेकर उनसे मिल आवे। अलबम और ग्रुप उन्हें ही देते आवे।

कम्मो, मेरी बरसाती तथा वह कंघा जो हम लोग खरीदकर लाये थे, भेज देना। मेरी दिल्ली यूनीवर्सिटी एवं बीमावाली फाइल तथा टाइम-टेबुल भी वहीं रह गये हैं। इन सबको शीघ्र ही भेजना और हाँ बड़े कमरे में सामने वाली अलमारी के बीच और नीचे वाले खण्ड में जो किताबें हैं, उन्हें भी भेजना। उनमें सूरदास पर जो किताबें हैं, उन्हें लक्ष्मी[2] के साथ ही रवाना कर देना। यदि लक्ष्मी वे सभी किताबें ला सकें तो बहुत ही अच्छा हो। 'भ्रमरगीत सार' नाम की एक पुस्तक शायद नीचे वाले खण्ड में है, यदि नीचे वाले खण्ड में न होगी तो छोटे कमरे में ऊपर वाली खुली अलमारी में दाहिने हाथ रखी होगी। उसे यदि लक्ष्मी चले आये हों तो Ordinary Book-Post से भेज देना। छोटे कमरे में सबसे ऊपर रखी किताबों में 'सूरसौरभ' अष्टछाप परिचय, सूरदास (ब्रजेश्वर वर्मा) तथा बड़े कमरे में बक्सों के पीछे वाली अलमारी के बीच वाले खण्ड में 'सूर और उनका साहित्य' हरवंश लाल शर्मा, 'भारतीय साधना और सूर साहित्य' रखी होंगी। उन्हें भी भेज देना। गोविन्द नगर वाली अलमारियों में, रेडियो के नीचे वाली में चन्द्रगुप्त नाटक एवं उसकी समीक्षा से सम्बन्धित दो-तीन पुस्तकें तथा 'अजातशत्रु' की समीक्षा वाली पुस्तकें रखी हुई हैं। इन्हें भी लक्ष्मी के हाथ भेज देना।

19.07.61

इतना ही लिख पाया था कि तिवारी जी आ गये। बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने फौरन किताबों वाला बण्डल खोल डाला और उसमें तुम्हारा इतना प्यारा पत्र मिला कि कई बार आँखों में आँसू भरे हुए पढ़ा। सच कम्मो, तेरी याद बहुत आती है और हाँ अपने दोनों बेटों की भी। बरसाती और दिल्ली वाली फाइल मिल गयी है, पर दिल्ली शहर वाला Map जो भाई साहब देख रहे थे, शायद वहीं रह गया है। कभी उसे भी भेजना। सोच रहा हूँ कि आज लक्ष्मी शायद आवे और फिर तुम्हारा प्यारा पत्र मिलेगा।

युनिवर्सिटी Classes लेने, पहले ही दिन से, शुरू हो गये हैं। ईश्वर की कृपा

---

1. सुधीर—अवस्थी जी के छोटे भाई उदयशंकर अवस्थी, घर में सब उन्हें सुधीर कहते थे।
2. लक्ष्मी—अवस्थी जी के चचेरे भाई।

से मेरा पढ़ाना ठीक ही प्रारम्भ हुआ है। जहाँ तक मेरा अनुमान है, लड़के असन्तुष्ट नहीं हैं। अभी केवल फाइनल़ की कक्षा लग रही है, उसमें 100 के लगभग विद्यार्थी हैं तथा लड़कियाँ भी 15-20 हैं, पर अपनी कम्मो के पैरों की धूल का मुकाबला कर सकने योग्य एक भी नहीं है। दो पीरियड मुझे पढ़ाने हैं, पर उनका समय ही नहीं है। किसी दिन लगातार दोनों हैं तथा किसी दिन बीच में एक पीरियड का gap है। मैं हिन्दी साहित्य का इतिहास, रीतिकाल, आधुनिक कविता में साकेत, भ्रमरगीत सार, निबन्ध और अनुवाद, प्रसाद के नाटक फाइनल में पढ़ा रहा हूँ। प्रीवियस की कक्षाएँ 24 तारीख से लगनी शुरू होंगी। चिन्ता न करना, ईश्वर चाहेगा तो सब ठीक ही रहेगा।

खाने-पीने में कोई कंजूसी न होगी, तुम निश्चिन्त रहना। M.P. Canteen जो सामने ही है, उसमें खाना खाता हूँ और 1.25 रु. में Fairly good खाना मिल जाता है, तिवारी जी से पूछ लेना। अभी तक शाम की व्यवस्था ठीक नहीं हो पायी है, क्योंकि यूनिवर्सिटी से लौटते-लौटते 10:30 बज जाते हैं, और उस समय Canteen बन्द हो जाती है, अतः दो दिन से शाम डबलरोटी पर कटती है, पर उससे मुझे कोई कष्ट नहीं है। मोती[1] के आ जाने से वह व्यवस्था भी ठीक हो जायेगी।

...क्रमशः

19.7.61

कल तुम्हारे मामा जी से मिला था। उनके पास बातें अधिक हैं, काम करा सकने की स्थिति कम है। कम-से-कम मकान दिला सकने की शक्ति उनमें मुझे नहीं दिखी। मॉडल टाउन में जो कि यूनिवर्सिटी से लगभग 1-1/2 मील है, मुझे 90 रुपये का मकान मिल रहा है। डॉ. चौधरी का भी इसी किराये के आसपास का खाली होने वाला है पहली अगस्त को, पर मैं यूनिवर्सिटी के और नजदीक चाहता हूँ इसलिए एकाध दलालों तथा अपने कुछ विद्यार्थियों को मैंने Contact किया है, और हो सकता है, एकाध सप्ताह में मुझे कोई-न-कोई मकान मिल जाये। तुमको, मकान मिलते ही, मैं शीघ्र ही बुलाना चाहूँगा। इसी बीच 10-20 दिन के लिए तुम चाहो तो सीसामऊ[2] भी हो आओ।

यहाँ एक उड़ीसा के सज्जन मेरे मित्र हो गये हैं, वे भी इंस्टीट्यूट में इसी साल अंगरेजी में नियुक्त होकर आये हैं। मकान की खोज उन्हें भी है।

खेमका के साढू के घर भी गया था, पर मकान की व्यवस्था शायद वहाँ नहीं है। यों वे मिले नहीं, पटना गये हुए हैं। डाक मेरी जो आवे, उसे Redirect कर देना। यहाँ आते ही ज्वाइन करने के साथ ही 'धर्मयुग' से भारती की चिट्ठी मिली।

1. मोती—घर का काम करने वाला लड़का।
2. सीसामऊ—अवस्थी जी की ससुराल के मोहल्ले का नाम।

बालकिशन के यहाँ टाइपराइटर गया या नहीं? अगर आवे तो कह देना कि 'धर्मयुग' से नरेन्द्र सक्सेना के विवाह वाला फोटो लौट आया है, क्योंकि विवाह के फोटो छपने अब बन्द हो गये हैं।

मेरे यहाँ आने के कोई Reactions सुनाई पड़ें तो लिखना, और सब ठीक है। अगर मकान मिला तो रुपये की शायद जरूरत पड़ेगी, क्योंकि एक महीने का किराया Advance देना पड़ता है और सब समाचार देना। तुनुआँ मेरी याद करता होगा। दोनों को मेरी ओर से चूमना। अच्छा तुझे भी बहुत-बहुत प्यार और ढेर सारे चुम्बन और आलिंगन। अब लक्ष्मी के हाथ पत्र भेजूँगा।

तुम्हारा ही तो
'श्याम'

•

42 साउथ एवेन्यू,
नयी दिल्ली
25.07.61

मेरी पगली,

आज शाम को यूविर्सिटी में तेरे दो पत्र मिले—एक लिफाफा 20 का लिखा और एक पोस्टकार्ड 22 का लिखा। तुझे आज सवेरे ही एक लम्बा पत्र लिख चुका हूँ। अब तुमको जरा हिसाब लगवा दूँ। 6 पेज का पत्र तिवारी जी के हाथ और 6 पेज का आज डाक से और 3 पेज के बराबर यह Inland—कुल 15 पेज और तुमने मुझे लिखे हैं 4+1+5=10 पृष्ठ। तुमसे ड्योढ़ा मैंने लिखा और उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। तुझे तो फिर भी सब अपने लोग मिल जाते हैं, पर यहाँ दिल्ली ऐसी जगह है जहाँ दोस्त भी मुश्किल से मिल पाते हैं। यह तुम क्या समझोगी कि मैं कितना Long करता हूँ तुम्हारे लिए। सवेरे से शाम तक साउथ एवेन्यू में अकेले बैठे रहने पर कितना boredom हो सकता है, इसकी तुम सहज ही कल्पना कर सकती हो, पर तू इतनी पगली और Pessimistic है कि इतने में ही दुनिया भर की कल्पना कर डाली। पहले दोनों पत्र तो बसों में बैठकर केवल प्रारम्भिक समाचार देने के लिए लिखे गये थे। अब तुम्हीं बताओ कि क्या तुम्हें उसी प्रकार के पत्र लिखा करूँ। अगर केवल कुशल-समाचार वाले पत्र चाहो तो तुम्हें रोज एक पत्र लिख दिया करूँ। फिर मेरी रानी, मैं नयी-नयी यूनिवर्सिटी के पढ़ाई के चक्कर में, कभी मकान के चक्कर में स्वयं परेशान हो उठता हूँ। पैसों की कमी के कारण हर जगह बस से ही आता-जाता हूँ। इसी कारण कभी-कभी पत्र लिखने में विलम्ब हो जाता है, पर तू मुझे बराबर लिख दिया कर। मैं कभी तेरी याद करता हूँ तो कभी तुनुआँ की। इस बार तो मुझे सौरभ सबसे ज्यादा

याद आता है। वह इधर मुझसे बहुत हिल-मिल गया था। मैं अकसर तुम सबकी याद से परेशान हो उठता हूँ।

डार्लिंग, बस तुमसे मेरा एक ही अनुरोध है कि मुझे गलत न समझो। मैं प्यार का प्रदर्शन शायद बहुत नहीं कर पाता हूँ पर मैं नहीं जानता कि मुझसे अधिक गहरा प्यार कौन रख सकता है। यह जरूर है कि ऊपर से बहुत Emotional मैं नहीं हूँ। घर भर की जिम्मेदारी ओढ़े रहने के कारण तथा अपनी साहित्यिक रुचि के कारण तुम्हें बहुत समय भी नहीं दे पाता, पर तुम इतनी निराशावादिन इसी कारण बन जाओ, यह ठीक नहीं है। My honey please do not misunderstand me. तुम बहुत छोटी बातों में हैरान हो उठती हो। अच्छा ले अब हँस दे। मैं तुम्हें बहुत जल्दी-जल्दी पत्र लिखा करूँगा।

और हाँ, दिल्ली तो तुझे बुलाना ही चाहता हूँ पर पैसों की Problem है। मैं अपनी economy ठीक करके तुम्हें लाऊँगा। कहीं ऐसा न हो कि जिन्दगी में पहली बार हम लोग अलग रहें और पैसे की समस्या से सारा मजा किरकिरा हो जाये। बिना पैसे की गृहस्थी में तमाम Maladjustments और कलह उत्पन्न हो जाते हैं। हम लोग कुछ दिन अलग भले रहें, पर उन कलहों से बचना चाहते हैं। इसीलिए सोचता हूँ कि तुम्हें सितम्बर में या तो बुलाके या फिर 12-13 अक्टूबर को जब छुट्टियों कानपुर में बिताकर लौटूँ तो साथ लेता आऊँ। यहाँ पर 4 से 13 अक्टूबर तक छुट्टी रहती है। तुम्हारी क्या सलाह है, उसी प्रकार मैं अम्मा को लिखूँ।

बाबूलाल जी अभी तक तो आये नहीं। छुट्टी मिलने पर आवेंगे ही। न हो तो उनका पता मुझे लिख देना, मैं ही सामान ले आऊँगा। यों शायद शनिवार को वे आवें, क्योंकि सवेरे तो ऑफिस चले जाते होंगे। शाम को थके-माँदे लौटने पर दिल्ली में, जहाँ दूरियाँ बहुत अधिक हैं तथा बस की व्यवस्था बिल्कुल प्राणहन्ता है, कहीं पहुँचना कठिन हो जाता है। इलाहाबाद वाला बिल बेकार ही भेजा यहाँ। उसे कानपुर में ही कॉलेज में मेरे एकाउण्ट में जमा कर देती, अपने आप भुगतान होकर आ जाता। यहाँ से शायद कुछ देर भी लगेगी और कमीशन भी चाहे कटे, क्योंकि उत्तर प्रदेश के बाहर हैं न अब हम लोग। वहाँ पर इसी से Overdraft भी Adjust हो जाता।

बिट्टन की तबीयत क्या खराब हो गयी थी? ब्रजेश कहाँ पर हैं, वाजपेयी जी ने नयी जगह ज्वाइन कर ली या छिबरामऊ में ही हैं?

अब नाराज नहीं हो न। सुधीर के admission के हाल तुरन्त देना। मैं उसके लिए चिन्तित हूँ। रेखा के चलाए अगर Psychology न चले तो फिर Education ले लें। यों Psychology भी ठीक ही है। और सब ठीक है।

तेरा ही 'श्याम'

धर्मयुग वाला चेक जमा करा दिया होगा। नये महीने की 'नयी कहानियाँ' तथा 'कल्पना' नहीं आयी क्या? आज के अखबार में एक बढ़िया खबर है कि दिल्ली A Class शहर करार दिया गया है अतः हमारी तनख्वाह 32 रुपये के करीब और बढ़ जायेगी यानी कि 495 रुपये के लगभग हो जायेगी।

'श्याम'

●

रात्रि : 11 बजे
30.07.61

मेरी प्यारी कम्मो,

अगर तुमसे यह बताऊँ कि कल से तुम मुझे फिर बहुत याद आ रही हो तो केवल लिखने का ढंग ही न मानना। कल अजित के लड़के का जन्म दिन था, उन्होंने एक पार्टी दी थी, उसमें अधिकांश आमन्त्रित सपत्नीक आये थे—एक मैं ही तुम्हारे बिना वहाँ पर था और ऐसे में तुम्हारी याद आना स्वाभाविक ही है, फिर कल से ही 15 दिन की सख्त गर्मी के बाद घमासान पानी बरसने और बादल गरजना शुरू हुए हैं, पर लगता है कि अभी कुछ दिन तुम्हारे बिना ही मुझे रहना होगा। तुमसे भी अधिक मुझे तुनुआँ की याद आ रही है। हम लोग उसकी वर्षगाँठ इस साल नहीं मना सके। मुझे कल सारे दिन उसकी बातें याद आती रहीं। कैसे वह मुझसे कहता था, डैडी, मम्मी पास हमको नहीं ले चलोगे? हमको टॉफी ले दोगे? आदि-आदि। कम्मो, यादव बाबू से पुछवा लेना कि क्या वे 15 अगस्त के आसपास आने वाले हैं?

कल मैं अजित के यहाँ के निमन्त्रण के कारण यूनिवर्सिटी नहीं गया था, पर मेरा अन्दाजा है कि तुम्हारा पत्र वहाँ आया होगा, कल जाऊँगा तो जरूर मिलेगा। तुमने सुधीर के एडमिशन के बारे में कुछ नहीं लिखा, मैं बड़ा चिन्तित हूँ।

बाबूलाल की मैं रोज प्रतीक्षा करता हूँ पर आज इतवार भी बीत गया और वे नहीं आये। मुझे उनका पता जीजा से पूछकर लिख दो तो मैं खुद ही जाकर ले आऊँ। जूतों के बिना मुझे बड़ी दिक्कत हो रही है।

मकान पहले एक नब्बे रुपये वाला देख आये थे, पर आज वह Reject कर दिया। उसके रुपये जो मैंने 40 रुपये जमा किये थे, वे वापस मिल जावेंगे। हमारे सहयोगी डॉ. चौधरी वाला मकान खाली हो गया है और 100 रुपये पर वही ले लिया है। यूनिवर्सिटी के कायदे के अनुसार अब 108 रुपये तक का मकान मैं किराये पर ले सकता हूँ क्योंकि अब 15 प्रतिशत मुझे यूनिवर्सिटी से किराया मिलेगा—A grade लागू हो जाने के कारण। इस नये मकान में मैं या तो कल शिफ्ट कर जाऊँगा या फिर परसों, पर पत्र अभी यूनिवर्सिटी के पते पर ही देना। वो मकान का पता होगा—डॉ. सत्यदेव चौधरी, F. 11/12, मॉडल टाउन, दिल्ली। यह यूनिवर्सिटी से 1-1/2

मील दूर पड़ता है। आज दिन भर तुम्हारे मामा जी मेरे साथ मकान देखने के चक्कर में दौड़ते रहे। डॉ. चौधरी वाले मकान को उन्होंने भी पसन्द किया है। उनके एक परिचित के मकान का एक Portion भी खाली होने वाला है और उसने Promise किया है कि मुझे ही देगा 15-20 दिन बाद। पर यह भी सम्भव है कि तुम्हें दशहरे के पूर्व ही मुझे बुलाना पड़े, क्योंकि बहुधा मकान मालिक यह नापसन्द करते हैं कि औरतें साथ न लायी जायें। अतः आना भी पड़ सकता है।

और समाचार विस्तार से देना। अम्मा, जीजा, दिदिया को प्रणाम। चि. सुधीर, रेखा, अजय, अन्य, अनुराग एवं सौरभ को स्नेहाशीष। तुमको बहुत-बहुत प्यार।

तुम्हारा
'श्याम'

अच्छा टा...टा...! अब नये मकान में पहुँचकर लिखूँगा। तुम अच्छी तरह होगी। क्या मिलने गयी थीं? 'कल्पना' मिल गयी है। 'ज्ञानोदय' शायद आज मिले।

खाना कल मामा के यहाँ ही खाया था। वे कह रहे थे कि दलिया बनवाकर दे जाऊँगा, मैंने कहा कि नहीं, अभी कोई आवश्यकता नहीं है। क्या तुम्हारी अम्मा ने उनसे कह दिया था?

मेरे नाम छपे कार्ड भेज देना।

●

दिल्ली
01.08.61

कम्मो डार्लिंग,

आज पहली अगस्त है और हर पहली तारीख हमको-तुमको कितनी प्रिय लगती है। फिर इस बार तो कल ही तेरे दो-दो लम्बे पत्र मुझे मिले हैं। एक शाम को डाक से इंस्टीट्यूट जाने पर मिला और दूसरा पत्र बाबूलाल जी के हाथ वाले सामान के साथ मिला। पढ़कर बड़ा सुख मिला। दोनों पत्र कई-कई बार पढ़े। तुमको इस बीच में मेरा पत्र न मिलने से बड़ी परेशानी में रहना पड़ा, कम्मो इसका मुझे बड़ा कष्ट है। सचमुच थोड़ी ढिलाई मुझसे हुई, पर असल में मैं तुम्हें neglect नहीं करना चाहता था, केवल Matter of Fact। पत्र न लिखकर बड़ा पत्र लिखना चाहता था, इसी कारण ऐसा हुआ। Matter of Fact पत्रों में भी तुम्हारे लिए सन्देश निहित रहता था कि मैं अच्छी तरह हूँ। हैरान न होना। उधर अम्मा को भी सन्तोष हो गया होगा कि श्याम ने मुझे पत्र लिखा है। फिर तिवारी जी को पत्र 20 तारीख को पहुँचा देना चाहिए था, पर उन्होंने उसे पहुँचाया नहीं। खैर तुमने तो अब मुझे माफ कर दिया है न मेरी रानी। अब तुमको कितने नियमित पत्र मैं लिख रहा हूँ। एक

पत्र कल सुबह छोड़ चुका हूँ। कम्मो, कल तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे भी रुलाई आ गयी थी। सच बताऊँ, जब यहाँ फ्लैट में लौटता हूँ तो मन होता है कि फिर भाग जाऊँ। वही मोती और वही कमरा। कभी तुम याद हो आती हो और कभी सौरभ तथा अनुराग की। मुझको इधर कई दिनों से तुनुआँ की बड़ी याद आती है। कल सुधीर का भी 27 तारीख का लिखा पत्र मिला। उसमें सौरभ, अमी तथा अंजू की तरफ से भी लिखा हुआ था। सुधीर ने लगता है कि हाथ पकड़कर लिखाये थे। तबसे इन तीनों की याद और अधिक आने लगी है।

बाबूलाल जी शनिवार की शाम को यूनिवर्सिटी में आये थे, पर उस दिन अजित के यहाँ निमंन्त्रण होने के कारण मैं यूनिवर्सिटी गया ही नहीं था, इस कारण मुझसे भेंट नहीं हो सकी। अतः वहीं मेरे कॉलेज के दफ्तर में सामान रखकर चले आये थे, बिल डॉ. दशरथ ओझा को इण्टर बोर्ड वाला दे गये थे। मैं जब कल गया तो सब सामान मिला। वहाँ से लादकर फिर घर लाया। बाबूलाल जी का घर का पता लिखना, उनसे मिल आऊँगा।

प्रीवियस में भी वही सब पढ़ा रहा हूँ जो फाइनल में। प्रसाद के नाटक, चिन्तामणि, साकेत, भ्रमरगीतसार, हिन्दी साहित्य का इतिहास, रीतिकाल, निबन्ध एवं अनुवाद, यही सब पढ़ा रहा हूँ—दोनों में। काफी Wide course है, पर तुम्हारे प्यार का प्रताप यह है कि अभी तक तो कोई निन्दापरक बात सुनाई नहीं पड़ी। क्लास पहले दिन से जम गया था। यत्र-तत्र प्रशंसा के स्वर ही सुनाई पड़े हैं। यों यूनिवर्सिटी में यहाँ अनुशासन की कोई समस्या दिन की कक्षाओं में भी नहीं होती, शाम को तो ऐसे भी कुछ अधिक उम्र वाले एवं Employed लोग पढ़ते हैं। अतः समस्या होती ही नहीं। फाइनल में 88 लड़के हैं एवं प्रीवियस में 61। यहाँ लड़कों का बड़ा Rush रहता है। 300 में छाँटकर 61 लड़के प्रीवियस में लिये गये हैं। लड़कियाँ फाइनल में 13-14 हैं और प्री. में 9-10 पर मुझे केवल एक लड़की फाइनल में अच्छी लगती है और एक ही प्रीवियस में। बस यही दोनों मेरी प्रेमिकाएँ हैं, बाकी तो सब कूड़ा हैं। तमाम लड़के-लड़कियाँ तो आयु में मुझसे भी बड़े हैं। 5-6 बच्चों के पिता तो कई हैं। विभाग के सदस्यों से भी प्रेम-व्यवहार ही है। गोकि यहाँ पर Formality अधिक है और यह स्वाभाविक ही है। नगेन्द्र जी की Opinion अच्छी ही होगी। मैं तो पहले दिन उनसे मिला था और फिर परसों गिरिजा कुमार माथुर के साथ उनके घर गया। तब रात को 10 बजे तक हम लोग साथ-साथ घूमते रहे। यहाँ दूर होने के कारण उधर के लोगों से मैं अभी मिल नहीं पाया हूँ। सब ठीक ही हो जायेगा। गिरिजा कुमार माथुर आजकल यहीं पर हैं। उन्होंने परसों अपने घर चाय पर बुलाया था। उनकी पत्नी शकुन्तला माथुर ने अपनी तमाम कविताएँ सुनाईं। एक दिन सुरेश अवस्थी के घर भी गया था। सबसे धीरे-धीरे मिले जा रहा हूँ।

आज दोपहर के बाद मॉडल टाउन वाले घर में जाने का विचार है। बात यह है

कि यहाँ रहने में कोई लाभ नहीं है। जब तक मैं मकान के किराये की रसीद नहीं दिखाऊँ, तब तक मुझे House Rent allowance नहीं मिलेगा। 43 रुपये के ऊपर 108 रुपये तक जितना होगा, उसे यूनिवर्सिटी देगी। उससे अधिक होने पर फिर मुझे देना होगा। यहाँ रहने पर मेरे 43 रुपये तो जरूर बचते हैं पर 30 रुपये के आसपास खर्च भी करना पड़ जाता है। इसके अलावा प्रतिदिन 3 घण्टे आने-जाने में खराब होते हैं और परेशानी उठानी पड़ती है सो अलग। इसी कारण मैं शिफ्ट कर जाने की सोच रहा हूँ। गोकि इस फ्लैट जैसा आराम, ऐसा फर्नीचर, इतनी सुविधाएँ कहाँ मिलनी हैं? पर अपना घर अपना ही है। आखिरकार इसको छोड़ना तो पड़ेगा ही। यों अगर मामा जी जिससे Contract कर आये हैं, अगर वह मकान दे देगा तो फिर कोई परेशानी न होगी। वह घर अधिक अच्छा है। फिलहाल जो लिया है, डॉ. चौधरी वाला, वह भी नीचे का ही है। लड़कों के गिरने की बात पहले से ही मेरे दिमाग में थी। अब वहाँ पहुँचकर चारपाई, फर्नीचर आदि सभी की व्यवस्था करनी पड़ेगी। सोचता हूँ कि बेंत के हल्के मोढ़े तब तक खरीद लूँगा और बेंत की ही एकाध आलमारी भी। अभी जब तक घर फाइनली कोई न ले लूँगा, तब तक अधिक सामान बढ़ाऊँगा भी नहीं, वरना Shift करने में उतनी ही अधिक कठिनाई भी होती है।

और सब ठीक है। मोती सब कुछ-कुछ ठीक बनाने लगे हैं। रोटी अब उतनी पापड़ नहीं बनाते। धीरे-धीरे सीख जावेंगे। डाँटता मैं कभी-कभी ही हूँ, जैसे कि कल रात 10 बजे मैं बहुत भूखा और परेशान लौटा तो क्या देखता हूँ कि केवल दाल-रोटी बनाये रखे हैं जबकि साग घर में रखा हुआ था। तब फिर मैंने डाँटा था, पर यों मैं बड़े पुचकार के काम लेता हूँ। अजित के घर उस दिन दावत में लेता गया था। उसे कुछ पैसे भी वहाँ मिल गये थे और खाने-पीने को भी सब कुछ मिला था।

इधर मामा जी ने कुछ वास्तविक दिलचस्पी ली है, मेरी व्यवस्था के बारे में। इतवार को तो बेचारे दिन भर दौड़ते रहे और हाँ, डॉ. चौधरी वाले मकान में एक पंखा भी है, इसी कारण मैंने उसे और ले लिया है। अच्छा, अब पत्र नये घर में पहुँचकर तब लिखूँगा।

देखो, रुपये जहाँ तक बन पड़े, किसी से भी मत लेना। पिछले महीने में चलते समय 300 रुपये मैं रख आया था। क्या 15 दिन में वे सभी खर्च हो गये? मैं समझता हूँ कि तुम इस समय सीसामऊ चली जाओ तो खर्च का बोझ कुछ कम रहेगा। अगले महीने से तो मैं सम्पूर्ण Economy ठीक ही कर लूँगा। एक महीने की बात है कम्मो, बुरा न मानना। अब लम्बे समय के लिए रहना कठिन हो जायेगा। यदि रुपये लेने ही पड़े तो सौ-पचास से अधिक किसी से भी मत लेना। एकाध सप्ताह बाद कॉलेज जाकर अग्निहोत्री जी से पूछकर Overdraft ठीक कर आना। 'धर्मयुग'

से मेरा अब कुछ पैसा आने ही वाला है। 'कल्पना' वालों का भी पत्र आया है कि कुछ भेज रहे हैं, पर बैंक एक सप्ताह बाद जाना, जिससे कि बम्बई वाला चेक जो तुमने जमा किया है, उसका रुपया भुनकर आ जावे।

जब बैंक जाना तो तनिक यह भी पता लगा लेना कि मेरे Saving Bank वाले एकाउण्ट में तो चेक जमा नहीं हुआ है? मेरा Saving का भी एकाउण्ट देख लेना। एक पत्र बैंक के मैनेजर के नाम रख रहा हूँ कि यदि Transfer कर दें। तुम अपना पासबुक भी बैंक से लेते आना। जरा भाई साहब से कहना कि यह पता लगावें कि मेरे स्कूटर का नम्बर कब तक आ रहा है?

F. 11/12, मॉडल टाउन—मैं शाम को 5 बजे यहाँ आ गया। अभी यूनिवर्सिटी में पत्र मिला पं. कृष्ण शंकर जी का। सुधीर बेचारा डी.ए.वी. में रो पड़ा, यह जानकर कम्मो मैं स्वयं रो रहा हूँ। मैं अपने मन की अवस्था का वर्णन नहीं कर सकता। उस बेचारे पर क्या बीत रही होगी। कभी कोई बाधा तो सामने नहीं आयी, मेरा मन इस समय ठीक नहीं है। तुमको फिर लिखूँगा। सुधीर के बारे में तत्काल लिखो अन्यथा मैं शनिवार की शाम को यहाँ से चल दूँगा।

तुम्हारा

'श्याम'

●

12.8.61

सवेरे 7-11,

दिल्ली से 12 अगस्त, 61 को अपनी अत्यन्त प्यारी कम्मो रानी को पत्र लिखते समय मेरे दिमाग़ में उसका यही चित्र घूम रहा है कि सवेरे 6 बजे से बार-बार सड़क पर झाँक जाती होगी कि उसका श्याम नहीं आया और फिर झुंझला कर तथा दुखी होकर रो देती होगी, पर उसका श्याम यहाँ बैठा स्वयं दुखी मन से पत्र लिख रहा है। इस बात की राह देख रहा है कि पानी बन्द हो तो जाकर मकान मालिक से बात करे। कम्मो तुम मोती से पूछ लेना, मैंने सारी तैयारी कानपुर की कर ली थी, उसी बीच में एक मकान देखने गया—वहाँ सरदारिन ने कहा कि मैणूँ तो बिण औरतों के मकान न देऊँ। गोकि वह औरत स्वयं बड़े अच्छे स्वभाव की दिखी। मकान में दो अच्छे बड़े कमरे हैं, एक स्टोर है, एक रसोईघर और एक बाथरूम। पखाना Common है, पर वे सरदार-सरदारिन और तीन छोटे-छोटे (तथा एक पेट में) बच्चे हैं। अतः दिक्कत न होगी। मकान के सामने और बगल में वैसी ही खुली जग़ह (चारदिवारी से घिरी) है, जैसी कि बँगलों में होती है और किराया मात्र 80 रुपये। दिल्ली को देखते हुए एकदम सस्ता Dam cheap को अगर मकान मालिक मकान बिना औरतों को बुलाये देने को तैयार न हुआ तो फिर तुमको आना पड़ेगा।

मकान की खराबी अभी इतनी है कि आलमारियों में किवाड़ नहीं लगे हैं तथा फर्श मौजेक का नहीं है, पर धीरे-धीरे वह भी करवाने की चेष्टा करेंगे–A Class शहर होने का फायदा जब मिलने लगेगा तो उसका किराया बढ़ा देंगे और यह चीजें ठीक करा लेंगे। बहुत पैसे वाले नहीं हैं, अतः उनको दबाया भी जा सकेगा। A Class शहर होने से मकान का Allowance 15 प्रतिशत हो जायेगा, पर वह तभी मिलेगा जबकि हम किराये की रसीद दिखावेंगे। सुना है कि एक Move यह भी चल रहा है कि हम लोगों को Compensatory Allowance भी मिले। यदि वह मिल गया तो नकद 35 रुपये तनख्वाह और बढ़ जावेगी। इस प्रकार सब मिलाकर 530 रुपये मिलने लगेंगे। खैर, यह सब देखा जायेगा।

कम्मो स्वीटी, मुझे चौहान किताबें नहीं दे गये, उनके यहाँ से मँगवा लेना। तुम परेशान न होना और यादव बाबू के आने की तारीख पुनः पूछकर लिखवाना। न हो तो निशंक से कहकर टिकट मँगवा लेना और वही मुझे भेज देगा। मैं एकाध दिन की छुट्टी लेकर चला आऊँगा। यों मैं लक्ष्मी को लिख रहा हूँ कि तुमको छोड़ जावें।

दोपहर दो बजे–अभी थोड़ी देर पहले मकान मालिक से बातें करके लौटा हूँ। मकान मैंने ले लिया है और वह इस बात पर राजी हो गया है कि फैमिली, मैं, कुछ दिनों बाद लाऊँ। अतः अब तुम लोग परेशान न होना। अम्मा को बता देना कि अब कोई जल्दी नहीं है। लक्ष्मी को भी लिखे दे रहा हूँ। यदि बीच में Insist करेगा तो फिर चाहे तुम, चाहे अम्मा चली आना। कल एक पोस्टकार्ड मैं अम्मा को लिख चुका हूँ कि तुमको भेजने की तैयारी करें। अतः अब यदि तुम सीसामऊ में हो तो अम्मा को सूचित कर दो कि फिलहाल कुछ दिनों के लिए मामला ही टल गया है। इधर इन्हीं दिनों में मैं कुछ फर्नीचर वगैरह के लिए भी रुपये इकट्ठे कर लूँगा और फिर जब तुम आओगी तो साथ चलकर मकान को सही करने का सामान ले आऊँगा। जीजा से कहना कि फर्नीचर बनवाने का प्रबन्ध करें, मैं रुपये का प्रबन्ध करके शीघ्र ही भेजूँगा। फर्नीचर वगैरह कानपुर से ही लाने में पड़ता पड़ेगा, यहाँ तेज मिलता है। वहाँ से ट्रक में बड़ी आसानी से सोफा, मेज, कुर्सी, आलमारी चली आवेगी। उपेन्द्र से कहना कि किसी ट्रक वाले से बात कर लें। यों मैं गोविन्द नगर वाली दोनों आलमारियाँ चाहता हूँ कि चली आवें और बेंत वाली कुर्सी तथा छोटी वाली मेज भी। मेरे आने की व्यवस्था अब अगले सप्ताह जरूर करो। मेरा आने का मन बहुत जोर से है, अतः बीच में भी एक दिन की छुट्टी लेकर आ सकता हूँ। वहाँ से क्रॉकरी वगैरह भी लेता आऊँगा। चि. अमी और राजी के क्या हाल हैं? घर में सबसे प्रणाम और छोटों को आशीष कहना। सुधीर के एडमिशन के बारे में जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। समाचार फौरन देना।

यह पत्र लिखने के बाद नये मकान में Decorate करने जा रहा हूँ। कानपुर वाला राशन अब खत्म है।

यादव बाबू का प्रोग्राम जरूर लिखना। 26 अगस्त को शायद रक्षाबन्धन है—उस दिन शनिवार है, अतः दो दिन की छुट्टी उधर भी मिल सकती है। निशंक से भी पुछवाना और सब हाल लिखना। बहुत-बहुत चुम्बनों के साथ—

तुम्हारा
'श्याम'

•

रात्रि : 10 बजे
सी-7/7, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
14.08.61

तेरे दोनों प्यारे खत आज शाम को यूनिवर्सिटी में एक साथ मिले, मेरा भी एक पत्र आज ही तुझको मिला होगा। यह जानकर बड़ा मजा आया कि तू वहाँ खूब मेरा इन्तजार करती रही और यादव बाबू पर मन-ही-मन नाराज होकर कोसती रही। इधर मकान के चक्कर में मैं स्टेशन उनको देखने पहुँच ही नहीं पाया था। अच्छा ले तुझे इम्पीरियल चाट हाउस वाला (या Kwality के समोसे वाला) एक बढ़िया किस भेज रहा हूँ। कम्मो डियर, उस दिन तो मेरा भी मन कानपुर उड़ आने को हो रहा था, पर अचानक ही मकान ठीक दिखाई पड़ गया। अगर उस दिन रुककर मैं उसे ले न लेता तो फौरन ही उठ जाता। मेरे बाद एक सज्जन आकर 90 देते रहे, पर मकान मालिक ने मुझसे रुपया ले लिया था।

कम्मो, यह घर कुछ-कुछ मेरे मन का है। विश्वविद्यालय से केवल 1-1½ मील दूर होने के कारण कुछ असुविधा है, बाकी सभी चीजें हैं। टट्टी जरूर Common है, पर मकान मालिक शरीफ किस्म के मालूम होते हैं। गोकि तुम सरदारों से घबराती हो। जगह भी काफी है तथा 2-4 मेहमान भी आ जायें तो दिक्कत न होगी। यहाँ तक कि यदि जरूरत पड़ जाये तो हम-तुम, अम्मा, सुधीर-रेखा सभी रह सकते हैं। मामा जिस मकान को दिला रहे थे, वह अभी खाली नहीं हुआ है। वह मकान उतना खुला नहीं है, उसमें दो मंजिलें हैं और नीचे का हिस्सा है। भीतर आँगन है, पर बाहर सड़क है, जबकि इस मकान में बच्चों को खेलने की बड़ी सुविधा है। कमरे भी इसके ज्यादा बड़े हैं, पर वह यूनिवर्सिटी के नजदीक है और वहाँ पर सभी चीजों का बाजार है। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि यूनिवर्सिटी एरिया में ही कोई Sub-let कर दे। दो-एक प्रोफेसरों से बातचीत हो रही है, हो सकता है कि वहीं जगह मिल जाये। वैसी हालत में तो फिर पूरी सुविधा हो जायेगी।

कम्मो, तुमको बुलाने से अभी मुझे भी यहाँ परेशानी बढ़ जायेगी और तुम भी हैरान हो जाओगी। जब तक मैं किसी मकान को तय करके उसे जमा न लूँ, तब तक तुम्हें और भी अधिक असुविधा होगी।

मेरा काम तो किसी-न-किसी प्रकार चल ही जाता है। अब अपेक्षाकृत मेरे मन को भी शान्ति है। आज मैं एक चारपाई बनवा लाया हूँ—12-13 रुपये सब मिलाकर लगेंगे। दो मोढ़े तथा एक चटाई ले आया हूँ पौने नौ रुपये में। एक निवाड़ की चारपाई तुम्हारे लिए मामा से कह दिया है कि बनवा दें। आज मेरे पास सौ रुपये रह गये हैं। मुझे उम्मीद है कि इनमें से 50 बचा लूँगा। 50 का फर्नीचर सितम्बर के पहले सप्ताह को लूँगा या जमा कर लूँगा और जब तुम आओगी, तब लाऊँगा। कानपुर से आया हुआ राशन सब खत्म हो गया है। अब कल मामा के पास जाकर गेहूँ, दाल, चावल सब कुछ लाऊँगा। अचार खत्म हो गया है। छोटे के हाथ न हो तो थोड़ा-सा सूखा भेज देना या फिर सिरका। दलिया मामा के यहाँ बनवा लूँगा। यों हर हफ्ते जगदीश अवस्थी आते-जाते हैं। कभी कोई छोटी-मोटी चीज उनके हाथ भेज सकती हो।

मैंने यहाँ काफी, यू.पी. वाले, मित्र ढूँढ़ लिये हैं। मॉडल टाउन में ही चार-पाँच मिल गये हैं। कुछ तो कानपुर के ही हैं। सुधीर कभी भी यादव बाबू के साथ चले आवें। उनके तो सितम्बर तक Classes नहीं हैं। वे आवें तो फिर क्रॉकरी (चाय का सेट, चार बड़ी प्लेटें) और कुछ राशन भी ले आवें। अमी बाबू के लिए मैं दो-एक दिन में न होगा तो टॉफी का डिब्बा भेज दूँगा। उसे मेरी ओर से अंगूर वगैरह ले दिया करो। (अच्छा अब 11 बज रहे हैं, कल बाकी पत्र लिखूँगा।) साधना प्रेस को चेक तुमने दे दिया होगा। नवीन ज्वैलर्स को भी चेक दे देना कि जमा कर लें तथा बाक़ी जितना बिल होगा, वह मैं आकर अक्टूबर में दे दूँगा। चेक का डाले रखना ठीक नहीं है। इण्टर वाले बिल के बारे में तुमने अब तक नहीं लिखा है और ही एक जरूरी काम और। सुधीर के हाथ 11 रुपये 79 पैसे श्री परमेश्वरी दयाल श्रीवास्तव, एकाउण्टेण्ट डी.ए.वी. कॉलेज के पास जरूर भेज देना। कह दें कि मेरी पॉलिसी की किश्त के रुपये हैं। चाहे तो चेक ही भेज देना अपना। उनको अलग से पत्र मैं लिखे दे रहा हूँ।

कैलाश के दोस्त बेचारे ऐसे समय में आये, जबकि मैं उनको चाय भी नहीं पिला पाया। उस समय सभी चायघर बन्द हो चुके थे। तुमने यह नहीं लिखा कि वाजपेयी जी कहाँ पर हैं और समाचार देना। तुम लखनऊ जरूर हो आओ।

तुनुआँ के लिए मैं टॉफी जल्दी ही भेजूँगा। उसे तथा सौरभ को बहुत-बहुत प्यार। अम्मा, बापू को प्रणाम। भाई साहब, भाभी, बिट्टन को नमस्कार तथा कैलाश, गणेश, मुन्नन जी, कुक्कू, विवेक, बीनू बेबी को प्यार।

चुम्बनों सहित—

तुम्हारा Obedient
'श्याम'

•

15.08.61

आज सवेरे से पानी बरस रहा है। कहीं जा नहीं सका और सोचता हूँ कि तुम होती तो खुश होती कि भले पानी बरसा, घर पर तो रहे। 'जीवन के सौ-सौ सुख सुविधाओं में मेरा मन बनवास दिया सा', पर मिलेंगे यही विश्वास है। आजकल मैं यूनिवर्सिटी में उर्मिला का विरह वर्णन पढ़ा रहा हूँ और बराबर तुम्हारी याद आती है।

सुनो, चि. शशि की फीस का क्या हुआ? उससे पूछकर लिखना। उससे कहना कि डॉ. अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी, ललितमोहन अवस्थी तथा श्यामसुन्दर 'राजा' से मिल ले। अवस्थी और राजा को मैंने उसके लिए आज अलग डाक से पत्र भी लिख दिये हैं। अब कल तुम्हारे पत्र का इन्तजार करके लिखूँगा, शायद तुम बैंक हो आयी हो तो उसी हिसाब से इण्टरमीडिएट वाला बिल भी रजिस्ट्री कर दूँगा।

तुमने बड़े तकिये का एक ही गिलाफ दिया है। अतः एक गिलाफ़ और तथा मेरी मसहरी भेज देना। इस मोहल्ले में कुछ मच्छर भी हैं।

बापू की दूकान का किस्सा सुनकर कष्ट हुआ। लगता है कि सीसामऊ में अब कुछ कष्ट के दिन आ गये हैं। बुढ़ापे में बेचारे बापू को तमाम परेशान होना पड़ रहा है। भाईसाहब को मैंने पत्र लिखा था, उसका उन्होंने उत्तर ही नहीं दिया।

16.08.61

कैलाश के दोस्त के हाथ चश्मा मिल गया। उस समय जल्दी में जवाब नहीं दे सका। वे रात में 9 बजे के लगभग आये थे। यहाँ जो आया करे, उसे बता दिया करो कि मेरे Classes 6 से 9 के बीच में Arts Faculty Building के कमरा नं. 65-66 में लगते हैं, ऐसे परेशानी होती है। सोमवार को 6 से 7:30, मंगल को 7:30 से 9, बुधवार को 6:45 से 9, बृहस्पतिवार को 6 से 8:25, शुक्रवार को 7:30 से 9, शनिवार 6 से 9 Classes लगते हैं।

आज तीन दिन से यहाँ बेहद पानी बरस रहा है। सुनता हूँ कि ऐसी वर्षा दिल्ली में बहुत दिनों से नहीं हुई है यों तो बादल-वर्षा पिछले 17-18 दिन से है, पर तीन दिन से तो झड़ी ही लगी हुई। वहाँ क्या हाल है।

•

7/7, Model Town, Delhi
23.08.61

कम्मो डियरी,

कल शाम जब भीगते हुए यूनिवर्सिटी पहुँचा तो देर हो जाने के कारण लड़के तो जा चुके थे, पर सान्त्वना यह हुई कि तुम्हारा पत्र मिला। सोचा कि आने-जाने के पैसे और परिश्रम सफल हो गया। रानी, मैं तो सोच रहा था कि तुम लखनऊ चली

गयी होगी, पर तुम कभी कोई निश्चय नहीं कर पाती हो। कम्मो, अभी-अभी मेरी खिड़की पर कबूतर शोर मचा रहे थे, मैंने सोचा कि उड़ा दूँ तो देखा कि वे दोनों आपस में बुरी तरह संलग्न थे और मुझे तुम्हारी याद हो आयी तथा फिर मैंने उनको नहीं उड़ाया—मुझे लगा कि यही तो मैं भी चाहता हूँ। आज पुनः मूसलाधार वर्षा हो रही है। ठण्डी हवा चल रही है, मुझे बार-बार जाड़ा लग आता है और सोचता हूँ कि यदि तुम होतीं तो कितना अच्छा लगता। अम्मा ने मुझे लिखा अवश्य है कि मैं आकर तुम्हें ले जाऊँ और मेरा मन भी हो आया है, पर जैसी कि तुमने सलाह दी है, मैं एक महीना और काटने की कोशिश करूँगा, 'अगर लक्ष्मी की व्यवस्था आ जायेगी तो मैं इतवार को सवेरे आ जाऊँगा, पर यदि कुछ न आया तो न जाऊँगा। तुम इतवार तक मेरी प्रतीक्षा कर लेना, और यदि न आऊँ तो सोमवार को फिर लखनऊ जरूर चली जाना। लखनऊ में वैसे ही बिस्कुट बनवा लेना, जैसे कि जिज्जी ने मुझे दिये थे। अक्टूबर के आसपास जिज्जी से कह देना कि बनवा रखें। एक दिन के लिए मैं लखनऊ जाऊँगा, तब लेता आऊँगा।

कम्मो, मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि तुमको मेरा पत्र नहीं मिला। मैंने तो तुमको और अम्मा को साथ-साथ पत्र डाला था, अम्मा का जवाब भी आ गया और तुमको पत्र ही नहीं मिला। चश्मा मिल गया है और चौहान वाली किताबें भी मिल गयी हैं, उन्होंने किसी के हाथ भिजवा दिया था। कानपुर से भेजा हुआ सब राशन और मसाला खत्म हो गया है। अब नये सिरे से मँगाया है। अभी-अभी ग्यारह आने का एक पाव कड़वा तेल मोती लेकर आये हैं। चीजें यहाँ पर इस कदर महँगी हैं कि समझ में नहीं आता क्या किया जाये? गेहूँ 11 रुपये मन बढ़िया खरीदा था।

लखनऊ तुम अवश्य हो आना और फिर वहीं से लौटकर तैयारी शुरू करना। तुम्हारे साथ सामान काफी आयेगा, क्योंकि ऊनी कपड़े, रजाई, गद्दा वगैरह सभी कुछ आना है। असल में, उस समय लक्ष्मी की आवश्यकता अवश्य पड़ेगी। यों अगर इतवार को मैं आऊँगा तो रजाई-गद्दा वगैरह तथा कुछ ऊनी कपड़े लेता आऊँगा। राशन तो नहीं, पर मसाला, अचार तुम अपने साथ काफी मात्रा में कूट-पीसकर लाना। टी सेट वहीं वाला मैं लाऊँगा, क्योंकि अधिक दिन रखी रहने से भी ये चीजें खराब हो जाती हैं। जब बन पड़ेगा, तब नया खरीदकर कानपुर में और रख देंगे।

कम्मो डार्लिंग, तुनुआँ कैसे गिर पड़ा? मुझे उसकी चोट को सुनकर बड़ी चिन्ता हुई। बरसात के दिन हैं, पकने न पाये। डॉक्टर को दिखा कर न हो तो पेन्सिलिन लगवा देना। मैं जानता हूँ कि चाहे ऊपर से न कहे, पर भीतर से मेरी अनुपस्थिति बहुत Feel करता होगा। वह बहुत अन्तर्मुखी है न। उसके लिए टॉफी तथा राजी जी की वर्षगाँठ के लिए कोई चीज मैं शीघ्र ही भेजूँगा। अगर आया तो सारा ही लाऊँगा और समाचार देना। भाई साहब का पत्र मिला है। स्कूटर के सम्बन्ध में

दो-तीन दिन बाद लिखूँगा। बाजपेयी जी और ब्रजेश के समाचार तुमने नहीं दिये। वे लोग छिबरामऊ में ही हैं या Transfer हो गया। बिट्टन का स्वास्थ्य कैसा है? वे हरदोई कब तक जा रही हैं। एक विज्ञापन भेज रहा हूँ। पाण्डेय जी के पास भिजवा दें, चाहें तो Apply कर दें।

और सब ठीक है। मोती दुरुस्त है, पर उसमें बुद्धि है ही नहीं। कितना ही समझाओ, पर उसके दिमाग में कुछ बैठता ही नहीं। कच्चा उतार लेना, बिना नमक का बनाना तो उनके बायें हाथ का खेल है। सफाई की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देता। बरतनों में दूध, चिकनाई या मिट्टी लगी रहती है। शायद धीरे-धीरे समझ जाये, पर हाँ Sincere बहुत है।

यहाँ पूरा अगस्त पानी की बरसात में बीता है। पिछले 17 वर्ष से अगस्त के महीने में ऐसा पानी यहाँ कभी नहीं बरसा। मेरा तो मन इस पानी से ऊब उठा है। तुम होती तो शायद इसे कुछ Enjoy भी करते, हाँ, तुमने मेरे लेखों के बारे में पूछा सो अभी 20 अगस्त के 'धर्मयुग' में मेरा एक लेख–'लखनऊ का यंग पेण्टर्स ग्रुप' नाम से आया है। वह डायरी का एक अंश है। 'लहर' के कहानी अंक में भी मेरा लेख आ रहा है। उसके Off-prints आ गये हैं–अंक एकाध दिन बाद आवेगा। 'धर्मयुग' में ही एकाध और चीजें आनी हैं और तो कहीं कुछ भेजा नहीं है। इधर तो मुझे स्वयं पत्र-पत्रिकाएँ देखने को नहीं मिलीं। अगस्त की 'कल्पना' शायद मनीराम बगिया में आयी हो, यहाँ तो मुझे मिली नहीं।

और सब ठीक है। मामा से इधर 10-15 दिन से भेंट नहीं हुई। कल-परसों तक उधर जाऊँगा।

और सब ठीक है। सबके समाचार देना। लखनऊ तुम सोमवार को चली जाना। मेरी कोई याद करता है क्या? बापू के सेल्स टैक्स वाले किस्से में क्या हुआ?

उत्तर जल्दी!

चुम्बनों समेत तुम्हारा
'श्याम'

•

7/7, Model Town, Delhi-9
29.08.61

कम्मो डार्लिंग,

तुम्हारा पहले वाला पत्र आज शाम को यूनिवर्सिटी में मिला। पढ़कर लगा कि भले कानपुर हो आया, चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही–गोकि 16-17 रुपये खर्च हो गये।

कम्मो, मुझे तुनुआँ और राजी दोनों ही बार-बार याद आ रहे हैं। मुझे डर लग रहा है कि तुनुआँ कहीं मेरे आने के Shock में बीमार न पड़ जाये। उसे कम्मो तुम इस समय डाँटना नहीं और रोज कह देना कि डैडी अबकी जब टॉफी लेकर आवेंगे तो हम सब लोग दिल्ली चलेंगे। मुझे तो भूलता नहीं है कि कैसे स्टेशन पर मुझसे चिपटा हुआ था, छोड़ नहीं रहा था। जब टाटा करने लगा तो उसका मुँह एकदम उतर गया था। कम्मो रानी, अपने बच्चे कितने प्यारे लगते हैं। राजी भी इस बार किस कदर मुझे अपना दुलार दिखाता था। वह भी रो रहा होगा।

स्वीटी, तुमसे मैंने कहा था कि आज रात पत्र लिखूँगा, सो लिख रहा हूँ। प्रसन्न हो न। अब तक मन यही करता है कि जल्दी से तुमको यहाँ ले आऊँ।

कम्मो, तुमने सामान रखने में ध्यान नहीं दिया—न तो मेरी मसहरी रखी और न गुड़ ही रखा। बिना मसहरी के बड़ी तकलीफ होती है। अगर कोई मिल जाये तो मसहरी जरूर भेजवा देना। सोचता था कि 2-4 दिन के नाश्ते भर को लड्डू वगैरह ही कुछ बना दोगी, पर तुमने तो कुछ भी नहीं दिया। खैर कोई बात नहीं है। सुधीर ने उस दिन साधना प्रेस में चेक पहुँचा दिया होगा। तुम अब लखनऊ जरूर हो आना। लखनऊ में बिस्कुट बनवा आना, जब मैं अक्टूबर में जाऊँगा, तब ले आऊँगा।

खेमका का पत्र आया है, कल 30 तारीख को वे आवेंगे और 2-3 दिन फिर रहेंगे। उनकी पत्नी से भी अब तभी भेंट होगी।

मुझको लखनऊ पहुँचकर पत्र लिखना और तभी मैं अब अगला पत्र लिखूँगा। अगर न हो तो फौरन ही लिखना।

जयपुर के इण्टरव्यू में मैं न जाऊँगा। अभी डॉ. नगेन्द्र से पूछा नहीं है, पर मैं स्वयं सोच रहा हूँ कि जाना कोई बहुत बुद्धिमानी का कार्य नहीं होगा। एक तो राजस्थान से यहाँ के Grades better हैं, दूसरे अगर न लिया जाऊँगा तो दिल्ली यूनिवर्सिटी की बदनामी होती है। एक यूनिवर्सिटी से दूसरी में जाने में अगर better हैसियत मिले, तब तो कोई बात है।

और सब ठीक है। सबके समाचार देना। तुनुआँ और राजी को प्यार। कम्मो तुम सुनकर प्रसन्न होगी कि यहाँ पर भी मेरे रेडियो प्रोग्राम शुरू हो रहे हैं। आज ही contract मिला है। 14 अक्टूबर के लिए एक Script भेजनी है, 10 मिनट की। अब शुरुआत हो रही है। फिर और अधिक भी मिल सकते हैं। मोती अच्छी तरह है। उस दिन उसे बहुत चोट नहीं आयी।

तेरा ही
'श्याम'

•

सी-7/7, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
07.09.61

कम्मो डियर,

इस बार तुम जुलाई वाला बदला ले रही हो। मैंने तुम्हें आते ही एक भी पत्र नहीं दिया। मैं तो अब तक तीन पत्र लिख चुका होता, पर यह तो ज्ञात हो कि तुम हो कहाँ? यह पत्र भी लिखना शुरू कर दिया है, पर शाम को यूनिवर्सिटी में जा कर देखूँगा कि कोई पत्र आया है या नहीं? यदि न आया होगा तो सीसामऊ के पते पर डाल दूँगा। तुम शायद लखनऊ में होगी, पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि मुझे भुला ही दो। लखनऊ जाकर तो मेरी याद और अधिक आनी चाहिए थी। कम्मो, कल शंकर दयाल त्रिपाठी आवेंगे। सोचता हूँ कि शायद वही कोई समाचार लावें। मुझे भय है कि किसी की तबीयत खराब न हो। दो-तीन दिन से मैं सोते-सोते जाग पड़ता हूँ। तुनुआँ और राजी दोनों अच्छे हैं न? यदि तुम कानपुर होगी तो कल शंकरदयाल के हाथ राजी की वर्षगाँठ के लिए कुछ उपहार तथा तुनुआँ के लिए टॉफी भेजूँगा। इस बार तुम सबकी याद मुझको बहुत सता रही है। मैं सोचता हूँ कि तुमको लेता आता और फिर दशहरे की छुट्टियों में यहीं रहता, बड़े दिन पर कानपुर चला आता। यहाँ 1 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक Post-Graduate Hindi Teaching Seminar हो रहा है, उसमें सारे हिन्दुस्तान की यूनिवर्सिटी के व्यक्ति भाग लेंगे। मैं उसमें दो-चार दिन ठहरना चाहता हूँ। खैर, देखा जायेगा।

कम्मो, परसों से मेरी तबीयत ठीक नहीं है, और तुम जानती हो कि मेरे न तो फुड़ियाँ निकलती हैं और न सिरदर्द होता है, पर परसों शाम से बराबर सिरदर्द कर रहा है तथा सिर में ही दाहिनी ओर फुड़ियाँ भी निकल आयी हैं, वह अलग तन्ना रही हैं। इससे मेरा मन बड़ा क्षुब्ध है। मुझे यह भी डर लग रहा है कि कहीं मुझे बुखार न आ जाये। एक तो इतने मच्छर काटते हैं कि मलेरिया का आ जाना स्वाभाविक ही होगा।

बीच में यहाँ खेमका आये थे। दो-तीन दिन रहे थे। एक दिन मैं दिन भर उनके साथ ही रहा। सवेरे की चाय से लेकर रात के भोजन तक, सब उन्हीं के साथ हुआ। उनकी पत्नी भी थीं। चाय पर सवेरे अजित और स्नेह जी भी आये थे। फिर हम सभी लोग साथ-साथ अंगरेजी फिल्म Madam Bovary देखने गये। मुझे उस दिन फिर तुम्हारी याद आयी और दोनों तो अपनी बीवियों के साथ थे—एक तुम्हारे बिना मैं ही था। कम्मो, यहाँ कनाट प्लेस में एक बहुत ही अच्छा रेस्तराँ है, तुम आओगी तो साथ-साथ वहाँ कॉफी पीने चलेंगे। सुमति—तिवारी जी आये हैं। उनके हाथ अब पत्र भेजूँगा। मँगवा लेना। तुम्हारा पत्र मिल गया। सौरभ के समाचार देना। मेरा

जी लगा है। टी सेट ठीक आ गया है। मुँगौरी भी मिल गयीं। सुमति भी आयीं। शेष ठीक। चुम्बनों समेत।

तुम्हारा ही तो
'श्याम'

•

C-7/7, Model Town, Delhi-9
09.09.61

कम्मो स्वीटी,

तुम्हारा पत्र मिला था। एक मेरा भी पत्र मिला होगा। आशा है चि. सौरभ का स्वास्थ्य अब ठीक होगा। उसकी वर्षगाँठ 15 को है न। उसके लिए Presents में दो सूट भेज रहा हूँ। एक बढ़िया है और एक Ordinary। Ordinary वाला चाहो तो किसी और को भी दे सकती हो। तुनुआँ के लिए टॉफी भेज रहा हूँ। उसको उसके टॉफी वाले डिब्बे में बन्द करके दे देना कि डैडी ने भेजे हैं। दोनों के हाल-चाल लिखना। मेरा मन वहीं लगा है। सुमति से उस दिन ज्ञात हुआ कि तुनुआँ उनके घर गया था और खूब खेलता रहा—यह जानकर बड़ी खुशी हुई। फिर शायद मनीराम बगिया चला गया था, अभी लौटकर तुम्हारे पास आया कि नहीं?

अब तो तुम्हारे आने में थोड़े ही दिन रह गये हैं। मैंने नयी वाली बेडशीट एक दिन निकाली, फिर उसे रख दिया कि हम तुम उस पर साथ-साथ लेटेंगे। टेरीलीन की शर्ट्स यों तो एक ही भाव मिलती हैं दिल्ली-कानपुर में, पर यहाँ कभी-कभी पुराने स्टॉक का सेल सस्ता हो जाता है। अगर कैलाश अपनी नाप भेज दें तो मैं देखकर भाव लिख दूँगा।

मेरे रुपये अभी कहीं से नहीं आये हैं। 'कल्पना' वालों को डाँटकर एक पत्र मैंने लिखा है और कहीं से तो आने भी नहीं हैं। 'धर्मयुग' से अपने टाइम पर चेक आ ही जावेगा।

तुम अब शायद ही लखनऊ जा सको। यदि सचमुच जाना ही हो तो 16 तारीख को जाकर 21-22 तक रह आओ अन्यथा फिर न जा पाओगी, इतना मैं बताये देता हूँ। बिट्टन के क्या हाल हैं? वे हरदोई कब तक जा रही हैं? ब्रजेश छिबरामऊ चली गयी होंगी। आलू वाले व्यापार का कुछ ज्ञात तो नहीं हुआ। उससे भाई साहब का Payment कर देना है। बापू की तबीयत ठीक होगी या फिर न हो तो मेरे नाम से Vespa बुक करा देना।

और सब ठीक है। मोढ़ों के Circumference के नाप के डोरे भेज रहा हूँ। गद्दी बनाने में मामूली कपड़ा ही लगाना, क्योंकि उनके ऊपर से तो खोल चढ़ जावेगा। अगर एलगिन मिल में सेल हो तो फिर परदों आदि के लिए रंगीन खादी खरीद

लेना। तुम्हारे एकाउण्ट में 'धर्मयुग' से रुपया आ गया होगा। अम्मा को 150 रुपये मैं सुमति के हाथ भेज रहा हूँ। 105 रुपये Housing Cooperative Society की मेम्बरशिप के जमा कर रहा हूँ। 80 रुपये मकान किराया दे दिया। इस प्रकार 350 रुपये के आसपास तो खर्च हो गये। 424 रुपये कुल मिले थे, बाकी पूरे महीने का खर्च मुझे 75 रुपये में ही चलाना है, पर क्या किया जाये। 'कल्पना' वाले आ गये तो आराम रहेगा, नहीं फिर देखा जायेगा। तुम परेशान न होना। मोढ़ों की नाप में Circumference के अलावा Diameter 12-13 इंच के लगभग हैं। सामान्य मोढ़े बाजार में देखकर भी तुम बना सकती हो और सब ठीक है। जीजा को फर्नीचर के लिए लिख रहा हूँ। समाचार फौरन देना।

चुम्बन और आलिंगन समेत

'श्याम'

•

15.09.61

कम्मो डियर,

मेरा पत्र तुम्हें मिल गया होगा, पर हाँ उसका तो तुमने उत्तर भी दे दिया। आज सौरभ की वर्षगाँठ रही होगी, वहाँ खूब धूम-धाम से दावत हुई होगी। सब हाल विस्तार से लिखना। कौन-कौन आया था? क्या किसी मेरे दोस्त को भी बुलाया था? मैं दिन भर आंज तुम्हारी, लोगों की याद करता रहा, पर दावत खाने को मुझे भी आज मिल गयी थी। मैंने सोचा कि यह भी राजी बाबू की वर्षगाँठ में ही है। कम्मो, आज मैं बड़ा खुश हूँ। जानती हो क्यों? दिल्ली विश्वविद्यालय की एक परीक्षा में आज मैं और उत्तीर्ण हुआ। यहाँ एक 'हिन्दी अनुसन्धान परिषद' है, उसमें आज मेरा निबन्ध पाठ था। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी के सभी मूर्धन्य विद्वान वहाँ पर उपस्थित थे। सारे कॉलेजों के लगभग 100 लोग तो रहे ही होंगे। मैं बहुत डरते-डरते गया था—पर कम्मो, नक्शा अच्छा ही रहा। मेरे निबन्ध की काफी प्रशंसा हुई। अनुसन्धान परिषद में ही एक चाय पार्टी भी थी—एक महिला को डॉक्टरेट मिलने के उपलक्ष्य में। तो मैंने खूब जमकर खाया। इस प्रकार आज दिल्ली विश्वविद्यालय में जमने का एक कदम और पूरा हुआ। वहाँ पर खूब बहस होती है, सवाल पूछे जाते हैं। अब ज्यादा न लिखूँगा, नहीं तो तुम कहोगी कि अपनी बड़ाई हाँकते हैं।

अम्मा से कहना कि मोती मुहाल वाले बाबू मामा की पुत्रवधू डॉ. ऊषा पाण्डेय से भी आज उसी गोष्ठी में भेंट हुई थी। उन्होंने एक दिन घर पर बुलाया है। अब जाऊँगा। अम्मा से पूछना कि उनके पति (उनकी अभी थोड़े दिन पूर्व मृत्यु हो गयी थी।) का क्या नाम था? तथा वे मुझसे आयु में बड़े थे या छोटे। मैंने तो उन्हें भाभी बना लिया है।

कल डॉ. सुरेश अवस्थी के यहाँ शाम को खाना खाने गया था, वहाँ तीज वाला सामान भी खाया। फिर तुम सभी लोगों की याद आयी कि घर भर ने व्रत रखा होगा। अम्मा ने सबको उस दिन डाँटा होगा, दिदिया ने अंजू-अजय को जरूर पीटा होगा।

अच्छा कम्मो, तू तो बड़ी जल्दी घबड़ा उठती है। Seminar यहाँ अक्टूबर से शुरू हो रहा है। मैं अधिक-से-अधिक 5-6 अक्टूबर तक उसे Attend करूँगा और फिर वहाँ आ जाऊँगा। उसमें हिन्दुस्तान की तमाम यूनिवर्सिटियों के लोग आवेंगे, कुछ परिचय बढ़ेगा, आगे काम देगा। फिर यह भी सम्भव है कि Official ढंग से मुझे कुछ Duty दे दी जाये। अतः तुम्हें लिखा था कि आने में देर हो सकती है, पर यह सब जरूरी नहीं है। फिर तुमको तो अब यहीं पर आना ही है। आओगी तारीख 13-14 तक ही। इसलिए बेकार में परेशान होती हो। घर में भी सबसे कह देना कि मैं एक सप्ताह तो अवश्य ही रहूँगा वहाँ पर।

हाँ, सुनो तुमको जो कुछ भी खरीदना हो, वह बैंक से रुपया निकालकर खरीद लो। 'धर्मयुग' वाला रुपया आ गया होगा। 'धर्मयुग' का एक 50/- का चेक और भेज रहा हूँ। इसे तत्काल जमा कर देना, जिससे कि रुपया आ जाये और फिर इसे भी तुम निकाल सकती हो। मेरा अनुमान है कि इस महीने के अन्त तक एक चेक 'धर्मयुग' से 40-50 रुपये का और आ जावेगा। अभी 10 सितम्बर के अंक में मेरा Article कानपुर के ऊपर था। मँगाकर देख लेना। अब अक्टूबर के अंक में मेरी एक टिप्पणी और आवेगी। तब तक कुछ और भेज दूँगा। 'धर्मयुग' इस समय बड़ा सहायक सिद्ध हो रहा है। 'कल्पना' से रुपया अब तक नहीं आया। आज बहुत डाँटकर पत्र लिख रहा हूँ। 'त्रिपथगा' से भी आना है, पर अब तक तो आया नहीं। खैर देखा जायेगा। हाँ, अब एक खुशखबरी सुनो कि हम लोगों को compensatory allowance मिलना तय हो गया है तथा House Rent भी 15 प्रतिशत तक मिलेगा यानी मेरी तनख्वाह अब 530 हो जायेगी। मकान और लेने के चक्कर में हूँ क्योंकि कायदे से मैं 110 रुपये तक का मकान ले सकता हूँ तो क्यों न उसे Utilise कर लूँ।

सुमति, शंकरदयाल यहाँ दो दिन रहे। मैंने भरसक खातिरदारी की थी। उसी से शायद प्रसन्न होकर रेखा के लिए भी टॉप्स ले गयी थीं। शंकरदयाल यहाँ उसी अमेरिकन स्कॉलरशिप के लिए आये थे जिसमें शर्मा जी गये थे।

तुम्हारा यदि सचमुच ही लखनऊ जाने का मन हो तो हो आओ, क्योंकि फिर जा नहीं पाओगी और सब ठीक है, अपने तथा घर भर के समाचार देना।

अच्छा बहुत-बहुत प्यार और चुम्बन।

चेक नहीं भेज रहा हूँ। उसे मैंने यहीं जमा कर दिया है, क्योंकि मेरे पास बिल्कुल रुपया नहीं था।

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

सी-7/7, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
23.09.61

कम्मो स्वीटी,

कई दिनों के इन्तजार के बाद तुम्हारा पत्र मिला। मैं इस बार रोज राह देखता था। राजी बाबू की वर्षगाँठ की दावत का समाचार थोड़ा-बहुत पं. कृष्ण शंकर के पत्र से चल गया था, पर तुम लोगों का पत्र नहीं आया था। मैं बड़ा चिन्तित भी था और नाराज भी। और जानती हो जब कल शाम को विश्वविद्यालय से लौटने पर तुम्हारा पत्र मिला तो पढ़ने के पहले ही मन में यह निश्चय कर लिया था कि तुमको अब कम-से-कम 4-5 दिन उत्तर नहीं देंगे, क्योंकि तुमने भी देर से उत्तर दिया है, पर कम्मो तुनुआँ का समाचार पढ़कर मेरी आँखों में आँसू आ गये और मैं इतना चिन्तित रहा कि कल रात बड़ी देर तक मुझे नींद नहीं आयी। तरह-तरह के खराब विचार मन में आते रहे। सचमुच मेरा ख़याल है कि इस बार वह मेरे लिए मानसिक रूप से परेशान होकर ही बीमार पड़ता है। मेरा मन हो रहा था कि किसी प्रकार दौड़कर उसके पास पहुँच जाऊँ। वह बुखार में भी कहता है कि डैडी को लिख दो कि जल्दी से आ जायें। क्या करूँ—विवश होकर मुझे भी रोना आ जाता है। कम्मो, तुनुआँ मुझे बहुत प्यारा है, उसकी ठीक से देखभाल करना। डॉक्टर को ठीक से दिखा लेना। तुम्हारे घर में बीमारी में न तो ठीक दवा की जाती है और न देखभाल ही होती है। उससे कहना कि डैडी बहुत जल्दी कम्पट, टॉफी लेकर आवेंगे। सौरभ के भी हाल देना, आशा है दोनों ही अब ठीक हो गये होंगे। अब तुम्हारा लखनऊ जाना बेकार-सा ही है। जितनी बार तुम जाने को तैयार होती हो, कोई-न-कोई बच्चा बीमार हो जाता है।

पलँग के बारे में मैंने कुछ तय नहीं किया है, वह पलँग मुझे बहुत पसन्द तो है नहीं और वजनदार बहुत है, लेकिन यह भी है कि 14-15 रुपये फिलहाल उसे लाने से बच जावेंगे। अगर पलँग न भी लावेंगे तो उसकी निवाड़ जरूर ले आवेंगे। उस पलँग का सबसे बड़ा Defect तो उसका छोटा होना है—या तो फिर उसकी पाटी लम्बी करा लेंगे। हमारी मकान मालकिन के पास मशीन है तो, पर इस शहर में परस्पर का विनिमय तनिक कम होता है। यों आपस में पटने पर निर्भर करता है। बहुत सम्भव है कि पहली तारीख को यह मकान छोड़ भी दूँ। कमला नगर में एक और मकान की बातचीत चल रही है।

फर्नीचर की मुझे आवश्यकता तो बहुत है, पर वहाँ नहीं बनेगा तो फिर यहीं दिल्ली में खरीद लूँगा या फिर लकड़ी ले आऊँगा और यहीं पर बनवा लूँगा। असल में शंकरदयाल जैसे लोगों की विचारधारा मुझसे बहुत मिलती नहीं है तथा वे हर चीज को कानपुर के Angle से सोचते हैं। कानपुर में तो इतने दिन से मैं बिना फर्नीचर

के रह रहा हूँ पर दिल्ली में तभी आप rise कर सकते हैं, जब जरा Decent living हो आपकी। आपके घर कोई आवे और चार कुर्सियाँ भी बैठने के लिए न हों तो विचित्र-सा मालूम पड़ता है। यहाँ और सब ठीक है। इधर कोई नया समाचार नहीं है। अक्टूबर वाले धर्मयुग में मेरी एक रचना और आ रही है—तुम देख सकती हो। अक्टूबर वाला अंक़ 27-28 तक बाजार में आ जाता है।

हरदोई से पाण्डेय जी का पत्र आया है। उन्होंने एक A.D.O. (Industries) के लिए Apply किया है। आलू वाला काम अभी कुछ निबटारे तक पहुँचा या नहीं? तुमने बैंक में इस बार Fixed deposit कितने दिन के लिए Renew कराया है? मैंने भी हाँ पंजाब नेशनल बैंक में अपना एकाउण्ट खोला है, क्योंकि चेक वगैरह जमा करने में बड़ी कठिनाई होती है।

और सबके हाल-चाल देना। तुनुआँ-राजी के स्वास्थ्य के समाचार फौरन दो। मुझे बहुत चिन्ता है। मेरा मन कर रहा है कि Seminar वगैरह Attend किये बिना ही कानुपर निकल आऊँ। ज्यों-ज्यों दिन नजदीक आते हैं, त्यों-त्यों मन की आकुलता बढ़ती जाती है। यह तुम्हें मालूम हो गया है कि डॉ. कैलाशनाथ शर्मा की नियुक्ति काशी विद्यापीठ में हो गयी है—22 को उन्होंने ज्वाइन कर लिया होगा। उनका पत्र आया था। यहाँ दिल्ली में एक दिन तुम्हारे Sociology वाले V.N. Seth भी मिल गये थे। अच्छा चुम्बनों समेत,

तुम्हारा
'श्याम'

•

11.05.62

कम्मो डार्लिंग,

एक पत्र मिला होगा। तो अब नाराजी दूर करो और मेरी मानिनी कानपुर आने पर खूब मान कर लेना—मैं तुझे मना लूँगा। देखूँगा कि कैसे मेरे मनाने पर तू मानती नहीं है। अच्छा सच बता इतना पढ़ते-पढ़ते तू मुस्करा रही है न। बस तो हो गयी मेरी जीत। आखिर कम्मो मेरी है तो पगली ही और मुझे प्यार भी तो कितना करती है।

एक खुशी की बात और, बस अब किसी भी दिन मैं पहुँचने ही वाला हूँ। अब मन नहीं लग रहा है। जिस दिन मन ऊबा, उसी दिन बोरिया-बिस्तर लिये अवस्थी जी ट्रेन पर लदे दिखाई देंगे। यों फिलहाल प्रोग्राम 15 को चलने का है। 13 को रेडियो टॉक रेकॉर्ड करवा दूँगा। 14 को द्विवेदी जी चण्डीगढ़ से आवेंगे, उनसे मिल लूँगा और 15 तक अन्य काम निबटाकर उड़न छू। लो इसी बात पर एक मीठा-सा चुम्बन हवा में उछाल दे, मेरे पास चला आवेगा। आज मैं बहुत ही खुश हूँ क्योंकि

सवेरे से खाना नहीं मिला है। कॉफी हाउस के डोसा पर ही गुजर हो रहा है और यह पत्र रिसर्च फ्लोर पर बैठकर रिसर्च के रूप में लिखा जा रहा है।

तुम्हारी महरी ने आने से साफ इंकार कर दिया। उसको डर लगा होगा कि कहीं मैं उसके साथ...। रोज आँधी आती है और कमरे धूल से रंग जाते हैं, फिर मैं बाकायदा सफाई करता हूँ। कल तो पानी भी खूब बरसा और रात को इतनी ठण्डक थी कि कमरे में सोया और बादल देखकर मुझे किसी की याद आती रही।

अभी रूसी एवं सागरी चेक नहीं मिले हैं, जरा उनकी भी चिन्ता में लगा हुआ हूँ। तुम तो मौज से होगी। सुनो, अपने दाँत साफ करती हो या नहीं? ब्रश-मंजन मेरा न मिला हो तो बाजार से मँगवा लेना और उसी ढंग से सफाई करते रहना। यदि इसमें गलती हुई तो Kiss नहीं दूँगा और न लूँगा। समझ गयीं न। अपनी बुश्शर्ट के लिए वाफ्ता सिल्क लाया हूँ—तुम्हारा ब्लाउज भी निकल आवेगा और तुनुआँ-राजी की बुश्शर्ट भी। कम्मो इस बार तुम पसन्द कर रखना। जुलाई को तुम्हें मैं Raw silk की साड़ी Present करूँगा।

इस पत्र का जवाब फौरन दो, जिससे कि मुझे 15 तक अवश्य मिल जाये। मनीराम बगिया से रेखा का पत्र आया है—उन्हें जवाब दे दिया है। बच्चे सब ठीक होंगे।

अच्छा टा-टा। बहुत प्यार। बापू—अम्मा को प्रणाम और सबको सलाम, प्यार, आशीष वगैरह। बिट्टन का रिजल्ट आउट हो चुका होगा।

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

C/o श्री राजेन्द्र कुशवाहा
सी-5/14, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
11.07.62

कम्मो डियर,

कल मैं आ गया। फ्रेंच में एडमिशन मैंने ले लिया है। सरदार का मकान खाली था, पर आज सवेरे जब मैं गया तो उन्होंने कहा कि कल शाम को ही मैंने उसे दे दिया है। यों मकान अब अच्छा हो गया है। खैर, आज दो दिन हो गये हैं, पर अभी कोई मकान ढंग का तय नहीं हुआ। यों जिसमें सामान रखा है, वह भी खाली हो गया है और जिसमें अनिल जी रहते थे, वह भी खाली है। कल तक कुछ और मकान देखने के बाद अगर कोई समझ में न आया तो इन्हीं में से कोई थोड़े समय के लिए ले लेंगे। मकान बन रहे हैं, पर पूरी तरह तैयार अच्छे मकान हैं नहीं या फिर बहुत तेज हैं। बहरहाल तुम्हारे आने के पहले कोई-न-कोई मकान मैं अवश्य ले लूँगा।

मैं कुशवाहा के यहाँ ठहरा हूँ। परेशानी कोई नहीं है। डॉ. द्विवेदी भी आ गये हैं। आज खेमका एस.डी. कॉलेज के इण्टरव्यू में यहाँ आये थे, पर उनकी नियुक्ति नहीं हो सकी है। बिना पीएच.डी. के बड़ा कठिन हो गया है। रायबरेली के एक कॉलेज के डॉ. गौतम हुए हैं।

French के मेरे Classes सवेरे 9 से 10 तक हुआ करेंगे। सुधीर आज बनारस चला गया होगा। रुपये की व्यवस्था सब हो गयी होगी। सुधीर का पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ का Chem. Engg. का इण्टरव्यू यहाँ दिल्ली के पते पर आया पड़ा था।

और सब ठीक ही होगा। जब आना तो थोड़े से आम अवश्य लेते आना। मेरे कपड़े नीचे वाली कम्पनी से मँगा लेना। कुर्ते में चुन्नट जरूर डलवा लेना। चौहान ने चप्पल भेज दिये होंगे। लेटरहेड भी मँगा लेना। सीसामऊ में सब ठीक-ठाक होगा। रविवार को सवेरे जनता के टाइम पर मैं पहुँच जाऊँगा।

यहाँ पानी काफी बरस चुका है। पूज्या अम्मा, दिदिया, जीजा को प्रणाम। चि. रेखा, अजय, अंजू, अपर्णा, तुनुआँ एवं राजी को स्नेह।

P.S.- किताबों में देख लेना कि एक बड़े लिफाफे के भीतर की जो रिव्यू मैंने लिखी थी, वे टाइप रखी हुई हैं। उनको सँभालकर लेते आना। अगर किताबें ज्यादा दिखें तो कुछ कम कर देना, पर डीएवी लाइब्रेरी वाली जरूर ले आना। पत्र-पत्रिकाएँ भी कम कर सकती हो।

तुम्हारा
'श्याम'

•

सी-3/5, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
10.10.62

कम्मो डार्लिंग,

मैं परसों रात 11 बजे के लगभग घर पहुँचा था। दशहरा होने के कारण बस बड़ी मुश्किल से मिली थी। रात को खाना खाते, डाक पढ़ते 12 बज गये थे। फिर सो गया—जाने सोते समय कैसा-कैसा लगता रहा। तुम्हारी याद बराबर आयी। घर अच्छा नहीं लगता। सबसे ज्यादा याद तो तुनुआँ और सौरभ की आती है। कल सवेरे विश्वनाथ त्रिपाठी के यहाँ गया—उनके मकान मालिक के लड़के का भी मुण्डन हुआ है और उसे देखते ही मुझे सौरभ की याद आयी। शाम को अजित के यहाँ जा रहा था तो एक माँ अपने लड़के को पीट रही थी—मुझे उस दिन की याद आयी, जब मैंने तुनुआँ को पीटा था। बड़ी ग्लानि हुई और निश्चय किया कि अब उसे मारूँगा नहीं। तुम भी दोनों को पीटना नहीं।

सवेरे द्विवेदी जी को पहुँचाने जा नहीं पाया, क्योंकि नींद देर से खुली थी।

सवेरे-सवेरे मिश्रा जी के यहाँ से चाय और बिस्किट आ गये थे, उन्हें पीकर त्रिपाठी और पण्डित जी के यहाँ गया था। पण्डित जी के यहाँ हलुआ खाया और दूध पिया था। पण्डित जी ने कहा कि भोजन की व्यवस्था वहीं कर लूँ। काफी आग्रह करते रहे, पर मैंने अस्वीकार कर दिया। कुछ मैंने कहा भी नहीं। मिश्रा जी ने कहा है कि मैं बिना किसी संकोच के उनके यहाँ भोजन कर लिया करूँ। उनसे भी मैंने कह दिया है कि जब आवश्यकता होगी, तब कह दूँगा। गोकि वे बहुत जोर देकर कह रहे थे, फिर भी मैं सोच रहा हूँ कि क्यों अहसान लूँ? मिश्रा जी एवं श्रीमती मिश्रा जाने वाले हैं। यहाँ पर बच्चे और महराजिन रह जावेंगे। लइया मैंने दे दी है, पर श्रीमती मिश्रा से अभी तक कोई बात नहीं हुई है। कल रात मैं अजित के यहाँ रह गया था। उनका बच्चा कल रात को पुनः अस्पताल में भरती कराया गया है। उसे बुखार आ गया है और डर है कि कहीं relapse न कर गया हो टायफाइड। अजित अभी तक यह निश्चय नहीं कर पाये हैं कि किरोड़ीमल ज्वाइन करेंगे या नहीं? मुझे लगता है कि शायद ज्वाइन नहीं करेंगे। सरकारी नौकरी की सुविधाएँ उन्हें बहुत आकर्षित कर रही हैं। उनका यह भी ख़याल है कि शायद बच्चन जी के रिटायर होने के बाद वह स्थान उन्हें ही मिल जाये।

रास्ते में उस दिन रेडियो टॉक लिखी थोड़ी-सी, पर मन जमा नहीं। कल यहाँ पर नये सिरे से लिखा। शायद तुमने सुना हो।

•

दिल्ली
16.10.62

कम्मो डार्लिंग,

अभी-अभी बड़ी प्रतीक्षा के उपरान्त तुम्हारा पत्र मिला। कल सवेरे से ही तुम्हारा पत्र पाने को मेरा मन मचल रहा था। आज सवेरे तो तुमको पत्र लिखने जबरदस्ती मैंने अपने मन को रोका कि अभी लड़ जाऊँगा कम्मो मैं।

स्वीटी, सच क्या तू यही सोचती है कि मैं किताबों एवं व्यस्तताओं में तुझे भूल गया हूँ। यह तेरी ज्यादती हैं—मैं तुझे अपने मन के भीतर से कितना प्यार करता हूँ, मैं ही जानता हूँ और मेरा अनुमान है कि तू भी जानती हैं—

तत्त्व प्रेम कर मम अस तोरा, जानत प्रिया एक मन मोरा।
सो मन रहत सदा तोहि पाहीं, जानु प्रीतिरस एते नहिं माहीं।

व्यस्तताएँ तो जीवन-संघर्ष की द्योतक हैं—तेरा प्रेम तो उनसे लड़ने में शक्ति देता है। सचमुच कम्मो, मैं अपने को बड़ा सौभाग्य वाला मानता हूँ कि तू मुझे मिली है।

आज कॉलेज खुलने जा रहा है। अभी यह पत्र लिखकर मैं चला जाऊँगा।

दोपहर का खाना महराजिन ने खिला दिया है। शाम को कहीं अन्यत्र खा लेता हूँ। कल शाम को सुरेश जी के यहाँ खाया था। अभी कृष्ण बिहारी को देखता हुआ जाऊँगा। यदि वे आ गये होंगे तो शाम को उनके यहाँ ही खा लिया करूँगा। इस बार का टाइम टेबुल अच्छा है। बुधवार को एकदम छुट्टी रहा करेगी तथा हफ्ते में केवल दो दिन 9 बजे तक क्लास है। शनिवार को केवल एक ही पीरियड पौने सात से साढ़े सात का है।

अजित का बच्चा बीमार है, वह अस्पताल में ही है और वे अभी एक सप्ताह शायद ज्वाइन नहीं करेंगे।

तुमने मेरा बैग मँगवा लिया होगा। आना तो लखनऊ वाली बढ़िया सौंफ, नया गुड़ और अच्छा वाला अमरस जरूर लाना। कुर्सियों की गद्दियाँ खादी भण्डार में साढ़े पाँच रुपये के आसपास मिल रही हैं। सोचता हूँ कि 5 रुपये की कुर्सियाँ हैं, उनसे कीमती गद्दियाँ क्या लगाऊँ। खैर एक-दो ले आऊँगा। अपने लिए खादी भण्डार से एक बुश्शर्ट का कपड़ा ले आया हूँ। तुम्हारे पास रुपये हों तो खादी भण्डार की नुमाइश से थोड़ा-सा शहद ले लेना। यहाँ मैं लाया हूँ पर 11 रुपये किलो पड़ता है। थोड़ा दलिया भी ले आया हूँ।

तुनुआँ को जरा प्यार से बैठाकर समझाओ तो समझ जायेगा कि किसी को मारना नहीं चाहिए। इस समय उसे डाँटोगी तो और बिगड़ जायेगा। उसे लगातार अपने पास बैठाकर समझाओ और रंगने के लिए कलर बॉक्स वगैरह ले लो और समाचार देना। लक्ष्मी ने किस तारीख को भेजने के लिए कहा है? मेरा मन होता है कि दीवाली पर मैं भी चला आऊँ। यहाँ उस दिन मन बहुत ऊबेगा। अम्मा आ रही हैं या मोती की तैयारी है। तुमने बिट्टन को नौकर के लिए पुनः पत्र लिखा है या नहीं? न लिखा हो तो लिख देना। राजी बाबू का जबान का टीका डॉक्टर को दिखाया है या नहीं? भई जरूर दिखा लेना, आपरेशन चाहे यहीं कराया जाये।

और सबके समाचार देना। तुमने असलम वाला मंजन मेरे साथ आखिर नहीं ही रखा था। तुम्हारी दाढ़ के क्या हाल हैं? अम्मा, दिदिया, जीजा को प्रणाम। चि. सुधीर, रेखा, अजय, अंजू, अपर्णा को स्नेह। तुनुआँ एवं राजी को मेरी ओर से खूब प्यार करना। अच्छा तो कमीशन में तुम्हें भी कुछ प्यार और थोड़े-से चुम्बन भेज रहा हूँ। नहीं लड़ोगी कि अपने बेटों को ज्यादा प्यार करते हैं।

फौरन पत्र लिखना। मिसेज मिश्रा आजकल गयी हुई हैं। दो-चार दिन में लौटेंगी। तुमको पूछ रही थीं।

तुम्हारा
'श्याम'

•

University of Delhi
Delhi-6
18.10.62

कमलेश डियर,

मेरा एक पत्र मिला होगा। सुनो, भाई साहब से कहना कि मेरे स्कूटर के लिए ग्राहक से बात किये रहें। सुधीर चौधरी साहब से पूछ लेंगे। अगर चौधरी साहब लें, तब तो भाई साहब से कहने की आवश्यकता नहीं है, पर यदि वे न लेने को कहें, तो फिर उनसे कहना कि सरदार जी से बात कर लें। यहाँ मेरी बात हुई है और उम्मीद है कि 15 नवम्बर तक मुझे स्कूटर मिल जायेगा। ऐसी हालत में कानपुर वाला बेच देना ही ठीक रहेगा। शायद सरदार जी रुपया पहले ही देने को तैयार हैं। अगर चौधरी साहब लें, तब भी भाई साहब से कह देना कि मार्केट में इस समय का Price क्या है? भाई साहब से यह भी पूछना कि बेचने पर Bank गारण्टी का कैसे हिसाब होगा?

इस चक्कर में शायद मुझे आना भी पड़ जाये।

जब तुम आना तो 'आलोचना और आलोचना' की पाँच प्रतियाँ अवश्य लेते आना। यहाँ रह नहीं गयी हैं।

आजकल पैसों की बड़ी परेशानी है। फ्रेंच की फीस भी जमा करनी है—दो किताबें भी खरीदनी हैं। खाने-पीने पर भी खर्च होता ही रहता है। आज मेरी जेब में 3 रुपये रह गये हैं। समझ में नहीं आता कैसे हिसाब-किताब चलेगा? अक्षोभ्येश्वरी ने दिया नहीं है। रेडियो से भी अब तक चेक नहीं मिला है। बड़े संकट के दिन हैं। खैर, सब कट जायेगा।

कृष्ण बिहारी की माँ बीमार हैं, सो अब तक आये नहीं? शायद सोमवार तक आवेंगे। आज रात का खाना सेठी साहब के यहाँ खाया था—दोपहर में ग्वायर हाल में राजेन्द्र यादव के साथ। कल रात में दास के यहाँ डिनर तय हुआ है। भोजन का तो कोई कष्ट नहीं है, पर तुम्हारे बिना कष्ट है।

सेठी साहब आप कह रहे थे कि दीवाली बाद ऊपर वाला कमरा बनवा देंगे। मिसेज मिश्रा अभी नहीं लौटी हैं।

और समाचार देना। तुनुआँ-राजी मौज में होंगे। उन्हें खूब-खूब प्यार। बस तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

तुम्हारा ही
'श्याम'

•

बैजनाथ आज तुम्हारा पत्र लाये। तुनुआँ के CIE वाले स्कूल मैं कल जाऊँगा। आज सवेरे यह पत्र लेकर शशि से मिलने स्टेशन गया, पर बस न मिलने से देर से पहुँचा और जैसे ही मैं प्लेटफार्म पर पहुँचा, वैसे ही गाड़ी छूट गयी। बड़ा अफसोस हुआ। कम्मो, मेरे पास पैसे बिल्कुल नहीं हैं, अतः मैं दीवाली पर न आ पाऊँगा।

तुम्हारी प्रतीक्षा अब मैं यहीं करूँगा। कल एक मकान देखने डॉ. चौधरी ने बुलाया है। यों मैं सोचता हूँ कि इसे न बदलें। मंजन और बैग मिल गये। बैग अच्छा तो बन गया है। बनवाई क्या पड़ी है? तुमने अपनी अम्मा को 33 रुपये दिये या नहीं? देना।

तुम्हारा ही

'श्याम'

भाई साहब से यह भी कहना कि आते-जाते यह भी जान लें कि कितनी देर है अभी वहाँ आने में। मेरा न. 135 है।

•

दिल्ली

24.10.62

कम्मो स्वीटी,

मेरा पत्र तुझे इतवार को मिल गया होगा और आज बुधवार की रात है तथा तुम्हारा पत्र नहीं आया। मैं अभी लौटा हूँ और सोच रहा था कि तुम्हारा पत्र मिलेगा। कम्मो, तुम यह क्यों नहीं सोचती कि जब तुम लोग नहीं होती तो कितनी अधिक उत्सकुता होती है पत्र प्राप्त करने की। डियर, तुम अब अलग न रहा करो, मुझे बड़ा कष्ट होता है—कष्ट खाने-पीने का उतना नहीं, जितना अकेलेपन का। घर आओ तो जैसे काट खाने दौड़ता है। अजीब-सी उलझन होती है। अच्छा अब जरा जल्दी से दौड़कर आ तो जाओ और मैं तुझे कस कर चिपका लूँ और...!

और हाँ, तुनुआँ का एडमिशन हो गया है। अभी कुछ दिनों तक वे बीच-बीच में कुछ दिनों के लिए बुलावेंगी—Periodical Student की तरह, फिर कुछ दिनों में रेगुलर कर लेंगी। पाँच रुपये उसकी एडमिशन फीस के भी मैंने जमा कर दिये हैं। यों 11 रुपये महीने उसकी फीस लगेगी। लाहौर माण्टेसरी की फीस भी 10 रुपये है। तुम कम्मो कम-से-कम उसके लिए दो ऐसी नीली पैण्ट एवं अच्छी पापलीन की दो-तीन सफेद कमीजें अवश्य बनवाए लाना, नहीं फिर परेशानी होगी। न हो तो नायलॉन के एकाध जोड़ी मोजे भी छोटे के यहाँ से ले लेना। एक जोड़ी मौजे अपनी पसन्द के नायलॉन के मेरे लिए भी छोटे से लेते आना। न होगा तो रुपये

बाद को भेज देंगे। तुनुआँ के लिए एक पैण्ट भी इस बार तुम बुनना। यों शायद वहाँ की कोई Prescribed Dress नहीं है। तुनुआँ को 31 अक्टूबर को सवेरे 9 बजे से उन्होंने बुलाया है। इसलिए मैं समझता हूँ कि 30 तारीख को भइयादूज करके दोपहर की गाड़ी से चली आओ। यदि किसी कारणवश उस दिन न आ सको तो फिर 31 को तो अवश्य ही आ जाओ—किसी-न-किसी समय। मुझे लिख देना। मैं गाड़ी के समय पर स्टेशन पहुँच जाऊँगा।

आजकल दोपहर का खाना जुबली हॉल में खाता हूँ और आज शाम से शाम का खाना कृष्ण बिहारी के यहाँ खाना शुरू किया है। कृष्ण बिहारी परसों सवेरे आये हैं। अब तो तुम्हारे आने में 7-8 ही दिन की देर है, कोई चिन्ता की बात नहीं है।

अजित ने अभी ज्वाइन नहीं किया है। उनके बच्चे की तबीयत अभी एकदम ठीक नहीं है। दूसरे उन्हें दफ्तर से तभी छुट्टी मिलेगी, जब वे विनय नगर वाला मकान खाली कर देंगे। इसलिए पहले मकान लेना है, फिर बच्चा जब तक अस्पताल से घर नहीं आ जाता, तब तक तो और भी सम्भव नहीं है। शायद दीपावली के बाद वे ज्वाइन करें।

और कोई नये समाचार नहीं हैं। एफ ब्लाक में एक मकान और देखा था—मुझे पसन्द भी था, पर किराया वे 140 रुपये माँग रहे थे। मैं 125 रुपये से अधिक इस समय देने की स्थिति में नहीं हूँ। मकान सुन्दर बिल्कुल नहीं था, पर जगह काफी थी और आरामदेह भी।

और सब ठीक ही है। तुमने राजी बाबू को डॉ. भटनागर को दिखाया या नहीं। तुम्हारी याद के क्या हाल हैं? आज मैंने अपना आँखों का टेस्ट कराया है। कल भी जाना होगा।

फौरन पत्र लिखो कि कब आ रही हो? नया नौकर आया या नहीं? अम्मा भी आ रही हैं न!

घर में सबको यथायोग्य। भाई साहब ने क्या स्कूटर वालों से पूछ लिया है कि कब तक नम्बर आवेगा। सुधीर न गये हों तो चौधरी साहब के यहाँ भेजकर पुछवा लेना। चि. तुनुआँ एवं सभी को प्यार। तुझे उतने और उतने ही सुगन्धित चुम्बन, जितने नीचे चमेली में फूल खिले हैं। आलिंगन भी। पत्र की प्रतीक्षा में।

तेरा ही तो
'श्याम'

मित्र नामवर सिंह को सम्बोधित पत्र

Dr. Devi Shanker Awasthi
Department of Hindi, Institute of Post Graduate
Evening Studies
University of Delhi
Delhi-6
10.10.62

प्रिय भाई,

एक पत्र ड्राफ्ट के साथ भेजा था—मिल गया न! आजकल यहाँ श्री राजेन्द्र यादव आये हुए हैं। उनसे कल काफी देर तक बात हुई। जैसा कि आपने ही बताया था कि एक पत्रिका की योजना उनकी भी है—अपने लोगों का कार्यक्रम भी मैंने उनसे बताया। स्पष्ट था कि दो-दो स्थानों से शक्ति का अपव्यय क्यों हो—जबकि उद्देश्य मिलते-जुलते हों? यों श्री राजेन्द्र यादव का प्लान उतना महत्त्वाकांक्षी नहीं है—वे Times Literary Supplement की तरह की चीज निकालना चाहते हैं। विज्ञापन के कुछ पृष्ठों आदि के द्वारा उन्हें विश्वास है कि इतनी व्यवस्था कर सकेंगे कि लेखक को भी कुछ दिया जा सके। वे सम्पादक के रूप में आपको चाहते थे तथा सहायिका के रूप में किरण जैन (शिक्षायतन, कलकत्ता की हिन्दी विभागाध्यक्षा) को। किरण जैन शायद कार्यालय-भार सँभाल लेंगी।

हमारे प्लान में Austerity Budget की योजना आप बना ही गये थे। भैरव भाई से बात हुई और उन्होंने कहा था कि आप लोग काम कीजिए, प्रकाशन की व्यवस्था हो जायेगी। मैंने राजेन्द्र यादव से कहा कि यदि वे दोनों योजनाएँ अपने सारे साधनों सहित मिलाई जा सकें तो अधिक अच्छा production भी हो सकेगा। यह बात स्वीकार तो वे भी करते हैं पर जिन आर्थिक साधनों को वे pool कर सकते हैं, उनके लिए अति आवश्यक है कि योजना का एक महत्त्वपूर्ण सिरा कलकत्ते में रहे। यानी राजेन्द्र यादव को तो हम लोगों ने पहले भी सोचा था, श्रीमती किरण जैन को भी किसी महत्त्व के साथ (Just like convening Editor or so) लेना होगा। यों

भी कि उसका सम्पादकीय कार्यालय कलकत्ता रखना होगा। प्रकाशन, मुद्रण और वितरण दिल्ली से हो पर सम्पादन में नाम कलकत्ते का होना चाहिए—हो भले ही वह वाराणसी। दिल्ली का जो प्रकाशक हमें मिले उससे यह लोग यह तय कर सकते हैं कि जितने पृष्ठ का विज्ञापन हम लोग (यानी राजेन्द्र यादव के माध्यम से) देंगे, वह पैसा केवल लेखकों के लिए हमें दे दिया जायेगा—प्रकाशक न अपनी ओर से उसमें जोड़ें और न काट पायें।

कृपया यह पत्र पाते ही उस सम्बन्ध में अपनी राय हमें तत्काल सूचित करें। यादव जी 4-6 दिन अभी दिल्ली में हैं। हम चाहते हैं कि इसी सप्ताह यह सारी बात तय हो जाये। अशोक भी सागर से अभी तक लौटे नहीं हैं। मैं कुछ दुविधा में हूँ। यों व्यक्तिगत रूप से मुझे यह प्रस्ताव पसन्द है।

और समाचार दें। काशी को नमस्कार कहें।

आपका
देवीशंकर

•

सी-3/5, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
07.11.62

प्रिय भाई,

पत्र मिला। राजेन्द्र यादव वाला अंश काटकर उन्हें पोस्ट कर दिया है। आपका पत्र आने पर शायद वे चले गये थे। आपसे शायद भेंट हो गयी होगी। 'सन्धान' का कार्य आगे बढ़ रहा होगा। सुना है कि *सन्दर्भ* नामक कोई पत्रिका भी नामवर जी एवं विष्णुचन्द्र शर्मा के सम्पादकत्व में निकल रही है। यह तो खैर सुना ही था कि उन्हीं के सम्पादन में *विश्लेषण* भी निकलने वाला था और interpretations भी।

काशी ने apply किया है। यह मुझे आपने तब लिखा जबकि यहाँ इण्टरव्यू हो चुके थे। उनकी एप्लीकेशन लगता है प्रारम्भिक चयन में ही अलग कर दी गयी है। मुझे तनिक भी ज्ञात होता तो शायद बहुत कुछ काम हो गया होता। डॉ. नगेन्द्र से आपका पत्र मिलने के पूर्व भी मेरी बात हुई थी। उन्होंने काशी भाई के बारे में उत्सुकता भी प्रकट की थी। पर शायद उन्हें भी ज्ञान न था कि उन्होंने apply किया है। खैर फिर सही। कुछ दिनों में शायद हिन्दू कॉलेज में भी एक स्थान विज्ञापित हो। (अगर चीनी आक्रमण का प्रभाव न पड़ा तो)। और हाँ, अब तो दिल्ली आये आपको बहुत दिन हो गये हैं न।

और सब ठीक ही है। अनुराग जितनी बार भैरव भाई के घर के पास से गुजरते हैं, उतनी बार आपको याद कर लेते हैं।

डॉ. नामवर सिंह
लोलार्क कुण्ड, भदैनी

आपका
देवीशंकर

●

सी-5/16, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
14.07.63

प्रिय भाई,

खेमका जी के हाथ समीक्षाओं वाला कागज मिला और कुछ गालियाँ भी। हुजूर, जितनी समीक्षाएँ आपने स्वीकृत कीं लगभग वे सभी तो मैंने आपको लिखी थीं—एकाध को छोड़कर। उसके बाद भी तोहमत यह कि कुछ भेजना था इसलिए भेज दिया। जरा लम्बी सूची इसलिए कर दी थी कि आप यह न समझें कि पत्रिकाएँ मैंने उल्टी-पुल्टी नहीं। मैंने तमाम सामग्री निकाली थी, उसमें से कुछ लिख भेजी थीं। आपके द्वारा प्रस्तावित सूची में कुछ बातें—

आषाढ़ का एक दिन की रिव्यू सुरेश अवस्थी ने नहीं लिखी। मुझे कोई ढंग की रिव्यू दिखी भी नहीं। *आँगन के पार द्वार* की समीक्षा विद्यानिवास ने कहाँ लिखी है? मेरे देखने में तो कोई आयी नहीं। *अपने-अपने अजनबी* के सम्बन्ध में उन्होंने अवश्य लिखा था। *धूप के धान* की एक अच्छी समीक्षा अजित कुमार ने *आलोचना* में लिखी थी पर उनकी समीक्षा 'कला और बूढ़ा चाँद' वाली आपने प्रस्तावित की है। शमशेर के संग्रहों की कोई ढंग की चर्चा मेरे देखने में नहीं आयी—आपको याद आ जाये तो बतायें। *परिन्दे* की रिव्यू मैं आप वाली देना पसन्द करूँगा। कुँवर नारायण की दो रिव्यू *झूठा सच* और *अपने-अपने अजनबी* की यथेष्ट हैं। कुछ लोगों की दो रिव्यूज भी जा सकती हैं। नामवर सिंह, कुँवर नारायण, रामविलास शर्मा या नेमिचन्द्र जैन ऐसे लोगों में हो सकते हैं।

बलचनमा, कुछ कविताएँ, धूप के धान, वंशी और मादल, जिन्दगी और जोंक, पत्थर की आँख आदि महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की अच्छी समीक्षाएँ यदि नहीं मिलतीं तो या तो छोड़ दी जायें या फिर नयी समीक्षाएँ लिखाई जायें। इस सम्बन्ध में आपकी क्या राय है? आलोचना सम्बन्धी पुस्तकों को आपने एकदम छोड़ दिया है। मुझे लगता है कि नीचे दी गयी पुस्तकों की चर्चा अवश्य होनी चाहिए—

1. *भाषा और समाज* (रामविलास), 2. *साहित्य का इतिहास* (नलिन),

3. *संस्कृति का दार्शनिक विवेचन* (देवराज)—समालोचक में इस पर एक बढ़िया समीक्षा है, 4. *कामायनी एक पुनर्विचार*—(मुक्तिबोध), 5. *छायावाद* (नामवर सिंह), 6. *आत्मनेपद* (अज्ञेय), 7. *भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका* (नगेन्द्र), 8. *हिन्दी साहित्य का आदिकाल* (हजारी प्रसाद), 9. *कलम का सिपाही* (अमृत राय)।

नरेश मेहता के कविता संग्रह एवं उपन्यासों में से *संशय की एक रात* तथा *धूमकेतु* को लेना चाहिए—यदि कुछ मिल जाये अगले कुछ दिनों में।

और अब यह बताइए कि आपने जो खेमका से शिकायत की कि मैं भी भगवत् भजन में लग गया—सो किस आधार पर? सुरेश अवस्थी ने जिस रिव्यू की चर्चा आपसे की थी, उसे सुना था क्या आपने? इतना तो जाहिर है कि उसके विरुद्ध मैं उस प्रकार नहीं लिख सकता था, जैसा कि आपको अच्छा लगता पर प्रशस्ति मैंने नहीं की थी। पर आप स्वयं ऐसी किताबों पर क्यों नहीं जमकर प्रहार करते? यह बहाना न बनाइएगा कि ऐसी किताबों की नोटिस न लेनी चाहिए क्योंकि नोटिस तो अपनी सत्ता के बल पर ये दिला लेते हैं और मुख्य संघर्ष भी तो आलोचना के क्षेत्र में ऐसी ही लोगों से करना है।

24/7 *आलोचना* का नया कूड़ा अंक देखा? अपने मतलब की दो चीजें उसमें हैं—*उर्वशी* की मुक्तिबोध कृत रिव्यू और *झूठा सच* पर रमेश कुन्तल मेघ की। *कलम का सिपाही* की भी रिव्यू इसमें से ली जा सके—शायद। प्रसन्न होंगे। इधर आ तो नहीं रहे?

पुनश्चः राजेन्द्र यादव का पत्र आया है। उन्होंने *नये बादल* पर कोई रिव्यू नहीं लिखी।

आपका
देवीशंकर

•

सी-5/16, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
07.02.64

श्रीमान् जी,

पत्रिका सम्बन्धी परिपत्र का एक ड्राफ्ट आपकी सेवा में भेजा था—कोई उत्तर नहीं मिला। अब तो आरा-पटना होकर आ चुके होंगे। राजेन्द्र यादव के पत्र से पता लगा कि इलाहाबाद भी थे आप। जवाब तो दें। यों 16 फरवरी भी अब आ रही है—क्या विचार अभी भी शेष है दिल्ली आने का? यों हम सब तो आशा छोड़ चुके हैं—ओमप्रकाश भले ही बुला लें।

काशी से कह दें कि हिन्दू कॉलेज के इण्टरव्यू शायद जून तक के लिए स्थगित

कर दिये गये हैं—इस ओर का सेशन समाप्त हो रहा है, अतः कुछ महीनों का रुपया वे बचा लेना चाहते हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि मुझे 23 फरवरी को इलाहाबाद आना है—आज्ञा हो तो बनारस भी आपके दर्शन करने आ जाऊँ। एक बात और बिहार के जिन लेखकों का सहयोग उस पत्रिका को मिलने वाला था, क्या उस बीच यानी 24-25-26 फरवरी को बनारस में एक बैठक में उनकी उपस्थिति सम्भव होगी। मैं चाहता हूँ कि काम बढ़ना हो तो फिर देर क्यों की जाये अन्यथा फिर विचार ही छोड़ दिया जाये और उपलब्ध Forms का ही अधिकाधिक प्रयोग किया जाये। कम-से-कम आपसे तो बातें करने और सलाह करने का मन बहुत है। किसी प्रकार मिलें। यों मार्च भर दिल्ली रहने का कार्यक्रम आप क्यों न बनायें।

शेष शुभ। प्रसन्न होंगे। *ज्ञानोदय* वाले स्तम्भ का? कहानी वाली किताब की प्रतीक्षा है।

आपका

देवीशंकर

डॉ. देवीशंकर अवस्थी : जीवनवृत्त

जन्म : 5 अप्रैल, 1930, ग्राम-सथनी बालाखेड़ा, जनपद-उन्नाव (उ.प्र.)

शिक्षा : आरम्भिक शिक्षा गाँव में और व्यक्तिगत स्तर पर। डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर से 1951 में बी.ए. और 1953 में एम.ए. (हिन्दी) प्रथम श्रेणी में। 1960 में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में 'अठारहवीं शताब्दी के ब्रजभाषा काव्य में प्रेमाभक्ति' विषय पर पीएच.डी.। 1952 में 'लॉ' की भी डिग्री ली।

आजीविका : 1953 से 1961 तक डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में हिन्दी के प्राध्यापक। जुलाई, 1961 से मृत्युपर्यन्त दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे।

निधन : 11 जनवरी, 1966 को दिल्ली में एक सड़क दुर्घटना के चलते ब्रेन हेमरेज से 13 जनवरी, 1966 को आकस्मिक अवसान।

प्रकाशित पुस्तकों का इतिवृत्त : (1) **मौलिक : आलोचना**–(i) आलोचना और आलोचना–1961, प्रज्ञा प्रकाशन, कानपुर, पुनःप्रकाशन–1995, वाणी प्रकाशन, दिल्ली; (ii) अठारहवीं शताब्दी के ब्रजभाषा काव्य में प्रेमाभक्ति–1968, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, पुनःप्रकाशन–2015, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली; (iii) रचना और आलोचना–1979, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, पुनःप्रकाशन–1995, वाणी प्रकाशन, दिल्ली; (iv) भक्ति का सन्दर्भ–1997, वाणी प्रकाशन, दिल्ली; (v) आलोचना का द्वन्द्व–1999, वाणी प्रकाशन, दिल्ली; (vi) विवेक के कुछ और रंग–2003, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली; (vii) देवीशंकर अवस्थी : संकलित निबन्ध–2008, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नयी दिल्ली; (viii) देवीशंकर अवस्थी : रचना संचयन–2012, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली।

(2) **सम्पादित पुस्तकों का इतिवृत्त** : (i) कविताएँ १९५४, साहित्य निकेतन, कानपुर (श्री अजित कुमार के साथ); (ii) कहानी-विविधा–1963, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; (iii) 'भूले-बिसरे चित्र' उपन्यास के संक्षिप्त संस्करण की भूमिका और सम्पादन–1963, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; (iv) विवेक के रंग–1965, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, पुनःप्रकाशन–1995, वाणी प्रकाशन, दिल्ली; (v) नयी कहानी :

सन्दर्भ और प्रकृति—1966, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, पुनःप्रकाशन—1973, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; (vi) साहित्य विधाओं की प्रकृति—1981, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, पुनःप्रकाशन—1993, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली; (vii) 'कलजुग' पत्रिका, फरवरी 1957 से जून-जुलाई 1957 (पाँच अंक) तक कानपुर से सम्पादन एवं मार्गदर्शन।

(3) **पत्र संकलन :** (i) 'हमकों लिख्यौ है कहा'—2001, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली (मित्रों के पत्र देवीशंकर के नाम); (ii) मेरे प्रेम-पत्र (पत्नी कमलेश के नाम)—2012, संवेद पुस्तिका, दिल्ली।

(4) **पुस्तक अनुवाद :** 'ईश्वर चन्द्र विद्यासागर' विनय घोष की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, जून 1968, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

(5) **देवीशंकर अवस्थी पर प्रकाशित पुस्तकें :** (i) मौलिक : देवीशंकर अवस्थी—2006, अरविन्द त्रिपाठी, साहित्य अकादमी से 'भारतीय साहित्य निर्माता सीरीज' में प्रकाशित विनिबन्ध (मोनोग्राफ); (ii) सम्पादित : आलोचना का विवेक—2004, सं. : राजेन्द्र कुमार (डॉ. देवीशंकर अवस्थी के अवदान पर एकाग्र) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

□□
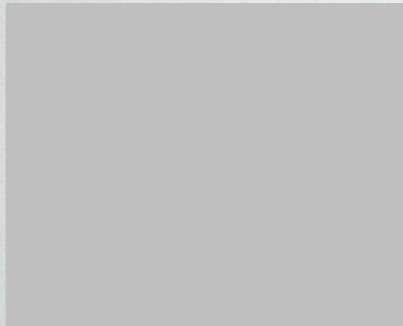
यह भी नोट करने की बात है कि देवीशंकर जी आलोचक भर नहीं थे—उनकी रुचि और साहित्यिक सक्रियता में सम्पादन, ललित लेखन, यात्रा-वृत्तान्त, डायरी, व्यंग, एकांकी यहाँ तक कि कविता तक शामिल थे। यह अपने समय, समाज और साहित्य का सिर्फ़ आलोचना की दृष्टि से देखना नहीं है, उनके भरे-पूरेपन, संवेदना और बुद्धि से अपने समय की जटिल सच्चाई को महसूस करती, समझने की कोशिश करती और साहित्य के अर्थ और प्रासंगिकता को दूसरों तक पहुँचाने का जतन करती है। देवीशंकर जी ने दूर झरोखे से कुछ देखकर बखान नहीं किया; वे हिस्सेदार सहचर लेखक थे—औरों के साथ थे, उनकी व्यथा और संघर्ष में, उनके एकान्त और उम्मीदों में साझीदार थे।

अशोक वाजपेयी

अवस्थी जी के आलोचनात्मक निबन्ध पढ़ते हुए उनकी खुली छवि—Catholic taste for writer हमें एकबारगी चौंकाती है। वह उत्सुकता और जिज्ञासा का स्वर है। एक ताज़े झोंके की तरह हमें स्पर्श करती है।

निर्मल वर्मा

तटस्थता और निर्भीकता के कारण वे सहज ही विश्वसनीय बन गये थे। चारुचन्द्रलेख की समीक्षा में रूपबन्ध के गहरे स्तरीय विश्लेषण से निबन्ध छाप शिल्प को उभारते हुए ललित निबन्धों और उपन्यास के ग्राफ़-कर्व बिन्दुओं की निकटवर्ती तुलना से एपिक ग्रेंजर का मोहभंग उनकी ही सामर्थ्य थी।

चन्द्रकान्त देवताले

देवीशंकर अवस्थी

(1930-1966)

जन्म : 5 अप्रैल, 1930; ग्राम—सथनी बाला खेड़ा, ज़िला उन्नाव (उ.प्र.)।

शिक्षा : रायबरेली और कानपुर में।

1960 में आगरा विश्वविद्यालय से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में पीएच.डी.। इसके अतिरिक्त लॉ (कानून) की भी डिग्री ली थी।

कार्यक्षेत्र : 1953 से 1961 तक डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में अध्यापन। 1961 से मृत्युपर्यन्त (13 जनवरी, 1966) दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग से सम्बद्ध।

रेखा अवस्थी

जन्म : 20 जून, 1947; लालगंज, रायबरेली (उ.प्र.)।

शिक्षा : एम.ए., भाषाविज्ञान में डिप्लोमा (दिल्ली विश्वविद्यालय), पीएच.डी. (भागलपुर विश्वविद्यालय)।

कार्यक्षेत्र : 1968 से 1973 तक भारत सरकार के अनुवाद विभाग में वरिष्ठ अनुवादक रहीं। दिल्ली विश्वविद्यालय के दयालसिंह कॉलेज के हिन्दी विभाग से 2012 में सेवानिवृत्त।

प्रकाशित पुस्तक : प्रगतिवाद और समानान्तर साहित्य।

सम्पादन : रागदरबारी : आलोचना की फाँस, प्रेमचन्द विगत महत्ता वर्तमान अर्थवत्ता, 1857 : बग़ावत के दौर का इतिहास, फ़ैज़, नागार्जुन, साहिर तथा हिन्दी-उर्दू साझा संस्कृति इत्यादि पुस्तकों का संचयन-सम्पादन। जनवादी लेखक संघ की राष्ट्रीय सचिव एवं 'नयापथ' पत्रिका के सम्पादन से सम्बद्ध।

विशेष : आलोचक देवीशंकर अवस्थी की छोटी बहन।

कमलेश अवस्थी

जन्म : 24 दिसम्बर, 1939; कानपुर।

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी., आगरा विश्वविद्यालय।

विवाह : 1 जुलाई, 1956 को युवा मेधावी आलोचक देवीशंकर अवस्थी के साथ हुआ।

कार्यक्षेत्र : सेंटजेवियर्स स्कूल, दिल्ली में 1966-1969 तक अध्यापन, के.के. कॉलेज, कानपुर में 1969 से 1999 तक अध्यापन।

विशेष योगदान : 1995 में हिन्दी में युवा आलोचकों को प्रोत्साहित करने के लिए 'देवीशंकर आलोचना सम्मान' की स्थापना की।

प्रकाशित पुस्तकें : परम्परा और आधुनिकीकरण, देवीशंकर अवस्थी : रचना संचयन।

₹ 7500 (4 Vol. Set)

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से
Vani Prakashan's signature motif is created by Artist Maqbool Fida Husain